सर्व प्रजाका हितके अर्थ श्री सवाईजयपुरमें श्रीमन्महाराजाधिराज राजराजेंद्र श्री १०८ श्रीसवाईप्रतापसिंहजी महाराज हुकम पहुचायो आपका राज्याश्रय विद्वान हाज्यांपर वै विद्वान केसाकहा ज्यांके आयुर्वेदका ग्रंथ कंठस्थ पाठ हा सौ वैद्यक ग्रंथाकी सापासौं हुकमके अनुकूल होयकर अमृतसागर तथा प्रतापसागर नाम ग्रंथ रच्यो अरु श्रीदरबारकी संमती जीं पूर्ण ग्रंथपर हुई सो याग्रंथनें वडी महनतसों संवत् १९१७ प्रथम आश्वीनमें ह्मारा प्र० ज्ञानसागर यंत्रालयमें छाप्यों सर्व लोक हितोपकारके अर्थ सो आगें याग्रंथनें हरेक छापकर शुद्धाशुद्धका विचार विना ईग्रंथको विपरीतपणो होवासूं संवत् १९३७ भाद्रपद मासमें प्र० ज्ञानसागरमें प्रसिद्ध कियो. अरु भावप्रकाशादिक ग्रंथ ओर निघंटका प्रमाणसों योगचिन्तामणी, निघंटरत्नाकर आदिक ग्रंथांका प्रमाणसों नवीन पूर्वभाग जीमें सर्व उत्तरभागनें सहायता करे अरु सूक्ष्मकला नाम टीका ग्रंथका उत्तर भागपर पत्रापत्रापर करी है. जीमें पथ्यापथ्य आहार व्यवहार यथारीतसों धऱ्याहे. आगें कहणेंको प्रयोजन है. नवीन पूर्वभाग अरु उत्तरभाग उपर सूक्ष्मकलाटीका जीको हक हमारे पास राख्यो हे अरु जो पूर्वभागकी अनुक्रमणिका पूर्वभागका आदिमें लिपीहे. अरु उत्तर भागकी अनुक्रणिका ग्रंथका सेवटमें लिपी हे. अरु ईग्रंथपर परिश्रम वहोत हुवो हे सोविद्वान् पुरुष समजलेसी अरु विद्वान पुरुषांकी सहायता विना कोईवी ध्यानमें लेसी नही अरु योग्रंथ विद्वान वैद्यलोकांके अर्थ हे. अरु ईग्रंथमें कोईवी कारणसों भूल चूक होय सो क्षमा करसी मनें सूचना करसी ज्यां विद्वान पुरुषांको उपकार मोटो मानसो.

पंडित श्रीधर शिवलाल.

अथ अमृतसागरका पूर्वभागको सूचीपत्र

श्रीगणेशायनमः ।

दोहा ॥

सिद्धिसदनगजवदनगन, एकरदनघनराज ॥
सुफलकरहुमनकामना, घनतेंज्योंवनकाज ॥ १ ॥

टीका ॥

परम इष्ट देव श्रीसिद्धिविनायक सर्वसिद्धिका सदन नाम स्थानछे. अरु गजवदनघन हाथीका सरिसो मुखारविंदहै. ज्यांका मुष उपर एकहीहै दंत ज्यांके सकल गणांका राजा नाम ईश्वरहै. सो श्री गणेशजी महाराज ह्मांका मनकी सर्व कामना सुफल करो कैसे जैसें मेघकी वर्षा होवासौं महावन सजल फलफूलादिक अनेक प्रकारसौं आनंदयुक्त होयछे. जैसें अर्थात् महावनरूपी यो ग्रंथछे जीपर श्रीगणेशजी कृपाकरो घनरूपी जीसौं ओग्रंथ सर्वका मनोरथ सिद्धकरो इसी प्रार्थना श्रीगणेशजीप्रती टीकाकारकी है. अरु जोपुरुष स्वाभिमानका प्रभावसौं ईग्रंथनें यथार्थ नही कहैछे. निंदाप्राय वचन अनेक तरैसौ कहै तौ वांका हृदामैं वे वचनरूपी विघनछे. ज्यांको श्रीगणेशजी महाराज समाधान करो

छप्पय ॥

सतचितआनंदरूपताहिकीप्रभाजुमाया ॥ ताकेनाम अनंतपाचतिनमुष्यकहाया ॥ प्रधानप्रकृतिशक्तिविकृतीनित्याजानौ ॥ महातत्वकरिआदितत्वचोवीसवपानौं ॥ जोशक्तीशिवसौंमिलरहीभिन्नभिन्नकर्मनसची ॥ सोअंधपंगुकेन्यायज्योंचेतनजडसृष्टीरची ॥ २ ॥

टीका ॥

सच्चिदानंदप्रभू आनंदस्वरूप अखिल ब्रह्मांडका कारण इछारहित सत् चित्त आनंदस्वरूप ऐसेजो परब्रह्मपरमात्मा तीं

की प्रकृति नाम मायाछै सो वा परमात्माकी माया नित्यछै. जैसैं सूर्यकी प्रतिछाया प्रभा नाम प्रकाशहै तैसैं वा ब्रह्मपरमात्माकी प्रतिछाया जो मायाछै सो जडछै अर चैतन्य जो परमात्मा तींका संजोग करिकै ई अनित्यसंसारनैं यामाया करतीहुई नटकारव्या लकीसीनाई अर यामायाका नाम अनंतछै. परंतु पांचनामतो मुख्य कहैछै. प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ विकृति ५ सोवाशक्ति शिवसूं मिलीथकी वा प्रकृति संसारकि माता प्रथम बुद्धिनैं उपजावै वा बुद्धिकैसीकहैं इच्छामई महत्तत्वजींको स्वरूपहै पाछै महत्तत्वसूं अहंकार उपजकर वैंका तीनगुण हुवा रजोगुण १ सतोगुण २ तमोगुण ३ यांतीन गुणांका परस्पर मिलापसौं यथा योग चोवीसतत्व होयछै महतत्व १ अहंकार १ तन्मात्रा ५ ज्ञानइंद्रि ५ कर्मइंद्रि ५ मन १ पंचमहाभूत ५ प्रकृति १ येचोवीस २४ तत्व ज्यांका समूहरूपी एक घर जीनैं सरीर कहैछै जीं घरमैं शुभाशुभ कर्मको भोगवावालो जीवात्मा आयकर वास करैछै अर तीनदोषनाम वात १ पित्त २ कफ ३ यांका समतुल्य. भावसौं सुष पावैछै जीनैं आरोग्य कहैछै अर यां तीन दोषांका विपरीत भावसौं दुषहोय जीनैं व्याधीनाम रोगादिक कहैछै. सो ये ब्रह्म अरु माया याकोविलास अंध पंगू न्याय ज्यौं प्रवर्त हुवो जीमैं शुभकर्मांका योगसौं जीवानैं सुषी देखकरकै तो यज्ञादिकांकै वास्तै श्रीवेद ब्रह्मका वक्ता श्रीब्रह्माजी हुवा अर शुभकर्मांका योगसौं जीवांनैं दुषीदेषकर आयुर्वेदनाम वैद्यक ब्रह्मसंहिता एक लक्षश्री ब्रह्माजी प्रगटकरी सोवै आयुर्वेदनाम वैद्यकग्रंथ जीमैंशारीरक निदान औषधी चिकित्सा इत्यादिक सर्व वैद्यब्रह्मसंहितामैं छै जींकी परंपरा प्रवर्तहुईछै सो ईग्रंथकी टीकामैं संक्षेपसौं वर्णन

करीहै मूलवचन ग्रंथांतरसौं विस्तारपूर्वकछै ज्यानैं विद्वान् पुरुष विचारलेसी अर याभी एकवात वोधज्यूं लिषींहै.

अथ आयुर्वेदलक्षण चित्र १.

आयुर्वेद जींमें आयु हित अहित व्याधि निदान शमन वेसें ओरभी घणा कारण जाण्या जाय तींनें विद्वानजन आयुर्वेद कहेंछे ईकरवे आपकी वा पारकी आयु जाणे तींनें मुनिवर आयुर्वेदका वेत्ता कहेंछे अरु शरीरको अर जीवको संयोगछै जींनें आयु कहेंछे अर शरीर जीवको वियोग होयजावे तींनें मृत्यु कहेंछे सांवे आयुर्वेदद्वारा आयुष्य अनायुष्य द्रव्य गुण कर्म ज्यांका जाणिवासों वांकासेवन त्याग ज्यांकरिके आरोग्यतासों आयुः आनारो

यतासौं अनायुः आपकी वा परायाकी जाणैं ज्यांनें आयुर्वेदका वेत्ता जाणिलीज्यो.

अथ ब्रह्मसंहिता प्रादुर्भाव चित्र २.

प्रथम सृष्टिकर्ता श्रीब्रह्माजी आपकी प्रजानें रोगग्रसित देख कर दयायुक्त करुणाकरकै आयुर्वेदनामा ब्रह्मसंहिता लक्षएक आपका नामसौ बणाई अरु आपको पुत्र सर्व क्रियादक्ष ऐसो द क्षप्रजापति तीनैं सर्वांगसंहिता पढाई दक्षप्रजापति संहितापढकर सर्वलोकोपकारक प्रयत्नकीया अरु आयुर्वेदमैं पूर्णकुशल होयकर वैद्यक परंपरा प्रवर्तकारि आगैं दक्षप्रजापति सर्व क्रियादक्ष ब्रह्म

अथ दक्षप्रा० चित्र ३

संहिता पढकर सर्व अंगसहित जो ब्रह्मसंहिता तीनें अश्वि नीके कुमार हैं दोय स्वरूप अर नीचेको धडएक उपरधडदोय ज्यानें दक्षप्रजापती पढाई.

अथ अश्विनीकुमरप्रा० चित्र ४.

ब्रह्माजीसो दक्षपढी दक्षसौं अश्विनीकुमार पढी अरु देववै द्यहुआ चंद्रमाकी क्षयीरोगकी महाव्याधी गुमाई अरु भैरव क्रोध करकै ब्रह्माजीकौ शिरकाट्यौ तीनैं पाछो जोड्यो जीसूं यज्ञमैं यज्ञभाग मिल्यो इंद्रकी भुजास्तंभन हुई जीनैं आछीकरी अरु देवासुरसंग्राममैं सर्व देवतांका क्षतनाम घाव सुधारकै सुषीकर्‍या अरु पूष्णा देवताका दांत विषर्‍याहुवा सुधार्‍या अरु च्यवन ऋषीनैं युवा अवस्था दीनी भगनामा सूर्यनैं लोचन दिया अरु ओरभी घणाइलाज कीया जीसौं सुरवैद्य प्रसिद्ध हुवो.

अथ इंद्र प्राद्० चित्र ५.

ज्या अश्विनी कुमारांप्रति सुरपति जो इंद्रहै सो वीनती करी

आयुर्वेद संहिता ह्मांनैं पढावो जद कृपा करके इंद्रकौं पढाई सो इंद्र या संहिता आत्रेय आदिक जो मुनीहैं ज्यांकौं पढाई.

अथ प्रात्रेय प्रादु० चित्र ६.

एक समय भगवान् आत्रेयमुनि सर्व प्राणिमात्रनैं रोगादिकसौं दुषित देखकर चिंता करताहुवा कहाकरै अरु कहांजावे कैसे लोक सर्व आरोग्य होय. कारण रोगादिकसौं ग्रस्तहैं ज्यानैं देखणै समर्थ नहीं हे. जींवास्ते दुखीलोक देखकै आपका हृदामैं दुखी वहोत हुवा. अरु विचार कियो. अबै आयुर्वेद पढणोचाहिये जासौं आरोग्यता होय ऐसो विचारकर ऋपी देवालय स्वर्गमें गये आगे इंद्रका मंदिरमें प्रवेशकियो जहां इंद्र आदर सत्कार यथोचित करके आगमनकारण पछ्यो जद ऋपी योकह्यो प्रजा

का आरोग्यताके अर्थ आयुर्वेदसंहिता अध्ययन करावो जदां इंद्र सर्वांगसंहिता अध्ययन कराई तदनंतर मुनि आत्रेय संहिता करी प्रजाका कल्याण अर्थ तदनंतर आत्रेय ऋषीसौं अग्निवेश भेभे जातूकरण पराशर क्षीरपाणी हारीत ये ऋषी संहिता आत्रेय जीसौं पढकर आप आपका नामकी संहितावां करताहुवा.

अथ भारद्वाजप्रादु॰ चित्र ७

कालांतर ऐसैंही एकसमय हिमवान् पर्वतके पसवाडे दैवयोगसौं ऋषी भेलाहुवा ज्यामैं भरद्वाज ऋषी प्रथम आये तदनंतर अंगि रा गर्ग मरीचि भृगु भार्गव पौलस्त्य अगस्ति अतित वसिष्ठ परा

शर हारीत गौतम सांख्य मैत्रेय च्यवन जमदग्नि गार्ग्य काश्यप कस्यप नारद वामदेव मार्कंडेय कपिष्टल शांडिल्य कौंडिन्य शाकुनेय शौनक आश्वलायन सांकृत्य विश्वामित्र परीक्षित देवल गालव धौम्य काण्व कात्यायन कांकायन वैजपेय कौशिक वादरायण हिरणाक्ष गोलाक्षि शरलोमा गोभिल वैपाणस वालखिल्य इत्यादि औरभी वहोत ऋषि केईकतो ज्ञानविधि केईक संयमी नियमी यमी अग्निहोत्री तपकरकै तेजस्वी एसर्व एकठा होयकर धर्म अर्थ काम मोक्ष यांको जो मूल नामजड कलेवरनाम सरीरहै जीनैं आरोग्य करवाकैवास्तै विचार करता हुवा कारण ईशरीरमैं रोगादिक प्राप्ति होय जद मात्र तपादिक साधनमैं अंतरायपडै च्यार वर्गकौं हानि करै जीसौं सर्वऋषी मिल भरद्वाज ऋषिकौं कही तुम इंद्रपुरी जायकर आयुर्वेद संहिता इंद्रकै पासहै सो ल्यावो जद ऋषी इंद्रलोक जायकर यथारीतसौं सर्व अंगसहित संहिता ल्यायकर सर्व ऋषी मंडलीमैं प्रवर्तकरी बहुधा प्रवर्त हुई प्राणि आरोग्य हुये दीर्घायु हुये पाछै आप आपका नामसौ सर्व ऋषी आयुर्वेद करकैं गुण कर्म द्रव्य देश काल अवस्था निदान यथायोग सर्ववैद्य होताथका अखिल सृष्टिको उपकार कर्यो ज्यांका नाम

लेकर वर्तमान समयमैं उपचार करैहै त्यांका मनोरथ सिद्धि हो यहै. चि. ८

चरक प्रादु० चित्र ९.
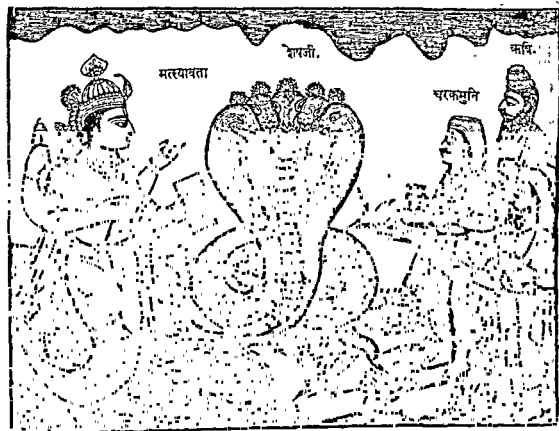
जिस समेमैं श्रीनारायण मत्स्यावतारलेकर वेदोद्धार नाम वेद काढ्या जहां श्रीशेषजी वेद वेदांगको प्राप्ति होके विचारता हुवा ज्यांमैंसौं जो अथर्वण वेदको अंगभूत जो आयुर्वेद जीनैं विचार्यो सो एक समय श्रीशेषभगवान् पृथ्वीमैं विचारता छिप्यारूपकीसी नांई मात्र लोकांनैं अनेक तरांसूं रोगग्रस्त देषता हुवा पीडायमान जहां तहां आंधा, लूला, रोगी. कोढीमर्या. अधमर्या, अनेक तरांका जीवानैं देषकै अतिदयायुक्त होयकर अनंत भगवान् मनमैं चिंताकरि जीसूं रोगांको उपचार होय सो करणो पाछै श्रीशेष

जी मुनीका पुत्र होयकर जींशरीरसौं विचरता अन जाण्या हुवा विचस्था ज्यानें कोईभी नहीं जाण्यां चरकीसीनाईं सो चरकाचार्य प्रसिद्ध हुवा जैसे देवाचार्य है स्वर्गमें तैसे सोवै शेष अंश चरका चार्य रोगांको आयुर्वेदसौं विध्वंस करता हुवा अरु आपका नाम सौं संहिता करी जींको नाम चरकहै और आत्रेय मुनीका शिष्य अग्निवेशादिक हुवा सोभी आप आपका वहुधा ग्रंथ वणायाछा ज्यांनेंभी शुद्धकरके संग्रह कीना.

अथ धन्वंतर प्रादु० चित्र १०.

एक समय देवराजकी निजर पृथ्वीपर पडी जहां प्राणी व्याधी पीडित देपकर अति करुणा करके धन्वंतरनें किंचित् कह्यो लोकां का उपकारके अर्थ तुम पृथ्वीपर जावो अर प्रजाको उपकार करो

आगे उपकार कोण नहींकीनाहे भगवान् विष्णु मत्स्यादि अवतार लेकर धर्मकी स्थापना अर अधर्मको नास कर्योहे ईंवास्ते थे पृथ्वी पर जायकर उपकार करो काशीमें जावो अरु काशीका राजा होवो आयुर्वेद प्रकाश करो जदां धन्वंतरजी ईंद्रकनें आयुर्वेद पढकर काशीमें दिवोदास नांव राजा हुवा ब्रह्माजी वडा यत्नसों राज्याभिषेक कीनो जीसो प्रख्यात काशीका राजा हुवा आपका नामसो संहिताकरि जीनें धन्वंतरी संहिता कहेंछे.

अथ सुश्रुत प्रादु० चित्र ११.

एक समय विश्वामित्रऋषि विचार कर्यो काशीमें राजा दिवोदास जो धन्वंतर वैद्यहे जींक नासों आयुर्वेद ल्याणो आपका सो

पुत्र रहा ज्यामैं एक सुश्रुत नाम पुत्र जीनैं आग्याकरि हे पुत्र तुम काशी जावो. श्री विश्वनाथको अतिप्यारीहै जीमैं उहां धन्वंतर नाम दिवोदास राजाहै जींकनैं आयुर्वेदसंहिता पढो. लोक उप कारके अर्थ पिताका वचन मानकर सत पुत्र काशीमैं संहिता पढी धन्वंतरकनैं आशीर्वाद लेकर आया अर आपका नामसौं संहिता करी जीनैं सुश्रुत कहैछै अरु सुश्रुतका सरवसत भाईथा सोभी आध्ययन करी अरु आप आपका नामसौं तंत्र मंत्र ग्रंथ रचता हुवा. सो वो आयुर्वेद एक समुद्र जीसौं वहुधा ऋषी औषध्यांका योगादिक रूपीजो रत्न सो आप आपका ग्रंथांमैं रच्या अरु वहो त प्रवृद्धी हुईछे ज्यांको अठै ईटीकामैं कहवाको कारण यहछे जो प्राचीन ऋषि वा परं परासौं ईसंहिताका जो जो आचार्य हुवाछे ज्यांका नाम लेवासूं वा स्मरण करवासूं वा वांकी कृपासूं वैद्यविद्या औषधी प्रयोगादिक सिद्धहोसी अरु संहिताकी परंपराभि ध्यानमैं रहसी अरु वर्तमान समयमें प्रसिद्धहै प्रथम जो कोईभी आरंभ करैछै सो प्रथम गुरुको स्मरण करैछे वा आपका वस्तादका नाम सौं आपहीकौ कान पकड माफ मागैछे.

अथ सृष्टिक्रम.

जो परब्रह्म परमात्माकी माया आ सृष्टीहै. सो या माया ब्रह्म को विलासमात्र ओ संसार है. गुणांसहित जो ब्रह्महै सो सगुण ब्रह्महै तीकी सृष्टीको प्रकार ईग्रंथकी २५ पचीसवी तरंगमें यथार्थ लिख्योछै, अरु शारीरक नाम या शरीरमें जो ईश्वरी रचनाकाजो कारणहै हाड मास रक्तादिक और प्राणादिक आसयादिकमर्मस्था नादिक सर्व कुदरती कारण पचीसमी तरंगमेंछे. सोविचार लेसी.

अरु शास्त्र पढेविना गुरुका साचा उपदेस विना दयायुक्त

निर्मल हियाविना परमेश्वरका भयविना जो कोई आयुर्वेदका उप चार करैहै. वै पुरुष धन मान चावैहै सोवै महा कालकूट रूपहै अर वानै जमका किंकर व्याघ्र व्याल वाछडाफाड समझणा. इ सीशास्त्रकी आज्ञाहै. जीसें उत्तम वैद्य है सो प्रथम पांच प्रकारसौं निश्चै करै सो लिषीहै. प्रथम हेतुनाम कारण निदान १ दूजोआ दिरूप नाम पूर्वरूप जीं आकारका देषवासूं आगै अमुक व्याधी होसी जीमैं दोयभेदछै एकतो सामान्य दूजो विशिष्ट सामान्य पू र्वरूप जीनैं कहैछै. दोषांका विशेषता करकै प्रवल व्याधी उत्पन्न होणैवाली ज्यांलक्षणांसूं जाणी जाय सो सामान्य दूजो पूर्वरूपहै अरु थोडी व्याधीका कारणसौं गुप्त लक्षण होय जीनैं विशिष्टपूर्व रूप कहैछै जिसी जिसी व्याधीका उसा उसाही गुप्तरूप होयहै.२ तीजी आकृती नाम रूप जो पूर्वरूप प्रगट होय कर चोडै आवै जीनै रूप कहैहै. अमुक व्याधी आहै जोरूपका लक्षण कह्याहै सो व्याधीका ज्ञान होणेकै वास्तेछै ज्यानैं रूप कहैछै. ३ चोथो सात्म्य नाम उपशय जीं उपशयका दोय विभागहै एकतो जीमैं सुखसाध्य औषधी अन्न आहार व्यवहार होय जीनै अनुपशय नाम सात्म्य कहिजै दूजो जीमैं दुःख साध्य औषधी अन्न आ हार व्यवहार होय जीनै अनुपशयनाम असात्म्य कहिजै. और ईका छै प्रकारसौ भेदहै सो जाणिज्यो हेतुविपरीत. १ व्याधीविप रीत. २ हेतुव्याधी विपरीत. ३ हेतु विपरीत अर्थकारी ४ व्याधी विपरीत अर्थ कारी. ५ हेतु व्याधी विपरीत अर्थ कारी. ६ इसाजो औषधी अन्न आहार व्यवहार ज्यानै बुद्धिवान आछी तरै वि चारै जैसैं शीतज्वरनैं गरम औषधी सूंठनैं आदिलेर गरमही अन्न अरु गरमही आहार व्यवहारसौं जीतै सो हेतु विपरीत उपचारहै १ अरु अतिसारनै स्तंभन औषधी. पाठादिक प्रमेहनैं हल्दी म

सूरादिक अन्न उसाही आहार व्यवहारसौं जीतैं सोव्याधी विप रीत उपचारहै. २ अरु वायुका सोथ ऊपर वायुहर्ता अर सोथ ह र्ता औषधी इसाही अन्न इसाही आहार व्यवहारसौं जीतैं सो हेतु व्याधी विपरीत उपशम सात्म्य सुखसाध्य उपचारहै. ३ अरु पित्त प्रधान जो व्रणसोथ जीनैं पित्तकारक औषधीसूं घटावै अरु अन्नभी इसाही अरु आहार व्यवहारभी इसाही सौ जीतैं जीनैं हेतुविपरीत अर्थकारी उपचार कहिजे. ४ जो छर्दीकी व्याधीहै जींउपर उलटी करावाकी औषधी देणी जैसेमींढल अर इसाही अन्न अर इसाही आहार व्यवहार सौं जीतैंजीनैव्याधी विपरी त अर्थ कारी उपचार कहिजै. ५ अरु जो अग्निसौं दाज्यो थकोहैं जीनैं अग्निका योगसौं अथवा गरम लेप सौं जीतै अरु मद्यसौं रोग हुवो होय जीनैं मादक औषधीसूं जीतै अरु इसाही अन्न इसाही आहार व्यवहारका उपचार करै. ज्यांनैं अनुपशय असा त्म्य कहिजै. ६ अरु अपांच प्रकारकी रीत प्रथम आछी तरैसूं शास्त्राकी रीतसौं गुरुकृपासौं विद्वान् पुरुषांसौं समजी चाहिये जींमें चारतो कहींछे अरु पांचमी जाति आगति संप्राप्ति, येतीन नाम एकहीका पर्याय वाचीहै जीं संप्राप्तीका लक्षण कहौंछौं तीनदोष वात पित्त कफ यांका दुष्टपणासौं नाम आप आपका विपरीतप णासौं ये विपरीत हुवा थका उंचा नीचा आडा टेढा अनेक भेदसूं च्यारांकानी फीरै अर जींरोगकी उत्पत्तिकरै जीनैं संप्राप्तिनाम जाति कहैछे. अथ संप्राप्तिका भेद जाणिजेसंप्राप्तिमें सात भेदहै. संख्या १ विकल्प २ प्राधान्य ३ अप्राधान्य ४ वल ५ अवल ६ काल ७ प्रथमसंख्यारूप संप्राप्ति जीनैं कहैछे. जैसें इंहींग्रंथ की दूजीतरंगमें ज्वरका निदानमें आठ जातिकी ज्वरकी संख्याहै विकल्परूप संप्राप्ति जीनै कहजै. जो आपस्सरीरमें मिल्याहु

वाजो तीन दोष वात पित्त कफ ज्यांका अंशांश विचारकरे वायु को रुक्ष धर्म पित्तकोतीक्ष्ण धर्म कफको सचिक्कणधर्म सोवे कुपथ्यका कारणांसूं अंशांश मिलकर दोष कोपकरे जदांरोग प्रकटहोय ऐसो विचारकरे सो विकल्परूप संप्राप्ति जाणिजे ३ व्याधी स्वतंत्रतें प्रधानरूप संप्राप्ति ३ व्याधी परतंत्रते अप्रधानरूपसंप्राप्ति जाणिजे. ४ हेतु आदिलेर सर्व एक होय तो बलवान् जाणो. ५ थोडा होयतो निर्बल जाणो. ६ रात्रि दिन ऋतु वसंतादिक यांमें भुक्त आहार यांका दोषानुसार समझणो सो कालरूप संप्राप्ति जाणिज्यो. ७ ओर अनेक भेदहै परंतु संक्षेप करकें कह्या हैं ज्यांका विस्तार ओर ग्रंथांसूं जाणिलेसी अरु निदान सर्वरोगांका यथार्थ माधवनिदान आदिक ग्रंथांकीरीत मुजब याग्रंथमें जहां रोगादिक कह्याहे तहां निदानभी कह्याहे अरु रोग १ रोगांकानिदान २ अर रोगांका इलाज ३ अरु गुटिका चूर्ण क्वाथ अवलेह रस भस्म इत्यादिक ४ साथका साथही जीं रोगको कारण जीहीरोगका प्रकर्णमें कह्योहे जींसो योग्रंथ घणो उपयोगीहे अरु ईग्रंथकी तरंग नाम पचीस अध्यायहे कारण ग्रंथको नाम ओषधीरूप अमृत जींको समुद्र नाम सागर अर्थात् अमृत सागरहे सोवें सागरमें तरंगां होयछे ईंवास्ते अध्यायनहीं कही अर तरंग कहीहे सोवे पचीस तरंगांको सूचीपत्र आगेछे. जींसो सर्वरोगांकी गणना सहजमेंहीं ध्यानमें आसी अरु सुगम प्रयोजन होसी.

प्रथम या ग्रंथकी उपयोगी सूचना जींनें सदाध्यान्यमें राषणे योग्य लिषूंछूं उक्तानुक्त १ उक्तायुक्त २ ओषधीसमय ३ ओषधी प्रतिनिधि ४ ओषधी प्रमाण ५ क्वाथादि क्रिया ६ स्नेहपाक ७ रसादिधातुशुद्धी ८ नाडीआदिक अष्टविध परीक्षा ९ उजनादिक

मान १० वैद्यलक्षण ११ वैद्यको मुख्य विचार १२ पथ्यापथ्यवि चार १३ मूर्षवैद्यनिषेध १४ टीका वणायकर छापणेको प्रयोजन १५ इत्यादिक समझणा अथवा कंठपाठकरणा योग्यहै जुदा जुदा पुलासा कर लिषूंछूं.

अथ उक्तानुक्त १.

प्रथम उक्त नाम या अमृतसागरमैं निदान औषधी चिकित्सा औरभी अनेक योगायोग कह्याछे ज्यांनैं उक्तआदिक योग जाणना अनुक्त नाम या अमृतसागरमैंनहीं कह्या होय जो योगा योग ज्यांनैं अन्यशास्त्रांसौं अथवा विद्वान वैद्यांकनैंसूं पढकर वाकव होणो अवश्यछै. इतिउक्तानुक्त १

अथ युक्तायुक्त २.

युक्तनाम योगकरणैं लायक औषधी आदिलेर जो पदार्थ है सो जैसे सर्व कार्यमैं नवीन औषधी लेणी परंतु वायविडंग पीपल गुड धणौं सहत मधु इत्यादि साल उतार जूना लेणा घणा जूना नहीं लेना अरु गुडूची नीमगिलोय कुडाछाल अरडूसो कोहोलो कूष्मांड शतावरी अरु गंध अश्वगंधा परेंटी वला सूंफ ये औषधी सुषीही लेणी परंतु कोई वषत आलीको संजोगहोय तो आलीका कारणसौं दूणी नहीं लेणी ओर कोईभी औषधी आली होयतो सूषी औषध्यांका योगमैं आलीनैं दूणी लेणी इसी वैद्य संप्रदाय है परंतु आलीमैं सुषीमैं गुणतुल्य रहै सोही तुल्यलेणी अर औषधी सूष्यां पाछै हीनगुण होय जायजीकी तो आली होयसो दूणीही लेणी इसो विचार वैद्यनैं अवश्यहै अरु औषधीका पांचअंग कह्याछे. मूल १ डालपेड २ पान ३ फूल ४ फल ५ ये पंचांग कहैछे, जी औषधीका योगमैं जो अंग पुलासा कह्यो होय सोतो

अंग लेणो अरु जहां अंग नहीं कह्यो होय जहां मूलही लेणों परंतु वैद्य संप्रदायसूं वाकब होणो जैसैं सूंठ आसगंध सतावरी मूसली चित्रक कटुकी इत्यादिक मूलही जाणना अरु जहां विशेषता हैं तहांनाम लिषेहीहै जैसैं एरंडमूल अर्थात् फल पत्रादिक आपका जुदा जुदा कार्यमैं लेणा होसी अरु मिरच पीपल कौंच वायविडंग पवाड अरीठा कमलगट्टा जायफल इत्यादिक फलबीजही प्रसिद्ध है अरु सनाय नाम सोनामूखी नागवल्ली कुंमारपाठो भांग गांजो इत्यादिक पानही प्रसिद्धहै अरु गुलाब सेवती लवंग इत्यादिक नामसौं फूलही प्रसिद्धहैं अरु नीमगीलोय मलेठी अकलकरो पदमाक देवदार चंदन इत्यादिक लकडीहि प्रसिद्धहै अरु कुडो दालचिनी लोद इत्यादिक छालही प्रसिद्धछे. अरु विशेष समझ शास्त्रतैं वावैद्य लोगांसूं लेणी मुष्य स्वबुद्धीको प्रभाव काम आसी जीमैं नालक बचनहै॥ रागीपागी पारखी नाडीवैद्य रुन्याव॥ गुरुग्रंथ इनकैषरा पणहिरदातणांउपाव॥ १॥ अर्थ रागी नाम रागवेत्ता पागीनाम खोजी, पारखी नाम जौंहरी रत्नपारखी नाडी वैद्य नाडीसौं वात पित्त कफ या तीन्यांका कोपसमजै परस्परअंशांश मिलकर उपद्रव करै ज्यांसौं अनेकरोग प्रगट होयछे अर समानतासौं आरोग्यता करै इसो विचार सदा ध्यानमैं राषैसो नाडी वैद्य कहीजै अरु केईक मिथ्या वार्तालापइसावी चालैहै रोगीको षायो पदार्थ छह महिना पहलीको कहदेवैछे अरु पडदांमैं बैठा मनुष्यका हातकै सुत बंधायकर वैंसूतको दूजोमूढो वैद्य आपका हातसूं पकड नाडी देषैं जीयान सूतका स्पर्श करवांसूं रोगीका रोगका अहवाल कहदेवैछे सो ये वातां कोईबी ग्रंथांमैं नहींछे परंतु इसगपाटा घणी तरैकाहै या अंध परंपरा विद्वान पुरुषांका ध्यानमैं आवणै लायक नहींहै और न्याव नाम निश्चयकरणो साचको

अर झूटको धर्मशास्त्रसैं कानूनसै वादी प्रतिवादीके माहसौं साचो अभिप्राय लेणोसो न्याव एतांके गुरु उपदेश अर शास्त्र पठनतौ खरा पण स्वबुद्धि विचारभी चाहिए इति युक्तायुक्त विचार. २

अथ औषदि समय ३.

औषधीको योग लिख्योहे परंतु औषदि लेणे खाणेकोवा पीवणे को वा अवलेह चाटणेको समय जहां नहीं लिख्यो होयतो ओषधी प्रभातही देणी अरु मुख्य औषदी लेणेको योगतो मुख्य औषध्यांमेंहीहे अरु एवजमें दूजी लेकर योग करणो सोतो गोण पक्षसाधारण होयहे ओर काढो चूर्ण वगैरे तौ प्रभातही देणो चाहिये रेचक वमन यांवास्ते तो प्रभातही देणो यांके उपर भोजन देणो तौ रेचक वमन हुवा पाछे पतलो पेजही देणो अपानवायू अधोगत होवाके वास्तै औषद भोजनके पहली देणी अरुचि वास्ते औषध भोजन करतीसमें देणी समान वायु नाभीमें कुपी तहुवां थकां अग्निमंदहोय जद अग्निप्रदीप्त करवावाली औषद भोजनका मध्यमें देणी व्यान वायुका कोपमें भोजनका अंतमें औषध देणी हिचकी आक्षेप वायू यां ऊपर भोजन पहली ओर पाछे देणी कंठस्थान वायू कुपित होयकर स्वर भेदादिक कंठ वेठणो होय जद संध्याकालका भोजनमें औषध सेवन करणी प्राणवायू हृदयस्थवायू कुपित हुवांथकां संध्याकालका भोजनका अंतमें औषद देणी तृषा ओकारी हिचकी स्वास विषदोष यां उपर वारंवार अनकीसाथ अथवा भोजनके आगे पाछे देणी कर्ण नेत्र नासारोग पाचन शमन औषध भोजनका आदि अंतमें रात्रिमें देणी इति. ३

औषध प्रतिनिध ४.

काढा चूर्ण इत्यादि कोईबी औषधका योगमें हरेक औषध मिलै

घृतमात्र बाकीरहे जैठा तांई पाक करणो पाछै वोघृत तथा तेल क पडासूं छाणलेणो जीं स्नेहकी मात्रा तोला चारदेणी पछै तौ औष धको स्वभाव समझकर देणी. इति० ७

रसादिक धातु शुद्धी ८.

पारा गंधक इत्यादिकांका शोधन तथा मारण तरंग २३ तेवी समैं पानैं ४९५ कामैंछै. इति.

अथ अष्टविधपरीक्षा ९.

और नाडी आदिलेर परीक्षामात्र प्रथम तरंगमैंछै मुख नेत्र जि व्हा मलशब्द स्पर्श रस गंध रूप यांसूं जोपरीक्षा करणी सो विधि पूर्वक येलूधरया हुवा तो साध्यहै अरु बिगड्या थका असाध्यहै यानै आछीतरै विचारणा यांको विस्तार औरग्रंथांसूं जाणज्यो और ईग्रंथको पत्रांकादि सूचीपत्र नाम षतावणीछै. सूग्रंथका स माप्तिमैंछै जीमैं रोगादिकांकी षतावणी विशेषछै और मुख्यमुख्य औषधांकीछै बाकी साधारण औषधीतो जींरोगको निदान करसी जीहीं रोगका प्रकर्णमैं सारी षुलासा मिलसी कारण सूची पत्रको विस्तार घणो होय इति ९

अथ तोलको प्रमाण १० प्रथम १

बारा १२ सरसूको एक १ यव दोय २ यवकी १ रती षट्रती ६ को १ मासो च्यारमासां ४ कीएक १ टांक च्यार ४ टांकको १ एक कर्ष च्यार ४ कर्षकी एक १ पल च्यार ४ पलको एक १ पाव च्यार ४ पावको एक सेर १ जीनैं प्रस्थ कहैछै च्यार ४ प्रस्थकी एक १ आढक च्यार ४ आढकको एक १ द्रोण च्यार ४ द्रोणकी एक १ द्रोणी होयछै. च्यार ४ द्रोणीकी एक खारी होयछै यह तोल आत्मारामजी आत्मप्रकासमैं संग्रहकर्योहै.
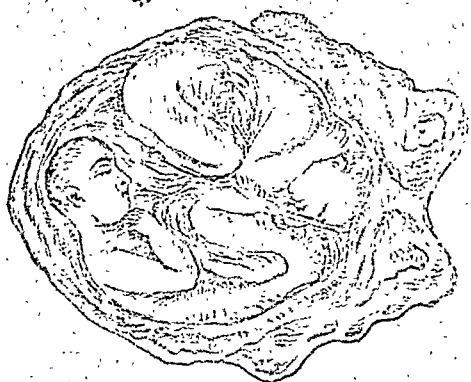
नकशो ५. गर्भस्थानमें बालक १ रहणेको.
नकशो ६. गर्भस्थानमें बालक १ रहनेको.
क चव
एक १
एक १
एक १
एक १
वाल
ंच
४ मांसांको
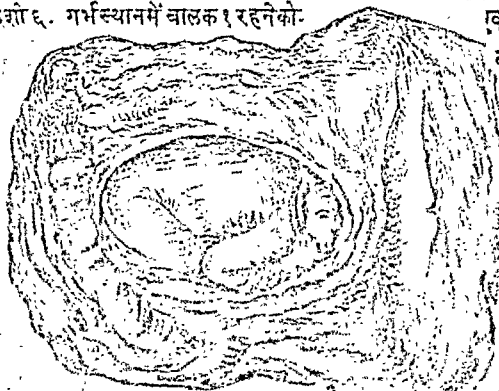
घृतमात्र बाकीरहै तौ

प

घ

स

र ईग्रंथव

तिमैछे उ

षधांकीछै

सी जीहीं

को विस्त

रा

अथ द्वितीयमान २.

मध्यवर्ती आठ ८ चावलकी रती १ एक आठ ८ रतींको मासो १ एक बारा १२ मासांको तोलो १ एक तीन ३ तोलाको टको १ एक बीस २० टकांको सेर १ एक पांच ५ सेरकी पंचसेरी १ एक आठ ८ पंचसेरीकोमण १ एकका चावल संख्य १८४३२०० ये प्रमाण फतेसिंह कवीकी दस्तूर मालिका नाम ग्रंथमेंहै.

अथ तृतीय लीलावतीमें मागधीतोलहै ३.

दोय २ जवकी एक १ गुंजातीन ३ गुंजाकी एक १ वाल. आठ [illegible]को एक १ धरण दोय २ धरणको एक १ गद्याणक चव [illegible]लको एक १ धटक ॥ पुनः पांच ५ गुंजांको एक १ [illegible]ला १६ मांसाको एक १ कर्ष च्यार ४ कर्षको एक १ [illegible]॥ पुनः ॥ पौणगद्याणक तथा वारा १२ वालको एक १ [illegible]त्तर ७२ टंकको एक १ सेर चालीस ४० सेरकी एक १ [illegible] यहतोल तुरुक संज्ञक है ॥ पुनः ॥ चवधा १४ वाल [illegible] धटक एकसो बाणवे १९२ धटकको एक १ सेर पांच ५ सेरका एक १ पंचसेरी आठ पंचसेरीको एक १ मण यह तोल आलमगीर साहकी राजधानीमें वंध्योहै.

अथ चतुर्थमान सारंगधरसें मागधी. तोल.

तीस ३० परमाणुंको एक १ त्रसरेणु तथावंसी होयछे. पट ३ वंशीकी एक १ मरीचि नाम अतिसूक्ष्म होयछे. पट् ६ मरीचीकी एक १ राई तीन ३ राईकी एक १ सर्षप आठ ८ सिरसोंको एक १ यव च्यार यवांकी एक १ गुंजा पट् ६ गुंजांको एक १ मासो जीको नाम हेमधान्यककहेंहै. च्यार ४ मांसांको [illegible]क १

शाण जींका व्यवहारीक मासा तीन ३ होयहै. जींनैं निष्क धर ए टंक कहैछै. दोय टांकको एक कोल जींका व्यवहारी मासा ६ होयहे दोय २ कोलको एक १ कर्ष सो वो कर्ष मागधी तोल को मासा १६ सोलाकोहै. परंतु वर्तमान तोलको तोलो १ एक होयछै च्यार ४ कर्षको एक १ पल च्यार ४ पलको १ एक पाव चार ४ पावको एक १ शेर नामप्रस्थहोय च्यार ४ प्रस्थको १ एक आढक नाम चोसेरीहोय जींका व्यवहारी तोला २५६ होय. अरु मागधी मासा १६ सोलाको एक व्यवहारी तोलो छै. जहां टांक मासा ४ च्यारकी कहीछै परंतु तोला १ की टांक ४ च्यार होयहै जहां वर्तमान तोलमैं बारा १२ मासांको तोलोहै. तहां तीन ३ मासांको टांक १ च्यार ४ टांकको तोलो १ एक होयहै जीं तोला १ एकको सर्व रती छयाणवै ९६ जींमैं रती ८ को मासो एक बारा १२ मासांको तोलो एक ये वर्तमान तोलहै.

प्रथमरीत.

८ रतीको	१ मासो.
१२ मासांको	१ तोलो.
४ तोलांकी	१ पल आनो–)
८ तोलांकी	१ अधपीप्रसृती.)
१६ सोलांतोलांको	१ पाव. कुडव. ।)
३२ तोलांको	१ अधशेरशराव.॥)
६४ तोलांको	१ शेर प्रस्थ. १)
२५६ दोयसोछपनतो	१ एक आढक.
१०२४ एकहजार चोईसतो.	१ द्रोण.
२०४८ दोह०अडतालिसतो.	१ शूर्प.
४०९६ च्यारह० छिनवैतो	१ द्रोणी.
१६३८४ सोलाहजार० तीनसो चोरासीतोलांकी	१ खारी
४०० तोलांकी.	१ तुला.
८००० आटहजार तोलाको.	१ भारहोयहै.

द्वितीयरीतमासो १ रती ६ को

च्यारमासांकी टांक.	१
च्यारटांकको अक्ष तोलो.	१
च्यारअक्षकोबिल्वएककातो.	४
च्याराबिल्वकोकुडवएककातो.	१६
च्यारकुडवाकोप्रस्थएक जींकातो.	६४
च्यारप्रस्थको आढकएक तो.	२५६
च्यारआढककीराशी १ एक तो.	१०२४
च्यारराशी गोणी एकतोला	४०९६

अथ पंचम मान १०.

अमृतसागर ग्रंथमैं जोमान औषधी प्रयोगमैं लिख्याछे. सो ई प्रमाणछे रती मासो टांक पईसो टको पाव सेर इत्यादिक छे सो वर्तमान समय ग्रंथकर्ताकी छी जींसमे मैं तोल बांध्याछे जींको प्रमाण याग्रंथकी टीकामैं वर्तमानसमैंके अनुकूल लिखूंछूं आठ ८ रतीको. एक १ मासो तीन ३ मांसांकी १ एक टांक च्यार टांकको एक १ तोलो तीन तोलांको एक १ टको सोवैटकाका पईसा २ दोय होयछै अठराटकांको सेर एक १ जींका तोला ५४ चोपन्न आसरेछे सोवांका रुपया ५६ छपन्न आसर होयछे. अरु आधुनिक सेर पक्को बंध्योछे. सो वो सेर टका अठाईस २८ भरकोछे सेर ४० चालीसको मण १ एक अठरा १८ टकाभरसुं मण कच्चो होयछे अरु अठाईस टकाभरसुं मण पक्को होयछे, प्राचीन रीत कच्चामणसुं ग्रंथकर्ता गिणैंछे इतिमान प्रमाणसमाप्तं १०

वैद्यलक्षण ११.

गुरु मुपसों सुणकर पढी हुवी जो विद्या वैद्य शास्त्राकी जींमें निपुण, और हातमैं जस, ओर जुलाव, ओकारोंकी क्रियामें कुशल, निर्लोभी, धैर्यवान्, कृपालु, पवित्र, निष्कपटी, सत्यवादी, आलसरहित, दयावान्, एता जींमें लक्षण होय सो वैद्य ओषद देवानैं योग्यछे. इति० ११

वैद्यको मुख्यविचार १२.

प्रथम वैद्यनैं सूक्ष्मरीतका पूछणांसोंरोगीकोमूल कारणनामको एसो रोग कोणसा कारणसुं हुवो यानिश्चय करणो पछे साध्य असाध्य, कष्टसाध्य यांको विचार करणो. साध्य अथवा कष्टसाध्य

रोगीहोय तो उपाय करणो असाध्यहोय तो उपाय नहीं करणो कारण असाध्यको उपाव हरिभजनछे इति० १२

पथ्यापथ्यविचार १३.

रोगीनें वैद्य कहेसो पथ्य करणो अवश्यछे अथवा रोगीआपका मनसौं विचारकर पथ्यतो करैंहीं कारण पथ्यका कारणासें रोग निवारण होयछे, जद औषद षायकर पथ्यकरे जींको रोगतो निं वारण होय जीमें संदेहवी नहीछे ओर जोरोगी पथ्य करणे वालो जीनें औषधी सेवन करणैकी गरज नहीं जिस तरेंही रोगी पथ्य नहीं करणेवालो जीनेंवी औषध सेवन करणैकी गरज नहीं कारण अपथ्य रोगी मरे न जांवे इति०.

मूर्खवैद्यकी औषधी लेणानिषेध. १४

रोगीनें मूर्ख वैद्यका हातसौं औषध लेणी नहीं, व्याधीमें पीडितहोय. ज्वरसौं दूखीहोय तोबी मूर्ख वैद्यकी औषध लेणी नहीं कारण मूर्ख वैद्यका उपावसौं गुण आवणोतोकठिणछे पण ओगुण तो जरूरही तुरत होय. इंवास्ते मूर्ख वैद्यकी औषध लेणी नहीं जैसे कुलीन पुरुष व्यभिचारिणी स्त्रीनें त्यागदेवैछे जियान मूर्ख वैद्यका हाताकी औषध त्याग देणी इति० १४

ग्रंथछापणेको प्रयोजन १५

सर्व लोक हितकारक अमृतसागरनें सातवींवारमें हमारी नवीन टीका संयुक्त करके हमारा प्र० ज्ञानसागरमें शुद्धकरके छाप्यो हे जींकी किंमत सुलभ, प्रयोजन गणो सर्व कोइनें मिलसके ईंवास्ते याग्रंथको वांचकर कोईवी मूर्ख वैद्य, धुतारा, ठग, वाचाल

लालची यांकी खोटी औषधरूपी फांसीमें पडसी नहीं इसी हमारी खातरीछे. १५

इति उक्तानुक्तादि पंचदश प्रयोग संपूर्णम्. १५

अथ अमृतसागरमें तरंग पचीसछे ज्यां तरंगांमें जुदी जुदी रोगांकी गिणति करीहै, ज्यां पचीस तरंगांका सूचीपत्र प्रथम भागमें लिख्याहै वाकवीके अर्थ सो जाणजो.

अथ पंचम ५ तरंगमैं पृष्ठ ९२.

रक्तपित्तरोग १३ राजरोग १४ खासरोग १५ हिकानामहिच कीरोग १६ स्वासरोग १७ एतारोगहै.

अथ छठी ६ तरंगमैं पृष्ठ ११६.

स्वरभेदरोग १८ अरोचक अरुचिरोग १९ छर्दीरोग २० तृषारोग २१ मूर्छारोग २२ मूर्छा मोह भ्रम तंद्रा निद्रा संन्यास ये सर्व मूर्छामें आवांतरहै एतारोगहै.

अथ सप्तम ७ तरंगमैं पृष्ठ १३१.

मदात्ययरोग २३ उन्मादरोग २४ मृगीनाम अपस्माररोग २५ एता रोगहै इति ७

अथ अष्टम ८ तरंगमैं पृष्ठ १५२.

वातरोग २६ वातव्याधीरोग ८० अशी प्रकारकोहै कोईक आचार्यका मतसो चौराशी वातव्याधीहै ८४ इति ८.

अथ नवम ९ तरंगमैं पृष्ठ १८३.

ऊरुस्तंभरोग २७ आमवातरोग २८ पित्तव्याधिरोग २९ कफ व्याधीकोरोग ३० एतारोगहै.

अथ दशम १० तरंगमैं पृष्ठ १९३.

वातरक्तरोग ३१ सूलरोग ३२ जींसूलरोगमें तीन भेदहै परिणामसूल १ अन्नद्रवसूल २ जरत्पित्तसूल ३ [illegible] आवांतरभेदछै एतारोगहै.

अथ एकादश ११ तरंगमें पृष्ठ २०७

द्वादश १२ तरंगमें पृष्ठ २२९

अथ त्रयोदश २३ तरंगमे पृष्ठ २५६.

अथ चतुर्दश १४ तरंगमें पृष्ठ २६८.

अथ पंचदश तरंगमें पृष्ठ २८३.

अथ षोडशवें १६ तरंगमें पृष्ठ ३१४.

अथ सप्तदशमी १७ तरंगमैं पृष्ठ ३४१.

शीतपित्त, उदर्द, कोठ, उत्कोठ, जीनैं पित्तीरोगकहैंछे. ६७ अम्लपित्तरोग ६८ विसर्परोग ६९ स्नायुकनाम वालो, तथा नारूरोग ७० विस्फोटकरोग ७१ फिरंगवाय अथवा उपदंश वायूखराबगरमीको रोग ७२ मसूरिका नाम रोग ७३ सीतला वोदरीभोरीये मसूरिकामैं आवांतर भेदछे.

अथ अठरावीं १८ तरंगमै पृष्ठ ३६६

क्षुद्ररोग ७४ मस्तकका रोग ७५ नेत्रांका रोग ७६ कर्णनाम कानका रोग ७७ नाशिका नाम नाकका रोग ७८ मुखका रोग ७९ ओष्टनाम होठांको रोग ८० मसूढांका रोग ८१ दंत नाम दांतांका रोग ८२ जिव्हानाम जीभकारोग ८३ तालूनाम तालवांका रोग ८४ कंठ रोगनाम गलाका रोग. ८५ एता रोगछे.

अथ उन्नीसमीं १९ तरंगमे पृष्ठ ४४२.

स्थावर विषनाम वृक्षको शस्त्रको सोमलको ओर कोईभी जड पदार्थसौं विषहोय ज्यांको उपद्रव होय जीनै स्थावर विषरोग कहैंछे ८५ जंगमविषनाम सर्पादिक जीवमात्रसौं दंत, नख, मूत्र मल, स्पर्श इत्यादिकसौं विषका उपद्रव रोगहोय जीनैं जंगम विषरोग कहैंछे. ८७

अथ वीसवीं २० तरंगमे पृष्ठ ४५२.

स्त्रीरोग ८८ स्त्रीरोगमैं आंवांतर भेदहै सो लि० प्रदररोग १ सोमरोग २ मूत्रातिसार ३ योनिरोग ४ योनीकंदरोग ५ वंध्यारोग ६ कीलरोग ७ मूढगर्भरोग ८ मल्लकरोग ९ सूतिकारोग १० स्तनरोग ११ एतारोगहै.

अथ इक्कीसवीं २१ तरंगमें पृष्ठ ४७२.

वालरोग ८९ वाल रोगमें एता भेदहै वालग्रह नव ज्यांका सर्व भेदहै वालकांका सर्व रोगांका जुदा जुदा भेदहै सो अनुक्रमसों सूचीपत्रमें मिलसी इति.

अथ वावीसवीं २२ तरंगमें पृष्ठ ४८९.

* पंडरोग ९० पंडनाम नपुंसक रोग जींके वास्ते उपचार वहुधा लिख्याछै. वावीसमी तरंगमे संक्षेपसों लिख्याहै विशेष निधान माधवादिक ग्रंथांमें देप लेसी इति रोगादिक्रम समाप्तः

अथ तेवीस २३ वीं तरंगमें पृष्ठ ४९९.

अथ औपधी क्रिया—धातुशुद्धि, धातुमारण, मृगांक, रूपरस, तामेश्वर, नागेश्वर, वंगेश्वर सार, सुवर्णमपी, अभ्रक, हरताल, चंद्रोदय, रससिंदूर, पाराभस्म, वसंतमालती, हिंगलू, इत्यादि क्रियाहै.

अथ चोवीसवीं २४ तरंगमें पृष्ठ ५०४.

दशमूल आसव शिलाजीत जवपार चणापारस्नेहविधि स्वेदविधिः वमन, विरेचन पट्‌ऋतुमें हरडे लेणेकीविधि वस्तिकर्म धूमपान धूप रक्तस्राव एता कार्यहै.

---

* पंडरोग पांच प्रकारकाहै. ईर्ष्यक, आसेक्य, कुंभीक, सुगंधी, पंड, जींकै दूजांरो संगम देख्यां चेतना होवछै. सो. ईर्ष्यक नपुंसक. १ जींकै स्त्रियादिकांको आलिंगनकियांसूं चेतना होयसो. आसेक्यनपुंसक. २ जींकै स्वगुद मर्दन करायां चेतना होयसो कुंभिकनपुंसक ३ जींकै योनीकीया लिंगकी गंध वास लियां चेतना होयसो सुगंधि नपुंसक. ४ जो स्त्रीकीसी चेष्टा करै सो षंढहै. वीर्यहीनहै. असाध्यहै. जोरस्त्रीमा प्यार पंड कहणा व्हैहै. याही रोगारो उपाय बाईसमी तरंगमें है.

षट्ऋतुवर्णन त्रिदोष कोपका आहार व्यवहार षट्ऋतुसेवन प्र० दिनचर्या रात्रिचर्या सिखरण मठो षट्ऋतु स्त्रीसंग शारीरक सृष्टिक्रम प्रकृती निद्रा सर्व वर्णन है.

इति तरंग पच्चीस संग्रह संपूर्णम्.

अथ अमृतसागरका प्रथम भागमें द्वितीयभागकी सर्वऔषधी संग्रह अथवा निघंट अर्थात् जो अमृतसागरमें औषधीमात्र लिषीछे. ज्यां औषध्यानें भिन्नभिन्न प्रथमांककी रीतसौं जेसें अरडुसो अजवायण अजमोद येसर्व अकारादिक औषधी अकारका समूहमें मिलसी ककारका समूहमें कचूर कटाली कमलगठा अरु हकारका समूहमेंहलद हरडे हरताल इत्यादि सर्व औषधीका नाम षुलासा मिलणेंकैवास्ते प्रयासकरकें ईग्रंथमांसौं प्रथमभागमें लिष्याहै. जो कदाचित् औषधीका योगमें औषधीकी पिछाणमनमें संभ्रम रहे तो यह निघंटमें देष लेवे अरु सुज्ञ जनानें तो विदितहै. परंतु अविदित् जनांके तांई टीकामें वहुत महनत करीहै.

अ

अरडुसो–वृष आटरूप वासक षासरोगमें प्रसिद्ध.

अजवायण–प्रसिद्धहै यवानी जापामेंदे.

अजमोद–अजमोदागरम लघु नेत्रामय कृमी छर्दी वस्तिरोगहरे.

अरणयु–अरणी अग्निमंथ गरमहै.

अरलू–फलविशेषहै अलांबू आल.

अरणी–इरणी श्रीपर्णी अग्निमंथ.

अतीस–अतिविष अतिविषाक डर्वीगरम.

अभ्रक–भोडलकीभस्म पुटासिद्ध करीगुणहे.

अकलकरो–आकलकरो आकार करभ करहाट गरम.

अरंडकोतेल–इंडोलीको तेल एरंडचोतेल.

अलसीकोतेल–अलसी प्रसिद्ध

अफीम–अहिफेन अमल आफूकोदूध.

अनारदाणा–दाडमका बीज प्रसिद्ध.

अ.

अमलवेद–षटाईकोफलषाटानिं वुकी जातमैं.

अरंडकोखार–एरंडवृक्षकिराष करजलमैं धोयकरकाढे सो षार.

अम्रीझाल–सुफेदचित्रावल हो यछै.

अरहड–अर्हंड धान्यहै.

अलताकोरस–अलतानाम अ लताईकोरस.

अगर–अगरकाष्ठ प्रसिद्धहै सुगं धी दारु कृष्णागरु.

असाल्यूं–हाल्यूं नामहै चंद्रसूर तीक्ष्णहै असालूं.

अजवाणकोअर्क–यंत्रसोंवाफ को उडाया अजवाणअर्क.

अद्भुतवस्तु–आश्चर्यरूपी नवी न वस्तुदेपणी.

अगस्त्याकोरस–अगस्तका पु ष्पस्वेत आवे कार्तिकमैं महा त्म्यहैं जोंकोरस.

अलसी–धान्य प्रसिद्धहै.

अरंडोली–एरंडका बीज.

अरवीकीजड–अरी अरवी गु हियां.

अ.

अरडूसाको खार–अरडूसाका पंचांगको खार.

अमचूर–आमका अधकाचा फ लांकी छाल.

अरणाकोरस–इरणीका पानको रस.

अहरणीकीराष–लूहारका अह रणकैं मांहिली भस्म.

अधोपुष्पी–उंधा होली अधोपू ष्पी नीलोफूल होयहै.

आ.

आधींझाडाकोरस–अपामार्ग का पानाको रस.

आरणाछाणाकीराष–जंगली छाणाकीभस्म.

आमीहलदी–आमाहलदीप्रसि द्धहै.

आंवलांका झाडकीवकल–धा तृकापेडकी छाल.

आदो–आर्द्रक अदरक प्रसिद्ध.

आककीजड–अर्ककोमूलआक डाकीजड.

आसगंध–अश्वगंधा नागोरी आसगंध प्रसिद्ध.

आ.

आवला–धात्रफल.

आमकीगुठली–आमका फूल मांहिलीमींजी.

आककानवापान–अर्कपत्रको मल.

आककोदूध-अर्कदुग्धप्रसिद्धहै

आंवलाकोरस-धात्रफलांकोरस

आंदाहोली–अधोपुष्पी ऊंधाफूलकी नीलाफूल.

आंदीझाडाकीजड–अपामार्गकोमूल.

आककाफूल– अर्कपुष्पप्रसिद्ध

आंवलाकीमींगी-धात्रफलांकी गुठलीमाहिलीमींगी.

आमका पानल्लपव–आम्रपल्लवकोमल.

आसो आसव–औषध्याकोअर्क यथोक्त.

आंवलाकापान-धात्रवृक्षका पानकोमल.

आंवलासार–आमलासार गंधक प्र.

आमलीकोखार-आमलीका वृक्षको रापमंनूं काढे.

आ.

आमकीवकल–आम्रका पेढकी छाल.

आकका पंचांगकोखार–अर्क पंचांगको खार.

आमलीकाचिया–आमलीका बीज.

आफु–अफीम अहीफेनअमल

आककी डोडीका बीज–अर्क पुष्पकीमध्य चोफूली.

आमकी छाल–आम्रका पेढकी वकल.

आसापालाकीवकल–आसपालाकीछाल.

आमकीजड–आम्रकी जटा आम्रमूल प्रसिद्ध.

इ.

इलायची–एलची छोटी एला गुजराती.

इंद्रजव–इंद्रजो कूडाकाबीज कडवा मीठा.

इंद्रायणीकीजड–तस्तूंबाकी जड तथामूल.

इकपोतयो ल्हसन–जोल्हसण मे एकही गंथी होयछे.

इ.

इंद्रायणी—तस्तुंबो गडतुंबो इंद्र वारुणी.

ईंट—मृतीकाकी ईंट पकाई हुई जुनी काम आवैहै.

इच्छाभेदी—जुलाबकै तांईरसछै ईकी गोली गुंजा प्रमाण.

ई

ईर्षा—ईर्षा द्वेष, औषधीमैं लेतां अरुची, ग्लानी, द्वेषहोयसो

उ

उदयपर्णी—उडदपर्णी ऊडदजिसापान होयसो

उतारो—बालकांके ऊपर उतारो धरै उतारकरकै

उत्तर—औषधी लेतां पाछो उत्तर करै नहीं लेवों

ऊ

ऊंटडीको दूध—स्यांडणीको दुग्धप्र.

ऊकडूबैठणो—विषम आसणबैठै दोय पगांपर

ऊंटको मूत—प्रसिद्ध उष्ट्र

ऊंदराको मासको घत—चरबी प्रसिद्ध

ऊ

ऊंदराकी मीगणी—मूषकविष्ठा

ऊंटका बाल—प्रसिद्ध

ए

एरंडकी जड—एरंडमूल स्वेत रक्त

एलियो—एलयो सिकोतरी सा

ओ

ओटायो दूध—दूधको रावड्यो सादो, तथा मीठो

औषध—तयारकरकै रोगीनैं देवालायकसो

ओस—सीतकालमैंप्रभातकी समयमैं मूक्ता दीषै

ओसरो—तापको, नित्यआणो तथा एकांतरो, तेजरो, चोथोसो

औ

औषधी—बुंटी, झाडपालो, जाड रस, भस्म इत्यादि

अं

अंकोट—अंकोल वृक्ष विशेष, फलवृक्ष विशेष, सुंगधी

अंधतानेत्रांका—रोगकी उन्मत्तताकी निर्लज्जताकी

अ

अंजरूत–औषधी अत्तारकी दुकानमें गूंद विशेषहै.

अंतर–अत्तर गुलाब केवडो मोतिया वगैरेको तेल.

अंक–एकसो ओदिलेर नवतांइ

क

कलूंजी–कांदाकाबीज आचारमें मुसाला भेला पडेहै.

कठसेलो–फूलकोझाड. कालाफूलको तथापीलोफूलको हो.

कठवर–कवींठ कैथ कटुंवर.

कुसुंबकाफुल–प्रसिद्ध कसुंभो

कबुतरकीविट–कपोतविष्ठा.

कमलनीकापान–कमोदनीका पान.

कडवककैंडाकापान–कर्कोटक

कतीरो–कतीरोगुंद. जलमें भिजोयां फूले है.

कडछल्यो–छोटो कडावाल्यो दोयकडांवालो.

कहुवाकोपार–कहूवोवृक्ष प्र.

कलूजडकोजड–कलुंजन पानकोजड.

क

कणगगूली–दाणादारगुगल प्र.

कटूंवर–कठोडी कवीठकीगीर.

कवीट–कवीटफल कैथकोझाड फल.

कवलकीनाल–कमलकी नाली पान.

कपूर–चिणियोकपूर आरतीकपूर.

कटालीका फूलांकी केसर–पसरकटालीकी.

कठ्यादिपदार्थ–पित्तकारजमें आवेसो.

कचुर–नरकचूर.

कमलाकाफूलकीकेसर प्रसिद्ध

कटाली भूरीरिंगणीपसरकंटालि

कणगचकाबीज–गजका सागरगोटा.

कडवी तोरूंकीजड–जंगलीतुराइ कडवीको मूल.

कल्हारी–कलाली लांगली उपविषहै.

कमलगट्टा–कमलकाकडी पद्मोडीकमलबीज.

क

कणगच—करंज करंजवा. बहु कंटकी कंटकफला.

कडवींतुंवीकीजड -तूंबीकीवेल की जडकडवी.

कल्हारीकीजड—लांगलीकीज डमूल.

कडाका—लंघन. उपवास. निरा हारा. अनसन.

कमलगटांकीमींगी-पवोडीकी गिर मगज.

कणगचकीजड—करंजकोमूल.

करेलण—करेलाकीवेल. वागकी वा जंगली.

कडवीतुंवीकीगिरकोरस-तुवां की गिरको रसकडवो.

कज्जली—शुद्धपारो, शुद्धगंधक यथोक्त षरल करै.

कस्तुरी—मृगमद. कस्तूर्यामृग कीनाभीमें होय.

कडवोतेल—सिर्सुको सर्षपको तेल आचारमें पडैसो.

कपासकीजड—वएयाकोमूल वणकीजड.

क

कमलकी पांपड्यां—कमलपुष्प कादल

कपास्या—काकडा कुपासकावी जवणकावीज.

कवारका पाठाकोरस—कुमारी कोरस कुमारपठाको.

कलमीसोरो—शुद्धसोरो काडी कोसोरो.

कचलूण—प्रसिद्धहै पंचलूणमें

कटाली—ऊबकटाली. मोटीक टाली.

कटालीकोपार—भूरीरिंगणीको पार.

कदमकोपार—कदमकाछोडांको पार.

कहुवारूंपकी वकल—कहुवाकी छाल.

कसकीजड—गांडरकाघासकीज ड पसका. पडदा होयसो

कवलकीजड—भे तथाढिसी क मलमूल,

कमलकीवकल—कदमकी छाल

कदमकापान—प्रसिद्ध.

क.

कहवाकापान—प्रसिद्ध कहवा वृक्षका पान.

कपासकीमींगी— काकडांकोमगज.

कहवारूपकी—जड नाम मूल.

कसौंधीकीजड— कसौंधीकाफुलका झाडको मूल.

कपेलो—लालमाटी लालरेतजैसी बालकांकूं देवैंहै.

कचनारकीवकल—कचनारका झाडकीछाल.

का.

काथो—पानकीसाथ पावैसो.

काचानारेलकापाणी-नारेलमें पाणी नीसरैसो.

कालासर्पकामांसकोघृत—सर्पकोवसा.

कांगणी—मालकागणींका बीज होयछे.

कालाधतुराकाबीज- धतूराका डोडांमेंसूंनीसरैसो.

कालेभोडल—कृष्णाभ्रक कालोअभ्रक.

क.

कामलोऊनको—ऊनको कंबल जाडासूतको.

काचकीआतसी सीसी—पाकी सीसीआंचपर ठहरैसो.

कांचली सर्पकी—सर्पकंचुकी.

कायफल—कायफलकाछोडाप्रसिद्ध.

कालीमिरची—प्रसिद्ध.

काकडासींगी—कर्कटसृंगी मेपसृंगी.

कालोजीरो—काली जीरीप्रसि०

कांजी—दालकावडामें पाणीऊगटावे. सोवो पाणी.

काकोली—अष्टगणवर्गमें है देशांतरमें.

कांसकी जडकोरस—कांसघास प्रसिद्ध स्वेतपुष्प.

कागलाकीवींटा—काकविष्टा.

काकलहरी—जडीप्रसिद्ध,

कालातिल—प्रसिद्ध.

कालीमाटी- कालीमृतिकासचिक्कण.

कांसीकीथाली—कृष्णधातुकापात्र.

कि.

किरमालो—गिरमालकीफली आमलतास.

किसोख्या—जीव. पक्षीहै. और वुटीवीहै.

किरमालाकीजडकीवकल-जडकीछाल प्रसिद्ध.

किरमालाकापान-आमलतासकापान.

किस्तूरी—कस्तूरी, मृगनाभी प्रसिद्ध मृगमद.

किरायतो—चिरायतो भूनिंव कडवो प्रसिद्ध.

कीस—गऊको तथा महिषीका प्रसूतको प्रथमदुग्ध.

कीकर—वंवूल वँवल,

कु

कुटकी—तिक्तकडूरेचनीतापमेंप्र

कुमेरपाठ—पाठा पाडलवृक्षप्र०

कुलंजन—पानकीजड,नागरवेलको मूल.

कुलथ—धानविशेष कुलथी.

कूकडाकाअंडाकोरस—मूरगाका अंडा.

कू

कूचीला—कुचीलकाबीज प्रसिद्ध उपविषहै तिंदुकः विषतिंदुक

कूंदरू—रूमीमस्तकी गुंदसुगंधी

कूठ—कोष्ठकी लकडी कूट शाल्मली वृक्ष

कूडाकी—छाल कुडाछाल इंद्रवृक्ष

कूंचकीफली—वानरी मर्कटी रोमफला

कूडाकोखार—कूडावृक्षकोखार सर्वखारकरणेकी एकरीतहै

कूकरभांगरो-वरसातकीमौसममें होयहै

के

केली—केलाकोपेड प्रसिद्ध

केशर—प्रसिद्धहै नैपाली कास्मिरी कुंकुम

केवडाकोअरक-केवडांकाफूलांको वाफसुं उतार्यो.

केलीकापान—केलाकावृक्षकापान प्र०

केवडाकोखार—केवडाकावृक्षकोखार.

के

केलीमाहिलीसुपेदगिर—केलाकापेडकोगर्भ,

केसुलांकोचूरण—पलासका फलांको चूरण

केलीकापानाकोरस—केलाका पानाकोरस

कै

कैथकोरस—कवीठकोरस

कैथ—कवीठको झाड

को.

कोयलकावीज—कोयलीवेल अपराजितकावीज.

कौंचकावीज—कौंचविज वानरीमर्कटी वीज (कं)

कंडीरकापान—कन्हेरकापान

कंडीरकीजड—कन्हेरको मूल

कंडीरदानुकीछाल—कन्हेरलाल स्वेतकीवकल

ख प

खस—गांडरकी जड सुगंधि खसवालो तृणविशेष

खरेटी—बलाबल प्रसिद्ध

खपर्यो—खर्पर देसीतो जाडोहो य चिणाई पतली नली.

खटाई—अम्लरसं निंबूआदिलेर तथा पटाईकी गोली

खरवटाको रस—खरवटाका पानाको रस वा पंचाग. ५

खरैंटीकी जड—बलकीजडवलाको मूल.

खल, खली—पिण्याक तिलांकी पोपराकीपल

खसखानू—जठेपसपसकापंखा पडदा सुगंधीहवा

खा

खावाकोचुनूं—उत्तम कलीको मकरणांको पथ्यरको

खारीलूण—खारी अन्यत्र जमायो विरसलूण

खारकोजल—जींमेंसूं खार नीसरेसो जल विनाजम्यों,

खार कुठार—खारकी औपधी पचाईहुईसो,

खातकीजमी—जीं जमीनमेंवकरीढंगेरकी मींगणी विछावेसो

खालकोधूवो—चर्मको धून्र,

खीचडी—चावलदोय भाग, मुंग एकभाग, मिलायेसो,

ख.

खीरकाकोली-अष्टगणवर्गमेंहै देसांतरमें मिलै,

खीलकोसातू-चावलांकीफुली नें पीसकर चूनकरै,

खींपकीजड-खींपडाकीजड प्रसारणी स्पर्श, कंडू

खींपकोरस-प्रसारणीखींपडा कोरस,

खींप-खींपडो, प्रसारणी फुफुंद्याफली शाकहोयछे.

खुरासाणी अजवाण-अन्यदें शोद्भवा, पुरासाणी,

खैरसार-खैरका वृक्षको सार होयछे.

खैर-खैरनाम खदिरवृक्ष, दुष्ट कंटक बांका कांटा.

खैरकापान-खदिरपान, खैर कापान,

खैरकोगूंद-खैरीगूंद प्रसिद्धहै,

खैरकीछाल-खदिरछाल तथा वकल पेडकी.

ग

गउकोमाखण-गऊकादूग्धको नवनीत, लुण्यूं, मसको.

ग

गवुकोमठो-गवूकादधिनें कपडासूं छाणै तथा विलोवैसो

गवूकीछाछ-गवूका दधिमांहसूं मापनकाढै पाछैरहैसो,

गवारपाटो-कुमारपाठोकुमारी पत्र, घीकुमार,

गजवेलकापत्र-पेडीका तथा पक्का लोहका पत्र,

गहुं-गोधूम धान्या विशेष,

गजपीपलि-गजपीपल मोटी पीपल, प्रसिद्ध.

गरमवस्तु-तुरतकी करीहुई गरमागरम.

गरमकांजी-तुरतकाकांजीवडांकापाणीकी,

गवुकोदांत-गायकोदांतगोदंत

गद्दाकोदांत-गर्दभदांत गधेडांको दांत

गडुंबाकीजड-इंद्रायणीकोमूल तस्तुंबाकी जड,

गधाकोमूत-गधैडाको मूत्र

गजवेलकोचूरण-पकालोहको तथा पेडीकोचूरण

ग.

गाडरको मूत–लरडी भेडिको मूत्र.

गिलवै–नीमगीलोय नीमकाझा डउपरकी.

गिलवैको रस–नीमगिलोयको रस,

गुड–गुलप्रसिद्धहे.

गुलावकाफूल–प्रसिद्ध.

गुल्हरका अंकुर–ओदुंवरकी कूंपलां

गुडकीचासणी–गुलकीराव तथा गीलो गुल

गुल्हरकी वकल–ओदुंवरका झाडकीछाल.

गुगल–गुगल, भैंसागुगल, प्रसिद्ध गुगलधूपहे,

गुल्हरकीजड–ओदुंवरकी जड तथा मूल,

गुगलकीजड–गुगलकाझाडको मूल,

गुलहवासकापान–हवूलास, तथागुलहवासपान,

गुडहल–गुडहलनाम जडीप्रसिद्द, गूलतुरा.

ग.

गुलकंद–गुलावका फूलांको गुलकंद मिसरीको,

गेरू–सोनागेरू, प्रसिद्ध, सुवर्ण मंजनी,

गोरीरस–हंसराजनामजडी पर सुस्यान.

गोपरू–दिपणी गोपरू, त्रिकंटकी,

गोमूत्र–गवूकोमूत्र, वाछडीकोप्रसिद्ध,

गोरपकाकडी–गोरपीगोरख्या,

गोपरूकोपंचाग–जड, पेड, पान फूल, फल,

गोलकाकडीकीजड–पटोलकी जड, टींडूराकी,

गोवर–गायको गोवर,

गोरपमुंडी–मुंडीजडीप्रसिद्ध,

गोहांकीवाटीअलूणी–प्रसिद्ध

गोरपमुंडीकोपार–पंचांगको पार.

गोहांकातुस–भूसो, आटाकोछाणस,

गोरोचन–गोलोचन सुगंधी पदार्थ.

ग.

गोपीचंदन—द्वारकाकीमृतिका,
गोबरकोरस—प्रसिद्ध.
गोसाल—गवांकीरहवाकी साल,
गंधकआंवलासार—प्रसिद्ध.
गंधकशुद्ध—शुद्ध आंवला सार,
गंगेरणकीछाल—नागबलागुड सकरी.

घ.

घरकोधूमसो—प्रसिद्ध.
घोडाकीलाल—घोडाकामूढासौं जलझरयोडो.
घोडाकोमूत—प्रसिद्ध.

च.

चव्य—चव, पीपलामूलका डांडा
चमेलीकाफूल—प्रसिद्ध.
चमेलीकोतेलसुगंधीतेलफुलेल
चांवलाकीपील—चावलांकी धाणी.
चावल—तांदूल.
चाककीमाटी—कुभारका चाक कीआली मृत्तिका.
चारोली—चिरूंजी, मेवोप्रसिद्ध.
चादरकोछुडावो-होदकी,तलावकी, चद्दर, छूटैसो.

च.

चीरायतो—किरायतो, कडवो भूनिंब.
चित्रक—चीताकीजड, सुपेदचित्राकल.
चिणपार—चिणाकापाना उपर सौ ओसकोपाणी.
चीणियांकपूर—आरतीकपूरप्र.
चिमत्कारामणी—परासिंहकी उत्तम मणी गुणयुक्त.
चिरपोटण—मकोप्रसिद्ध काकमाची॰
चिरमीकोपंचांग—गुंजाकीवेल कोपंचांग.
चिरुंजी—चारोली मेवो प्रसिद्ध.
चीलवो—बथवो वास्तु वडो छोटो.
चीरोदेणो—नस्तरविद्या.
चिकणीवस्तु—सचिक्षण सचिक्कण गिलिटवस्तु.
चीणीकोवासण—चीणाईरकेबी उगेरे.
चीड—चीडांकाचकी. गहणामें पोवै.

च.

चूकाकोरस—चूकोषाटो शाकपत्रहै.

चूरमो—रापोड्यो तथाचुंटवौं. तलवांसकरको.

चूनांकोपाणी—कलिकोधोयोनीतख्योशुद्धपाणी.

चूनो—कलीकोचूनो पानतमाषुकी साथखावाको.

चोहटो—च्यारमार्गएकजगांमिलै सोचोचटो.

चोप—चोपकोमूल जडहोयछै. पाजकै चोपडे.

चौंलाईकीजड—तांदली, तांदल्यांकीजड मूल

चौंलाई—चंदलेई, तांदली, तांदल्यो.

चंदन—स्वेतमलयागर, सुगंधी, वा० रक्त.

चंदनकोरस—चंदणका, काढाकोपाणी.

चंपाकीजड-चंपाकावृक्षकोमूल

चंद्रोदय—सुवर्ण, शुद्धपारो, शुद्धगंधक, यांकोरस, बणावैसो.

छ.

छड—छडछडीलो,सुगंधीप्रसिद्ध.

छडछडीलो—छड, प्रसिद्ध, सुगंधीऔषधी.

छछुंदरीकोतेल—प्रसिद्ध जीवविशेष,

छिवारो—पारक मेवो.

छीलाकोरस—पलास, ढाक, ब्रह्मवृक्ष,कोमल पानांकोरस.

छिलाकीवकल—पलासकीछाल

छीलाकोपार—पलासकोपार.

छीलो—पलास ढाक, छिंवरो. ब्रह्मवृक्ष.

छोटीकटाली-पसरकटालीभुरीरिंगणी, स्वेतपुष्पकीलक्ष्मणा.

छीलाकीजड—पलासकोमूल.

छंतरा—अफीमका फलांकाछोडातिजारो.

ज.

जवासो—दुरालभा.बहुतकंटकी, सीतल यवास.

जलभांगरो—भृंगराज. स्वेत. कृष्णमांको, भंगरो.

ज.

जमालगोटो–नेपालोदंतीबीज शुध ग्राह्यहै.
जंभेरीकोरस–जंभीरीषाटोफल है, जींकोरस.
जवषार–जवांका झाडकी राष मैंसूंकाढेसोखार.
जमींकंद–सूरणकंदगोलचाकि होयछै. शाकप्रसिद्ध,
जवांकोचून–यव पिष्टप्रसिद्ध.
जव–यव धान्य प्रसिद्ध.
जलक्रीडा–जलमैं स्त्रीपुरुषस्ना नकरै क्रीडाकरै.
जवाकोसातू–यवकीधाणी जो कीधाणीको चून प्र०
जलकुंभीकीराप–जलकुंभी ज डाकीभस्म.
जलकासिंवाल–जलकाकीना रापर तंतु हर्याहोय.
जसदकापत्र–जस्तांकापत्र धा तुविशेप.
जायफल–जातीफल, प्रसिद्ध.
ज्वालामुषी–नामजडी,
जागीहरड–घोडाहरडैरंगतमैं,

ज.

जामुणकीगुट्टी–जंबूफलकी
जामुणकीवकलजंबुवृक्षकी
जामूण–जामूण, जंबुप्र०
जावत्री–जायपत्री, जायफ वेष्टनपुष्प,
जामूणकापल्लव–जामूण, का अंकुर, पानकाचा.
जाल–जालवृक्ष, पीलूवृक्ष. कैपीलूफलसोसनी;
जात्यादिघृत–जात्यादिकऔ ध्यांसूं घृत पचावै,
जात्यादितेल–जात्यादि औ तेलपचावैसो,
जियापोताकीमींजी–पुत्रज वापेताजिया फलकीमींजी
जिवंतिकीजड–जीवंती ज की जड,
जीवंती–जीवंतीजडी, केचित डुली,
जीभकरी–अप्रसिद्धहै,
जीवक–अष्टगणवर्गमेंहै,
जोकां–जीवविशेप, जलौका,

झ.

झडवोर–झाडकावोर. कोकनि वोर लघुवोर.
झावुकीजड–झाझरूप नदीमें वा नदीकिनारे फिरासपत्र जींकोमूल
झाउरुपकीवकल–झाउकीछाल
झोजरूकीवकल– गुघराकी छाल
झोजरूकादांतण–गुघराकादां तण
झीलडादांतण–कीलप्रसिद्ध दां तण होयछे.
झडवोरकीजड–झाडकोमूल
झाड–झाडप्रसिद्ध झाडवेरी जीं कापानकोपालोहोयछे कंटक झाड

ट.

टंकण–टंकणपार सुहागो सोगी तेलियासुहागो.
ठेरा–अंकोट अंकोल वोरविशेष सुगंधी जुलाबमेंउक्त

ड.

डरपावो–भयदिपावे उन्मादमें वाहिचकी साधारणमें
डासरयां–तंतडीकबीज खाटा चूर्णमेंउक्त डासरणफल
डासरयाकोरस–तंतडीकफलको रस
डांह्म–डहांम डंभ डांमदेणा लींकडी चांयवांउगैरे
डाभकीजड–दर्भाकीजड दर्भमूल
डांसरयांकीजड–डांसरणको मूल
डोडांकावीज–पोस्तका दाणा अफीमकावीज दाणां

त

तज–जादीदालचिनीका छोडा
तगर–तगरपत्र पानप्रसिद्ध पसारीकै
त्राहिमाण–त्रायंती नेत्रवालो
तामेश्वर–ताम्रभस्म
तालमपाणा–दनुर अहिपरो
तांबुल–नागरवेलका पान

त.

तालपत्रकोरस-ताडफलरसप्र०

तालेश्वररसहरतालकोरस. रसक्रियामें

तालवृक्षकी जड-ताडको मूल.

तामाकापत्रा-तांम्रपत्र.

त्रिफला-हरड वहेडा आवला. समभाग.

तिल-कालातिल स्वेततिल. प्रसिद्ध.

तिलांकोषार-तिलांका झाडको षारकाढैसो.

त्रिफलाकोरस-त्रिफलाकोरस, वा काढो.

तिलांकोतेल-तिलतैलप्रसिद्ध.

तिंदूकी अंतर छाल-तिंदू वृक्षकी मध्यछाल.

त्रिफलाकोभूको-त्रिफलाचूर्ण.

तिलांकाफूल-तिलपुष्पप्रसिद्ध

तिलांकीनालीकीराष-तिलांकाडांडाकीभस्म.

तिलांकाडांड-तिलाकाडांखला प्रसिद्ध.

तीतर-तीत्तरपक्षी. वटेर.

त.

तीषीवस्तु-चरपरीवस्तु. तीक्ष्ण तथातेजव.

तुलसीकापान-गौरतथास्याम

तुकमरियाकावीज-तुकमवालंवा

तुस-जवगहूंउगैरैका चूनको छाणस.

तूणकीछाल-वण्यांका झाडकी वकल. छाल.

तुंवरू-तसतूंवोइंद्रायणी फलई.

तुंवडीलोहीकाढवाकी-वारूंवारूमडी.

तेलिया सुहागो-टंकणषार. सुहागो सोगी.

तेल-तिलांको अलसींको एरंडको पोपराको दिवेल.

तेवरसी-काकडी तेवरसी त्रिंपुसी.

तेवरसीकावीज-त्रिपुसीकावीज

तेलकीवत्ती-तेलमें भींजोई रुईकी वाती.

तेजवल-वृक्षविशेषउत्तरमेंवहु०

तोरूं-तुराईको शाक प्रसिद्ध.

थ.

थोहरकोदूध–प्रसिद्ध.
थोहरकीलकडी–थोरींडा प्र०
थोहरकापानकोरस–थोरवटी कोरस.
थोहरकीजड–थोहरकोमूल.
थोहरकोपार–थोहरकाझाडकी भस्मकोपार.

द.

दडघल–शाकपत्र प्रसिद्ध.
दहीकोजल–दधीकोनितारयो पाणी.
दडघलकोरस–प्रसिद्ध.
दही–दधीगऊकोमहिषीको वकरी उगेरेको.
दशमूल–पांचमूलमोटा पांच मूल छोटा प्र० दशमूल.
दहीकोमट्टो–जाडीछाछमापन सूधां.
दाडमकोसरवत–अनारकोरस.
दारुहल्द–दार्वी दारुहल्दी दारुहरिद्रा.
दाख–मुनकादाख द्राक्ष गोस्त नीं प्रसिद्ध.
दाड़ूंकागुल्यो–अनारकाबीज.
दांत्युणी–जमालगोटाकीजड. तथाझाड.
दारू–मद्य मदिरा माध्वी वारुणी पैष्टी.
दालचिणी–पतलांछोडांकीतज दिसावरी प्रसिद्ध.
दालचीणीकाफूल–विलायती फूल अर्क प्रसिद्ध.
दाड़ूंकीजड–अनारकाझाडको मूल.
दाड़ूंकापान–अनारकापान.
दारूकाढवाकोजावो–दारूका ढवाकांमसालाभिजोवेसो.
दीपणीसुपारी–चिकणीसुपारी दक्षिणमें प्रसिद्ध.
दीपककोतेल–तिलीको मीठो एरंडको दीवेल.
देवदारु–देवदारुकाष्ठ प्रसिद्ध. सुरदारु.
देशीगोखरू–कांटीकोछातो जमीपरफेले कांटागोपरू.
दोबकोरस–दोबडीको तथा दूर्वाकोरस.

प

पर्पटीरस–पंचामृत पर्पटीरस प्रसिद्ध

पक्कपेठाकावीज–सुपेद पेठाका

पक्याग़ुलहरकाफक–औदुंवर फल

पसरकटालीकोपंचांग–भूरी रिंगणिको

पळासकोपार–छीलाकीराषमें सुंकाढेसो

पक्कीघीयाकोफल–घीयातोरा ई

पतंग–पतंगकाझाडकी लकडीरं गलालकी

पटोलकोपंचांग–जंगलीतुराई तुंवीकडवीगोलकाकडी कड वीको.

पथरफोडी–पथरचटी वुंटी प्र०

पटोलकोपार–पटोल्की राख मांहसूंकाढे.

पठाणीलोद–लोदसुपेदकाछो डाप्रसिद्ध.

पक्काकेला–केळाकाफल पाका.

पस्तछुडावणी–सीर छुडावणी शिरामोक्ष रक्तश्राव.

पाठ–पाठावृक्षको मूल वा काष्ठ

पालसाकोसरवत–फालसांको सरवत मिश्रियुक्त.

पारो–शुद्धपारो क्रियासों सो ध्यो हिंगलूको काड्यो.

पान–नागरवेलकापान राजव ला.

पारागन्धककीकजली–शुद्ध पारो शुद्ध आंवलासार गन्ध क घोंटे खरलमें.

पारोसोध्यो–हिंगलूको काढ्यो वा ओर क्रियासूं सोध्यो.

पापाणभेद–पथरफोडी पथर चटी.

प्याजकोरस–पलांडूको तथा कांदाकोरस प्रसिद्ध.

पाराकीभस्म–पारदभस्म क्रि याशुद्धकरीहुई.

प्राणायाम–स्वासपेटमेंभरे हि चर्कामें साधारणमें.

पाडलवृक्षकोपार–पाडलको पारयुक्तिसोंकाढे.

पाछणा–उस्तरा शस्त्र रक्तश्रा वको.

प.

पापडपार–पापड्योपार नदीउ गैरेमें जमेंहै.

पापड्योकाथो–जमायोकाथो. सोध्योकाथो सुपेद.

पारसपीपलीकीजड–पार्श्वमूल

पाडल–पाटला पांडुरी कठपांडुरी.

पाचनादिक–औषधी ग्रंथमें प्रसिद्ध,

पित्तपापडो–पर्पटी, पित्तपर्पटो,

प्रियंगु–गुंदिनी, गूंदीप्रसिद्ध,

पीपली–कणा, कृष्णा, पिपलांछोटी, गजपीपलमोटी,

पीपलामूल–पिंपलामूल.ग्रंथीप्रसिद्ध.

पीपलकीलाप–पीपलीवृक्षतथा अश्वत्थकी लाप.

पीपलकाकोमलपत्र–पीपलीवृक्षकानरमपान,

पीलीकोडी–पीतकपर्दी,

पीलीकोडीकीराप–पीलीवराटकाकपर्दाकी भस्म.

पीपलकाछोडा–पीपलअश्वत्थछाल.

प.

पीपलीकोरस–पीपलवृक्षका काचा पानांको रस.

पीचरकी–पिचकारी, वस्तिकर्म कीयथोक्तरीतकी,

पीपलकोपंचांग–अश्वत्थकोपं०

पीलीकोडीकोचूरण–पीत्तकपर्दीको चूनोप्र० तथाचूर्णकरै.

पीपलीकोपार–पीपल,अश्वत्थ कीरापको पार,

पींडीवांधणी–कारणमुजवक्रियाजाणकर, पींडीरापकी पूस्याकउतारामें पींडीमूजवकी

पीलीहरतालकापत्रा–तवकीयाहरतालकापत्रा,

पीपलीकीकचीलाप–पीपलका वृक्षकी काचीलाप,

पुराणोगुड–दोयवरसको, तथा तीनवरसको पुराणो,

पुनर्नवा–साटीसुपेद,तथा लाल साटी. विसपापरो.

पुराणीसाल–चांवलांकोधान, पुराणो तुसांमूधो,

पठो–सुपेदकोलो तथापीलोको. लोगांलमरदंगी

प.

पेठाकीजड—कोहलाकोमूल भूराकोहला वा पीलाकोहला.

पेठाकोरस—भूराकोहलाकाफल कोरस वापीलाकोहलाकोरस

पेठाकोपाणी—भूराकोतथापीलाकोरस.

पोटैश्रायोडाजव—अधकाचा जोवांकोफालर.

पैडा—दुग्धकामावाकासकरका गोलचपटा.

पँवाड—पँवाड्याकोझाड दद्रुघ्न दादपाज.

पँवाडाकावीज—पँवाड्यावीज प्रसिद्ध.

पोस्तकोपाणी—अफीमकाफल काछोंतराकोभीजोयकाढ्यो डोतीजारो.

फ

फिटकडी—फटकी,तुरटीसोरटी माटी सुपेद लाल.

फूलप्रियंगु-गुंदनीकाफूलफालर

फुलाईफिटकडी—फिटकडीको फूल्यो.

फुवरा—जलकाफुवाराप्र.जलऊर्धपात.

फूलांकीमाला—पुष्पकीमाला सुंदरपोईगूंथी.

व.व.

वहेडा—फलप्रसिद्ध विभीतक.

वच—घोडा, वल उग्रगंधा वचा.

वकाणकीछाल—महानींवकीछालतथा वकल.

वकरीकोदूध—अजादुग्ध.

वडकाअंकूर—वटपत्रकोमूलकुंपलां

वनालकापान—वनालकावलकापान,

वनालकाडोडा—वनाल्डोडा कंटकफलघोडांकामुसालामेंपडे

वधायरो—वृद्धदारु लकडीझाडकीहोय गर्भवृद्धि.

वडीहरडेकीछाल—मोटीहरीतकीकीछाल.

वडवोरकापान—मोटीवोरडीजीकापान मोटावोरकी

व [illegible] —वसंतमालती

[illegible] त क्षुद्रवसंत

व.

वर्धमानपीपल—नित्यवधती पीपलांदूधमैंपचावें, रोगीनैपुवावैसो रीतसों.
वृद्धि—वृद्धिऔषधीअष्टगणवर्गमैंअमीलित.
वकरीकोमूत—अजामूत्रप्रसिद्ध
वहुफली—चामघसकाछाता. चीकणीजडी होयछै.
वडोशंख—रामेश्वरी द्वारकानाथी वजावाकोमहाशंख
वहुफलीकोरस-चामघसकोरस
वकरीकीमींगणी—अजाविष्ठा.
वकाणाकापानाकोरस महानींवकोरस
वकाणाकोपार् महानींवकोपार
वहेडाकावृक्षकीवकल—विभितककापेडकीछाल
वडाआवलामोठाआंवलाकाफल
वरण्य—देशप्रसिद्धवृक्षहे वरणो
वरण्याकीछाल—वरणाकीवकल
वरण्याकीजड—वरणाकोमूल
वडकीजडकीवकल—वटजटाकीछाल

व

वटकोदूध—वटदुग्ध प्र०
वडकापान—वटपत्र
वडकीजड—वटवृक्षकोमूल
वकाणकावकांकीवकल—महानींवकांफलांकीछाल,
वडीहरडै—मोटीहरडे, तो,२ उपरांतकीअलांबू आकार
वडकीवकलकोरस—वटछालकोरस.
वहेडांकीमींजी—वहेडांकाफलकीमींगीमज्जा
वकराकोवाल—अजकाकेश
वलदकारोम—वृषभकाकेश
वडकीजटा—वटकीशाखा
वायविडंग—विडंगप्रसिद्ध
व्राह्मी—ब्रह्मदंडी मोटापानकी तथाछोटापानकी
वावची—ववरीप्रसिद्धवनतुलसी
व्राह्मीकोरस—ब्रह्मदंडीकोरस
वावचीकोरस—ववरीकोरस
वालूरेत—पांशुशुद्ध,वारीकवालु
वांसकीलकडी—वंशकाष्टवावसकीडांग

व

वासकीछाल—वासकीलकडीकी छाल

वाराहीकंद—शूकरकंद, प्रसिद्ध

वाछडीकोमूत—गोमूत, प्रसिद्ध

वाझकंकोडीकीजड—वंध्या ककोंटीकाकोमूल

वालुकायंत्र—जी यंत्रमें वालु रेतभरओषधीपचावे.

वीजोराकीकेसर—मातुलिंग, महालुंगाकीकलीपाटी

वीजयसार—वृक्षविशेषअसन.

विनासेकीभांग—काचीविनासे कीअशुद्धबागकी

विष्णुकांताकीजड—तिलकटी जडीहोयछे,

विषखापराकोरस—लालसाटी कोरसपुनर्नवा

वीजोराकोरस—मातुलिंगकोर सपाटाफलकोरस

विजोराकीजड—मातुलिंगम हालुंगा तुरंजकीजड, मूल

विदारीकंद—कोलीकांदो,कोली लोगपांणकपडाकेदेवे.

व

विलावकीविष्ठा—प्रसिद्ध

विसपापराकीजड—पुनर्नवा मूललालसाटाको

वीसपपखो—प्रसिद्ध

विष्णुकांता—तिलकंटी

वीलगीर—वीलकाफलकी गीर काचाकी कोमल

वीडलूण—पांचलूणमें वीडप्र०

वीजावोल—प्रसिद्ध

वील—वीलपत्रको, वृक्ष फल

वीलपत्र—वीलवृक्षकापान

वीलकोपार—विल्वका वृक्षकी राषको पार

वीलकीजड—वील्वको मूल

वीलकाकाचाफल—विल्वकाको मलफल

वेदकीजडकीवकल—वेतवृक्षका मूलकी छाल

वेरजो—गंधोवेरजो प्रसिद्ध.

वेंगणकीजड—वृंताककाझाडको मूल

वेंगणकोभडीतो—वृंताकको भूज्योहुवो भडीतो.

व.

वेंगणकी जडको रस–वृंताक कोमूल जडको रस

वोलवृक्ष–वीजावोल प्रसिद्ध.

वोरकीमींगी–वोरफलकीमीं गीमज्जा.

वोरकीजड–वोरडीकी जड तथा झाडकी जड.

वोरकापान–वोरडीका पान.

वोरकी लकडीकी अग्नि–अंगाराकीआंचवोरकीलकडीकी

वोरकीजडकोरस–वोरडीकामूलको रस.

वोंलीका पान–वंवुलीका पान. वंबूलभेदहे.

वोलसिरिकीछाल–कुंदकावृक्ष की वकल, छाल, मोलसरी.

वंदाल–वनालकाफल, कंटकफल, येलडीकलागे.

वंसलोचन–प्रसिद्ध

वंबूलकी वकल–वंवलकीछाल की करकी.

वबूल–वंबूल वृक्षकीकर.

वंगश्वर–पारो, रांग, दोयभिलकर भस्म.

व.

वंग–केवलरांगकी भस्म

भ.

भाडंगी–भाडंगमूल, भारंगकी जड, वभनेटी.

भांग–भृंगीवूटी प्रसिद्ध. शिवप्रिया.

भांगको रस–जलभांगको रस.

भारीवस्तु–गरिष्ठभोजनकी वा उजनमें. सतोल. पारोई.

भीलावा–भल्लातकफल प्रसिद्ध.

भीलावाछोछा.केवलभल्लातक.

भीमसेनीकपुर–शुद्धकपूर. वरासकपूर.

भेडीकोघृत–लरडीको घृत.

भेदडी–पतलीरावडी,वाकणीरी आटाकी चांवलांकी.

भेसकीछाछ–महिषीकादूधकी छाछ

भेसकोमूत–महिषीकोमूत्र.

भेसागुग्गुल–गुग्गल प्रसिद्ध.

भोभरमें सेकणो–छाणांकी नरम राप, तुरतकोमें.

म

मसूर–लालअन्न.

म.

महामेद–अष्टगणवर्गमें लिषी अमिलित.
महुवो–मधूक वृक्ष.
महलोटी,जेठीमधमीठीलकडी.
मैंणसील–मैंणसील, मटियाहर तालमें नीसरे.
मसुरकोसातू–मसूरकी दालसे कीको आटो.
मद्य–मदिरा प्रसिद्ध.
महुवाकोगूंद–मधूगूंद, निर्यास
मजीठ–मंजिष्ठा प्रसिद्ध.
मलेठीकोरस–जेठीमधकापा नाकोरस.
मटर–वटाणा अन्नहोयहै.
मनोहरकथा–उत्तमइतिहास. चमत्कारीक.
महँदी–मृद्दिका, महदीका पान स्त्रियांका हातमांडे.
मस्तगीगूंद-रूमीगूंद,कोनरूप्र.
ममाई–दिशावरी, विलायती अज्ञात वा ज्ञात, अप्रसिद्ध
मदनवाणकाफूल–रामवाणका पुष्प

म

मरवो–मरुअक सुगंधीझाड, प्रसिद्ध
मट्टो–दहीकोविलोयो जाडो विनामपनकाढ्यो
मधुपक्कहरडै–हरडैउत्तम, सहतमैंपकावैसो
मारुवैंगण–मारवाडी वृंताक मोसम होय, मोटो बहुवीज
मापीकीवीट–मक्षिकाकीविष्टा
मांडर–लोहीकोकीट, कांटी, शुद्धकीभस्म
मार्‌योसार–लोहाकीभस्म लोहसार
मार्‌योपारो–शुद्धपाराकीभस्म
मार्‌योअभ्रक–शुद्धअभ्रककी भस्म वा कृष्णाभ्रक
मावो–दुग्धकोघोट्योडोमावो प्रसिद्ध
मार्‌योमैंणसील–मैंणसीलकी भस्म,
मालकांगणी–कांगणीज्योतिष्मती कंगुनीपारावतपदी,
मांसकोसारवो–प्रसिद्ध,

म.

मापपर्णी–उडदपर्णी, सूर्यपर्णी, कांबोजीहयपुच्छिका.
मानपात–रामवाण.
मांजूफल–प्रसिद्ध.
माथाकाकेस–मस्तककेश प्र.
मिसरी–सिता, खडीसाखर.
मिनकादाप–मनुक्का, द्राक्ष प्रसिद्ध.
मीठोतेल–तिलांको तेल.
मीठोवोर–वडवोर, मीठा वा पेमंली
मींढाकोसींग–मेषशृंग, टरडाकोसींग.
मुरवा–मधूलिका, मधुरस, गोकर्णी, पीलुपर्णी, मधुश्रेणी
मुरगाकोमांस–प्रसिद्ध
मुरदासिंगी–वोदारसिंहप्रसिद्ध
मुंग–धान्यविशेष प्रसिद्ध मुद्ग
मूलीकावीज–मूलीकावीज तथागाजरकावीज.
मूलीकोपार–पारकाढणो मूलाकां माह
मूसली–सुपेदमूसली, नागोरि प्रसिद्ध

म

मूसाकोमांस–प्रसिद्ध.
मुलीकीजडकोरस–मूलाकीजडको रस
मूंग्या–प्रवाल,लालमूगाप्रसिद्ध
मुचकुंदकाफूल–मुचकुंद प्रसिद्ध, क्षत्रवृक्ष, प्रतिविष्णुक
मुरगाकाअंडाकाछूंत–छोडा अंडाका प्रसिद्ध
मुंगकाफूल–मुद्गपुष्प
मेद–अष्टगणवर्गमें अमिलित
मेथी–मेथीको शाकपत्र
मेथीपाणा–दाणामेथी मेथीका बीज
मेवो–पंचमेवो अथवाबहुधा
मोठ–मकुष्ठ धान्यविशेष
मोहराकोमंत्र्योपाणी–बालकनेदृष्टिदोषमेंजलमंत्रावकरपावें
मोचरस–सेवरीकाफूल, वाशाल्मली, मोचरस, निर्यास.
मोरकापांखकाचंदवाकीराप मोरपीछका चंदवाकी भस्म
मोहाकाफूल–मधुकवृक्षकाफूल मधुपुष्प, महूवा

स

सतोन्यू—अप्रसिद्ध
समुद्रसोस—समुद्रफल.
सरकनाकीजड—मूंजकीजड,
सहजणाकीफली—सोभांजन कीफली
सरपंखो—नीलामासाकोआकार होयहैसरफोको.
साटीकोखार—स्वेतसाटीकोपार
सातूधानाकीकांजी—सप्तधान्य कीजुदीजुदीरावडी.
सातूकीपींडी—सातूकालड्डूप्र.
सालवृक्षकाबीज—शालकाबीज
साटाकीजड—इक्षुकीजडमूल.
स्यांमतुलसी—कालीतुलसी.
सालममिसरी—पुष्पकंदप्रसिद्ध
सामराकीपाल—सामराकीचर्म बारासींगाकी.
सातू—सक्तूचिणाको गोहांको वा अन्यधानको सातू.
स्याहजीरो—मुसालामेंहै गरम है सुगंधीदार.
सालपर्णी—सरिवस्थिरा सोम्यां दशमूलमें प्रसिद्ध.

स.

सावणाकीवत्ती—बस्तिकर्ममेंवा बंधकुष्ठमेंरेचन.
साटाकीजड.सुपेदसाठाकीजड
साठ्याचावल—साठदिनामें पाकवैचावल.
सार—लोहभस्म.
साजीपार—सर्जीपारप्रसिद्ध.
साटीकोरस—सुपेदसाटाकोरस
साटी—सुपेदसाटी, स्वेतपुनर्नवा
सामरोलूण—साकंभरीकादेश कोसांभर.
सावण—सावणपारवस्त्रधोवाको साजीचूनो.
सांठाकोरस—ईपकोरस, इक्षुरस
सांपाहोलीकोरस—शंखपुष्पी वकपुष्पीकोरस.
सापोटकवृक्ष—पीतफलकाभूता वासकरच्छददांतणश्रेष्टहोय
सांखाहोलीकोजड—शंखपुष्पी कोमूल
सालरकीजड—सालरमूल प्र०
सालवृक्षकापान—शालकापान प्रसि०

स.

सांपोटकवृक्षकीवकल–सहोर कारीकुरीछाल

सिरसुंकोतेल–सर्षपको, प्र०

सिंहरासी–सिंहजीरा, धीयापा पाणप्रसिद्ध.

सिरसूंकाफुलांकोरस–सर्षप पुष्पकोरस.

सिरसकीजड–शिरीसवृक्षकोमू

शिवलिंगी–वेलडीकाफलजींका फलमेंशिवाकृतीनीसरे.

शिवनिर्माल्य–गंगा तथा शि वोत्तीर्ण.

सिरसकाबीज–शिरीषवृक्षका बीज

सिपरण–दहींमेंसकरकोयोग.

सिक्ताव–सरीरमेंसेककरे, सो

सीलाजीत–पाषाणकोरसग्रीष्म ऋतुमेंप्रगटे

सिंदूर–प्रसिद्धहनुमानभैरव, ग णेशचढे.

सिंघाडा–जलचर्कीकाफलप्र०

सिणकाबीज–सणबीजप्रसिद्ध

सीकोद्रव्यप्रसिद्धऔषधीकेअर्थ

स

सीरछुडावणी–सिरामोक्ष

सींगडी शृंगीवारूमडीरक्तश्राव

सींगीमोहरो–वछनाग हलदी योवछनाग.

सींधोलूण–सैंधवलूण प्रसिद्ध

सिसाकीगोली–प्रसि०

सीणकिछालको–चूरणप्रसि०

सितलमिरच–प्रसिद्ध

सितलसरवत–ठंडोसरवत, अ नार, नीलोफर इत्यादि.

सीपकीभस्म–सीपकोचूनो

सुपारिकोपार–पुंगीफलकीभ स्मभुरकीमल्हममें कामआवे

सुस्याकोसोरवो–शशाकोमां सजीको

सुपेदो–रंगप्रसिद्धउजनदारहोय

सुरतोपपयो–पपयो, खर्परसू रतीप्रसिद्ध

सुपेदमूसली–मूसलकंद, नागो रीप्रसिद्ध

सुपेदकल्हारीकीजड–कल्हा रीसुपेदकोमूल

सुपेददाव–स्वेतदूर्वाप्रसिद्ध.

स

सुपेदसरस्युं–स्वेतसर्षपप्रसिद्ध
सुपेदवावचि–बवरीस्वेत
सुपेद–एरंड स्वेतएरंड प्रसिद्ध
सुपेदकंडीरकीजडकी वकल, स्वेतकर्वीरकामूलकीछाल.
सुरमो–नेत्रांजनप्रसिद्ध
सुपेदजीरो–जीरकसुपेद मुसालामें
सुहागो–टंकण सोगी
सुहागोसेक्यो–सोगीअग्निपर फूलायोफूल्यो
सुपेदी–मल्हिम मल्लममेंपडेसुपेदा जिसीबूकीछे
सुपेदमोम–मोहकाछाताकोशुद्धनिर्मल उजलो
सुपेदपेरसार–शुद्धपेरसार
सुपारी–श्रीवर्धनी तथा सोलथणी वरडा चिकणी
सुपेदकाथो–शुद्धकाथो पापड्योजमायोडो
शुस्यो–शशो सुसल्यो किरगोसजीवजंग,
सुंफकोपार–सूंफकाझाडकीरापकोपार विरियाली.

स.

शूरकोघृत–जंगलीशूकर बसा चरवी.
शूरकोदांत–शूकरदंत वन बराहदंत
सुंठ–सुंठी सूठ विश्व प्रसिद्ध०
सूंफविस्याली–बडी सुंफ वादियान
सूंफकोअर्क–बादियान तथासूंफकोअर्क
सूकीमूली–मूलक मूलानेसुकायलेसो
सूकरकीविष्ठा–वनशूकरविष्टा
सेवतीकाफूल–सेवतीपुष्पप्रसिद्ध
सेकीहरडेकीछाल–हरडे भांभरमेंसेकजीकीछाल.
स्नेहकीवस्तु–चीकणीवस्तु
सेकीअजमोद–अजमोदनेंमंदाग्नीसेंसेके
सेकीहींग–गोघृतमेंहिंगनेंसेके तथातलेसोशु०
सेकीभांग–भांगकीपत्तीअग्निसोंसेकेधोयशुद्धकरे.

स.

सोध्योसीसो—सीसानें. अग्निमें रसकरे पाछेंत्रुझायपुटदेवै सो शुद्ध.
सोवारकोधोयोघृत-शतवारजलमेंधोवैसो.
सोनाकाउरक—सुवर्णकावरष स्वर्णपत्रसूक्ष्म.
सोमल—उपविषप्रसिद्ध उपधातु
सोधींगंधक—शुद्धआंवलासार गोघृतमें.
सोध्योसींगीमोहरो—दूधमेंडोलायंत्रसौं.
सोध्याभीलावा—प्रसिद्धकोईकघृतमेंसेकेंहे.
सोनमपी—स्वर्णमक्षिका सोनमप्पी प्रसि०
सोनासुपी—सनायनीली, जुलाबमेंप्रसिद्ध.
सोनाकीराप—स्वर्णभस्म.
सोनू—कनक, हाटक, कंचन.
सोनगेरू—स्वर्णमंजनी, सोनागेरूप्रसि०
सोधीसोनमपी—शुद्धस्वर्णमप्पीउपधातु.

स

सोधीशिलाजीत शुद्धशिलाजितत्रिफलामेंवादूधमें
सोध्योगुगल—गुगलत्रिफलांकाजलमेंशु०
शंखकोचून—शंखभस्मवाचूर्ण
शंखकीनाभी शंखकोमध्यभाग
संपुट—दोयसरावाकोजोडहे. सो संपुट
संभालू—निर्गुंडी. नेगड. प्रसि०
संचरलूण—पचायोलूण. कालोलूण. पादेलूण.
संखावली—शंखाहोली, शंखपुष्पी.बफपुष्पी.
शंखकोराप—शंखभस्म.
संभालूकापानाकोरस—नेगडनिर्गुंडीकोरस.
संभालूकीजड—निर्गुंडीकोमूल.

ह.

हरडे—सप्तजातकीहरडछे. जीमें विजयानामहरडे, सर्वकार्यमें योगहेअलांवूफलकेआकारहे
हलद—हरिद्रा प्रसिद्ध.
हरताल—तबकिया, वामटिया. ग्रथोक्त लेणी.

ह

हलाआंवला–लीला आंवला अर्थात् वृक्षसौंडतत्काउरत.
हरतालतवकी–तवकीया,स्वर्ण सदृशतेज.
हरपारेवडी–फलविशेष आंव लासदृश.
हव्यादिक–जव,तिल,घृतादिक
हाथीकोदांत–गजदंतप्रसि०
हाथीकोमूत–गजमूत.

ह.

हाथीकानख–गजनख
हिंगोराकोजड–इंगुदीकोमूल
हिंगलू–सिंगरफ, उपधातु
हिंग–झाडकोरस रामठ हिंगप्र०
हीराकसीस–उपधातूप्र० रगतमैं प्रसि०
हेरणकासिंगकोपुटपाक–मृग शृंगपुटपाक
हेरणकोमांस–मृगमांस

हुलहुलकोरस–कागलाका पेतकोरस सुवर्चका १ ब्रह्मवर्चला. २ सूर्यभक्ता. वरदायांकोरस. अथऔषधीका योगसमूहसंजोयोग समूहनामहै. जैसें त्रिफला. त्रिकटू इत्यादिकज्यांको निघंट संग्रहमें लिख्याहै. ज्यांकाकंठस्थ राषणैसो बहुत फायदो होसी त्रि कटू.सुंठ १ मिरच २ पीपलां ३ समभाग.

अ

अर्कद्वयं–सुपेदआकडो लाल आकडो.
अष्टवर्ग–जीवक १ ऋषभक, २ मेदा ३ महामेदा ४ काकोली ५क्षीरकाकोली६ऋद्धी७वृद्धी८
अपामार्ग–सुपेदआंधीझाडो १ रक्तलाटआंधीझाडो.

उ

उपविप–आकडाकोदूध १ थो हरकोदूध २ कलिहारी३ कंडी रदोय ४ धतूरो ५ जहरकुंचि लो ६ वछनाग ७

क

कन्हेरद्वयं–सुपेदकंडीर १ लाल कंडीर २.

च

चारदाना—दाणामेथी १ असाल्यों २ कालीजीरी ३ अजवायण,

चतुरूपण—सुंठ १ मिरच २ पींपल ३ पीपलामूल ४

चातुर्जात दालचिनी १ इलायची २ तमालपत्र ३ नागकेसर ४ सम

चातुराम्ल—आम्लवेत १ आमली २ वडीजंवीरी ३ नींवू ४

त्रिफला—हरडे १ वहेडा २ आंवला ३ सम

त्रिजात-त्रिसुंगंधी दालचिणी १ इलायची २ तमालपत्र ३ समभाग

द

दशमूल-लघुपंचमूल ५ वृहत्तत्पंचमूल ५ दोयपंचमूल एकठा करे तोदशमूलहोयहे

दशांगधूप-शिलारस ५० गुग्गल ५० चंदन ४ जटामासी ४ लोबान ३ राल ३ उसीर २ नख २ भीमसेनीकपूर १ कस्तूरी १ यहभागमुजब नखल्याघृतमे सेके

प

पंचाम्लं—आमलवेत १ आलमी २ जंवीरी ३ नींवू ४ वीजोरा ५

पंचकोल—पीपल १ पीपलमूल २ चव्य ३ चित्रक ४ सूंठी ५ समभाग

ल

लघुपंचमूल—शालपर्णी १ पृष्टपर्णी २ वडीकंटाली ३ पसरकंटाली ४ गोपरू ५

र

रसांजनं—दारूहल्दीका काढामे वरोवरको दूधमिलाय दोन्यांकोघट्टमावोकरैतोनेंरसांजनक०

रत्नानि—हीरो १ पंनु २ माणक ३ नीलमणी ४ पुष्पराग ५ गोमेद ६ वैडूर्य ७ मोती ८ मुंगा ९ इति

व

वलाचतुष्टयं—वला १ महावला २ अतिवला ३ नागवला ४

विष—वत्सनाग १ हारिद्र २ सक्तुकः ३ प्रदीपन ४ सौराष्ट्रिकः ५ शृंगकः ६ कालकूटः ७ हलाहल ८ ब्रह्मपुत्रः ९

ष

षड्पण—पीपल १ पीपलामूल २ चव्य ३ चित्रक ४ सुंठी ५ कालीमिरच ६ सम

क्ष

क्षीरपंचवृक्षा—न्यग्रोधः १ उदुंबर २ अश्वत्थ ३ पारिसाः ४ प्लक्षः ५

क्षाराष्टक—पलास १ थोर २ साजी ३ आमली ४ आंधीझाडो ५ आकडो ६ तिलनाल ७ जव ८ यांकाखार.

क्षारद्वयं—साजीखार १. जवखार २.

व.

वृहत्पंचमूल—बीलगिर १. इरणीमूल २. सिवणीमूल ३. स्योनाकमूल ४. पाठमूल ५.

इति अमृतसागरस्य निघंटसंग्रह समाप्त.

अथ औषधीनां दीपनपाचनादि प्रकारः

औषधी आंवको पाचन नहींकरे अरुअग्नि प्रदीप्तकरैसो औषधी दीपन संज्ञक जाणजे जैसें सूंफनाम विरियाली अरुजो औषधी आंवको पाचनकरे अरु अग्नि प्रदिप्त नहींकरे जीने पाचन औषधी कहिजे जैसें नागकेशर अरु जो औषधी आंव पचावे अरु अग्नि प्रदिप्तकरे जीने रोचन दीपन पाचन कहिजे जैसें चित्रक प्रसिद्धहे

संशमनऔषधी जो औषधी तीनदोषानें समान भाव राखे कमजादा होय नहींसो जैसें नीमगिलोय अमृता अनुलोमन० जो औषधी वातादि तीन दोषांकोंपचायकर परस्पर बंध्योडानेंज

दाकर मूलद्वारमार्गकाढे सो जैसें हरडै. संस्रवन० जो औषधी आगेंपाक होवाला दोषादिकमलमूत्र. ज्यांनें जवरांईसों वारेकाढे सो. जैसें किरमालाकीगीर भेदन० जो औषधी वातादिकांसूं मलमूत्र अवद्ध तथा वद्धहुवा परस्पर भिड्या ज्यांनें वारे काढेसो जैसें कुटकी रेचन० जो औषधी अन्नादिकांको पाक अपाक ज्यांनें विनापक्या वारे काढेसो जैसें वृद्धत्ता निसोत वमन जो औषधी विनापक्या पित्त कफ जुदा अथवा मिल्यानें मुषद्वारावारेकाढेसो जैसें मदनफल मेंढल संशोधन० जोऔषधीमलादिक संचय ज्यांनें मुषद्वारा अथवा अधोद्वारा वारेकाढे नस्य वमन विरेचनसों सोधन करैसों जैसें देवदालीफल. छेदन० जो औषधी परस्परमिल्याजो कफादिक ज्यांनें जुदाजुदाकरे सो जैसें जवपारमिरच सुठ पीपलि सिलाजीत लेखन जो औषधीरसादिक धातु वातादिकदोष यांनें शोपण करके पतला करैसो जैसें मधु गरम जल वच जव. ग्राही० जो औषधी दीपन पाचन करै गरमशक्तीसो दोष मल धातुजिनें शोषण करै सो जैसें सूंठ जीरो गजपीपल.

स्तंभन० जो औषधी रूपापणासूं ठंडापणासूं कडवापणासूं हल्का पाकसूं वायुकरके स्तंभनकरे सो जैसें नागरमोथो वीलगीर कोमल वीलगीर मोचरस कुडाछाल स्योनाक इत्यादिक औषध्यां यथायोग तासीरमिलेसौ. रसायनऔ० जो औषधी शरीरकीजुरा रोगदूरकरै सो जैसें नीमगिलोय रुदंती गुगल हरडे. वाजीकरण औ० जो औषधी धातुवृद्धिकरे स्त्रियांमें प्रीति वधावे सो जैसे आसगंध कौंचवीजसतावरी नागवला दूध साकर. धातुवृद्धि कारण ज्या औषध्यांसूं धातुवृद्धि होय सो शुक्रलजा सो जैसें आसगंधमूसली सतावरी साकर दुग्ध इ० धातुचैतन्यका० ज्यां औषध्यांसूं धातुचेतनहोयसो जैसें उडद दूधभीलावाकीमींजी आंवला

इत्यादि. वाजीकरण ओषध्यामें विशेष. शुक्रधातुनें चेतनकर वावाली स्त्रीहै, धातुनें रेचनकारक मोटीकटालीकाफलहै.

वाजीकरणनाम अश्वघोडाको जीसो पराक्रम.

धातुनें स्तंभनकारक जायफलहै धातुनें शोषणकारक हरीतकीहै धातुने क्षयकारक कलिंगनाममतीरोहै वा जीनाम अश्वकरण कर्ममें एताविशेहै. ध्यानमें राखे सूक्ष्मऔषधी जो औषधी शरीरका रोमछिद्रद्वारा प्रवेशकरैसो जैसें सिंधोलूण मधु निंवतिलतेल॰व्यवायीऔषधी. जो औषधी पेटमें जायकर पच्यां पहली सर्व व्यापक होजाय पाछे पचैसो जैसें भांग अफीम इत्यादि. विकाशी औषधी. जो औषधी सर्वसंध्यानें ढीलीकरे वलनें शिथिलकरे जैसें सुपारी कोद्रवनाम कोदूधान्य मदकारी औषधी जो औषधी तमोगुणप्रधान होयकर बुद्धिनें ढके सोमदकारीजां॰ जैसें मद्य दारू प्राणहारक औषधी व्यवायी १ विकाशी २ सुक्ष्म ३ छेदी ४ मदकारी ५ आग्नेयी ६ यांछओं ध्यांकागुण करिके जो युक्तपदार्थ होय सो प्राणहारक जैसें विष वचनाग योगवाही कुयोगसों विष सुयोगसो अमृत.

प्रमाथी औषध जो औषध आपका पराक्रमसों कान मूंढो नाक यामें प्रवेशकरके कफादिक संचयनें तोडे जैसें वच काली मिरच अभिष्पंदीपदार्थ जो पदार्थ आपकापिच्छल गुणासूं ज डगुणासूं जोरसवाहिनी नाड्यांछे ज्यांने रोककर जडकरेसो जैसे पाटोदही जो पदार्थ चिकटो पाटो व्रचवच्यो फूल्यो कोमल यो प दार्थ पिच्छलजो अभिष्पंदीनाम कफकरीजा.

इति दीपनपाचनादि प्रकार संपूर्ण.

अथ अनुक्तव्याधी प्रारंभः

इग्रंथमें मोती ज्वराको प्रकार नहीं कह्योहै सो लिखूंछूं मंथरकज्व

र जीनें मूंधोरो मधुरो कहेंछे अरु मोती ज्वरोकहेछे. और असाध्य हुवांसों पाणी ज्वरांवी एकमोती ज्वरांमें भेदहे ईज्वरको मुष्यमूल पित्तज्वरहे जींमें लक्षण लिष्योहे अरु कोईक आचार्य ईरोगनें जुदोवीलिष्योहे.

अथ मोतीज्वरका लक्षण

ज्वर दाह भ्रम मोह अतिसार छर्दी तृषा अनिद्रा मुखरक्त तालु जिन्हासुष्क ओरकंठांपर मुक्ताकार सर्षपकादाणा जिसा प्रगटे इसा लक्षण होयछे मोतीज्वरो अथवा ज्वर नेत्रभ्रमें मोह दंत ओष्टकाला जीभ कंठ मुप नाक नेत्र शुष्कसूके लाल विपरीत होय अरु कंठामें मोत्यांकोसो हार दिपे सिरसूंका सुपेद दाणा सदृश सोताप आयांपछे दिन सातमें अथवा नवमें दिन मुक्तामाला प्रगट होय सो मुंधोरो मोतीज्वरो जाणिजे अथवा वडा मुंधोराकातथा पाणी ज्वरकालक्षण पाणीका विकारसों अथवा त्रिदोषसों होयसो होठ जीभ दांत कालाहोय संज्ञाहीन होय गहलो होय लक्षण सर्व विपरीत होयसो असाध्य जाणिजे अथ मोती ज्वराकी तासीर स्वभावलि० यहजो मंथरज्वरहे सो ज्वरांमें सरदारहे अरु ईज्वरकी तासीर सरदार मुजबछे ईका उपचार मात्र पवित्रहे पवित्रस्थानमें शुद्धवस्त्र शुद्ध मनुष्य ईकीपरिचर्यामें रहे दृष्टी आगे पवित्रता निजर आवे अरुछोत लावणनही पडे लाल कामलीकी परांचवांधे अरुस्यांणां वैद्यनें ईमंथरकी अनुकूलतासों उपचारकरणो योग्यहे सुगंधीधूप अगर चंदणसो मकानकों सुवासितराखे अरु जँवाहरा धावे ज्यांपर निजर हरियाली इत्यादिक अरुमनोहर इतिहासादिक स्वधर्मका इसा कारणासूं आपकी मुदतमें नरम पडे आरामहोय अरु जो कदास विपरीत उपचार करतां क्रोधित होयकर असाध्य दशामें प्राप्ति करछे जीनें ··त्र औषधी अरु मुक्ताफलांको आभू

पण अरु सुवर्णादिक साधन करणा सो प्रसिद्धहै अरु मंत्रादिकभी प्रसिद्धहै सो अवै औषधीका उपावलिख्यते.

अथघासो चिरायतो सुंठ यांकोघासो जलमें घसकरदीजे तो जीर्णज्वरजाय १ कालोअगर घसकर पाइजे तोदाह शांतीहोय २ सहस्र वेध पापाण काछनकाकपासकी पोपरी वडीइलायची तुलसी पत्र नारेलकी दाढी पसपसकादाणा गवुकागोवरकोरस यांकोघा सो घसकर दीजैतो वायको ठंडो मुंधोरो आछ्योहोय ३ अथवा तुलसीकोरस गोवरकोरस जीरो सोनमप्पीकीभस्म घासोदीजे. ४ अथवा सांभरोसिंग चंदण जीरो वालो मोथो किरायतो,कुडो कालो जीरो गिलोय इलायची कमलगटा येसर्वघासोकर घसकर पाजे तो वायू अधिकमुंधोरानें आरामकरे ५ यथोक्तरितसौं अथकायचं दनादि चंदन सूपेद चंदनलाल वालो पित्तपापडो नागरमोथो सुंठ किरायतो उशीर पित्तअधिक होयसो आरामहोय.

काढोदियासूं वेद्यनें रोगीको वलावल देपकर काढाकी अष्टमांस चतुर्थांसकी योजनाकरणी अरुयांही औपध्यांमें जल उकालकर पीवानें थोडोथोडो दियाकरेतो दाहमिटे चित्तप्रसन्नरहे घणावक वादको वडवडाटको घटावहोय पित्त सांती होय निजर पोंहचाय करकरें १ अथवा लघुशिवणी दाप चंदन नेत्रवालो मोथो पस वालो पित्तपापडो मलेठी समभाग अष्टमांस काढो मधुप्रतिवास किंचितसोंदीजे पित्तज्वर भ्रम दाह छर्दि अतिकोप शांतिहोय.

अथवा रक्तचंदन वालो घणो कालोवालो पित्तपापडो नागर मोथो सुंठ यांको देवे ३ अथवा मांपी १ गुडमेंघाल गिटायदेवे ४ अथवा वडका पाकापान वाजरीको आटो यांको काढो देवे ५ अ थवा पोदीनो वनतुलसी स्यामतुलसी यांकारसमें मिश्रिघाल दिन

३ तथा ७ देवै ६ अथवा नागरमोथो कपूरकाचरी वनतुलसी पित्तपापडो सूंठ यांको काढो देवै ७ इति.

अथ मंत्र ॐनमो अंजनापुत्र ब्रह्मचारी वाचाअविचलस्वामी नउकार्य सारिखा क्षांक्षः मगधदेशराय वडेस्थानके तिहांमुशली कंदब्राह्मण तिणे मधुरो पैदाकियो पृथ्वी मांहिमोकल्यो हनुमंत वाचावली पडियो. हनुमंतजी दृष्टीपडयो हनुमंतनामेन गच्छग च्छ स्वाहा॥ कोरा मृत्तिकाका गागरिया करवा जिसा गडगा ३ शु द्ध जलसो भरीजे चंदणघसी घालीजे अगर धूपदेईजे पाछे स्वेतपु ष्प रोगीका माथाउपरसों वारिजे वार १०८ ईमंत्रसों मंत्र जपिजे शुद्ध होयकर दिन ३ अथवा ७ नजीक स्त्रियां नहीं आणे दीजे. लावण छोत इत्यादिकको जतन रपाजे आडी लाल कामली वांधी जे स्वच्छ वस्त्रादिक पहिराइजे पथ्य पारक चिणाकीदाल भिजोयो डो दीजे अन्नमें कोदुंवर तीकी यथाशक्तिमाफक राव कांजीपलेउ दी जै अरु वडो मूधेरो जो पाणीको विकार देशदेशांतरको वा त्रिदो पसों होय जींका लक्षण पहली कह्याहे जींको उपाव वैद्यका जो विचारमें आवे शास्त्रकी रीतसों जो करणो योग्य हे कारण ईश्वर समर्थहे. ईश्वर सर्वकछू करसके.

इति अमृतसागरस्य अनुक्त प्रथमभागः नवीनटीकाकारेण श्रीधरेणकृतः सोयं शुभमस्तु.

इति पूर्वभाग समाप्त.

श्रीः ।

अमृतसागर तथा प्रतापसागर.

तरंग पचीसको उत्तरभाग.

अथ

उत्तरभाग

प्रारम्भः

श्रीगणेशाय नमः

अमृतसागर तथा प्रतापसागर.

तरंग १ ला प्रारंभ.

अथ श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र महाराजश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविचारकरिमनुष्यांकारोगांकोंदूरिकरवाकेवास्तेपरमकरुणाकरिकें चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, आत्रेयनें आदिलेकरिकें वैद्यकका, सर्वग्रंथानोंविचारकरि, वाको सारकाढिअतिसंक्षेपतेंसर्वरोगांकोनिदानपूर्वक, अमृतसागरनाम, ग्रंथकर्यो, तींकीवचनिकाकरिकेंऔषधांकाअनेकप्रकारकाअजमायाअजमायाजतनविचारपूर्वकलिपतेहै. अथप्रथमरोगविचार रोगकहजे कहा, कहींतरेकीपीडाहोय तीनेंरोगकहिजे सोरोग दोयप्रकारकोछे, एकतो कायकदूसरो मानस कायामेंरहेसो कायक तिनकोनामव्याधिछे. मनमेंरहेसोमानस तीरोगकोनामआधिछे. सोयेदोन्यो वायपित्तकफरूपहोय सरीरमें येकहीतरेका कुपथ्यकरिकेंमिथ्याआहारअरमिथ्याविहारका वसथकीकोपकूंप्राप्तहुवाथकासर्वरोगांनें उपजावेछे अरए वातपित्तकफ कहीतरेका कुपथ्यसे विगड्याथकादेहकूं विगाडेछेअरएहीअच्छीतरहपथ्यकासेयाथका आच्छाहुवाथकासर्वदेहकूंपुष्टकरेछे. अथ प्रथमसर्वरोगांकीअरसर्वरोग्यांकीपरीक्षालिपाछा. प्रथमरोगांकीपरीक्षातो अतनाप्रकारसूं होयछे. नाडीपरीक्षा १ मूत्रपरीक्षा २ अररोगकाअहवालपूछवासें ३ सोरोगांकीपरीक्षातीनप्रकारकोछे. अर रोगांकानिदानसें निदानकहिये अहवाल यांतीन्या

श्रीगणेशाय नमः अथ अमृतसागरकी टीका नवीन नाम मुद्रक करा जीको कर्ता पंडित श्रीपतीभिरलालपुत्र गोरधनलालजी [illegible] महेनाबादनिवासि अमृतसागरवाली [illegible] अमृतसागर [illegible] प्रसिद्ध करी.

प्रकारसें तीरोग्यांकोग्यान होय छे. अथ प्रथमनाडीपरीक्षालिप्यते,
पुरुषरोगीहोयतींकीतोजीवणा हाथकीनाडीदेषिजे. स्त्रीरोगीहोय
तींकी वांवा हाथकीनाडीदेषिजे. कीसीतरंदेपै वैद्यएकाग्रचित्तना
डीमैंराषि, आपप्रसन्नहोय अररोगीकाहाथनें हलावादेनहीं ईसीतरें
अंगुष्ठाकैनिकटिजीवकीसाक्षिनाडीछैसो वानाडी जीवकासर्वसुपदु
पनेंकहेछैतीनैंवैद्यहेसोआच्छीतरहआपकीतीनअंगुल्यांसेंतोदेषसो
वानाडीएसीतरहदेषिथकी सर्वसरीरकासुपदुपनें कहेछे. जैसेराग
कावेत्ताकूंवीणाकीतांतसर्वरागकूंकहेछे तैसेंयानाडीभीसर्वसुपदुपकूं
कहेछे. अरवाहानाडी इसतरहदेषीथकीसरीरकासुपदुपकीवैद्यकूं
नहींकहेछे कीसीतरैंकापुरसकी तत्कालस्नानकस्योहोयजींकी, त
त्कालभोजनकस्यो होयजींकी, सरीरकैतेललगायोहोयजींकी, भू
ताआदमीकी, दौडतापुरुषकी, भूषाआदमीकी, तिसायाआदमी
की, कामातुरकी, मलमूत्रनेंआदिलेरवेगलागिरह्योहोयजींकीसी
अतनापुरषांकीनाडीदेषिजेनहीं. अरदेषेतौ वैद्यनेंरोगांकोयथार्थ
ग्याननहींहोयछे अरजेसें वैद्यरोगीकेहाथकीनाडीदेषेतैसेंहीवैद्यरो
गीकापगकीभीनाडीदेषे सास्त्रकासंप्रदायतें अथवा आपकीवुद्धिका
प्रभावतेंजैसें जोहरीअभ्यासकावलथकी हीरानेंआदिलेर जवाहर
का सांचाझुठानें अरवैकामोलनें कहदेयछै तैसेंही भलोवैद्यशास्त्रका
अरअभ्यासका वलथकीरोगीकारोगकीसाध्यअसाध्यकीअर सरी
रकासुपदुपकोसर्वचेष्टाकूंजाणैछै. अवईनाडीकीपरीक्षालिषूंछूं अंगु
ष्ठाके लगतीहीतीनअंगुल्यांपहली अंगुलीनीचेतोवायकीमुष्यना
डीवहेछे दूजीअंगुलीनीचेपित्तकीनाडीवहेछे पीछलीअंगुलीनीचेक
फकीनाडीवहेछे सोवासांपजोकनें आदिलेरजैसेंवांकाचालछे तैसें

म. टी. प्रथम ग्रंथकर्त्ताए रोगीनी परीक्षा नीचे प्रमाणे करवी. नाडी, मूत्र, [illegible] विशेष [illegible] परंतु अन्य ग्रंथोमें [illegible] परीक्षा [illegible] नाडी मूत्र मल जिह्वा, नेत्र शब्द स्पर्श [illegible] नाडी [illegible] नाडी [illegible] मूत्र पे [illegible] कीछे.

चलैसुखीपुरसकीनाडी धीरी अरबलवानचलै और नाडीकीपरीक्षा तो घणीप्रकारसूंछै सोबुद्धिवानवैद्यहोयसो आपणीबुद्धिसूंनाडीपरी क्षाशरीरकासुखदुःखकोज्ञानसर्वविचारीलीज्यो जैसें जोगीकूं जोग काअभ्यासकरिके ब्रह्मको साक्षात्‌ज्ञान होयछै तैसेंसद्वैद्यकूं नाडी काअभ्यासकरिके सरीरकासर्वरोगांको अरसुखादिकांकोज्ञान हो यछै इतिनाडीपरीक्षासंपुर्णम्. १

अथ मूत्रपरीक्षालिख्यते वैद्यहैसोचारीघडीकेतडकेरोगीने उ ठाय काचकासुपेद बासणमेंअथवा कांसीकापात्रमेंमुताबे पाछेवे बा सणनैंवस्त्रसूंढांकिरापै सूर्योदयहुवापाछै वैद्यवेकीपरीक्षाकरै वेरोगी कोमूत्र पाणीसिरीसोहोय लूखोहोय अरघणोहोय अरक्यूंनीलोभी होयतो वायकाविकारको मूत्रजाणिजे अरवेमूत्रकोलालकुसुंभासि रीसोरंगहोय अरगरमउतरे अथवा पीलो केसूलाकारंगसिरीसो रंगउतरे अरथोडोउतरे तोगरमीका आजारको मूत्रजाणिजेअरवे रोगीकोजाडोअरसुपेदअरचीकणो मूतउतरेतोकफका आजारको मूत्रजाणिजे. अरओचारिघडीका तडकाकोरोगीको मूततावडेमेंमेलि घडिचारी पाछै वेमूत्रऊपरवैद्यहैसोकपडासेंतीतेलकी बूंदनाखे वा तेलकी बूंदमूतऊपरीफेलीजायतो अरोगीसाध्यजाणिजे. अरओ रोगीवेगो आछ्योहोय अरवेतेलकीबूंदमूतऊपरिफेलेनहीं अरस्थि रहोय रहेतो ओरोगीकष्टसाध्य जाणिजे. अर वा तेलकीबूंदरो गीका मूतमेंडुबिजाय अथवाचाककीसीनाई भमवालागिजाय तो ओरोगीनिश्चमरे अर वे रोगीका मूतमें तेलकीबूंदनाषतांछिद्रमेंछेद्र पडिजाय अथवा ये चिन्हहोजायपडगके आकार,वा दंडके आकार वाधनुषके आकार, तेलकीबूंद होयजायतो वोरोगीनिश्चेमरै अररो

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible]

गौकामूतऊपरि तेलकीबूंदतलावके आकारहोजाय अथवा हंसके आकारहोय अथवा पद्मकेआकारहोय अथवाहाथीकेआकारहोय अथवा छत्रकेआकारहोय अथवा चमरकेतोरणकेआकारतेलकीबूंदहोयतौं ओरोगीताजोहोयअरसरस्यूंकातेलसिरीसोजींकोमूतहोय तींकैवायपित्तको रोगजाणिजे. अर कालोअरबुदबुदानैं लीयांजीं कोमूतहोय तींकैसन्निपातको आजारजाणिजे अरमूततांजींकरोगी कीधारलाल उतरैसो दीर्घरोगजाणिजे मूततांजींकीधारकालीउतरैसोरोगीमारिजायअरजींका मूत्रमैंबकरीकामूतसरीसीवासआवैतौं के अजीर्णकोआजार जाणिजे. जींकोमूतगरमअरलाल अथवाकेसरि सरीसोपीलो जींकोमूतहोय तींके ज्वरकोआजारजाणिजे.अर जींकैकूवाकापाणीसिरीसोमूतउतरै तींपुरसनैंनिरोग्य जाणिजे इति मूत्रपरीक्षासंपूर्णम्२

अर रोगाको अहवाल वाकाप्रसंगमें कहस्यां ३ अथ रोगी कीपरिक्षालिप्यते रोगीकीपरीक्षाअतनाप्रकारसैंहोयछेदेपवासैंस्पर्शकरयांसैं अरबुझिवासैं अरस्वप्नसैंदूतसैं अर सुकनसैं अर कालज्ञानसैं अरओषधदेसकालअवस्थाअग्निबलकाविचारसैंअरसाध्य असाध्यसैंइतना प्रकारसूंरोगीकीपरिक्षा करिजेसो अनुक्रमसेलिपांछा पील्यानैंआदिलेरकई रोगतोरोगीनैं देप्याथकाइ वैद्यनैंग्यानहोयछेअरज्वरनैं आदिलेरकेईक रोगरोगीनैं स्पर्शकरयाविनावैद्यनैंनहींज्ञान होयछे, अर उदरसूल पार्श्वशूल मस्तकपीडावबासीर उपदंश सूजाप होलदिल अर भूतादिकको लागिवो प्रमेहनैंआदिलेर केईकरोग रोगीने बुझ्याविनावैद्यनैं रोगकोयथार्थग्यान नहीं

न. टी. बुद्धिवानसैंरोगीकीपरीक्षा अनेक तरांसैं करणीपड़ैछै गोलिस्यांसूं कहांकाइ पारख्यावै. श्रीरामेश्वरजी गुरुदेवप्रयुक्त छै. स्वाकारादिवाभैं पडीरोगीकीआपकाणती छै, जीभिज्ञान. पुरिषार वा निदान चिकित्सा पथ्य क्रियाका भंडार भराय्याउं नवाब उपचारके मार्ग.

होयछे. अथ सुपनपरीक्षालिप्यते रोगीनें ईसासुपनाआवैतो आ छ्यानहीं, रोगीनें सुपनामें नागा अरमुंडित अरलाल अरका लावस्त्र पहरयांथका आदमीदीपे अरनकटाअरबुचाअरकालाअर आयुधनेलीयांथका अरफांसीनेलीयांथका मारतायकादीपेतो ओ रोगी आसाध्य जाणिजे. अरभैसाऊपर ऊंटगधाऊपरचढ्यादक्षि ण दिशानें जातो सुपनामें देषैतो रोगीनें आछ्यो नहीं. अरऊं चासुंनीचेपडे जलमें डूबजाय अग्निमेंबलजाय सिंहनें आदिलेर वैनें पातोहोय दीवानें बुझातोदेषैतेल दारुपीवतोदेषे लोहनलेतो देषे पकान्नैपावतोजाय कूवामें पडतोजाय इसा सुपनारोगीनेंआ वैतोरोगीको असाध्य जाणिजेअरईनें आदिलेरईसासुपनाकोईदे षैतोकहींनें कहजेनहीं. अरपरभातेही भस्मादिकको स्नानकरे येसु पनामाफिक होमदानपाठनेंआदिलेकरिकीजेतो सुपनाकोदोसदूरि होय १ अररोगीनेंइसासपना आवैतोआछ्या सपनामेंदेवताराजा जाचकमित्र ब्रह्मणगऊअग्नी तीर्थदेषैतोओरोगविगोआछ्योहोय अरसुपनामेंकादानेंतिरजाय वेस्यानेंजीते महलरथपर्वतपरचढै तो ओरोगीविगोआछ्योहोयसुपमामेंसुपेदवस्त्रसुपेदपुष्पधारै अरमांस मीनफल यांनेंपायतो ओरोगीवेगोआछ्योहोय. अरसुपनामें अग म्यागमन करे अरसरीरको विष्टाको लेपकरे अररोवै अर आपकी मृत्युदेषे अर काचो मांसषाय सुपनामें तो ओरोगी वेगोआछ्यो होय अरजोंक सांप भौरा मांस सुपनामें जोनैंयेकाटै ओरोगीवेगो आछ्योहोय. येसुपना आछ्या आदमीनें भीआवैतो येनेंभी सुभ जाणिजे इतिसुपनपरीक्षासंपूर्ण. २

अथदूतपरीक्षालिप्यते वैद्यकानुलावानास्तेंदूतभेजेसोकाणोंगो

न. टी. [illegible] आर [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

डो नकटानैंआदिलेनहीभेजें अरइसानैंभेजैंतो ओरोगीविगोआ
छ्योहोयसोलि ० चतुरमनुष्य अरनिर्मलवस्त्रपहर्‌यांहोय अरसूधी
होयऐसानैंभेजै अरघोडा रथउपरिचाढिकरिजायक्यूंवैद्यकैवास्तैभे
टलेजायआछोउत्तमजातिकोअरआछ्योचेष्टावान्होय जेठीकोऊं
कोसुरचालतोहोय जेठीनैंवैद्यकनैंजायउभोरहे ऐसोदूतवैद्यकाबुला
वावास्तैजायतो ओरोगीविगोआछ्योहोय इतिदूतपरीक्षासंपूर्णम्.

३ अथसकुनविचारालिख्यते वैद्यहैसोरोगीकाजतनकरीवावास्ते
जातोहोय तीनैंसीतल सगुनामिलैंतो वेशकुन आछ्याअरवैद्यनैंरो
गीकैजातां अग्नीनैंआदिलेर गरमसकुनसामेमिलैंतोरोगी आछ्यो
नहींहोय अरदूत वैद्यनैं बुलावानैं जातोहोय तीनैं जलनैंआदिलेर
सीतलसकुनसामोमिलैंतोआछ्योनहींअर वैदुतनैंअग्निनैंआदिलेर
गरमसकुन सामेमिलैंतोविगोआछ्योहोयइतिसकुनपरीक्षासंपूर्णम्.

४ अथकालग्यानलिख्यते जोरोगीकैरातिनैंतोदाहहोयअरदिन
मैंसीतलागे अरकंठमैं रोगीकैकफबोले ओरोगीनिश्चैमरै जोरोगी
कौनाककीअणीसीतलहोय अरवेरोगीका सिरकैविपसूलचालैतो
ओरोगीनिश्चैमरै अरजोरोगीकी कांतिजातीरहे अरवैको प्रताप
जातोरहे अरवैकोलाजजातीरहे अरवैकोसुभावक्रोधी होजाय सो
रोगीछमाहिनामैंमरैअरजोरोगीकोअंगकांपतोहोयअरवेरोगीकीग
तिभंगहोय अरवेरोगीकासरीरको वर्णओरसोहोजाय अरवेरोगीनैं
सुगंधदुर्गंधकोग्याननहींहोयसोरोगीनिश्चैमरै अरवृक्षकापेडमैंअर
वृक्षकाडालमैं रोगीनैं अग्निकातरवरासादीसैओरोगी छमहिनामैं
मरैअरओरोगीकामकरिकैहीनहोय अरओरोगीकैप्रस्वेदनहींआ
वैओरोगीतीनमहिनामैंमरैअरजोरोगीकानकाछिद्रनैंमूंदिअरशब्द

भा. टी. वैद्यनें बुलावा आवे त्यारे [illegible] छे [illegible] भाव
मां [illegible] छे. [illegible] उपयोगी [illegible] छे. अर [illegible]
[illegible]. परंतु [illegible].

अथदेसविचारलिष्यतेदेसहेसोतीनप्रकारकाछेअनूप १ साधा रण २ जांगल ३ जेठेघणांजलसदावहतोहोय अरकफदेसामें घणों होय ऐसो पूर्वनेंअनूपकहजे १ अरऐसोलक्षण ओरठेभोहोयजीने भीअनूपदेसकहजे अरजींदेसमें वाय, पित्त, कफ वरावरीहोयतींदे सने साधारणदेसकहजे २ अरजींदेसमें ओआदमींडपजे तीआ दमीकी याहीप्रकृतिहोयछे ३ इतिदेसविचारसंपूर्णम् ७

अथकालविचारलिष्यते कालतीनप्रकारकोछे सीतकाल १ उ ष्णाकाल २ वर्षाकाल ३ सोयांकोविचारालिपूछूं सीतकालमें सीतथो होपडे अरघणोंपडेतोरोगहोय अरसीतकालमें गरमीपडेतो ओवि परीतछे १ ओभिआछोनही ईमेंभीरोगहोय इसीतरेंउष्णकालमें उष्णथोडोपडे अथवा घणोंपडे अथवा ईमेसीतपडेतोरोगकी उत्प तिहोय २ ऐसेहीवर्षाकालमें वर्षाथोडीहोय अथवा वणीहोय अथ वा होयनहींतो मनुष्यांकोरोगउपजे ३ इतिकालविचारसंपूर्णम् ८

अथ अवस्थाविचारलिष्यते अवस्थाछेतोघणांप्रकारकी परंतु तींमेंतीनतो मुष्यछे एकतो वालअवस्था १दुसरी तरुणअवस्था२ तीसरी वृद्धअवस्था ३ तींमें जो उत्तममध्यम अधमजीमेंमुष्यहोय तींकेभी जोरोगउपज्योहोय तींकासरीरअर अवस्थामाफिके सद् वैद्यहेसो जतनकरे इतिअवस्थाविचारसंपूर्णम् ९

अथअर्थविचारालिष्यते अर्थपांचप्रकारकोछे एकतो शब्द १दू सरोस्पर्श २ तीसरोरूप ३ चोथो रस ४ पांचवोगंध ५ शब्दकोठि काणोंतो कानमें, स्पर्शकोठिकाणों त्वचामें, रूपकोठिकाणों नेत्रमें, रसकोठिकाणोंजीभमें, गंधकोठिकाणोंनासिकामें, शब्दकोधर्म का नमेंछे सोसुणवाका समर्थयका थोडोसुणे अथवा घणोंसुणे अथवा

न. टी. देस, काल, अवस्थाकाविचारऊं [illegible] कालदेस [illegible] [illegible]

मिथ्यासुणै क्युंकोक्युंसुणै १ स्पर्शकासामर्थथका थोडोस्पर्शकरैवा घणोंस्पर्शकरै वामिथ्यास्पर्शकरैक्यूंकोक्युंईस्यर्शकरै २ देषवाका सामर्थथकांथोडोदेषै अथवा घणोंदेषै अथवामिथ्यादेषै क्यूंकोक्युं ईदेषै ३ छैयरसकाषावाकासामर्थसूं थोडोषाय अथवा घणोंषाय अथवा मिथ्याषाय क्यूंकोक्यूंहीषाय ४ सूंघवाकासामर्थथकांथोडो सूंघै अथवा घणोसूंघैमिथ्यासूंघै अथवा क्यूंकोक्यूंहीसूंघैतोनिश्चै रोगकीउत्पत्तिहोय ५ अरयांपांचहीकोभेलोसाधनराषिवोकरै तोम नुष्यसदाहीनैरोग्यहोय इतिअर्थविचारसंपूर्णम् १०

अथकर्मविचारलि०कर्मतीनप्रकारकोछै एकतोकायक १ काया मैरहैसोकायककर्मकहिये २ करिवासोंतोकायककहिये एकमानस कर्म मनमैरहैसोमानसकर्म ३एक, वाचक वाणिमैरहैसोवाचक कर्म कहिजे सोकायककर्मकोसामर्थथका थोडोकर्मकरै अथवा घणो करै अथवामिथ्याकरै क्यूंकोक्यूंकरै १ अरमानसकर्मका सामर्थथका थोडोकरै अथवा घणोंकरै अथवा मिथ्याकरै क्यूंकोक्यूंकरै २बोल वाकासामर्थथका थोडोबोलै अथवा घणोंबोलै अथवामिथ्याबोलै क्यूंकोक्यूंहीबोलै ३ तोमनुष्यकौं रोगकीउत्पत्तिहोय अरयांतीन्यां हीकर्मकोमनुष्य भेलोजोगराषिवोकरैतो ओमनुष्य सदाहीनैरोग्य रहै इति कर्मविचारसंपूर्णम् ११

पणवोभोगिरमीका आजारनैंउपजावैछे २ अरजींकीवायकीप्र
ोय तींकैविसमाग्निहोयसोवोवायकारोगानैंउपजावैछे सोवाक
अन्ननैंपचायदेअरकदेकअन्ननैंनहींपचावै ३ अरवो चौथोसमा
ोसर्वअग्निसूंश्रेष्टछे आछीतरैमनुष्यभोजनकरैसोपचायदेछे
ईंहींरोगकुंउपजावैनहीं ४ अरपांचमो भस्माग्निछैसो भरुन
ककारोगकुंउपजावैछे कैसें कहींभी ओपधीकासंजोगसूं सरीरमां
हिलोकफ घटीजायछे अरपित्ततोअग्निरूप वधिवोहिवायकासंजो
गसेंप्रेरयोथको महातीव्रअग्निनैंउपजावैछे तवभस्मकआग्निहोजाय
छैतववेनैंपावाकोंनहींमिलैतोतिसपसेवदाहमूर्छानैंआदिलेरवेनैंकर
आदमीनैंमारिनापैछे सोमनुष्यहैसोअग्निकावलनैं विचारयांविना
जतनकरैअथवा भोजनादिककरैतोवैंकैनिश्चरोगहोय अरवेकीचि
कित्सा सफलहोयनहीं ५ इतिअग्निवलविचारसंपूर्णम् १२

अथरोगीकेअसाध्यपरीक्षालिष्यते रोगीनैंरातनैं नींदनहींआवै
अरवैंकाकंठमेंकफवोलैअरवैंकासरीरमेंदाहहोय अरवैंरोगीकीनाडी
मंदहोय अरवैंकीवोलवामेंजीभथकिजाय अर वैरोगीकीसर्वइंद्री
आपआपका धर्मनैंछोडदेसोरोगीनिश्चैमरै अर जीरोगीकीअग्निमं
दहोय जाय अर वैंकिप्रकृतिविगडिजाय ओभीरोगीअसाध्यजा
णिजे अरजीरोगीकीआंपलालहोजाय अरस्वासहोय आवैअरहि
यामेंसूलचालै अरवैंकेतंद्राहोयआवै अरहिचकीचालिजाय अर त्र
पावहोतहोयआवै अरघणासोधै अरघणोदाहहोयआवै अरपसेव
वैंकेघणांअरचीकटाआवैसोरोगीनिश्चैमरै इतिरोगीकीअसाध्यपरी
क्षासंपूर्णम् १३ अथरोगीकीसाध्यपरीक्षालिष्यते जोरोगीआपकी
प्रकृतिमेठिकाणैरहै अरजींकोअग्नितीव्रहोय अरकहीतरैंकारोग

म. टी. वैद्यमुखैजोरोगकोविचारकैसोरोगमटैनहीं. अरपुर्विमाचैं मनुष्यानहोयछे. औरहीमर्थ
विचार अधिकनविचार. ममममाथोमदछे. वांमुमुवचनैंदोखातछे मो मनुष्य धर्मनिरासं
छै औरौंतो मारतोमाथै पुण्यमानकर शालामहाजकोछै.

उपद्रवहोयनहीं अररोगयेकदोसकोहोय अर वेंरोगीकीचिकित्सा
चारुपायांमिलैएकतो भलाशास्त्रकोजाणिवावालो वैद्यमिलैदूसरीउ
सीहीवेंहीरोगकीदूरीकारिवावाली औषधीमिलै अरउसाहीचतुरचा
करमिलै अर वेंसोहीरोगीसुजानहोयजितेंद्रियहो रोगकाघटवाव
धवाकोजाणवावालोहोय सोरोगीसाध्यजाणिजैइतिरोगीकीसाध्यप
रीक्षासं० १४ अथ रोगांकाभेदलि० सौओरोग कायामेंरहैतीं
कौंनामव्याधिछैसोवह १४ चौदाप्रकारकोछैसोलिषूंछूंसहजरोग१
गर्भजरोग २ जातजातरोग३पीडासैंउपजैसोरोग४कालसैंउपजैसो
रोग५ प्रभावसूंउपजैसोरोग ६ स्वभावसूंउपजैसोरोग७देससूंउपजै
सोरोग ८ आगंतुकरोग९कायकरोग१०अतरारोग११कर्मसैंउपजै
सोरोग १२ दोससूंउपजैसोरोग १३ कर्मदोससूं उपजैसोरोग १४
अवयारोगांका जुदाजुदालक्षणलि० मातापिताकावीर्यकादोससैं
वाकीसंतानकैभी ओहीरोगहोय आवै ववासीरकोढनैंआदिलेर ती
नैंसहजरोगकहिये १ गर्भमैंहीकुवडो पांगुलो छआंगुली रावणषं
ड्यानैं आदिलेरहोयतीनैंगर्भजरोगकहिजे२गर्भथकां माताकामि
थ्याआहारमिथ्याविहारकावसथकिवालकउपजतांइरतवावबुरीतर
हकोसरीरगुंगापणानैं आदिलेरजोरोगहोयतीरोगनैंजातजात कहि
जे ३ अरशस्त्रादिककाप्रहारसूंउपज्याजो अस्थिभंगपीडादिकरोग
त्यानैंपीडाजनितरोगकहिजे ४ अर सीतकाल उष्णकाल वर्षाकाल
सूंउपज्योरोग सीतघणोंलाग्यो तावडो लूघणां लाग्यो वर्षामैंघणो
भीजै त्यांरोगानैंकालजरोगकहिजे ५अरदेवतागुरु वडाकासरापसूं
उपज्योजोरोग अर ग्रहांकाप्रातिकुलपणासूंउपज्योजोरोग त्यांनैंप्र
भावजरोग कहिजै ६ अरक्षुधा तृषा जरानैं आदिलेर उपज्याजो

न. टी. रोगीकादुषकीवातआपकाहियामैंविचारकर जोदुषरोगीनैंछजीसोंज्यादाआपका
मनमैंमानैअरदयायुक्तउपचारविचारैसोहीवैद्यविजयपावै. अर दूजापूर्वअरळोभी होयसोजमरा
जकादूतछै. पणदूततोहुकमकोचाकरछै. मूर्षवैद्यतोअधर्मरूपछै.

रोग त्यानै स्वभावजरोगकहिये ७ अरभूतादिकांको अरक्रोध,राग द्वेस, लोभ, मोहादिकयेजीकासरीरमे प्रवेसकत्याहोयत्यांनेआगंतुक रोगकहिजे ८ अरजरादिविसपर्यंत मुण्यरोगछे त्यांनैकाईकरोगक हिजे ९ अरहोलदिलनेंआदिलेर गहलोहोजावे यानेंआदिलेररोग छे त्यांनेंअंतररोगकहिजे १० अरजीदेसमेंमनुष्यकालाहीकालाअ रलालहीलालअरभूराहीभूरा आदमीउपजेतांनैदेसजरोगकहिजे ११ अरपूर्वजन्ममें अथवा ईजन्ममेंब्रह्महत्यादिकपाप करिउपज्या जोरोगत्यानें कर्मजरोगकहिजे १२ अरवायपित्तकफसूंउपज्याजो रोगत्यानें दोसजरोगकहिजे १३ अरब्रह्महत्यादिकजोपापअरवा यपित्तकफादिकजोदोस यांदोन्यांसूंमिल्याथका उपज्याजोरोग त्यां नैकर्मदोसजरोग कहिजे १४ अव येहीसारारोगदोयप्रकारकाछे. येकतोसाध्य १ दूसरोअसाध्य २ सोसाध्यभीदोयप्रकारकोछें. एक तोघणाजतनकीयां नीठीआछ्योहोय १अरथोडाहीजतनकीया आ छ्योहोय१सोसाध्यकहिजे २ अरअसाध्यरोगभीदोयप्रकारकाछे. ए कतोजाप्य १ सोगंभीरादिक ववासीरमृगी अर्धांग क्षयी स्वासादि कअरज्यांमें घणारोगमिल्याहोयसो ओपधिपावोकरे अरपथ्यचाले अरभलावैद्यकाकह्यामाफिक चालवोकरे. जैठातांई रोगकी आयुव लहोयजैठातांई वेरोगरहे. त्यारोगानेंजाप्यकहिये. अरएकऐसाउ पजे त्यांकोइलाजहीनहीं. ओमारिहीनाषे. ओरोगमहाअसाध्यअ प्रतिकारछे. अररोगांकाभेदतोअनंतछे त्यांकोपारनहीं त्यांरोगांको ग्यानतोश्रीपरमेश्वरजीकूंछे. पणासदवैद्यहैसोशास्त्रकाबलसूं अर आपकीबुद्धिकाबलसूंयांसारां रोगानेयांचांदारोगानें यांकाअंतरभू तजाणिलीज्यो. येसारारोगयांहीमेंअंतरभूतछे इतिरोगभेदसंपूर्णम्

न. टी. [illegible]

१५ अथप्रकारांतरसूंसारारोगांकी उपजावाकीओरहीविधिलिप्यते अरसर्ववातसूं सावधानमनुष्यव्हेंसो १४ चोंदाप्रकारकोवेगछेंत्यां नैं हकनाहक प्रकटकरेनहीं अरसुतैसिद्धिप्रगटहुवाछेंतो वानेंरोकेंन हीं वाको कारजकरेंतोंमनुष्यकेंरोगहोयनहीं अरवाचोंदावेगानें हक नाहकप्रकटकरें अरवे प्रकटहुवाछेंत्यांकोंधारणकरेंतों रोगहोयहीसो चौदावेगालिषूछूं अथचोंदावेगलिप्यते. एकतोअधोवाय १ जंगल कीबाधा २ मूत्रकीबाधा ३ डकारकोरोकिवो ४ छिंककोरोकिवो ५ तृषाकोरोकिवो ६ भूषकोरोकिवो ७ नींदकोरोकिवो ८ षासकोरोकि वो ९ षेदकास्वासकोरोकिवो १० उवासीकोरोकिवो ११ आसूं कोरोकिवो १२ छर्दिकोरोकिवो १३ कामदेवकोरोकिवो १४ येचों दावेगछें. अरयांकावेगनेंहकनाहक रोकें अरयांकाउपज्यावेगको धारणकरे तोमनुष्यकेंनिश्चैंरोगउपजैछें सोअनुक्रमसूंलिषूंछूं. जोपु रुष अधोवायकूंरोकैतोउंकें गोलाकोआजारहोय. फियाकोउदरको आफराको पेटमेंपीडाको येरोगहोय पाछेंवेंके अधोवायआछीतरह होयनहींअरवेंकेंमूत्रकृच्छ्रकोअरबंधकुष्ठकोरोगहोयजायअरनेत्ररो गअरअग्निमंद अरहियोदूषे १इतिअधोवायरोकिवाकोरोगसंपूर्णम्

१६ अथमलकारोकिवाकोरोगलिप्यते जोपुरसमलकी बाधाकूंरोकें जींकेंयेरोगहोय हाथपगांमेंफुटणीहोय अरपीनसहोय मस्तकपीडा होय वायकीऊर्ध्वगतिहोयआवे अधोवायकी आच्छीतरहप्रवर्ति होयनहीं हीयोदूषे उदावर्त्तरोगआगेकहस्यांसोहोयआवे अरगोलो फीयोउदरकोरोगउदरपीडा, मूत्रकृच्छ्र, बंधकुष्ठ, नेत्ररोग, अग्निमांद्य येभीरोगहोयआवे २ इतिमलकारोकिवाकारोगसंपूर्णम्

अथमूत्रकारोकिवाकारोगलिप्यते जोमनुष्य मूत्रकीबाधानें रोकें

न. टी. यावातप्रत्यक्षछेजोरोगतोअल्पछे जोपरमोटामोटाउद्योगअरयणोद्रव्यपरचहोयकर मीवेंकीसांतिनहींहोयसेकर्मजजाणकरशास्त्रकाआधारसौंवेंकोप्रायश्चितकरावणो, जीसूंसांति होयछे अरछातीकाजोरसों कर उपायकरेतों चोटपाडीजायछे,

तींकेयेरोगहोय. अंगकैफूटणीहोयपथरीकोरोगहो अथवागोलाफि
यानैं आदिलेरपाछै मलकारोकिवाका जोरोगकह्याछैसोभीइंमूत्रका
रोकिवामेंहोय ३ इतिमूत्रकारोकिवाकारोग संपूर्णम् अथडकाररोकि
वाकारोगलिप्यतेजोमनुष्यडकारआवतीनैरोकैतींकैइतनारोगहोय
छै. अरुचीसरीरकांपै हियोरुकै आफरो पासी हिचकीयेरोग डका
रकारोकिवाकरिकेहोयछै ४ इतिडकाररोकिवाकारोगसंपूर्णम् अथ
छींकरोकिवाकारोगली॰ जोपुरपछींककावेगनैरोकै तींकैयेरोगहोय
छैमथवायहोयअरसरीरकीसारी इंद्रीदुर्बलहोजाकअरगरदनमुंडन
हींमुपकैस्युंवांकापणो होयजाय५ इतिछींकरोकिवाकारोगसंपूर्णम्
अर्थातिसरोकिवाकारोगलि जोपुरसनैतिसलागतीहोयअरतीनआे
रोकैतोयेरोगहोय ईकैमुपसोसहोय सर्वअंगमें फूटणीहोयवहराप
णोहोयअर मोहहोयआवै भ्रमहोयआवै अरहियादूपै ६ इतितिस
रोकिवाकोरोगसं ॰ अथभुपरोकिवाकारोगलि॰ जोपूरसभूपकावेग
नैरोकैतींकै अतनारोगहोय सवअंगटूटियालागिजाय अरुचिहोय
आवै अरसर्ववस्तुउपरग्लानिहोयजाय अरसरीरकृसहोयजाय
सूलचालै अरभ्रमहोयआवैअरविनाश्रमहोश्रमहोयआवै अरसर्व
इंद्रिसिथलहोयजाय अरसरीकोवर्ण औरहोयजाय ७ इतिभूपका
रोकिवाकारोगसं॰ अथनींदरोकिवाकारोगलि ॰ जोमनुष्यनींदआ
वतीनैरोकैतींकयेतारोगहोयवैकैमोहहोयआवैमाथोअरआंपिभारी
होयजाय. आलसआवैउवासीआवैअंगमैपीडाहोय ८ इतिनींदरो
किवाकारोगसंपूर्ण अथसासरोकिवाकारोगलिप्यते जोमनुष्यआ
वतासासनैरोकैतांकैंपासकी वृद्धिहोय अरुचिहोय हियामैरोगहो
य सासहोय सोसकोरोगहोयहिचकीइतारोगहोय ९ इतिसासरोकि

न. टी॰ [illegible]
[illegible]
[illegible]

वाकोरोग संपूर्णम् अथश्रमाकास्वासरोकिवाकारोगलिष्यते जोपु स श्रमकास्वासनैंरोकैर्त्तांकैइतारोगहोय गोलोहृद्रोगमोहयेरोगश्र मकास्वासरोकिवासूहोय १० इतिश्रमकास्वासरोकिवाकारोगसं०

अथउवासीरोकिवाकारागलि० जोमनुष्यआवतीउवासीनैरोकै र्त्तीकैमथवायहोयइंद्रियांकीदुरवलताहोय गरदनकोअरमुपकोवांक पणोहोयजाय ११ इतिउवासीरोकिवाकारोगसं० अथआंसूंरोकिवा कारोगलिष्यते जोपुरुषआंसूंआवतानैंरोकैर्त्तांकैयेरोगहोयछैपीनस होय नेत्ररोगहोयअरमथवायहोयाहियोगषै गरदनमैंपीडाघणोहोय अरुचिहोयअरगोलोहोयआवतांआसूनैंरोकैर्तांकैएतारोगहोय१२ इतिआसूरोकिवाकारोगसंपुर्णम् अथवमनकारोकिवाकारोगलिष्य तेजोमनुष्य वमनकाआवतावेगनैरोकैर्तांकैयेरोगहोयरतवावपित्त कोढनेत्ररोग पाजीपांमरोगज्वरपासीसासहियोदूषै मुषकैकील अ थवा छायसोर्जायेतोरोगवमनकारोकीवासूहोयछै १३ इतिवमनका रोगसंपूर्णम् अथकामदेवरोकिवाकारोगलिष्यते जोपुरुपकामदेव जाग्यानैंरोकैर्तांकैयेरोगहोयछै सुजाषप्रमेह इंद्रीकैविषैपीडाअरइं द्रीसुजिजाय अरचित्तवहकीजाय अरभोजनविषैअरुचिहोय एता रोगहोय १४ इतिकामदेवरोकिवाकारोगसंपूर्णम्.

इतिप्रकारांतरसु सारारोगांकाउपजवाकीविधिसंपूर्णम् १६ इति श्रीमन्महाराजाधिराजा महाराजराजराजेंद्रश्रीसवाई प्रतापसिंह जी विरचितेअमृतसागरनामग्रंथेरोगविचारनाडीपरिक्षा मूत्रपरी क्षा रोगपरिक्षा सुपनपरिक्षा दूतपरिक्षा सुकुनपरीक्षा कालग्यानप रीक्षा औषधिविचारदेसकालअवस्था, अर्थकर्मअग्निवल,रोगांका साध्यासाध्यविचाररोगकाभेद रोगांकीउत्पत्तिनिरूपणंनामप्रथम

न. टी. ज्यांकाशरीरमैंबल, अवस्था, विचार, अरसाधनसर्वसावूतछै. ज्यांकापरओरशरीरओरव्यभव. वैद्यलोकदूरसौंदीदेषैनहीछै. ज्यांकाविचारसाधनविपरीतछै. ज्यांकीही वैद्यलोकमालाफेरयोकरैछै.

स्तरंगःसमाप्तः १ अथकायकरोगमेंसर्वरोगमात्रकोराजाज्वरछैसो तींकोअहवालपूर्वलक्षणअरवैकोजतनक्रमसेंलिपिजेछैअथप्रथमज्व रकीउत्पत्तिलि॰सतीजीकापितादक्षप्रजापतीजग्यकोप्रारंभकर्योती मेअहंकारकेवलसूंत्रिलोकीकेपतीजोसाक्षात्शिवजीनै आपकाजग्य मेंवुलायानहीं ओरसर्वदेवतानकूंवुलायजग्यकोप्रारंभकर्यो तहांस तीजीआपकापिताकेविनावुलायांइशिवजीकाभेज्याविनाहीगई त वजग्यकेविपैवेकेपितासतीजीकोअनादरकियो तहांसतीजीजोगव लसूं आपकासरीरकोत्यागकर्योतवयावाताशिवजीसुणीतवशिवजी केक्रोधउपज्योतवक्रोधउपजतांहीशिवजीकाललाटकोनेत्रपुलिगयो तींनेत्रमेंवीरभद्रगणप्रगटभयोवीरभद्रगणकिसोकछैअतिक्रोधीअ रपीलोसरीरछैजींकोअरनेत्रजींकेतीन भस्मलगायाप्रलयरूपपीला जींकानेत्र वाघंवरधार्या अग्निकोसोरूपछोटीजांघतीन वडोउदरऐ सोप्रकटभयोसोशिवजीसूं अरजकरीकहाकरूं तवशिवजी आग्या देतभये तुमवांकोजग्यविध्वंसकरो तववाकूंमारि वाकोजग्यविध्वंस कियो अरवाजग्यकीसामग्री आपपायगयो तववीरभद्रकोनामाशि वजीज्वरपाड्यो सोओज्वरहेसोमनुष्यांकेमिथ्या अहारमिथ्याविहा रकावसथकीनाभीअरस्तनकेवीच जोआमकोघरतीमेंरहतोजोवाय पित्तकफ त्यानेरोगीकासरीरमें आमासयकीजगामेंदुष्टहोयअरआ मासयकी जगामेंरहतोजोअहार तींसेंउपज्योजोरसतीनेविगाडिअ रवेआमासयेमेंरहतोजोउदरकोअग्नीतीनेंउदरमेंलेबारेकाढि सारा रोगीकासरीरनेंतातोअग्निरूपकरिदेछैसोओज्वररूपहोयछै याहिस मयसरीरका पराक्रमनेंपायजायछै सोज्वर आठप्रकारकोछै एकतो वायकोज्वर १ पित्तकोज्वर २ कफकोज्वर ३ वातपित्तको ४ वा

म. टी. [illegible]

तकफकोज्वर ५ कफपित्तकोज्वर ६ सन्निपातकोज्वर ७ आगंतुक ज्वर ८ एआठप्रकारकाज्वरछै सो अबयांका जुदाजुदालक्षण कहस्यूं अथप्रथमज्वरमात्रकोसामान्यलक्षणलिष्यते जींकासरीरमैंइकसमचैइसोलक्षणहोयजीनैंज्वरकहिजै सरीरतातोहोयआवैअरपसेवभीनहींआवै अरभूषजातीरहैसारोअंगजकड्योसोहोय अरमथवाइहोय अरहाथ पगांमैफूटणीहोइ अरकठेहीमनलागैनहींऐसा लक्षणजींरोगमैंहोयतीनैंज्वरकहिजे १ अथज्वरकोपूर्वरूपलिष्यतेहाथपगामैं फूटणीहोय मथवायहोय जंभाईहोय विगरिषेदहीसरीरमैं षेदहोय ऐसालक्षणजींमनुष्यकेहोय तवजाणिजेज्वर उपजसी ऐसो लक्षणवैद्यजाणै२ अथज्वरकोविशेषलक्षण जींमैप्रथम वायज्वरलक्षणलिष्यते सरीरकांपै ज्वरकोविसमवेगहोय कंठहोटसूकै नींदआवैनहीं छींकआवैनहीं सरीरलुषोहोयमथवायहोय सरीरमैंपीडाहोय मुषमैंछऊंरसकोस्वादजातोरहे जंगलउतरैनहींपेटमैंसूलहोय आफरोहोय उवासीघणीआवैतो वायकोज्वरजाणिजै ३ अथसामान्यज्वरमात्रको जतनलिष्यते गरमपाणीपाजे आच्छाहलकालंघनकराजै मलकावलमाफिकअरहलकोपथ्यकराजे पवननहींआवै ऐसा घरमैराषिजै आछ्यामिहींनवस्त्रांपरसुवाणिजै तोज्वरजायअरतीन दिनताईंतोज्वरमैकडवीकषायलीजुलावउगैरै औषदिदीजेनही योंहीजतनकीजेपाछैसूंठी मासा २ धणोमासा १ इनकोकाथकरिपाजै तोज्वरजाय अरभूषलागे १ अथवातज्वरकोजतनलिष्यते अतना पुरसांनैलंघनकराजेनहीं वायज्वरवालानैं क्षयीरोगवालानैंजींकेअग्निघणोहोयजीनै गर्भिणीस्त्रीनैंदुवलानैंबालकनैं वुढानैडरपत्र्यालनैं तिसवालानैं येतामनुष्यांनैलंघनकराजेनहीं हलकापथ्यकराजे वाय

न. टी. जैसेस्त्री अरपुरुषयांकीअवस्थातोनहींछै अरयांकेस्त्रीपुरुषकोव्यवहारह्वो ज्यांको सरीर आरोग्यनहींहै अरस्त्रीजवस्थामेकमज्यादाविपरीतहोयतोभीशरीरआरोग्यनहीरहै. अरईप्रजायैंजंगोपुरुषकोव्यवहारछै जेसोस्त्रीकोभी नहींछै.

ज्वरवालानैं ओषध्यांकोक्काथदीजे १ चिरायतोनागरमोथो नेत्रवालोदोनूंकट्यालीं गिलवैसूंठि येसारीओषदि छदामछदामभरले त्यांनैजोकुटकरियांकोक्काथदिन ५ दीजैतौवायज्वरदूरिहोय २ अथवायज्वरकादूरिकरवाकोदूसरोक्काथालि० सूंठि नींबकीछालि धमासो पाठकचूर अरडूसो एरंडकीजड पुहकरमूल येसारीओषदी छदाम छदामभरले त्यांनैजोकूटकरियांकोक्काथदीजैतौवायज्वरदूरिहोय ३ अरहींगुलेस्वररससूंवायज्वरतत्कालदूरिहोय हिंगलू पीपल सींगी मोहरोसोध्योएतीन्यूं बराबरिलेयांनैंमिहीवांटिपाणींमैंरतीआधप्रमाणकीगोलीबांधैगोली ५ मैंवायज्वरनिश्चैजाय ४ अरवायज्वरवालानैंमुंगाको मसूरकोकुलत्थकोमोठको यांकीदालकोपाणीपथ्यछै अथ सतावरीगिलवैयेदोन्योंतीमैसूं छदामभरत्यांकोक्काथकरैकाथमेंछदामभर पुराणो गुडनांपे ईतोलदिन ५ लेतो वायज्वरजाय ५ अरमीनक्कादाप पीपलि, पित्तपापडो सौंफ येसबछदामछदामभरिले इनकोक्काथदीजैतौवायज्वरजाय ६ इतिवायज्वरजतनसंपूर्णम्.

अथपित्तज्वरकोअहवालअरलक्षणजतनालि० नेत्रांमैंदाहहोयमूंढोकडवोरहैतिसघणीहोय भौंलिआवैबकैघणो अरसरीरतातोघणोरहैअरवेगभीघणोआवैमलपतलोहोय वमनहोयनींदआवैनहींमुखसूकै अरपकिजाय पसेवआवैअरमलमूत्र नेत्रयेपीलाहोय येलक्षणजींमनुष्यकेहोयतींकोपित्तज्वरजाणिजे अथपित्तज्वरकाजतनलिष्यते नागरमोथो धमासोपित्तपापडो नेत्रवालो चिरायतो नींबकीछालि येसब ओषधि छदामछदामभरिले त्यांनैजोकूटकरि यांकोकाथकरांपावैतो पित्तज्वरदूरिहोय १ अथवागरमपाणींकैसाथपेरसारकोचूर्णछदामभर अरकुटकीमासा २ मिश्रीटंक २ यांकोचूर्णकरिलेतो पित्त

त. टी. [illegible]

ज्वरदूरिहोय २ अथवाचंदनटंक १ पसटंक १ इनकोंमिहीवाटि प ईसा च्यारभरपालसाकासरवतमेंमिश्रीपईसा २ घालिपीवेतौपित्त ज्वरदूरिहोय ३ येजतनत्रिंशतीमेंकह्याछे अथवा चावलांकीपालका पाणीमेंमिश्रीमिलायपीवेतौपित्तज्वरदूरिहोय ४ अथवा कुटकीकिर मालाकीगिरी नागरमोथो हरडेकीछाली पित्तपापडो येसारी छदा म छदाम भरिले त्यांनैजौकूटकरियांको काढोदेतौपित्तज्वरनैअरति सनैं अरदाहनें अरमूर्छानैंप्रलापनें भौलिनैंयांसारानैंयोकाथदूरिक रैछे, योवैद्यविनोदमें कह्योछे ५ अथवागोहांकाआटानेंसिजायतीमें मिश्रीघालितीनैपतलोपूवसिजायपतलोहरीरोकरिदेतौ पित्तज्वरदू रिहोय ६ अथवामीठीदाडयूंकोसरवतदेतौपित्तज्वरकोदाहदूरिहोय ७ अरयाहीदाहज्वरहोयतौमहासुंदर सर्वगुणांकरिकेसंयुक्त ऐसी जोस्त्रीपोडपवरसकीफूलांकोजीकेआभरणमहासुंदरझीणोवस्त्र अर महाचतुरऐसीस्त्रीसौंसंगकरैतौ दाहकीव्यथादूरिहोय अरअतनीव स्तभीदाहकीव्यथानें दूरिकरैछे सोलिपजेहै सुवाकीवाणी मैनाकीवा णीबालककीवाणीमनोहरवाग फुलांकोहारकमलकाफूल मनोहरशृं गारकीकथाकपूरकोलगावो सुंदरस्त्रीयांकोसंग फवारानेंआदिलेरये साराहीदाहकीव्यथानेंदूरिकरछे ८ अथवा पालसाकासरवतमेंसीं धोलूणघालिपीवैतौपित्तज्वरदूरिहोय ९ अथवा मुंगांकीदालकोपा णीतीमैंमिश्रीमिलायपीवेतो पित्तज्वरदूरिहोय १० अथवामिनका दापकोसरवतमिश्रीमिलायपीवेतौपित्तज्वरदूरिहोय १० अथवापि त्तपापडोनागरमोथोचिरायतोटंक ५ यांकोकाथदिन ३ लेतौपित्त ज्वरदूरिहोय १२ येसाराजतनज्वरतिमिरभास्करमें लिप्याछे अ थवारक्तचंदन पदमाप धणौगिलवैनींवकीछालि येसारीओपदिछ

म. टी. जोविषमव्यवहार [illegible] आरोग्यताकमहुं [illegible] अहार [illegible] [illegible]

दामछदाम भरिलीजैत्यांनेंज्योंकूटकरित्यांकोकाढोदिन ५ लेतोपि त्तज्वरनैदाहनैंतिसनैंवमननैंयांसारांनैंदूरीकरैछे १३ येजतनलो लिंबराजमेंलिप्याछे अरयोहीपित्तज्वरघणोदाहज्वरहोयतौ कमल काफूलांकीसेजपरऊनैंसुवाणिजेतोदाहज्वरदूरिहोय अरकेलिकापा नाऊपर सुवाणि जेतोदाहाज्वरदूरिहोय ५४ अथवा आछयावनमें रापिजेतोदाहज्वरदूरिहोय १५ अथवा आछयापसपानामेंरापिजे तो अरएसकापंपाकी पवनकीजेतोदाहज्वरदूरिहोय १६ येजतन लोलिंबराजमेंकह्याछे, अथवा गुलाबकाफूलांकीपांपड्यां कोतिलांके पांचसातपुटदेअरवांकोतेलकाढेंचवेलिकातेलकीसीनांईंतीनैंगुलरो गनकहेछैहकीम अरइंहीनेंहिंदगीमेंगुलाबकोतेलकहेछे. तोंकोदाह ज्वरवालाकेमर्दनकरेतोदाहज्वरदूरिहोय १७ अथवासौवारकोधो योघृतअथवाहजारवारकोधोयोघृतर्तोकोसरीरकै मर्दनकरेतो दाह ज्वरकीव्यथा तत्कालदूरिहोय १८ अथवा नींबकाकोमलपानानैं वांटिवामेंपाणीघालवानैविलोयवामेझागउठायवांझागांकोदाहज्वर वालाका शरीरकैलेपकरेतो अथवा ईझागांमैंवहेडाकीमींगीमिलाय लेपकरेतोदाहकीविथा तत्कालदूरिहोय १९ येजतनवैद्यजीवनमेंअ रवैद्यविनोदमेंलिप्याछे इतिपित्तज्वरदाहाज्वरकालक्षणजतनसं०२

अथकफज्वरकालक्षणअरजतनलि० अन्नकीअरुचिहोयसरीर भारीहोयरोमांचहोय मूत्रअरनपजीकासुपेदहोयनींदघणीआवैस रीरठंडोहोय मूंढोमीठोहोय वेगघणोनहींहोय आलसघणोअवैसा सहोयपासहोयपीनसहोय येजीमेंलक्षणहोय सोतीनेकफज्वरकहि जे अथकफज्वरकोजतनलि० नींबकीछाली सूठीगिलवै कटाली पो हकरमूल कूटकी कचूर अरडूसो कायफल पीपलि सतावरी. येसारी

न. टी. ग्यारही मिदकढोनोमर्दनअथवा नरारको अनुक्रमसांकिये बालरा १ [illegible] षरा २ करुरा ३ मार्गदिन ४ बालक ५ पतलिया ६ ... ७ ... शर्दी ७ सुरी १२ दुख १ आगंतुकरोंसे १३ दुवा जुपकेंदरपीछ २५ दुखाठे.

ओषधि छदामछदामभरिले पाछेयानें जौकूटकरि याकोकाथदिन ७ लेतोकफज्वरदूरिहोय १ अथवा कायफल पींपलि काकडासिंगी पुहकरमूल यांसारानें मिहीवांटी छदामभरि सहतमेंचटावैतो कफ ज्वर सास कासनैंयोअवलेहदूरिकरै येजतन वैद्यविनोदमेंलिख्याछे २ अर कफज्वरवालानें गरमपाणी सेरकोतीनपावरहे ऐसो थोडो थोडोपाजे लंघन १२ कराजे पाछेमूंगाको अथवामोठाको अथवा कुलत्थका पाणीको पथ्यदीजे दिनमें सोवादीजैनही अर बिजोराकी केसरि सींधालूणकेसाथदीजैपथ्यमें आदोदिजैअथवा योपाचनभी दीजे सोलिषेहेंसूंठि मिरचि पींपलि चित्रगपीपलामुलदोन्यूजीराल वंग इलायची सेकोहिंग अजवायणअजमोद येसर्वबराबरलेयांको चूर्णकरे पाछेईनें छदामभर गरमजलकेसाथदिजेतो पाचनहोयभूष लागे कफज्वरदूरिहोय ३ अथवा कटालीगिलोय सूंठिपूहकरमूल अरडूसोयहक्षुद्रादिकहैसो येसबओषधी अधेलाअधेलाभरलीजे त्यांनेंजोकूटकारि ईतोलकाथकरिदिन ७ सात दीजैतोकफज्वरदूरि होय ४ अथवाकटालीपीपलीकाकडासींगीगिलवे अरडूसो येसब ओषदि टंक दोयदोय २ लीजैइनकोकाथकरिदिन १० देतो कफ ज्वरकूंसासकूं षासकूं मंदाग्निकूं यहकाथदूरीकरेछे ५ अथवा अरडू साको काडो छदामभरतोलप्रमाणदिन १० दीजैतोकफज्वरतत्काल निश्चेदूरिहोय ६ अथवासीतभंजीररसरती२ दोय अरडूसा अरसूं ठिकाकाढाकेअनूपानसूं ईतोलदिन ७ लेतोकफज्वरनिश्चेतत्काल दुरिहोय७सोवेकफज्वरकूसीतभंजीररसालिख्यते पारोसोध्योहिंगलू कोकाढ्योटक ५ गंधकसोध्योटंक ५ तामेश्वरटंक ५ सिंगीमूहरोसो

न. टी. सन्निपातज्वरकाभेदतोबहुतछे परंतुसंतत १ सतत २ अन्येद्यु ३ तृतयिक ४ चातुर्थिक ५ येपांचछे अरआगंतुकका १३ भेदजीयेअभिचार १ ग्रहावेश २ शाप ३ अर श्रम १ अग्नि २ क्षत ३ शस्त्रादि ४ अर इच्छितअप्राप्ति १ भय २ शोक ३ चिंता ४ गंध ५ कोप ६ सुमले १८ अर ७ पहले सुमले २५

श्योटंक २ सूंठिटंक ५ मिरचिटंक ५ पीपलीटंक ५ सुहागोसोध्योटंक ५ येसर्वमिहीवांटियांकैचित्रककारसकोपुट ३ दीजेपाछेआदाका रसकोपुट७दीजेपाछैंईकेपानाकारसकोपुट ३ दीजेपाछैंईकीगोलीरती १ प्रमाणकीकीजेयोसीतभंजीररसछैइमूंकफज्वरअरसीतांगअर वायकासर्वरोगांनेंदूरिकरैछे ७ इतिकफज्वरकालक्षण अरजतनस०

अथवातपित्तज्वरकालक्षणजतनलिष्यते जोमनुष्यके वातपित्त ज्वरहुईहोयजीकेमूर्छाहोय अरभोलिदाहहोय नींदआवेनहींअरम थवायहोय कंठमुपसूके अरवमनरोमांच अरुचिहोयअंध्यारोआवे अरसर्वअंगमैंपीडाहोय जंभाई अरवकिवो येलक्षणजोज्वरमैहोय तीनेंवातपित्तज्वरकहिजे अथवातपित्तज्वरकाजतनलिष्यतेपरेटोगि लोयअरंडकीजड नागरमोथोपदमाप भाडंगीपीपलिपसरक्तचंदन येसर्वओपदिमासापांचपांचप्रमाणले पाछेयानेंजोकूटकरिछदामभ रिकाथदिन १२ देतो वातपित्तज्वरदूरिहोय १ अथवागिलोय पित्त पापडो चिरायतो नागरमोथोसूंठियहपंचभद्रकोकाथछेइनकोवरा वरिलेजोकूटकरिछदामभरिकोकाथरोजीनादिन १२ वारादेतोवात पित्तज्वरदूरिहोय २ अथवागिलोयपित्तपापडो सूंठि नागरमोथो अरडूसो यांनेंवरावरीलेजोकूटकरिछदामभरिको काथदीजेतोवात पित्तज्वरदूरिहोय ३ अथवापटोल नींबकीछाली गिलोयकुटकीयेव रावरिलेय्यांकोछदाम भरिकोकाथदिन १२ लेयतोवातपित्तज्वरदूरि होय ४ अथवामहुओ महलोठि लोद गोरीसर नागरमोथो किरमालाकीगिरियेसर्वेवरावरिलेयांनेंजोकूटकरि छदामभरिकोकाथदिन १२ लेयतो वातपित्तज्वरदूरिहोय. ५ अथवाचावलांकीपीलांकपाणीमैंमिश्रीअरसहतमिलय दिन १० पीवेतोवातपित्तज्वरदूरिहोय

म. टी. आगंतुकज्वरोनिरस्तार्धविर्निवभागठे जीदैमागंतुक ३ अभिघात आगंतुक ४ अभिचार आगंतुक ६ ईतिमगो नुस्तयुरतो. ईयाणी आलदामारचठे. पोमाटवदा मर कमून णागादंवदैमोधोदरशाफुमापातो. पाठ अनुश्यमणोमर्जि. मैररर्टोकिण्यो.

६ अथवासूंठिमिरचिपीपलिइनकी सममात्रालेइनकी वरावरिमि श्रीमिलाय चुर्णकरिअधेलाभरिरोजीनासहतकासंगसूंदिन १० लेतौवायपित्तज्वरदूरिहोय ७ इतिवातपित्तज्वरजतनसंपूर्णम्.

अथवातकफज्वरलक्षणजतनलि० जीमनुष्यके ज्वरमेंयेलक्षण होय षासी अरुचिसंधिसंधिमैंपीडा मथवाय पीनस संताप अंगकंप सरिरको भाखापणों नींद आवैनहीं पसेव सास पेटमैसूलअरजी मनुष्यकीनाडी सर्पकी अथवा हंसकी चालचालैधुसरो अथवा सुपेद चीकणो अथवा सुरमासिरीसोजींकोमूतहोय कालोंजींको मल होय अरचीकणो होय धूंसरीआंपिहोय मुपकसायलो अथवामीठो होय. जीभकालीहोय अथवा सुपेदआली ऐसीहोय कंठमै कफका घूंघरोबोलै सरीरठंडोलागे येलक्षण जींकेहोय तींने वात कफ ज्वर जाणिये येलक्षण ज्वरतिमिरभास्करमें लिष्याछै १ अथ वातकफ ज्वरको जतन लिष्यते ईश्वरवालानैं लंघन दश कराजे आधोओ टयोपाणी पाईजे अर दिनदशपछै चिरायतो नागरमोथो गिलोय सूंठि येसव वरावरलि त्यांनैंजोकूटकरि छदाम भरको काथदीजे पाछै ऊनेपथ्यदीजैतो अरकोईतरेको उपद्रवकठैनहीं अरइहीं ज्वर मैदिनतीनपाछैकाथदीजैतो इहज्वरकोदूरिकरैछै सोकाथलिषूंछूंका यफल देवदारु भाडंगी नागरमोथो धणो पित्तपापडो हरडेकीछालि सूंठि कणगचकीजड येसर्व औषदि वरावरिलै इनकूंजोकूटकरिटंक २ भरको काढोकरि देयतो वात कफज्वर, पासीसोजोसास इनकूं इ हदूरिकरैछै १ अथवानागरमोथोपित्तपापडो सूंठि गिलोयधमासो येसर्व वरावरारिले यांनैं जोकूटकरि छदाम भरको काथदिन१०ले

न.टी. हिंगलूतोला ७ लेकरनींवुकारसमें परलकर २ फरणींपऊहांडीमाटीकीनग २ लेकी हांडीमेंपोंदीहिंगलूकीवडीतोडदेणी. पछहांडीदुजीकोमुंडागृंमूंडोजोडकर कपड माटीदोहांदीका मूंढांकेदेंकरचूलैचढाकरआंचसाधारणदेणी उपरलीहांडीमेंपाणी को पोतोफरणी. पहर ३ सीतलहुवाउतारहांडीपोलकर ऊपरलीहांडीमें पारो आयासिरीजो नींकलसीपांगुद आवश्यो

यतौ वातकफज्वरकूं वमनकूं दाहकूं मुखसोसकूं यह काढोदूरिकरेछे २ अथवा कत्याली सूंठिपीपलि गिलोय येसब तीमेसौं छदामभरी लेतींको काढोदीजेतो वातकफज्वरदूरिहोय ३ अथवा सालपर्णी पृष्ठपर्णी कत्यालीदोन्यूं गोपरू बीलकीगिरि अरएयू अरलू कूंभेर पाठ येदसमूलछैतीनैं जोकूटकरि तींको काथकरि पीपली मिलाय दिन १० देवेतो वातकफज्वर दूरिहोय. ४

अथवा ईजूरमैं मुप अरतालवोसूकिजाय जीभलठरहोयजायतो त्रिजोराकीकेसरीमैंसींधोलूंणअर मिरचिलगाय अर जीभकैलेपकरे तोमुखको अर तालवाकोसोस अरजीभकीलठरताईनैं यहलेपदूरिक रेछे ५ अथवा चिरायतो गिलोय देवदारु कायफल वच येओंपादि बराबरिले त्यांको छदाम भरको काथ करिदीजेतो वातकफज्वर दू रिहोय येजतन ज्वरतिमिरभास्करमें लिप्याछे ६ इतिवातकफज्वर जतनसं० ५ अथकफपित्तज्वरकालक्षणलिप्यते मूंढो अरजीभ क फसूंलिप्याथका होय अरतंद्राहोय मोहहोय पासीहोय अरुची ति सवणीहोय वारंवारमें दाह होय अरसीतहोय सरीरमेंपीडाहोय हियेदूपे भौलिआवे भूपनहींहोय सरीर जकड्योसोहोयजाय जीं कीनाडी हंसकी अथवा मींडकाकीसि चालचाले मूतजीकोसुपेद ल लाईनैंलीयांचीकणोहोय मलभीललाईलीयां होयजींकानेत्रमींढका कावर्णसिरीसा होय मुपमीठोरहेअथवा कडवो होय जीभललाइ लीयां सुपेद होय जींमनुष्यकै येलक्षणहोय तींकै कफपित्तज्वरक हजे. येलक्षणज्वरतिमिरभास्करमेंलिप्याछे १ अथकफपित्तज्वरका जतनलि० ईज्वरवालानैं लंघन १२ कराजे ईज्वरमें अष्टावसेसज टपावजे अरयां ओंपध्यांको काढोदीजेसोलिपूंछूं. गिलोय रक्तचंद

न. टी. [illegible]

न सूंठि नेत्रवालो कायफल दारुहलद ये औषधिवरावरिलेइनकों जौकूटकरि छदाम भरको काढोदिन १० देवैतौकफपित्तज्वरदूरिहोय १ अथवा नींवकीछालि रक्तचंदन पदमाषगिलोय धणों यांऔषधांको काढोकरिदिन १० दीजेतौ यो जुरदूरिहोय और दाहतिसत्रमनयेभीदूरिहोय २ अथवागिलोय इंद्रजव नींवकीछालिपटोल कुटकी सूंठि सुपेदचंदन नागरमोथो पीपली येसव औषदी वाराबरिले इनकोमिहीं चूर्णकरि मासाच्यारि ४ अष्टावसेस जलकै साथि दीजै तौ ज्वरकूं सासकूं ऊष्णताकूं हिया दूपवाकूं अरुचोकूं यह चूर्ण दूरि करैछे३अथवा गिलोय दोन्यूंकट्यालीकचूर दारुहलद पीपलि अरडूसो पटोल नींवकीछालि चिरायतौ येसर्व औषधिसमलीजे इनकूंकूटकरि छदाम भरको क्वाथकरि दोन्यूं वगतदिन १० लेतौ पित्तकफज्वरदूरिहोय ४ अथवा दाप किरमालाकीगिरि धणों कुटकी नागरमोथो पीपलामूल सूंठि पीपलियेसर्व बरावरिले इनकूं जौकूटकरि छदामरको काढो दोन्यूं वपतां दिन १० दीजेतौ सूलभ्रम मूर्छा अरुचिछर्दिकौपित्तकफज्वरकौं यहकाथ दूरिकरैछे. ५ अथवा ईरससेतीयोज्वर तत्काल जायछे सो लिपूंछूं हींगलूकोकाढ्योपारो टंक ५ गंधकसोध्योटंक ५ मिरचि कालीटंक ५ सुहागोसोध्योटंक ५ येसर्व मिहींवांटि आदाका रसकी पुट ७ दे पाछे पानाकारसकी पुट ७ दे पाछेगोली रती ४ प्रमाणकीकरैगोली १ प्रात गोली १ संध्या रोजीनादिन ७ पायतौ कफपित्तज्वर निश्चैदूरिहोय ७ इतिपित्तकफज्वर संपूर्णम्.

६ अथसन्निपातकीज्वरकी उत्पत्तिलक्षण जतनलि० जोमनुष्य वहुत चीकणां घणांपद्यो घणांगरम घणांतीपो घणांमीठो घणांलूपो

न. टी. जोसाध्यहोय सोउत्तमजतनकीया आरामहोयछै. अरजोमाध्यछै पण विनाजतन कष्टसाध्यहोयछै. अरजेकष्टसाध्यछै. पणविनाजतन असाध्यछै. अरजोअसाध्यछै सो विना जतनसौं महाअसाध्य होयछै. सो यो मरजायछै.

भोजनकरै अरविरुद्द वस्तुपाय अर घणो पाय अर दुष्टपाणीपीवै अरक्रोधवतीरोगलीस्रीसूं संगकरैअरदुष्टमांसअरकाचोमांसपाय अरसीततावडो देसरितुग्रह इनकेविपरीतपणेतेमनुष्यके सन्निपात कोरोग होय सो यातोइनकीउत्पत्तिछे अथसन्निपातकालक्षणलि० अकस्मात क्षणेकमें तो दाह होय आवे क्षणेकमसीतलागै. अरसु भावफिरिजाय अरसवेंइंद्री अपने अपने धर्मकूं छोडिदे अरसरी रका हाडांमै सबसंध्यामे अरमाथामे घणीपीडाहोय आंष्यांमे आ सूं आवो करै अरनेत्रवेंका काला अर लाल होयजाय अरकानांमें शब्द होवोकरैअर कानमें पीडा होय कंठमें कांटापडिजाय तंद्राहो य मोहहोय अर बकै. कास सास अरुचि भ्रम येभीहोय अर जी भकाली परधरी लठरऐसीहोय अर लोहीसूं मिल्यो कफ थूकै दि नमे नींद आवे रात्रिमें जागे पसेव घणोआवे कैनहीआवे अर अकस्मात गावै नाचै हसै रोवै माथोधुणै प्यासघणीलागै हीयो दू षेमलमूत्रउतरैनहीं जोउतरैतो थोडो उतरै सरीर क्रस होयजाय कं ठमै कफको घुंगरोबोलै गुंगो होजाय होठउगैरै इंद्री पकिजाय पेट भारीहोजाय नाडीकीगति महामंदसिथल महा सुक्ष्मटूटिसीहोयअ रमूत्र हलदसिरीको कैकालो कै लोही सारिकोहोय अर मलकालो सूपदाईलीयांहोय कैसूरकामांससरीकोहोय येजो जुरमें लक्षण होय तोतीकैसन्निपातज्वर कहिजे सोयेसन्निपातज्वरका स्वरूपछे ऐसो सन्निपातज्वरको जोवैद्य औषधकरै अर रसकरै अर मंत्र यंत्र तंत्र करै और दंभ दूसनै आदिलेरकहीतरै ईसन्निपातज्वरकूं दूरि क रैछेतोवैद्यसें रोगीहैसोद्रव्य उगैरै देकर कहीतरै उरण होवनहीं इ तिसन्निपातज्वरलक्षणसंपूर्णम.

र. टी. [illegible]

अथ सन्निपातज्वरका जतन लिप्यते सन्निपातज्वरवालामनु
प्यनें अर्धावसेस जींमें सूंठिटंक १ नाषि अछ्या कूवाकोपाणिपा
इजे दिनको औटायोतो दिनमें पाजे रात्रिको औटायो रात्रिमेंपाजे
चतुर आदमीनें कनेंरापिजे जीमें पवननही आवे ऐसी जगामेंरा
षिये सातदिन पाछे यो काढो दिजे सीतल जतन करजेनही शिवउ
गेरै पूजन कराजे होममंत्र मणिधारण दानादिक कीजे अथवा का
यफल पीपलामूल इंद्रजव भाडंगी सूंठि चिरायतो कालिमिरची पी
पलि काकडासिंगी. पोहकरमूल रासना कटाली दोन्यूंअजमोद छ
ड वच पाठ चव्य ये सर्वऔषदि बराबरिले इनकूं जोकूटकरिटंकर
को क्राथकरि दोन्यूंवषतांदीजेतो सन्निपातकूं अर सर्ववस्तुकोज्ञान
जातोरह्योहोय जीकूं अर पसेव घणां आवता होय जीकूं सीतांग
उपज्यो होयजीकों पेटाकिसूलकूं आफराकूं वायका अर कफकारोगा
कूं यांसर्वरोगांनें योकाथ दूरिकरैछे १ अथवा आककीजड जवा
सो चिरायतो देवदारु रास्ना निर्गुंडी वच अरणी सोहीजणा पीपली
पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठिअतीस जलभांगरो ये सब औषदि
बराबरिले यांनें जोकूटकरिटंक २ प्रमाणको काढो दोन्यूं वषतांदी
जेतो महासन्निपात ज्वरकोंधनुर्वातकूं जबाडाभींचि गयाहोय तींकूं
सीतांगकों सूवाकारोगकूं स्वासकूं षासीकूं अरवायकारोगांनें यो
काढो दूरिकरैछे. येजतनलोलिंबराजमेंलिष्याछे २ईसन्निपातमेंजी
भजडहोयगई होयतोजीभके बिजोराकी केसरिमें सींधोलूण अर
मिरचिमिलाय ईकोलेप करेतो जीभकीजडताई दूरिहोय. ३ अथ
वा जीसन्निपातमेंज्ञानजातोरहेजीकोजतन वच महुवो. सींधोलूण

न. टी. ज्वरकारोगीनेंपथ्य जरूर करणो योग्यछे. आहार व्यवहारविचार
रणायोग्यछे पथ्यनामतो ग्रहन करणो अपथ्यनामछोडणो जीवास्तेग्रंथमेंपथ्यभा जगाग रो
गांकेव्यवहारणायलिख्याछे सोध्यानमेंराषणा अर आहारनामपानरानजीमो क्रिया मुजब वा
णापीवणा. अर व्यवहारछे सोस्रीस्त्रीरहणी मुजब सीत उष्णमों जतनराषणो.

मिरचि पीपलि येसर्व वरावरीले इनकूंमिहीपीस गरम जलमें ना
सदीजेतो ग्यानहोय आवे ४ अथसन्निपातकोंदूरिकरवेकी और
नास लिष्यते. पारोटंक ५ गंधकटंक ५ इनदोऊनकी कजली पर
लमें कीजे पाछेयादोन्यांकी वरावरी सूंठि मिरची. पीपलि येमिही
वाटि फेरि इनकूं मिलाय यांपांचाके धतूराका फलांकारसकी पुट
३ दीजेदिन १ तांईपरलकरे येउन्मत्तनाम रसछेतींकी नासदेयतो
सन्निपातकूंदूरिकरे ५ अथ सन्निपात दूरि करवाको अंजन जमा
लगोटाकीमींजीटंक १० कालीमिरचि टंक १ पीपलामूल टंक १
यांतीन्यांनें जंभीरिका रसमें दिन ७ तांईपरलकरे पाछे ईको अंज
न कीजेतोसन्निपातदूरि होय ६ अथवा पारो गंधक कालीमिरचि
पीपलि येसव वरावरिले याचार्‍यांको चौथोहिंसो जमालगोटोले पा
छेपारागंधककी परलमें मिही कजलीकरेपाछेयेदोन्युकजलीमेंमिला
य इनसवनकूं जंभीरीकेरसमें दिन ८ परलकरे पाछे इनको अंजन
करेतो सन्निपात दूरिहोय उपद्रवमिटे ईअंजनकोनाम भैरवांजन छे
योवैद्यरहस्यमेंलिष्योछे ७अथवा सिरसकावीज पीपलि कालीमिर
चि सींधोलूण लसण मैणसिल वच येसववरावरिले तिनकूंमिही वां
टि गोमूत्रमेंदिन १ परलकरे पाछे ईको अंजन करेतो सन्निपातदूरि
होय ८अथसन्निपात दूरि होवाको पंचवक्ररस लिष्यते हिंगलूको
काढ्योपारो टंक ५ सोध्योगंधकटंक ५ सोध्योसींगी मुहरो टंक ५
सोध्योसुहागोटंक ५ पीपलिटंक ५ कालीमिरचिटंक ५ पारागंधक
की कजलीकरिपाछे कजलीमेंयेओषदिमिलाय धतूराकापांनांका ते
लमें घडिच्यार परलकरे पाछे ईकीगोली रतीएककीवांधिगोली १ आ
दाका रसमेंदेवेतो सन्निपात दूरिहोय ईउपर दहीं अरभात पुवाजे

न. टी. [illegible] मुंबई [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

योजतन वैद्यरहस्यमेंलिष्योछै ९ अथसन्निपातकेदूरीहोवेकूं स्वच्छं दभैरवरस लिष्यते हिंगलूको काढ्यो पारोटंक ५ सोध्योगंधकटंक ५ सोध्योसींगीमुहरोटंक ४ जायफल टंक २ पीपलि टंक १० पारा गंधककीकजली करै पाछै येसारी औषदि ईमें मिलाय आदाकारस में दिन १ परलकरै पाछैरती १ प्रमाणदीजैतोसन्निपातज्वर सीतज्व र विसूचिका विषमज्वर जीर्णज्वर मंदाग्नि माथाकारोगयांनैयोरस दूरीकरैछै यहवैद्यरहस्यमें लिष्याछे. अथसन्निपातमें सीतउपज्यो होय तींको उवटणोलिष्यते मिरचि पीपलि सूंठी हरडेकीछालिलोद पुहकरमूल चिरायतो कुटकी कूट कचूर इंद्रजव येवराबरिले इनकूंनि पटमिहीपीसि सरीरके मर्दन कीजेतो पसेवने सीतांगनें दूरिकरें १० अथवा पारोटंक ५ सींगीमुहरो टंक ५ मिरचि टंक २० धत्तूरा का फलकीराप टंक ४० येसर्वमिहीबांटि सरीरके मर्दन करैतो अ तिपसेव अतिसीतांगसन्निपात दूरिहोय ११ अथमहासन्निपातदू रि करवेको जतन लिष्यते पारोसींगीमुहरो कालीमिरचि नीलोथू थो नौसादर येसर्व बराबरीले यांकूंमिहींबांटि धत्तूराकारसमें अर लसणकारसमें रोटीकरै पाछै रोगीका मस्तकके क्षौरकराय मस्त क ऊपर वा रोटिरापै पहर १ जदिवेकासरीरके तापहोय आवे अरवौचैतन्यहोय आवे तो ओपुरपजीवे अरवेके तापनहींहोय तो ओमनुष्य जीवैनहीं १२ अथवा लसण राई सहजणाकी जड यांने गोमूत्रमें मिहीबांटि तीकीरोटीकरें वारोटी माथाऊपरि क्षौर कराय पहर १ रापे चैतन्य अर तापवेके नहींहोयतो ओजीवैन हीं येजतन वैद्यविनोदमें लिष्याछे १३ अथ सन्निपात दूरीकरीवे कोजतनलिष्यते महाभयंकर सन्निपातवारेकों विछू कठाइजेतो

न. टी. रेचन वमन शीतांग अभ्यंग सीतलउपचार मृगकुटिमांस गऊकोदूध पुर सीतल जल चांदणीमें बैठणो अन्नपानांदार हलको भोजन पीपाचन इत्यादिमीर्व ज्वरवालानें पथ्यछै.

सन्निपात दूरिहोय. १४ अर सान्निपात वारेकूंसर्प कटावोबीलिष्यो छै. सो लोकविरुद्धहैसो नहींकीजे १५ अथवा सान्निपात वारेकोंलो हकी सलाका निपटताती करिवेकी पगथल्यांके अरवेंका भंवारा केवीचि अर वेकाल्लाटकेवीचि येलोहकी सलाकाको डाहदीजेतो सन्निपात दूरिहोय १६ यो वैद्यविनोदमेंलिष्याछै. अरमंत्रजंत्रउ गेरेकी साधनसुंभी सन्निपात दूरिहोयछै सुश्रूत चरकवाग्भटकेमत सें नों सन्निपात जुर एहीछैं पण और ऋषीश्वरनकेमतसों सन्निपा तज्वर ५२ बावन प्रकारकोछै. तीमैं १३ तो मुष्यहै. तिनके जुदे जुदे नाम अर लक्षण अर जतन लिषूछूं. अथ तेरासन्निपातका नामलिष्यते संधिग १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्तभ्रम ४ सीतांग ५ तंद्रिक ६ कंठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९ रक्तष्टीवी १० प्रला प ११ जिव्हक १२ अभिन्यास १३ अवयांकी आयुर्बल लिषूछूं संधिगदिन ७ रहे. अंतक दिन १० दसरहे रुग्दाहदिन २० रहे चित्तभ्रमदिन ११ सीतांग दिन १५ रहे तंद्रिकदिन २५ रहे कंठ कुब्जदिन १३ रहे कर्णक महिना ३ रहे भग्ननेत्र दिन ८ रहे रक्त ष्टीवीदिनदस १० रहे प्रलापदिन १४ रहे जिह्वकदिन १६ रहे अभिन्यासदिन १५ रहे येतेरा सन्निपातकी आयुर्बल कहीगण यांमेंउपद्रव उठि आवेतो ततकाल आदमी मरजाय अर सन्निपात ज्वरवारे मनुस्यका सीतल जतन कीजेनहीं दिनेसोवादीजेनहीं अर्क्षावसेस जलपाईजे अर आम अर कफ हरे ऐसेजतनकीजे स न्निपातके दोप माफिक लंघन कराजे अथ संधिगसन्निपातको लक्ष णलिष्यते जों मनुष्यके संधिगसन्निपात उपजे जीकासरीरका सं धि संधिमें घणोसूल चाले सरीरसूजिजाय पेटभार्यो होजाय अं

न टी. नवीन ज्वरवालानें भारचलिः स्नान रेचन अभ्यंग व्यायाम दिवानिद्रा दूध घृत मिठाई उड़दांकी मसूरकीदाल मांस पानविरुद्ध पाठ मद्य सीतलपानी जल इन सबसें ज्वरादिकनिवारणार्थ मनाईहै.

गसिथलहोजाय बल जातोरहै वायको अर कफको कोपघणोहोय नींद आवैनहीं येलक्षणसंधिगसन्निपातकाजाणिजै १ अथसंधिग सन्निपातदूरिकरिवेकोजतनलि० रासना हरडेकीछालि गिलोय स हजणों चित्रक लजालु सूंठि देवदारु कुटकी कचूर अरडूसो चाय विडंग सालपर्णी पृष्टपर्णी दोन्यूकटयाली बीलकीगिरि अरण्यू अ रलू कुंभेरपाट पीपलि येसर्व बराबरिले इनकूं जोकूटकरिटंक २ को काढोकरि दोन्यूवपतांदीजैतो सर्वलक्षण संयुक्तसंधिगसन्निपात दू रिहोय १ अथ अंतकसन्निपातके लक्षणलिप्यते सरीरमैंदाह घणों लागिजाय सरीरकांपै माथोधुणैंघणोपासै हिचकीहोय बकै बहुत ग्यान जातोरहै सास होय आवै जीं मनुष्यकै येलक्षण होय तीनैं अंतकसन्निपात कहजे यो नाइलाजछै. ईसन्निपातवारो जीवैनही २ अथरुग्दाह सन्निपातका लक्षण लिप्यते बकै सरीरमैं दाहघणों होय पेटमैसूल चालै सरीरव्याकुल होय तिस घणीहोय जीमैंयेल क्षणहोय तींक येरुग्दाह सन्निपात जाणिजै योभि असाध्यछै३ अ थ रुग्दाहकोजतन लिप्यतेहरडैकी छालि पित्तपापडो नींबकीछालि कुटकी देवदारु किरमालाकीगिरि मिनकादाप नागरमोथांये सब बराबरिले इनकूं जो कुटकरिटांक २ को काथ दोन्यूंवपतां दिन१५, दीजेतो रुग्दाह सन्निपातजाय ३ अथ चित्तभ्रम सन्निपातका ल क्षणलिप्यते जींकै भ्रमहोय अर मदताप मोह ये होय अर बकैवा वलाकासा नेत्रहोय अर हसे गावे नाचै सास बोत आवै येजींरो गींके लक्षण होय तींकै चित्तभ्रमसन्निपात जाणिजै अथचित्तभ्रम को जतन लिप्यते ब्राह्मी बच लजालू त्रिफला कुटकी परेंटी किर मालाकीगिरि नींबकीछालि नागरमोथो कड्वी तोरुकी जड मिन

* श्लोक सन्निपातस्य कालस्य कोभिद्वेदोनाशिपते ॥ [illegible] तापवान् ॥ १ ॥ अर्थ सन्निपात और काल यांमैं भेदनहीं जो [illegible] गि वाय पराक्रमी कोई हुजोनहीं जांका उपकारके अर्थ गुवैरल दियापका [illegible] होसकी.

काढाप सालपर्णी पृष्ठपर्णी दोन्यूकट्याली गोपरू बीलकीगिरि अरण्यु अरलू कुंभेरपाठ येसर्व बराबरिले इनकूं जोकूट करि टंक २ कोकाढोदोन्यू वपतांदिन ११ देतो चित्तभ्रमसन्निपात दूरिहोय ४

अथसीतांगसन्निपातको लक्षणलि० जींमनुष्यको सरीर सारो सीतलपालासिरीसो होजाय अर कांपे हिचकीआवे अंगसिथल होजाय स्वासहोजाय आवे अरपासीहोय वमन होय मुपमें लाल पडे. जींकेयेलक्षणहोय तींकेसीतांगसन्निपातजानिये. येभीमहाअसाध्यछेईसन्निपातवालो जीवैनहीं नाइलाजछे तथापि ईंकोजोजतन छेसोलिपजेछे ईसन्निपातवालारोगीकोंविछूकटाजे अवसींगीमुहरो तेलमें मिलाय पुवमर्दनसरीरकेकीजे. अरसींगीमुहरो लसनराई इनकूंपीसि गोमूत्रमें इनकी रोटीकीजे रोगीकोंक्षौरकरायरोटीवेंकेमाथेबांधे सरीरतातो होय, तबतांईरोटीरापे तापनहीं आवे तो ओरोगीमरिजाय अरईको उवटणो लिपूंछूंपारोटंक ५ सींगीमुहरोटंक ५ कालीमिरचीटंक २० धतूराका डोडांकीरापटंक ४० यांनेमहीवांटि सरीरकेमर्दनकरेतो सीतांगदूरिहोय ५ अथतंद्रिकसन्निपातकोलक्षणलि० जीमें तंद्राघणीहोय अर ज्वरको वेगघणोहोय तिसघणी होय जीभकालीहोय अरपरघरीहोय स्वासहोय अतिसारहोयअर दाहहोय कानांमेंपीडाहोय येलक्षणजींकेहोय तींकेतंद्रिक सन्निपात जाणिजे ६ अथतंद्रिकको जतनलि० भाडंगी गिलवे, नागरमोथो कट्याली हरडेकीछालो पुहकरमुल येबराबरिले इनकूं जोकूट करि टंक २ को काढोदिन १५ देयतो तंद्रिकसन्निपात दूरिहोय ६ अथ कंठकुब्जसन्निपातको लक्षणलिप्यते माथोघणो दूपे अर दाहहोय

म. टी. [illegible] इत्यादि.

अरदाहमेंपीडाघणीहोय सरीर बहुत तातो होय गलोरुकिजाय अ
र सूकिजाय अर बांकासरीरमैंपीडाहोय अरबकै ये जींमेंलक्षणहो
यतींनै कंठकुब्जसन्निपातजाणिजै योसन्निपातकष्टसाध्यछै ७ अथ
कुब्जककोजतनलि० काकडासींगी, चित्रक, हरडेकीछालि अरदू
सो कचूर चिरायतो भाडंगी दारुहलद कटाली पुहकरमूल नागर
मोथो कूडाकीछालि इंद्रजव कुटकी कालीमिरचि येसारी बराबरिले
इनकूं जौकुटकरि टंक २ को काढोदोन्हूंवषतांदिन ८ तांईदेयतो कं
ठकुब्जसन्निपात जाय ओरभी उपद्रवांसमेतदूरिहोय ७ अथ कर्ण
कसन्निपातकाजतनलि० रास्ना आसगंध नागरमोथो दोन्हूकटा
ली भाडंगी काकडासींगी हरडेकीछालि वच पोहकरमूल कूटकी
येसबबराबरिले इनकूं जौकूटकरिटंक २ कोकाढोदोन्हूवषतांदिन३०
लेतो कर्णकसन्निपात जाय १ अथ कर्णकरोगकोदूसरोजतनलि०
हलद हिंगोटाकी जड कूट सहजाणाकीजड सींधोलूण दारुहलद
देवदारु इंद्रायणकी जड ये ओषदि बराबरिले इनकूंकूटि आककेदू
धमेंमिहीपरलकरै अर कर्णमूलकै ठंडोहीलेपकरै तो कर्णमूल बेठी
जाय अर कर्णमूलको रोग दूरिहोय २ अथवा कर्णमूलके उठतां
हीकै जोक लगावै कर्णमूलमाफिक लोहीकढाजैतो कर्णमूल निश्चै
जाय आछ्योहोय ८ अथ भग्ननेत्रसन्निपातकोलक्षणलि० जींरोगी
को स्मरणजातोरहै ज्वरकोवेगहोय बांकानेत्रहोय अर चंचलनेत्र
होय अर भ्रम कांपणोहोय बकवोहोय येजींमें लक्षण होय जींकै
भग्ननेत्र सन्निपात कहिये योभी असाध्यछै ९ अथ भग्ननेत्रसन्निपा
तको जतनलिष्यते दारुहलद पटोल पत्रज. नागरमोथो कटयाली
कुटकी हलद नींबकीछालि त्रिफला ये सब बराबरिले टंक २ को का

न. टी. येरा सन्निपातलिख्याछै जींमेंसाध्य. कष्टसाध्य. असाध्य. छै.-इणांका कारण बो
बर समझकरउपचारकरणा. साध्यसौंभी असाध्यनजाइहोगछै. अरकेईकमयः आनदयाका
लाछै. इणामें गुं वैदनै गुरुमविचार करणो योग्यछै.

ढो दोन्यूवपतांदिन १५ देयतौ भग्ननेत्रसन्निपात दूरिहोय ९ अथ रक्तष्टींवीसन्निपातको लक्षण लिष्यते १० लोहियूके घणां तिसव णीहोय मोहहोय स्वास घणोंहोय पेटमेंसूलहोय भ्रमहोय वमन होय आफरो होय येजीमें लक्षणहोय तौकूं रक्तष्टींवी सन्निपात जा णिये. योमहा असाध्यछे अथ रक्तष्टीवीको जतन लिष्यते नागर मोथो पदमाष पित्तपापडो रक्तचंदन महुवो नेत्रवालो सतावरी म लयागिरीचंदन वकायणकीछालि येसव बराबरिले तिनकूं जौकूट करिटंक २ को काढोदिन १५ देतौ रक्तष्टीवी सन्निपातदूरिहोय १ अथवा दूवकारसकी दाडयूंकाफूलांका रसकीनासदेतौ रक्तष्टीवी स न्निपात दूरिहोय २ अथ प्रलाप सन्निपातको लक्षण लिष्यते सरी रकांपै वकैवहुत सरीरतातो घणोहोयजाय दाहघणोहोय जुरकोवे ग घणोहोय संज्ञा जातीरहै सास अंगविकलहोजाय येलक्षण प्र लापसन्निपातको जानिये अथप्रलापको जतनालिष्यते नागरमोथो नेत्रवालो सालपर्णी पृष्टपर्णी दोन्यूं कटाली. बिलकीगिरि अरलु कुंभेरपाठ सूंठि पित्तपापडो चंदन अरडूसोये सब बराबरिले इनकूं जोकूटकरि टंक २ को काढो दोन्यूंवपतां दिन १० देयतौ प्रलापस न्निपात दूरिहोय ११अथजिव्हकसन्निपातको लक्षणालिष्यते जीमें सासहोय कास होय तापघणोहोय अरजीभलठरहोय अरजीभकै कांटाहोयजाय गूंगो होजाय अर वहरो होय जाय अर वल जातो रहै येजीमें लक्षण होय तौकों जिव्हक सन्निपात कहिये योभीकष्ट साध्यछे अथजिव्हकको जतनालि०वच कट्याली जवासो रास्ना गि लवै नागरमोथो सुंठि कुटकी काकडासींगी पुहकरमूल ब्राह्मी भा

म. टी. [illegible]

डंगी नींवकीछालि अरडूसो कचूर, येवरावरिले इनकूंजोकूटकरि टंकदोयको काढोदिन १० देतौ जिव्हकसन्निपात दूरिहोय १२.
अथ अभिन्याससन्निपातका लक्षणलिख्यते नींद आवेनहींस्वा सघणो उतावलो चालैसरीरकांपै सरीरकी सर्वचेष्टा जातीरहै घांघो वोले काष्टवत होजाय ये जीमेंलक्षण होय तीकै अभिन्याससन्निपा त कहजे योमहाअसाध्यछै. मृत्युरूपछै. १३ अथअभिन्याससन्नि पातदूरि करिवेको जतनलिख्यते भाडंगीरास्ना पटोलदेवदारु हलद सूंठि पीपली अरडूसो इंद्रायणीजड व्राह्मी चिरायतौ नींवकीछालि नेत्रवालो कुटकी वच पाठअरलूदारुहलद कव्याली गिलवै निसो त झांउरूपकीजड पुहकरमूल त्रायमाण नागरमोथो जवासो इंद्र जव त्रिफला कचूर येसव वरावरिले इनकूं जौकूट करिटंक २ कोका ढो दोन्यूवषतां दिन १२ देयतौ अभिन्याससन्निपातजाय १३ अथसन्निपात दूरिहोवाको अंजन लिख्यतेलसण पीपलिमिरचिवच अरलूकावीज सींधोलूण येसव वरावरिलेइनकूं गोमूतमेंमिहिवांटि नेत्रामें अंजन करै तौ सर्वसन्निपात दूरिहोय १ अथ सन्निपातकूंना सलिख्यते कालिमिरचि महुवो सींधोलूण चित्रक जायफल पीपलि येसव वरावारि इनकूं मिहीवांटि गरम पाणीमें नास दीजेतौ सन्नि
१ दूरिहोय २ अथ आठौ ज्वरका दूरिकरवेको चिंतामणिरस
७५५त हींगलूको काढ्योपारो सोध्योगंधक अभ्रक तामेश्वर सूंठि कालीमिरचि पीपलि हरडैकीछालि आंवला सोध्याजमालगोटायेस ववरावरिले इनसवनकूंदडवलका पनांका रसमें परलकरिपहर दो यतांई पाछै तावडै सुकायरती १ प्रमाण गोलीवांधै १ गोली १ दीजे

* दाक्तरांकामतथी वातश्लेष्मसन्निपातकोजोरयसोहोयतोदिन १४ दाहदेपित्तकाजोरयेदिन २० कफकाजोरयेदिन २४ रहदहै. सत्रसन्निपातका आदिमैतपा मध्यमै. तथाअंतम कानो केनीचेगांठहोय. जोजायतोहोय, पणकष्टसाध्यहोय तो कोईनें आठपीरनें मध्या कोईने धातनी कोडे.

तो आठांही ज्वर दूरिहोयअरपेटकीसूलजाय अजीर्णदूरिहोयआ मवात दूरिहोय यो वैद्यरहस्यवैद्यविनोदमेंलिप्योछे. ३ अथ अमृत संजीवनीगुटिका लिप्यते हिंगलूको काढ्योपारो टंक२ गंधकसोध्यो टंक २ सींगीमूहरो सोध्योटंक १ कालीमिरचिटंक ४ प्रथमपारागंधककी कजलीकरेपाछे ये औषधि मिलाय इनसबनको ब्राह्मीकारसकी पुट १ दीजे पछे चित्रककीपुट १ दीजे ईकीगोलीरती १ प्रमाणबांधे गोली १ आदाकारसमे दीजेतो सन्निपातनें मूर्छानेंदूरिकरे यहरसमरेमनुष्यकूंजिवावेहे. अर आमवातकूं वायकोसूलकूं सिया दाहकूं विषमज्वरकूं मंदाग्निकूं सन्निपातकूं यहचिंतामृतसंजीवनीगुटिकाइतने रोगकूं दुरिकरेछे. १७ योरस मंजरीमेंलिप्योछे. ४ अथ कालारिरसलिप्यते पारो मासा १२ सोध्योगंधक मासा २० सोध्योसींगीमोहरोमासा १२ कालीमिरचि मासा २० पीपलीमासा ४० लवंग मासा १६ धत्तूराकाबीज मासा १३सुहागो सोध्योमासा २० जायफल मासा २० अकलकरो मासा १२ प्रथम पारागंधककी कजलीकरे पाछे वेकजलीमेयेऔषधिमिहीवांटिमिलावे पाछे इनकों आदाकारसमें दिन ३ परलकर पाछेनींबूकारसमें दिन ३ परलकरे पाछे केलीकारसमे दिन ३ परलकर पाछेरती १ तथा २ प्रमाणगोलीबांधे गोली १ पायतो वायकोरोग अरसन्निपातदूरिहोययो रसयोगचिंतामणिमेंलिप्योछे.५अथत्रिपुरभैरवरसलि० सूंठिपईसा ४ कालीमिरचिपइसा ४ तलिया सुहागो सोध्योपईसा ३ सींगीमूहरो सोध्योपईसा १ भर पाछे इनकूं मिहीवांटिदिन ३ नींबूकारसमें परलकरे पाछे आदाकारसमेंदिन ५ परलकरेपाछे पानाकारसमें दिन ३ परलकर पाछे ईकीगोलीरती १ प्रमाणबांधेगोली ५ आ

दाकारसमेंदीजेतो सन्निपातदूरिहोय ६ अथसंज्ञाकरणरसलि० सो ध्योसींगीमूहरो सींधोलूण कालीमिरचि रुद्राक्षकटाली कायफलमहुवो समुद्रफल येसारीऔषधि बराबरिले पाछे यानेंमेहीवांटि आककापारकी पुट ३ दे पाछेईनेंरती १ तथा २ तथा कानकाछिद्रमेंतथानाकमें दे अर फूकदेतो संज्ञाहोय आवे अर सन्निपात दूरिहोय ७ अथ ब्रह्मास्त्ररसलिष्यते पाराकी भस्म टंक ३ सोध्योगंधक टंक ३ यांदोन्यांकीबराबरिसोध्योसींगीमुहरो यांसारांकीबराबरी कालीमिरचिलेपछे यांसारांकोयेक जीवकरि कलहारीनंदाल अरज्वालामुखीयांजड्यांकारसमें अर आदाकारसकापुट २१ इकीसदेरयोरसतयारकरे पाछेरती १ योरसदेतोसन्निपातदूरिहोय ८ इतिसन्निपातका जतनसंपूर्णम् अथ आगंतुक ज्वरकानाम उत्पत्तिलक्षण जतनलि०शस्त्रादिकांका चोटसूंउपजीजोज्वर १ अरभूतादिकांकालागिवाका संगसं उपजीजोज्वर २ अर विषादिकांकापावासेंउपजीजो ज्वर ३ अर कामक्रोध सोक भयस्नेह द्वेषादिकांका आधिक्यतें उपज्योजोज्वर ४ अरराजागुरु मातापितानें आदिलेरयांकातिरस्कारसूंउपज्योजोज्वर ५ त्यांसाराहीज्वरानें आगंतुकज्वर कहिजे अथ शस्त्रादिकतें उपज्योजोज्वरतींकालक्षणलिष्यते शस्त्रादिककालागिवासूं उपजीजोपीडातींसूं वायको कोपहोय पाछे वा वायलोहीनें बिगाडे पाछे वेंकेपीडाहोय अर वेंके सोजोहोय अर वेंकासरीरकोवर्णओरसोहोयजाय पाछे वेंकासरीरकोवाय वेंकेज्वरनें करेछे १ अथ शस्त्रादिकसूं उपज्योजोज्वर तींकोजतनलिष्यते ईज्वरवालानें लंघन कराजेनहीं कषायली वस्त गरम द्रव्यकोजतनकरजेनहीं मधुर चीकणा द्रव्यपुवाजे अरसेकियो सींवणो पाटाबांधवानें आदि

न. टी ब्रह्मास्त्ररसमें पारोमासा १२ बाराहैसोपारांशुद्धकरपोदोषसोंमें योगकरणो. अर औरभीपणीजागांपारोलिष्योछै. जैठेशुद्धपारोकह्योछै अरकठैही नहीबी कह्योतो शुद्धकरिजनहीं छै पारासोंतो योगशुद्धकोहीकरणो अशुद्धमें योगुणछै.

लेर जथायोग्य जतनकीजे सोरवाउगैरे पवाजे १अथ भूतादिकका लागिवासूं उपज्यांजोज्वर तींकोलक्षणलिष्यते शरीरमेंउद्वेग होय आवे कदेक हंसे कदेक रोवे कदेक कांपे चित्तथिरनहींहोय तींके भूतादिकको प्रवेश जाणिजे

२अथभूतादिकको दूरिकरिवाको जतन लिष्यते वेनेंबांधिजे ताडनादिकरिजे अरमंत्रजंत्रतंत्रकीजैअरनासदीजेयांसूं येदूरी होयछे सो थोडो थोडोसवही अजमायालिषूंछूं अथ भूतादिकका काढिवा कोमंत्रउँह्रांह्रींह्रूंनमोभूतनायकसमस्तभूवनभूतारिसाधय २हुं ३ ईमंत्रकोमोरकीपांपसूं झाडोदीजेतोभूतादिकनीकले १ अथ भूता दिकका काढिवाको दूसरोमंत्रलि० ऊनमोनारसिंहायहिरन्यकश्य पुवक्षस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच शाकिनी कोलोन्मूलनायस्तभोद्भवसमस्तंदोपान्हनहन सरसरचल २ कंप २ मंथ २ हुंफट ३ ठः ठः महारुद्रोजापयतिस्वाहा इति नृसिंहर क्षामंत्र ईमंत्रको मोरकीपांपसूं झाडोदेतो भूतादिकरहेनहीं २ अथ भूतादिककावकरावाको मंत्रलिष्यते ऊनमोभगवते भूतेश्वरायकि लिकिलिताट्टहासाय रौद्रदंष्ट्र करालवक्रायात्रिनयनभूपितायधगधगी तपिसंगललाटनेत्रायतीव्रकोपानलायामितितेजसेपाशशूलखट्वांग डमरूकरधनुर्वाणमुद्गरभयदंड त्रासमुद्रा व्यग्र दशदोडमंडिताय कपिनजटाजुटकृटार्धचंद्रधारिणेभस्मरागरंजितविग्रहायउग्रफणिप तिघटाटोपमंडितकंठदेशायजय २ भूतडामरेशआत्मरूपंदर्शय २ नृत्यय २ सर २ चल २ पाशेनबंध २ हुंकारेणत्रासय २ वज्रदंडेन हन २ निसितखड्गेनछिंधि २ शूलाग्रेणभिंद्य २ मुद्गरेणचूर्णय २ सर्वग्रहणां आवेशय २ ईमंत्रसेतींगऊकाघृतमेंगूगलमिलायघणो

म. टी. [illegible]. [illegible]. [illegible] [illegible]. [illegible]. [illegible] [illegible].

धूपदेवेभूतादिकलाग्योहोयजीकनैंअरइहिंमंत्रसूंउडदानैं मंत्रअरवां उडदांकोंवैकेदेतो ओमनुष्यमुकरवकरैजिसोहोयतिसोकहे ३ पाछै वामंत्रसूं काढैअरधूपमैंनींवकापान ओरसापकी कांचलीमिलावै अ रभूतादिककाकाढवाकी नास अर अंजन लि०हींगनैं लसणकापा णीमैंवांटि नासदेतथा अंजन करैतोभूतादिकदूरिहोय ४ येतंत्रोप चारग्रंथामेंलिष्याछे अथभूतादिककाकाढिवाका तंत्रलिष्यते तुल सीकापान८कालीमिरचि ८ सहदेईकीजडदांतवारनैंपवित्रहोय ले पाछैयेतीन्यूमिलाय कंठकैबांधैतोभूतादिकदूरिहोय ५

अथ क्रोधज्वरकालक्षणलि० सरीरकांपैमथवायहोय अरपित्त ज्वरकालक्षणमिलैतिनैंक्रोधज्वर कहिजे ६ अथक्रोधज्वरका जतन लि० आछ्यासीतल वचनकारि मनकूं प्यारालागेऐसालोभकारियो ज्वरदूरिहोय ७ अथमानसज्वरकीउत्पत्तिलक्षणलिष्यते पुत्रमित्र स्त्रीधनयानैं आदिलेर ज्यांको नासहोय अर आपकाइष्टको नास होय अर राजा अर वडाजीकोतीरसकार करे त्यांकेयो मानसज्वर होयछे अथ ईकालक्षणलिष्यते सोचघणोहोय अतिसारहोय आ वै सर्व वस्तुमें ग्लानि होय आवे ये लक्षण होयतीनैं मानसज्वर कहिजे ८ अथ मानसज्वरको जतन लिष्यते ईश्वरको जतनग्यान मुष्यछे. अर धैर्यल्यावणो अर मिष्टान्न रुचिकारि नानाप्रकारका भोजन अर व्यंजन षाणा यांसूं योज्वर दूरिहोयछे ९ अथपूर्वके कामज्वरका लक्षणलिष्यते. जीके कामज्वर प्रगट हुवोहोयतीके भोजनादिकमें अरुचिहोय मनमें दाहहोय अर लाजनींद्रबुद्धिको धैर्यपणो वेसारा जातारहे हियोदूपेसंभोगमेंही ध्यानरहे निःस्वास

न. टी. भूतप्रेतादिकाकीउपायालिष्याछैसुहिंदुस्थानींयेयांको घणो मानछै. पंचपंचादिककुंभा छ्योहोतासोछै. ओरघणापराईनैंठुगवतावेछे पर्न्तुं पूलमवाळापरुषोंपीडादिषेछै. मार्कंदुंनी हुनारादंगमणोछै. पनडगाकेपास्नैहानपैं छोडकोकरो विहुरवनमिलव प्रागभोग करैछै. विपारा भोलानमुष्य मुगायोनैं हरानाफिरैछै.

होयआवे येजीमेंलक्षणहोयतींके कामज्वरकहिजे अथ कामज्वर
का जतनलिप्यते सर्वगुणां करिकेसंयुक्त महास्वरूप सुंदरजीकाने
त्र महागाढाअरऊंचा जीका कुच अरसोलावरसकीमोव्यार जोस्त्री
तीसूंआछीतरहसूं संभोग करैतो कामज्वर दूरिहोय १० अथवा सुं
दर महवूवसूं संग करैतो कामज्वरदूरिहोय ११ अथ स्त्रीके काम
ज्वर हुईहोय तींका लक्षण लिप्यते जीस्त्रीके कामज्वर प्रगट हुई
होय तींके मूर्छा होय आवे अर वेका सारा अंगमें मरोडी आवे
अरतिसहोय नेत्रचपलहोय कुचमसलावाकी इच्छा मनमें आवेप
सेव आवे अरहियामेंदाहहोय अर भोजनमें रुची नहीं अर लाज
नींद धैर्य एभीजातारहे येजींका लक्षण होय तींके कामज्वर कहि
जे १२ अथ ईंको जतन लिप्यते जींके कामज्वर प्रगट हुवोहोय सो
स्त्री आछी सारी सामग्री लीयां आपका भरतारसूं संभोग करैतो
कामज्वर दूरिहोय १३ अथ भयज्वरको लक्षण लिप्यते जींके भ
यज्वर प्रगट हुवोहोय तींके प्रलापहोय अर अतिसारहोय चित
स्थिरनहीहोय भोजनमें अरुचिहोय येजीमें लक्षण होय तीनें भय
ज्वर कहिये १४ ईंको जतन लिप्यते वेनें हर्षकी वातांकहणी अर
वेंको कहीं तरेंसूं भयदूरि करणो १४ अथ विपमज्वरका लक्षण
लिप्यते जींपुरसके ज्वर आयांपाछे कहींतरेंका कुपथ्यसूं रस धात
नेंछोडि अर लोहीनें आदिलेर वांधातानेंप्राप्तिहोय पित्त कफहेंसो
विपम ज्वरनें करेछे. अथवा ज्वरआयाविनांभी ज्वरहोय आवेछे
जींपुरसके सीयो दाहआवे अरसीको अरदाहको घणाथोडाको नें
मनहीछे अर समयकोभी नियम नहींरहे किंहींवपत आयजाय
येजीमें लक्षण होय तीनेंविपमज्वर कहिये सोविपमज्वर च्यारी प्र

म. टी. मनसीभागनीपूमनुष्यांके माननज्वरहोयछे. सांईत्यमें औरभीएवीविशेषकाम
कीनदीछे काम [illegible] मनमलीनहुवो है [illegible] अथवा [illegible]
[illegible] [illegible] कामज्वरहोयछे.

कारकोंछे एकतो संतत जोरोजीनाआवे १ अरयेक इकांतरे आवे जीने इकांतरो कहिजे २ एकतीसरेदिन आवे तीने तेजरो कहिजे ३ येक चोथेदिनआवे तीने चतुर्थक काहिजे ४ विपमज्वरका भेदतो घणाछे त्यांमे च्यारिमहामुष्यछे सो लिष्याछे अथ विपमज्वरका जतनलि० विपमज्वरवालानें मूंगांकी अथवा मोठांकी दालको पाणीदीजे हलको राषिजे ठंडोपाणीपाजेनहीं अर पटोल हरडेकीछालि इंद्रजव गिलवे जवासो येसारी ओपदि बराबरिले यांनेंजोकूटकारि टंक २ कोकाढो दोन्यूवषतांदिन७लेयतो संततज्वर दूरिहोय १५ अथवा सीतज्वर वालानें यहक्षुद्रादिक देयतो सीतज्वरजाय सोलिषूंछूं कव्याली धणों सूंठि गिलवे नागरमोथो पदमाप रक्तचंदन चिरायतो पटोल पत्रज अरडूसो पुहकरमूल कूटकीइंद्रजवनींबकीछालि भाडंगी पित्तपापडो यां ओपघ्यांनें बराबरिले त्यांनें जो कूटकरिटंक २ कोकाढोरोजीना दोन्यूवषतां दिन १० लेतोसीतज्वर दूरिहोय १६ अथवा पोडसांगचूर्णसूभीविपमज्वरदूरिहोयछेसो लिषूंछू चिरायतो नींबकीछालि कूटको गिलवे हरडेकोछाल नागरमोथो धणो अरडूसो त्रायमाण कव्याली काकडासींगी सूंठि पित्तपापडो फूलप्रियंगु पटोल, पीपली कचूर येसारीओपदि बराबरिले त्यानेंमिहीपीसि कपडासूंछाणिटंक १। सवा सीतलजलमूं दिन ८ लेतोविपमज्वर दूरिहोय १७ अथवा चिरायतो कूटकी निसोत नागरमोथो पीपलि वायविडंग सूंठि नींबकीछालि येसारी ओपदि बराबरिले त्यानेंमिहीपीसि तींचूरणने टंक १ गरमपाणीसूं दिन ७ लेयतो विपमज्वर दूरिहोय अरभूपलागे १८ अथवा साराही सियादाह इकांतरा तेजरा उगेरे त्यांनेंज्वरांकुस

न. टी. [illegible] तथा [illegible] परंतु [illegible], [illegible]. परंतु [illegible] लिषूंछू.

दूरिकरेंछे सोलिपूंछूं सोमलनें मारु वेंगणका पेटमें वार १४ पकाले तींकों भडीतों करिले पाछेवे बराबरि पीपलीअर हिंगलू ले यांती न्याकी राइंजिती गोली बांधे पाछे गोली १ पतासामेंदे सीतलगे जिहपहलीतो निश्चैसीयो वेलांजरो तेजरो दूरिहोय गोली २ तथा ५ में १९

अथ जीर्णज्वरका लक्षणलिष्यते दिन२१उपरांतज्वुर तींकासरी रमेंरहे. सूक्षम होयकरअरजींकीं भूष जातीरहे सरीर दुबलो होय जाय अरपेटमेंफियो होय आवे जीनें जीर्णज्वर कहिजे अथ जीर्ण ज्वरका जतनलि० प्रथमवसंतमालतीरसजीर्णज्वरादिकांनें दूरिक रेंछे सोलिपूंछूं सोनाकाडरख १ भाग वुकाकामोती दोय २ भाग हिं गलूतीन ३ भाग कालिमिराचि ४ भाग पापख्यो गोमूत्रमेंसोध्यो ८ भाग यांसारानेंपरलमें मिहीवांटि पाछे वासारानें गऊका मापनमें चांका तोल माफिक परलकरे वाचिकटाई मिटे जेठा तांई पाछे ओ रस तयार करेपाछे योरस रती १ तथा २ पीपलि सहतकासंयोग सूं देतो जीर्णज्वरनें धात गरमीकारोगनें संग्रहणीका रोगनें मूत्रकृ छ्रनें सासनें पासनें प्रदरने यांरोगानें योदूरिकरेंछे अनुपानकासंजो गसूं २० अथवा कटयाली गिलवे सुंठि यांतीन्याको काढोदिन१० लेतो जीर्णज्वरनें दूरिकरेंछे २१ अथवा कचूर पित्तपापडो सूंठि ना गरमोथो कटुकी कटालीचिरायतोयांनें बराबरिले त्यानें जोकूटकरि टंक २ रोजीनादोन्यावपतांदिन ११ लेतोजीर्णज्वर विषमज्वरदूरि होय २२ वैद्यविनोदमेंलिष्याछे अथ लाक्षादितेललि०पीपलकी लाप शेर १ पाणीमीठोशेर ६ लोदटंक १० यामेंयोओटाय मधुरी आंचसूंईको चतुर्थांसरसकाढेपाछे ईरसमें गऊको मठो शेर १ नांषे

न टी. विषमज्वरा[illegible], [illegible], [illegible] २ [illegible] २, [illegible] १ [illegible] १ [illegible], [illegible] ५ [illegible],

कारकोछै एकतो संतत जोरोजीनाआवै १ अरयेक इकांतरे आवै जीनै इकांतरो कहिजै २ एकतीसरैदिन आवै तीनै तेजरो कहिजै ३ येक चौथेदिनआवै तीनै चतुर्थक कहिजै ४ विषमज्वरका भेदतो घणाछै त्यांमै च्यारिमहामुष्यछै सो लिष्याछै अथ विषमज्वरका जतनलि० विषमज्वरवालानैं मूंगांकी अथवा मौठांकी दालको पाणीदीजै हलको राषिजै ठंडोपाणीपाजैनहीं अर पटोल हरडेकीछालि इंद्रजव गिलवै जवासो येसारी औषदि बराबरिले यांनैंजौकूट करि टंक २ कोकाढो दोन्यूवषतांदिन७लेयतौ संततज्वर दूरिहोय १५ अथवा सीतज्वर वालानें यहक्षुद्रादिक देयतौ सीतज्वरजाय सोलिषूंछूं कट्याली धणौं सूंठि गिलवै नागरमोथो पदमाष रक्तचंदन चिरायतो पटोल पत्रज अरडूसो पुहकरमूल कूटकीइंद्रजवनींबकीछालि भाडंगी पित्तपापडो यां औषद्यांनैं बराबरिले त्यांनैं जौ कूटकरिटंक २ कोकाढोरोजीना दोन्यूवषतां दिन १० लेतौसीतज्वर दूरिहोय १६ अथवा षोडसांगचूर्णसूंभीविषमज्वरदूरिहोयछैसो लिषूंछू चिरायतो नींवकीछालि कूटकी गिलवै हरडेकीछाल नागरमोथो धणौं अरडूसो त्रायमाण कट्याली काकडासींगी सूंठि पित्तपापडो फूलप्रियंगु पटोल, पीपली कचूर येसारींऔषदि बराबरिले त्यानैंमिहीपीसि कपडासूंछाणिटंक १। सवा सीतलजलसूं दिन ८ लेतोविषमज्वर दूरिहोय १७ अथवा चिरायतो कुटकी निसोत नागरमोथो पीपलि वायविडंग सूंठि नींबकीछालि येसारी औषदि बराबरिले त्यानैंमिहीपीसि तींचूरणनै टंक १ गरमपाणीसूं दिन ७ लेयतौ विषमज्वर दूरिहोय अरभूषलागै १८ अथवा साराही सियादाह इकांतरा तेजरा उगैरै त्यांनैंज्वरांकूस

न. टी. जोकामज्वरतथाभयज्वर तथा क्रोधज्वर मानसज्वरयेमात्रज्वरकहाछै अरऔरभीज्वर शास्त्रमैंघणांप्रकारकाछै परंतु ईग्रंथमैंजो कह्याछै ज्यांकाजतनभीविधिपूर्वकलिष्याछै. अरविषमज्वरचारप्रकारकालिष्याछै. परंतु पांचछै सो लिषूंछूं.

दूरिकरैछे सोलिपूंछूं सोमलनैं मारु वेंगणका पेटमें वार १४ पकाले तींकों भडीतो करिले पाछेवे बराबरि पीपलीअर हिंगलू ले यांती न्याकी राईजिती गोली बांधे पाछे गोली १ पतासामेंदे सीतलगे जिहपहलीतो निश्चैसीयो वेलांजरो तेजरो दूरिहोय गोली ३ तथा ५ मं १९

अथ जीर्णज्वरका लक्षणलिप्यते दिन२१उपरांतजुर तींकासरी रमैंरहे. सूक्षम होयकरअरजींकी भूप जातीरहे सरीर दुबलो होय जाय अरपेटमेंफियो होय आवे जीनैं जीर्णज्वर कहिजे अथ जीर्ण ज्वरका जतनलि० प्रथमवसंतमालतीरसजीर्णज्वरादिकांनैं दूरिक रैछे सोलिपूंछूं सोनाकाउरख १ भाग वुकाकामोती दोय २ भाग हिं गलूतीन ३ भाग कालिमिराचि ४ भाग पापरो गोमूत्रमेंसोध्यो ८ भाग यांसारानैंपरलमैं मिहीवांटि पाछे वासारानैं गऊका मापनमें वांका तोल माफिक परलकरे वाचिकटाई मिटे जैठा तांई पाछे औ रस तयार करैपाछे योरस रती १ तथा २ पीपलि सहतकासंयोग सूं देतो जीर्णज्वरनैं धात गरमीकारोगनैं संग्रहणीका रोगनैं मूत्रकृ छ्रनैं सासनैं पासनैं प्रदरने यांरोगानैं योदूरिकरैछे अनुपानकासंजो गसूं २० अथवा कटयाली गिलवे सूंठि यांतीन्याको काढोदिन१० लेतो जीर्णज्वरनैं दूरिकरैछे २१ अथवा कचूर पित्तपापडो सूंठि ना गरमोथो कुटकी कटालीचिरायतोयांनैं बराबरिले त्यानैं जौकूटकरि टंक २ रोजीनादोन्यावपतांदिन ११ लेतोजीर्णज्वर विषमज्वरदूरि होय २२ येवैद्यविनोदमेंलिप्याछे अथ लाक्षादितैललि०पीपलकी लाप शेर १ पाणीमीठोशेर ६ लोदटंक १० यांमेंयोऔटाय मधुरी आंचसूंईंको चतुर्थांसरसकाढपाछे ईंरसमें गऊको मठो शेर १ नाग

न टी. विषमज्वरविषनाशकगोलीछै. [illegible], [illegible] दमकासादिक रं. [illegible] १ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] [illegible] ५ [illegible],

मीठोतेलसेर १ नाषै अरसौंफ टंक २ आसगंधटंक २ हलदटंक २ देवदारु टंक २ संभालुटंक २ पित्तपापडोटंक २ कुटकीटंक २ मूर्वा टंक २ महलौठीटंक २ नागरमोथोटंक २ रक्तचंदनटंक २ रासना टंक २ यांसारी औषद्यांनैंमिहीवांटि ईतैलमैंनाषै पाछैसारांको येक जीवकरि मधुरीआंचसूं औटावै वेकौरसवलिजाय तेल आयरहै त दिउतारिलैपाछै ईतेलकौ मर्दन करेतौजीर्णज्वर दूरिहोय अरसरी रमैं वलहोय २२ अथवा पीपलि तीनसू येकेक रोजीनावधैइकवीसता ई अर एकेकहीघटैतीन आय रहैजठातांईदेवै इनै वर्धमानपीपलिक हैछे ईसूंजीर्णज्वर विषमज्वरदूरिहोय २३ अथवा बकरीकादूध का झांगासूंजीर्णज्वर दूरिहोयछै २४ अथवा नींबकापत्रत्रिफला सूं ठि कालीमिराचि पीपलि अजमोद सींधोलूण संचरलूण विडलूण जौ षार चित्रकचिरायतौ पित्तपापडौ येसारी औषादि बराबरिले यानैंमि हीपीसै कपडछाण करिटंक १ प्रातकालही जलसेती लेतौविषमज्व र जीर्णज्वर दूरिहोय २५ यौनींबादिचूर्णछै. अथवा त्रिफला दारु हलद दोन्यूकटाली कचूर सूंठि कालिमिरचि पीपलि पीपलामूल मु र्वा गिलवै धणो अरडूसौ कूटकि त्रायमाण पित्तपापडो मोथो नेत्रवा लो नींबकीछालि पोहकरमूल महलौठी अजवायण इंद्रजव भाडंगी सहजणाका बीजफिटकडी वच तज कमलगट्टापदमाष चंदन अती स षरैटी वायविडंग चित्रक देवदारु पटोल चव्य लवंग वंसलोचन पत्रज येसारी औषदिबराबरिलेयांसारीऔषद्यांसूं आधौ चिरायतौ ले त्यांनैंमिहीवांटि कपडछाणकरि पाछै टंक१ सीतल जलसूं लेतौ सर्वज्वर मात्रनैं विषमज्वरनैं जीर्णज्वरनैं यो दूरि करेछै यो सुदर्शन चूर्णछै २६ अथवा कहींतरैविषमज्वर अरजीर्णज्वर जाती दीसै न

---

* षोडसांगचूर्णछैजीमैंमोटीहरडैकीछाललिपीछैसोऔषधाकाअनुमानमाफिक पाठणी. और नींबकिछाललीपीछैसू चूनोनींबअतिकडवोजीकी अंतर छालटेणी.

हीं तौं वेनैवेकारोगमाफिक जुलाव अरवमन कराजे तो विपमज्वर अरजीर्णज्वर दूरिहोय २७ अथ अजीर्णज्वरका लक्षणलि० वार वारपतलौ जंगल जाय पाटीडकार आवे वमनकी इच्छारहै उदरमें पीडाहोय अर आफरो होय पेटमैंगुडगुडाटशब्दहोय तदिअजीर्ण ज्वरजाणिजे अथ अजीर्णज्वरकी औषदिलि० अजमोद हरडेकी छालि संचरलूणकचूरयांनेंवरावरिलेयांकोंचूर्णमिहींनवाटकरिटंक१ गरमपाणीसूं लेतौ अजीर्णज्वर जाय १ अथ दृष्टिज्वरका लक्षणलि० जंभाईघणीआवे उदरमें पीडाहोय हाथपगांमें फूटणी होय सरीर कीसक्तिजातीरहै तौदृष्टिज्वरजाणिजै अथ दृष्टिज्वरको जतनलि०से कीहींग कालिमिरचि पीपलि सूंठयेमिहींवांटि टंक२गरमपाणीसूंले तौदृष्टिज्वर दूरहोय १अथवा मुहोरा उगेरेको पुलाय पाणीपीवेतो दृष्टिज्वर दूरिहोय २ अथ लोहीविगड्योहोयतींकी ज्वरकालक्षण लि०अंगमेंफूटणीहोय मुहडाहोकरिसास आवेसरीरसिथलहोयाति सहोय मूर्छाहोय आफरोहोययेजीमें लक्षण होयतीनं लोहिकीज्वर जाणिजे अथ लोहीकी ज्वरको जतन लिष्यते दाप अरडूसाकव्या ली हल्द गिलवे हरडेकीछालि एनेंवरावरिले त्यांनें जोकूटकरि टंक २कोकाढोकरिदेकाढोसीतल हुंवा काढामें अधेलाभर सहत मिलाय दिन ७ देतौ लोहीविगड्यांसूं उपज्योजोज्वर तीनेंयोदूरकरे छे १ अथ मलज्वरका लक्षण लिष्यते जांभे मुप सोसहोय दाहहोय भ्रमहोय वमनहोय मूर्छाहोय मथवाय होय हिचकीहोय पेटमें सूलहोय येसारालक्षण जीमेंहोयतीनें मलज्वर कहिजे अथ मल ज्वरकी औषधिलि० कुटकी पीपलामूल नागरमोथो हरडेकीछाल

म. टी. [illegible]

किरमालाकीगिरि येसारी औषादि वराबरिले यानैं जौकूटकारिटंक२ कौकाढोकारि देतौ मलज्वर दूरिहोय औकिरमालापंचकछै १

अथगर्भिणीस्त्रीकीज्वरकौ जतनलि० रक्तचंदन दाष, गौरीसर षसमहलोठी महुवो धणौं नेत्रवालौमिश्री यांसारानैं वराबरिलेत्या कौ काढोदिन ७ देतौ गर्भिणीस्त्रीकीज्वरजाय १ अथ सूतिकाज्वर कालक्षणलि० अंगांमैंफूटणीहोय सरीर तातौहोय कांपणीहोयाति सहोय डींलभाख्योहोय सोजौहोय अतिसार होय येजीमैं लक्षण होय तीनै सूतिकाज्वर कहिजे १ अथसूतिकाज्वरकी औषदिलि० अजमोद जीरौ वंशलोचन षैरसार विजेषार सौंफधणौ मोचरसये सारी वराबरिलै त्यांनें जौकूटकारि टंक २ कौ काढौ दिन १० लेतौ सूतिकाज्वरदूरिहोय १ अथवा दसमूलकौ काढौदेतौसूतिकारोग दूरिहोय सोलिषूंछूं सालपर्णी पृष्टपर्णी दोन्युकटाली गोषरू वीलकी गिरि अरण्यु अरलु कूंभेरपाठ पीपलि येसारीवराबरिले त्यांनैंजौ कूटकारि टंकदोयको काढौदिनदसले तौ सूतिकारोग जाय २अथवा लककै ज्वरहोय तीकीउत्पत्तिलक्षणालिष्यतें बालककीमाता अथवा धायकुपथ्य करे गरिष्ठवस्तपाय तदि बालकके नानाप्रकारकारोग होय अर ज्वरहोय सो वालकाका रोयवासूं जाण्यौजाय ज्वरप्रत्य क्ष मालूमहोय अथ वालककी ज्वरकौ जतनलि०वालककीमातानैं अथवा धायनै पथ्यराषिजै. अर हलका भोजनदीजे अथवावाल ककी माताकै दूध नहींहोयतौबकारिको दूधदीजे अथवा नागरमो थौ हरडैकीछाल पटोल महालौठी येसारेऔषदि मासा १ भरले तींको काथकरिदिन ७ देतौ वालककीज्वरदूरिहोय १ अथवापील महलौठीछडमहुवोयांकौमिहींचूर्णकरिचूर्णमासो १ सहतमैदेतौवल

न. टी. तेलअथवाघृनसिद्धहुवायकावहुतगुणकरछै. परंतुहीनवीर्यहुवाथका निकमाहोयछै सोपावैद्यसंप्रदायनैंसमजणी. कारण चूर्ण तथाघृत तेल मासदोयपाछै हीनवीर्यछै. अरगोली मासबारापाछै हीनवीर्यवानहोयछै अर रसादिक दिनादिनवीर्यवानहोयछै.

ककी ज्वरदूरिहोय २ अथवाबालककै अतिसारनैं लीयां ज्वरहोय तो अतीस बीलकीगिरि इंद्रजव धावड्याकाफूल लोद धणो नेत्रवालो यांको मासा २ भरको काढोदेतो बालकको ज्वरातिसारदूरिहोय ३ अर बालककी सूंडी पकिगईहोयतो घृतसूं सेकेतो आछो होय ४ अथपेटमें कृमि पडगईहोय तीसूं उपजीजोज्वर तीको लक्षणलिष्यते जुरहोय आवे सरीरको वर्ण औरसोहोय पेटमें सूलहोयहियोदूपे वमन आवे भ्रमहोय भोजनमेंरुचिहोय नहीं अतिसार होय तो कृमिसूं उपजीज्वरजाणिजे अथ ईंकोजतन लिष्यते पलासपापडो नींबकीछालि सहजणाकी जड नागरमोथो देवदारु वायविडंग यां औषधांनें बराबरिले त्यांनें जौकुटकरिटंक १ कोकाढोदिन ७ देतौपेटकी कृमीदूरिहोय अरयो ज्वरजाय १ अथ कालज्वरका लक्षणलिष्यते ज्वरकोवेगघणो होय ऊर्ध्वस्वास होय सरीरकी कांति जातीरहे पसेव आवेसरीरसिथिलहोजाय नाडीहाथ लागे नहीं. सारीइंद्रियांका धरम जातारहे तो कालज्वरजाणिजे अथ ईंका जतनलि० गऊ पृथ्वीनें आदिले श्रद्धामाफिक दान कराजे ईश्वरको स्मरण कराइजे अर सन्निपातका जतनपाछैकह्याछैसो करिजे अथ ज्वरका दस १० उपद्रव छैसोलिषूंछूं तिसघणीलागे १ पासीहोय २ सासहोय हिचकीहोय ४ वमनहोय ५ अतिसारहोय ६ अरुचिहोय ७ वंधकुष्ठहोय ८ आफराहोय ९ मूर्छाहोय १० उपद्रवांकोलक्षणलि० प्रथम ज्वरहोयपाछैओररोग होय वोजुरको जतन करिवादे नहीं इंनें उपद्रवकहिजे तिसतोज्वरकी स्त्रीछै. सास पास ज्वरकाबेटाछै हिचकी अर वमन ज्वरकीबेटीछै. अतिसार ज्वरकोभाईछै अरुचि ज्वरकीबहिणछै. वंधकुष्ट ज्वरको

म. टी. [illegible] भस्म गार [illegible] इत्यादिकऔषधसूंज्वर [illegible] भिरवांकिसान [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]

भाणिजोछे आफरो ज्वरकोसुसरोछे मूर्छा ज्वरकोवांदीछे यांमैजो वलवानहोय तीकौ जतनकीजे अथज्वर अतिसार येदोन्यूं एकठां होय तींकोजतनलि० सूंठि अतीस नागरमोथो चिरायतौ गिलवै कुडाकीछालि यांनैं बराबरिले यांनैं जौकुटकारटंक२कौकाढौ रोजी नादिन ७ देतौ योदूरिहोय १ अथवा पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि विलकीगिरि नागरमोथो चिरायतौ कुडाकीछाली इंद्र जवयांसारानैं बराबरिलै यानै जौकूटकारटंक २ कौकाढो करि दिन ७ लेतौ ज्वरातिसारनैंहिचकीनै मुषसोसनैं वमननैं स्वासनैं षास नै यांसाराहीनैं योदूरिकरैछे २

अथ ज्वरमैंतिसघणीहोयतींको जतनलिष्यते धणों नागरमो थौ पित्तपापडौ यांनैं जौकूटकारटंक २ को काढौदिन ३ देतौतिस दाह अतिसार दूरिहोय ३ अथवा वडका अंकुर चावलांकीपील कमलगट्टा यांनै वराबरिलै त्यांनैमिहीवांटि सहतमैं गोलीकरै गो ली १ मूंढामैराषे तौतिसदूरिहोय ४ अथ ज्वरमैंषास होयतींको जतनलि० पीपली पीपलामूल सूंठि भाडंगी पैरसार कटयाली अर डूसौ कुलिंजन बहेडा यानै बराबरि टंक १ कौकाढौदिन ७ देतौ जु रकोषासजाय १ अथ जुरमैंस्वासहोयतींकौं जतनलि० सूंठि मिर चि पीपालि मौथौ काकडासींगी भाडंगी पुहकरमूल येवराबरिलै यां कौटंक १ कौ काढौदिन ७ देतौ ज्वरकोसास दूरिहोय १ अथ ज्वर में हिचकीहोयतींकौ जतनकिष्यते जलमैंसींधोलूण मिहिवांटितीं को नासदेयतौहिचकी दूरिहोय १ अथवा मौरकाचंदवाकीराष अ रपीपालि सहतमे चटावै तौ हिचकी अर वमन दूरिहोय २ अथवा ज्वरमैं वमनहोय तींकौजतनलिष्यते गिलवैटंक१को काढोसहतमे

*. रोगिनैंरातिमैंतो दाहहोय भयलागै दिनमैंतोसीतलहोय समाधानीरहै कंठमैंतोकफबोलै मुढाको वर्णजातोरहै लालनेत्रहोजाय जिव्हाकालीकठिण होजाय.नाडीतोमंदतेजीपाछै मदा यैय है सोरोगीनैं राम नामकीऔषदि देवै ओर औषदिबीकरे, स्यासजितै आछै,

मिलायदे तो ज्वरको वमनदूरिहोय १ अथवा मापीकीवीट रती२ सहतमै चटावैतोछर्दिदूरिहोय २ अथवा चांवलाकीपोल पीपली सहतमें चटावैतोछर्दिदूरिहोय ३ अथज्वरमेंमूर्छाहोय तींकोजतन लि० किरमालाकीगिरि दाप पित्तपापाडो हरडेकीछालि यांको काढो टंक२ को करिदेतो मूर्छादूरिहोय १ अथ ज्वरमें बंधकुष्ट होय अर आफरो होय तींको जतनलि० सावणकीवातिकरि गुदामेंमे लेतो बंधकुष्ट अर आफरो दोन्यूदूरिहोय १ अथ ज्वरमें मुपसोसहोय आवे अरजीभको विरसपणो होय तींको जतन लिप्यते मिश्रीअरदांडयूंकाबीजांका कुरलाकरै अथवा दाप अर दांडयूंका बीजाका कुरलाकरैतो मुपसोस अरजीभको विसरपणो दूरिहोय १ अर जुरमें नींद जातीरहे तींका आवाको जतनालि० आलूबुपारो १ सेकी भांगिरती १ सहतमें चटावै तो नींदआवे अर अतिसार संग्रहणीदूरिहोय. भूप लागे १ अथवा पीपलामूल टंक १ गुडमें पायतोनींद मुकरआवे २ अथवा अरंडकोतेल अर अलसीकोतेल ये दोन्यूं कांसीकी थालीमें घसि ईंको अंजन करैतो नींदमुकरआवे ३ अथ ज्वरउतरिगईहोय तींको लक्षण जतनलि० सरीर सारोहलकोहोजाय मस्तकमें पुजालि आवे होठामें पापरी होय सर्वइंद्रियांआपका विसयनें ग्रहण करिवालागिजाय सरीरकीसारी व्यथा जातीरहे सारासरीमें पसेव आजाय भूपघणीलागे छींक आवे मलकीप्रवर्तिहोय येलक्षणहोय तदिज्वरनिश्चेदूरि हुवो जानि

म. टी. [illegible]

[illegible]

जे स्याणो पुरुष दूरिहुवापाछेही अतनी वस्तकरैनहीं वलसरीरमे वापरै जवताई अरपथ्यमेरहै मैथुन व्यायाम बोजउठावो घणो षावो यानेआदिलेर येतीवस्तकरैनहीं इतिश्रीआठो ज्वरकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र० सर्वज्वरकीउत्पत्ति अर सर्व ज्वरलक्षण अरसत्रे ज्वरकामुष्य मुष्य जतननिरूपणंनामद्वितीयस्तरंगः समाप्तः २

अथअतिसाररोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० इतनीवस्तांसूमनुष्यांके अतिसारको रोगपैदा होयछे. भारीवस्त मैदाउगैरैकापावासूं घणीचीकणी वस्तका पावासूं लूषीवस्तकापावासूं गरमवस्तकापावासूं पतली सीतल वस्तकापावासूंविरुद्धवस्तकापावासूं भोजनउपर भोजनकरिवासूं विषकापावासूं मलकीबाधाकारोकिवासूं इतनी वस्तांसूं मनुष्यांकेअतिसारकोरोगपैदाहोयछै. अथअतिसारकोस्वरूपलि मनुष्यांकासरीरमै यांकुपथ्यांसूं मल धातवधैतदिउदरकी अग्निनैं सांतिकरैतदिओजलहै सोविष्टासूंमिलीपवनको मार्योथको गुदाकामारगसूंपतलोमलनीचेकूंवणोचलेतीनैंअतिसाररोगकहिजैछे. सोअतिसाररोगछै ६ प्रकारकोछै. एकतोवायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ सोचको ५ आमको ६ अथअतिसारको पूर्वरूपलि० प्रथमहियानाभिगुदाउदरपेडूयांमेपीडा होय अंगमे फूटणीहोय गुदाकोपवनरुकिजाय बंधकुष्ठहोय आवै आफरोहोय अन्नपचैनहीं तदिजाणिजैमनुष्यकेअतिसारहोसी अथवायकाअतिसारको लक्षणलिष्यते क्यूंयेक ललाईनलीयांमलहोय अर मलमैं झागमिल्याहोय मललूषोहोय अर थोडोथोडो वारंवारजाय अर आमसूंमिल्योथको मलजाय अर मलजातां पेडूमें पीडाहोय

न. टी. ज्वरका अंतमें अतिसाररोगकी प्रवर्तिलिषीछे सोयेकोपूर्वरूप अर मिथ्याआहार व्यवहारसों ईरोगकी उत्पत्ति होयछे. सोभी अर निदान अर जतन लिष्याछे सो मनुष्यांका वाय, पित्त, कफ, येकोपकी प्राप्तिहुवासों होयछे.

तौवायाको अतिसारजाणिजे अथ वायका अतिसारका जतनलि० वच अतीस नागरमोथो इंद्रजव सूंठि यांनैबराबरिले त्यांनै जौकूटकरि टंक २ को काढोदिन ७देतौवायको अतिसार दूरिहोय अथवा इंद्रजव नागरमोथो लोद बीलकीगिरि आंबकीगुठलीधावड्याकाफूल यांनै बराबरिले त्यांनैमिहींबांटि चूर्णकरिटंक २ भैंसिकी छाछिमैंदिन ७देतौ वायको अतिसारदूरिहोय २ अथ पित्तकाअतिसारकोलक्षणलि० मलपीलो होयजाय अरलाल अरहर्यो अर दुर्गंधनेलीयां मल जाय अर पतलोजाय अर गुदापकिजाय सरीरमें पसेव आवे तिस लागे सरीरमेंदाह होय मूर्छाहोय येलक्षणजीमें होय तीनें पित्तको अतिसारकहजे २

अथ पित्तकाअतिसारको जतनलि०बीलकीगिर इंद्रजव नागरमोथो नेत्रवालो अतीस यांनै जौकूटकरिटंक २ को काढो दिन८देतौ पित्तको अतिसार जाय अथवा रसोत अतीस इंद्रजव धावड्याकाफूल सूंठि ये बराबरिलेत्यांकोमिहीचूर्णकरि चावलांका पाणीसूं टंक २ तीमें सहतमिलाय दिन ७लेतौ भयंकरभी पित्तको अतिसार जाय२अथवा बीलकीगिर नेत्रवालो मोथो इंद्रजव अतीस यां औषयानें ले तींकोकाढो टंक२ कोदिन ७ करिदेतौ पित्तको अतिसार जाय ३अर पित्तअतिसारको रक्तातिसारभी भेदछै जोघणीगरम वस्तपाईहोय तींकै पित्तवधे वेको लोहीविगडे तदि वेंका लोहीमेंमिल्यो मल उतरै तदिवानें रक्तातिसार कहेछै अथ रक्तातिसारको जतनलि०कुडाकीछाल दाडयूंकाछयोडा यां दोन्यानें टकाभरिले त्यांको काढोकरि काढामे टंक ५ सहत मिलाय दिन ७ लेतौ रक्तातिसार

टी. अतिसारमें [illegible] १ [illegible] १ [illegible] १ [illegible] ५ [illegible] १ [illegible]

जाय १ अथवाकुडाकीछाल अतीस मोथो नेत्रवालो लोद रक्तचंद
न धावड्याकाफूल दाडचूंकाछौडा पाछेयांनैं बरावरिले पाछे यांनैं
जौकूटकरिटंक २ कौकाढोकरि तीमैं टंक२सहत नापिदिन ७ देतौ
रक्तातिसारनैं दाह मलसंयुक्तनैंयोदूरि करैछे २ अथवा सुपेदचंदन
टंक १ मिहीवांटि तीमैं सहतटंक २ मिश्रीटंक२सूंदिन ८ चाटेतौ
रक्तातिसारजाय ३अथवामीठीदाडमकौपुटपाकदे सहतमिलायचा
टैतौरक्तातिसार जाय ४ अथवा बकरीको दूध मापन सहतमिश्री
येसारीमिलायषायतौ रक्तातिसार जाय बंध होय ५ अथगुदापकी
गईहोय तींकौजतनलि० पटोल महलौठी महुवो यांनै औटायपा
छै ठंडो करि वेपाणीसूं धोवैतौ गुदाकौ पाक आछयौहोय अथवा ब
करीका दूधमैं सहत मिश्रीमिलाय वेसूंधोवैतो गुदाकौ पाक आछयौ
होय २ अथवा गौंहाका चूनमैं घृतमिलाय पाणीसूं औसाणिगरम
करवेसूंसुहावतौ सुहावतौ सेकै तौ गुदाको पाक आछयौहोय ३
अथ कफातिसारकालक्षणलि० जीकेमलचीकणौ अरसुपेद अरजा
डौ अर दुर्गंधनैंलीयां अरसीतल अरथोडी पीडानैं लियां जाय अर
सरीरभारयो रहे येजीमैं लक्षणहोय तीनैं श्लेष्मातिसार कहजे१ अ
थ श्लेष्मातिसारको जतन लिष्यते कफातिसार वालानैं दोयचारलं
घन कराजे के मूंगाकौ थोडों पथ्य दीजे चव्य अतीस कूठवीलकी
गिरि सूंठिकूडाकी छालि तजयांनैं जौ कूटकारि टंक२ कौकाढोदिन
७ देतो श्लेष्मातिसार जाय १ अथवा सेकीहींग संचरलूण सूंठि
कालिमिरचि पीपलि अतीस येबराबरिले त्यांकोचूर्णकरिटंक १
दिन७लेतो श्लेष्मातिसारजाय अथसन्निपातका अतिसारकां लक्ष
णलि०जीकौ सूरका मांससिरसो मलहोय अर जीमलमैं अन

न. टी. पुटपाकलिष्योछैसो दाडिमहरी मिठीलेकरऊंकैऊपर आमजामूणकापानलपेटक
र मालावस्त्रमैं लपेटे. पाछै वेकेमृत्तिकाको गोलो करै पाछै आंबिछाणाकीयेपरि. यांगोलोला
लहोय जदांकाढकर तीको रस निचोयलेजीनैं दाडमको पुटपाक कहेछे.

क रूपसोदीपे अर वेपुरसके नेत्रांमें तंद्रा होय तिसहोय मुपसो सहोय भ्रमहोय मोहहोय अरयों बालकके वृद्धके स्त्रीके होयतो असाध्यजाणिजे १ अथ ईका जतनलिष्यते पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि परेटी बीलकीगिरी गिलवे मोथो पाठ चिरायतो कुडाकी छालि इंद्रजव यांनै जौकूटकरि टंक२को काढो करिदिनद श १० देतोसन्निपातको अतिसार दूरिहोय १ अथवा जांगीहरडे सूंठि मोथो येबराबरिले त्यानै मिहींवांटिपुराणागुडमेंटंक २ दिन७ पायतौत्रिदोपको अतिसारदूरिहोय २ अथवा कुडाकी छालले तीं को पुटपाककरि रसकाढे पाछे वेरसमें सहत मिलावे टंक ५ पाछे दिन १० लेतो सन्निपातकोअतिसारजाय ३ अथसोचका अतिसा रको लक्षणलि० जीं पुरुपकी पुत्रमित्र स्त्रीधन यांका नासका सोच सूं उदरकी अग्निहेसोमंदहोय शरीरको वाहिरलोतेजहेसोउदरमें जाय पाछे रक्तविगडेछे पाछे ओरक्तविष्टासूंमिलिअथवानहीमि ल्यो ओहीगुदाकी द्वारानीकले चिरमिसिरीकातो नेसोकातिसार क हिजे यो दोहरोजाय अर इंसीतरहही कहींतरेकाभयसूभी उपज्यो सो भयातिसाराभीजाणिलीज्यो अथ सोकातिसार अरभयातिसा रको जतनलि० ज्योवायका अतिसारको जतनछे सोही जाणिली ज्यो अथ आमातिसारको लक्षणलिष्यते जीपुरसके प्रथम भोज नको अजीर्ण होय पाछे ओगरिष्टवस्तपाय तदि येके वायपित्त क फ हेसो कोठामें जाय धातका समूहनें अर मलनें विगाडो अर वें मलनें सूलसंयुक्त दुर्गंधीनलियां जांमे अनेकवर्ण इसा मलनें गुदा द्वारा काढे तांनै वेद्य आमातिसार कहेछे अर मलहेसो जलमेंतिरे आंव हेसो जलमें डूबिजाय अर आंव दुर्गंधिनेलीयां अरमूपेद्रा

२. टी. [illegible]

इनैं लीयां अरचिकटाईनैलीयां होयछे. योईको लक्षणछे अथ आ
मातिसारकौजतनलि० धणो सूंठि वीलकीगिरि नागरमोथो नेत्र
वालो यांनै बराबरिले त्यानैं जौकूटकारि टंक २ को काढो कारिदिन
७देतो रोग माफिक दिन १० तथा १५ देतो आमातिसारनें सूल
नैंयोदूरिकरैंछे योधणांपंचकछे १ अथवा जांगीहरडे मोथो सूंठि
अतीस दारुहलद ये बराबरिलै त्यांनै जौकूटकरिटंक २ को काढो
दिन ७ देतो आमातिसार दूरिहोय२अथवा जांगी हरडे अतीस
सेकीहींगसंचरलूण सींधोलूण यांने बराबरिले त्यांनेमिहीपीसिटंक
२ गरमपांणीसूं लेतो आमातिसार दूरिहोय३अथ पक्वातिसारको
जतनलि० लोद धावड्याकाफूल, बीलकिगिरी मोथो आंबकीगुठ
ली इंद्रजव येबराबरिलै त्यांनैंमिहीपीसिटंक २ भैंसिकीछाछमैंलेतो
पक्वातिसार दूरिहोय. ४ अथवा अजमोद मोचरस सूंठि धावड्या
काफूल जामुणकीगुठली आंबकी गुठली यांनैं बराबरिले त्यांनैंमि
हीपीसिटंक २ गऊकीछाछिमें लेतो पक्वअतिसारजाययो लघुगंगा
धरचूर्णछे ५ अथ सोजातिसारको जतनलिष्यते साठीकीजड इंद्र
जव पाठ वायविडंग अतीस नागरमोथो कालीमिरचि यांनैंबराब
रिलै त्यांनें कूटकारि टंक २ कोकाढोकरिदिन ७देतो सोजातिसार
जाय १ अथ अतिसारमें छादणि होय तींको जतनलिष्यते आंब
कीगुठली बीलकीगिरि येदोन्यूं टंक २ले त्याको काढोकारि काढा
मैं सहतटंक २ मिश्रीटंक २ मिलायदिन ७लेतो अतिसारछर्दिस
मेत दूरिहोय. १अथवासेक्यामूंग चावलांकीपील यां दोन्यांने औ
टाय तीमें सहतमिलाय दिन ५पीवेतो छर्दि अतिसार दाहज्वर
दूरिहोय २ अथ अतिसारको भेद मोडानीवाही तींको लक्षण

न. टी. जीं अतिसारमें जोकोईभी कारणासौं उपद्रवहोय अथवांपेटोपद्रो रोपमोवेकीरू रीतिगारापकरउपावकरणो. कारण जोउपद्रवकांईकारणसौं हुवोछै उपांकीसमापानी वेपनै प्रथमकरणी. पछै औरउपाव करणो.

लिप्यते कुपथ्यका करिवावालो जोपुरस तींके वाय वध्यो थको क
फसूं मिलि मोडानिवाहिनें करैछे. वा मोडानिवाहि पुरसके स्याय
तमें मरोडो चालै थोडा अथवा घणा मलनें गुदाद्वारा काढैछे. तीनें
मोडानिवाहि कहिजे सो मोडानिवाहि च्यार प्रकारकीछे. वायकी १
पित्तकी २ कफकी ३ लोहकी ४ जीमें पीडा घणीचालै मल उतरै
तीनें वायकी कहिजे जीमें दाहघणोहोय तीनें पित्तकी काहिजे. जीमें
कफसूं मिल्यो मल जाय तीनें कफकी कहिजे. अथ यां च्यारुंहीका
जतन लिप्यते वीलकीगिरि लोद कालीमिरचियेतीन्यूं पइसापइसा
भरिलै पाछैयांनें मिहीं वांटि टंक १ सहतमें चाटै तो मोडानिवाही
दूरिहोय १ अथवा धावड्याका फूल टंक २ यांनें मिहींवांटि दहींके
साथि दिन ७ पायतो मोडानिवाहीजाय २ अथवा कैथको रस
टंक ५ सहतके साथि दिन ७ पायतोमोडानिवाही जाय ३ अ
थवा लोद टंक २ दहींकेसाथि दिन ७ पायतो मोडानिवाही जाय
४ ये साराहीलक्षण अर जतन भावप्रकासमें कह्याछै अथ आमा
तिसारका और जतन लिप्यते हरडैकीछालि मिहींवांटि टंक २ स
हतसूं दिन ५ पायतो आमातिसार दूरि होय १ अथवा भांगरा
को रस टंक ५ दहींके साथि दिन७पायतो सर्वप्रकारका अतिसा
रानें दूरिकरै. २ अथवा रालटंक २ मिश्रीटंक १० मिलाय ईतोल
दिन १० लेई तो घणाहीदिनाकोभी अतिसार जाय ३ अथवावी
लकीगिरि टंक २ बकरीकादूधकेसाथिदिन ७पांवै तो रक्तातिसार
जाय ४ ये वैद्यविनोदमें लिप्योछे. अथवा धणो सूंठि पीपलि सीं
धोलूण अजमोद सेकीहींग जीरो यांनें बराबरिलै यांनें मिही वां

* अतिसारका रोगमें [illegible]

[illegible]

टि दहीका मठामें टंक २ रोजलेतौ सारा अतिसारसूल आम दूरि होय भूषलागे रुचिहोय योवृंदमैंलिष्योछै ५ अथवासूंठिनैजलसूंभिही पीस वैको गोलोकारि गोलानैं अरंडकापानासूं लपेटसुतबांधि पाछैवैऊपरिमाटीलपेट मधुरी आंचसूं पकावे पाछैमाटीउगरैसबदूरिकारि सूंठिकाढिले पाछैवैनैंठंडीकारिटंक २ सहतसूं दिन ७ षायतौ आमआतिसारजाय ६ अथवा येकभागअफीम दोयभाग हिंगलू तीनभाग लवंगच्यारिभाग मोचरसतीनभागमिश्रियांनेंमिहीवांटि रती १ तथा२साव्याचावलांकापाणीमैं अथवाछाछिके साथिलेतौ भयंकरभी अतिसारजाय७अथवा नागरमोथो मोचरस लोद धावड्याकाफूलबीलकीगिरि इंद्रजवअफीमसोध्योपारोसोध्यो गंधक यांनैंबराबरिलै प्रथम पारागंधककी परलमैं कजलीकरे पाछै येसारी औषधी मिहीवांटियेकजलीमैंमिलावै. पाछै ईनैरती ३ छाछिसूदिन १० लेतौ अतिसारनै मोडानिवाहीनैं संग्रहणीनैं सांराहीनैंयोगंगाधररसदूरिकरैछै ८

अथवा सूंठि जायफल अफीम काचीदाडमकागुला ये सारा बराबरिलेपाछैसर्वत्र येकठाकारि काचीदाडुंमैंभरैपाछैवैको पुटपाक कारि पाछैवैंकीगोली चिरमीप्रमाणबांधै पाछैगोली १ गऊकीछाछिसूदिन७देतौ पकातिसारनैं दूरिकरै. ९ अथवा अमलनैं ठीकरामैं मधुरीआंचसूंसेकिकै पाछै अनुमानमाफिकदेतौअतिसारनिश्चै दूरिहोय १० अथवा जायफल लवंग धावड्याकाफूल बीलकीगिरि नागरमोथो सूंठि मोचरस हींगलू अमल येसारी औषदि बराबरिले यांनेंनिपट मिहींवांटिछोंतराका पाणीसूं रती१तथा २कीगोली बांधे गोली १ चावलाका पाणीसूं अथवा छाछिसूंदिन७लेतोनिश्चै

न. टी. घणागृहस्थ पुन्यवान होयछैतोई अतिसारका रोगीनै पुन्यऔषदि देवैछैजा औषधिलि० नारेलकोमाहलो गोलोलेकरवेमैं छिद्रकरकै अफीमचोषो तोला २ अनारका फलको रस तोला २ वैमैं भरकरऊपर आटाको बाटी बणावे.

सरव अतिसारजाय ११ अथवा जायफल छँवारो अफीम येतीन्यो वरावरिलेल्यानंपानाकारसमेंरती १प्रमाणकीगोलीवांधे पाछे गोली १ छाछिसूंदिन७देतो भयंकरभी अतिसार दूरिहोय १२ अथ जीं के अतिसार होयसो अतनीवस्तकरेनही. नयोअन्न, गरम वस्त. भारयोचीकणो भोजन तावडोपेद मैथुन स्नान चिंता येअतिसारवा लोकरेनही येवैद्यविनोदमेंलिप्याछे १३ अथ अतिसारको असाध्य लक्षणलि० सूरका मांससिरीसो मलहोय अरतिस दाहअरुचि सा सहिचकीपसवाडामेंसूलमूर्छा अरकोइवातमेंमनलागेनहीं येजीमें लक्षण अरगुदापकिजाय अग्निजीकीजातीरहे. तिसजीनेंघणीलागें अरज्वरभीरहे अर मूत्रवंधहोय अरसरीरको वलजातो रहे. येजीअ तिसारमें लक्षणहोय सोपुरसमरिजाय अथ अतिसारजीको जातो रह्योहोय तीको लक्षणलिप्यते जींके जंगल विनामूतउतरे अरगुदा कोपवन आछीतरहसूंचले. अर आछी भूपलागे अर कोठांहलको हुवोहोय येजीमें लक्षणहोय तीको अतिसारकोरोगदूरिहुवोजाणिजे इतिअतिसाररोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्णम् १

अथ संग्रहणीरोगकीउत्पत्ति लक्षणजतनलि० प्रथमसंग्रहणी कीउत्पत्तिलि०प्रथममनुष्यकों अतिसारहोयकरि ओ अतिसारतो जातोरहे. पाछे ओमनुष्यकुपथ्यकरेतदि अग्निमंदहोयसो अग्निमंद हुवेथकी पुरसका उदरमें रहती जो छठीकलाजीकोनामसंग्रहणीछे वाकला अग्निकोस्थानछे अन्नादिक जोपाईजेछे तीनें वाग्रहणकरेछे सोवामंदाग्नि येकलानें विगाडेछेसोवाकलाविगडीथकी काचा अन्ननें तोग्रहणकरेछे. अरपाका अन्ननें गुदाद्वार काढेछे ईवास्ते वेदहैसो इरोगको नामसंग्रहणी कह्यो. ग्रहणी कलाके अग्निहीकोवलछेसोवा

म. टी. [illegible] आठसमोपनै [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कला अग्निनैं दुष्ट करैछे अथ संग्रहणीरोगका लक्षणलिख्यते. प्रथम संग्रहणी च्यारप्रकारकीछे येकतौ वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ येवायपित्तकफहैसोघणांवध्याथकाकुपथ्यसूंवायह णीकलाघणोषाय पणि काचाही अन्ननैं गुदाद्वार काढैछे अथवा पक्याअननैं काढैतौभी पीडाचलाय काढैमलनैं कदेकतौ बंध्योमल जाय अर कदेकपतलोहीजाय योईसंग्रणीरोगको लक्षणछे. अर अतिसारसंग्रहणीमैंयो भेदछे अतिसारवालातौ पतलोमलजाय अर संग्रहणीवालो बंध्योमल पीडानैलीयांजाय १

अथवायकी संग्रहणीका उत्पतिसमेत लक्षणलि० जोपुरुप वायलवस्तको घणो सेवनकरै अरमिथ्याविहार मैथुनादिक घणां करैतौ पुरसकै वायकुपित हुवोथको जठराग्निनैंविगाडि वायकि संग्रहणीनैं करैछै तींपुरसकै अन्नपायो दोहरोपचै अर वैंको कंठसूकै. भूपलागै तिसलागै कानामैं शब्दहोय अर पसवाडामैं जांघामैं पेडूमैं कांधामैं पीडाहोय अरकदेकविसूचिकाभीहोय हींयोदूषै शरीर दुबलोहोय जीभकोस्वाद जातोरहैमीठाउगेरैसारारसांका षावाकीइच्छारहै अर भोजनकरैतरभोजनकर्‍योहोयसोपचिजायतादि आफरोहोय अर भोजनकरैत दि जीवचैनपावै अरपेटमैं गोलाकी फियाकीआसंका रहै अर मरोडोदुपनैलीयांथोडोसोझागासमेत पवन सरतो थको वारवारमैं जंगल जाय अरजींकेपास सासभी होय. येजींमैं लक्षण होय तींनैं वायकीसंग्रहणीकहिजै १ अथ वायकी संग्रहणीको जतनलि० सूंठि गिलवै नागरमोथो अतीस यांनैं वरावरिले पाछै यांनै जौकुटकरि टंक २ को काडोदिन १५ देतौ आंवसमेत वायकी संग्रहणी जाय अर भूप वधै १ अथवा गऊकीछाछि तांमैं सूंठि पीपलामूल पीप

न. टी. जीयरपांडुवापाणीमैंसहतमाता २ नापकरवोंपाणीपावैंहरीनगार ३ अथवा ५ मा र्पावैंतौ घणादिनाको अतिसार आराम होयछै. अरांग्रहणीनैंयीदेवैंतौ फायदोहोयछै. पांच चिटकी उनगानसौं देणी ज्यादा नहीं देणी.

लि चित्रक चव्य येसारी बराबरिले तींको चूर्णकरि टंक २ रोजीना छाछिमें मिलाय योपीवे छाछिहीको पुवसेवनकरेतो वायकी संग्रहणीमुकरजाय २अथवा सोध्योगंधक टंक १ पारोटंक १ यांदोन्यांकी कजली करे पाछे सूंठिमासा १० मिरचिकाली टंक २ पीपलिमासा १० पांचूलूण मासा १०सेकी अजमोद टंक ५सेकीहींग टंक ५ सेक्यो सुहागो टंक ५ सेकीभांग पईसा ४ भर यांसारानें मिहीपीसि पारागंधककी कजलीमें मिलाय पाछे ईने दिनदोय२पर ल्करे तदियो लाईचूर्ण होय पाछे ईनें मासा २तथा४गऊकीछाछिमें देतो वायकी संग्रहणीनें दूरिकरे अर मंदाग्निने अतिसारनें बवासीरनें पेटकी कर्मांने क्षयीरोगनें यांरोगानें योलाईचूर्ण दूरिकरेछे१ अथपित्तकी संग्रहणीकीउत्पत्ति अरलक्षणलिष्यते जोपुरपगरमवस्त अतिकालीडगेरे तीपीवस्त पाटी वस्तपारीवस्तघणीपाय तीकेपित्तदुष्टहोये पाछे ओदुष्टपित्त हैसो जठराग्निनें बुझाय देवे तदिवंके काचाही मलनें काढे नीलोपीलो पतलो पाणीनेंलीयां अर वेनेंपाटीडकारआवे हियामें कंठमें दाहहोय अरुचिहोय तिस लागे ये जीमें लक्षण होय तीनें पित्तकी संग्रहणी जाणिजे. १ अथ पित्तकी संग्रहणीको जतन लिष्यते रसोत अतीस इंद्रजव तज धावड्याकाफूल येसारी बराबरिले यांको मिहीचूर्णकरि टंक २ गऊकी छाछिसूं अथवा सहतसूं अथवा चावलांका पाणीसूं दिन १५ लेतोपित्तकी संग्रहणीजाय. १ अथवा जायफल चित्रक सुपेदचंदन वायविडंग इलायची भीमसेनी कपूर वंसलोचन जीरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि तगर पत्रज लवंग येसारी ओपदि बराबरिले पाछे यानेंमिहीपीसि यांसूं दूणी मिश्रीमिलावे अर सारी ओपदि बराबरिविनासे

* श्लोक ॥ [illegible] ॥ अर्थ–[illegible] [illegible]

की भांग ईमेंमिलावै पाछै यांसारानें मिहीपीसि मासा ४ तथा ६ गऊकी छाछिकैसाथि दिन १५ लेतौ पित्तकी संग्रहणीजाय २ये वै द्यरहस्यमै लिष्याछै अथकफकी संग्रहणीकी उत्पत्तिलक्षण लि० भारीवस्त अति चीकणीवस्त सीतल वस्त जोपाय अर भोजन करिकै सोय जाय तींपुरसकै कफको कोपहोय तदि वेंकौं अन्नदोहरो पचें अरहीयोदूषे अर वेंकैछर्दिहोय अरोचकहोय मुषमीठोरहै पासी होय पीनसहोय पेटभार्योरहै मीठीडकार आवै स्त्रीप्यारि लागैनहीं आमसूंमिल्यौ मलजाय बलविनासरीरपुष्टदीपै आलस घणो आवै येजीमें लक्षणहोय तीनैं कफकी संग्रहणी कहिजे. १

अथ कफकी संग्रहणीका जतनलिष्यते हरडैकीछालि पीपलि सूंठि चित्रक संचरलूण कालिमिरचि यांनै बराबरिले यांको मिहींचूर्णकरि टंक२रोजीना छाछसूं दिन १५ देतौ कफकी संग्रहणीजाय. १ अथसन्निपातकी संग्रहणीको लक्षण लिष्यते जीमेंवाय पित्त कफका साराही लक्षणमिलैतीनेंसन्निपातकी संग्रहणी कहीजे १ अथ सन्निपातकी संग्रहणीको जतनलि० बीलकीगिरि मोचरस नेत्रवालो नागरमोथो इंद्रजव कुडाकीछालि यांनें बराबरिले त्यांनेंमिहींपीसि पाछै टंक २ बकरीकादूधमेंदिन २५ लेतौसन्निपातकी संग्रहणी जाय १ अथवा अनार दाणा टंक१भर जीरोटंक१भर धणों पईसा २५ भर सूंठिटका १ भर कालिमिरचिटका १ भरमिश्रीटका ८ भर ः सार नै मिहीवांटि टंक २ गऊकीछाछिमें महिनो १ लेतौ सन्निपातकी संग्रहणीजाय अर आमातिसार पसवाडाकी पीडा अरुचि गोलाको आजार येसारा दूरिहोय २ अथवा पारो सोध्योगंधक सोध्योसींगीमुहरो सूंठि कालिमिरचि पीपलि सेक्यो सुहागो सार अ

न- टी. वसंतमालतीवाराजवसंत वावसंत वा. सुद्रावसंत ये ध्यारनकारसौं भी रसहोयछै. जीमें स्वर्णमोनी. यांका कमजादासौं भी रस जुदा जुदा नामयुक्तहुवाछै. जीनै तिनकूं भर पपरपो तो याप्पारांमैही पडेछै.

जमोद अमल येसारी बराबरिले अरयांसाराकी बराबरिकी अभ्र
कले पाछेयांसारानें चित्रकका काढाका रसमें दिन १ परलकरे पाछै
कालिमिरचि प्रमाण गोली बांधे गोली १ रोजीनामहीना १ तांई
पायतो सन्निपातकी संग्रहणीजाय ३ योअभ्रकगुटिकाछै. अथवा
सोधीगंधक पारोअभ्रकहींगलू पार जायफलबोलकोगिरि मोचरस
सोध्योसींगीमुहरो अतीस सूंठि कालीमिरचि पीपलि धावड्याका
फूल घृतमेंसेकि हरडेकीछालि केथ अजमोद चित्रक अनारदाणा
इंद्रजव धतूराकाबीज कणगज अफीम येसारिबराबरिले प्रथमपा
रागंधककी कजलीकरेपाछै इकजलीमें येओपधिमिहीवांटिमिलावे
पाछे ईकीगोली मिरचि प्रमाणबांधेछ्योंतरांका रसमें योग्रहणीक
पाट रस छै ईकीगोलि१ देतोसन्निपातकी संग्रहणीनें सूलनेंअति
सारनें विसूचिकानें यांसारारोगानें योदूरिकरेदिन१५ सेवनकरो
येवैद्यविनोदमेलिख्यछै ४ अथ त्रिदोपकीसंग्रहणीकोभेद आम
वातकीसंग्रहणीतीकोलक्षणलि०पतलो सुपेद चीकणोमलजाय क
टीमेंपीडाचाले आंवनेंलीया मलउतरेवावघणोहोय पीडावणीहोय
कदेआछयोदीपपाछेपंद्रवेदिन महिनामें फेरिहोय आवे अथवारो
जीनाहो येरोगरहे ओतयेलखोकरे आलस आवोकरेसरीरदुबलो
होजाय पेटमें पीडरहबो करे दिनमेंरहेरातिनें आछ्यो होय येजीमें
लक्षणहोय तामें आमवातकी संग्रहणी कहिजे योभी असाध्यहोछै
ईकोजतन अरसन्निपातकीसंग्रहणीकाजतन येकहीछै. अथसंग्रह
णीकोभेदघटीयंत्रछैतीकालक्षणलि० सरीर सूनोरहे पसवाडामेंसूल
चाले पेटबोलबो करे अर संग्रहणीका लक्षण छै सो होय ईनेंघटी
यंत्रकहिजे योभी असाध्यछै. ओरअतिसारको असाध्यलक्षणपाछै

म. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

लिष्याछे सो, ईसंग्रहणीकावेहीजाणिलिज्यो अर अतिसारका अ छ्या आछ्या जतनपाछैलिष्याछे सोईकाभी वेहिजाणिलिज्यो अथ संग्रहणीका औरविसेस जतनलि० कैथकाभाग ८ मिश्री ६ भाग अजमोद ३ भाग पीपलि ३ भाग बीलकीगिरि ३ भाग धावड्या का फूल ३ भाग दाडयूंकागुलांका ३ भाग जासखाका ३ भाग संचरलूण १ भाग नागकेसरि १ भाग धर्णो १ भाग तज १ भाग पत्रज १ भाग मिरचि १ भाग अजवायण १ भाग पीपलामूल १ भाग नेत्रवालो १ भाग इलायची १ भाग. यांसारानैंमिहीवांटिंग ऊकीछाछिमैं टंकर्लेतौसंग्रहणीनैं अतिसारनैं गोलानैं यांसारानैं योकपिथ्याष्टक चूर्णदूरिकरै छे. अथसंग्रहणी रोगवालो इतनीवस्त षायनहीं सोलि० भारीवस्त आंवनहीं करै इसीवस्त भूषबंधकरै इसीवस्त और अतिसारमें वरजीछे वस्त सो नहींकरै अर ज्याव स्तांसूं भूषवधैसो षायतौ संग्रहणीजाय. ५ इति संग्रहणीरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्

अथबवासीररोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० प्रथमबवासीरकीउ त्पत्तिलिष्यते मनुष्यकै गुदाहैसो संषकीमाहिली नाभिकीतरह आं टा चारिआंगुलीका तीनआंटाछे. येक ऊपरलो आंटो १ येकवीचर लो आंटो येक वंकै नीचलोआंटो ३ ऊपरला आंटाकानाम प्रवा हिनी. सोतो मलपवनउगेरैवारैकाढैवीचरलो आंटो मलपवन उ नैंछुटायदे सारो तीसरो नीचरलो आंटो बांछोड्यां पछैगुदानैं ज्यूंकीज्यूं ढाकिदे यांतीन्यां आंटामैं बवासीर पैदाहोयछे. योबवा सीरको स्थानछे. पहला आंटामें बवासीर होयसो तो साध्य वीच रलामें होयसोकष्टसाध्य अरमाहिलामैं होयसो असाध्यछे सोव

न. टी. संग्रहणीरोगनैंपथ्यलि० मूंग. मसूर. तूर. गाय. छाछीसोंदूध. निमाडली मछा की जुलाबपल. माषन. दहीं. छाछ. भफीम इ० कुपथ्यलि० रक्तश्राव. जागरण. मैथुन नस्य. अंजन. गहूं. पीणा. मोठ. बाजरी. पवडा. औरकुपथ्यभीम इत्यादि.

हीयोदूषे. भूष लागैनहीं षासस्वास अग्निमंद कर्णमें शब्द अमये भीहोय गोलोफियो उदरको रोगये जींमें लक्षण होय तादि वायकी ववासीर जाणिजे अथ वायकी ववासीरको जतनलि० जमींकंदनें माटीसूं लपेटि भाडमें पूव भडीतोकरि तेलसूं अथवा घृतसूं लपेटी टकायेक भारि रोजीनादिन २१ पायतो वायकी ववासीर मुकरदू रिहोय यो भावप्रकासमें छे.

अथवा आककानवापानामें पांचूलूण अनुमानमाफिकलगाय तेल अरषटाई ओरलगाय वांपानानें दग्धकरी वांकीरापकरि पाछे वाराप टंक सवा १। तथा टंक २॥ गरमपाणीसूं दिन १५देतो वायकीववासीरजाय २ ये वैद्यविनोदमेंलिष्याछे अथवा गऊकी छाछिमेंसींधोलूण अनुमानमाफिकघालि ईछाछिकोआछीतरेसूं घणा दिनताईं सेवनकरे तोवायकी ववासीरजाय अरसरीरघणोजाडोरहे योभावप्रकासमेंलिष्याछे ३ अथवाहरडेकीछालिटंक ५ भर काली मिरची टंक १ भरपीपलामूल टंक १ भरपीपली टका १ भर जीरोटका १ भर चव्यटका १ भर चित्रकटका १ भर सूंठिटका १ भर सोध्याभिलावाटका १ भरपकायो जमींकंद ऽ। जवषार टका १ भर पाछेयांसारानेंमिहीवांटि यांसारासूं दूणोगुडले पाछेयांमेंमिलाय गोलीटका१भरकीवांधे गोली१रोजीनापायतोवायकी ववासीर निश्चैजाययो कांकायनमुनि गुड कह्योछे ४ अथवावनालकापानने ओटायतीका पाणीसूं सोंचलेतो ववासीरकामस्सा दूरिहोय अथवा वनालकाडोडाकी धूणीदेतो ववासीरकामस्सा दूरिहोय ५ अथवा वनालकाडोडा कांजीमेंपीसि ववासीरको लेप करे तोमस्सादूरिहोय ६ अथवा नींवकापान अरकनीरकापानगुडकडवीतुंबीकी जडयांनें

न. टी. संग्रहणीरोगकेंपाछे ववासीरकोरोग. अनुक्रमसूं कह्योछै. जीकायतनमेंभीअनुक्रमसों लिष्याछे योईक मनुष्यरायांकोसहायतागोईकामथाराछै. परंतु जोगौषधिकोउपभारकों मुख्यमुपदार्इछे. अरदूजाउपायकातों फोयदोपछे.

कांजीकापाणीमेंवांटिमस्साकों लेपकरेतोमस्सा दूरिहोय ७ अथवा
हलद कडवी तुरइकी जड आककापान सहजणाकीजड यांनेंकां
जीका पाणीसूं मिहीपिसि ईनें मस्साके लेप करे तोमस्साझडिपडे८
अथवा अरंडकीजड महलोटी रास्ना अजवायण महुवो यांनेंकांजी
मेंवांटि गरमकरि लेपकरे अथवा ईसूं सेककरे मस्साकेतो मस्सा
कीचिमचिमीजाय अरमस्साझडिपडे ९ येजतन वैद्यरहस्य वैद्यवि
नोदमेंछे अथवा हीराकसीस सींधोलूण पीपलि सूंटि कूठ कलहारी
जडीकीजड पाषाणभेद कनेरकीजड वायविडंग दांत्युणीचित्रकहर
तालचोप यांनेंबराबारिलेयांनेंवांटियांसूंतिगुणों तेलले अरथोहरिको
अर आकको दूध अर गोमूत येतीन्यूं ओषधयांसूं अर तेलसूं चो
गुणो ले अरयांनेंसामिलकरिपचावे अरवेबलिजाय अर तेलआय
रहे तदितेलउतारिले पाछे ईतेलको मस्साके मर्दन करेतो मस्सा
दूरिहोय ववासीरजाय आंवली दूपेनही यो क्षारतैल वैद्यरहस्यमें
लिष्योछे १० अथवा पकायो जमीकंद भाग १६ चित्रक भाग ८
सूंठि भाग ८ कालीमिरचि भाग ४ त्रिफला भाग २ पीपलामूल
भाग ८ सोध्याभिलावा भाग८इलायची भाग ४ वायविडंग भाग
८ सतावरी भाग ८ वधायरो भाग १६ भांगि भाग ८ पाछेयांसा
रांनेंमिहीवांटि पाछे यासारां ओषधयांसूं दूणोगुडले तींकी टंक ५
प्रमाणगोलीबांधे पाछेगोली १ रोजीना महिनाएकलाईपावतो व
वासीरनें हिचकीनें सासनें राजरोगनें प्रमेहनें यासारा रोगांनें यह
महत सूरणमोदक छे सो दूरिकरछे ११ यो वैद्यरहस्यमेंछे अथवा
पित्तका ववासीरका लक्षणलिष्यते मस्सा कालानीला मोटा होय
अर लालपीला सुपेदाईलीयां मस्साहोय अर यां मस्सामें निर्हाथा

न. टी. मृतस्वाविनाश रसांजन, दारु, [illegible]. [illegible]. [illegible], दूध, [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible] [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible].

रलिया गरम गरम लोहिजाय अरवहीकोमलमस्साहोय अर जोक सरीसामूंढाहोय अरसरीरमैंदाहहोय अरज्वरभीरहै अरपसे वआवै अर घणीतिसहोय मूर्छाहोय अप्रीतिहोय अरवोकोमलनी लेपीलेलालहोय अर त्वचा नषनेत्रजांकापीलाहोय येजींमैंलक्षण होय तीकैपित्तकी ववासीर जाणिजै.

अथ लोहीका ववासीरको लक्षणलि० गुदाकामस्साचिरमीकारं ग सिरकाहोय अर वांमस्सामैं लोहीकीधार गरमघणी वहोत पडै अर वेंकोमलगाढो दोहरो उतरै अर लोहीकाघणां जावासूं वेंकोस रीरमींडकाका वर्णसीरको होय अरवेंको वलवर्ण उत्साह पराक्रम येसाराही जातारहै सरीर लूषोहो जाय गुदाकोपवन आछीतरैंच लैनही अर मस्सामैं लोहीजातांझागहोय आवै अर कंठमें जांघा में गुदामैं पीडाहोयआवै अरसरीरदुवलोहोय तौ लोहीकीववासीर मैं वायकोभी मिलापजाणिजै अरवेंकोमल सुपेद चीकणो भारी ठंडोहोय अर मस्साका लोहीकीधारजाडीतातीनेंलीयां होय अर जींकी गुदाकै कफसो लाग्योही करैतौ ववासीरमें कफका संवंधनें लीयां लोहीकाजाणिजे अथ ववासीरकोलोही जावैजींका थंभिवा की ओषधि लिष्यते वडवोरकापान पईसा १ भरसूका आंवलाप ईसा ४ भर पाछैगायको मापन पाव ।- लेतीनें लोहकीकडाहीमें पुवतपावै ओघृत पूत तपिजाय तांदियां दोन्या वस्तानैंई घृतमैंना : पाछै येतीन्यूहीमिलिजाय तव उतारि ठंडोकरि धातकावासणामैं घालणी पाछै यांसारानें परलमें धालि मिहीवांटि यांको येकजीव क रणोपाछै ववासीरवाला रोगीनें मासा ४ दिन २१ प्रभातदे पाछै पाणीका कुरलाकरै कुरलाकोपाणी पीवै नहीं अर गरमवस्त वाजरी

न. टी. ववासीरमैंकुपथ्यलि० नवारती जीनम. वाजरी. पाटी. गुवारफली. दही. उड़द. खाल्यौलो. पापाभोज. जागरण. श्रीरा गजजीकावासामान्दावे पानन. पर्वातराड़ी. मीठोभोजन. पीर. लाद्दूलिकाफूटीनेंगलीरय मेलईमेंरावारीसपाणी इ०

करेलाप्रतकालीपेडा अथाणुंवेंगण केर उडद उगेरेंपायनहीं तोबवा
सीरको लोही थंवे १ अथबवासीरका लोही थंविवाको दूसरो ज
जतनलि०नींबोलीकीमींगी अर येलियो ये दोन्यू बराबरिले त्यांने
एरलमें पाणीसूं मिहीवांटि रती १ प्रमाण गोली बांधेगोली१ येक
रसोतका पाणीसूं प्रभातरोजीना दिन ११ लेतो बवासीरको लोही
निश्चेथंवे २ अथ बवासीरका मस्सा दूरिहोवाको ओपदिलि० रसो
तचिणियां कपूर नींबोलीकीमींगी यांतीन्याने पाणीसूं मिहिवांटि ब
वासीरका मस्साकै लेपकरे तो मस्सा मुरदार होय पाछेनीलाथुथा
कोलेप करेतोबवासीरका मस्सा दूरिहोय ३ अथ पित्तकीबवासीर
अर लोहीकी बवासीर यां दोन्यां बवासीरको जतन ये कहीछे सोलि
ष्यते रसोतनेंमिहीवांटि टंक २ पाणीमेंघडी ४ भेइपाछे वेपाणीनें
छांणि ईतोल महिना २ लेतोपित्तकी अर लोहीकी बवासीर मुकर
जाय४अथवा पीपलीकोलाप हलद महलोठी मजीठकमलगटाकी
मींजीयेबराबरिले यांनेमिही वांटिरोजीना टंक २ दिन ४९ लेतोये
दोन्यूं बवासीर जाय ५ अथवा नागकेसरि मापन मिश्रीये टंक ५
रोजीनादिन ४९ लेतोयेदोन्यूबवासीरजाय ६ अथवा कूडाकीछाल
टका १०० भर तीनें वांटि १६ सेरपाणीमें ओटावेपाछे वेकोआठ
वोंहिसोरहे तदि वेनें उतारिरस छांणिले पाछे वेरसमें नागरमोथो
टका १ भरसूंठि टका १ भर कालीमिरचिटका १ भर पीपलिटका
१ त्रिफलाटका ३ भर रसोत टका २ भर चित्रकटका २ भर इं
द्रजव टका १ भर वचटका १ भर पाछेयांकोमिही चूर्णकरि गुडकी
चासणीमें मिलावे वोचूरणअरईमेंसेर १ सहतमिलावे सेर १ गऊ

* [illegible]

काघृत मिलावै पाछै ईनैटका १ भर रोजीना पावतौ येदोन्यूं बवासीर जाय ओर साराही ववासीर ईसूं जावछै अर अमलपित्तनें अतिसारनें पांडुरोगनैंसंग्रहणीनें पीणपणानैं सोजानैं जुदाजुदाअनुपानसूं ईउपरि छाछिका सेवासूं इहकुडाकीछालिको अवलेह ईसा अतनारोगानैंयो दूरिकरैछै अथवाबकायणकाबकाह तथा ७ तथा ८ रोजीना महिना२दोय ताईमिश्रीकेसाथि लेतौ यांदोन्यां प्रकारकी ववासीरजाय ८ अथवा गिलोयसत सोध्योपारो सोध्योगंधकबीजाबोलमोचरस येबराबरिलेपाछैपारागंधककी कजलीकरैपाछै कजलीमैं येऔपादि मिलावैयोबीजाबोलवद्धरसछै सोसहतसूंमासा ३ रोजीना दिन २१ लेतौ येदोन्यूं ववासीरजाय अतिसार प्रमेह स्त्रीकोप्रदर भगंदर येसारा ईसूंजाय ९

अथवा वसंतमालतीरसरती २ पीपली २ तथा ४ सहत मिश्रीका संजोगसूंदिन २५ लेतौयेदोन्यूं ववासीरजाय संग्रहणीजाय १० येजतन वैद्यरहस्यमें लिख्यौछै. अथवा ववासीरकारि बंधकुष्ठहोय आवे अर मस्सा ऊंचाहोय आवे अर मस्सामैपाज आवें अर मस्सामें लोहीकीधारपडै तदि वा मस्साके जोकलगाय लोही कढाय नांपे तदि वा ववासीर जाय. ईसिरपो ओर उपायछैनहीं यो वैद्यरहस्यमेंलिख्योछै. ११ येपित्तकी अर लोहीकीववासीर दोन्यूं छैसोपुनीववासीर जाणिज्यो. अर लोहीकीववासीरवादीको जाणिलीज्यो. अथ कफकीववासीरका लक्षणलि० गुदाका मस्सा जाडाहोय मंदपीडाहोय ऊंचाहोय भारीहोय कफसूं लपट्याहोय वा मेंपुजालि व्रणीहोय आवे अरपुजालि घणीप्यारीलागे अर पेटमें आफरोरहै. गुदामें पाजीवणीआवे अर पास सासभीहोय अर

न. टी. जोफूलसापरसामें रक्तकोजोरयनोहोयतो रक्तआवणोंपरगाहरकारो. पाछैतो और उपचारलेपादिक. यापूर्णीडौरे जतन करे. आपेटमें ओपधिको श्रीपुंखणीर आमरोप. आक्ढांकोरकर्मीरुणौं पडाणौ.

हियोदूपे, अरुचिहोय पीनस होय अरमेह मूत्रकृच्छ्र मथवाय सीतलागे येभीहोय अर अग्निमंदवमन आमवातभी होय अर कफसूं लपेट्यो मलजाय अर गुदाका मस्सामें लोहीजाय नहीं सरीरकोरंग पीलो होय ये जींमें लक्षण होय तींके कफकी ववासीर जाणिजे अथ कफकी ववासीरको जतनलि० आदो टका १ भर तींकोकाढो दिन २१ लेतो कफकी ववासीर जाय १ अथवा हलदके थोहरका दूधकीपुट ७ दे वे हलदको मस्साके लेप करेतो मस्सादूरिहोय २अथवा त्रिफला दसमूल चित्रक निसोत दाल्युणीं येपांचूशेर १ ले अरपाणी अधोण ॥ लेपाछे ईपाणीमें औषदि कूटिनापेदिन २१ ईमेंराषे अर औषधांकीसाथिपाणिमें गुडसेर ७ पाछे ईनें दारुका जंत्रमें दारु कीसी नाई अरककाढेपाछे ईनेंटंक १ भर रोजीना लेतो कफकी ववासीर जाय ३ योदांत्युणीकोअर्क छे. योरंदमें कह्योछे अथसन्निपातकीववासीरको लक्षणलिख्यते वाय पित्त कफकामिल्या लक्षण छेसोई ईकाजाणिलीज्यो अथसन्निपातका ववासीरकाजतनलिष्यते आदो टका २ भर कालीमिरचि टका १ भर पीपलि पाव भर चव्यटका १ भर नागकेसरि टका ५ पीपलिमुल टका १ चित्रकटका १ इलायची टंक ५ अजमोद टका १ भर जीरो टका १ भर येसारी औषदि मिहीपीसिगुडटका ३० भर तीमें गोलीटंक ५ प्रमाण बांधे पाछे गोली १ प्रात समय पायपाछे भोजनकरपथ्यरहेतो सन्निपातकी ववासीरनें मूत्रकृच्छ्रनें वायका रोगनें विषमज्वरनें पांडुरोगनें गोलानें क्रियानें पासनें स्वासनें वमननें अतिसारनें हिचकीनें या सारां रोगानें जुदा जुदा अनुपानसूं दूरिकरछे जैसें जलमें तेल नाप्यो ल्यापतें[illegible]

फैलि जाय तेसे औषधी अनुपानका वससूं ततकाल गुणकरै या प्राणदा गुटिका छैसोसर्व संग्रहमेंलिषीछे १ अथवा त्रिफलासूंठि कालीमिरचिपीपलि तज पत्रजइलायची वच सेकीहींग पाठ साजी जवपार दारुहलद चव्य कुटकी इंद्रजव सोंफ पांचूलूण पीपला मूल वीलकीगिरि अजमोद येसारी बराबरिले पाछैयांनैं मिहींवांटि गरम पाणीसूंटंक २ रोजीना लेतौ सन्निपातकी बवासीरनैं सास का रोगनैं हिचकीनैं पासनै भगंदरनैं पसवाडाकासूलनैं गोलानैं उदरकारोगानैं प्रमेहनैं पांडुरोगनैं अंत्रवृद्धिनैं संग्रहणीनै विषम ज्वरनैं जीर्णज्वरनैं उन्मादनैं यां सारांरोगानैं जुदा जुदा अनुपान सूं यो विजयानामचूर्ण दूरिकरैछे वो भावप्रकाशमैंलिष्योछे. २ अ थवा सोध्योपारो टका १ भर सोधीगंधक टका २ भर तामेश्वर टका ३ भर सारटका ३ भर सूंठि टका ३ भर कालीमिरचिटका २ भर पीपलि टका २ भर सोध्योसींगीमुहरोटका १ भर दांत्यूणी टका १ भर चित्रक टका २ भर वीलकीगिरीटका २ भर जवपारप इसा ५ भर सुहागोपइसा २ भर सींधोलूणटका ५ भर गोमूत्र टका ३२ भर थोहरकोदूध टका ३२ भर यांसारानैं येकठाकरि क डाहिमें मधुरिआंचसूं पकायपाछे वेकीपींडी होयजाय तदिमा सा २ भरताता पाणीसूंलेतौ असाध्यभी सन्निपातकी ववासीरजा य ३ योह रसकुठार रसछे योजोगतरंगणिमेंलीप्योछेअथशिवजी वणायो लोहसार जींसूंववासीरडगैरे घणारोगजाय छे सोलि० ववासीरको महाअसाध्यरोग जाणिमनुष्यांके अर्थ श्री नारदजी महादेवजीसूं पुछताहुवा सोमलडगैरे लगावासूंगुदाका मस्सा दूरिहोयछे पण वासूं मनुष्य मरिमरिनीठी वचैछे ईवास्तै

न. टी. यांतिमरलोहकीक्रियालिषीछै. परंतु आमलकांतिणाकोइ देनो. आंवागमें पाि शास्त्रिषीछै. जीसांदकावानपैंसूण उपलेपणोलोइ नहीं. देनो. अर जी लोहरागानैं दूप वफणैं नहीं सोहणो क्यारकांयेयतोगमेंवतलैवैछै.

ईविनासुगमही कोई उपायसूं ववासीरजाय इसो जतन वतावो त
दि श्रीमहादेवजी वहुत करुणाकरि नारदजीनें ईसारकी वणाबाकी
क्रियावताई ईतरेका करिवाका सारसूं ववासीरउगेरे वणारोगजा
य सोलिपूंछूं कांतिलोहले अथवा गजवेलिको लोहले तींका पत्र
कराय वानें तेलमें छाछिमें गोमूत्रमें कांजिमें त्रिफलामें वार ७सा
त सात वुझावा ७ देकर प्रथमसोधे पाछे वानेंरेतीसूंरितावत्रांवरा
वरिमैणसिल सोनमपी येदोन्यूले पाछे यां दोन्याकों अर तींलो
हकों सरावामं मेल्हि अग्नि झालका रससूं वादोन्यांनें ओसणि
वेंका अनुमानमाफिक रेत्या लोहके मांहि वा दोन्यांनेंघालि वास
रावानें मूंदिलूहारिकोईलांसूं धोणीसेपूवयवे तदिवेदोन्यूं वलिजाय
वास आवासूं रहे तादि वेनें काढिले ईसीतरे वानें वालिदे वार दसे
क पाछेत्रिफलांकारससूं पारांनें वेंरेत्या लोहमें चरावे लोहको
आठऊ भाग चरावे इही विधिसूंवारचार च्यार भस्म करेपाछे वा
सारनें परलमैमिहीपीसि तदियोहपाणीमें तिरवावालो सारहोजाय
पाछे लोहकासरावामे वेसारकेविसपापराकारसकीपुट १० वेहीवि
धिसूंदेपाछे छीलाकारसकीपुट १० देपाछे थोहरीका दूधकेपुट १०
दे पाछेसाटीकारसकी पुठ १० देपाछेसतावरीकी पुट १० देपाछेगि
लवेकारसकी पुट २० दे पाछे जामुणीकावकलकीपुट ७ देपाछेगु
लरीका वकलकी पुट७दे पाछेगवारकापाटाकी पुट १० देपाछेतींदू
की पुट ७ दे पाछे आवलासारकी पुट २० दे पाछेनींबूकारसकीपुट
२० दे पाछेछिलाका वकलकी पुट १० देपाछेसारको वारआं १२
हिसोहिंगलूदे तीनिकंवारका पाठाकारसमेंमिलायवेकोपुटदेपाछे वें

१ कासीसीविधि. मार्दारी मर्दिवकी जीर्भ त्रिफुंकरीनेल धोरहैनावमें दडीमिर्मर पार्दी भी सांगाई. ज्वीर. सीधी हिंग. मुंहरमदी पारो पुर्ने और मांदमदेन पारद उनवी की मारोगोगकापान उनवानमुं मार्थ मदकीमें गुनराजान्दोदा मदा सीदागा पारेहिन १. नीम अतेदगांगी पार्दी पारो हांवडे. मुसार हांवडे इबै सांगो चाहिये

के घृतकीपुट १० देपाछे सहतकीपुट १० देपुटपुटमैंपरल करतो जाय इसीतरै ईसारनें सिद्धिकरै पाछे ईसारनेंरती १ प्रमाणले स हत पीपलका संजोगसूं अरशिवजीको पूजन करै ईमंत्रसूं ईनेषाय ॐअमृतभक्षयामिस्वाहा अरईकीपरममात्राचढतीवलमाफिकदेती रती २ कीछे प्रभातसमैहीलेईऊपरिपरेटीको काढोले इसीतरैमहि ना ३ ईको सेवनकरैतो ववासीरमात्रदूरिहोय अरवूढापणोंदूरिहोय तरुण होजाय अरईका सेवनमैंमंदाग्निजाय पाससास पांडुरोग या तरक्त मूत्रकृच्छ्रअंत्रवृद्धिनें आदिलेर असाध्यभी रोगजाय अरव लवर्णवहोतवधै पुष्टाईसरीरमै होय आयुवलवधै सर्वरोगमात्रईसूं जाय अर ईकोसेवावालो इतनी वस्तपायनहीं पेठोतेलउडद राई दारुषटाईयेखाय नहींयहविधि वडा आत्रेयमें अरभावप्रकासमै लिप्याछे. ४

अथवावडीहरडेकीछालिटंक २ पुराणो गुडटंक ५ येदोन्यूंमिला यजलसूं रोजीनाले ऊपरसूंगऊकीछाछीकोसेवनकरैतो या ववासीर जाय ५ अथवा आंधाहोलीनीलाफूलकी जडी होयछे सोले परेटी दारु हलद पृष्टपर्णी गोषरू इंद्रजव सालरीकाफूल वडका अंकुर गू लरकाअंकुर पीपलका कोमलपत्र येसारीआपादेदोयदोय टका भ रलै पाछेयानें जोकूटकरिटंक २ कोकाढो करिछाणिले पाछे जीवंती कीजड कुटकी पीपलामूल कालीमिरचि सूंठि देवदारु सतावरी चं दन रसोत कायफल चित्रकमोथो प्रियंगू परेटी सालपर्णी कमलग ट्टाकी मींगी मजीठ कव्याली वीलकीगिरि मोचरस पाठ येसारीआ पधिअधेला अधेला भरलै पाछे यांनेमिहीवांटि सेर ४ चा आंप यांका काढाकोरसले तीमिंगऊको घृतसेर १ घालेपाछे यादोन्यांनें

न. टी. आंधाहोली नाम ऋद्धिछे. ऊंधाहोलीरहैछे. अर मारवाडमें आंधाहुलीकहैछै. जीं काफूल ओंधा होयछे नीचीनहोछे. संसारमेंपाननहोयछै ओंधाफूलाहोय नागनागी का छोटाफूल पानांदेखीको जीमें आंधाहोलीछिछे.

कडाहीमेंघालिओटावेकाढोबलिजाय घृतमात्र आयरहे तदिउतारि छाणि टका २ भर रोजीनापायतो बवासीरजाय ३ अथवा पारोसो ध्योगंधकसोध्यो येबराबरिले यांदोन्यांकी कजली करि पाछेवेकज लीने घृतसूं चोपडे पाछे यांदोन्यांसूं दूणो बीजाबोल कजलीमें घा लि और रगडे टिकडीबांध पाछे वे टिकडीनें लोहका पात्रमें आंच दकरि पतली करि केलीकापानाऊपरि ढाले वेंकीपापडीकरेतदिवें को नामपर्पटीरसहुवो. ईरसको सेवन रती ३ रोजीनादिन १५ क रेतोसन्निपातकी बवासीर जाय ७ योवैद्यविनोदमें लिष्योछेअरगु दाका मस्साविना औरसरीरमें कहीं ठिकाणे मस्साहोयतीनें चर्म कोसकहजेछे तीनेअग्निकरिके अरपारांकरिकेदूरिकीजे और मस्सा को जतनलि० पाबाकोचूनो साजी सुहागो नीलोथूथोयानें बराबरि ले पाछेनींबूकारसमें दिन ३ भेवेपाछेमस्साकेलगावेतोमस्सा मुकर दूरिहोय ८ अथवा सीसाकीगोलीनेंगऊका घृतमेंघासि बवासीरका मस्साके दिन १० लगावेतो बवासीरदबिजाय ९ अथवा विष्णु क्रांताजडीटंक २ कालीमिरचिं टंक २ भांगमासा आध रोजीना घोटपीवेतो बवासीर दबिरहे १० अथ बवासीरका असाध्यलक्षण लि०जींबवासीरमें सोजो अतिसार वमन अंगमेंपीडातिस ज्वर अ रुचि अग्निमंद गुदाकोपकिवोहियामेंसूलये लक्षणजींबवासीरवालो केहोयसो निश्चेमरे अर बवासीरवालो इतनीवस्तकरेनहीं मलमूत्र ने रोकेनहीं स्त्रीसंगघणो करेनहीं घोडाऊपरे चढेनहीं ऊकडूबेठन हीं फेरकरेला बाजराडगेरेगरम वस्तपायनहीं इतिबवासीरकीउत्प त्तिलक्षण जतन संपूर्णमइतिश्रीमन्माहाराजाधिराज राजराजेंद्रश्री सवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे अतिसार संग्र

म. टी. भगंदर संबंधी बवासीरपैकीच रोगछे [illegible] [illegible] वाटे. [illegible] बवासीरवालाने कुपथ्य करे देखा.

हणी ववासीरकीउत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम तृतीयस्तरंगः समाप्तः ३

अथअजीर्णरोगकी उत्पत्तिलिख्यते प्रथम मनुष्यांके जठराग्नि हैसोचारिप्रकारकीहे येकतो मंदाग्नि १ येक अतितीक्ष्णाग्नि २ येक विपमाग्नि ३ येक समाग्नि ४ जांपुरुषके कफकीप्रकृतिहोयतोंकेमंद अग्निहोय १ जींकी पित्तकी प्रकृतिहोय तींके अतितीक्ष्णाग्निहोय २ जींकीवायकीप्रकृति होय तींकीविपमअग्निहोय ३ जींके वायपित्त कफकी मिलीप्रकृति होयतींके समाग्निहोय ४

अथ मंदाग्निकोलक्षणलि० मंदाग्निवालाके थोडोसो हितकारीभी पायोथको भोजन आछीतरैपचैनहीं अरवेंकोसिरउदरभार्यो रहवो करेअरवेंकाअंगामेंफूटणीरहवोकरे १ अथतीक्ष्णाग्निकोलक्षणलि० घणासूं घणोभोजनकर्योजींको आछीतरहपचिजाय योअग्निआ छ्यो २ अथविपमाग्निकोलक्षणलि० कदेतोभोजनआछीतरहपचेक देभोजन आछीतरहपचैनहीं अरआफरोहोयआवे पेटमेंसूलचाले उदरभार्योरहे अतिसारहोय आवे अरपेट बोलिवोकरे येलक्षण होयतोविसमाग्निजाणिजे ३ अथ समाग्निकोलक्षणलि० जींकेसमा ग्निहोय तींकेप्रमाण भोजनकर्योआछीतरहपचे घणोपायो अजी र्णमेंभीपचे भार्योअन्नभीपचे येसमाग्नितान्यूंअग्निसूंश्रेष्ठछे ईअग्नि सूं कहींतरेकोविकारहोयनहीं अरभूपलागोछे तोनें कहींकारणसूं कैतोभी तत्काल रोगनेंउपजावेनहीं. अरतीक्ष्णअग्निहेसो भूपनें वंधकरि तत्कालपित्तकारोगनेंउपजावेछे. ईवास्तेसमाग्निश्रेष्ठछे ४ अर मंदाग्निसूंतो कफका आजारहोयछे तीक्ष्ण अग्निसूं पित्तकारो गहोयछे. विपमाग्निसूं वायकारोगहोयछे समाग्निसूं कोईभीरोगहो

न. टी. [illegible]

यनहीं अथभस्मकरोगकी उत्पत्तिलक्षणजतनलि० तीपीवस्तनेंश्रा
दिलेर लूपोअन्नजोपायतींकेकफ वटे अरवायपित्त वधे तदिपित्तहे
सोपवनसूं प्रेखोथको भस्मकअग्निनें रोगरूप पेदाकरे तदिजोपाय
सो एकस्यायतमें भस्महोयजाय ईनें भस्मक रोग कहिजे योतिस
दाह मूर्छानें प्रगटकरि भोजन कस्यानें पाय सारी धातानेंपाय जा
यछे योमारीनापेंछे ५ अथ अजीर्णरोगकी उत्पत्ति लिष्यते घणो
पाणीपीवे विपमासनसूं भोजनकरे मलमूत्रका वेगनेंरोके दिनमें
सोवे रातिने सोवैनहीं इसा पुरुषके पथ्यभोजनभी आच्छी तरह प
चैनहीं अथवा इतनी वस्तसूं मनुष्यके आच्छीतरह अन्नपचैनहीं
जींकै अष्टप्रहर इर्षारहवोकरे भयरहवोकरे क्रोधरहवोकरे लोभरह
वोकरे कोईक रोगरहवोकरे दीनता रहवोकरे आछ्योमनमाफिक
भोजन मिलैनहीं तींपुरसके भोजन आछीतरहपचैनहीं अथ अजी
र्णको सामान्य लक्षण लिष्यते मनमें ग्लानिरहे सरीर भारीरहे
उदरमें आफरो रहे भ्रमरहे गुदाकोपवन आच्छीतरह चलैनहींवंध
कुष्ठ होय आवे अथवा वारंवार पतला मलकी प्रवृत्तिहोय येजींमें
लक्षणहोय तदि जाणिजे मनुष्यांकै अजीर्णछे १ अथ अजीर्णकोभे
दलिष्यते अजीर्ण ६ प्रकारकोछे येकतो आमकहिजे मीठाकाचोही
भोजनगुदाद्वाराजाय अरजींकै कफकीप्रकृतिकरि मंदाग्निहोय जींकै
१ अर दूसरो विदग्ध कये केवल पटाई नेलीयां मलगुदाद्वारा
जाय जींकै पितकी प्रकृतिकरि तीक्ष्ण अग्निहोय जींकै २ अर ती
सरोविष्टब्ध अन्नहेसो कुषिमेंहीरहै पचैनहीं आफरो पेटमेंकरे अर
सूलकरे अर काचोही अन्नगुदद्वाराजाय जींकै वायकीप्रकृति करि

* [illegible]

विषमाग्निहोय जींके ३ अर चोथोरसभोजनकर्‌यो आछीतरह प चैनहीं मल पतलोहोजाय ४ अर पांचऊ अजीर्णदिनको वेक राति दिनमें पचैनही दूसरेदिन भूष लागेयो आछयो निरदोष ५ अर छटो अजीर्ण सुतेसिद्धि सदाही रहै वेनेंप्रतिवासरकहिजे वावां पसवाडांका सोवासूं गरमपाणी पिवासूं मिहनत करवासूं हरडेका पावासूं योजाय ६

अथ आमाजीर्णको लक्षण लिप्यते सरीर भार्‌योहोय वमनकी इच्छारहै जीसोभोजन कर्‌यो होयउसीहीडकार आवे कच्चोही मल जाय १ अथ दग्धाजीर्णको लक्षण लिप्यते भ्रमहोय तिसहोय गरमीका नानाप्रकारकारोगहोय धुवानेलीया पाटीडकार आवे दाह अर पसेवहोय २ अथ विष्टब्धअजीर्णकोलक्षणलिप्यते पेटमेंसूल होय आफरोहोय वायकी नानाप्रकारकी पीडाहोय अरमल अधोवाय रुकिजाय शरीर जकडबंधहोय ३ अथरससेष अजीर्णको लक्षणलिप्यते अन्नमें अरुचिहोय हियोदूषे सरीर भार्‌योहोय ४ अथ अजीर्णकाउपद्रव लिप्यते मूर्छा होय प्रलापहोय वमन होय अंगमें पीडाहोय भ्रमहोय अजीर्णमें उपद्रवहोय तो ओमरिजाय ५ मूर्षआदमीअजीर्णमेंपशुकिसीनाई भोजन करे वे आदमीके अनेक रोग होयछै स्वल्प आंवछैसो दोसासूं बंध होय ओअग्निका मारगनें रोकै नहीं तदि अजीर्णमेंभी भूपलागे वेकाचीभूषमें जोषा यसो पुरषमरिजाय अथ विसूचिकाकोलक्षणलि० पुरषके मंदाग्निसूं प्रथम आमाजीर्णहोय पछैवेमें मूर्षपणासूं पशूकीसीनाई घणीं गरिष्ट वस्तुखाय तदि वेंकेविसूचिकाहोय जींके मूर्छा होय अतिसार अर वमनभीहोय अर तिसभीहोय पेटमें अथवा ओठेभी सूल

न. टी. ओउपद्रव अजीर्णरोगकाछै. जीर्णे होजाबीछै का उपद्रवांसी लिख्याछै पारन्तो रोगदिसणांतो साध्यछै. अर उपद्रवां दिखे तो रोगीमरजावछै; अर विसूचिकारोग की पारन्त्रमुनिछै जीको महारोगकहाजावछै.

होय भ्रमहोय पींडी फूटे जंभाईआवे दाहहोय सरीरकोवर्ण औरसो होय जाय कांपणी होयहियो माथो घणोदूपे सारासरीरमें सूईका साचभका होय येजीमें लक्षण होय तींनेंविसूचिका कहिजे लोकीक में ईनें वासीकहेछे. येईका उपद्रवछे नींद आवेनहीं सर्वत्र अप्री तिहोय सरीर कांपे. मूत्ररुकीजाय संज्ञाजातीरहे ये उपद्रव होइतो ओमरीजाय१ अथ अलसको लक्षण लिष्यते पुरुषके विष्टब्धवाय का अजीर्णमूं ये लक्षण होय पेटमें आफरोहोय आंत बोले पवनफि रिवासूं रुकिजाय कूषिमें फिरेमलमूत्र गुदाकोपवन येरुकिजाय ति सघणीलागे डकार घणीआवे येजीमें ये लक्षणहोय तदिअलस जा णिजे २ अथविलंबिकाको लक्षण लिष्यते जोभोजनकरयोहोय सो पचेनहीं ऊपरनीचे जाय नहींवेनेंविलंबिकाकहिजे अर यांतिन्यां हींमेंयेलक्षण होयसो मरिजाय दांतजींकाकालाहोय होष्ट नपभी काला होय संग्या जातीरहे छादणी लागिजाय नेत्रमाहिं घुसिजाय स्वरघांघो होय जाय सरीरकी संग्या सिथलहो जाय जींमें येलक्ष ण होय तो ओ मरिजाय अथ अजीर्णदूरिहुवो होय तींका लक्षण लिष्यते डकार शुद्ध आवे सरीरमें उत्साह होय मल मूत्र पवनकी आछीतरे प्रवर्ति होय सरीर हलको होय भूषतिस आछी तरेंला गे तदि जाणिजे अजीर्ण दूरिहुवो १ अथ मंदाग्निनें आदिलेर अ जीर्णविषूचिकाकाजतनलिष्यते हरडेकी छालि सूंठि यांनें मिही वांटि टंक२ गुड टंक१० पे. साथि जलमूं रोजीनालेतो आमाजीर्ण दूरि होय अर भूषवधे१अथवा हरडेकी छालि सींधोलूण ईको से वन रोजीना करेतो अजीर्ण जाय भूषवधे २ अथवा सींधोलूण सूं ठि कालीमिरचि येबराबरिले यांनें मिहीवांटिटंक२ गऊकीछाछिके

न. टी. अजीर्णमें मदनफल अर हरडमूल पावछे. यांमें आमाजीर्ण नहीं दूरहोय तो अरफलका आमाजीर्णविसूचिका होयजाय सो मदनफलादिक सामें दीपन, मंदा, पाचन, मद्र. दिर. हे सोदरून मारे याउदे त्रिकुटादयोंमें मेला. आगम होय

साथि दिन१५ लेतो भूपवधे मंदाग्निजाय पांडुरोग जाय श्वासीर जाय ३ अथवा आमाजीर्ण होयतो पंचलवणका सेवनसूंजाय वि दग्धाजीर्ण होयतो लंघनसूं जाय विष्टब्धाजीर्ण होयतो सेकसूं जाय रससोस होयतो सेकवासूं जाय ४ अथवा सूंठि कालिमिरची पीपलि अजमोद सींधोलूण दोन्युजीरासेकीहींग येबराबरिले त्यां को चूर्ण टंक १ तथा २ पीचडीकेसाथि घृतसूंमिलाय प्रथम ग्रास के साथि रोजीना पायतो अजीर्ण कदेभी होयनहीं अर भूपवधे गोलो फीयोदूरिहोय यो हींगाष्टकछे ५

अथवा जवषार साजी चित्रक पांचूलूण इलायची पत्रज भाडंगी सेकीहिंग पोकरमूलकचूर निसोत नागरमोथोइंद्रजव डांसरचा अ मलवेदजीरो आंवला हरडेकी छालि पीपलि अजवायण तिलांको पारसहजणाकोषार छीलाकोषार येसारीओषदिबराबरिले त्यांनेनि हीबांटिछांणितीके विजोराकारसकीपुट ८देसिध्दिकरिलेपाछेईचूर्ण नेटंक २ रोजीनांजलकेसाथिलेतोभूपघणीलागै. अर अजीर्णने गो लाने उदरनें अंत्रवृध्दिनेवातरक्तनें यांसारारोगानें योअग्निमुषचूर्ण दूरिकरैछे ६अथवा थोहरआकचित्रक अरंडकोपार साटीतिल आं धीझाडो केली छिलो डांसरचां यासारांकापारकाढै पाछेयांका जुदा जुदा पारले अर अजवायण अजमोद जीरोसूंठि कालीमिरची पी पलिसेकीहींग येसारा बराबरिलेयांनेंमिहीबांटि इके आदाकारसकी पुट ५ दे योवैश्वानरचूर्ण तयारकरै पाछेईनेटंक १ सीतलजलसूंले प्रातसमेंतो अजीर्णकदे रहैनहीं अरइंसूं भूपघणीवधे अर जुदा जुदा अनुपानसूं यो अनेक रोगने दूरिकरैछे ७ अथवा सांभरो लूणपईसा ४ भर संचरलूण पईसा २ भर वायविडंगटंक ५ सींधो

न. टी. अजीर्णमी जो विशूचिका होयछेतिकै मारवाडमिछै. विशुचि आमवार जाय न दूररंयरा करणो. उन्हीं हीवाराछै जो महानुभाव होयछै. औंभी प्रथम पनी मरोतो फायदोछै रांगी अगाध्य नहीं होय अर नेजभी षोलदीं.

पारकीपुट ७ देपाछे ईनै तयार करिले पाछैईक्रव्यादरसनें निपट जाबतासूं आछयापात्रमें धरिराषे पाछैईक्रव्यादरसनेंमासा २ ले ईऊपरसींघोलूणमिलायगऊकीछाछिमेंपीवैतोअजीर्णमात्रततकाल ईसूंदूरिहोयछे अरघणोभोगरिष्ट भोजनकयोईसूं तत्कालपचिजाय अरयोरस सूलनेंगोलानें आफरानेंफियानेंउदरकारोगनें योदूरिक रेंछे१०इतिक्रव्यादरस अथवा जवषार साजी सुहागोपारो सोध्योगं धक पीपलि पीपलामूल चव्यचित्रक सूंठिये सारी बराबरिलेयांसवं की बराबरिसेकी भांगिले अर भागिसूंआधी सहजणाकी जडलेप्र थम पारागंधककी कजलीकरैपाछे कजलीमे वेसारी ओषधि मि लावें पूबमिहीवांटपाछेयांनें भांगकारसमें दिन १ परलकरैपाछेयां नेंसहजणाकी जडकारसमेंदिन१परलकरैपाछेचित्रककारसमेंदिन१ परलकरे तावेंडसुकावतोजाय पाछेईनें सरावामें मेल्हिकपडमिटी दरफुकिदेपाछे ईनें काडिदिन ७ आदाकारसमें परलकरे योज्वा लानल रसतयारकरैपाछे ईरसनें रती १ तथा२सहतसूंले ऊपरिसूं गुडको क्राथलेतो तत्काल अजीर्णमात्रनें अतिसारनें संग्रहणीनें कफका रोगनें वमननें अरुचिनें इतना रोगांनें योदूरिकरैछे अर यो भूष घणीवधावेंछे १० यो ज्वालानलरसछे ये साराभावप्रकाश मेंलिष्याछे.११

अथवा सोध्योगंधक कालीमिरचि चूक संचरलूण यांनेंबराब रिले यांनें मिहीवांटि मिलाय टंक १ पाणीसूं लेतोवंधकुष्टदूरिहोय १२ अथवा पारो टंक ५ सोध्योगंधक टंक ५ सोध्योसींगीमोहरो टंक५कालीमिरचि टंक १० जायफलटंक २ प्रथम पारागंधककी कजलीकरैपाछे वेकजलीमें येमिलावेंपाछेयांनें डांसरयांकारसमेंदिन

न. टी. अजीर्णमां अभिमाद दे रोग औषधीथी भावनमां गुरसिद्ध रांधडे. आमां रोगापर रसादि लिप्याछे वैद्यपणांक किवानो. वरण जेवी स्वाभाव रमते जीवे अने औषधीकोइए देवी. शरीरनो जीवनो करी देवो.

५ परलकरैपाछैईरसनैं रती १ रोजीनादिन ७ लेतोभूषघणीवधै अजीर्ण तत्कालमिटे योरामवाणरसछे १३ अथवा सोध्योपारो सोध्योगंधक अजमोद त्रिफला साजी जवषार चित्रक सींधोलूणजीरो संचरलूण वायविडंग सांभरोलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि येसारी बराबरिले अर यासांराकी बराबरि बकायणका बकाले प्रथम पारा गंधककीकजली करे पाछे कजलीमें येमिलावे पाछे जंबीरीकारसमें दिन ७ परल करे पाछेरती १ प्रमाण गोलीकरे पाछेगोली १ रोजीना पायतो भूष घणीवधे ईऊपरि हरडेकीछालि सूंठि गुड याको काढोलेतो सर्वरोगमात्रनैंदूरिकरैछे. याअग्नितुंडावतीगोलीछे १४ अथवा सूंठि १ भाग कालीमिरचि २ भाग पीपलि३ भागसींधोलूण ४ भाग पाछे यांसारानैं मिहीवांटि पाछेयांनैं निंबूकारसमें दिन १० परलकरैपाछेरति १ प्रमाण गोली बांधे गोली १ रोजीनापायतो भूषघणीवधेयोक्षुद्रबोधरसछे १५ अथवा बिडलूण संचरलूण अजवायण दोन्यूंजीरा हरडेकीछालि सूंठि कालीमिरचि पीपलि चित्रक अनलवेद अजमोद धणों डासयों यानैं बराबरिलेपाछे यांको मिही चूर्णकरि टंक २ रोजीना लेतो पथरभीपचिजाय तोभोजनको कांई कहणो१६अथवा सोधींगंधककालीमिरचि पीपलि सूंठि सींधोलूण जवषार लवंग येसारी बराबरिले त्यांनैंमिहीवांटि नींबूकारसमें दिन १० परलकर पाछेरती १ प्रमाण गोलीबांधै पाछेगोली १ रोजीनापायतो भूष घणीवधे. १७ अथवा हरडेकीछालि भाग ६ पीपलि भाग ४ चित्रक २ भाग सिंधोलूण भाग २ यांकोमिही चूर्णकरिटंक २ जलकेसाथिलेतो अजीर्णजाय भूपलागै.१८ अथवा सेक्यो सुहागो टंक २ पीपलि टंक२ सोध्योसींगोमुहरो टंक २

म. टी. दागया नाम चोवधि [illegible] देग मानावें दाघरचा नाम करैछे. [illegible] ठोकनेदीक करैछे. परंतु [illegible] होयछे, [illegible]. [illegible] होयछे. [illegible] [illegible] होयछे [illegible].

हिंगलू टंक २ कालीमिरची टंक २ यांनेंमिहीवांटि नींबूकारसमें दि न १० परलकरै पाछेमटर प्रमाण गोली बांधें गोली १ तथा २ जल सूंलेतौ ततकाल अजीर्ण अर विषूचिका दूरिहोय. यो अजीर्ण कंटकरसछे १९

अथवा सोध्योसींगीमुहरो टंक २ सेक्योसुहागो टंक २ मिरचि टंक २ सींधोलूण टंक २ यांने मिहीवांटि पाछे यामें आदाको रस सेर १ सुसायदे अर दहीनें बांधि वेको जल सेर १ ईमेंसुसायदे अरनींबूको रससेर १ ईमेंसुसावे पाछे ईकींगोलीरती २ प्रमाणबां धे गोलि १ रोजिना जलसूं लेतौ अजीर्ण ततकाल दूरिहोय अरई को सेवन करैतौ आफराको रोग उदरको रोग गोलोसूल ये सारा जाय अरभूपवधें यो क्रव्यादिरसछे २० अथवादालचिनींटंक १० इलायची टंक १० लवंगटंक १५ सेक्यो सुहागोटंक १० चित्रकटं क १० कालीमिरचि टंक ५ सिंधोलूण पईसा ३ भर यांनेंमिहींयां टंक १ गरमपाणीसूं लेतौ ततकाल अजीर्णजाय योभी क्रव्यादि चूर्णछे २१ येसाराजतन वैद्यरहस्यमेंलिष्याछे. अथवा सूंठिकालीमि रची पींपलित्रिफला पाचूंलूण सेक्यो सुहागो जवषार साजीषार सोधीगंधक सोध्योसींगीमुहरो येसर्व बराबरिले पाछे पारागंधककी कज्जलीकरैपाछेकजलीमेंयेमिलावैपाछे आदाकारसकीपूट ७ देपाछे रती १ प्रमाणकीगोलीबांधेगोली १ तथा २ लवंगका क्वाथकेसाथिलेतौ अजीर्णतत्कालजाय भूपवधे यो क्षुधासागररसछे २२ अथवा बडी हरडे १०० लेत्यांनेंगऊकीछाछिमेंऔटावैपाछेवांकीगुठलीकाढीनांषे पाछे वाहरडेमें ये औषदिभरणोलियूं सूंठि कालीमिरचि पीपलि चव्य चित्रक दालचिनीपांचूलूणसेकीहींगजवषारसाजी दोन्यूंजीरा

१ टी. अमृतसागरमें हरडेमें ठीकउसी हींग. सांभ लिखाहुआ ऐसा हींग भर सुहागा तीनों विनासेका नहीं चाहिये और मेरापेटमा वमात मणा चाहिये जाणो चाहिये हरडेकेमाहीं गऊकी छाछमें गूठली सूठी सुगती रहे.

अजमोद निसोत येसर्वबराबरिलेपाछेयांनें मिहींवांटियांके नींबूका रसकीपुट १० देअर यांबराबरियांमैंचूकोमिलायवाहरडेमेंभरेंपाछेयां नें तावडेसुकायलेपाछे हरडे १ रोजीना पायतो भूप घणीवधे अजी र्णयेक हरडेसूंजायअरमंदाग्निनेंउदरका रोगांनें गोलानेंसूलनेंसंग्रह णीनें वंधकुष्टनें आफरानें आमवातनें यांसारांनें याहरडे दूरिकरेंछे २३ या अमृतहरीतकीछे अथवा कालीमिरचीटंक ७ अजवायणट का २ भर चित्रकटका२ भर पीपलिटंक ७ संचरलूण टंक २ सांभ रोलूणटंक २ सींधोलूणटंक २ पारोटंक १ सोध्योगंधकटका १ भर पीपलामूल टका २ भर सूंठिपईसा ५ भर हरडेकीछालिपईसा ५ भर वहेडाकीछालिटंक ५ जीरोटका १ भर चव्यटंक ५ यांसारासूं आधोलवंग प्रथम पारगंधककी कजलीकरें पाछे ये औषदि मिही वांटि कजलीमें मिलावें पाछेयांके आदाका रसकी पुट १० दे अर यां बराबरि यांमें चूकोमिलावें पाछे ईकोगोलीमासा २ प्रमाण करे गोली १ जलसूंपायतो अजीर्ण ततकालजाय अर ईको सेवनक रेतो भूपघणी वधे सर्वरोगमात्र ईसूंदूरिहोय सरीरनेंपुष्टकरें यालवं गामृतगुटिकाछे २४ ये सारावैद्यविनोदमें लिप्याछे. ९अथवा दाल चिनी टंक ५ लवंगटंक १० दोन्यूजीरोटंक १० सूंठिटंक १० का लीमिरचिटंक ५ अजमोदटंक ५ हरडेकीछालिटंक ५ पत्रजटंक ५ डासख्याटंक १० सींधोलूण टंक २० संचरलूण टंक२० निसोतटंक १५ सोनामुपी ।-। पावअनारदाणाअधशेर ।॥- यांसारांनेंमिहीवांटि यांकेनींबूकारसकी पुट १० दे पाछे यांबराबरि यांमें चूकोमिलावें पाछेईनें सुकाय जा घतासूं अमृतवानमें भरिरापे पाछे ईनें टंक २ जलसूं लेतो अजीर्ण ततकालमिटे अर ईकोसेवनकरतो वंधकुष्टनें

९ ऊपरकीऔ[illegible] टके भर १०० लेनी, और [illegible] में [illegible]. [illegible] [illegible] दाणे [illegible]. और [illegible]. और पि [illegible] दास्त [illegible] दोस [illegible] [illegible].

मंदाग्निनें उदरकारोगनें गोलानें कियानें सर्वरोगानें योदूरिकरछे इचूरणको नामराजवल्लभछे २५ अथवाहरडेकीछालि पीपलि संचरलूणयेबराबरिलेयांनेंमिहींवांटि टंक २ गरमपाणीसूंलेतौ आफरानें आदिलेर सर्व अजीर्णजाय २६ अथवा मिनकादापहरडेकीछालिमिश्री यांतीनोंकीगोलीकरै सहतसूं टंक२प्रमाण पाछेगोली १ जलसूंलेतौ अजीर्णजाय२७ येवृंदमें लिष्याछे अथवा जीरो संचरलूण सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण अजमोद सेकीहींग हरडेकीछालि येसारी अधेलाअधेलाभारिलें निसोतटका २भरलेयांकोमिहींचूर्ण करिटंक २ गरमपाणीसूंलेतौ तत्कालअजीर्णजाय अरभूपकरै योजीरकादिचूरणछे जोगतरंगिणीमेलिष्योछे२८अथवा अजमोद हरडेकीछालि चित्रक लवंग दालचिनी सींधोलूण येबराबरिले यांनेंमिहींवांटिटंक २ पाणीसूंलेतौ अजीर्णजाय भूपलागै योअजमोदादिकचूरणछे २९ योसर्वसंग्रहमेंछे अथवासोधीगंधकटंक २ भर चित्रकटका २ भर कालीमिरचिटंक २ पीपलिटंक २ सूंठिटंक ५जवपारटंक २ सींधोलूणटंक १ संचरलूणटंक १ सांभरीलूणटंक १ यांनेंमिहींवांटि नींबूकारसमेंदिन ७ परलकरै पाछेटंक १ भरकी गोलीकरै गोली १ जलसूंलेतौ अजीर्णनें सूलनें आंवकादोसनें गोलानें आफरानेंतत्काल दूरिकरै यागंधकवटीछे३० यासर्वसंग्रहमें लिषिछे. इति अग्निमांद्यअजीर्णकाजतनसंपूर्णम्

अथविसूचिकाकाजतनलिष्यते इकपोत्या लसणकीगुलि जीरो सोध्योगंधक सींधोलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि सेकीहींग येसारी बराबरिलेपाछेयांनें परलमें मिहींवांटि नींबूकारसकी पुट ५० देपाछेइंकी गोली छोटा बोरप्रमाणकीजै गोली १ पाणीसूं देजेतौ

न. टी. जीरकादिचूर्ण [illegible]. [illegible] [illegible]. [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुट ७ देणेसे [illegible] [illegible].

विपूचिकातत्कालजाय अर अजीर्णमिटे भूपलागे ३१ योजीरका दिकछे १ अथवा वायविडंग सूंठि पीपलि हरडेकीछालि आंवला बहेडा वच गिलवे सोध्याभिलावा सोध्योसींगीमूहरो ये सारा बराब रिले पाछेयानें परलमें मिहीवांटि गोमूत्रमेंदिन १ परलकरे पाछेर तीप्रमाण गोलीवांधेपाछे गोली १ आदाकारससूं अजीर्णवालानें देतो अजीर्णजाय गोली २ सूंविपूचिकाजायगोली ३ सूंसांपकोका ट्यो आछोहोयगोली ४ सूंसान्निपातजाय यांसंजीवनीगुटिकाछे २ अथवासेक्योसुहागोटंक ५ पारोटंक ५ सोधीगंधकटंक ५ सोध्यो सींगीमुहरोटंक५पीलीकोडीकीराप टंक ५ साजीटंक २ पीपलीटंक २ सूंठिटंक२कालीमिरचिटंक २ भरप्रथमपारागंधककीकजलीकरे पाछे ये ओपदिमिलवेपाछेजंभीरीकारसमेंदिन ८ परलकरे पाछेर ती १ प्रमाणगोली १ वासीवालानेंदेतोवासी तत्कालआछीहोय यो अग्निकुमाररसछे ३ अथवा आककापानाकोरससेर १ धत्तूरा का पानकोरससेर १ थोहरीकोदूधसेर ऽ१ सहजणाकीजडकोरस सेर १ कूटटका २ भरसींधोलूणटका २ तलसेर १ कांजीपाणी सेर ४ येसारायेकठाकरि कडाहीमेंमधुरिआंचसूं पकावे योरसमात्र वलिजाय तेल आयरहे तदिइंतेलकोमर्दनकरेतोविपूचिकाअरपक्षा घात ये दोन्यूंदूरिहोय ४ येसरवयरहस्यमें लिख्याछे अथवा कि णगचकीजड आंधीझाडाकीजड नींबकीछालि गिलवेकूडाकीछालि यानें बराबरिलेपाछे टंक २ कोकाढोकरिदिन ३ लेतो विपूचिका जाय ५ अथवा हरडेकीछालि वच सेकीहींग इंद्रजव भांगरो संचर लूण. अतीस यानें बराबरिले त्यानेंमिहीपीसि टंक २ पाणीसूंलेतो घवासीरजाय ६ अथवा इलायची मासा ४ लवंग मासा ४ अमल

भ. टी. विपूचिका रोगने बहुधा औषधी लिखीहै परंतु देशकालादि [illegible] [illegible] [illegible] कार्यारंभ कर पूर्व [illegible]. [illegible] भाषाम होतोहै. [illegible] [illegible] देणचे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करोहै.

मासो १ जायफल मासा १० यांनेंमिहींवांटि मासा ४ गरमपाणी सूंलेतो विषूचिका ततकालजाय ७ अथवा चूकाने ओटाय येकसेर ऽ१ काढेईरसमेंसींधोलूणटंक ५ कूठटंक १० तेल । यांसारानें येकठाकरिमंदाग्निसूंपकावे ओरसर्वबलिजायतेलमात्रआवरहे तदिवेंतेलको मर्दन करेतो विषूचिकादूरिहोय. ८

अथवा जौवांको चूनपईसा ४ भरजवषारटंक ५ यांनेंछाछिमेंसिजोय ईकोगरमगरमलेप करैतो पेटकोसूल विषूचिकाकोसूल दूरिहोय ९ अथवा कडवातेलकोगरमगरममर्दनकरेतो कूषिको दरददूरिहोय १० अथवा विषूचिकामें तिसघणी लागेतोलवंगांको काढो देतोतिसदूरिहोय ११ अथवा विषूचिकाघणीवधेतो येकापसवाडामेंडांभदेतो विषूचिकादूरिहोय १२ अथवा बिजोराकीजड सूंठिकालीमिरचि पीपलि हलद कणगचका बीज यांनें बराबरिले पाछेयानें कांजीकारसमेंमिहीपीसि ईको अंजनकरेतोविषूचिकाजाय १३ ये सर्वसंग्रहमें लिष्याछे. इतिविषूचिकाका जतनसंपूर्णम्

अथ अलसविलंबिकाकाजतन लिष्यते सावण टंक ६ नीलोथूथो टंक १ यांनें जलमेंमिहींवांटी गुदाकें लगावेतो तत्काल बंधछूटेअर अलसविलंबिकाजाय १४ अथवा दारुहलद चोपकूटसोंफहींग सींधोलूण यांनेंबराबरिले यांनेंकांजीका पाणीमें मिहींवांटि गरमकरे पाछें उदरकें लेपकरेतो अलस अरविलंबिकादूरिहोय १५ अथवा जौवांको चून अधपावऽ१ ईमें साजीटंक १ भरनापिर्हेंपकाय कूषंके गरमलेपकरेतोविषूचिका अलस विलंबिका दूरिहोय १६ इतिविषूचिका अलसविलंबिकाका जतनसंपूर्णम् अथ कृमिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० प्रथमकृमिदोय प्रकारकाछेजांमें

न टी. कृमिरोगवास्ते अनेक औषधीछे. [illegible] वैद्यांका उपायमें [illegible] मिठाईका अनेक [illegible] छे. जोमें [illegible] बालक [illegible] करै. [illegible]

येकतो वाहरलो १ दूसरीमाहिली २ वाहरल्यांको जनमतोच्यारि जागांछे. एकतोमूलनामगुदासूं उपजेछे १ एकपसेवसूंउपजे जूं २ लीप ३ चमजूं ४ अथमाहिलीकृमिकी उत्पत्तिलि० अजीर्णमें भोजनकरेरोजीनामीटोपाटो अर पतलोभीषाय अर भोजन करिषेदकरे नहीं अरदिनमेंसोवे अरविरुद्ध भोजनकरे तींपुरुषकेपेटमेंकृमिपडिजाय गिंडोलाउगेरेसर्व २१ प्रकारका जींमे होय भागछे. अथजींकापेटमें गिंडोलाउगेरे कृमिपडिगईहोय तींको लक्षणलि०ज्वरहोय आवे शरीरको रंग औरसो होय जाय पेटमें सूलचाले हियो दूषे छादणी आवे भ्रमहोय आवे भोजनमें रुचिनहीं अतिसारहोय आवे येलक्षणजीके होय तदिजाणिजे ईकापेटमें कृमिगिंडोलाछे १ अथ कृमिरोगका दूरिकरिवाको जतन लिष्यते पुरासाणीअजवायणटंक २ वास्यापाणीसूं लेतोपेटकी कृमि झडिपडे २ अथवा पलास पापडानेंपाणीमें वांटि टंक १ सहत टंक २ वेरसमेंघालिदिन ५ पीवे तो पेटकी कृमिजाय ३ अथवा वायविडंग टंक २ मिहीवांटि रोजीनादिन ७ सहतसूं लेतो पेटकी कृमिजाय ४ अथवा वायविडंगे सींधालूण हरडेकीछालि जवपार येवरावरिले पाछे यांने मिहीवांटि टंक २ छाछिसूं दिन ७ पीवे तोपेटकी कृमिझडिपडे ५ अथवा नींवकापत्राको रसटंक १० मिलायदिन ७ पीवेतो पेटकी कृमिजाय ६ अथवा पारोटंक १ सोधीगंधक टंक २ पुरासाणी अजवायणी टंक ३ चकायणकावका टंक ४ पलासपापडो टंक ५ यांनेंमिहीवांटि टंक २ सहत टंक ५ सूं रोजीनादिन ७ चाटेतो पेटकी कृमिजाय ७ ये सा

हिपुरिका रोगउणो गंडूपदनामछे. और पादंपदे ऐसी नामयाभी कहेछे और [illegible] [illegible]

रासर्वसंग्रहमेंलिष्याछे अथवा नागरमोथो त्रिफला देवदारु सहज
णाकीजड यांनें बराबरिले पाछेयांनें जौकूटकरि टंक ५ कोकाढो
दिन७लेतोपेटकीकृमिजाय ८अथवा वायविडंगसींधोलूणसेकौहींग
पीपलि कपेलो संचरलूण यांनें बराबरिले यांनें मिहीपीसिटंक२ग
रम पाणीसूं दिन ७ लेतो पेटकी कृमिजाय ९ ये सर्ववैद्यविनोदमें
लिष्याछे.अथमाथामेंजूंलीपपडगईहोय तींकादूरिकरिवाको जतन
लिष्यते. धतुराका पानाकारसमें अथवा नागरवेलीका पानाका
समें पारानें मिलाय यांको बालामेंलेपकरे जूंपडिहोय जठेतो जूंली
पमरिजाय १ अथ गुदामें चूरण्याहोय तींकादूरिकरिवाको जतन
लिष्यते लसण मिरचि सींचोलूण हींग येसर्व बराबरिले पाछे यांनें
जलमें वांटि गुदामांहि लेप करेतो चूरण्या मरे १

अथवा महुवाका फूल वायविडंग कलहारीकिजड मेंडल चंदन
राल पस कूट भिलावा लोहबान यांनें बराबरिले पाछेयांकी धूणीदे
तो माछर पटमल येसारा घरमेंसूं जातारहे. २ येवैद्यरहस्यमें वै
द्यविनोदमें लिष्याछे इति कृमिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्ण.
अथ पांडुरोग कामलारोग हलीमकरोग यांकी उत्पत्ति लक्षण जत
न लि० अथ पांडुरोग पांच प्रकारसूं उपजेछे. वायको १ पित्तको
२ कफको ३ सन्निपातको ४येकमाटीका पावाको ५ अथ पांडुरोग
कीउत्पत्तीलिष्यते घणांपिदकाकरिवासूं घणी पटाईका पावासूं दिन
का सोवासूं घणीतीपीवस्तका पावासूं इतनी वस्तका सेवासूं वात
पित्त कफहेसो पुरुषकालोहनें बिगाडे अरयेका सरीरकी त्वचानेपि
लीकरिदेवे १ अथ पांडुरोगका पूर्वरूपको लक्षणलि० त्वचाफा
टिवालागिजाय. अंगामें पीडाहोय माटीपावाकी इच्छारहे. मा

न. टी. कृमिरोग[illegible] जावका [illegible] लिष्याछे. [illegible]
[illegible]
[illegible] नाश्छे.

च्याऊपरि क्योंसोईहोय मल मूत्रपीलोहोय अन्न पचैनही येलक्षण जींकेहोय तदि वैद्य कहैथारे पांडुरोग होसी. ईपांडुरोगनैं लोकीक मेंपील्यो कहेंछे. १ अथ वायका पांडुरोगको लक्षणलि० जींकीत्व चा मूत्र नेत्र येरूपाहोय अथवा काला होय अथवा लाल होय अर सरीरमें कंपहोयपीडाहोय आफरोहोय भ्रमादिकहोय तदिजाणिजे वायको पांडुरोगछे १ अथपित्तका पांडुरोगको लक्षणलि० मल मू त्रनेत्रजीका पीलाहोय सरीरमें दाह विस अरज्वर येभीहोय मल पतलो जाय सरीरकीत्वचापीलीहोय तदिजाणिजैपित्तको पांडुरोग छे. २ अथ कफका पांडुरोगकोलक्षण लिष्यते मुपसूं कफनीकले सरीरकैसोजोहोय तंद्राहोय आलसहोय सरीर भारीहोय सरीर कीत्वचा मूत्र नेत्र येसूपेदहोय तदि जाणिजे कफको पांडुरोगछे. ३ अथ सन्निपातका पांडुरोगको लक्षण लिष्यते कपायली माटी पाय जींकै वायको कोपहोय मीठीमाटीपाय जींकै कफको कोप होय पाछै वामाटीपाई हेसो सातूधातामें अरभोजनकर्‍योहोय तीनैं लूपोकरि नापै पाछै वापेटमें माटीहोयसोविगारि पकी थकीनसानैं फूलायदे अथवा रस वहवासूं रोकदे तदि सारीइंद्रियांको वल जातोरहे. अर सरीरकोवीर्य अर पराक्रम भीजातोरहे तदिवापेटमें पाईमाटी सरी रकीत्वचानैं पीलीकरि वलवर्ण अग्नि यांको नासकरे तदि वैको तंद्रा होय आलसआवै पाससास सूल ववासीर अरुचि आंप्यां ऊपरि सोजो पगांकै सोजो इंद्रिकै सोजापेटमेंकृमी, अतिसार मल कफलो हीसोमिल्यो येसर्व लक्षणहोय तदि जाणिजेइकै माटीपावाको पांडु रोगछे. अथ पांडुरोगको असाध्यलक्षणलिष्यते. सरीरका लोहीजा तोरहे सरीर सुपेदहोजाय. दांत नख नेत्र पीलाहोजाय संपूरण यैनैं

म. टी. पांडुरोगवालोंसर्वाधिकारछे [illegible] [illegible] होयछे [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] होयछे. [illegible] [illegible] होयछे [illegible] [illegible]

रासर्वसंग्रहमैंलिष्याछै अथवा नागरमोथो त्रिफला देवदारु सहज णाकीजड यांनैं बराबरिलै पाछैयांनैं जौकूटकरि टंक ५ कोकाढो दिन७लेतौपेटकीकृमिजाय ८अथवा वायविडंगसींधोलूणसेकीहींग पीपलि कपेलो संचरलूण यांनैं बराबरिले यांनैं मिहीपीसिटंक२ग रम पाणीसूं दिन ७ लेतौ पेटकी कृमिजाय ९ ये सर्ववैद्यविनोदमैं लिष्याछै.अथमाथामैंजूं लीषपडगईहोय तींकादूरिकरिवाको जतन लिष्यते. धतुराका पानाकारसमैं अथवा नागरवेलीका पानाकार समैं पारानैं मिलाय यांको बालामैंलेपकरै जूंपडिहोय जठैतौ जूंली षमरिजाय १ अथ गुदामैं चूरण्याहोय तींकादूरिकरिवाको जतन लिष्यते लसण मिरचि सींधोलूण हींग येसर्व बराबरिले पाछै यानैं जलमैं वांटि गुदामांहि लेप करैतौ चूरण्या मरै १

अथवा महुवाका फूल वायविडंग कलहारीकिजड मैंडल चंदन राल पस कूट भिलावा लोहवान यांनैं बराबरिले पाछैयांकी धूंणीदे तौ माछर पटमल येसारा घरमैंसूं जातारहै. २ येवैद्यरहस्यमैं वै द्यविनोदमैं लिष्यांछै इति कृमिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्ण. अथ पांडुरोग कामलारोग हलीमकरोग यांकी उत्पत्ति लक्षण जत न लि० अथ पांडुरोग पांच प्रकारसूं उपजैछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४येकमाटीका पावाको ५ अथ पांडुरोग कीउत्पत्तीलिष्यते घणांपैदकाकरिवासूं घणी पटाईका पावासूं दिन का सोवासूं घणीतीपीवस्तका पावासूं इतनी वस्तका सेवासूं वात पित्त कफहैसो पुरुषकालोहीनैं विगाड अरवैंका सरीरकी त्वचानैंपि लीकरिदेवै १ अथ पांडुरोगका पूरवरूपको लक्षणलि० त्वचाफा टिवालागिजाय. अंगामैं पीडाहोय माटीपावाकी इच्छारहै. आ

न. टी. कृमिरोगकाजतनसर्वं जातका इंग्रंथमैं लिष्याछै. जोरीतसौंकरसातोरोगीमूपीहोसी अरसरीरकैमाहिलाकृमितौ मोषधीकापावासौं जायछै. अरसरीरकैबाहरलालेपादिकसौं जायछै जूंलिष. षमटूं. अरओरपटमलादिकधूणीसौं जायछै.

ष्याऊपरि क्योंसोईहोय मल मूत्रपीलोहोय अन्न पचैनहीं येलक्षण जींकैहोय तदि वैद्य कहैथारे पांडुरोग होसी. ईपांडुरोगनैं लोकीक में पील्यो कहैछे. १ अथ वायका पांडुरोगको लक्षणलि० जींकीत्व चा मूत्र नेत्र येलूपाहोय अथवा काला होय अथवा लाल होय अ रसरीरमें कंपहोयपीडाहोय आफरोहोय भ्रमादिकहोय तदिजाणिजे वायको पांडुरोगछै १ अथपित्तका पांडुरोगको लक्षणलि० मल मू त्रनेत्रजींका पीलाहोय सरीरमें दाह विस अरज्वर येभीहोय मल पतलो जाय सरीरकीत्वचापीलीहोय तदिजाणिजेपित्तको पांडुरोग छे. २ अथ कफका पांडुरोगकोलक्षण लिप्यते मुपसूं कफनीकले सरीरकेसोजोहोय तंद्राहोय आलसहोय सरीर भारीहोय सरीर कीत्वचा मूत्र नेत्र येसूपेदहोय तदि जाणिजे कफको पांडुरोगछे. ३ अथ सन्निपातका पांडुरोगको लक्षण लिप्यते कपायली माटी पाय जींकै वायको कोपहोय मीठीमाटीपाय जींकै कफको कोप होय पाछै वामाटीपाई हैसो सालूधातामें अरभोजनकयोहोय तीनें लूपोकरि नापै पाछै वापेटमें माटीहोयसोविगारि पकी थकीनसानें फुलायदे अथवा रस वहवासूं रोकदे तदि सारीइंद्रियांको वल जातोरहै. अर सरीरकोवीर्य अर पराक्रम भीजातोरहै तदिवापेटमें पाईमाटी सरी रकीत्वचानें पीलीकरि वलवर्ण अग्नि यांको नासकरे तदि वैंको तंद्रा होय आलसआवे पाससास सूल ववासीर अरुचि आंष्यां ऊपरि सोजो पगांके सोजो इंद्रीके सोजापेटमें कृमी. अतिसार मल कफलो होसोमिल्यो येसर्व लक्षणहोय तदि जाणिजेईकै माटीपावाको पांडु रोगछै. अथ पांडुरोगको असाध्यलक्षणलिप्यते. सरीरका लोहीजा तोरहै सरीर सुपेदहोजाय. दांत नख नेत्र पीलाहोजाय संपूरण येनें

अ. टी. [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

पीलोही पीलोदीषे, अर सारासरीरमें सोईहोय आवे अतिसारअ
रज्वर होय आवे ऐसो पांडुरोगी मरि जाय १ अथ कामलरोगको
लक्षणलिष्यते. जोपांडुरोगीगरमवस्तघणीपाय वेंके पित्तहैसोलोही
अर मांसनें दग्ध करै वेंकानेत्र हलद सरीका करै अरवेंकी त्वचा
नषमूंढोहलदका रंगसरिको करिदे अरवेंको मल मूत्र रुधिर सरीसो
करिदे मींडकाका वर्णसिरीसो होजाय इंद्रियांको बल जातोरहै दाह
होय आवे अन्न पचैनहीं दुर्बलताहोय अरुचिहोय येलक्षण होय
तदिकामला रोगजाणिजे अथहलीमकरोगको लक्षणालि० जोपांडु
रोगीकेवातपित्तवधैतदिवेंकीत्वचाहरी कालीपीलीहोजाय अरवेंको
बलउत्साहजातोरहै अर तंद्रामंदाग्नि मिहीज्वर दाह तिस अरुचि
भय येसाराहोयआवे स्त्रीसंगप्यारोनहींलागै अंगामै पीडाहोय तदि
हलीमकरोग जाणिजे अथ पांडुरोगको जतन लिष्यतेसारनैं गोमू
त्रमैंदिन ७ पकावे पाछैईनैमिहीवांटि जलसूं टंक १ रोजीनादिन
१५ लेतौपांडुरोगजाय १ अथवागोमूत्रमें पकायोमांडूरतीनें टंक१
गुडकैसाथि दिन १५ लेतौ पांडुरोग जाय २ अथवासालीकी जड
निसोत सूंठि मिरचि पीपली वायविडंग दारुहलद चित्रक कूठ ह
लद त्रिफला दांत्युणी चव्य इंद्रजव कुटकी पीपलामूलनागरमोथो
काकडासींगी, करेलणी अजवाणी, कायफल टका टका भरि
लेपाछे यानैंमिहीवांटि यांसूं दूणो ईमें मांडूर मिलावे पाछयांनें आ
ठगुणा गोमूत्रमें पकावे पाछे ईकीगोली टंक १ प्रमाण बांधे पाछे
गोली १ गउकीछाछिकैं सामिल दिन १५लेतौपांडूरोग असाध्य
भीजाय अर योहीकामलारोगनें हलीमकरोगने सासनें षासीनें ज्व
रनै सोजानैं सूलनें फियानैं आफरानैं ववासिरनें संग्रहणीनें कृमी

न. टी. मांडूरकहोतो लोहकाकीटसोवर्णहै पुराणी लोहकीकाटीजीनैं जुनायामी ढूंढरो
आगिमैंपुटासूंफूंकिलेजीकिकियोप्रचलैछै. सोवोमांडूर अरपुनर्नवादिओषधिलिषीछैतीवामै
टीको जड्छै. येकिपासीकरजीनेपुनर्नवादिमंडूरकहैछै. गुणऊपर लिष्याछै.

रोगनें वातरक्तनें कोढनें यांसारां रोगांनें ईका सेवनसूयेदूरि होयछे येपुननवादिमंडूरछे. १ अथवा हरडेकीछालिटंक ५ आंवला टंक ५ वहेडाकीछालि टंक ५ सूंठिटंक ४ कालीमिरचि टंक ५ पीपलि टंक ५ नागरमोथोटंक ५ वायविडंग टंक ५ चित्रक टंक ५ मारयो सार पईसा ९भर यांसारांनेंमिहीवांटि यांमेंसारमिलावे पाछेरती ९ ईनें सहतकेसाथिलें अथवा घृतसाथिले अथवा गऊकीछाछिके साथिले अथवागोमूत्रकेसाथिलेतोपांडुरोगनेंसोजागनेंअग्निमांद्यनें ववासीरनें यारोगांनें योनवायसचूरणदूरी करेंछें दिन १५ ईकोसे वनकरे प्रथमदिवस ईनेरती २ पाय पाछे ईनें रतीदोय २ रोजीना वधे अठारारतीतांई यो नवायसचूर्णवधावेछे२अथवा अरडूसो गि लवे नींबकीछालि त्रिफला चिरायतो कुटकी ये बराबरिले यांनें जो कूटकरि टंक २ कोंकाढो करिहमेंसहत मिलाय दिन १० लेतो पांडु रोगने रक्तपित्तनें कामलारोगनें हलीमकरोगनें यां रोगांनें योदूरि करेंछे ३ अथवा त्रिफलाकोरस अथवा गिलवेकोरस अथवा दारुह लदकोरस अथवा नींबको रस यांरसांमें सहतमिलाय दिन १०पी वेतो पांडुरोग कामला हलीमक येसर्वजाय ४ अथवा * दडवलको रसनेंयांमें आंजेतो पांडुरोग कामलारोग हलीमकजाय ५ यो वैद्य रहस्यमें लिख्योछे, अथवा चिरायतो कुटकीदेवदारु नागरमोथो गि लवेपटोल धमासो पित्तपापडो नींवकीछालि मूंठि कालीमिरचि पी पलि चित्रक त्रिफला वायविडंग यांनें बराबरिले पाछे मिहीपीसि यांबराबरि ईमें सार मिलावे पाछे ईनें टंक १ सहतसूं अथवा छा छिसूं रोजीना लेतो पांडुरोगनें कामलानें हलीमकनें सोजानें प्रमे

* दडवलनामर्थ[illegible] [illegible] [illegible]

हनै संग्रहणीनैं सासनैं पासनैं रक्तपित्तनैंववासीरनैं आमवातनैं गोलानै कोढनैं यारोगानैं यो अष्टादशांग अवलेह दूरिकरैछै. ६ यो भावप्रकासमै कह्योछै. अथवा कडवी तूंबीकीगिरिका रसकी नास देतौ तत्काल पील्योजाय७अरपांडुरोग वालो जव गोहूं चांवल मुंग अरहड मसूर येषाय. इतिश्रीमन्माहाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचितेअमृतसागरनामग्रंथेअजीर्णमंदाग्निभस्मक विषूचिका अलसविलंविकाकृमिरोग पांडुरोग यांकी उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनामचतुर्थस्तरंगःसंपूर्णम् ४

५ अथरक्तपित्तरोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलि० घणातावडामै रहवासूं घणापेदसूं घणाचालिवासूं घणामैथुनसूं तीषीवस्तकाषावासूं घणासोचसूं गरमवस्तकाषावासूं षारीवस्तकाषावासूं लूणषटाईकाषावासूं कडवीवस्तकाषावासूं यांसूंपित्तदग्धहोय शरीरकालोहीनैं दग्धकरैछै तदिवेकोलोही २ दोयतरहकरिप्रवृत्तहोयछै. येकऊपर १ येकनीचै २ ऊपरतोनाकमाहिंकर नेत्रामैं कानमें मूंढामें यांमैप्रवर्तहोयछै. अरलिंगेंद्रिमैंयोनिमैंगुदामें याद्वारानीचैप्रवर्तहोयछैअरघणोलोही कुपितहोयतो सर्ववालांमांहिप्रवर्तहोयछै. अथरक्तपित्तकोपूर्वरूपलिष्यते अंगांमैपीडाहोय ठंडी सुहावैं मूंढामैं धूवोनीकलै वमनहोय लोहीमूंढामैंआवैयेलक्षणहोयतदिजाणिजैरक्तपित्तहोसी अथ कफकारक्तपित्तको लक्षणलि० जाडोपीलोचींकणो मोरकाचंदवासिरको लोयीहोयतो कफको जाणिजे. अथ वायका रक्तपित्तको लक्षणलिष्यते कालो झागासमेत मिहीं धारनलीयांलूषोलोहीहोय तौवायकोजाणिजै अथपित्तकारक्तपित्तको लक्षणलिष्यते. षैरकाकांटा सिरकोकालोगोमूतासिरको स्याहीसिरिसोचींकणो इसो लोही

न. टी. कांमलापांडुरोगांपरपथ्यालि० जुलाबउलटी. लालचावल. मूंग. मूर. गहूं. तुरई काचा बैंगण. कांदा. लसण छाछ. कैशर. ऊपलास. घृत. माषण. गरमभोजन. गरम जलसूं स्नानशुद्धवस्त्र, पवित्रहवा, इत्यादिकरणा.

होयतोपित्तको जाणिजे अरये सर्व लक्षण लोहीमेमिलेतो सन्निपात कोजाणिजे नाकमुंढो आंषि कानमें होय लोहीजायतो साध्यजाणि जे.गुदालिंगयोनिमें होयकारे जायतो जाप्यजाणिजे दोन्युं मार्गासूं जायतो असाध्यजाणिजे.अथरक्तपित्तका उपद्रवलिष्यते रोगांसूं जींकोषीण शरीरहोय अरबूढोहोय लंघन करतोहोय दुर्बलहोय जीं कैयोरोग असाध्यछे. अरपास सासज्वर वमन मदालियां पांडुरोगी केदाहमूर्छा अधैर्यवानकेहीयोदूषतोहोयजींकेतिसवालाकेअतिसार वालाके भोजनकीअरुचिवालाके इतनाके होयतो उपद्रवजाणिजे. अररक्तपित्तवालानें आकाशभी लालदीपे सोअसाध्य अर लोही दीषे अरलालजींकानेत्रहोय अरलोहीकीजीकिंडकारआवे अरसर वत्र लोहीसोदीपेतो ओअसाध्य.अथ रक्तपित्तकोजतनलिष्यतेनक सीरवालानें मुंढामें लोहीपडेजीनें जुलावदीजे हरडे त्रिफलानिसोत किरमालो याका जुलावसू रक्तपित्तजाय १ अथवा नीचरला मार्ग को रक्तपित्त वमनसूंजाय. २ अथवा पस कमलगट्टा अरडुंसो गिल वेमहलोठी महुवो नागरमोथो रक्तचंदन धणो येसारा बराबरिले यांको टंक २ को काढोसहतनापिलेतो रक्तपित्तजाय ३ अथवाफूल प्रियंगू लोद रसोत चाककी माटी अरडूसो यांनें बराबरिलेपाछे टंक २ को काढोसहतमिश्रीमिलाय दिन १० लेतोरक्तपित्तजाय ४ अथ वा दोबका रसकी अथवादाडयुंकाफूलांका रसकी अथवा अलता कारसकी अथवा हरडेकी सीतल जलमें बांटितीकारसकी नासदेतो नकसीरदूरिहोय ५ अथवा दोब आंवला बांटमाथाके लेपकरतो नकसीरततकाल बंधहोय ६ अथवा पक्यागुलरांकाफल अथवाछु वाराअथवादाप येसहतसूं पायतो रक्तपित्तजाय ७ येसारावैद्य

र. टी. पांडुरोगीनें इतनीवस्तु छोडे. दूधसीलो. गोश्तो. मसालु. विषम. अग्नि. धूम्रपानी. मदिरानदीसानकीपानी. हिंग. मिरच. तेल, कायरा उड्द. मद. पानसरु खुराकी. स्त्री माव. गरमदाहकारकतिलपापड़ादि इत्यादिकसें वादिकेसबको.

विनोदमैं लिष्याछै. अथवा धणो आंवला अरडूसो दाप पित्तपापडा येसारा बराबरिले पाछै टंक ३ सीतलजलमैं भेय वेपाणींमैं वांटि छाणि पीवैतौ रक्तपित्तजाय ज्वर दाह तिस सोस येभीजाय ८

अथवा मिनक्कादाप चंदन लोद, फूलप्रियंगु येबराबरिले यांनैं मिहीवांटिसहतसूंदिन १० चाटैतौरक्तपित्तजायसर्वप्रकारको ९ अथवा वसंतमालतीरस वोल बद्ध पर्पटीरस पाछैलिष्याछै त्यांसूंभी नकसीर अच्छीहोय १०अथवा प्याजकारसकी नासलैतौनकसीरबंधहोय ११ अथवा सौवारको धोयोघृत मस्तकके लेपकरैतो नकसीरबंधहोय १२ अथवावडोपक्कोपेठोले तींका बीजछौंत दूरिकरि पाणीमैं पकाय वेनैंठंडो करिगाढावस्त्रसूं वेपेठाको जल काढ ओजल जुदाबासणमैं रापैअरपेठानैं कडाहीमैं घृतघालितलिलेनैंपरोकरै वलिवादेनहींपाछै वेपेठाकारसमैं मिश्रीकीचासणीकरैपाछै वेचासणीनैं वेपेठामैं नापै अरपीपलिटका २ भर सूंठिटका २ भर जीरो टका २ भर धणौटंक ५ पत्रज टंक ५ इलायची टंक ५ कालीमिरची टंक ५ तजटंक ५ वंसलोचन टंक५यांनैंमिहीवांटि वेचासणीमैंनापै अरपाव सहतईचासणीमैं नापै पाछै ईनैं टंक१तथा २ भर रोजीना पायतौ रक्तपित्तनैं ज्वरनैं तिसनैंदाहनैं प्रदरनैं पीणतानैं वमननैं स्वरभंगनैं पासनैं सासनैं क्षयीनैं यांसारांनैं योपेठाको अवलेह दूरिकरैछै. अर सरीरनैं घणोपुष्टकरैछै. इतिपेठाकोअवलेह १३ अथवा इलाची पत्रज वंसलोचन तज दाप पीपलि येसारी पईसापईसा भरिले पाछै यांनैंमिहीवांटि मिश्रीटका १ महूलौठी टका १ दाप टका१ छवारा टका १ भर यांनैंमिहीवांटि वांमैं मिलाय सहत टं २ मैंगोलीवांधै गोली १ रोजीना पायतौ रक्तपि

न. टी. रक्तपित्तरोगछैसोमहाप्रबलछै. जैसेसीतपित्तवैगोईपेछैसोनणाहिन.थापूं भगास्यहोयसोअमगाय्हुवो नाक मुखनैंरै सर्वइंद्रिपाहोयकरलोहीरबगाजाय आगाबाधीरमैंफूटजायजीसूंमनुष्यवोनदूरपावैछै ईयाल्नैनजल्दीउपायकरणो.

त्तनें सासनें पासनें पित्तज्वरनें हिचकीनें मूर्छानें मदनें भ्रमनें तिस नेंपसवाडाकी सूलनें अरुचिनें सोसनें स्वरभंगनें क्षयीनें या एला दिगुटिकायांरोगानें योदूरिकरेंछे अर पुष्टाई करेंछे. इति एलादि गु टिका यजतन वैद्यरहस्यमें लिष्याछे १४ इतिरक्तपित्तका जतनसंपू र्णम् अथ राजरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० राजरोग ५ प्रका रकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ५ हियांमेंचोट लागिवाको ५ अरसांसरोग ६ प्रकारकोछे एकतो स्त्रियांका घणा संगकरिवासूं १ घणासोचसूं २ गंभीरादिकव्रण अर हियामें चोट घणीलागिहोय जींसूं ३ मार्गका घणाचालिवासूं ४ घणापेदसूं ५ बुढापणासूं६ अथ राजरोगकी उत्पत्ति लिष्यते मलमूत्र अधोवाय कारोकिवासूं अर वीर्यकाक्षीणपणासूं घणासाहसपणाकरि आपसूं नहिहोय सोकरेंतीसूं विगरिसमें घणांभोजनकरिवासूंयांसूं यो त्रिदो षरूपी राजरोग पैदाहोयछे सोईरोगमें कफप्रधानछे सोयो कफ घ णोंलीसंगकरिवासूं रसनें वहवावालीनाड्यांनें रोकेंछे, वीर्यनें पीण करेंछे पाछेसारीधातनें पीणकरेंछे. तदिओमनुष्य दिनदिनसूकिवा लागे या ईंकीउत्पत्तिछे अथ राजरोगको पूर्वरूप लिष्यते सास अं गामेंपीडा पासीकरि कफकोथूकिवो तालवाकासोस वमन अग्निकी मंदता पीनस पासी नींदघणीआवे आंष्यांको सुपेद होवो मांसकी पावाकी इच्छा मैथुनकी इच्छारहे येलक्षण मनुष्यांके होयतो जा णिजे राजरोग पैदाहोसी अथराजरोगकालक्षणलि० कांधामें अर पसवाडामें संतापहोय अर येकाहाथपगवले अर सर्वांगमें ज्वररहे तदिजाणिजे ईंके राजरोगछे १ अथवा भोजन मात्रमें रुचिनहोय

• रक्तपित्तरोगीनकरणीयानि. स्त्री. राग. श्रम. मद. [illegible] [illegible] पोनी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

ज्वरहोय पास स्वास होय मूंढामैं लोही आवै अरस्वरभंगहोय ६ लक्षण होयतौजाणिजे यो राजरोगछै२अथ वायका राजरोगक लक्षणलि० स्वरभेदहोयसूलहोय कांधा अरपसवाडाको संकोचहे यतौ वायकौ जाणिजे अथपित्तका राजरोगको लक्षणलि०ज्वरहो दाहहोय अतिसारहोय लोहीमूंढामैं आवैतौ राजरोग पित्तकोज णिजे. अथ कफका राजरोगकोलक्षणलि० माथो भाखोरहे, भोजन मैंरुचिनहींरहैषासीहोय कंटसूंबोल्यौ जायनहीं तौ राजरोगकफक जाणिजै ३ राजरोगका ५ सोसरोगछै ६ येग्यारा ११ सर्वलक्षण मिल्याहोयतौ राजरोग सन्निपातकोजाणिजे ४ अथहियामें चोटल गिवासूं उपज्योजो राजरोग तींकोलक्षणलि० सिरमैंपीडाहोय मूंढ मैंसूं लोहीकोवमन होय सरीर लूषो पडिजाय ओराजरोगी असा ध्यजाणिजै १ अथवासुपेदसुपेदजींकैआंपिहोय अन्नकापावामें अ रुचिहोय अरसासकोरोगजींके वधिजाय प्रमेहकोरोग घणोहोजाय अरघणोमूतै ओराजरोगी मरिजाय २ अथ ईराजरोगीकी अव धिलि० भलेसास्त्रकोवेत्तासर्वजतनउगैरैक्रियामैंकुसल इसोवैद्यतो जतनकोकर्त्तामिलैअर ओरोगीतरुणहोय अरद्रव्यवानहोय वैद्यक हैसो करै अरजितेंद्रिहोय सोभीदिन १००० दिनताईंजीवैउपरांति नहींजीवै अथक्यूंकसाध्य राजरोगको लक्षणलिप्यते जींकेज्वरनहीं होय अर वो बलवानहोय अर वैद्य कडवीओषधि कषायली देजी नैपाय जाय अरभूषजींकीतीव्र होय अरसरीरपुष्टहोय येराजरोगी काजतनकरजे १ अथघणां मैथुनकरवासूं उपज्योजो सोसरोगतीं कालक्षणलि०लिंगेंद्रीमें पोतामें पीडाहोय मैथुन करवामेंशक्तिनहीं होय पाछे हाडांको नासहोय अरराजरोगका उपद्रव कह्यासोहोय

न. टी. राजरोगपांचप्रकारको कफ. वात. पित्त. सन्निपात. दाहादिककामकारको अग्नि सरोग ६ प्रकारकोजुमल्यिाहोय ११ येग्याराकालक्षण [illegible] एकहीवगतमैंरोगीका [illegible]

सरीरपीलोहोय चिंताग्रस्तहोय शिथलअंगहोय येलक्षण होय त
दिजाणिजे ईंकेंमैथुनकरिसोस हुवोछे २ अर सोचकर सोसरोग
हुवोहोय तींकोभी योही लक्षणछे. येक ईमें वीर्यकोक्षयनहीं ३ अथ
जरासोसीको लक्षणलि० कृशहोय जाय वीर्य बुद्धि बल ये जातारहे
सरीरकांपे भोजनमे अरुचिहोय घांघोबोले अर कफघणांथूके स
रीर भारयोहोय पीनस होय लूपो सरीरहोय येजीमे लक्षण होय
तदि जाणिजे योजरासोसीछे. ४ अथ मार्गसोसीकालक्षणलिख्यते
अर जरासोसीकालक्षणसूं मिल्याछे पणींवेंके हियामे पीडनहीहोय
५ अथगंभीरादिकव्रणसूं उपज्यो जो सोस तींको लक्षणलि० घणी
तीरंदाजीकरिवासूं भारकाउठावासूं यांसंहियामेजोर घायपडे अर
घणोमैथुनकरे लूषोषाय तदिवेंकाहियामे योरोग पैदाहोय तींको
हियोघणोदूषे पसवाडादुषे अंगसूके अंगामे कांपणीहोय अरवी
र्यबलवर्णरुचि अग्नियेसर्व घटिजाय लोहीछादे लोहीमुतेपसवाडो
पीठीकटियेदूषे अर ज्वर होय आवे गरीवसोहोगजाय अतिसार
होय पासोहोय येसर्वलक्षणहोय तदिजाणीजे ईंके व्रणसोसको
रोगछे ६ अथ राजरोग अरसोसरोग यांका जतनलि० वंशलोचन
टंक ८ पीपलिटंक ४ इलायचीटंक २ तजटंक १ मिश्रीटंक १६
यांनें मिहींवांटिसहत मापनकेसाथिचाटेतो राजरोगनें सासपासनें
पित्तज्वरनें पासूंकासूलनें मंदाग्निनें अरुचिनें हाथपगांका दाहनें
रक्तपित्तनें यांसारानेंयोदूरिकरेछे. योसीतोपलादिअवलेहछे. अथ
वा गिलोयसत सार येटंक १ ले पाछे सहत मापनसूं चाटेतो राज
रोगजाय २ अथवा मारयोपारो ३ भाग सोनाकीराष २ भाग मे
णशिल १ भाग गंधक १ भागयांसारानें येकठांकरि वडीपीलीको

म. टी. राजमृगांकमें [illegible]

[illegible]

[illegible]

डीमें भरै पाछें बकरीकादूधमैंसुहागानैं बाटिबेसुहागासूं बांकोड्या का मूढानैं मूंदे पछैबांकोड्यानैं कुल्हडीमैंमेल्हीपांमदे गजपूटमैंसू किदे पाछे स्वांगसीतल हुवां बेनैंकाढे योराजमृगांकरसछैइनैरती ४ महिनो १ वर्द्धमानपींपलिसूंपीपली ३ सूं २१ तांई सहत मापन मिलाय लेतौ राजरोग मुकर जाय योराजमृगांकरसछै. ३ अथवा भीमसेनीकपूर टंक ५ तजटंक ५ कंकोल मिरचिटंक ५ जायफल टंक ५ लवंगटंक ५ नागकेसरटंक ७ पीपलिटंक ८ सूंठि टंक ९ यांसर्वकीबराबरिमिश्रीयांनैंमिहींबांटिसहतउगैरे अनेक अनुपान सूंटंक १ लेतौराजरोगनै अरुचिनै क्षयीनैं सासनै पासनै गोलात्र बासीरनैं वमननैं कंठकारोगनैंयां सारांनैं योदूरिकरैछै. ४ योकपु रादिचूर्णछै अथवा सोधीगंधक टंक ५ अभ्रक टंक ५ सोध्योपारो टंक ५ हिंगलू टंक २ मैणसिलटंक १ प्रथमपारागंधककीकजली करे पाछैइमैंयेओषदिमिलाय पाछैयांसारांसूं आधोईमैसारमिला वैपाछैपरलमैं यांमैंघालियांकैसतावरीकारसकीपुट १४ देर इनसु कायलेपाछैरती २ तथा ३ मिश्रीकैसाथिप्रातःसमयपायतौराजरो गनैं वायपित्त कफकारोगांनै सर्वज्वरनै योदूरिकरैछै. योकुमुदेश्वर रसछे येसारावैद्यरहस्यमैंछै अथवा चोलाई रांधितीमैंघृतघालि नित्यभोजनकरेतो राजरोग बहुमूत्रतादूरिहोय. ६ अथवा हरया आंवला बडापकापांचसै ५०० लेत्यानैं जलमैंपकावे त्यांकोरसका ढबैरसमैंपांचसो ५०० टकाभरिमिश्रीकी चासणीकरिचांदिका बा सणमें घालिपाछैईचासणीमें येओषधिनापेसोलिपूंछूं मिनका दाप अगर चंदन कमलगट्टा इलायची हरडेकीछालि काकोटी पीरका कोली रिद्धी वृद्धी मेदामहामेदा जीवकारिसभकगिलवेकाकडासींगी

न. टी. अष्टगणनामओषधी रुपवनप्रामानलेइमैंलिखीछे सोयेऔषधीनाग्रथैलिषीछे. ययां कानामइणमांनछै. काकोली १ क्षीरकाकोली २ ऋद्धि ३ वृद्धि ५ मेदा महामेदा ६ और न. ७ ऋषभक ८ येऔषधीमिलनहींछै. सोयांकांपरज दूजीछै गोखेणी.

पोहकरमूल कचूर अरडूसो विदारीकंद परेटीजीवंती सालपर्णी प्र
ष्ठपर्णी दोन्यूकटाली वीलकीगिरि अरण्यू अरलू कूंभेरपाठ नागर
मोथो येसर्व औषधिटकाटकाभरिले त्यांनेनिपटमिहीवांटि ईंआव
लाका संजोगकीमिश्रीकीचासणीमेंनापेपाछे ईंचापणीमेंटका ६ भर
सहतनापेपाछे ईंमेंपीपलिटका १ भर नापेपाछेईंमें तजटंक २ पत्र
जटंक २ नागकेसरिटंक १ इलाचीटंक २ वंसलोचन टंक २
भरयांनेंमिहीवांटिईंचासणीमेंनापे पाछे यांकोयेकजीवकरिटका १
भर रोजीनापायतो राजरोगनें सोस रोगनें योचिमनप्रास अव
लेह दूरिकरेछे अरयो वलकर्ताछि. सरीरनेंपुष्टकरेछे अरवूढापणा
नेंदूरिकरैछे अरसरीरनेंजुवान करेछे. ७ इतिचिमनप्रासअवलेह
संपूर्णम् अथवा अरडूसाकोरस अर कट्यालीकोरस टका १ भर
तीमें सहत टका १ भरपीपलिटंक २ मिलाय रोजीनापायतो राज
रोगदूरिहोय ८ अथवा मृगांक १ भाग पारो १ भाग मोतीञ्र
विंध २ भाग सोधीगंधक २ भाग प्रथम पारागंधककीकजलीकरि
सरावामें मेल्हि वेंके कपडमाटिदे अर लूणसूं भांडो भरितेंकेंबीची
सरावोमेल्हिदिन १ आंचदे वेनें पकाय ऐतांदेओसीतलहोय पाछे
वेनेकाढे ओकुमुदेश्वररसासिद्धिहोय पाछे ईंरसनेंरती १ तथा २ प्र
भातही मिश्रीकेसाथि लेतो राजरोगजाय इतिकुमुदेश्वररसः ९ ये
सर्व वैद्यविनोदमेंलिष्याछे अथवापीलीकोडीवडोले अरपारागंध
कनें बरावरिले तीकी कजलीकरि वाकोड्यामेंभरे कोडीकेमूंढेसुहा
गोदे सेककरिपाछेसरावामें वाकोड्यानें मेलीवेसरावानें गजपूटमें
फूंकिदेसीतलहुवांकाढे पाछे ईंनेंरती १ पायतो राजरोगसोसरोग

म. टी. [illegible]

सासनैं षासनैं संग्रहणीनैं ज्वरातिसारनैं येसारोग ईरससूं जाय छे योकपर्देश्वररसछे योरुद्रदत्तमैंलिष्याछे १०

अथवा राजरोग सोसरोग वालानै ये वस्त हितकारीछे सोलि पूंछूं साठ्याचावल गोहूं जव मूंग हिरणकोमांस कुलत्थ वकरीको घृत वकरीको दूध मीठी दाडिम आंवला येसारा आछ्या येवृंदमैं लिष्याछै ११ अथवा सिलाजित शुद्धका सेवासूं राजरोगजाय१२ ये चरकमैं लिष्याछे अथवा तालीसपत्र टंक १० चित्रक टंक १० हरडैकीछालिटंक १० अनारदाणा टंक १० डासख्या टंक १० अजमोद टंक २ गजपीपलि टंक २ अजवायण टंक २ झाउरूषकी जड टंक २ जीरो टंक २ धणौं टंक २ जायफल टंक २ लवंग टंक २ पत्रज टंक २ तज टंक २ इलायची टंक२यांकीवरावरि मिश्रीले पाछे यामैं मिहीवांटि टंक २ रोजीना वकरीका दूधमे लेतौ राजरोगनैं क्षयरोगनैं पीनसनैं फियानै अतिसारनैं मूत्रकृच्छ्रनैंपांडुरोगनैं वाय पित्त कफकारोगांनैं प्रमेहनैं योचुरण दूरि करैछे १३ इतिमहातालिसादिचूर्ण योहारीतमैंलिष्योछे अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि तज पत्रज इलायची लवंग जायफल वंसलोचन कचूर या वची अनारदाणा येसर्व वरावरिलेपाछैयानैं मिहीवांटि यांवरावरि इनै चोपो सार मिलावे पाछे यांवरावरि ईमे मिश्रीमिलाय टंक २ ईन रोजीना वकरीका दूधके साथिलेतौ राजरोगनैं मंदाग्निनैं वीस प्रमेहनैं योदूरि करैछे इतिगगनायसंचूर्णम् १४ अथवा लवंग ककोल मिरचि पस चंदन तगर कमलगट्टा कालोजीरो इलायची अगरनागकेसरि पीपलिसूंठि चित्रक नेत्रवालो भीमसेनीकपूरजायफल वंसलोचन यांसारानै वरावरिले यांसारांकी आधी मिश्रीले

न. टी. राजरोगीनैं अपथ्यलि॰ दिनमैंनिद्रारातमैं जागरण. स्त्रीसंग. धूम्रपान. क्रोध. मदनत. धूप. अनिगीन. रेचनपदार्थ. आमिगर्न. पांडित्य पटाई स्त्रीसंग. धुम्रपान. क्रोध. मदनत. धूप. अनिगीन. रेचनपदार्थ. आमिगर्न. पांडित्य वारंवोभोजन. करडोजुलाय. करडीउलटी इत्यादि नहींकरणा.

पाछे टंक १ रोजीना पायतो राजरोगनें मंदाग्निनें पासनोंहिचकीनें संग्रहणीनें अतिसारनें भगंदरनें प्रमेहनें यो दूरि करेछे. १५ इति लवंगादिचूरणम् अथवा मास्यो अभ्रक टका २ भर भीमसेनीकपूर मासा ४ जावत्री मासा ४ पसमासा ४ तज पत्रजमासा ४ लवंग मासा ४ तालीसपत्रमासा ४ दालचिनी मासा ४दालचिनीकाफूल मासा ४ धावड्याकाफूल मासा ४ हरडेकी छाली मासा ६ आंवला मासा ४ वहेडाकी छालि मासा ६ सूंठि मासा ६ प्रथमपारा गंध ककीकजलीकरे पाछे कजलीमें ये ओषदिमिहीवांटिवेमेंमिलाययेक जीवकरिपाछेपाणीसूं चणाप्रमाणईकीगोलीबांधेपाछेगोली ४ रोजी नासीतल जलसूं पायतो राजरोगनें सासनें सोसनेपासनें सूलनें प्रमेहनें वमननें अमलपित्तनें अरुचिनें संग्रहणीनें वातरक्तनें यां सारारोगांनें यागोली दूरिकरेछे सरीरनें पुष्टकरेछे १६ या शृंगाराभ्रकगुटिकाछे अथ मधुपकहरडेकीक्रियालि० दसमूल पीपलि चित्रक कांलिकावजि वहेडाकीछालि कायफल काकडासींगी देवदारु साठीकीजडधणों लवंग किरमालाकीगिरि गोपरु वधायरो कूठ इंद्रायण येसारी ओषदि टका २ दोय दोय भरलीजे सोयानें जोकूटकरि सेर १६ सोला पकाजलमें यांओषद्यांनें नापि अर ओषद्यांकी लारचोपा मोटी हरडेवडीसेर ४ पकी नापि मधुरीआंचसूं मटकीमेंघालि ओटाइजे ओट्यां पाछे याहरडेको पाणीकाढि यानें ठंडीकरिपाछे चोपी सहतमें नापि दिन ५ रापिजे पाछे याहरडेनें सहतमेंसूं काढि ओर सहतमें नापिजे सहतमें दूर्यारहै इसीतरेदिन १५ ताई रापिजे पाछे यानें ओरू काढिमहिना १ तांई ओरसहतमें रापिजे सहतमें दूर्यारहेपाछेयाहरडेसमेत सहतका वासणमें

म. टी. राजरोग. मंदाग्नि. पास श्वास. अतिसार देणारोगछे. [illegible] पाये का [illegible] [illegible] [illegible]

तज पत्रज नागकेसरि इलायची पीपलियासारांको चूर्णटका ८ ना
मिहीवांटिईमैमिलाय दीजे पाछे हरडे १ रोजीनापायतो राजरोग
सोसरोग पास सास हिचकी ववन ज्वर मूत्रकृच्छ्र प्रमेह वातरक्त
वासीरसंग्रहणी रक्तपित्त दाहविभूति ज्योचि कोढमृगी पांडुरोग यां
सारां रोगांनें इहमधुपकहरडेदूरिकरैछे. १७ इतिमधुपकहरडेकी
विधिसंपूर्णम् याधन्वंतरीसंहितामें लिष्योछेअथवा पुराणोगुड सेर
१ अरआदाको रससेर १ ईरसमैंगुडकीचासणीकरैमधुरीआंचमैं
पतली ईचासणीमै तज पत्रज नागकेसरि इलायची लवंग सूंठि का
लीमिरचि पीपलि येसारी ओषधिटका १ येकेक भरिले त्यांनेंमिही
वांटि ईमैं मिलाय टका १ येकेकभरि रोजीना पायतौराजरोगनें मंदा
ग्निनें पासनें सासनें अरुचिनें यांनेंयोदूरिकरैछे. १८ इतिआदाको
अवलेह अथवा वकरीका दूधमें वरावरीकोपाणीघालितीमेंपीपलि
३ नाषे अर एकेक रोजीना वधे महिनायेकतांई वधे पाछे येकेक
घटावे अर वेमें पाणी वलिजाय अरदूध आयरहे तदिपहलीतोपी
पली षाजाय पाछे ओदूधपीजायतौ राजरोग अरपास सासयें
ताहरे योकाशिनाथपद्धतिमैं लिष्योछे १९

अथवा मिनक्का दाष सेर ४ पकीले त्यांनेंमण १ पाणीमें औ
टावे वेंकोचतुर्थांशराषे पाछेवेमेंपुराणो गुडनाषे अर वेमें वायविडंग
फूलप्रियंगु तज इलायची पत्रज नागकेसरी येटकाटकाभर नाषि
दारुकयंत्रसूं यांको अर्ककाढे पाछे टका १ भर रोजीनालेतौ राज
रोग सास पास दूरिहोयर०योदाषांको आसवछे. योजोगतरंगि
णीमैंलिष्योछे. अथवाम्रृगांक १ रूपरस २ तामेस्वर ३ पाराकीभ

* गजपुटकी क्रियालिषूंछूं. गज. एकचोडीगज. एकऊंडीगोल षाडषोदणी. औसैअंगडी गोबरी आधी षाडमैं भरणी. बीचमैं औषध धरणी. कपडमाटी करै. ऊपर फेर गोबरी भरणी. ऊपर आग देणी. सीतलहुवां काढणी. कुक्कुटपुट हाथ. फजर्डा पुटसो १ गज पुट २ पाणी दूजोगंधक परलमैं पहर २ षरलकीनो कजली होयछे.

स्म ४ अभ्रक ५ ये येकेकभागवयतालेपाछेयानें येकठा मिलाय यांकेजुदि जुदियेकेक पुटदे प्रथम वायविडंगकी १ नागरमोथाकी १ कायफलकी १ निगुंडीकी १ दसमूलकी १ चित्रकी१हलद्की१ सुंठिकी १ कालीमिरचिकी १ पीपलिकी १ यांकीपुटदेपाछे गोली रती आध प्रमाण बांधे गोली १ रोजीनापायतो राजरोग पासी फियो गोलोजाय योपंचामृत रसछे. योसारसंग्रहमेंलिप्योछे २१ अथवा वडासंपने गउका मूत्रमें वालि वेंकीराप करि वेकीवडीमूस बनावे वेमूसमे पारोटंक ५ गंधकटंक ५ यांकी कजलीकरि मिला वे पाछे ईंके कपडमिट्टिदे अरगजपूटमें फूंकिदे पाछे ईनें मूससमे त वांटिरती १ सहतसूं लेतो राजरोग जाय २२ यो रसार्णवमें लि प्योछे. अथवा थोहरीकी लकडी आलीऽले सींधोलूंण टका १ भर संचरलूंणटका १ भर सांभरोलूंण टका १ भर वेंगण शेर १ चि त्रक टका २ भर यानें येकठां वांटिसरावामे मेलिह गजपूटमें फूंकि देपाछेईनें मासो १ भोजनउपरांत जलसूं लेतोतत्काल भोजनप चे अर राजरोग सास ववासीर जाय अर आंव ततकाल भस्महो य सूलजाय योक्षुद्रादिक पारछे २३ योरसराजलक्ष्मीग्रंथमेंछे. अ थवा संपकीरापनींवूका रसमें वुझायकरि वाराप टका १ भरले अर चव्यटंक १० जवपार टंक १० सेकीहींगटंक १० पांचूलूंणटंक १० सूंठि टंक १० कालीमिरचि टंक १० पीपलिटंक १० पारोटंक १० सोध्योसींगींमूंहरोटंक १० सोधीगंधक टंक १० प्रथमपारागंधक कीकजलीकरपाछे कजलीमेंवेमिलावे पाछेनींवूकारसमें गोलीच णाप्रमाण बांधेगोली १ रोजीना लवंगांका पाणीमें लेतो राज रोग संग्रहणी सूल गोलो येसारा दूरिहोय २४ यासंपवटी जोग

म. श्री. [illegible]

तरंगिणीमें लिषीछे. अथ अगस्ति हरडेकी विधिलिष्यते दसमूल कौंचकाबीज संपाहुली कचूर षरैटी गजपीपली आंधीझाडो पीपलामूल चित्रक भाडंगी पौहकरमूल येसारी औषदि दोय दोय टकाभर लीजें अर हरडे १०० लीजे पाछैयां औषधानैंजोकूटकारि सेर २० बीस पाणीमै औषदि अर हरडे सामलकरिआटाि पाछै ओपाणी चतुर्थांशरहैतांदिवेनैउतारि वेमाहिसूं हरडैकाढलीजे पाछै हरडेकी गुठली काड हरडैनेंबाटिराषे पाछै पुराणो गुड टका १०० भर तींको चासणीकरै वेचासणीमें ईहरडैका चूननैं मिलायवेमें गऊको घृत टका ८ भर नाषे चासणीमै पाछैईनैं टका १ भर रोजीना षायतौ राजरोगनैं सोसनैं पासीनें सासनैं हिचकीनें विषमज्वरनैं संग्रहणीनैं बवासीरनैं अरुचिनैं पीनसनैं याअगस्तिहरडै इतना रोगानैं दूरिकरैछे. अरसरीरनैं पुष्टकरैछे भूषवधावेछे कोष्ठनैं शुद्धकरैछे २५ इतिअगस्तिहरडैकीविधि यावृंदमेंलिषीछे अथवा अरडुसोटका १०० भरले तींको काढो करि चतुर्थांश राषिजे जूदोछाणीपाछै ईकाढाका रसमें टका १०० सोभर गुडकी चासणिकरि टका ८ भर तिलांको तेलनाषे अरटका ८ भर गऊको घृत नाषे अरई चासणीमें वडीहरडे १०० कावकल्को चूर्णमिहीं वांटि नांषे पाछे पीपलीटंक २ पीपलामूल टंक २ कालीमिरचि टंक २ पोहरमूलटंक २ चव्यटंक २ चित्रकटंक २ सूंठटंक २ येमिहीवांटि ईचासणीमें यांको चूर्णनाषे पाछे यांको येकजीवकारि टका १ भर रोजीना षायतौ राजरोग निश्चेदूरिहोय अर ईसूं बवासीर षासी स्वरभेद सोजो अमलपित्त पांडुरोग उदररोग अग्निमांद्य नपुंसकता ये सारारोग ईसुं जायछे. या चरकमें लिषीछे २६ इतिराजरोग सोसरोग क्षयरोग यांकीउत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्ण

न. टी. पाठ. सासरोग वातपित्त कफ सौं जो होयछे सो साध्यसाध्य लिषीछे. अर याको उपायकीयां विना येही रोगवृद्धि पाँ जद्य असाध्य होय जावे.

अथ षासरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते अथ षासकीउ त्पत्तिलिष्यते मूंढामें धूवांका जावासूं मूंढामें धूलिकाजावासूं लूषा अन्नका षावासूं भोजनका कुपथ्यसूं मलमूत्रका रोकिवासूं छींकका रोकिवासूं चिकटाई मूली उगेरेऊपर जलका पीवासूं यांसूषास पैदा होयछे पाछे ओषास हे सोहियाका प्राण पवनसोंमिले अर ओप्राण पवन कंठका उदान पवनसूं मिली वादोन्यांपवनानें दुष्ट करेछे तदिवे दुष्टकंठका पवनहेसो वांको शब्दकांसीकाफूटा वासण सरीसो होय मूंढासूं वेगदेवार नीकले तदि मनुष्य ईनेंषास कहेछे सोवो षास रोगपांच ५ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ चोटलागिवाको ४ क्षयीरोगको ५ अर अनुक्रमसूं षासहेसो पाछिलोपाछिलो बलवान जाणिजे वायसूं पित्तको बलवान ईक्र मसूं जाणिज्यो अथषासकोपूर्वरूप लि० कंठमें गलामें कांटापडि जाय कंठमें षुजालि आवे भोजनकर्यो जायनहीं तदि जाणिजे षा सहोसी अथ वायका षासको लक्षणलि० हियामें कनपट्यांमें मा थामें उदरमें पसवाडामें सूलचाले मूंढो उतरिजाय बल पराक्रम स्वरयेक्षीण पडिजाय गासषातां कंठमें विथा होय सूकोषासे टूटा सुरबोले येलक्षणहोय तदि जाणिजे वायको षासछे अथ पित्तका षासको लक्षणलिष्यते हियामें दाहहोय ज्वरहोय मूंढो सूके फी कोमूंढोरहे तिसलागे कडवो वमनकरे सरीरपीलो होयजाय येलक्ष णहोय तदि पित्तकोजाणिजे.अथ कफका षासको लक्षणलिष्यते कफसूंमूंढोलीप्योरहे मथवाय रहे. भोजनमेंरुचिनहिहोय सरीरभा रीरहे कंठमें षुजालि आवे कफका गलषा थूके येलक्षण होयतो कफको षासी जाणिजे अथक्षतषासको लक्षणलिष्यते घणांस्त्रीसंग

म. टी. [illegible] प्रगट होयछे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

करे भारउठावे मारगचालिवासूं जुद्धकाकरिवासूं घोडा हाथीने दौडावासूं लूपा पावासूं वायहसोहियामें जायपासनें प्रगटकरे. ओपासप्रथम सूको पासे. पछे लोहिथूकेकंठघणोदूषे सूलचाले सं धिसंधिमेंपीडा चाले. ज्वरहोय सासहोय तिसहोय स्वरघांघोहोय कबूतरकीसीनांई बोलबोकरे येलक्षणहोय तो क्षतजको पासजा जे. अथ क्षयीरोगसूंउपज्यो जोपासतीकोलक्षणालि० कुपथ्य अर विषमासन उगेरे करे. घणोमैथुनकरे मलमूत्रनेरोके घणो सोचादि ककरे तादिमनुष्यांके मंदाग्निहोय वायपित्तकफतीन्यूंकोपेंतदि क्ष यीरोगकापासनें पैदाकरे तदि ओपासरीरनेषीणकरे. ज्वरदाह मोह यांने करे तदियो प्राणनासकरे सूकोपासेदुबलो होतोजाय रु धिर मांससरीरको जातोरहे राधिथूके तदियो असाध्यजाणिजे अथ पासका असाध्यलक्षणालि० वायपित्त कफकी तोपासीसाध्य अरक्षतरोगकीपासी अरक्षयीरोगकीपासी असाध्यजाणिजे अर वूढा आदमीकीपासी असाध्यजाणिजे अथ पासरोगकाजतनलि० लवंग टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ वहेडाकीवकल टंक ५ पैरसार टंक ५ यांनेंमिहींवांटि वंबूलकीवकलकाकाढामेंगोलीरती २ भरकी बांधेगोली १ तथा २ तथा ३ रोजीनादिन ७ पायतोपासीजाय १ यालवंगादिककोगोलीलोलिंबराजमें लिपीछे अथवा पारो टंक १ सोधगिंधक टंक २ पीपालि टंक ३ हरडेकीछाल टंक ४ वेहेडाकीव कल टंक ५ काकडासींगी टंक ६ यांनेंमिहींवांटि वंबूलकीवकलका काढाकी पुट २१ देपाछे गोलीटंक १ भरकीबांधे गोली १ रोजीना

* हिंगलूछेतो. मुख्यपारोछे ओंवलापानपापारोहेनूरगापाहिंगलूहोवछे. मूर्गगतार विनाहिंगलूसो औषधलेणोनहीं मारणपारूनीमछे गोमहछे पन किमाएं करू होवछे. मुखिया देवलोक जाणछे. गोंअंगोंजापैनगीनहीरनताछे जोंपैनमानदपील्ड पीछे. रसायन. औषधी. देवताहाप शिवाय केमीपोल्पनहीं. गोंअंगनामश्रर पार पढ़ने पनमोटीओंपवतोसिद्धान. वैदको छहान्नाणों हैणी.

पाय ऊपरिसूं सूंठिको काढोपीवैतो पास मुकर जाय २ योरसस मूहमें अरयोगचिंतामणिमेंलिष्योछे अथवाकालीमिरचि टंक २ पीपलि टंक २ दाडयूंकाछोंडा टंक १ गुडटका २ भर जवपार टंक १ यानेंमिहीवांटि गोलीचणाप्रमाण बांधेगोली २ तथा ४ रोजी नापयतो पासीजाय ३

अथवापीपलि पोहकरमूलहरडेकीछालि सूंठि कचूर नागरमोथो यानेंमिहीवांटिगुडमेंगोलीकरेरती ३ प्रमाणगोली १ तथा२तथा ३ पायतोपासीजाय ४ अथवा सूंठिकाकाढासूंपासिजाय ५ अथवा आदाकोरससहत मिलाय लेतोपासीजाय ६ अथवा कट्यालीं गिलवे सूंठि पोहकरमूल येबराबरिले अरईमें अरडूसोमिलावै योक्षुद्रादिकको काढोछे तीसेतिपासीजाय ७ अथवा छोटीकट्यालीतीं कोभडीतोकरिवेंकोरसकाढीवेंका रसमेंपीपलिको चूर्णमिलाय रोजी नापीवेतो पाससासजाय ८ अथवा हरडेकीछाल पीपलि सूंठि कालीमिरचि यानें मिहीवांटिगुडमें गोलीकरि गोली १ त. २ त. ३ रोजीनापायतो पासीजाय ९ अथवा सूंठि टंक २ कालीमिरचि टंक २ पीपली टंक २ अमलबेद टंक २ चव्य टंक २ चित्रक टंक २ जीरो टंक २ हासस्या टंक २ तजमासा ४ पत्रजमासा ४ नागकेसरी मासा ४ यानें मिहीवांटि पावउ येकगुडमें टंक २ प्रमाणगोली बांधेगोली १ रोजीना परभातपायतो पास सास जाय १० अथवा लवंग टंक २ पीपली टंक २ जायफल टंक २ कालीमिरची टंक ५ सूंठि पईसा ८ यांसर्वकी बराबरिमिश्रीपाछे यानेंमिहीवांटि टंक २ जलसूं लेतो पासनैं ज्वरनैं प्रमेहनैं अरुचिनैं सासनैं मंदाग्निनैं संग्रहणीनैं यां सर्वां रोगानैं योचूर्ण दूरिकरेछे इतिलवंगादिचूर्णम् ११

[illegible]

अथवा हिंगलू कालीमिरचि नागरमोथो सोध्योसींगीमुहरो यांनै बराबरिले यांनैंमिहीवांटिजंभीरीका रसमें मूंगप्रमाण गोलीवांधै अथवा आदाका रसमेंवांधै गोली १ रोजीनापायतो पाससास जाय १२ अथवा कालीमिरचि नागरमोथो कूठवच सोध्योमुहरो यांनै बराबरिले यांनैं आदाका रसमैं मिहीवांटि मुंगप्रमाण गोलीवांधै गोली १ रोजीना पायतौ पासनैं सासनैं कफकारोगनैंसूतिकारोगनैं संग्रहणीनैं यां रोगानैं यागोली दूरि करैछे १३ अथवा लवंग टंक १ पीपलि टंक २ हरडेकीवकल टंक ३ वहेडाकीवकल टंक ४अरडूसो टंक ५ भाडंगी टंक६ यांसारांकी बराबरिपैरसारले पाछे यांनैंमिहीवांटिचंबूलकी वकलका काढाकी पुट२१ देअर सहतसूं गोलीवांधै चणांप्रमाणकी गोली १ रोजीनापायतो सास पास क्षयी येसारा जाय १४ इतिपासकर्तरी अथवा भीमसेनी कपूर टंक १ कस्तुरी टंक १ लवंग टंक १ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ वहेडाकीछालि टंक २ कुलिंजल टंक २ दाडचूंका छोडा टका १ यां सारांकी बराबरि पैरसार यांमैंमिलावै यांसारानैं मिहीवांटि पाणीसूं चणाप्रमाण गोली वांधै गोली १ रोजीनां पायतौ पासीजाय १५

इतिकर्पूरादिगुटिका येसाराजतन वैद्यरहस्यमैंछे. अथवा आकका फूलांकीविचलीफूली अर वां बराबरि मिरचि यादोन्यांनैं वांटि मिरचिप्रमाण गोली वांधै गोली १ रोजीनापायतो पासीजाय १६ अथवा आकका फूलांकी विचलीफूली यांबराबरिलवंगयांकीगोली रत्तीप्रमाण वांधैगोली १ रोजीनापायतौ पासीजाय १७ येवृंदमैं लिप्याछे अथवा पसर कट्यालीको पंचांगले सेर ८ ईनैंपाणीमैंचालिकाढोकरै ईकाढामैं हरडे सो १०० वडीपकावै वेसीजिना

न. टी. [illegible]. [illegible]. [illegible] ... पीपल. घृत. आदि. इत्यादि.

जाय तदि काढिलेकाढामहिसीं पाछे वानेसीतलकरि गुठली काढि
वांटिले पाछे पुराणो गुड टका १०० भरले तींकी चासणीकरे पाछे
ओहरडेको चूरण येचासणीमे मिलावे पाछेयेचासणीमें ये ओषधि
नांषे सो लिषूंछूं सूंठिटका १ कालीमिरचि टका१ पीपली टका १
पत्रज टका १ तज टका १ नागकेसरि टका १ इलायची टका १
भर येमिहीवांटि येचासणीमें नांषे अर सहत आधशेर ईमेंनांषे
पाछे ईको येकजीवकरि टका १ भर रोजिना षायतो सर्वप्रकारकी
षासिजाय १८ येभृगुहरीतकीछे अथ कट्यालीको अवलेह लि०
कट्यालीसेर ४ कोकाढोकरे ईकाढामेंसेर ४ मिश्रीकी चासणीकरि
ईमें येओषदिनांषे सोलिषूंछूं गिलवे टका १ काकडासींगीटका १
चव्यटका १ चित्रक टका १ नागरमोथो टका १ सूंठि टका १ पीप
लि टका १ धमासो टका १ भाडंगीटका १ कचूर टका१यांनेंमिहि
वांटि येचासणीमेंनांषेंईमेंसेर १ सहत नांषे पाछेईनें टका१भर रो
जीनाषायतो सरव प्रकारको षास जाय १९ इतिकट्यालीको अव
लेह संपूर्णम यो भावप्रकासमें लिष्योछे अथवा अरडूसाका का
ढामें सहतनांषिर्पावेतोषासीजाय २० अथवा आकक्रापान मैण
सिल सूंठिकालीमिरचि पीपली येबराबरिले तींकी गुडाषू वणावे
वाहूकाभर्पावेतोषासीनिश्चेजाय २१ अथवा पारो सोध्योगंधक
हिंगलू सोध्योसींगीमुहरो सूंठि कालिमिरचि पीपली सेक्योगंधक
येबराबरिले पाछे पारागंधककी कजली करे पाछे ये ओषधीमिहीं
षरल करे पाछे बिजोराको रस दिन ३ षरलकरे पाछे ईकीगोली
रतीआधकीकरिके पाछे गोली १ रोजीनादिन १० षायतो षासीनें

म. टी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इत्यादि.

क्षयनैं संग्रहणीनैं सन्निपातनैं मृगीयांनैं योरस दूरिकरेछै २२ इति आनंदभैरवरससंपूर्णम् इति पासरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथहिचकीरोगकीउत्पत्तिलक्षण जतनालि० गरमवस्त वायल वस्त भारीवस्त. लूपीसीलीनै. आदिलेर जोवस्त तींका पावासैं मु पमें रंजका जावासैं पेदका करिवासैं मार्गकाचालीवासूं मलमूत्रका रोकिवासूं इतनीवस्तांसूं मनुष्यकै हिचकी होयछे सास पास पैदा होयछे अथहिचकीको स्वरूपलि० वायहेसो दोन्यु पसवाडानै अर आंतांनै दूखदेर मूंढामें होकर वडाशब्दनैंलीयां प्राणाको नास करतोथको मूंढामाहिसूं भयंकर शब्दनैंकाढेछे तीनैं मनुष्यहिचकी कहेछे सोओ वाय कफसूं मिलि पांच प्रकारकी हिचकीनैं करेछै ये कतो अन्नजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभीरा ४ महती ५ अथहिच कीको पूर्वरूप लि० कंठहियो भास्योहो मूंढोवसायलो होय कूपिमें आफरो होय तदि जाणिजें ईकै हिचकीपैदा होसी. अथ अन्नजाहि चकीको लक्षण०अन्न घणोपाय अरपाणीघणोपीवे तींकारे वाय कोपे वेगदेर तदि ओवाय ऊर्ध्वगामीहोय मनुष्यकै अन्नजाहिच कीनैं पैदाकरे १ अथ यमलाहिचकीकोलक्षणलि०मोडीमोडी दोय दोय हिचकीचालेसिरकांधिनैं कंपावतोथकी तीनैं यमलाहिचकी क हिजे २ अथक्षुद्रा हिचकीकोलक्षण० मोडीमोडी मंदमंद चाले कंठहियाकी संधिसूं तीनै क्षुद्राहिचकीकहिजे ३ अथगंभीराहिचकी कोलक्षणलि० नाभीसूं भयंकरउठे जीमेपीडघणी अनेक उपद्रवानैं

* जवतारकी विधिनंग २५ पैमान ११२ लिखीहै जीमुजब बनायकर पाननी औषधी गेरदेनी पानखाय. और पानरीको बनाणो लिखीनी सेणो. ॥ दोहा ॥ पूंगीफल मद गिरजी श्रीगजकसोसार ॥ सुनिगुडगोंदकीरे पानखाय तत्कार ॥ पीढूनी रसिक्कनी हाथे लिखुपान ॥ औषधगुडमंगदीजिये जवतारकजान ॥ जुताइथे गांगी बोसमनाण हर देनी, पानखाय.

करतीथकीतीनेंगंभीराहिचकीकहिजे ४ अथ महती हिचकीकोलक्ष णालि०सर्वमर्मस्थानमें पीडातीथकी अर सर्वगात्रनें कंपावतीथकी चालेंवेंनेंमहाहिचकीकहिजे ५ अथहिचकीकोअसाध्यलक्षणालि० हिचकी चालतां जींकोसरीर कांपिउठे अर ऊंचीदृष्टि होजाय अर अंधेरी आजाय सरीरक्षीणहोजाय भोजनमें अरुचिहोजाय अर छींकघणीआवे ऐसीये दोन्यूहिचकी गंभीरा अर महती असाध्य जाणिजे अथहिचकीको जतनालिख्यते प्राणायामका करिवासूं कहीं तरेंका डरपीवातसूं भयंकरवातका कहवासूं वाय अर कफ घटे इसी वस्तका पावासूं हिचकी दूरिहोयछे,

अथवा बकरीका दूधमें सूंठिनें पचाय ओदूध सूंठिसमेत पीवे तो हिचकीजाय २ अथवा बिजोराकोरस तीमें जोकोसातूअर सीं धोलूण मिलाय पायतो हिचकीजाय ३ अथवा सूंठि पीपाले सहत सूं चाटेतो हिचकीजाय ४ अथवा मापीकीर्वीटनें दूधमेंवांटिवेंकी नासलेतो हिचकीजाय ५ अथवा गुड सूंठि पाणीमेंवांटिवेंकी ना सलेतो हिचकीजाय ६ अथवा कांसकीजडकोरसतीमेंसहतमिलाय तींकी नासलेतो हिचकीजाय७ अथवामोरकी पांपकी रापसहत सों चाटेतो हिचकीजाय ८ अथवा बिजोराकी केसर सींधालूणसूं मि लाय पायतो हिचकीजाय ९ अथवा गवारकापाठाकोरसतीमें सूंठि मिलाय पायतो हिचकीजाय १० अथवा पोहकरमूल जवपार का लिमिरचि ये बराबरिले यानें मिहीपीसि टंक २ गरमजलसूं लेतो हिचकीजाय ११ अथवा हलद उडद यानेंवांटि निर्धूम अंगिरापरी मेलि हूकामें घालवेंको धुंवोपीवे तो भयंकर हिचकी जाय १२ ये वैद्यविनोदमेंलिख्याछे. अथवा सणकी छालिको चूरण तींको हूको

न. टी. हिक्का रोग. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १ ह. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पीवेतो हिचकीजाय १३ अथवासूंठि कालिमिरचि पीपलि जवाखो कायफल करलण पोहकरमूल काकडासींगी येसर्व बराबरिले यांनें मिहीवांटि टंक २ सहतसूं चाटेतो हिचकीजाय अरषासीसास ये भीजाय १४ अथवा पित्तपापडो पीपलि येदोन्यूं टंक २ गुड टंक ५ यांको काढो देतोहिचकीजाय १५ अथवा असाल्यूं टंक १० को काढोकरिछाणिपीवेतो हिचकी ततकाल दूरिहोय १६ यो वैद्य रहस्यमेंलिष्योछे अथवा महलोठी टंक १ सहतसूं चाटेतो हिचकी जाय १७ अथवापीपलि टंक १ मिश्रीकेसाथिलेतोहिचकीजाय १८ अथवा दूधमेंघृतघालि गरमगरमपीवेतो हिचकीजाय १९ ये सुश्रुतमेंलिष्याछे अथवा बिजोराकोरस सहत संचरलूणयेमिलाय पायतो हिचकी निश्चैदूरिहोय २० योवैद्यरहस्यमेंलिष्योछे. अथवा कैथकोरस अथवा आंवलाकोरसतीमें सहतमिलाय पीवेतो हिचकीस्वास जाय २१ योकाशिनाथपद्धतीमेंलिष्याछे.

अथवा इलायची १ दालचिनी २ नागकेसरी ३ कालीमिरचि ४ पीपलि ५ सूंठि ६ ये वधती वधतीले त्यांनें मिहीवांटिइंमें घृतमि लाय अरयां सर्व बरावरि मिश्रीमिलायटंक२जलसूं लेतो हिचकीनें अजीर्णनें उदररोगनें ववासीरनें सासनें पासनें यां रोगांनें यो दूरि करेछे. २ यो एलादिचूर्ण वृंदमें लिष्योछे इतिहिचकीरोगकिउत्प तिलक्षणजतन संपूर्णम् अथसासरोगकीउत्पत्तिलक्षणालि० ज्यांव स्तांका पावासूं हिचकी पैदाहोय त्यांहि वस्तांका पावासूं सासरोग होयछे सोवोसासरोग ५ प्रकारकोछे येकतो महास्वास १ ऊर्ध्व स्वास २ छिन्नस्वास ३ तमकस्वास ४ क्षुद्रस्वास ५ अथस्वासरोग को पूर्वरूपलि० हियोदूषे सूलहोय आफरोहोय मलमूत्र उतरे

[illegible]

नहीं मूंढामें रसको स्वाद आवे नहीं कनपटीदूषे तदि जाणिजे सा सरोगहोसी. अथसासरोगकोस्वरूपलि० सर्वसरीरमें फिरतोजो वाय सो कफसूं मिल्यो सर्वनसानेरोके तदि वोवायफिरिवासूं रहेत दिसासनें प्रगटकरे अथमहास्वासको लक्षणलि० तदिमनुष्य सा ससूं दुषीहुवोथको ऊंचेप्रकार मस्तबलदकीसीनाई सासनिरंतरले अर नष्टहुईछेसंज्ञाजीकी अर नष्टहुवोछे ग्यानजींको अरजींका नेत्र तरतराटकरे अरसासलेता मूंढोफाटिजाय अरनेत्र फाटिजाय अर बोल्यो जायनहीं गरीब होजाय अर बंकोसास दूरिसुणे ये जींमें लक्षण होय तदिओ महास्वास जाणिजे ईसासवालोतत्का ल मरिजाय १ अथऊर्ध्वस्वासको लक्षणलि० ऊंचोस्वासले नीचो आवेनहीं. कफसूं मूंढो भरिजाय ऊंचीदृष्टीहोजाय नेत्र तरतरकरे ईसाससूं दुषी हुवोथको नेत्रभ्रमताहोजाय मोह होय आवे ग्लानि होय आवे येलक्षणहोय तदि ऊर्ध्वस्वासजाणीजे. यो मनुष्यने मा रिनाषे २ अथछिन्नस्वासको लक्षणलि० सर्वसरीरकापांचूं पव नासूं पीड्योथको मनुष्यटूटो स्वासले अथवा दुषीहुवोथको सास नहींलेवे. ईकामर्मस्थानटूटीजाय तदिआफरो होय आवे प्रस्वेद होय नेत्रफाटिजाय सासलेतांनेत्र लालहोजाय चेतजातोरहे. स रीरकोवर्ण ओरहो वोप्राणीततकाल मरिजाय ३ अथतमकस्वा सको लक्षणलि० शरीरकोपवनउलटोफिरि नसांने रोकिदे तदि कांधीसीरनेंपकडि कफनें प्रगटकरे तदिओकफकंठमें जाय शब्दघु रघुरनें करे प्राणांका हरवावाला स्वासनें प्रगटकरे. तदि मनुष्य स्वासका वेगकरि ग्लानिनेंप्राप्तिहोय तदिवेंकी अग्नि मंदिजाय

न. टी. स्वासरोगमैं पुष्करमूल [illegible] सो घरोग [illegible]. [illegible] हिंगोष्ठा [illegible] [illegible] सौंठ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

तदि श्रोपासे जादि मोहने प्रातिहो अर कफसूं छूटे तदि सुषी होय अर मुषमाहीसूं कफ नीकलजाय तदि श्रोघडो दोयेक सुष पावे तदिवेसूं बोल्योजाय अर वो सोवे तदिसासहोय आवे तदि वेनेंनींद आवेनहीं वेस्योहीरह्यां चेननपडे अरगरमी सुहावे श्रों प्यांडपारि सोजो होय ललाटमें पसेव आवे मूंढामूके धवणीकोसी नांईसासले मेहका पवनसूं सीतल वस्तसूं श्रोवधे मधुर वस्तसूंव धे. येलक्षणहोय तदि तमक सास जाणिजे येसासजाप्यछे. ८अथ क्षुद्रस्वासको लक्षणलि० लूपीवस्तकापावासूंपेटका करिवासूं को ठामे पवनहेसो क्षुद्रस्वासनें प्रगटकरें तदिओमनुष्याकीपान पान कीगतिनें रोकेनहीं इंद्रियानें पीडाकरेनहींयेलक्षण होय तदिक्षुद्र स्वास जाणिजे. ६ योबलवानपुरसकेंसाध्यछें. क्षुद्रस्वाससाध्य तम कस्वास कष्टसाध्य अरमहास्वास ऊर्ध्वस्वासछिन्नस्वासयेतीन्यूअ साध्य प्राणकाहरवावालाछे अथ स्वासरोगकोजतनलि० लूणमें तेलघालि सुहावतो सुहावतोहियानेंसेकेतो सासदबे १

अथवा आदाकोरस सहतमेंमिलाय चाटेतो सासजाय २ अथ वा आदाकोरससेर १ तीमेंसूंठिपा ऽ। बहेडाकी छालपाव ऽ। बक रीकोमूतसेर २ यांसारांनें गरमकरिक्यूजाडो करेपाछेमें सहतसेर ऽ॥ मिलाय टंक १ भररोजीनापायतोपाससासजाय ३ अथवा दस मूल कचूर राला पीपली सूंठि पोहकरमूल भाडंगी काकडासींगी गिलवे चित्रकयांनें बराबरिले यांको काढो टंक२भरकोरोजीना लेतो सासपास पसवाडाकोसूलजाय ४ अथवापेठाकी जडकोचूर्ण टंक १ गरमपाणीसूं लेतोपास सासनिश्चेजाय५अथवा हल्दकालीमिरचि

८ श्वासरोग महाकठिन है. औषधिकरके अनेक प्रकारका इलाजकि उपाय करावे. और मंत्रादिक भी करावे. परंतु कोईतो [illegible]. [illegible] करावाये [illegible] मनगमता औषधीसूं [illegible]. [illegible] परमेश्वरकी [illegible] [illegible]. और [illegible] श्वासरोग [illegible].

दाप पीपलि रास्ना कचूर यांनें बराबरिले यांनेंमिहींबांटि टंक१गुड
अरकडवातेल्लके साथि चाटेतो सासकोरोगनिश्चेजाय६ अथवा
भाडंगीसेर ऽ १ तीनेंऔटायतींको रसकाढिईमें टकासो१००भरगु
डकीचासणीमेंहरडेकीछालको चूर्णसेरऽ१ नापे चासणीपकताहीमें
पाछेचासणीठंडीहुवां टंक६ भरईमें सहतनापे सूंठिटका१भरकाली
मिरचि टका १ भरपीपलि टका१ भर तजटका १ भरपत्रजटका१
नागकेसरिटका १ जवषार टंक २ यांनेंमिहींबांटि वेचासणीमेंमिला
यदे पाछेपईमा १ भर रोजीनापायतो सासकोरोगजाय पास ववा
मीर गोलो क्षयीरोग उदररोग येसाराजाय ७ यो भाडंगीको अव
लेहछे. येसारा जतन भावप्रकाशमें लिप्याछे. अथवा पारो टंक २
गंधक टंक २ सींगीमोहरो टंक २ सुहागोफूलायो टंक २ मेणसिल
टंक २ मिरच टंक २ सूंठि टंक २ पीपलि टंक २ प्रथमपारागंधक
की कजलीकरि तीमें येऔषधि मिलावे पाछे ईंके आदाका रसकी
पुट १ देपाछे रती१ रोजीनापायतो सासजाय८इतिस्वासकुठाररस
अथवा पारो१भाग गंधकआधोभाग यांकीबराबर तामेंश्वरले यांनें
कंवारका पाटाकारससूं परल कर पाछेईनें तांबाकी डाबीमें घालि
वालुकाजंत्रमें दिन १ पचायसिद्धिकरे पाछे ईंरसनें रती २ पानमें
पावतो सारा रोगजाय ९ इतिसूर्यावर्तरसःयो वैद्यविनोदमें लिप्यो
छे अथवा काकडासींगी सूंठि पीपलि नागरमोथो पोहकरमूल क
चूर कालीमिरचि यांनें बराबरिले अरयांकीबराबरिमिश्रीले पाछे
यांनेंमिहींबांटि टंक२गिलवे अरडूसा पीपलिपीपलामूल चव्य चि
त्रक सूंठि यांका काढासूं योचूरण लेतो सास रोगजाय ११ येचक्र
दत्तमेंछे, अथवा पीपलि पोहकरमूल हरडेकीछालि सूंठि कचूर क

म. टी. [illegible] नाम [illegible] लिख्योछे. [illegible] लिख्योछे. [illegible] लिख्योछे, [illegible]

मलगष्ठा यानें वराबरिले याको चूर्णकरि यांबराबरि गुडसूं गोलीबांधे चणाप्रमाण गोली १ तथा २ तथा ३ रोजीनापायतो सासजाय १३ अथवा पारो गंधक सोध्योसार सूंठि कालीमिरचि पीपलि पत्रज नागकेसरी नागरमोथो वायविडंग संभालु कपेलो पीपलामूल येसारी वांसूं दूणीले पाछै यांसारानें मिहिवांटि जलपीपलिका रसकी पुट ३ दे पाछैईकी चणाप्रमाण गोलीबांधे गोली १ रोजीनापायतो सासनें बवासीरनें भगंदरनें हियाकी सूलनें पांसूंकी सूलनें संग्रहणीनें उदररोगनें प्रमेहमात्रनें यांसारानें यो महोदधिचूर्ण दूरिकरैछै १३ इति महोदधिरस येसर्वसंग्रहमें लिष्याछै अथवा पारो सोध्योगंधक सार सुहागो रास्ना वायविडंग त्रिफला देवदारु सूंठि कालीमिरचि पीपलि गिलवै कमलगष्ठा सोध्योसींगीमुहरो ये बराबरिले पाछै पारागंधककी कजलीकरे कजलीमें येमिलाय सहतसूं रती १ तथा २ प्रमाणकी गोलीबांधे गोली १ रोजीनापायतो सासरोगजाय १४ इति अमृतार्णवरस यो वैद्यरहस्यमेंछै अथवा पारो गंधक बराबरिले यांकी कजली करि चोलाईका रसमें दिन ५ परलकरे पाछै वज्रमुसीमें ईनें वालिवालुकाजंत्रमें ईनें पकावे दिन १ पाछैईनें रती २ पानसूं पायतो सास हिचकी दूरिहोय १५ इति मेघडंबररस योरुद्रदत्तमें लिष्योछै. इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथेरक्तपित्त राजरोग क्षयीरोग सोसरोग हिचकी सासरोग यांकि उत्पत्ति लक्षण जतननिरूपणंनाम पंचमस्तरंगःसंपूर्णम् ५.

अथ स्वरभेदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते मनुष्यकैसो घणांबोल्यासूं काठा सुरका पढवासूं कंठकै कहीं तरैकी चोट लागि

[illegible]

स्वरभंग जाय ५ घृतगुडका पावासूं वायको स्वरभंग जाय ६ गरम दूधसों पित्तको जाय ७ पीपलि पीपलामूल कालीमिरचि यांनें गोमूत्रसूं पीवेंतो कफको स्वरभंग जाय ८ अथवा कट्यालो टका १०० भरलेईसूं आधोपीपलामूल लेईसूं आधोचित्रकलेचित्रक बराबरिद समूलले यांनें मण एकपाणीमें औटावे ईको पाणी सेर८४ राषे अर पाणीछाणले पाछे ईपाणीमें टका १०० भर पुराणा गुडकी चासणी पतलीकेरपाछेईचासणीमें ये औषधि मिहिवांटि नांषे ईमें सहतसेर १ नांपे पाछे टका २ तथा ३ रोजीनापायतोसर्व प्रकारका स्वरभंगनें सास पासनें मंदाग्निनें गलाकारोगनें आफरानें मूत्रकृछ्रनें यांसा रानें योदूरिकरेंछे. ९ इति कट्यालीको अवलेह ये सारा भावप्रकासमेंलिष्याछे. अथवा अजमोद हलद चित्रक जवपार आंवला ये सारा बराबरिले यांनेंमिहीवांटि टंक २ घृतसहतके साथि चाटेतोभ यंकरभी स्वरभंग जाय १० अथवा हरडेकीछाल वच पीपलि यांनें मिहिवांटि गरम जलसूं लेतो मेदकाक्षयीरोगको स्वरभंग जाय११ यो वैद्यविनोदमें लिष्योछे. अथवा बहेडाकी छाल पीपली सिंधोलूण आवला यांनें मिहीवांटि गऊकी छाछिसूं अथवा गोमूतसूं लेतो स्वरभंग जाय १२ योवृंदमेंछे अथवा जायफल पीपलि नील बिजौराकी केसरिये सारि मिहीवांटि सहतमें चाटे तो स्वरभंग जाय अर स्वर निपट चोपोमिहीन होजायचो जायफलको अवलेहछे योसर्व संग्रहमेंछे.१३ अथवा कुलिंजन मूंडामेंराषे थंके रसचूपेतो स्वरभंग जाय १४ अथवा चव्य अमलवेद सूंठि कालीमिरचि पीपलि दांसल्या पत्रज तज जीरो चित्रक इलायची ये सारि बराबरिले यांनें

[illegible]

मिहिवांटि टंक २ पुराणा तिगुणा गुडमें लेतो स्वरभंग पीनस क
फकारोग अरुचि ये साराजाय १५ इतिचव्यादि चूर्ण अथवा पारा
कीराप तामेस्वरसार ये बराबरिले तांकें कव्यालीका फूलांका रस
की पुट २१ दे पाछे वेंकीगोली मूंग प्रमाण बांधे गोली १ मुढामें
रापेतो स्वरभंग दूरिहोय या गोरपनाथजीकी गोलीछे १६ अ
थवा ब्राह्मी वच हरडेकी छालि अरडूसो पीपलि यानें बराबरिले
यानें मिहिवांटि टंक २ सहतके साथिदिन १४ लेतो स्वरभंगनि
श्चैजाय अर वेंको सुरकिन्नर कोसोहोजाय १७ ये साराजतन वैद्य
रहस्यमेंलिप्याछे इतिस्वरभंग रोगकोउत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्
अथ अरोचक रोगकोउत्पत्ति लक्षण जतनलि० सोचसूं क्रोधसूं मो
हसूं अतिलोभसूं डरपवासूं मनपड्यो जाय इसा भोजनसूं अर
बूरांतरेकारूपका देपिवासूं बूरांतरेका गंधका सूंघिवासूं तदि मनु
ष्यांके वायपित्तकफ हेंसोअरुचिनाम रोगनें पेदाकरेंछे सोवा अरु
चिपांचप्रकारकोछे. वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४
सोकादिककी ५ अथ वायकी अरुचिको लक्षणलि० पाटो कषाय
लोमूंढोहोय हियामें सूल चाले रुचिजातीरहे भोजनसूंतो वायकी
अरुचि जाणिजे १ अथ पित्तकी अरुचिको लक्षणलिप्यते कडवो
पाटो गरम विरस सलूणो जींको मूंढोहोय अरसरीरमें दाह होय
मूपसोसहोयतो पित्तकी अरुचिजाणिजे २ अथ कफकी अरुचि
को लक्षणलिप्यते मूंढोमीठोहोयअरचिपचिपोहोयसरीरभार्‍योहोय
गंधकुष्टहोय लालपडे सरीरमें जागां जागां पीडाहोय भोजनमें अ
रुचिहोयतो कफकीअरुचिजाणिजे ३ येसर्वमिलेतदि सन्निपातकी
अरुचिजाणिजे ४ अथ सोकादिकसूं ऊपजीजोअरुचितींको लक्षण

न. टी. [illegible]

लि० पेटमें भूपलागै मूढामें चलैनहीं या सोकादिककी अरुचि जाणि
जे५अथ अरुचिको स्वरूप लिप्यते मूढामें अन्नको ग्रासले तदि पु
रसनें क्यूंभीस्वाद आवे नहीं तदि जाणिजे ईंके अरुचिको रोगछै
अथ भुक्तद्वेषको लक्षण लिप्यते भोजनको चिंतवन करो अथवा
भोजननेदेष्यो तदियो भोजन रुचे नहीं तादिवैंके भुक्तद्वेष नामकहीं
जें अथ अरुचिरोगकाजतन लिप्यते भोजन पहली सींधोलूण ल
गाय आदो पावतो अरुचिजाय भूषलागै कंठ जीभ शुद्धहोजाय
अर सहत आदाको रस मिलाय पीवेतो अरुचि पाससासजाय २
अथवा पकी आमलीको सरवत मिश्रीघाली करैतीमें इलायची ल
वंग भीमसेनीकपूरको प्रतिवासदे अरयो सरवतपाय.

अथवा ईंका कुरलाकरतो अरुचिजाय ३ अथवा राई जीरोसे
कीहींग सूंठि सींधोलूण येमिहींवांटि अनुमान माफिकगउका द
हींको मठो करितीमें येघालि पीवेतो अरुचिजाय भूषघे८अथवा
गऊका दहींनें वस्त्रसूं छाणि तीमें मिश्रीमिलाय अरईमें इलायची
लवंगभीमसेनीकपूर कालीमिरचियेअनुमानमाफिकईंमेंमिहींवांटि
नाषिपावतो अरुचितत्काल जाय ५ इतिसिषरणकीक्रिया अथवा
अनारदाणा टका २ मिश्री टका८सूंठि टका १ कालीमिरचि टका
१ पीपली टका १ तज टंक २ पत्रज टंक २ नागकेसरी टंक २ यां
नेंमिहींवांटि टंक २ जलसूं रोजीना लेतो अरुचिजाय पासीजाय ६
इतिदाडिमादिचूर्ण अथवा लवंग कंकोल मिरचि षस चंदन तगर
कमलगट्टा कालीजीरो नेत्रवालो अगर नागकेसरि पीपलीसूंठि
चित्रक इलायची भीमसेनीकपूरजायफल वंसलोचन येसर्व बराब
रिले यांसारांसूं आधीमिश्री लेपाछै यानेंमिहींपीसिटंक १ रोजीना

न. टी. अग्निमान्द्यने [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible].

जलसूं लेतो अरुचिनें मंदाग्निनें क्षीणपणानें वंधकुष्टनें पासीनें हिच कीनें राजरोगनें संग्रहणीनें अतिसारनें प्रमेहनें यांसारारोगानें ल वंगादिचूर्णदूरिकरेंछे.७ येसाराजतन भावप्रकाशमेंछे अथवा सोंफ जीरो कालीमिरची डासख्यां अमलवेद संचरलूण गुड सहत बिजो राकीकेसर तज पत्रज वंसलोचन इलायची डोडांकाबीज अनारदा णाजीरांयेसारा अधेलाअधेला भरिले८अथवा पींपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि कालीमिरची अजमोद डासख्यां अमलवेद आ सगंध अजवायण कैथ येभी अधेलाअधेला भरले मिश्रीटंक ४ भरले यांनेंमिहीवांटि टंक २ रोजीनाजलसूं लेतो अरुचिनें सासनें पासनें सूलनें वमननें रक्तपित्तनें यांसारां रोगानें यो दूरिकरेंछे ९ इतिवृहदेलादिचूर्ण यो सारसंग्रहमें लिप्योछे. अथवा जवषार सा जी सेक्यो सुहागो पांचूलूण सूंठि कालीमिरची पीपलि त्रिफला सार भीमसेनी कपूर चव्य चित्रक अनारदाणा डासख्यां आदो ये सर्व बराबरिले यांनें मिहीवांटि अजवायणका अर्कका पुट ३ दे पाछे नींबूका रसकीपुट ५ दे पाछे अमलवेदका रसकी पुट ३ तीन दे पाछे ईरसकी चणाप्रमाण गोली बांधे गोली १ रोजीनापायतो अ रुचिनें मंदाग्निनें गोलानें प्रमेहनें सासनें पासनें कफनें नानाप्रका रका अनुपानसूं यो अग्निकुमाररस अरुचिनें दूरिकरेंछे. १० इति अग्निकुमाररस सम्पूर्णम् यो सर्वसंग्रहमेंछे. इति अरुचिरोगकी उ त्पत्ति लक्षण जतन सम्पूर्णम् ॥

अथ छर्दिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनालि० घणीपतली वस्तका खावासूं घणींचीकणी वस्तका पावासूं सूगली वस्तका पावासूं पेटमें कृमिकापडिवासूं दुरगंधका देषवासूं स्त्रीकें गर्भकारहवासूं अतिद

भ. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

तावला भोजनका करिवासूं वायपित्तकफ यांमें दुष्टहोय अंगानें पी
डाकरताथका मूंढाऊपर दौडे मूंढा द्वारापाछोपिरे। सर्व कष्टायदेछे
तदि ईने मनुष्य छर्दिकहेछे. सोवाछर्दि ५ प्रकारकीछे वायकी १ पि
त्तकी २ कफकी सन्निपातकी ४ सूगली वस्तनें आदिलेरतींकादेष
वाकी ५ अथ छर्दिको पूर्वरूप लि० हियासूं पारोपाटो प्रथमहो नि
कले अर डकार आवेनहीं लाळपडने लागे पारो मूंढो होजाय अ
न्नपान ऊपरिरुचि जातीरहे तदिजाणिजे वमन होसी अथ वायकी
छर्दिकोलक्षण लि० हियामें पसवाडामें पीडाहोय मुष सोसहोय मथ
वायहोय नाभिदूषे पासहोय स्वरभेदहोय. डकारको शब्द ऊंचो हो
य वमनमें झाग आवे वमनको रंग कालोहोय कसायलो होय घणे
वेगसूं थोडोछादे छादतां दुष घणो पावे जीमें ये लक्षण होयतो वाय
की छर्दिजाणिजे १ अथ पित्तकी छर्दिको लक्षण लिष्यते मूर्छाहोय
तिसहोय मुष सोसहोय माथो तातो होय तालवो नेत्र ये तातोहोय
अंधेरी आवे भोलि आवे अर उन्हहरयो लालगरमने षीपां छादे ये
लक्षण होयतो पित्तकी छर्दिजाणिजे. २ अथ कफकी छर्दिको लक्षण
लि० तंद्राहोय मूंढो मीठोहोय कफछादे नींद आवे भोजनमें अरुचि
होय सरीर भारीरहे चीकणो मीठो जाडो कफलीयांछादे रोमांचरहे
ये लक्षण होय तदि कफकीछर्दि जाणिजे ३ अथ सन्निपातकी छर्दि
कोलक्षणलिष्यते सूलहोय अन्नपचेनहीं अरुचिहोय दाहहोय तिस
होय सासहोय प्रमेह ये सारा घणां निरंतर रहे अर सळूणो षाटो नी
लोजाडो ऊनोलाल इसो वमन होयतो सन्निपातकी छर्दि जाणिजे
अथ सूगली वस्तनें आदिलेर तींकादेषवासूं उपजी जो छर्दि तींको

१ छर्दिरोग संस्कृत नामछे. [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

लक्षण लिप्यते उत्क्लेद होय छर्दिकरवालागिजाय ५ अथ छर्दिरोग का जतन लिप्यते धणा सूंठि दसमूल यांका काढासूं वायकी छर्दि जाय १ अथवा घृतमें सींधोलवणघालो पीवेतो वायकी छर्दिजाय २ अथवा मूंग आंवला यांनें ओटाय यांको रसकाढि ईमें घृत अर सींधोलूण नापिपीवेतो वायकी छर्दिजाय ३ अथवा मूंग मसूर जव यांका चूनकी रावकरितीमें सहत मिलाय पीवेंतो पित्तकी छर्दिजाय ४ अथवा आंवलाकारसमें चंदन सहत मिलाय पीवेतो पित्तकीछर्दि जाय ५ अथवा पित्तपापडाका क्वाथमें सहत नापि पीवे तो पित्तकी छर्दिजाय ६ अथवा गिलवे नींबकी छालि पटोल त्रिफला यांको काढोकरितीमें सहत नापि पीवे तो पित्तकी छर्दिजाय ७ अथवा मापीकी वींट मिश्री चंदन सहतसूं चाटे तो पित्तकीछर्दिजाय ८ अथवा पीलांको सातू घृत मिश्री सहत मिलाय खायतो पित्तकी छर्दिजाय ९

अथवा मसूरको सातू मिश्री मिलाय पायतो पित्तकी छर्दिजाय १० अथवा दाडयूंका रसमें सहत नापि पीवे तो वायपित्त कफकी छर्दिजाय ११ अथवा चावलांका पाणीमें सहत नापि पीवेतो पित्तकी छर्दिजाय १२ अथवा इलायची नागरमोथो नागकेसरि चावलां की पील गोरीसर चंदन बहुफली बोराकीमींगी लवंग पीपलि ये च रावरिले यांनें मिहीपीसि टंक १ तथा २ सहतसों चाटे तो त्रिदोषकी छर्दिजाय १३ अथवा पीपलका छोडानें बालि पाणीमें बुझाय वो पाणी पीवे तो छर्दिजाय १४ अथवा बोरकी मींगी आंवलाकी मींगी पीपलि मापीकी वींट यांको काढोकरि तीमें सहत मिश्री मिलाय पीवेतो छर्दिजाय १५ येसव वैद्यविनोदमें लिप्याछे. अथवा

[illegible]

नसांनें सोसि अर कफहे सो मनुष्यके तिसनें उपजांवेछे. तदिवेंति सकरिपीडित मनुष्यहे सो नींदन सरीरका भाखापणानें प्राप्ति होय छे. अर वेंको मूंढो मीठोरहे. अर ओमनुष्य सूकतोजाय तदि जाणिजें ईंके कफकी तिसछे.३ अथ शस्त्रादिकांकी चोटसूं उपजीजो तिसतींको लक्षण लि० शस्त्रादिकांकालागिवासूं सरीरको लोही निकले तींसूं पीडाहोय तदि घणो तिसलागे. ४ अथ क्षीणतासूं उपजी जो तिस तींको लक्षण लिप्यते. हियो दूपे कफहोय मूंढोसूके सरीरमें सून्यताहोय तिस घणीलागे पीतो पीतो धापेनहीं. ५ अर येही लक्षण आंवकीतिसकाजाणिजे. ६ अथ भोजन उपरांति तिसलागे तींको लक्षण लि० घणो चीकणो पाटो सलूणो भाखो अन्नपायो होय तदि ततकाल तिसलागे. ७ अथ तिसका उपद्रव लिप्यते. जींके मुपको स्वर वेठिजाय कंठ गलो तालवो सूके अर ज्वर मोह सास पास ये होय तो येतिसवालो मरिजाय अथ तिसरोगका जतन लि० वायकी तिसवालानें गरमअन्न अर जल आछ्या तींसूं वायकी तिसजाय १ अथवा दही गुडसूं वायकी तिसजाय २ अथ पित्तकी तिसको जतन लिप्यते सोनो रूपो गरमकरि वे पाणीमें बुझाय पाछे. ओ पाणी पीवे तो पित्तकी तिसजाय ३ अथवा मिश्रीका टंढासरवतसूं पित्तकी तिसजाय ४ अथवा धणोरात्रिमें भेवें पछे वेनें प्रभात घोटि वेमें मिश्रीमिलाय पीवेतो पित्तकी तिसजाय ५ अथवा दाडयूका सरवतमें मिश्री मिलाय पीवे तो पित्तकी तिसजाय ६ अथवा सीतलजगामें रहवासूं अर जलक्रीडासूं सीतल वस्त्रांका पहरवासूं पित्तकी तिसजाय ७ अथवा कपूरचंदन अगरका लगावासूं पित्तकी तिस जाय८ अथ कफकी तिसको जतनलि०तीपी कडवी ऊनी वस्तपापा

[illegible]

यांजोनेत्र करणनें आदिलेर त्यानें वायपित्त कफवसिकरि संज्ञानें वहवावालि जोनसां त्यानें वेवाय पित्तकफरोकि अर अंधकारनें तत काल वे प्राप्तिहोय मनुष्यनें काष्ठकीसीनाई पृथ्वी उपरिनापी दवे सोवनें सुप दुपको ग्यान रहेनहीं तीनें वेयहे सो मूर्छा अर मोह कहेछे. सो यामूर्छा ६ प्रकारकीछे वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ लोहीकी ४ मद्यकी ५ विसकी ६ यांछवांही मूर्छाविषे पित्तहे सो मुष्य प्रधानछे. अथ मूर्छाको सामान्यस्वरूप लि० कुपथ्यका सेवावालो अर हीनछे पराक्रम जींको अर क्षीण अर मद्यादिकका पीवावालो ऐसो जो पुरस तींके अग्यानको हेतु ऐसो जो तमोगुण पित्तरूप सोवधिकरि ग्यानरूप ऐसो जो तमोगुण अर रजोगुण त्यानें छादितकरि अर दसो इंद्रियांका स्थानाके विसे वायपित्त कफहे सो ग्याननें वहवावाली जो नसां त्यानें आछादनकरि अोसुप दुपको नासको करवावालो ऐसो अग्यानको हेतु जो तमोगुण सोवधि वेगदेकरिके मनुष्यकों पृथ्वीपरि काष्ठकीसी नाई नापिदेछे. सो वेने वेयहे सो मूर्छा कहेछे १ अथ मूर्छाको पूर्वरूप लिष्यते हियोदूषे जंभाई घणीआवे मनमें ग्लानिहोय आवे संग्याकी दुर्बलता होयजाय तदि जाणिजे ईपुरसके मूर्छाको रोग होसी अथ वायकी मूर्छाका लक्षण लिष्यते आकास नीलो अथवा कालो अथवा लालजींमें दीषे पाछे अंधकारमें प्रवेस होयकरि ग्यान होयछे. सरीर कांपे अंगामें फूटणी होय हियो दूषे सरीर कृशहोय लाल काली जीनें छाया दीषे येलक्षण जींके होय तींके वायकी मूर्छा जाणिजे १ अथ पित्तकी मूर्छाको लक्षण लिष्यते आकास लाल हन्यो पीलो जीनें दीषे पाछे वेनें मूर्छा आवे पाछे पसेव आवे तदि ग्यानहोय अर तिसलागे स

[illegible]

रीरनें संताप होय लाल पीला जींका नेत्रहोय मुखमाहींसूं टूटा अ
क्षर नीसरे शुद्ध नीकलेनहीं सरीरकी कांति पीली होजाय तदि पित्त
की मूर्छा जाणिजे २ अथ कफकी मूर्छाको लक्षण लिख्यते मेघकी
घटानलीयां आकास जींनें दीपे पाछे वेनें मूर्छा आवे पाछे मोडोजांनें
ग्यान होय अर जींको सरीर जाडो पसे थांसतो ग्यातहोय अर ला
ळ जींके घणीपडे कडवो गरम थूंके तो कफकी मूर्छा जाणिजे३ अर
सर्वलक्षणमिलेतदि सन्निपातकी मूर्छा जाणिजे. ४ यो मूर्छा मृगी
कतुल्यछे सूगलीवस्त देख्याविनाही आवे ४

अथ लोहीकी मूर्छाकोलक्षणलि० मनुष्यनें लोहिकी दुर्गंधी आवे
पृथिवी अर आकास अंधकाररूपहोदीसे अर सर्वत्र लोहीको वास
आवे निश्चल दृष्टिहोय सास आछीतरे आवेनहीं पाछे मूर्छाआवे
तदिवेके लोहीकी मूर्छा जाणिजे ५ इसीतरह चंपाका पुष्पादिकांका
सूंघिवासूं मूर्छा होयछे. यांईको सुभावछे. अथ मद्यकी मूर्छाको लक्ष
ण लि० घणोमद्यपियांमनुष्यवके घणो अरसोयजाय पाछे संग्याजा
तीरहे.अर पृथ्वीपरहातपगपटकजे ठाताई वेमद्यकोसरीरमें अमल
रहे सरीरकांपे सोवे घणो तिसलागे येलक्षणहोय तदिमद्यकी मूर्छा
जाणिजे ६ अथ विसकी मूर्छाको लक्षणलि० विष खायोय तींकोसरी
रकांपे अर नींद घणीआवे तिसघणीलागे संज्ञाजातीरहे. मूंडोकालो
होजाय अतिसार लागजाय भोजनमें रुचि जातीरहे. येजोमें लक्षण
होय तदि विषपायाकी मूर्छा जाणिजे ७ अर तमोगुण अर पित्तका
आधिक्यपणाते मूर्छा होयछे. अथ भ्रमकोलक्षण लि० अर रजोगु
णअरवायपित्त मिले तदि भ्रमहोयछे अथ तंद्राकोलक्षणलि० तमो
गुण अर वाय कफमिले तदि तंद्रा जाणिजे. आंख्यांनेज मूल्यांनी अ

म. टी. मद्य [illegible] होणें, मंदिरा, माशी, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

थनिद्राको लक्षणलि० तमोगुण अरकफमिले तदि वेपुरुपको मनपेद कूं प्राप्तिहोय अर दसूंइंद्रियांभी पेदकूं प्राप्तिहोय तदि वेइंद्रियांहिसो आपका विपयनें ग्रहणकरेनहीं तदिपुरससोवे अथसंन्यासको लक्षणलि० हियामेंरहताजो वायपित्तकफ येद्रोपकूं प्राप्तिहोय वाणी देह मनकीचेष्टाकूं ग्रहणकरि निर्बल पुरसकूं काष्ठकीसीनांई मूर्छितकरेछे तीनेसंन्यासकहिजे. अथ मूर्छाकोजतनलि० तिलादिकांका सेकसूंवायकी मूर्छाजाय १ अथ पित्तकी मूर्छाको जतन लि० सीतल सरबत मात्रसूं पित्तकी मूर्छाजाय २ चमत्कारिक मणिका धारिवासूं मूर्छा जाय ३ कपूरचंदन उगेरे सीतल द्रव्यका लेपसूं मूर्छाजाय ४ अथवा वोरकीमिंगी सीतल मिरचि पस नागकेसरि येचारुटंक ५ लेयांनें भिजोय सीतलजलसूं निचोय सरबतकरि ईमें सहतमिलाय मिश्री मिलाय पीवें तो मूर्छाजाय ५ अथ मिठादाडूंका सरबतमें मिश्री मिलाय पीवे तो मूर्छाजाय ६ अथवा मिन्नका द्रापांका सरबतमें मिश्रीमिलाय पीवेंतो मूर्छाजाय ७ अथवा सावणनें जलमें घसि अंजन करेतो मूर्छाजाय ८ अथवा सिरसकावीज पीपलि कालीमिरची सींधोलूण येगोमूतमेंवांटि अंजनकरेतो मूर्छाजाय ९ अथवा मेणसिल वच लसण यानें गोमूत्रमेंवांटि अंजन करेतो मूर्छा जाय १० अथवा मेणसिल महुवो सींधोलूण वच कालीमिरचि येपराबरिले यानें जलसूंमिहीवांटिनासदेतो मूर्छाजाय ११ अथ लोहीकीमूर्छाको जतनलि० सर्वसीतलजननसूं यामूर्छाजायछे १२ अथमद्यकीमूर्छाकोजतनलि० मद्यकीमूर्छाविसें थोडोसो मद्य ओर पावेंतो मद्यकी मूर्छाजाय १३ अथवा सोवासूं मूर्छाजाय १४ अथ विसकीमूर्छाको जतनलि० विप पावा वालानें वमनकराछे येदलसूं अथवाटोलाभू

[illegible]

थासूं अथवा फिटकडीसूं गरमपाणी पीपलि उगैरे कहातें वमन
करावेंतो विषकी मूर्छाजाय १५ अथवा पीपलि माखो पारो तामेसु
र पस नागकेसार ये बराबरिले भांनिंरती १ सीतल जलसूं देतोसबं
प्रकारकी मूर्छाजाय १६ अथ भोंलिकोजतन लि० धमासाका का
ढामें घृतनापी पीवेतो भोंलीजाय १७ अथवा हरडे आंवलाका का
ढामें घृतनापिपीवेतो भोंलीजाय १८ अथवा सूंठि पीपलि सोफ हर
डेकीछालि ये टका टका भरले गुड टका६ भरले तींकी गोली टंक ५
भरकी करें गोली १ रोजीनापायतो भोंलिजाय १९ अथ तंद्रा अ
तिनिद्राको जतन लि० सींचोलूण कपूर सरस्यूं मेणसिल पीपलि
महुवाकाफूल यांनें घोडाकी लालसूं मिहींबांटि अंजन करेतो तंद्रा
जाय अर अतिनिद्रायेदोन्यूंदूरिहोय २० अथवा सहजणांकाबीज
सींधोलूण सरस्यूं कूठ यानें बकराका मूतसूं मिहींबांटि नासदे तो
तंद्रा अतिनिद्रा येदोन्यूंजाय २१ अथवा कालिमिरचि सहजणां
काबीज सूंठि पीपलि येबराबरिले यांनें अगस्त्याकारसमें मिहिबां
टिनासदेतो तंद्राजाय २२ ये साराजतन भावप्रकासमेंछे. अथवा
सूंठिकारसमें सहत मिश्रीमिलाय पीवेतो मूर्छाजाय अथवा कोंछ
कोफलीका लगावासूं मूर्छाजाय २४ इति मूर्छाभ्रमतंद्रानिद्रासंन्या
स यांरोगांकी उत्पत्तिलक्षणजतनसंपूर्ण. इति श्रीमन्महाराजाधि
राजमहाराजराजराजेंद्र श्री सवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसा
गरनामग्रंथे स्वरभेद अरोचक छर्दि मूर्छानिद्रादिरोग यांका भेदसं
युक्त उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनाम षष्ठः स्तरंगः ६.

[illegible]

अथ मदात्ययरोगकीउत्पत्तिलक्षणजतनलि० जोगुण विषभक्षण मेंछे सोहीगुणमद्यकापीवामेंछे. वुरीतरपाणीकुपथ्यकेसाथिजोपुरस मद्यपीवेछेके मदात्ययनेंआदिलेरघणारोगहोयछेइंवास्तेमद्यआछी तरेसूं पीवोजोग्यछे. इंनें आछीरीतसूंपीवेतो अमृतकासागुणकरेछे. अर इंनें वुरीतरेसूंपीवेतो रोगानें उपजाय विषकीतरह मारिनापेछे यहांदृष्टांतदीजेछे. जेसे मनुष्यहे सो आछीतरे आपकी भूषमाफिक अन्नको भोजनकरेयपतउपरिअर प्रमाणपूर्वकतो अन्न अमृतकीतु ल्यगुणकरे अर सरीरनें निरोगरापे अरओहीअन्नकोभोजन पसूकी तरेपायअरघणाथोडाको ग्यान नहींरापे तोवो भोजनवासीनें आदि लेर रोगानें उपजावेछे. मनुष्यनें तत्कालमारिनापे ऐसेही मद्य अर विष ये दोन्यूंप्राणका हर्ताछे. पणियांनें युक्तिसूं सेवनकरेतो येदोन्यूं अमृतकीतुल्य गुणकरेछे. रोगमात्रनें दूरिकरेछे. सदापुरुषनें तरुण रापे अथ विधिसूंमद्यपीवे तोकोफल लि० प्रातसमें सोचादिक जाय स्नानादिककरि टका २ भरसे तिसूं मद्यपीवे मध्यान्हसमें चीकणाभो जनकेसाथि टका ४ भर पीवे. रात्रिका भोजनकेसमें प्रहररात्री प्रथ मटका८भर मद्यपीवे तोयोमद्य अमृतकागुणकरे भूषवीर्यादिकवधा वे रोग आवादेनहीं अर चोपोकाच्यो नसाको पीवे अर क्यूंआछया भोजनके साथिही पीवे मन प्रसन्नरापि पीवे समेंकी समेंतो मद्यनें कह्याछे सो गुणकरे सोगुण लिपूछूं. काम वधावे. मन प्रसन्नरापे तेजनें पराक्रमनें वुद्धिनें स्मृतीनें हर्षनें सुपनें भोजननें नींदनें मैथु ननें यां सारानें आछीतरेपीयोमद्यवधावेछे. अर अन्यथापीवेतो म दात्ययनें आदिलेर अनेकरोगानें अनेकप्रातांनें उपजावेछे सोलि षूंछूं वषवालागिजाय स्मरणजातोरहे. वाणीको अर सरीरको चेष्टा

म. टी मदात्यय कहा मदात्ययरोग लिप्योछे. [illegible] [illegible] मदात्ययो कहा है[illegible]. [illegible]मदात्ययरोग [illegible] सो मद्यको मात्राकी[illegible] होय सो मदात्ययरोगछे. [illegible] [illegible] मदात्ययछे होय [illegible] [illegible] [illegible] अर [illegible].

गहलाकोसीतरें करवालागिजाय आलस्य आवैनहीं कह्याकोवात कहे काष्टकीसीनाही पड्योरहे अगम्यागमनकरे बडानें मानें नहीं अभक्षाभक्षकरे संज्ञा जातीरहे गुह्यवार्ता कहदे और रोगांमें उप जाय सरीरको नास करे इसी तरें पीवे सो तरह लिषूंछूं भोजन वि ना पीवे निरंतरपीवोही करे क्रोधकरिपीवे भयकरिपीवे तिसायोपीवे पेदयुक्तपीवे मलमूत्रकावेगमें पीवे घणापटाईकेसाथि पीवे निर्बलहू वापीवेकहीतरेंकी गरमीको पीओधकोपीवे जोपुरस त्यांके मदात्य यनें आदिलेर रोग होयछे. अथ वायका मदात्ययको लक्षण लि० हिचकीहोय स्वासहोय माथोकांपे. पसवाडामें सूलहोय नींद आवे बकवहूत ये लक्षण होयतो वायको मदात्यय जाणिजे १

अथ पित्तका मदात्ययको लक्षण लि० तिसघणी लागे दाहहोय ज्वरहोय पसेव आवे मोहहोय अतिसार होय भोल आवे सरीरको हर्योवर्ण होय ये लक्षण होयतो पित्तको मदात्यय जाणिजे. २ अथ कफका मदात्यको लक्षणलि० छर्दिहोय अरुचिहोय सल्र्या पाटो छार्दे. तंद्राहोय सरीर भास्योहोय येलक्षण होयतो कफको मदात्यय जाणिजे. ३ अर ये सर्वलक्षण मिलेतो सन्निपातको मदात्यय जाणि जे. ४ अथ परमदको लक्षण लि० पीनसहोय मथवायहोय अं गामें पीडाहोय सरीर भार्योहोय मुपको स्वाद जातोरहे. मलमूत्र रु किजाय तंद्राहोय अरुचिहोय तिसहोय ये लक्षणहोयतो परमद जाणिजे. ५ अथ पानाजीर्णको लक्षण लि० घणो अफरो होय व मनहोय दाहहोय अजीर्णहोय ये लक्षण होयतो पानाजीर्ण कहिये अथ पानविभ्रमको लक्षणलि० हियोदूषे अंगमें पीडाहोय कफथूके मुंढासूं धूवोनीसरै मूर्छा होय वमन होय ज्वरहोय मथवायहोय नि

[illegible]

ठाइमें दारुमें रुचिनहींहोय ये लक्षण होयतो पानविभ्रम कहजे.
अथ मदात्ययको असाध्यलक्षणलिख्यते नीचलो होठ लटकिजाय
सरीर उपरेसूं ठंडो लागे सरीरमाहि दाहहोय मूंढामें तेलको वास
आवे जीभ होठ दांत कालाहोय नीलापीला लालजीका नेत्र होय
अर हिचकी ज्वर वमन पसवाडामें सूल पांसी भौंलि ये लक्षण
होयतो मदात्यय असाध्य जाणिजे. अथ मदात्यय परमद पाना
जीर्ण पानविभ्रमयांको जतन लि० अथ वायका मदात्ययको ज
तन लि० आसवांकाचोपी दारुका विधिपूर्वक सेवासूं वायको म
दात्यय दूरि होय १ अठे दृष्टांतदीजैछे. अग्निकादाझ्यानें अग्निसूं
तपावे तो ओ आछ्योहोय अथवा बिजोराकी केसर अमलवेदमें
ठावोर मीठीदाडयूं अजवायण जीरो सूंठि यां तीन्यांनें मिहीवांटि
बिजोरादिकका रसकी यांकै पुटदे येचूर्ण अनुमान माफिक चोपा
मद्यमें नापि विधिपूर्वक मद्यनें पीवेतो अर पुराणो मद्यपीवे अथवा
संचरलूण सूंठि कालीमिरचां पीपलि यांकोमिही चूर्णकार अनुमान
माफिक मद्यमें मिलाय मद्य पीवेतो वायको मदात्यय जाय २ अ
थवा चव्य संचरलूण सेकीहिंग सूंठि अजवायण यांको मिहीचूर्ण
कार मद्यमें नापि पीवेतो वायको मदात्यय जाय. ३ अथवा लावो
तितर मुरगाकामांस भक्षणसूं वातको मदात्ययजाय ४ अथवा स
र्व गुणसंपन्न योवननें लीयां पोडश वरपकी स्त्रीका सेवनसूं वायको
मदात्यय जाय ५. येजतन भावप्रकाशमें लिख्याछे. दाप दाडयूं
वारा महुवा यांकीदारु मिश्रीका संजोगकीपीवेतो वायको मदात्यय
जाय ६ अथवा गऊका दहीकोमट्ठो मिश्रीमिलाय पीवेतो वायको
मदात्यय जाय ७ येसारसंग्रहमें लिख्याछे. अथ पित्तका मदात्य

म. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

गहलाकीसीतरें करवालागिजाय आलस्य आवैनहीं कहवाकीवात कहै काष्ठकीसीनाही पड्योरहै अगम्यागमनकरै बडानैं मानैं नहीं अभक्षाभक्षकरै संज्ञा जातीरहै गुह्यवार्ता कहदे और रोगानैं उप जाय सरीरको नास करै इसी तरैं पीवै सो तरह लिपूंछूं भोजन विना पीवै निरंतरपीवोही करै क्रोधकरिपीवै भयकरिपीवै तिसायोपीवै षेदयुक्तपीवै मलमूत्रकावेगमैं पीवै घणापटाईकैसाथि पीवै निर्बलहुवापीवैकहीतरैकी गरमीको पीड्योथकोपीवै जोपुरस त्यांकै मदात्ययनैं आदिलेर रोग होयछै. अथ वायका मदात्ययको लक्षण लि० हिचकीहोय स्वासहोय माथोकांपै. पसवाडामैं सूलहोय नींद आवै बकैबहुत ये लक्षण होयतौ वायको मदात्यय जाणिजै १

अथ पित्तका मदात्ययको लक्षण लि० तिसघणी लागै दाहहोय ज्वरहोय पसेव आवै मोहहोय अतिसार होय भौल आवै सरीरको हर्‍योवर्ण होय ये लक्षण होयतौ पित्तको मदात्यय जाणिजै. २ अथ कफका मदात्यको लक्षणलि० छर्दिहोय अरुचिहोय सलूणौ पाटो छादे. तंद्राहोय सरीर भार्‍योहोय येलक्षण होयतौ कफको मदात्यय जाणिजै. ३ अर ये सर्वलक्षण मिलैतौं सन्निपातको मदात्यय जाणिजै. ४ अथ परमदको लक्षण लि० पीनसहोय मथवायहोय अंगामैं पीडाहोय सरीर भार्‍योहोय मुषको स्वाद जातोरहै. मलमूत्र रुकिजाय तंद्राहोय अरुचिहोय तिसहोय ये लक्षणहोयतौ परमद जाणिजै. ५ अथ पानाजीर्णको लक्षण लि० घणो आफरो होय वमनहोय दाहहोय अजीर्णहोय ये लक्षण होयतौ पानाजीर्ण कहिजै अथ पानविभ्रमको लक्षणलि० हियोदूषे अंगमें पीडाहोय कफथूकै मूंढासूं धूवोनीसरै मूर्छा होय वमन होय ज्वरहोय मथवायहोय नि

न. टी. मदात्ययरोगसांनिवृत्तिवानैं जोउपाय लिप्योछै, गोउपाय घणो श्रेष्ठछै. अर दाष, विजोरो द्राष वगैरे औरभी औषधी घणीछै. अर गुड्यनमैं स्त्रियांकीसावरदणी ये उपाय श्रेष्ठछै. धनवानकाधण्यांनैंमिलै. परंतु और गरीबांनैंतो औरोग होयतौ कुचालीनांनपरांछै.

ठाइमें दारुमें रुचिनहींहोय ये लक्षण होयतो पानविभ्रम कहजे. अथ मदात्ययको असाध्यलक्षणलिख्यते नीचलो होठ लटकिजाय सरीर उपरेसूं ठंडो लागे सरीरमाहि दाहहोय मूंढामे तेलकी वास आवे जीभ होठ दांत कालाहोय नीलापीला लालजींका नेत्र होय अर हिचकी ज्वर वमन पसवाडामें सूल षांसी भोंलि ये लक्षण होयतो मदात्यय असाध्य जाणिजे. अथ मदात्यय परमद पाना जीर्ण पानविभ्रमयांको जतन लि० अथ वायका मदात्ययको ज तन लि० आसवांकाचोपी दारुका विधिपूर्वक सेवासूं वायको म दात्यय दूरि होय १ अठे दृष्टांतदीजेछे. अग्निकादाझ्यानें अग्निसूं तपावे तो ओ आछ्योहोय अथवा बिजोराकी केसर अमलवेदमो ठावोर मीठीदाडयूं अजवायण जीरो सूंठि यां तीन्यांनें मिहीवाटि बिजोरादिकका रसकी यांके पुटदे योचूर्ण अनुमान माफिक चोपा मद्यमें नापि विधिपूर्वक मद्यनें पीवेतो अर पुराणो मद्यपीवे अथवा संचरलूण सूंठि कालीमिरची पीपलि यांकोमिही चूर्णकरि अनुमान माफिक मद्यमें मिलाय मद्य पीवेतो वायको मदात्यय जाय २ अ थवा चव्य संचरलूण सेकीहिंग सूंठि अजवायण यांको मिहीचूर्ण करि मद्यमें नापि पीवेतो वायको मदात्यय जाय. ३ अथवा लावो तितर मुरगाकामांस भक्षणसूं वातको मदात्ययजाय ४ अथवा स र्व गुणसंपन्न यौवननें लीयां षोडश वरषकी स्त्रीका सेवनसूं वायको मदात्यय जाय ५ येजतन भावप्रकाशमें लिख्याछे. दाष दाडयूंछु वारा महुवा यांकीदारु मिश्रीका संजोगकोपीवेतो वायको मदात्यय जाय ६ अथवा गऊका दहींकोमठो मिश्रीमिलाय पीवेतो वायको मदात्यय जाय ७ येसारसंग्रहमें लिख्याछे. अथ पित्तका मदात्य

[illegible]

यको जतन लि० सर्वसीतल जतनासूं पित्तको मदात्ययजाय ८ अथवा सीतलजलमैं मिश्री सहत मिलाय पींवैतो पित्तको मदात्यय जाय ९ अथवा मीठी दाडयूंकारसमैं मिश्री मिलाय पींवैतो पित्तको मदात्ययजाय १० अथवा सुख्याहिरण लावोयांका मांसपावासूं पित्तको मदात्यय जाय ११ अथवा वकराका सोरवासूं साठी चावलांका षावासूं पित्तको मदात्ययजाय १२ अथवा कफकामदात्ययको जतन लि० चंदन पस यांका लेपसूं कफको मदात्यय जाय १३ अथवा जव गहूं कुलंथ यांका पावासूं कफको मदात्यय जाय १४ अथवा कडवी पाटी सलूणी वस्तका पावासूं कफको मदात्यय जाय १५ अथवा वमनसूं लंघनसूं कफको मदात्यय जाय १६ अथवा संचरलूण जीरो अमलवेद तज इलायची कालीमिरची मिश्री यानैं वरावरिले यानैं मिहीपीसि जलकै साथि लेतो कफको मदात्यय जाय १७ अथ सन्निपातका मदात्ययको जतन लि० आंवलाकारसमैं पारागंधकी कजली टंक१ मिलाय पींवै तो सन्निपातको मदात्यय जाय १८ अथ पानविभ्रमको जतन लिष्यते दापाका सरवतमैं अथवा कैथका सरवतमैं अथवा दाडयूंका सरवतमैं सहत मिश्रीमिलाय पींवैतो पान विभ्रम जाय १९ यो वृंदमैंछै. अथ धत्तूराका फलका मदको जतन लि० पेठाका रसमैं गुडघालि पींवैतो धत्तूराको मद जाय अथवा दूधमैं मिश्री नापि पींवै तो धत्तूराको

न. टी. अठैमद्यकदावाकायंत्रको चित्रछै. जीनैं लिप्योनहीं. कारण ईंको विशेष प्रयोजन नहींछै. जीयूं अर मदात्यय परमद, पानाजीर्ण, विभ्रमइत्यादि अर धतूरो, भांग, गांजो, चर्स, कन्हेर, घरमूली, अर यांकी क्रिया विलक्षणछै. जैसे भांगनैं तांवाकापात्रमैं गेरै. नशाकी तेजीवधावै. अर धतूराका बीज घालै अर घरमूली घालै येभी मिसरी पाड, दूध मसाला मेवाउगैरै घालकर आछी स्वाद वणावै पाछै येनै पानकरै. जीकापान करवासूं मनुष्य वहुत गुस्समानैछै. अर केईतो मनुष्य प्रणागाफल होयछै. क्यानैं दोयदिनताई विस्मृतिरहै. स्मृतीआवणीवी कठिण होयछै, जीसूं लिपीछै. इस विपरीत कार्य करणेसोंभी मदात्ययरोगानैं आदिलेर दाहादिक उपद्रव होयछै.

अर भांगकोमद्जाय २० अथ भांगकामद्को जतन लि० कपास की जडको रसपींवे अथवा वेंगणकी जडको रसपीवे अथवा पत ली छालि पीवे अथवा घृतपीवे अथवा मिश्रीका सरबतमें नींबूको रस नापि पीवे तो धत्तूराको अर भांगको मद जाय अथवा दूध मिश्रीपीवेतो भांगको मद दूरिहोय २१ अथ विसकामद्को जतन लिख्यते नींबोलीकीमींगी नीलोथूथो मासा २ बांटि कांजीका पा णीसूं पीवेतो सर्व विसमात्रको मद दूरिहोय २२ येजतन वैद्योपचार ग्रंथमेंछे इतिमदात्यय परमद पानाजीर्ण पानविभ्रम धत्तूरा भांग विस मद्य यांकी उत्पत्ति संपूर्णम्.

अथ दाहरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० दाहछेसो ७ प्रकार कोछे. पित्तको १ दुष्टलोहीकाबधबाको २ शस्त्रादिकासूं निसर्यो जो लोही तींकरिपूर्ण कोष्ठहोयजावाको ३ मद्यादिकका पीवाको ४ तिसका रोकिवाको ५ धातक्षयको ६ मर्मकी चोटलागिवाको ७ अथ पित्तका दाहको लक्षण लि० पित्तज्वरका सर्व लक्षण मिले १ लोही कां दुष्टपणासूं उपज्योजो दाह तींको लक्षण लि० सर्व सरीरमें दाह लागिजाय अर सर्व सरीरमें धूवो सोनीसरे सरीरकी तांबाकीसी आ कृति होय अर तांबाका रंग सरीसा नेत्रहोय मूंढामें लोहीकीसी गंधआवे अर सगलाअंग अग्निकीसीनाई बले येलक्षणहोयतो दुष्ट लोहीको दाह जाणिजे २ अथ सस्त्रादिकसूं नीसर्यो जो लोही तींसूं कोष्ठ पूर्णहोय तींका दाहका पूर्वरूपलक्षण लि० लोहीसूं कोठो भर जाय अर दाहलागि जाय सो असाध्यछे. यो मरिजाय ३ अथ म द्यादिकका पीवाका दाहका लक्षण लिख्यते दाहको पवनछे सो पित्त अर लोहीसूंमिली ने सारीत्वचामें आय प्राप्तिहोय अर सारासरी

म. टी. [illegible] [illegible] [illegible] लिख्योछे. [illegible] मैं [illegible] लिखाछे. परंतु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रमैं भयंकरदाहनैं करैछै४ अथ तिसकारोकियाकादाहकोलक्षणलि० तिसका रोकिवासूं सरीरको जलधातु क्षीणहोय तदि सरीरमें गरमी वधे तदिसरीरनें दग्धकरै पाछे वैंकोचित्त मंदहोवै अर वैंकोगलो ता लवोसूंकै जीभवारैकाढी कांपणलागे५ अथधातक्षयका दाहको लक्ष ण लि० धातक्षयकादाहसूं मूर्छाहोयआवै तिसलागे मुपकोस्वरवैठि जाय सरीरको सामर्थ्य जातोरहै यो दाह असाध्यछै ६ अथ मर्मकी चोटलागिवाका दाहको लक्षणलि० शिर हृदय पेडूनैं आदिलेर मर्म स्थानमैं चोटलागिवासूं उपजै सो असाध्य जाणिजे अथ दाहको असाध्यलक्षण लि० सरीर थंडो होजाय अर मांहि दाहहोय सो मर जाय अथ दाहकोजतन लि० हजारवारको धोयो अथवा सौवारको धोयोघृत तींको सरीरकै मर्दनकरै तौ सरीरको दाहजाय १ अथवा जवांका सातुमैं मिश्री मिलाय पीवतौ दाहजाय २ अथवा आंव लाका पाणीमैं कपडो भिजोय वैंनैं ओढै तौ सरीरको दाहजाय३ अ थवा पस अर रक्तचंदननें घसि सरीरकै लेपकरैतौ दाहजाय ४ अ थवा केलीका पानाकी अथवा कमलाका पापड्याकी सज्या ऊपरी सोवैतौ दाहजाय ५ अथवा फवांरा चादरिउगैरे जलक्रीडासूं दा० ६ अथवा पसपानाका रहवासूंदा०७ अथवा सीतल जलका पीवा सूंदा० ८ अथवा उपवन उगैरे सीतल स्थानमे रवासूंदा० ९ अ थवा चंदन पित्तपापडो पस कमलगट्टा धणो सौंफ आंवलायाकोटंक २ भर क्वाथकरितीमैं सहत मिश्रीमिलाय पीवैतौ दाह तत्कालजाय १० अथवा धणानैं रातिनैं भेवै पाछे वैही जलमे प्रातसमै वैनै घोटि छाणि मिश्रीमिलाय पीवैतौ दाह दूरिहोय ११ येसर्व भावप्रकासमैं लिप्याछै अथवा लोहीका वीगडवाको दाहको जतनलि०वेकैसीरछु

न. टी. उन्मादरोग बहुलप्रकारसौं होयछै. अर जो भूतप्रेतादिकांकालागवाछै, सोभी सो सर्व उन्मादरोगमेंछै. परंतु घणामनुष्य भूतोन्माद जिस्यारोगानैं वृथा उपाय करनैं मनुष्या नैं भयभैं राखै अर वांकनैं द्रव्य ठहगैछै. परंतु रोगको उपचार करैतो आराम होय.

डायदीजेती दुष्टलोहीको दाह दूरिहोय १२ अथवा पारो सोध्योगं
धक भीमसेनी कपूर चंदन पस नागरमोथा ये सारा बराबरीले पाछे
पारागंधककी कजलीकरि तीकजलीमें ये ओपदि नाषे पाछे यांकी
जलसूं गोलीबांधे गोली १ मूंढामेंराषि चूंपेतो सरीरको माहिलो दा
ह जाय योदाह दूरिकारिवाको रसछे १३ अथवा पारो तोलो१ ता
मेश्वर तोलो १ अभ्रकतोलो१ अर सोध्योगंधकतोला२ प्रथम पा
रागंधककी कजलीकरि पाछे ये ओपदि जलमें मिलावे पाछे यांके
नागरमोथाका रसकी पुट १ दे पाछें मीठी दाडयूंका रसकी पुट १
दे पाछे केवडाका अर्ककीपुट १ दे पाछें सहदेईका रसकीपुट १ दे
पाछें पीपलीकारसकीपुट १ दे पाछे चंदनकारसकीपुट १ दे पाछे
दापकारसकी पुट ७ दे पाछे छायासुकाय चणाप्रमाण गोली बांधे
पाछे गोली १ रोजीना पायतो दाहनें अमलपित्तनें मूत्रकृच्छ्रनें प्रद
रनें प्रमेहनें यां सारारोगांनें यो चंद्रकलारस दूरिकरेछे. १४ इति चं
द्रकलारसःयो वैद्यरहस्यमें लिष्योछे इति दाहरोगकी उत्पत्तिलक्षण
जतन संपूर्णम्. अथ उन्मादरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते
विरुद्धभोजनसूं अपवित्र भोजनसूं मनुष्यको चित्त बिगडेछे अर
देवता गुरु ब्राह्मण तपस्वी राजा यां साराका तिरस्कारसूं पुरस
कोमन बिगडेछे अर कहींतरेका भयसूं अर कहीं तरेका हर्पसूं पुर
पको मनबिगडेछे अर धत्तूरानें भांगिनें आदिलेर त्यांका पावासूं
भी पुरपको मन बिगडेछे तदि यो पुरसको मन बिगड्यो थको वाय
पित्त कफकूं प्राप्तिहोय पुरपकूं मद जुक्त करि देछे नाम पुरसनें ग
हलो करि देछे तीनें लोकीकमें होलदिल कहेछे सो यो रोग ६ छ प्र
कारको छे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ मनका

म. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

दुषको ५ विपका षावाको ६ अथ उन्मादको स्वरूप लि० विरुद्ध भोजनादिक पाछे कह्या त्यांसेती अर षीण पुरुसके वायपित्त कफ दुष्ट होय बुद्धिको नाशकरै पाछे वैकाहियांमें पीडाकरै पाछे मननैं वहवावाली जो नसा वानैं वे दोष मोहितकरै तदि मनुष्यको चित्त बिगडिजाय थिर रहैनहीं ईनै हौलदिल कहैछे. अथ उन्मादको पूर्वरूपलि० बुद्धि थिररहै नहीं शरीरको पराक्रम जातोरहै दृष्टि थिर रहै नहीं धीरज जातोरहै आछीतरह बोलै नहीं हृदो सूनो होजाय येलक्षण होयतो जाणिजे पूरषकै उन्माद होसी अथ वायका उन्मादको लक्षण लि० लूषीवस्तका अर ठंडी वस्तका षावासूं घणा जुलाबका लेवासूं धातका षीणपणासूं वाय बढै तदि ओवाय हियानै बिगाडै अर बुद्धिको अर स्मरणको तत्काल नासकरै तदि मनुष्यहै सो विनाकारणही हँसै गावै नाचै वोहाथसूं मुंढानैं वानराकीसी नांई करवालागिजाय अर रोवालागिजाय शरीर कठोर अर कालो लालहोजाय अर भोजन पच्यांपछै योरोग वधै ये लक्षण होयतो वायको उन्माद जाणिजै १.

अथ पित्तका उन्मादको लक्षण लि० अजीर्णमें भोजन कर्यां कडवो पाटो गरम यां भोजनसूं पित्त वधै तदि मनुष्यका हृदाको पित्तहै सो बिगडिउन्माद नैंकरै तदि ओपुरष कहींकी बातनैं मानैनहीं अर नागो होजाय मारवालागिजाय दौलवा लागिजाय वैको सरीरतातो होजाय सीतलवस्तकी वांछा राषे अरसरीरकी आकृतिपीली होजाय येलक्षण होयतो पित्तको उन्माद जाणिजै २ अथ कफका उन्मादको लक्षण लि० भूष मंदहोय अर जीमें वणोपाय तदि

५. भूतादिकको उन्मादरोगछै. जींशसूं उपाय मंत्र, तंत्र, धूप उतारावगैरे घणा धूतारा लोक ठगताफिरेछै. परंतु याग्रंथमें उपाव लिष्याछै. मथारोगछै. अर देखवाको उन्मादरोगछै सो तो पवित्रछै. उत्तम उपावकियां आराम होयछै. यासूं ईग्रंथमें भाषी नां तणो. वांनसी लिषारची जीनै फायदोहोसी.

पुरसके कामकरिवामें आलस घणो आवे तदिवेंके पित्तहेंसो कफसूं मिलि अर मर्मस्थानानें वधावे तदि पुरसकी बुद्धिको अर स्मरणको नासकरे पाछे वेंका चित्तनें विगाडिवेंपुरसनें उन्मत्तकरिदे अर ओपु रस कमबोले भूपजातीरहे स्त्रियांप्यारीलागे येकांतस्थान प्यारोलागे नींदघणीआवे छर्दिहोय बलजातोरहे नपादिकमुपेदहोजाय येलक्ष णहोयतो कफको उन्मादजाणिजे ३ अर ये सर्व लक्षणहोयतो सन्नि पातको उन्मादजाणिजे ४ अथ मनकादुःख उन्मादको लक्षण लि० चोराका भयसूं राजाकाभयसूं प्रबल शत्रूकाभयसूं ओर कहीं भयं कर कर्मका भयसूं डरयोजो पुरस तींके अथवा धनका नाससूं अथवा पुत्रादिकाका नाससूं यांवस्तासूं पुरसके मननें चोटलागे अरघणोंमे थुनकरे जींके तदिवेंकोमनविगडेपुरसको उन्मत्तकरिदे तदिवोमनमें आवे सोबके संज्ञाजातीरहे अर गावालागिजाय हसिवा लागिजाय ये लक्षण होयतो मनका दुःखको उन्माद जाणिजे ५ अथ विषपा वाका उन्मादको लक्षण लिप्यते लालनेत्रहोय बल सरीरको जातो रहे सर्व इंद्रियांकी कांती जातीरहे गरीब होजाय मूंढो कालो पडि जाय येलक्षणहोयतो विषपावाको उन्माद जाणिजे ईउन्मादवालो मरिजाय ६ अथ उन्मादमात्रको असाध्यलक्षण लि० केतो नीचो ही मुप रापे के ऊंचोही मुपरापे अर सरीरको बल मांस जातोरहे नींदआवेनहीं जागिबोहीकरे येलक्षणहोयतो ओपुरस मरिजाय ७ अथ भूतादिक जीनें लाग्योहोय जीसूं उपज्योजो उन्माद तांको लक्षण लि० जीपुरसनें भूतादिक लाग्योहोय तो पुरसकी वाणी मनुष्यकीसी नाईंहोय विचित्रहोय अर वेंको पराक्रमभी विचित्रहो य अर वेंका शरीरकीचेष्टा विचित्रहोय अर वेंको ग्यानभी अर वेंका

म. टी. इत्यादिक लिखोछे जो [illegible] [illegible]. गं. वो [illegible] [illegible]. जेने मनना दुःखथकी [illegible] [illegible] [illegible] होयछे. [illegible] होयछे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मन [illegible] [illegible] होयछे. [illegible] [illegible] [illegible].

अज्ञानभी विचित्रहोय येलक्षण जीमें होय तींके भूतादिक लाग्या को उन्मादजाणिजे १ अथ जींकासरीरमें कहीं देवताको प्रवेस हुवो होय तींका उन्मादको लक्षण लि० सर्व वातसूं ओ संतुष्टरहे अर ओ पवित्ररहे अर सुंदरपुष्पादिककी मालाधारै अर सुंदर अत्तर सूंघिवोकरै अर वेंकी आंष मिचै नहीं अर विगारिपढ्यो संस्कृतबोलै अर सरीरमें तेज वधै अर जोमागेजीनें वरदे अर ओ ब्राह्मण्य होजाय येजीमें लक्षणहोय तीमें देवताका प्रवेशको उन्मादजाणि जे. २ अर जींकासरीरमें असुर प्रवेश कर्‌योहोय तींसूं उपज्यो जो उन्माद तींको लक्षण लि० पसेव आवै अर ब्राह्मण गुरु देवता या में दोषकाढै कुटिल जींकी दृष्टि होय कहींतरैको वेंको भय होयनहीं पोटामार्गमें दृष्टि होय कहींतरै तृप्ति होयनहीं भोजनादिकमें दु ष्टात्माहोय ये लक्षण जीमें होय तीनें असुर लाग्यो जाणिजे ३ अथ गंधर्व लागिवासूं उपज्योजो उन्माद तींको लक्षण लि० दुष्टा त्माहोय अर फूलनमें वनमें रहवासूं मन राजीरहे आचारमें मन रहै गावो नाचिवो सुहावै थोडो बोलै येलक्षण होयतो गंधर्वला ग्यो जाणिजे ४ अर येही जक्षग्रहका लक्षण जाणिजे ५ अथ जीं का सरीरमें पितरांको सतीको दोप हुवोहोय तींको लक्षण लि० डाभकेऊपरी पिंडमेलवोकरै सतोगुणी होजाय तर्पण करावो करै मांसमें तिलमें गुडमें षीरकाभोजनमें मनरहे येलक्षण जीमें होयतो पित्रेसुरांका दोप जाणिजे ६ अथ सतीकोदोप जींकासरीरमें होय तींका लक्षण लि० मन निश्चलरहैनहीं संतानादिकको अवरोधकरै सतीकी वार्ता सुहावै बोलैनहीं बोलैतो वरदेतो बोलै पवित्ररहे आछी वस्तमें मनरहे ये लक्षणहोयतो सतीको दोप जाणिजे ७

न. टी. मनुष्यांको कालमृत्यु अथवा अकालमृत्यु येजोछे सो कालमृत्युवालाकीगति हो यछे अकालमृत्युवालाकीगति नहीं होवछे. ईवास्ते उत्तमक्रियासूं आगली दुर्गतिछे, ओगति होवछे. मृत्युसमयका साधन गुरुजीसें कालमृत्युकरेछे. वाकी अकालमृत्युछे.

अथ पेत्रपालकादोपको उन्माद लि० मुप नासिकामें लोहीचलावे स्मशानकोराप मस्तकमें नापे पोटा सुपनाआवे पेटमें पीडारहे अर संधिसंधिमें पीडरहे चित्त स्वथिर रहेनहीं येलक्षण होयतो क्षेत्रपाल को दोप जाणिजे ८ अथ विज्ञासणीका दोपसूं उपज्यो जो उन्माद तीको लक्षण लि० पक्षाघातहोयसरीर अर रुधिर सूपिजाय मुप पग वांका होयजाय शरीर क्षीणहोय जाय स्मरणादिक जातोरहे येलक्षण होयतो वीझासणको दोपजाणिजे९ अथ कामणाका दोपसूं उपज्यो जोउन्माद तीको लक्षण लिख्यते कांधो माथो भारयो होय मन स्थिररहेनहीं सर्व अंग क्षीणहोय जाय नासिकामें नेत्रामें हाथांमें पगांमें दाहहोय वीर्यको नासहोय सरीरका आठूं अंगांमें सुईकासा चभका चालिवोकरे सरीरसूकिजाय येलक्षण होयतो कामणका दोसको उन्मादजाणिजे १० अथ शाकिनी डाकिनी लागिवासूं उपज्यो जो उन्माद तीको लक्षण लि० सारा अंगांमें पीडहोय नेत्र घणादूंपे मूर्छा होय सरीरकांपे रोवे बके भोजनमें अरुचिहोय हसे स्वरभंग होय सरीरकोबल अर भूप जातोरहे भोलिहोय ज्वरभीहोय येलक्षण जीमेंहोय तो शाकिणी डाकिणीको दोस जाणिजे ११ अथ पोटीगतीसूं मूवो जोमनुष्य वेप्रेत होय तीसूं उपज्यो जोउन्माद तीको लक्षण लि० सवोरे घरमेंनूं काठिकाठिभागे पोटावचन कांडे बहुतबके सरीरकांपे रोवे पावे पीवे नहीं वृरीतरेसा सल्वेवोकरे मनमें आवे सोपावे येलक्षण होतो प्रेतको दोप जाणिजे १२ अथ जीका सरीरमें राक्षस लाग्यो होय तीसूं उपज्यो जो उन्माद तीको लक्षण लि० मांसका पानामें अर लोहीका पीवामें जीकी रुचिरहे अर दारुका पीवामें रुचिरहे अर निर्लज्ज घणोरहे

म. टी. [illegible]

घणो दुष्टपणासूं बोलैं घणासुरापणा जीनें चढिजाय क्रोधजानें घ
णोहोय रात्रिमें एकलोफिरै अपवित्र रहै येलक्षण होयतौ राक्षस
लाग्यो जाणिजैं १३ अथ ब्रह्मराक्षस जीने लाग्यो होय तीसूं उप
ज्योजो उन्माद तींको लक्षण लिष्यते देवता ब्राह्मण गुरु यांसूं वैर
रापे वेद अर वेदांतको जाणिवावालो आप होजाय अर आपका
सरीरमैं आपही पीडाकरै अर मारैनहीं येलक्षण होयतौ ब्रह्मराक्ष
स लाग्यो जाणिजै १४ अथ पिशाच जीनें लाग्यो होय तींसूं
उपज्योजो उन्माद तींको लक्षण लिष्यते ऊंचाहाथ रापिवोकरै
सरीर कृस होजाय क्यूंकोक्यूं मिथ्याबकै सरीरमैं दुर्गंधि आवै अ
पवित्ररहै अति चंचल होजाय घणोपाय उद्यानमैं मनरहै भ्रम
घणोहोय रोवै येलक्षण होयतौ पिशाचलाग्यो जाणिजै १५ अथ
उन्मादको असाध्य लक्षण लि० आंषि फाटीसीहोजाय डोलबो
करै मूंढै झागआवोकरै नींद घणी आवै पडिजाय कांपै येलक्षण
होयतौ असाध्य जाणिजै अर पुन्यूनै आजार घणो होयतौ देव
ताको दोप जाणिजै १६ अर सांझमें कोई लागेतौ असुरको दोस
जाणिजै अमावसनैं येलक्षण होयतौ पितरांको दोप जाणिजै आ
ठैने येलक्षण होयतौ गंधर्वको दोप जाणिजै पडिवानें योविकार
होयतौ जक्षको दोस जाणिजै रात्रिनें येलक्षण होयतौ राक्षस पिशा
चांको दोस जाणिजै अथ यांसारांकी लागिवाकी तरह लि० जैसे
मनुष्यादिकांको प्रतिबिंबदर्पणादिकांमें धसिजायछै तैसेही प्राणि
मात्रनें सीतउष्णधसिजायछै जैसे आतसी काचमें सूर्यकी किरण
धसिकरि अग्निनें उपजाय देछै तैसेही मनुष्यादिकांका सरीरमें भूत

* उन्मादरोगनें उपाय कह्याछे शु उत्तमउन्मादनेंतो उत्तम उपायछे. नारायणकवच सप्त
शती दुर्गा मृत्युंजय. इत्यादिक ओर भेटउन्मादने उतारा उगेरे भैरवादि कह्याछे. परंतु
औषधी उपायनो तत्काळ सिद्धछे. ओर विद्वान पुरुषोंको मतांगनछे. गोमी तत्काळ गा-
ऊ परंतु गुरु ब्राह्मण देवतापूजनथी भागीगोदमेंभी उन्मादजायछे.

प्रेतादिक धसिजायछे अर दीपे नहीं चिन्हासूं जाण्या पडेछे अथ उन्मादनें आदिलेर यां सारांका जथायोग्य जतन लिप्यते घृता दिकका पीवासूं वायको उन्माद जाय १ आछ्याजुलावका लेवासूं पित्तको उन्मादजाय २ वमनका करावासूं कफको उन्माद जाय ३ अर लिंगमें गुदामें औषधकी पीचकारीका देवासूं यो वस्तिकर्मछे ईका करिवासूभी उन्माद जायछे ४ अथवा लूणप्याको रसकाढि तीमें बराबरीको गुड मिलाय तीमें गउकी छाछि नापि पीवेतो उन्माद जाय ५ अथवा परवटाकी डाल्यांको रस काढि पीवे तो उन्माद जाय ६ अथवा कडवातेलको मर्दन करि तावडे रापेतो उन्माद जाय ७ अथवा कोई अद्भूत वस्त दिपावे अथवा कोई इष्टको नाम सुणावे तो उन्माद जाय ८ अथवा ताता घृतको अथवा ताता तेलको अथवा ताता जलको स्पर्शकरावे तो उन्माद जाय ९ अथवा कोंछकी फलीको स्पर्श करावे तो उन्माद जाय १० अथवा कोरडाकादे तो उन्माद जाय ११ अथवा शस्त्रसूं हाथीसूं सिंहसूं सर्पसूं रोकिवासूं कही तरेसूं डरावे तो उन्माद जाय १२ याकारणसूं चित्त ठिकाणे आवे. सो सर्व दुःपसूं प्राणको रापि वो सिरेछे ईवास्ते येजतन शिरेछे अथवा कूठ आसगंध सींचोलूण अजमोद दोन्यूंजीरा सूंठि काली मिरची पीपली पाठ संपाहुली ये सारी औषदि बराबरिले अर यांसबंकी बराबरि वचले पाछे यासबनें मिहीवांटि ईकें ब्राह्मीका रसकीपुट १० दे पाछे इनें आयासुकाय टंक२घृतसहतके साथि ईनारस्यन चूर्णनें दिन१५लेतो सर्वप्रकारको उन्माद जाय १३ अर यो सर्व वायका विकारनें प्रमेहनें दूरि करेछे. अर यो बुद्धिनें वधावेछे अर यो रुचितानें करावेछे. योचूर्ण

म. टी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

ब्रह्माजीवणायोछे इति सारस्वतचूर्ण. अथवा त्रिफला पित्तपापडो देवदार सालपर्णी जवासो तगर हलद दारुहलद इंद्रायणकीजड गौरीसर चंदन पदमाष कूठ कमलगट्ठा इलायची कल्याली मजीठ पत्रज निसोत वायविडिंग रुदंती नागकेसरी महलौठी पृष्टपर्णी च मेलीकाफूल येसारी औषधी अधेलाअधेलाभरिले पाछे येऔषधि सेर४जलमेंकूटिनाषे अरईमें सेर१गऊको घृतनापे पछे मधुरीआंच सूं पकावे तदि ओजल बलिजाय घृतमात्र आयरहे तदिईनै उतारी ले पाछे ईनै टंक ५ रोजीना भोजनकेसाथी पायतो उन्मादनै मृगी कारोगनै अर पांडुरोगनें योघृतदूरिकरेछे इतिकल्याणघृतम् १४ अथवा सूंठि कालीमिरचों पीपलि हिंग वचसिरसकाबीजसींधोलूण सिरस्यूं येबराबरिले यामें गोमूतमें मिहीवांटि अंजनकरेतो उन्माद जाय १५ येजतन वेद्यविनोदमेंछे अथवा अजमोद हलद दारुह लद सींधोलूण वच महलौठी कूठ पीपलि जीरो ये सर्व बराबरिले यां नें गोमूतमें मिहीवांटि टंक २॥ घृतकेसाथि लेतो उन्मादजाय अर वेंकीजीभउपरि सरस्वति आयवसे इति विश्वाद्यचूर्ण १६ यो भावप्र कासमेंछे अथवा ब्राह्मीकोरस अथवा पेठाकोरस अथवा पीपलामू लकोरस अथवा संपाहुलीकोरस टंक १० पीवे तो उन्माद जाय १७ अथवा वच कूठ सांपाहुली धत्तूराकी जड ये बराबरिले यांकोब्रा ह्मीका रसकी पुट ७ दे अर काला धत्तूरांकाबीजांका तेलकी पुट ५ दे पाछे ईकी नास दे तो उन्माद दूरिहोय १८ ये सर्व वेद्यरहस्यमेंछे अथवा सिरसकाफूल मजीठ पीपलि सरस्यूं वच हलद सूंठि यांनें बराबरिले यांनें बराबरीका मूतमें मिहीवांटि गोलीकरे पाछे गोली१ घसि अंजनकरेतो उन्मादजाय १९ यो जोगरत्नावलीमेंछे अथवा

न. टी. भूतप्रेतादिकांका जतनलिख्याछै. जीमें तंत्रशास्त्रकालिख्याछै. अर शास्त्रीमंत्रभी लिख्याछै. सो जामें दिसतकाभो अंटंग फलंग दीसैछै. अर कोईक मनुष्य यांनें कपटकरते हैं परंतु यांमंत्रका भरतामें बीज गुलगन्योछै. भींगी माख्यालिख्याछै.

सेकीहींग संचरलूण सूंठि कालीमिरचि पीपलि येसारी बराबरिले दोयदोय टका भरि २ पाछे गऊको घृत सेर ४ ले अर घृतसूं चौ गुणो गोमूत्रले पाछे यांसारानें एकठाकरि मधुरी आंचसूं पकावै तदिवेंमेंको गोमूत्र बलिजाय घृतमात्र आय रहे तदि ऊनें उतारि टंक ५ भोजनके समै लेतो उन्माद दूरिहोय २० इति उन्माद रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन सम्पूर्णम्.

अथ भूतनें आदिलेरजो उन्माद तींको मंत्र तंत्र सर्व शास्त्रके अनु सार लि० प्रथमभूतनें आदिलेरयांका जतनकरेतो आप पवित्रहोय आपकी रक्षाकरिवेंको जतनकरै कालीमिरचि पीपलि सींधोलूण गो रोचन यांनें मिहिवांटि सहतमें अंजनकरेतो भूत प्रेतजाय १ अर ज्वरकाप्रकर्णमें भूतज्वरऊपरि श्रीनृसिंहजीको दिव्यमंत्र लिष्योछे तींसुं भूतप्रेतादिकको सर्वही उन्माद दूरिहोयछे सोदेषिलीज्यो.अथ उड्डीसमें महादेवजीयांका साबरमंत्र जंत्र लिष्याछे सो लिषूंछूं ऊंन मो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्यडंबराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रांह्रीं क्रींक्रीं क्रिमिति ताडय ताडय मोहय मोहय द्रं भिद्रंभि क्षोभयक्षोभय अभिअभि साधयसाधय ह्रीं हृदये आंशक्त चः प्रीतीं ललाटे बंधयबंधय ह्रीं हृदये स्तंभय स्तंभय किलिकिलिईं ह्रीं डाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय शाकिनींप्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादयप्रच्छादय अप्रभूति अदूरिस्वाहाराक्षसं प्रच्छादयप्रच्छा दय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय आकाशसं प्रच्छादय प्रच्छाद य सिंहनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय एतेडाकिनी ग्रहसाधय साधय शाकिनी ग्रहसाधय साधय अनेन मंत्रेण डाकिनी शाकिनी भूतप्रेत पिशाचादि एकाहिक द्वाहिक त्र्याहिक चातुर्थिकं पंचमकं वातिक पै

तिक श्लेष्मिक सन्निपात केसरी डाकिनी ग्रहादि मुंचमुंचस्वाहा गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फूरोमंत्र ईश्वरोवाचा ईमंत्रसूं झाडोदीजे वार २१ मोरकी पांपसूं अथवा लोहकी वस्तसूं अथवा छांनिकी पानीसूं तौ भूतादिकका सर्व उन्मादको दोस दूरिहोय २

अथ डाकिनी शाकिनीका वकरावाको मंत्र. ॐनमो आदेस गुरुकूं ॐनमो जयजय नृसिंहतीनलोक चवदाभवनमें हाथचावि ओ होटचावि नयन लाललाल सर्व वैरी पछाडिमारि भगतनकीपण रापि आदेस आदेस पुरुपको ईमंत्रके क्रिया योमंत्रपढि रोगीनें वैठाय ईमंत्रसूं पाणिमंत्रि आप पवित्र होय ओपाणि वैनैपावे पाछे वैनें वूझे शाकिनी डाकिनी वोलै सही ३ अथ डाकिनी वुलावाको मंत्र ॐनमोचढोचढोसूर वीरधरतीचढिपातालचढिपगपालिचढिकुणकुणवीरचल्याहणवंतवीरचल्याधरतीचढिपगपाणीचढिएडीचढीएडीचढीमरचैचढी मरचैचढी पींडीचढी पींडीचढी गोडाचढीगोडाचढी जंघाचढी जंघाचढी कटिचढी कटिचढी पेटचढी पेटसूं धरणी चढी धरणीसूं पांसल्यांचढी पांसल्यासूंहीयांचढी हीयांसूं छातीचढीछातीसूं पवांचढीपवांसूं कंठचढी कंठसूंमुपचढी मुपसुंजिव्हाचढी जिव्हासूं कानाचढीकानासूं आंप्यांचढी आप्यांसूं ललाटचढी ललाटसूंसीसचढी सीससूं कपालचढी कपालसूं चोटीचढी हनुमान नारसिंहकरवारक्षया चल्यावीर समदवीर दोठवीर आग्यावीरसो संतावीरयो वीरचल्यो वकरावैतो वेपुरसमें वेनिश्चयआयवोलै ४ अथ डाकिनी केचोटलागिवाको मंत्र ॐनमो महाकाय जोगिणी जोगिणीपर साकिनी कल्पवृक्षाय दृष्टिजोगिनी सिद्धिरुद्राय कालदंभेन साधयसाधय २ मारय मारय चूरय चूरय अपहर शाकिनी सपरिवारंनमः ॐठं ह्र ॐन्हीं ह्र ह्रांह्रींफट्स्वाहा ईमंत्रकी क्रियापवित्रहोय वार ७ गूगलनें मंत्रि उपलमें नापि मूसलसूं कूटिजे तो वेचोटडाकिणी क

लागे अर ईमंत्रसूं गोडामूंदिजेतों डाकिनीको माथो मूंड्योजाय अर ईमंत्रसूं उडद मंत्रि नापिजे तो तींके घरआय पेले अर जलने ईसूं मंत्रि आंप्या छांटे तो वाबोल उठे ५ अथ डाकिणीका दोस दूरि होवाको झाडो मोरकी पांपसूंदीजे अथवा लोहका राछसूं दीजे ॐ नमो आदेस गुरुको डाकिणीसिहारीकिनेमारी जती हणवंतनेमारी कहांजायबदकीनोंनेदेपी जतीहणवंतने देपी सातवे पातालगई सा तवां पातालसूं कुणपकडि ल्याया जतीहणवंत पकडिल्याया जती हणवंतवीरपकडिल्यायाएक तालदे एककोठातोड्या दोयतालदे दो यकोठा तोड्या तीनतालदे तीनकोठातोड्या च्यारितालदे च्यारिको ठातोड्या पांचतालदे पांचकोठातोड्या छतालदे छकोठातोड्यासा तवोंकोठापोलिदेपेतो कुणकुडपडीछे डाकिणी सिहारी भूतप्रेतच ल्या जतीहणवंत तेरे झाडसूं चल्या ॐनमो आदेसगुरुकूं गुरुकी शक्तिमेरीभक्ति फुरोमंत्रईश्वरोवाचा ६ अथ डाकिणीकादूरिहोवाको बालककेगलै बांधवाको येदोयंत्र ईहजंत्रनें अष्टतापाणी मेंघोलिपाजेतो डाकिनी शाकिनी दूरिहोय दूजाजंत्रनें बालककै गलैबांधिजे ७ अथ मन्त्रसहा जरायत लि० अथ हाजरायतमंत्रः ॐनमः कामाख्यायै सर्वं सिद्धि

इहजंत्रनें बालकके गले बांधिजे. जंत्र

१।१	६६	९	५
७	६	७	६
९	=	।	।
८	१	५	४०

इहजंत्र पाणीमें घोलि पाजे. जंत्र.

७	३	१	८
३	६	६	५
४	॥।	५	११
७।	५	१७	॥।

५. [illegible]

म. [illegible]

दाये अमुककर्म कुरु कुरु स्वाहा २४ अस्यमंत्रस्य बालिहकऋषिः ज गतीछंदः कामाख्या ॐनमः अंगुष्ठाभ्यांनमः कामाख्याये तर्जनी भ्यांनमः स्वाहा सर्व सिद्धिदाये मध्यमाभ्यां. वषट्. अमुककर्मअना मिकाभ्यां. हुं कुरुकुरुकनिष्ठिकाभ्यां. वौषट् स्वाहा करतलकरपृष्ठा भ्यां. अस्त्रायफट् ॐनमोहृदयायकाख्याये शिरसेस्वाहा सर्वसिद्धि दाये शिषायै वौषट् अमुककर्मकवचायहूं कुरुकुरु नेत्रत्रयाये वौषट् स्वाहा अस्त्रायफट् अथ ध्यानम्. योनिमात्रशरीराया कुंजवासीनि कामदा रजस्वलामहातेजा कामाक्षीध्येययासदा॥ मंत्रस्यसहस्त्रज पः १००० गुडहलकाफुलांकी १०० आहुतीमेंढलकी रापकरि रापे रुइमें मिलायवेकी वातीकरणी वा वाती तेलकादिवामें मेलणी दी वाकी पूजाकरणी दीवाकेआगे बालक आठवरसको अथवा दसवर सको पवित्र शुद्धवंसको देवता गणको बालकस्थापणो अर आप भी पवित्रहोय मेंढलकाफलऊपरि ईमंत्रका जपका संकलपको जल नाषणो. अर दीपकआगे यो मंत्रलिपि जंत्रको पूजन करणो. अर योजंत्र बालकनें दिषावणो वेंकी हथेलीमें अर मेंढलकी राप तेलसूं औसणिवेंकीहथेलीकेमसलणी.पाछैवेनें बुझाणो ओ देपेंसोसर्वसमं चार सत्यकहे अथवा आठदशवर्षकी देवतागणकी कन्याबैठावणी पवित्रकुलकी वेनेंदीपैसोकहे. दशांशमार्जन दशांशतर्पण. दशांश ब्राह्मणभोजन इतिहाजरायतकीविधी संपूर्णम् ८ यासत्यहाजरायत छै.येसर्वउड्डीपमें लिष्याछे ८ अथवा नींब कापत्र वच हींग सापकी कांचली सिरसूंयांकी धूणीदेतो डाकिणी भूतनें आदिलेर सर्वदोष जाय अथवा कपासकाकाकडामोरकाचंदवाक ध्याली शिवकोनिर्माल्य मरवो. तज छडवलध कोदांत मार्जारकीविष्टा तुसवचकेंससापकीकां

यो जंत्र हाजरायतको लिप्योछै.

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	९	३
७	४	५	६

चलो गऊकोसींग हाथीकोदांत हींग कालीमिरचि यांसारांनें बराब
रिले यांनें कूटि ईकोधूणीदे तो सर्व प्रकारका भूतानें आदिलेर जो
दोसहोय येसारा दूरिहोय यो महामाहेश्वर धूपछे यो चक्रदत्तमें लि
ख्योछे९ अथवा पीपलि कालीमिरची सींचोलूण गोरोचन यांनें सह
तमें वांटि अंजनकरे तो सर्वभूतादिकको दोस जाय १० अथवा क
णगचकी जड दारुहलद सिरस्यूं कूट हींग वच मजीठ त्रिफला सूंठ
काली मिरचि पीपलिफूल प्रियंगू ये बराबरिले यांनें बकराकामूतमें
वांटि नासदे तो अथवा अंजनकरे तो सर्व भूतादिकांको दोस जा
य ११ अथवा गोरपकाकडीनें गोमूतसूं वांटि नासदे तो ब्रह्मराक्ष
सको दोष जाय १२ अथवा सांपाहुलीकी जडनें चावलांका पाणी
में वांटि अथवा घृतमेंवांटि वेंकी नासदेतो भूतादिक जाय १३ इति
भूतादिकांकी उत्पत्तिलक्षण जतन सम्पूर्णम. अथ मृगीरोगकी उ
त्पत्तिलक्षण जतनलि० चिंतासोकादिककरिके कोपकूं प्राप्तिहुयोजो
वाय पित्त कफसो ह्रदाकी नसांमें पेठि स्मरणमात्रको नासकरि मृ
गीका रोगनें प्रगटकरेछे. सोओ मृगीरोग ४ प्रकारकोछे वायको १
पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ मृगीका पूर्वरूपलि० हियो
कांपे अर हियो सूनोव्हेजाय पसेव आवे ध्यानलागिजाय मूर्छा होय
आवे ग्यानजातोरहे नींद आवेनहीं येलक्षणहोय तदिजाणिजे ईको
मृगीको रोग होसी. अर वेनें सर्वत्र अंधकारही दीसे स्मरण जातो
रहे. अर हाथपगांनें आदिलेर साराअंगानें पृथ्वीऊपरि पटकियाक
रे तदि जाणिजे मृगीको रोग हुवो १ अथ वायकी मृगीको लक्ष
ण लिख्यते कांपणोहोय दांतचावे मूंढआगआवे सासहोय काला
पीला वेनें दीसे. ये लक्षण होयतो वायकी मृगी जाणिजे. १

र. टी. [illegible]

अथ पित्तकी मृगीको लक्षण लि० मूंढामें पीलाझागआवै अर सरीरकी त्वचा मूंढो आपि ये पीलाहोजाय वेंने लालपीलो सर्वद्दीसे तिसवणीलागे सर्व सरीर उन्होरहे अर वेंने सर्वअग्नि बलतीसीदीसे येलक्षण होयतौ पित्तकीमृगीजाणिजे २ अथ कफकी मृगीकोलक्षण लि० मूंढे सुपेद झागआवे सरीरकी त्वचा मूंढो नेत्र येसारा सुपेद होजाय सीतलागे रोमांचहोय वेंने सर्व सुपेदहीदीसे येलक्षण होय तौ कफकीमृगीजाणिजे३ अथ सन्निपातकीमृगीको लक्षणलि०येरा छे कह्यासोजींके सर्वलक्षणहोय तीनैं सन्निपातकी मृगी जाणिजे ४ अथ मृगीको असाध्यलक्षणलि० जींको सरीर घणो फुरके सरीरक्षीणहोजाय भंवाराचढिवालागिजाय नेत्रांकी विकृति ओर होजायतौ ओ मृगीवालो मरिजाय अथ मृगीकासमय लि० बारवे १२ दिन आवैतौ वायकी जाणिजे पंद्रवेदिन आवैतौ पित्तकी जाणिजै एक महिना १ में आवैतौ कफकी जाणिजे अठे दृष्टांतदीजेछे. जैसे इंद्रजलनें वरसेछे तदि सर्व वस्तुउगे परजव गोंहू चणाने आदिलेर पृथ्वी ऊपरि सरद ऋतुमें हीउगे तेसे सरीरमें ये रोगहे. तो सदाही पणि वांरोगांको समय आवे तदि कोपकरे. अथ मृगीका जतन लि० प्यते तिलके साथि लसण पायतौ वायकी मृगीजाय १ दूधकेसाथि सतावरी पायतौ पित्तकी मृगीजाय २ ब्राह्मीको रस सहतकेसाथि पायतौ कफकी मृगीजाय ३ अथवा राईसिरस्यूंनें पायतौ अथवा यांनें गोमूत्रनें वांटि सरीरके लेपकरें तो मृगीजाय ४ अथवा तेल सेर सहजणाकोरस सेर ४ कंवारका पाठाको रससेर ४ चिर चिराको रस सेर ४ नींबकी छालिको रससेर १ गोमूत्र सेर ४ यां

न० टी. उन्माद, अपस्मार, मृगी, वगैरे जोडरनारीरोगछे. दवाका पथ्य लि० चावल, मूंग, गऊं जुनुपुन, दूध, मुर्गी, शहत इ० कुपथ्य लि० चिंता, भय, क्रोध, आसुरीदगाी, मद्य, तीखो, गरम, शीसंग, महनत, परमाद, तीक्ष्ण, वदल, धूप, नाग, चिता, एगा, मैथुनादि इ० नहीं करणा.

में तेलनेंपकावे पाछे ये सारारस वलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि
ईतेलनें जुदोराषे पाछे ईतेलको मर्दनकरेंतो मृगीजाय ५ अथवा
मेणसिल नील टांचकीवींट अथवा कबूतरकीवींट यांदोन्यांनें मिही
वांटि अंजनकरेंतो मृगीजाय ६ अथवा पारो माऱ्यो अभ्रकसार
सोध्यो गंधक माऱ्यो मेणसिल मारी हरताल रसोत ये सारी बराब
रिले पाछे यांनें गोमूतमें दिन १ परलकरे पाछे लोहका पात्रमें यां
सारांसूं दूणी गंधकमेलि अर गंधकके बीचि यांनें मेलि यांनें पका
वले पहर येकमें पाछे ईनें रती १ रोजीनादिन ७ ताई पायतो मृगी
जाय ७ अथवा सूंठि काली मिरचि पींपलि संचरलूण सेकीहिंग ये
सर्व बराबरिले यांनेंमिहीवांटि टंक २ रोजीना घृतकेसाथि दिन १५
लेतो मृगी जाय ८ अथवा महलेठीनें मिहीवांटि टंक २ पेठाका र
समें दिन ७ पीवेतो मृगी जाय ९ अथवा ब्राह्मीका रसके साथि
वच कूठ यांदोन्यांनें मिहीवांटि टंक २ पीवेतो अथवा सापांहुलीका
रसकी साथि पीवे अथवा पुराणागुडके साथि दिन १५ पीवेतो
मृगी जाय १० अथवा गऊको घृत सेर १ पेठाको रस सेर ८ म
हलेठीका काढाको पाणी सेर २ यांतीन्यांनें पचावे यांदोन्यांको रस
वलिजाय घृत आयरहे तदि ईघृतनें पावेतो मृगी जाय ११ अथ
वा सहजणाकी छालि कूठ नेत्रवालो जीरो लसण सूंठि कालीमिर
चि पीपलि हिंग येसर्व पईसापईसा भरले तेल सेर ३॥ बकराको
मूत सेर २ ले पाछे यांनें मधुरी आंचसूं पकावे येसारा वलिजाय
तेलमात्र आयरहे तदि ईको नासदे तो मृगी जाय १२ येसर्व जतन

[illegible]

भावप्रकासमें लिष्याछै. अथवा पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि त्रिफला वायविडंग सींधोलूण अजवायण धणों जीरो यांनें बराबरिले त्यानें मिहीवांटि टंक२ गरमपाणीसूं लेतो मृगीजाय संग्रहणीजाय उन्मादजाय ववासीरजाय योचूरण यांनें दूरिकरेंछे १३ अथवा पुष्यनक्षत्रकेदिन कुत्ताका पित्ताकाढवेंको अंजनकरे अथवा घृतकेसाथ ईको धूपदेतो मृगीजाय यो जोगतरंगिणीमें लिष्योछै १४ अथवा वचकोचूर्ण टंक २ दूधकेसाथि पायतो अथवा सहतकै साथिपाय महिनो येकतो मृगीजाय १५ यो जोगत रंगिणीमें लिष्योछै. अथवा नोल्याकी विष्टाबिलायकी विष्ठा कागलाकीवीठ यांकी धुणींदेतो मृगीजाय १६ यो चक्रदत्तमें लिष्योछै. इति मृगीरोगको लक्षण जतन सम्पूर्णम्. इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्री सवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागर नामग्रन्थे मदात्यय उन्माद मृगी यांका सर्व भेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण जतन निरूपणं नाम सप्तमस्तरंगः ७

अथ वातव्याधिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० कषायलो कडवो तीषोवस्तका षावासूं स्वल्पभोजनसूं लूषीवस्तका षावासूं पेदसूं सीतल भोजनसूं घणांमैथुनसूं धातका क्षीणपणासूं मलमूत्रका रोकिवासूं सोचसूं भयसूं घणालोहीका निकलवासूं मांसका क्षीणपणासूं घणा वमन विरेचनसूं आंवका दोषसूं बूढापणासूं मनुष्यांके वर्षाऋतुमें अथवा तिसरे प्रहर अथवा पहरके तडके बलवान वाय हैसो मनुष्यका सरीरकी रीति जो नसां त्यांमें आय धसिकरि नानाप्रकारका जो रोग त्यां सारांनें अंगमें अथवा येकेक अंगमेंही ओवांवस्तांसूं कुपित जो वाय सो चोरासी प्रकारका रोगांनें करेंछै

न. टी. वायकारोग ८० प्रकारकाछै. अरग्रंथमें चोरासीप्रकारका लिख्याछै. सो औरग्रंथांका मतसोंछै. जामें नामतुल्यपणाछै. अर जैठेवा वायुको रोगछै औआपणाही विचार विचार पाछै औषधी लिखीछै. अर कोईकोईरोग बेसादी लिख्याछै. सोजाणदेणाछै.

सो वे चोरासीं वायका रोग लिखूंछूं. सिरोग्रह रोग १ अल्पकेस २ जंभाई घणीआवे ३ दाढो मूंडे नहीं ४ जीभ हालेनहीं ५ वकाईपातो बोले ६ हॉलूंबोले ७ गुंगापणो होय ८ पोटोही बोले ९ घणो ब के १० जीभको स्याद जातोरहे ११ वहरो होजाय १२ कानामें गुं गाट शब्दहोय १३ त्वचामें स्पर्शको ग्यान जातोरहे १४ अर्दितरो ग १५ कांधीमुंडेनहीं १६ भुजासुशिजाय १७ भुजामुंडे नहीं १८ चर्चितरोग १९ विश्वार्चीरोग २० ऊर्ध्व वातडकारघणी आवे २१ आध्मान आफरोहोय २२ प्रत्यध्मानरोग होय २३ अष्टीलारोग २४ प्रत्याष्टीलारोग २५ तूनी २६ प्रतितूनी २७ अग्निकी विसमता २८ आटोपरोग २९ पसवाडाकी पार्श्वशूल ३० पीठीमें शूल चा ले ३१ वहूमूत्रता ३२ मूत्ररुकिजाय ३३ मलगाढाहोजाय ३४ मलउतरेनहीं ३५ गृध्रसीरोग ३६ कालापपंजता ३७ पोडापणो ३८ पांगलापणो ३९ क्रोष्टशीर्षक गोडाकोरोग ४० पल्वरोग ४१ वातकंटकरोग ४२ पगसोजाय ४३ पग वल्वोकरे ४४ आक्षेपरोग ४५ दंडकरोग ४६ वातक्षेपक ४७ पित्तक्षेपकरोग ४८ दंडिपतानक ४९ अभिघातक्षेपक ५० अंतरायाम ५१ वाह्यायाम ५२ धनुर्वा त ५३ कुब्जक ५४ अपतंत्र ५५ अपतान ५६ पक्षघात ५७ अ भिलापिक ५८ कंप ५९ स्तंभ ६० व्यथा ६१ तोद ६२ भेद ६३ स्फूरण ६४ लूपापणो ६५ कालापणो ६६ क्षीणापणो ६७ सीतल पणो ६८ रोमांच ६९ अंगमर्द ७० अंगविभ्रम ७१ नसांको सं कोच ७२ अंगकोसोस ७३ डरपणो ७४ उन्मादपणो ७५ मोह पणो ७६ नींद नहीं आवे ७७ पसेवनहीं आवे ७८ वल्कीहानि

भ. टी. भाखामें वातरोगकानामलिख्या [illegible] संस्कृत [illegible] भा ल भाखामें [illegible]. जैसे (हनुग्रंह) [illegible]. जैसे ([illegible]) [illegible]. अर जैसे ([illegible]) [illegible].

२६

७९ वीर्यकोनास ८० स्त्रीधर्मकोनास ८१ गर्भकोनास ८२ विना श्रमहीश्रम ८३ श्रमनास ८४.

अथ वातव्याधिकासर्वरोगांका लक्षण अर जतन लिष्यते अथ वातव्याधिको सामान्यजतन लि० इतनी वस्तांका करिवासूं वाय का सर्वरोग दूरिहोयछे. मीठीवस्तकापावासूं सलूणीवस्तांका पावा सूं चीकणीवस्तका पावासूं वायकासर्वरोग दूरिहोयछे. आंवलाका पावासूं गरमवस्तका पावासूं नींदकालेवासूं तावडाकासेवासूं पसे वकालेवासूं तृप्तिभोजनसूं गरमउवटणासूं तेलकामर्दनसूं ओषधां कालेवासूं यांवस्तांकासेवासूं सामान्यवायकारोगदूरि होयछे अथ शिरोग्रहकोलक्षणलि० वायहेसो लोहीसूंमिली माथानें नषांनेंलूषी करे पाछेवामें घणीपीडकरे नसांनें कालीकरे योरोग असाध्यछे. अथ शिरोग्रहकोजतनलिष्यते दशमूलको काढोकरिवेको रसकाढे अर विजोराकोरसकाढे अर ईरसमें तेलपकावे पाछे ईतेलको मर्दन करेतो सिरोग्रहदूरिहोय २ अथवा कूट अरंडकी जड धतूराकीजड सहजणाकीजड सूंठि कालीमिरचि पीपलि सींगीमूहरो यांनें वरा वरिले अर मिहींवांटि गरमकरि लेपकरे सुहावतो २ तो सिरोग्रह दूरिहोय ३ अथ कल्पकेसांकी चिकत्सा लि० देसी गापरूतिलांका फूल यांनें वरावरिले अरयांकीवरावरि सहत घृतले तोमें यांदोन्यां नें केसांके लेपकरेतो केसघणावधे निश्चेछे. अथवा महलोठि नीला कमलकीजड मिलकादाप इनकों तेलमें घृतमें दूधमें मिहींपीसि ले पकरेतो केस लंबाघणा होय अरयां ओपधांसूं इन्द्रलुप्तकोदोसदूरि होय ४ अथ जंभाईको लक्षणलि० मूंढाका एकस्वासनें प्रथम मूंढामें पीजाय पाछे ओश्वास अपूठो काढिदे वेगदेर अर आलस

+ न. टी. जो पावरोगछे वींकोलक्षणलिप्यांछे. ऐसेही अनुक्रमसों श्रौरभिलायो. वायकाइ रोगांकीगिनति ८४ पोतरांकीलिषीछे. निदानिमें इयांकेग्रंथमेंनिदान भरमजन लिप्याछे. सो पहलांअंकप्रमाण गिनतीराषि औषधीनिदानग्रंथमेंछे परंतु अनुक्रमसों नहीं आपदीजै.

अर नींदनेंलीयाआवे वेनें जंभाई कहजे अथ जंभाई घणी आवे तौ
को जतन लि० सूंठि पिपलि कालीमिरचि अजमोद सींधोलूण या
नें जुदाजुदा अथवा येकठा मिहींवांटि गरमपाणींमूं लेतो जंभाई
को रोग दूरिहोय १ अथवा कडवातेलको मर्दनकरे अथवा मीठो
भोजनकरे अथवा तांबुलको भक्षण करेतो जंभाईको रोग दूरिहोय
२ अथ हनुग्रहरोगको लक्षण लि० दांतणकी फाडसूं जीभनें घणी
घसेतो अर चबीणाका पावासूं अथवा कहींतरेकी चोटसूं दाढीका
जडमें रहतो जो वाव सो कुपित होय औ मूंढानेंफाड्योहीरापिदे अ
थवा मीच्योंही रापिदे तदि पुरुषहे सो वडाकष्टमूं बोलिवामें अर
पावामें समर्थ होय तीनें वेग्रहे सो हनुग्रह रोग कहेले. अथ हनु
ग्रहको जतन लि० जींकोमूंढो मिचिगयो होय तीनें चीकणी वस्त
सूं सेकी पसेव लिवावेतो मूंढो उघडि आवे. अर जींको मूंढो फा
ट्योरहजाय तींकें सीतलवस्तसूं फाट्यापणो दूरिहोय अर जींकोडा
ढी मुंडिवासूं रहजाय तीनें पीपलि आदो चवाय चवाय थुकायदेतो
दाढीमुंडिवाकोरोग दूरिहोय १ अथवा तेलमें लसणनेंतलि सींधोलू
णलगाय पायतो हनुग्रहरोग दूरिहोय १ अथवा उडदांका वडामें
लसण सींधोलूण आदोहिंगमिलाय तेलमें वडाकरि पायतो हनुग्रह
रोग जाय १ अथवा तेलनें गरमकरिसुहावतो सुहावतो माथाके म
र्दन करेतो हनुग्रहरोगजाय ३ अथवा प्रसारणी तेलकामर्दनसूं इत
नारोगजाय सोलि० पीपलको पंचांग टका १०० भरले तीनें सोला
१६ सेर पाणीमें ओटावे वेनें कुटि पाछे वेंकोचतुर्थांश आयरहे. तदि
वेनेंछाणवे पाणीमें तिलांकोतेल टका १०० भरनाप अर इहीं मंद

* [illegible]

हीको मठो टका १०० भरनापे अर टका १०० भरकांजीको पाणी नापे अर तेलसूं चोगुणो गऊको दूध नापे अर चित्रक पीपलमूल महुवो सींधोलूणवच सौंफ देवदार रास्ना गजपीपलि छड छडीलो रक्तचंदन अरंडकीजड परेटीकीजड सूंठि येसारी औपदि टकाटका भरिले त्याको काढोकरि वेंकाढाकोरस वेतेलमें नापे अर पीपकोरस सेर १ वेतेलमें नापे पाछै मधुरी आंचसूं पकावे ये सर्वरस वलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि तेलनें उतारिले पाछै ईतेलको मर्दन करे अथवा नासदे अथवा ईनें पुवावे अथवा ईकोसेककरेतो सर्व वायकाविकारनें हनुस्तंभनें पांगुलानें जिव्हास्तंभनें अर्दितरोगनें वकाईकारोगनें कांधाकास्तंभनें पीठीकासूलनें गृध्रसीनें पोडानें चायलानें धनुर्वातनें कुवडापणानें इतना वायका रोगांनें येतेल दूरि करैछे. इति प्रसारणीतैलं अथ जिव्हास्तंभको लक्षण लिप्यते वाणीनें वहवावालीजोनसां त्यांमेंरहतोजोपवन सोकुपितहोय जीभनें स्तंभितकरेंछे. सोवाजीभजलकापीवामें अर बोलवामेंअसमर्थहोयछै ईनें जिव्हास्तंभरोग कहिजे अथ जिव्हास्तंभको जतनलि० मीठो रस लूण पटाई चीकणाउन्ही यां वस्तांसूं जीभनें यथायोग्यसें मर्दनकरे.

अथवा सुहावता गरम पाणीसूं कुरला करेतो जिव्हा स्तंभको रोगदूरिहोय अथगूंगापणो गद्गदपणो बकाई पायबोलबारोगांकोलक्षणलि० कफ करिके संजुक्तवाय हैसो धमनीनाडीनें वहवावली जोनसांत्यांनें आच्छादनकरि मनुष्यांनें गूंगा अर नाकमें होबोले अरवकाई पाय बोले इसा रोगांनें करेछे. अथगूंगाको अर गनगन्याको अरवकाई पाय बोले त्यांको जतन लि० ग

न. टी. जिव्हास्तंभ वायुरोगछै. पाछै [illegible] जिव्हास्तंभ पाछै गूंगापणाको गद्गदपणाको [illegible] जतन [illegible] सुनना[illegible]छै, परंतु [illegible] जाणेछै. [illegible]

ऊको घृत सेर सहजणाकीजड टका १ भर वच टका १ भर सीं
धोलूण टका १ भर धावड्याका फूल टका १ भर लोद टका १ भर
यां सारानें वांटि बकरीको दूध सेर ४ तीमें घृत सेर १ नापि अर
ये ओपदि मिलाय मधुरी आंचसूं पकावे पाछे दूध अर ओपधी
वलिजाय घृतमात्र आयरहे तदिवेनें काढिले पाछे ईघृतको सर
स्वतीमंत्रसूं विधिपूर्वक सेवनकरेतो गूंगापणों अर गनगन्यापणो
अर वकाई पायवो ये सारारोग दूरिहोय अर वेंकीस्मृति बुद्धि मेधा
कांति बहुत वधे इति सारस्वतघृतम्. अथसरस्वतीमंत्र लि० ॐह्रीं
ऐंह्रीं ॐसरस्वत्यैनमः यो सरस्ती सिद्धिमंत्रछे. ईको यात्र्अछरां व
रावरि सहस्रकरे ईमंत्रनें सिद्धि करि ईमंत्रसूं यो घृतपाय अथवा
मालकांगणीको तेल पायतो ये सर्व रोग जाय अर वेंकी बुद्धि तत्का
ल चमत्कारिक होजाय अथवा हलद वच कूठ पीपलि सूंठि जीरो अ
जमोद महलोठी महुवो सींधोलूण यांनें वरावरिले पाछे यांनें निप
ट मिहीवांटि टंक २ मापनकेसाथिलेतो रोजिनादिन २१ तो येसर्व
रोग दूरिहोय अर वोपुरस श्रुतिधर होजाय हजारश्लोक रोजीनांकं
ठकरे इतिकल्याणकावलेह. अथ प्रलाप अर वाचालरोगका लक्षण
लिष्यते आपका कुपथ्यसूं कुपित जोवाय सो अर्थ रहित क्यूंकाक्यूं
वचनवोले तीनें प्रलापरोग कहिजे. अर अर्थलीयां पोटाशब्द मु
पसूं काढे तीनें वाचालकहिजे. अथ वाचालप्रलापरोगका जतन
लिष्यते. तगर पित्तपापडो कुटकी नागरमोथो आसगन्ध ब्राह्मी
दाप अगर दसमूल सांपाहूली यांसारांनें वरावरिले पाछे यांनें
जौ कूटकरि यांको काढोकरिदेतो प्रलापनें अर वाचालरोगनें दूरि
करेछे. अथ जीभकारसन्यानका लक्षण लिष्यते जो मधुर रसनें आ

न. टी. प्रमाद. वायाद. के लिये [illegible] देवरोगांको [illegible] लिख्यते.
जीमें विचारणो चाहिजे. [illegible]
[illegible] देहप्रयोग [illegible]

दिलेरछ ६ रसछे त्यांका पावानें जथार्थज्ञानजीभको जातोरहे जा णिजैक्यूंई. पाईजेछे. तीनेंरसाग्यानरोग कहिजे अथ रसाग्यान रोगको जतन लि० सूंठि कालिमिरची पीपलि सींधोलूण अम लवेद चूक यां औषध्यांनें मिहीवांटि यांको येकजीवकरि जीभकै आ छीतरहलेपकरैतो रसाग्यानकोदोस दूरिहोय १ अथवा ब्राह्मी प लाश पापडो राई कालीजीरी पीपलि पीपलामूल चित्रक सूंठि यांनें मिहीवांटि जीभकै वारंवार लगावै अथवा यांको काढोकरि ईका कु रला करैतो जीभका रसका अग्यानपणाको दोस दूरिहोय १ अथ वा आदो वारंवार षावतो जीभको रसाग्यानपणाको बहरापणाको कर्णनादको दोस दूरिहोय अथ सरीरकी त्वचासूनी होयगईहोयतो को लक्षण लि० जोपुरसनें सीत उष्ण कोमल कठिणपणाकोग्यान जातोरहै तीनें त्वचा सूंनीपणाको रोग जाणिजे अथ त्वचाशून्यको जतन लि० त्वचाशून्यपणावालाकै लोही काढायजेतो योरोगजाय १ अथवा लूण धमासो यां दोन्यानें तेलमें मिलाय तीको सरीरकै मर्दन करैतो त्वचाकी शून्यपणाको दोष दूरिहोय १ अथ अर्दित रोगको लक्षण लि० ऊंचासूं पडती ज्योभारीवस्त तीनें हाथांसूंऊंचो मूंढोकरि ग्रहणकरै अथवा करडीवस्तनें घणीषाय अथवा घणां हंसे घणी जंभाईले अथवा बोझानें माथासूं वणोवहे अथवा विसम स्थानमें सोवे तीपुरसकै सिरमें नासिकामें होठमें डाढमें ललाटमें नेत्रांमें यांस्थानामें रहतो जो वाय सो पुरसका मूंढामें अर्दितरो गनें उपजावेछे. सोवैपुरसको मूंढो आधो वांको होजाय अर वैको कांधो मूंडेनहीं अर वैकोसिर हालवोकरै आछी तरहबोल्योजायन हीं आछीतरहदेष्यो जायनहीं. अर वेपुरसके कांधामें अर डाढमें

न. टी. ईग्रंथमें जीभका[illegible] अग्यानको लक्षण लिख्योछै [illegible] अर कर्णनाद्को निदानपूर्वक उपचारछै. तीनें [illegible] लिख्यार नहींलिख्यो. [illegible] की टीकामें. [illegible] अर [illegible]

अर दांतामें पीडरहे ये जीमें लक्षणहोय तीनें अर्दित रोगकहिजे १ सो अर्दितरोग ३ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ अथ वायका अर्दितको लक्षण लि० लाल घणीपडे सरीरमें पीडा घणीहोय सरीरकांपे फुरकेघणो डाढीमूंढेनहीं होठ सूजिजाय येलक्षण होयतो वायको अर्दित जाणिजे १ अथ पित्तका अर्दितको लक्षण लि० मूंढो पीलो होजाय ज्वर होय आवे तिसघणी होय तो पित्तको अर्दितजाणिजे २ अथ कफका अर्दितको लक्षण लि० मोहघणोहोय आवें गलामें सिरमें कांधोमें यांतीन्यास्थानामें सोजो होय आवे अर ये तीन्यूं मूडैनहीं तो कफको अर्दितरोगजाणिजे३ अथ अर्दितरोगको असाध्यलक्षण लि० क्षीणपुरसके निमेष नहीं लागे जीपुरससूं बोल्यो नहींजाय अर सरीर कांपतातीन वरस होयगयाहोयतो अर्दितरोग असाध्यजाणिजे.१ अथ अर्दितरोगको जतन लिष्यते अर्दितरोगवालानें चीकणूं पुवाजे. नारायण विसगर्भनें आदिलेर त्यांको मर्दन कराजे गरम वस्तको सेवन कराजे डाहदिवाजे गरम औषध्यांसूं पसेव लिवाजे शिरऊपरि वायका तेलनापजे यां वस्तांसूं अर्दितरोगजाय २ अथ वायका अर्दितरोगको जतन लि० दसमूलका काढासूं वायको अर्दित जाय १ बिजोंगका रसकासेवासूं वायको अर्दित जाय १ अथवा पीपली पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांका काढासूं वायको अर्दितजाय१ अथवा उडदांका वडामें हींग आदो लसण मिलाय पाय उपरसूं मांसको सोरवो पीवेतो वायको अर्दित जाय १.

अथ पित्तका अर्दितरोगको जतन लि० घृतको वस्तिकर्मकरे अथवा दूधको सेवनकरेतो पित्तको अर्दितरोग दूरिहोय १ अथ क

[illegible]

फको अर्दितरोगको जतन लि० वमन करायासूं कफको अर्दित जाय १ अथवा तिलांका तेलमें लसण मिलाय पायतो सर्व प्रकारको अर्दित तत्कालजाय १ अथ मन्यास्तंभको लक्षण लि० दिनका सोवासूं घणा वेठ्यारहे वासूं विकारकूं प्राप्तिहुवो जो कफ सोवाय सूं मिलि कांधानें मूंडिवा देनहीं तीनें मन्यास्तंभरोग कहिजे १ अथ मन्यास्तंभको जतन लि० दसमूलाका काढासूं अथवा पंचमूलका काढासूं मन्यास्तंभजाय अथवा पसेव लेवासूं अथवा नासिकालेवासूं मन्यास्तंभजाय १ अथवा तेलको मर्दनकरि तीऊपरी एरंडकापान वांधेतो मन्यास्तंभजाय १ अथवा कूकडाका अंडाकोरस तीमें सींधोलूण अर घृतमिलाय तीको कांधीके मर्दन करेतो मन्यास्तंभ जाय १ अथ बाहुशोषको लक्षण लि० कांधामें रहतो जोवाय सो कुपित होय भुजानेंसुसायदे अर भुजानें स्तंभितकरिदेवेनें बाहु सोसरोगकहिजे १ बाहुसोसको जतन लिप्यते पाछानें कल्याणघृत उन्मादरोगमें लिप्योछे तीको सेवनकरेतो बाहुसोस रोग जाय १ अथवा पेरेटीको काढो तीमें सींधोलूणमिलाय पीवे तो बाहुसोस अर मन्यास्तंभरोगजाय १ अथ अवबाहुक रोगको लक्षण लिप्यते भुजाकी नसांमे रहतो जो वाय सो नसानें संकोचकरि भुजानें स्तंभितकरि देछे १ अथ अवबाहुक रोगको जतन लि० सींतल जलकी नासदेतो अवबाहुकरोगजाय १ अथवा गूगल मोईजडीकी जड तीको काढोकरि तीमें गूगल मिलाय तीको नास देतो अवबाहुक रोगजाय १ अथवा उडदांका पाणीको नासदेतो अवबाहुक रोगजाय १ अथवा उडद अलसी जव कटसेलो कव्याली गोपरू अरलू कोठीकीजड कपास्या सणकाबीज कुलत्थ बोर

न. टी. बाहुशोष अवबाहुक ये दोयरोगछे. जीमें बाहुशोषछे, सो पीडवी भुजानें सुकायदेछे. अर कोईकोईकी भुजा मध्यभागमाहसौं [illegible] देछे. [illegible] सो नाडीदूरि अर मध्यभागमाहिसौं [illegible] होयजावछे. [illegible]

कीजड साठीकीजड पींपकी जड रास्ना परेटीकीजड गिलवै कुटकी येभी तेलमें पचावै पाछे ईतेलको मर्दन करैतो अवबाहुक रोग जाय १ इति माषतेलम्. अथ विश्वाचीरोगको लक्षण लिष्यते हाथकी अंगुलीयांके नीचें पाजिआवे अर भुजाके पाछे पाजिको रोग करें भुजानें निकमी करिदे तीनें विश्वाचीरोग कहीजे १ अथ विश्वाची रोगको जतन लिष्यते दसमूल परेटी उडद यांको काढोकरि ती में तेल मिलाय पीवेतो विश्वाचीरोगजाय १ अथवा उडद सींधो लूण परेटी रास्ना दसमूल हींग वच सूंठि यानें मिहीवांटि पाणीमें ओटावे पाछे वे पाणीमें तेल नांषे तेलनें पकावै तदि पाणी बलि जाय तेल आयरहे तदि तेलनें उतारिले पाछे ईको मर्दनकरे तो विश्वाचीरोगनें बाहूसोसनें अवबाहुकरोगनें पक्षाघातनेंयेमाषादि तेल दूरिकरेछे १. अथ उर्ध्व वातरोगको लक्षण लि० कुपथ्यकासे वनसूं नींचलो पवन कुपित होय मूंढाका कफसूं मिलि वारंवार ड कार घणी हीलेतो उर्ध्व वातरोग कहिजे १ अथ उर्ध्व वातको ज तन लिष्यते सूंठि भाग १० दस वधायरो भाग १० हरडेकीछालि भाग ५ आसगंध भाग १ सेकीहींग भाग १ सींधोलूण भाग १ यां सर्वकी बराबरि चित्रक निसोत भाग ५, यां सारांको मिही चू र्णकरि टंक २ गरमजलसूं लेतो उर्ध्व वातरोग जाय १ अथ आ ध्मानरोगको लक्षण लि० सारापेटमें आफरो घणोहोय अर पी ड घणीहोय अर गुदाको पवन रुकिजाय तीनें आध्मानरोग क हिजे अथ आध्मानरोगको जतन लिष्यते. आध्मानरोगमें लंघन कराजे पाचनकी ओषदी दीजे भूष लागियाकी ओषदि दीजे ब स्तिकर्म कराजे अथवा पीपलि टंक २ निसोत टंक १० मिश्री टंक

म टी. [illegible]

१० याको चूर्णकरि टंक २ सहतसूं लेतो आफराको रोग जाय १ यो नारायणचूर्णछे अथवा वच कूट सोंफ सेकीहींग सींधोलूण ये बराबरिले त्यांको चूर्णकरि कांजीसूं मिहीबांटि गरमकरि सुहावतो पेटकै लेपकरैतो आफरो दूरिहोय १ अथवा महानाराच रससूं आफरो जाय सो लिषूंछूं हरडेकी छाली टका १ किरमालाकीगिरि टका १ आंवलाटका १ दांत्युणी टका १ कुटकी टका १ निसोत टका १ नागरमोथा टका १ थोहरकोदूध टका १ यांसारानें बांटि सेर ४ पाणीमें औटावै पाछे ईपाणीको आठउंहिंसो आय रहे तदि पाणीमें जमालगोटाका छोंत उतारिटका १ भर मिहीवस्त्रमें बांधिसनैसनै जमालगोटानें पचावै ओपाणी वलिजाय तदि जमालगोटानें काढिले पाछे यांजमालगोटाको भाग आठऊंले सूंठि तीनभागले कालीमिरचि दोयभागले पारो १ भागले सोधीगंधक १ भागले पाछे पारा गंधककी कजली करिले पाछे वेकजलीमें येसारा मिलावे पहरयेक १ परलकरै पाछे रती येककीगोली बांधे गोली १ सीतलजलसूं देतो आफरानें सूलनें आनाहनें प्रत्याध्माननें उदावर्तनें गोलानें उदरकारोगनें यांसारानें यो महानाराचरस दूरिकरैछे ईका दरतलागि चूकैतदि मिश्रीमिलाय दहीं पुवाजे पाछे चावलांनें दहीसूं मिलाय अनुमानमाफिक सींधोलूण वेमें घालि थोडासा येपुवाजेतो आध्मानको रोगजाय १ अथ प्रत्याध्मानको लक्षणलि० पसवाडामें अर हियामेंतो आफरोहोयनहीं अर नाभीसूं ऊंरपेटहो पेटमें आफरो होय तीनें प्रत्याध्मान कहिजे अथ प्रत्याध्मानको जतनलि० लंघण कराजे पाचानादिक दीजे वस्तिकर्म कराजेतो प्रत्याध्मानजाय १ अथ अष्टीलाको लक्षण लि० नाभिकेनीचे पवनकी गांठि भाठासे

न. टी. [illegible]

रीसीविधि मलमूत्रनें रोकिदे अर ऊठ पीड घणीकरे तीनें अष्टीला प्रत्यष्टीला कहिजे अथ यादोन्यांको जतन लि० सेकीहींग पीपला मूल धणो जीरो वच चव्य चित्रक पाठ कचूर अमलवेद संचर लूण सींधोलूण सांभरोलूण सूंठि कालिमिरची पीपलि जवषार साजी अनारदाणा हरडेकीछाली पोहकरमूल डासन्यां झाडलूप की जड येसारा समभागले यांनें मिहींवांटि आदाकारसकी पुट३ तीन दे पाछे ईचूर्णनें छाया सुकाय टंक २ गरमपाणीसूंलेतो वात ष्टीला अर प्रत्यष्टीलाजाय १ अथ तूनीरोगको लक्षण लि० मल मूत्रका स्थानमें रहतो जो पवन सो गुदालिंगमें पीडाकरे तीनें तूनीरोग कहिजे १ अथ प्रतीतूनीरोगको लक्षण लि० गुदालिंग में रहतो जो पवन सोवानें पीडाकरे पेडूमें जाय पीडाकरे तीनें प्र तीतूनीरोग कहिजे १.

अथ यांदोन्यांको जतनलि० यांदोन्यांके स्नेहकी बस्तिदीजेतो तूनीरोग प्रतितूनीरोग जाय १ अथवा सूंठि पीपली कालिमिरचि सेकीहींग जवखार साजीसींधोलूण यांनें मिहीवांटि टंक २ गरम पा णीसूं लेतो तूनी अर प्रतितूनीरोग जाय १ अथ त्रिकसूलको लक्षण लि० कटीका तीन्यूं हाडामें अर पीठिका तीन्यूं हाडामें अर वासाका हाडांमें पीडा होय तीनें त्रिकसूलरोगकहिजे १ अथ त्रिकसूलको जतन लिष्यते वालूरेतसूं सेककराजे अथवा आणीछाणाकी राष को सुहावतो सेककराजे सो त्रिकसूल जाय अथवा गुल्हीवोल्ही की जडकी वकल आसगंध झाडलूपकी वकल गिलोय सतावरी गोषरू रास्ना निसोत सोंफ कचूर अजवायणि सूंठि यांनें वराबरि ले यांसर्वको वराबरि सोध्योगूगलले गूगलसूं चौथाई घृतले यांसा

[illegible]

रांको एकजीवकरि पांचमासा रोजीना दारूकेसाथिले अथवा गर
मपाणीकेसाथि अथवा मांसका सोरवाकेसाथिलेतो त्रिकमूलनें
जानुग्रहनें भुजास्तंभनें संधिगतवाय होय जीनें हाडटूटिगयोहोय
तीनें षोडा पणानें गृध्रसीनें पक्षाघातनें यांसारारोगानें योत्रयोदशां
गगूगल दूरिकरेछे. इति त्रयोदशांगगूगल १ अथ वस्तिवातको ल
क्षण लि० पेडूको वाय कुपितहोय अर मूत्र आछीतरे चालतो हो
य तीनें रोकिदे अरघणारोगानें प्रगटकरेतीनें वस्तिवातरोगकहिजे
१ अथ ईको जतन लि० परेंटीकीजडकी वकल तोंवरावरि मिश्री
मिलाय टंक २ गऊका दूधकेसाथि लेतो वारंवार मूतवाको रोग
दूरिहोय १ अथवा त्रिफलाको चूर्ण करि तोंवरावरि सारमिलाय
मासा ४ सहतकेसाथ चाटेतो वारंवार मूतवाको रोगजाय अथ
मूत रूकिगयोहोय तींको जतन लि० जवषार मासा ५ मिश्रीकेसा
थिलेतो मूत्रको बंध छूटे १ अथवा पेठाकावीज अर तेवरसीकावीज
यानें पाणीमें घोटि मासा २ तीमें जवषार नाषि मिश्रीमिलाय पीवे
तो मूत रुकिगयोहोय तींको बंधछूटे १ अथवा चिणियां कपूरकीवत्ती
करि लिंगमें अथवा भगमें देतो मूतकोबंधछूटे अथ गृध्रसीरोगको
लक्षण लि० पहली कुलावामें पीडहोय पाछे जांघमें पीडहोय पाछे
पींठीमें पीडहोय पाछे गोडामें पीडहोय पाछे कटीमें पीडहोय पाछे
पगांमें पीडहोय अर पगानें स्तंभितकरिदे अर पग निपटहोल्यू फ
टे ईनें गृध्रसीरोग कहजे सोगृध्रसीरोग २ दोय प्रकारकोछे. एकतो
वायको येक वायकफको २ वायकामेंतो पीड घणीहो अर सरीर
वांको होयजाय अर गोडामें जंघामें संधिसंधिमें फूरकणीहो अर
स्तंभितहोय अरवायकफकीगृध्रसीमेंसरीरभारीहोय नायअग्निमंद

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible].
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible],

होजाय अर तंद्राहोय लालवर्णापडे अथ गृध्रसीरोगको जतन लि० वमनकरावासूं गृध्रसीरोगजाय १ वास्तिकर्मसूं गृध्रसीरोगजाय १ स रीरनें हरडैकाजुलावसूं निरामकरि पाछें वस्तिकर्मकरे १ अथवा अ रंडकोतेल अर गोमूत्रमिलाय महिनाएकताईं पीवेतो गृध्रसीरोगजा य अथवा तेल घृत आदाकोरस बिजोराकोरस चूकगुड ये अनुमान माफिक मिलाय महिनाएकताईं पीवेतो गृध्रसीरोगजाय अर इहींसूं कटीकीपीड जांघकीपीड त्रिकसूल गोलोउदावर्त येभी रोगजाय १ अथवा अरंडोल्यांकीदूधमें पीरकरि महिनाएकताईं पायतो गृध्रसी रोगनें पोताकी मूलनें दूरिकरे १ अथवा अरंडकी जड बीलकी गि री कव्याली इनको काढोकरि यांमें तेल मिलाय पीवेतो गृध्रसीनें पोताकी मूलनें दूरिकरे १ अथवा बिडलूण संचरलूण यांनें मिहीवां टि गोमूत्रमें अरंडकातेलमें येघालिपीवेतो कफवातको गृध्रसी जाय १ अथवा अरडूसो दांत्यूणी किरमालाकी गिरियांको काढोकरि तांमें अरंडकोतेल नापि पीवेतो गृध्रसीरोग जाय १ अथवा निर्गुं डीका काढासूं गृध्रसीरोगजाय १ अथवा रास्ना टका ५ गूगल टका ५ यां दोन्यांनें वांटि घृतमें गोली मासा ४ की करि पाछें गोली १ रोजिना पायतो गृध्रसी जाय १ अथवा गिलोय रास्ना किरमालाकी गिरी देवदारु गोपरू अरंडकीजड सूंठि यांको काढोकरि देतो गृध्र सी रोगनें अर जांघकी पीडनें पेटकी पीडनें पसवाडाकी सूलनें यां सारांरोगानें यो काढो दूरिकरेछै १ इति रास्नादिकको काढो.

अथ पांग पांगल्यारोगको लक्षण लिख्यते कटिमें रहनोजो वाय सो जांघकीनसांनें पकडिएक पगनें स्तंभित करिदे तोंनेंपांगोकहि जे अर कटिमें रहनो जोवाय सो जांघकी नसानें ग्रहणकरि दोन्यूं

अ. टी. [illegible]

जावाको नासकरै चालवा देनहीं तीनैं पांगलो कहिजे. १ अथ या दोन्यांको जतन लि० जुलाबका लेवासूं औषधांका गरमपसेवासूं योगराज उगैरे गूगलका पावासूं तैलादिकाका मर्दनसूं वस्तीकर्म सूं येदोन्यूंरोग जाय १ अथ कलापपंजररोगको लक्षण लि० मर्द चालै जीसमें सरीरकांपे अर पोडाकीसीनांई दीसे जाणिजे नसांआ पको ठिकाणो छोडिदियोछै. तीनें कलापपंजररोग कहिजे १ अथ ई को जतन लि० विसगर्भादिक तैलका मर्दनसूं यो रोग जाय १ अथ क्रोष्टुसीर्परोगको लक्षणलि० गोडामें वात लोहीका विकारसूं सोई होय अर गोडामें घणी पीडहोय अर स्यालकामाथा सिरीसो गाढोहोय तीनें क्रोष्टुसीर्परोग कहिजे अथ क्रोष्टुसीर्परोगको जतन लि० गिलवे टंक २ त्रिफला टंक १० यांदोन्यांको काढोकरि तीमें गूगल टंक २ नापि ईतैलनें महिना १ ताईपीवैतो योक्रोष्टुसीर्परोग दूरिहोय १ अथवा दूधसेर १ अरंडकोतेल टंक १० नापि महिना तांई पीवैतो क्रोष्टुसीर्परोग दूरिहोयछै १ अथवा वधायराको चूर्ण टंक २॥ गऊकोदूधसेर ०॥ तींकीसाथि पीवैतो क्रोष्टुसीर्परोग जाय २ अथवा तीतरका मांसका सोरवामें टंक २ गूगलनापि पावतो योरोग जाय १ अथवा किसोरगूगलका सेवासूं योरोग जाय १ अथ गोडाटूपिवाको जतन लि० तेलको मर्दन करि तीउपरिवांटि मूं ठिको मर्दनकरे पाछै वडपरि तेलसूं चोपडि अरंडका पानगरमक रि वांधैतो गोडा टूपतारहै १ अथवा कौछिका बीज टंक २ दहींकै साथि दिन ७ तथा १४ लेतो गोडा टूपता रहै १ अथ पङ्गो रोग को लक्षण लि० पगमें जंघांमें पहुंच्यांमें कांपनमें वायटा छावै तींको पङ्गोरोग कहिजे १. अथपङ्गोको जतन लि० कूठ सींधोलू

न. टी. [illegible]

ण यांको काढोकरि ईंकाढाका रसमें तेल अर अमलवेदकोरस नाषि ईंतेलनें मधुरीआंचसूं पकावें पाछे रसबलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईंतेलको मर्दन करेतो पक्षी रोगजाय १ अथ वातकंटक रोग को लक्षणलिप्यते ऊंचानीचाजगामें पगमेल्तां पेदहोय पीछे टंको ण्यामें पीड आयरहे तींकूं वातकंटकरोग कहिजे अथ ईंको जत न लिप्यते टंकूण्याकीजगां सूयानूं पोदि लोही कडाहिजे तो वातकंटक रोग जाय १ अथवा एरंडको तेल टंक ५ रोजीना महि ना १ तांई पांवेतो वातकंटक जाय २ अथ पाददाहको लक्षण लिप्यते वात पित्त लोही येतीन्यूं मिलि पगथलीनमें दाह करेतोके पाद दाहकोरोग कहिजे १ अथ पाद दाहको जतन लि० मसूर की दालकूं मिहीपीसी ओटावे पीछें वेको निपट ठंडोकरि वामें आ टाको छाणि पतलो लेपकरे बार पांच साततो पाददाह रोगजाय १ अथवा मापनको पगथलीनके मर्दनकरि पगथली नको अग्निसूं त पावेतो पाददाह रोगजाय १ अथवा अरंडोल्यांने गऊकादूधमें मिहीपीसी हथेली वापगथलीके लेपकरेतो घणाभीदाह जाय १ अथ पादहर्षको लक्षणलि० जींका दोन्यूंपगझणझणाटकरिसोय सोयजाय कोईतरे दाबिवेडगेरकूं छोडतो जागि उठेतोको पादहर्ष रोगकहिजे १ अथ ईंको जतन लि० कफका अर वायका दूरि करबावाला जतन करेतो पादहर्ष रोगजाय १

अथ पगफूटणीको जतनलि० तिल सांभरोलूण हलद् येबराब रिले अर दनधतूराकेबीजनकूं पाणीमें पीसि उनतीन्यूं बराबरिन उको मापनले पाछेयाने पकावें अरयांपचनांहामें चोगुणो गोमूत्र

* [illegible]

नापे येसर्व थळिजाय मापन मात्र आय रहे तदिपगथयीनके नहै नकरेतो पगफूटणोदूरिहोय १ अथपित्तसहितजोवाय. तींका आक्षेप रोगको लक्षणलि० पित्तकोस्थान उदरादिकतींमें रहतो जो वाय तिनको स्तंभित करि दंडकीसीनांईकरिदे अथवा कफमें मिल्योजोवाय सो धमनी नाडीमें रहकरि सरीरकूं स्तंभित करिदे सो ओ कष्टसाध्यछे. अथ केवल वायका आक्षेपको लक्षण लिप्यते. हाथ पग माथो पीठि ढूंगा इनकूं स्तंभित करिदे अर वाय इनमें पीडभी करिदे सो वह असाध्यछे १ अथ चोटलागिवासूं उपज्यो जोवाय तींका आक्षेपको लक्षण लिप्यते जठे शस्त्रादिककी चोट लागिहोय तींसूं उपज्यो जोवाय सो तींमाफिक साध्यजानिये अथ ईको जतन लिप्यते परेटीकीजड दसमूल जव बोरकी जड कूलथ इन सबनको अष्टावसेस काढोकरि तींमें तेल नापि अर येओषध नापि मधुरी आंचसूं पकाय तेल तयारकरि ये औषधि और मिलाजे सो लिपूंछूं सींधालूण अगर रालदेवदारु मजीठ पदमाष कूट इलायची छड पत्रज तगर गोरीसर सतावरी असगंध सोंफ साठीकीजड ये तेलकेअनुमान माफिक नापि तेलने पकायले पाछे ई महाबला तेलको मर्दन करेतो सर्व प्रकारका आक्षेपक रोगकूं सर्व प्रकारका वायकारोगांने हिचकीने सासने गोलाने अंत्रवृद्धिने धातने टूट्याहाडकूं देणकूं इन सबरोगांने यो महाबलातेल दूरिकरेछे १ अथ अंतरायामरोगको लक्षण लिप्यते पगनकी आंगुल्यां त्रिकोण्यापेटहीयो गोलो इनमें रहतो जो वाय सो यहनसाका समूहकूं सरीरकेमांहि पकायलै. पाछे येकानेत्र फाटि निश्चलसे हो जाय अर आडी मुडे नहीं अर ईका पसवाडा ढीलाहोजाय कफ

न. टी. [illegible] रोग वाला मनुष्यके होयछे. जीने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रोगछे. जीका जतन लिप्याछे सोजाणना. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] होछे. जीने [illegible] करेछे.

छादे अर सरीरके भीतरि कवाणकीसीनांई वांको होजाय जीमें ये लक्षण होय तो अंतरायामरोग कहिजे. अथ बाह्यायामरोगको लक्षण लिप्यते घणी वायका वस्तका पावासूं कुपित हुवोजोवाय सो सरीरकी सगली नसांनें अर कांधीनें पीठीनें सुसार अर मनुष्यके सरीरकूं कवानकीसीनांई वांको करिदेछे अर वेकाहियाकूं जांघनकूं वा वाय तोडिनापे ये जीमें लक्षण होय तींकूं बाह्यायामरोग कहिजे सो अर्दितरोगके जतन पीछे लिपेछे. सोही इनको जानिलीज्यो अथ धनुस्तंभको लक्षण लि० कव्वानकीसीनांई वेंको सरीर होजाय अर सरीरको वर्ण औरसो और होजाय मूंढो भींचिजाय देहशिथिल होजाय चेत जातोरहे पसेव आवे यांकूं धनुस्तंभरोग कहिजे योरोगवालो दिन १० जीवे.

अथ कुब्जरोगको लक्षण लिप्यते कोपकूं प्राप्तिभयो जोवाय सो हियासूं ऊंचोकरिदे अर ऊठेपीड घणीकरे तींकूं कुब्जक रोग कहिजे अथ इनतीन्यूं रोगांकूं दूरिकरवावालो प्रसारणीतेल याही प्रकर्णामें लिप्योछे. तीसूं धनुस्तंभ बाह्यायाम अंतरायामवातव्याधि सर्वप्रकारको दूरिहोयछे. अथ अपतंत्ररोगको लक्षण लि० वायल वस्तका सेवनसूं कोपकूं प्राप्तिभयो जो वाय सो आपके स्थानकूं छोडि अर हियामें जाय प्राप्तिहोय शिरकूं अर कनपटीनकूं पीडा करे कवानकी सीनांई सरीरकूं नवायदे अर वो मोहकूं प्राप्ति होजाय अर वो बडाकष्टसूं ऊंचे प्रकारकोस्वासले अर वेंका नेत्रफाटिजायकेंभींचिजाय अर वेंको कंठकबूतरकीसीनांई बोले संज्ञाजातीरहे. जींके येलक्षण होय तींके अपतंत्ररोग जाणिजे अथ अपतंत्ररोगको जतन लि० मिरचि सहजणाकाबीज वायविडंग अ

[illegible]

फीम महुवो येवरावरिले इनकूं मिहीपीसि नासदेतो अपतंत्र जाय अथवा हरडेकिछालि वच रास्ना सींचोलूण अमलवेद इनकूं निहो पीसि टंक २ घृतकेसाथि अथवा आदाकारसके साथि लेवेतो अ पतंत्ररोग जाय १ अथ अपतानक रोगको लक्षण लिष्यते नेत्र फटाला होजाय संज्ञाजातिरहे कंठमें कफबोले संज्ञा आवे तवे नं नपडे अर अग्यान आवे तव औरु मोह यह भयंकर रोगछे अर यहस्त्रीकेगर्भपातसूं होयछे, अर पुरसके घणोलोहीनीकलवासूं होयछे. अथवा घणीचोटलागिवासूं होयछे.येहरोग असाध्य जा णिये. अथ ईंको जतनलिष्यते दसमूलको काढामें पिपलि नाषिपी वेतो अपतानकरोग जाय अथवा तेलका मर्दनसूं जाय २ अथवा तिपीवस्तको नासलेतो अपतानकरोग जाय ३ अथवाघृतकेपा वेसूं अपतानकरोग जाय ४ अथवा स्नेहको वस्तिके लेवासूं अपता नकरोगजाय५ अथ पक्षघातरोगकोलक्षणलि०कोईकारणसूं कुपित होवाय सोमनुष्यके आधेसरीरकूं पकडि अर सर्व सरीरकी नसांनें सुकायदेछे. अर आधेसरीरकी नसांनें निपटढीली करिदेछे. अथवा सर्व सरीरकीनसांनें ढीली करिदेछे. निपट निकर्मा करिदे उन नसन को ग्यान जातोरहे येलक्षण होय तीनें पक्षाघातरोग कहिजे जीवनो अंगहोय अथवा वांयो अंगहोय निर्जिवसो पक्षाघात दोय प्रकार कोछे पित्त वायको १ कफवायको २ सरीरकेमाहीनवारे दाह होय अर मूर्च्छा होयतो पित्तवायको पक्षाघात जाणिये अर सरीरके मा हिवारे सीतलगें अर सोजोहोय सरीर भार्‍यो होवतो कफवायको पक्षाघात जानिये पक्षाघातको साध्यलक्षण केवल वायसूं पक्षा घात उपज्यो होइतो कष्टसाध्यजाणिये अथ पक्षाघातको यत्ना

ध्य लक्षण लिष्यते गर्भिणीस्त्रीके अथवा व्यावर स्त्रीके पक्षघात होय सो असाध्य जाणिजे. अथवा बालकके वृद्धके क्षीण पुरसके घाव वालाके लोही नीकलिगयोहोय तीके सूनासरीरवालाके पक्ष घात असाध्यजाणिजे.

अथ पक्षाघातको जतन लिष्यते उडद कौंछकाबीज अरंडकी जड परेटीकीजड इनको काढोकरि तीमें सेकीहींग अर सींधोलूण मिलाय पीवैतो पक्षघात दूरिहोय १ अथवा पीपलामूल चित्रक सूंठि पीपलि रास्ना सींधोलूण उडद इनको काढोकरि ईकाढाकार रसमें तेल पकावे रस बलिजाय तेलमात्र आयरहे तब ईको मर्दन करे तो पक्षघातजाय १ इति ग्रंथिकादितैलम्. उडद कौंछकाबीज अ तीस अरंडकीजड रास्ना सोंफ सींधोलूण इनकूं मिहीपीसि वांको काढोकरि ईकाढामें तेलपकावे तदि रस बलिजाय तेल आयरहे तीं को मर्दन करेतो पक्षाघातजाय ३ इति माषादितैलम्. ये सर्वजतन भावप्रकासमें लिष्याछे. अथवा कौंछकाबीज परेटीकीजड अरंडकी जड उडद सूंठि सींधोलूण इनको काढोकरि छाणि पीवेतो पक्षाघात जाय १ यह वैद्यविनोदमें छे अथवा महवाकोरस गूगल टंक५ बीजा बोल टंक ५ धत्तूरीकी मींगणी टंक ५ कटेलीकोरस टंक ५ पलास पा पडो टंक ५ आंबाहलद टंक ५ मुरदासींग टंक ५ बिजोराकीजड टंक ५ इनको मिहीपीसि सरीरके लेपकरे पाछे कमर बराबरि षाडोषोदि अर षाडाकूं अग्नि लगाय लालकरे अर वा षाडाके आसपास नीचे आकका पानमेल पाछे वापक्षघातके लेपवारे आदमीकूं वाषाडा में बैठावे वाके पसीनो आवे जहांताई तो पक्षाघातको रोग उ

✻ यह पक्षाघातको [illegible] [illegible] वातरोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उहोदिन जातोरहै १ अथ निद्रानास रोगको जतन लि० सेकी भा
गको चूर्ण मिही पीसि रात्रिकों अनुमान माफिक सहतसूं चाटैतो
नींदनिश्चै आवै अर यासूं अतिसार संग्रहणीभी जाय अर भूष घ
णीलागै अथवा पीपलामूलको चूर्ण गुडकेसाथि लेतो नष्ट भईभी
नींद आवे. १ अथवा काकलहरीकी जड सिरकै बांधेतो नींदआ
वै १ अथवा कांगसीसूं सुहावतो २ माथो वहावैतो नींद आवै ३ अ
थवा कोमल हाथसूं पगथली पलोटावै तो नींद आवै ४ अथवा
वेंगणका भडीतामें सहत मिलाय पायतो नींद आवै ५ अथवा त
लकी कांजीकेसाथि अथवा पटाईकेसाथि भडीतोरातिकूं पायतो
नींद तत्काल आवै ६ अथवा एरंडको तेल अर अलसीको तेल ये
दोन्यूं बराबरिले तिनकूं कांसीकी थालीमें खूब घसि अंजनकरै तो
नींद घणी आवै ७ अथवा सौंफ अर भांगी इनकूं मिहीपीसि ब
करीका दूधमें निवायो सुहावतो लेप करैतो नींद आवै ८ अथवा ब
करीका दूधसूं पगथली धोवैतो नींद आवै अर पगथल्यांको दाह दू
रिहोय ९ अथवा कस्तूरीनें स्त्रीकादूधमें मिहीपीसि अंजन करैतो
घणादिनकी गईभी नींद आवै १० ये सर्वजतन वैद्यरहस्यमें लिषे
है अथ सर्वांगमें वायहोय तींको लक्षण लि० सर्व अंगमें कोपको
प्राप्तिहुवो जो वाय सो साराही अंगमें पीडाकरै अथ ईंको ज
तन लिप्यते विसगर्भकूं आदिलेर तेलनसूं सर्वांग वाय जाय १
अथ सातू धातनमें प्राप्तिहुवो जो वाय तींका जुदा जुदा लक्षण अर
जतन लिप्यते त्वचाकूं सूनीकरिदे अर त्वचाकूं पोली करिदे सरी
रकूं फसफोरदे सर्वत्र सरीरमें पीडाकरै २ अथ लोहीमें प्राप्ति भ
यो जो वाय तींको लक्षण लि० सरीरमें पीडा घणी होय वर्ण और

सो होजाय सरीर कस होजाय सरीर भास्यो होय अरुचिहोय मू
ढापे कौलहोय भोजन पचेनहीं ३ अथमांसमेंप्राप्तिभयोजोवाय
तींको लक्षणलि० सरीर भास्यो होय पीडाहोय सरीरस्तंभित होय
४ अथ मेदमें प्राप्ति भयो जोवाय तींको लक्षणलि० सरीरमें फो
डाकरै ५ अथहाडमें रहतो जोकुपितवाय तींको लक्षण लिष्यते
संधिसंधिमें पींडाहोयमांसवलिजाय नींद आवै नहीं. अर मज्जामें
वाय हाडकीसीनाई जाणिये ६ अथ विरजमें प्राप्तिभयो जो वाय
तींकोलक्षण लि० स्त्रीसंगकरैतो वीर्य तत्काल गिरिपडै के पडैनहीं
अर गर्भको विगाडतो उपजावै ७

अथ इन सवनके जतन लि० रसमें विगड्यो जो वाय तींके
तेलको मर्दन करिये १ रक्तमें विगड्यो जो वाय तींके सीतललेपसूं
अथवा जुलावसूं अथवा लोहीके कढावसूं सांति करिये २ मांस मे
दमें रहतोजोवाय तींनें जुलावसूं सांति करिये४हाडानमें विगड्यो
जोवाय तींकों चीकणी वस्तके पावासूं ४ अथवा लगावासूं सांत
कीजिये ५ अर मज्जामें गयो जोवाय सोचीकणी वस्तके पावाल
गावासूं आछ्योहोय ६ अथवा वीर्यमेंविगड्यो जोवाय सो पुष्टा
ईकी औषदि पावासूं आछ्यो होय ७ अथ कोष्टमें प्राप्तभयो जो
वाय तींको लक्षण लिष्यते उदरमें रहतो जो दुष्ट वाय सोमलमूत्रकूं
रोकिदे अर पेटको हियाको गोलाको ववासीरको पसवाडाकेमूलको
उपजावैछै ८ अथ ईंको जतन लि० पाचनादिकनसूं ईंको जतन
कीजे अथवा दूधपाजे अथ आमासयमें रहतोजोवाय तींकोलक्षण
लि० हियामें पसवाडामें नाभिमें इनमेंपीडाहोय तिसलागै ड
कारघणी आवै विसूचिकाहोय पास होय कंठ सूंदो मुकिजाय मा

[illegible]

सहोय अथ ईंको जतनलि० दीपन पाचनकी औषधांदिन से
घन कराजे वमन कराजे जुलावदीजे पावामें पुराणा मूंगनावल
दीजे अथवा रोहीस हरडेकी छालि कचूर पुहकरमूल पीलपी
गिरि गिलवे देवदारु सूंठि वच अतीस पीपलि वायविडंग येसवै
बराबरि इनको काढोकरिदेतो आमासयकी वाय जाय १

अथ पकासयमें रहतो जोवाय तींको लक्षण लि० आंत
बोले पेटमें सूलचाले आफरो होय मलमूत्रकष्टसूंउतरै पीठि
में पीड होय अथ गुदामें रहतोजो दुष्ट वाय तींकोलक्षण लि०
मल मूत्र पवनसूं रुकि जाय पेटमें सूलहोय आफरो होय
पथरीको रोगहोय जंघामें पीठिमें पसवाडामें पीडा होय अथ
ईंको जतन लि० वस्तिकर्मसूं इहरोग जाय अथ हियामें प्राप्ति
भयो जो वाय तींको लक्षण लिप्यते गिलवे मिरचि इनकूं मिहीपी
सि निवाये जलसूं पीवैतो यह वाय जाय १ अथवा आसगंध बहेडा
की छालि मिही बांटि गुडमें मिलाय पायतो इह वाय जाय २ अथवा
देवदारु सूंठि मिहीपीसि निवायेपाणीसूं पीवैतो इह वाय जाय ३
अथवा कर्णादिकनमें प्राप्तभयो जो वाय तींको लक्षण लि० उन
कर्णादिक इंद्रियनको नासकरै अथ ईंको जतन लिप्यते सेकसूं ते
लादिकके मर्दनसूं इह वाय जाय अथ सरीरकी नसनमें प्राप्तिभयो
जो वाय तींको लक्षण लिप्यते नसनमें सूल चालै नस येंचदी हो
जाय अथ ईंको जतन लिप्यते सीर छुटावै तो इहरोग जाय अथ
संधिमें प्राप्तिभयो जो वाय तींको लक्षण लि० संधि संधिमें सूलहोय
संध्याने विगाडिदे अथ ईंको जतन लिप्यते सेकसूं तेलके मर्दन
सूं इह वाय जाय अथवा इंद्रायणकी जड पीपलि टंक २ गुडमें

[illegible]

पायतो संधिगत वाय जाय. अथ वातव्याधिको सामान्यजतन लि
ष्यते अथ नारायण तेलको विधी लि० आसगंध पेंटीकीजड बी
लकी गिरी पाटल दोन्यू कटेली गोपरू गंगेरणांकीछालि नींबको
छालि अरलू साठीकीजड पीप अरण्यूं ये सब ओषदि टका दस दस
भरिले अर पाणी सेर १६ ले तांमें ये ओषदि नापि सनें सनें पचाय
यांको काढो चतुर्थांश रापे पाछे ईमें तीलांको तेलसेर ४ नापे अर
ईमें सतावराको रस सेर ४ नापे तेलसूं चौगुणो ईमें गऊको दूधना
षे पीछे याकूं मधुरी आंचसूं पकावे. यांनें पचतांही ईमं येओषदिना
पे कूट टका १ इलायची टका २ रक्तचंदन टका २ वच टका२ छड ट
का २ सिलाजित टका२ सींधोलूण टका २ आसगंध टका २ पेंटी
टका २ रास्ना टका २ सोफ टका २ इंद्रायण टका २ सालपर्णी टका २
पृष्टपर्णी टका २ मांसपर्णी टका २ उदकपर्णी टका २ रास्ना टका २
ये सर्व बराबरिले ईमें नापि मधुरी आंचसूं पचावे सर्व रस बलिजाय
तेलमात्र आय रहे तब ईकूं उतारिछाणि पीछे ईतेलको मर्दन करे
तो अथवा पायतो अथवा यांको बस्तिकर्म करेतो इतनारोग जाय
पक्षघात हनुस्तंभ मन्यास्तंभ गलग्रह बधिरपणो गतिभंग कटि
ग्रह गात्रसोस नष्टशुक्र विषमज्वर अंत्रवृद्धि गोलो शिरोग्रह पा
र्श्वसूल गृध्रसी वायका सर्व रोग ईनारायण तेलसूं सर्व दूरि होय
छे इति नारायणतेलम्. अथ जोगराजगूगलकी विधि लिष्यते
सूंठि पीपलि चव्य पीपलामूल चित्रक सेकीहींग अजमोद सिरस्यूं
दोन्यूजीरा संभालू इंद्रजव पाठ वायबिडंग गजपीपलि कूटकी अ
तीस भाडंगी वच मूर्वा ये सर्व ओषदि मासा च्यार च्यारिले अर

[illegible]

त्रिफला सगली औषधि तीसूं दूणीले पाछै इनसब औषधांनै वि
हीवांटि कपडछाण करै अर यांसारी औषधांबराबरि सोधोगु
गलले पाछैगूगल अर ये सारि औषधि त्यांको येकजीवकरि मासा
च्यारि च्यारि भरकी गोली करै अर घृतका वासणमें मेलै रा
पाछै रास्नादिकका काढासूं गोली १ ले सोलिपूंछं रास्ना सांठांकी
जड सूंठि गिलवै अरंडकी जड यांका काढासूं योगराज गूगल ले
तो सर्व वायका विकार जाय अर किरमालपंचकका काढासूं लेतो
कफका रोग जाय अर दारुहलदका काढासूं लेतो प्रमेहका रोग
जाय अर ईनें गोमूत्रसूं लेतो पांडुरोग जाय सहतसूं लेतो वायरक्त
कोरोग जाय अर पुनर्नवादिकका काढासूं लेतो सर्व उदरका रोग
जाय अर गुगलको सेवावालो इतनीवस्त करै नहीं मैथुन करैनहीं
पटाई उगैरेपावनहीं इतियोगराजगुगलकीविधिसंपूर्णम् अथवा
ल्हसणको रस टका १ भरतीमें बराबरिको तेलमिलाय अ
नुमान माफिक सींधोलूण नापि पीवैतो वायका सर्वरोग जाय अ
थवा दूधकेसाथि अथवा घृतकेसाथि अथवा तेलकेसाथि अथवा
मांसका सोरवाके साथि लसण दिन १४ पावतो सर्व प्रकारकी
वाय जाय अर विषमज्वरनें सूलनें गोलानें अग्निका मंदतानें कि
यानें सिरकारोगनें वीर्यका रोगनें यानें योलस्सण यांका संजोगसूं
दूरिकरैछै. इतिलसणकल्प. अथवा रास्ना धमासो परेटीकी जड
अरंडकीजड देवदारु कचूर वच अरडूसो हरडैकीछालि गजपी
परमोथो सांठीकीजड गिलवै चवायरो सौफ गोपरू आसगंध अ
तीस किरमालाकीगिरि सतावरी पीपली सहजणाकि पकल धर्मा

- न. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

दोन्यूं कव्याली येसर्व बराबरिले त्यांकोकाढोकरि तींकीसाथि यो योगराजगूगल लेतो सर्वप्रकारका वायका विकार जाय.

इति महारास्नादि क्वाथः येसारा भावप्रकासमें लिप्याछे. अथवा थोहरीका पानाको रस अरंडका पानाकोरस बकायणका पानाको रस संभालूका पानाको रस सहजणाका पानाको रस कंडीरका पानाको रस यां सारांसूं चौथाई तेल नाषि पकावै पाछे ईमें सूंठि नाषे ये सर्व बलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईतेलको मर्दन करे तो सर्वप्रकारको वाय जाय इति अष्टांग तैलम्. अथ विसगर्भ तैल लि० ध तूराकी जड निर्गुंडी कडवी तूंबीकीजड अरंडकी जड आसगंध पवाड चित्रक सहजणाकीजड काकलहरी कलहारी जडीकी जड नींबकीछालि बकायणकीछालि दसमूल सतावरी चिरपोटणी गोरीसर विदारीकंद थोहारीकापान आकका पान सनाय दोन्यूं कनीरकीछालि आंधीझाडो पीप येसारी औषधि तीनतीन टका भरले यां औषध्यां बराबरि काला तिलांको तेल ले अर इतनोही अरंडकोतेलले अर ईमें चौगुणो पाणीनाषे ये औषधि कूटि यांमेंनाषि पाछे यांनें मधुरीआंचसूं पकावे येसर्व जलसमेत बलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईनें उतारिले पाछे ईतेलमें येऔषदि नाषे सो लिषूंछूं सूंठि मिरचि पीपलि आसगंध रास्ना कूठ नागरमोथो वच देवदारु इंद्रजव जवषार पांचूंलूण नीलोथूथो कायफल पाठ भारंगी नौसादर गंधक पोहकरमूल सिलाजित हरताल येसारी औषदि अधेला अधेला भरिले सोनोमोहरो टका २ भरले पाछे यां सर्वनें मिहीं बांटि ई तेलमें नाषे पाछे ईतेलको मर्दन करे तो सर्व वायका रोग दूरिहोय अर कूषिको अर मेंवराको अर पींठिको जांघाको अर संधिसंधिको

अ. टी. [illegible]

त्रिफला सगली औषधि तीसूं दूणीले पाछे इनसब औषधांनेंमि
हीवांटि कपडछाण करै अर यांसारी औषधांबराबरि सोध्योगू
गलले पाछेगूगल अर ये सारि औषधि त्यांको येकजीवकरि मासा
च्यारि च्यारि भरकी गोली करै अर घृतका वासणमें मेली रा
पाछै रास्नादिकका काढासूं गोली १ ले सोलिपूंछूं रास्ना साठीकी
जड सूंठि गिलवै अरंडकी जड यांका काढासूं योगराज गूगल ले
तौ सर्व वायका विकार जाय अर किरमालापंचकका काढासूं लेतौ
कफका रोग जाय अर दारुहलदका काढासूं लेतौ प्रमेहका रोग
जाय अर इनैं गोमूत्रसूं लेतौ पांडुरोग जाय सहतसूं लेतौ वाय रक्त
कोरोग जाय अर पुर्नवादिकका काढासूं लेतौ सर्व उदरका रोग
जाय अर गुगलको सेवावालो इतनीवस्त करै नहीं मैथुन करैनहीं
षटाई उगेरैषायनहीं इतियोगराजगुगलकीविधिसंपूर्णम् अथवा
ल्हसणको रस टका १ भरतीमैं बराबरिको तेलमिलाय अ
नुमान माफिक सींधोलूण नाषि पीवैतौ वायका सर्वरोग जाय अ
थवा दूधकैसाथि अथवा घृतकैसाथि अथवा तेलकैसाथि अथवा
मांसका सोरवाकै साथि लसण दिन १४ पायतौ सर्व प्रकारकी
वाय जाय अर विषमज्वरनैं सूलनैं गोलानैं अग्निकी मंदतानें फि
यानैं सिरकारोगनैं वीर्यका रोगनैं यांनैं योलस्सण यांका संजोगसूं
दूरिकरैछै. इतिलसणकल्प. अथवा रास्ना धमासो पैरैटीकी जड
अरंडकीजड देवदारु कचूर वच अरडूसो हरडैकीछालि चव्य ना
गरमोथो साठीकीजड गिलवै वधायरो सोंफ गोषरू आसगंध अ
तीस किरमालाकीगिरि सतावरी पीपली सहजणाकि वकल घणी

न. टी. नारायणनेंउपरलिख्यागुजबकरणो अरयोगराजगुगलबीकरणो. जीमैंगुगलकी
नजातकोशास्त्रमैंलिख्योछै. येपतौ काटोगुगल. एकतोसनीरंगको अर येकपीलारंगकोछै
जीमैंपीलारंगकोतोमनुष्यानैं देणो अरदूजोतोहाथीघोडाकाकामकोछै.

दोन्यूं कल्याली येसर्व बराबरिले त्यांकोकाढोकरि तींकोसाथि यो योगराजगूगल लेतो सर्वप्रकारका वायका विकार जाय.

इति महारास्नादि क्वाथः येसारा भावप्रकासमें लिष्याछे. अथ-वा थोहरीका पानाको रस अरंडका पानाकोरस वकायणका पानाको रस संभालूका पानाको रस सहजणाका पानाको रस कंडीरका पानाको रस यां सारांसूं चोथाई तेल नाषि पकावे पाछे ईमें सूंठि नाषे ये सर्व वलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईतेलको मर्दन करें तो सर्व प्रकारको वाय जाय इति अष्टांग तैलम्. अथ विसगर्भ तेल लि० धतूराकी जड निर्गुंडी कडवी तूंबीकीजड अरंडकी जड आसगंध पवाड चित्रक सहजणाकीजड काकल्हरी कलहारी जडीकीजड नींबकीछालि वकायणकीछालि दसमूल सतावरी चिरपोटणी गोरीसर विदारीकंद थोहारीकापान आकका पान सनाय दोन्यूं कनीरकीछालि आंधीझाडो पाप येसारी ओषधि तीनतीन टका भरले यां ओषधां बराबरि काला तिलांको तेल ले अर इतनोही अरंडकोतेलले अर ईमें चोगुणो पाणीनाषे ये ओषधि कूटि यांमेंनाषि पाछे यानें मधुरीआंचसूं पकावे येसर्व जलसमेत वलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईनें उतारिले पाछे ईतेलमें येओषदि नाषे सो लिषूंछूं सूंठि मिरचि पीपलि आसगंध रास्ना कूठ नागरमोथो वच देवदारु इंद्रजव जवषार पांचूंलूण नीलोथूथो कायफल पाठ भाडंगी नोंसादर गंधक पोहकरमूल सिलाजित हरताल येसारी ओषदि अधेला अधेला भरिले सींगीमोहरो टका २ भरले पाछे यां सर्वनें मिहीं वांटि ई तेलमें नाषे पाछे ईतेलको मर्दन करें तो सर्व वायका रोग दूरिहोय अर कूषिको अर भंवराको अर पीठिको जांघांको अर संधिसंधिको

[illegible]

[illegible]

वायजाय पगाको सोजो दूरिहोय अरगृध्रसी रोगनै सिरका रोगनै फूटणीनैं कर्णकीसूलनैं गंडमालानै यां सर्व रोगानैं योविसगर्भ तेल दूरिकरैछै. इति विसगर्भतैलम्. अथवा मजीठ देवदारु चीढ क व्याली वच तज पत्रज सोंधीगंधक कचूर हरडैकीछालि बहेडाकी छालि आंवला नागरमोथो ये औषधि टंक २ भरिले त्यानैंवांटि औ टाय रस काढिले पाछै ईरसमैं सेर १ तेलनापि पाछै ईतेलनैप कावै पाछै और सर्व बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईमैं ये औष दि नापै सोलिपूंछूं छड मूर्वा मैंढल चंपाकीजड तज पींपलामूल नेत्र वालो संचरलूण ये औषदि टका २ भरले अर लोहवान बरजो आसगंध नख छड ये टका टका भरले अर इलायची लवंग चंदन जाईकीकलि कंकोल अगर केसर येसारी पईसा पईसा भरिले क स्तुरी टंक २ ले येसारी मिहीवांटि तेलमैं मधुरी आंचसूं पकावै तदि सर्व रस औषधि समेत बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईमैं टंक २ कपूर वांटि नापै पाछै ईको मर्दन करैतो सर्व वायका रोग जाय सर्वप्रकारको प्रमेहजाय अर सोजानैं गोलानैं ज्वरनैंयां रोगानैं यो तेल दूरिकरैछै. इति लक्ष्मीविलास महासुगंधि तैलम्. यो चक्रदत्तमैं लिष्योछै. अथवा सूंठि टका ७ भर अर ईस रावरि इकपोत्यो लसण अर सूंठिनैं [illegible] बराबरिका घृतमैं भविले पाछै [illegible] वांटि तेमैं मिलाय पा[illegible] सहद

येसर्व बराबरिले अर तेलकी घाणीमें यांको तेल काढे पाछे ईतेलको मर्दन करेतो वायका सर्वरोग जाय १ इति विजेभैरवतेलम्. अथवा पारो गंधक हरताल मेणसील येसर्व बराबरिले पाछे यांसारांनें मि हीबांटि कांजीमें दिन २ तांई पाछे एक १ हाथ मिही कपडोले तींके यो च्यारांको लेपकरि वेकपडाकी बातिकरि वेंके सूत लपेटे पाछे वे बा ति ऊपरा तिलांको तेल चौगुणो नापे अर वेबातीनें नीचोरापि भि जोयदे वेबातीकेनीचे लोहकोपात्र मेले वे लोहकापात्रमें उन टपकां- को तेलपडे सो जुदोले पाछे ईविजयभैरवतेलको मर्दन करेतो सर्व प्रकारको वायकारोग जाय इति विजयभैरवतेलम्. अथ विजयभैर वरस लि० हरडेकीछाल टका ३ चित्रक टका ३ इलायची तज प त्रज नागरमोथो येच्यारुं पईसा पईसाभरले अर संभालूटंक २ सूं ठि टंक १० कालीमिरची टंक १० पीपलि टंक १० पीपलामूल टंक १० सोध्योसींगीमोहरो टंक १० सारटंक १० वंसलोचन टंक १० पारो टंक १० सोधीगंधक टंक ५ प्रथम पारागंधककी कजली करे पाछे येकजलीमें येसारीऔषदि मिलावे पाछे यां औषधांमें पु राणो तिवरस्यो गुड टका ५० भर मिलाय ईको येकजीवकरि पाछे घृतसूं ईकी गोली बोरकीनींजो प्रमाण बणावे वांगोल्यांनें घृतका बासणमें रापे पाछे गोली १ तथा २ तथा ३ रोजिना महिना २ तांई पावतो कफका अर पित्तका सर्वरोग जाय अर ईरसनें महिना च्यार तांई सेवन करेतो वायका सर्वरोग जाय अर बरस १ तांई ई रसको सेवन करेतो सर्व प्रकारको रोग जाय अर बरस दोय तांई ईरसको सेवन करेतो बुढापो दूरिहोय अर तरुण होजाय अर वर

* [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible].

स २ तांई ईरसको सेवन करेतौ आयुर्बल घणी होय सरीर निरोगो रहै इति विजैभैरवरसः

अथ वातारिरस लिष्यते पारो भाग १ सोधीगंधक भाग २ त्रिफला भाग ३ चित्रक भाग ४ सोध्योगूगल भाग ५ यांसारांनै अरंडका तेलमैं दिन १ षरलकरै पाछै ईमैं हिंगाष्टक चूर्ण नाषै औरुं येकदिन १ षरलकरै पाछै ईकी गोली टंक २ प्रमाण बांधै पाछै लौंग सूंठि अरंडकीजडका काढासूं रोजीना महिनाएकतांईले अर ब्रह्मचर्य रहे तौ सर्व प्रकारकी वायजाय अर साधारण वायतौ ईका सातदिन सेवाहीसूं दूरि होय १ इति वातारिरसः अथ समीरपन्नगरस लि० सोधीगंधक सोध्योसींगीमुहरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि पारो येसारा बराबरिले पाछै पारागंधककी कजलीकरै पाछै कजलीमै येऔषधि नाषि अर भांगराका रसकी पुट ७ दे पाछै ईकी रती येकेक प्रमाण गोली बांधै गोली १ आदाका रससूं लेतौ सर्व प्रकारकी वाय जाय १ इति समीरपन्नगरसः अथ समीर गजकेसरी रस लि० अफीम चोपीनई कुचिला मिरचि काली येबराबरिले पाछै यांसारांनै मिहीवांटि रती १ प्रमाणकी गोली बांधै पानाकारसमैं गोली १ रोजीना प्रभात षाय अर ऊपरसूं पान चावै तौ सर्व प्रकारको वायजाय १ अर सोजो विसूचिका अरुचि मिरगी येसारा जाय इति समीरगजकेसरीरसः येसर्व वैद्यरहस्यमैंछै. अथ वृद्धचिंतामणिरस लि० पुरासानी अजवाणि जीरो अजमोद काकडासींगी आसगंध येसर्व बराबरिले यांनैं मिहीवांटि मासाएक १ ताजा पाणीसूं लेतौ सर्व प्रकारकी वायजाय १ अर षास सास प्रलाप अतिनिद्रा अरुचि येसारा जाय इति वृद्धचिंतामणिरसः

न. टी. विजैभैरवतैल वायुरोगपरसमर्थछै. परंतु विजैभैरवरसलिष्योछै सोभीमहास्वरूपछै. ईरसनैं यथोक्त क्रियासूं बणायकर उपाधिरहित औषधोमैंलेवो सर्व गुणकरछै. परं भोजनमैं फेरफार नवाजुनीको नहीं होणो चाहिजै ईरोगुणसणछै.

अथ अमृतनाम गुटिका लिप्यते चित्रक टका ३ हरडेकी छा लि टका ३ पारो टका १ सूंठि टका १ मिरचि टका १ पीपलि टका १ पीपलामूल टका १ नागरमोथो टका १ जायफल टका १ वधाय रो टका १ इलायची टंक ५ कूठ टंक ५ सोधीगंधक टंक ७ हिंगलू टंक ५ अकलकरो टंक ५ मालकांगणी टंक ५ तज टंक ५ अभ्रक टंक ५ सोध्यो सींगीमहुरो टंक ५ गुड टका ८ प्रथम पारा गंधक की कजली करि पाछे ये औषदि मिही वांटि कजलीमें गुड समेत मिलावे पाछे ईंकें जलभांगराका रसको पुट १ दे पाछे रती २ तथा ३ भरकी गोली वांधे गोली १ रोजीना पायतो सर्व प्रकारकी वायनें कोढनें प्रमेहनें मृगीनें क्षयीनें सासनें सोजानें आमवातनें पांडूरोगनें ववासीरनें यां सारांरोगांनें यो रस दूरिकरेंछे. इति अमृतनामगुटिका स० यो जोगतरंगिणीमेंछे. अथ राक्षसरस लि० सोध्योपारो सोधीगंधक ये दोन्यूं वरावरिले यांदोन्यांकी कजलीकरे पाछे ईंके दूधिका रसिपुट १ दे पाछे तुलसीका रसकी पुट १ दे पाछे वायचांकारसी पुट १ दे पाछे मोरसिपाकारसकी पुट १ दे पाछे महलोटीका रसकी पुट १ दे पाछे वाराही कंदकी रसकी पुट १ दे पाछे वहुफलीका रसकी पुट १ दे पाछे याकारस सुकाय पारा गंधककी कजलीनें कुकडाका अंडामें भरे अंडानें थांय सांधिले पाछे वे अंडाके कपड मिट्टी ७ दे अंडानें सुकायले पाछे वे अंडानें गजपुटमें पकावे इसो तरे वारतीनकरे पाछे ईनें रती १ पायतो सर्व प्रकारकी वाय जाय अर यो भूष घणीकरे. इति राक्षसरसः यो रसार्णवमेंछे. अथ वंगेश्वर रस लिप्यते पारो सोध्यो गंधक सोध्यो

[illegible]

याकी कजलीकरै यां दोन्यांसूं आधी सोधिहरताल नाषे याबराबर रांगनाषे पाछे यांनें आकका दूधमें दिन ७ परल करै पाछे सुकाय कानकी आतसी सीसींकै कपडमिट्टीदेर वेमें भरिदे पाछे सीसीनें वालूका जंत्रमें प्रहर १२ पकावे सीतल हुवा काढे पाछे रती आध पानमें पायतो सर्वप्रकारकी वाय जाय अर उन्माद क्षीणता मंदाग्नि कोढ व्रण विषमज्वर ये साराजाय इति वंगेस्वररस यो जोगतरंगिणीमेंछे सोधी हरताल सोध्यो गंधक पारो हिंगलू सुहागो सूंठि मिरचि पीपलि येसर्व बराबरिले पारा गंधककी कजलीकरि येमिलावे पाछे आदाका रसकी पुट १ दे अर मूंग प्रमाण गोली बांधे गोली १ प्रभात पायतो सर्व प्रकारकी वाय अर सूतिकारोग मंदाग्नि संग्रहणी सीतज्वर ये साराजाय इति हरताल गुटिका. योरस रत्नप्रदीपमैंछे. अथ लसणपाककी विधि लिष्यते लसण पईसा ८ भर्यो लीजे तींको मिंही जीरोसो कतरीलीजे फेरी दूध पईसा १ भर्यो पाणीतीमैं अधेला भर्यो तीमें चढाय आंच दीजे सोदूध लसणमें सुसिजाय तदि लसणनें परलकीजे सोलुगदीवधिजाय तव घृत अधेलाभरि वेमें नाषि आंच दीजे आंचसूं सुरपीपडिआवे तदि उतार लीजे शिवाय घृतरहे सो काढि नाषिजे फेरि मिश्र पईसा दोय भरकी चासणीकीजे तीमें कस्तुरी रती आधी लौंग रती ४ जायफल मासो १ दालचिनी मासो १ सोनाकी तवक २ येसारी ओषदि पीसी चासणीमें नाषणी पाछे ओ लसणनाषि गोली ४ बांधणी गोली १ प्रभातपाय अर घणीवाय होयतो दूजीगोली आंथणाउपाय तो वायको आरामहोय पथ्यमेंरह्यांगोलीदीन २१ पाय जादावायहो

न. टी. वायुरोगपरपथ्यछि० तेलमर्दन, अंगममलै, स्नान, पवनबंध, भूमिशयन, पसीदेणो, धूम्र, तेल, मीठो, षाटो, षारो, छाछकोपाणी, गहूं, उडद, छाछभापन, कुलथी, पटोल, सोहिजणो, रींगण, लसण, दाडम, आंब सिंघाडा, पहोंपानी, पेतसोर दाष, गांगी मिश्री, पानविडा, जुलाब, इत्यादि.

यतीदिन ४१ पायऔर गोली शिवायकरणी होयतौ इहिसावसूं औ
षदि वा लसण तौलमाफिक वधायले ईलसण पाकनैं पायांसर्ववा
यका विकार दूरिहोय अरयो लसणपाक सरीरनैं पुष्टकरैछै. अर
भूषनैं वधावैछै इतिलसणपाककोविधिसंपूर्णम् इतिवातव्याधीरोग
चोरासीभेदासमेतयाकीउत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम् इतिश्रीमन्म
हाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचि
ते अमृतसार नामग्रंथे वातव्याधिरोगकीचोरासीभेदांसमेतउत्प
त्तिलक्षणजतनानिरूपणं नामअष्टमस्तरंगः समाप्तः ८

अथ उरुस्तंभरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन लिख्यते सीतलवस्त
का पावासूं गरम वस्तका पावासूं पतलीवस्तका पावासूं भारीवस्त
का पावासूं चीकणीवस्तका पावासूं दिनका सोवासूं रातिका जागि
वासूं पुरषके घणीभूषसूं अथवा थोडा अजीर्णमें येपाछे कहीसो
वस्तपाय तदि ये पुरसके वायहै सो कोपकूंप्राप्तिहोय अरपित्तनैंबि
गाडै अर पुरसके दोन्यूंजंघानैं स्तंभितकरिदेछै. अरवेंकी जंघानैं
सूनीकरिदेछै. जाणिजेये जांघ पैलाकीछै. हालवा चालवादेनहीं तीनैं
उरुस्तंभरोग कहिजे अथ उरुस्तंभरोगको पूर्वरूप लिख्यते नींद घ
णी आवै ध्यान लागिजाय क्यों ज्वरको अंस होय रोमांचहोय अरु
चिहोय छर्दिहोय दोन्यूं जंघामेंपीडहोय येलक्षण होय तदि जाणिजे
उरुस्तंभरोग होसी धन्वंतरजी ईरोगनैं सुश्रुतमें महावात व्याधि
रोग कह्योछै तीको लक्षण लिषूंछूं दोन्यूं पग सोजाय अर यामें पीड
होय बडा कष्टसूं दोन्यूं पग उठै दोन्यूं जांघामें पीडाहोय अर दा
ह होय अर धरतीनैं पग मेलै तदि पीडहोय सीत स्पर्शमें जाणि

* लसण गरम औषधीछै. पुष्टीकरछै. कामदेवछै. सबरोग दूरकरणवालोछै. [illegible] [illegible] सबरोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] औषधीमें उपयोगी होयछै. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

नहीं चाल्यो जाय नहीं जाणिजे जांघकाकाठकीछे मानूं टूटीसी दीखै येलक्षण होय जीनें महावातव्याधि कहिजे. इहीनें ऊरुस्तंभ कहिजे अथ ऊरुस्तंभको असाध्यलक्षण लि० ऊरुस्तंभवाला रोगीके दाहहोय पीडहोय अर सरीर कांपे ओ ऊरुस्तंभी मरिजाय १ अथ ऊरुस्तंभको जतन लिष्यते त्रिफला पीपलामूल सूंठि कालीमिरचि पीपलि यांको मिही चूर्णकरि टंक २ रोजीना सहतकेसाथि लेतो ऊरुस्तंभित रोग जाय १ अथवा सूंठि पीपलि सिलाजित गुगल ये सारा मास ५ गोमूत्रकेसाथि रोजिना पीवेतो ऊरुस्तंभजाय १ अथवा दसमूलका काढाकेसाथि गूगल खायतो ऊरुस्तंभ जाय १ ये भावप्रकाशमें लिष्याछे अथवा भिलावा टंक १ गिलवै टंक १ सूंठि टंक १ देवदारु टंक १ हरडैकी छाली टंक १ साठिकी जड टंक १ दसमूल टंक २ यांको काढो लेतो ऊरुस्तंभ जाय १ अथवा गूगल टंक १ गोमूत्रके साथि दिन १५ लेतो ऊरुस्तंभ जाय १ अथवा सहतस्यूं वंबीकी माटी ईनें मिहीवांटि यांको मर्दन करेतो ऊरुस्तंभजाय १ अथवा वचको चूर्ण टंक २ गरमपाणीसूं लेतो ऊरुस्तंभ जाय १ अथवा ऊरुस्तंभवालो इतनी वस्तकरे नहीं लोही काढावे नहीं वमन विरेचन करै नहीं वस्तिकर्म करे नहीं ये सर्व वैद्यरहस्यमेंछे. अथवा पसको रस अथवा नींबूको रस गुडकेसाथि अथवा सहतकेसाथि पीवेतो ऊरुस्तंभ जाय १ यो काशिनाथपद्धतीमेंछे. अथवा चव्य हरडैकीछालि चित्रक देवदारु कागचका फूल सिरस्यूं यांको चूर्णकरि टंक २ सहतसूं लेतो ऊरुस्तंभजाय १ ये सर्वसंग्रहमेंछे. इति ऊरुस्तंभरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम.

न. टी. वातरोगरकुपथ्यलि० चिंता. जागरन. मलमूत्ररोकणा. छर्दी. श्रम. उपवास. चिणा. मटर. तृणधान्य. चनामूंग. गुड. जामुन. सुपारी. ईख. सीतो. कडवो. कसायलोपिरस. शीतंग. हाथीघोडापरचढणो. स्नानकिरणो. पलंगपरसोणो. दांतनकाढनो गरुडो. इत्यादि.

अथ आमवातरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० मंदाग्निवाला पुरसके कुपथ्यकरिके चीकणो अन्नपाय अर पेद करैनहीं ऐसो जो पुरस तींके वाय करिके प्रेर्यो ऐसो जो कच्चा अन्नकोरस सो कफको स्थान जो हीयो तीनें प्राप्तिहोय अर ओ कच्चोयी रस वायकरिके नसांमें जाय प्राप्तिहोय अर वात पित्त कफकरिके घणो दूषित हुवो जो कच्चा अन्नकोरस सो सरीरकी नसांनें पूरित करै अग्निकामंदप णानें प्रगट करैछै. अर हियांनें घणोभार्यो करिदेछै अर यो कच्चा अन्नको रस आमको अर सर्व रोगकूं करैछै.

अथ ग्रंथांतरसूं भी इहरोगको लक्षण लि० मंदाग्निवालो पुरस अजीर्णमें भोजनकरै वेंका पेटमें आम पैदाहोय तदि वाआम अने करोगांनें पैदाकरै मथवायनें करै सर्व गात्रमें पीडाकरै अर कांवामें पीठिमें कटिमें गोडांमें यांमें घणी पीडहोय अर नसांनें संकूचित करिदेछै अर सरीरनें स्तंभितकरिदेछै. येलक्षण जीमेंहोय तीनें आमवातरोग कहिजे अथ ग्रंथांतरसूं आमवातको लक्षण लि०अं गामें पीडाहोय भोजनमें अरुचिहोय तिसघणीलागे आलस घणो आवे सरीर भार्यो होजाय ज्वर होय अन्न पचैनहीं अंग सूंनोहोजा य येलक्षणहोय तीनें आमवातरोग कहीजे. अथ आमवात रोगको जतन लि०ईंमें लंघन कराजे अर सेककीजे ईंमें तीपोरस दीजे अर भूपलागे इसी ओपधी दीजे. ईंनें जुलाबदीजे ईंनें वस्तिकर्मकराजे ईंके वालूरेतसूं सेककीजे अर तृणासूं सेकियो ईंनें जोगछै. आह ईंनें जोगछै पथवाकी अर वेंगणको तरकारि ईंनें पुवाजे करेला ईंनें जोगछै. कोद्रू जव साठी चावल पुराणाचावल इतनी वस्तांईनें जो

[illegible]

ग्यछे. गऊकीछाछि ईनैं जोग्यछे. अर कुलत्थ मटर चिणाबेईनैं जो ग्यछे. अथवा चित्रक कुटकी हरडेकीछालि वच देवदारु अतीस गि लवे यांको काढो टंक २ कोरोजीना गरमपाणीसूं लेतौ आमवात जाय. अथवा कचूर सूंठि हरडेकीछालि वच देवदारु अतीस गिल वे यांको काढो टंक २ को रोजीना लेतौ आमवात जाय अथवा अरं डकोतेल टंक ५ रोजीना पीवेतौ आमवात निश्चैजाय अथवा अरं डको तेल हरडेकी वकलको चूर्ण ईको सेवन करैतौ आमवात अर गृध्रसी निश्चैजाय अथवा किरमालाका पानानें कडवा तेलमें भूंनि करि रोजीना पाय चांवलाके साथितौ आमवात जाय अथवा अरं डका बीजानैं दूधमें पकाय पीरकरि पायतौ आमवात अर गृध्रसी ये दोन्यूंजाय १ अथवा रास्ना अरंडकीजड अरडूसो धमासो कचूर दारुहलद परेटी नागरमोथो सूंठि अतीस हरडेकीछालि गोपरू सहीजणो चव्य दोन्यूं कट्याली यानैं बराबरिले अर रास्ना वेक औषदिसूं तिगुणीले पाछे यानैं जौकूटकरि टंक ५ को काढो रोजी ना करिदेतौ इतना रोगदूरिहोय पक्षघात अर्दित कांपणी कूब डापणो संधिसंधिकी वायगोडांकी पीड गृध्रसी हनुग्रह. उरुस्तंभ वातरक्त ववासीर वीर्यको दोसस्त्रीको वंध्यापणो इतना रोगानैं यो दूरिकरैछे. इतिमहारास्नादिक्काथः अथवा अजमोद कालीमिरचि पीपलि वायविडंग देवदारु चित्रक सोंफ सींधोलूण पीपलामूल ये सारिऔषदि टका टका भरिले सूंठि टका १० भरले वधायरो टका १० भरले हरडेकीछालि ५ टका भरले यां सारानैं मिही वांटि यांसारांकी वराबरि गुडले पाछेयांकी टंक २ भरकी गोली वां धेगोली १ रोजीनागरम पाणीसूं लेतौ आमवातनैं आफरानैं सू

न. टी. आमवातपर पथ्यादि० पुराणो मद्य लंघन कुळथी, ताक, लहसण, परवल, गोर्ह्यां जणो, बेंगण मिलाप, गरमजल. इ० कुपथ्य लि० दहि, दूध, उड़द, अकालिमें भोजन, जागरण, दहीमह, पाड़मल, पणोसिरणो, मूत्र आपणादिकनो इत्यादि.

ल्नें गृध्रसीनें गोलानें प्रतितूनीनें कटिकी फुटणानें पीठकी फुट
णानें जांघाकी अर हाडांकी फुटणानें सोजानें यांसारां रोगानें यो
चूर्णदूरिकरेछे. इति अजमोदादिचूर्ण. अर जोगराजगुगल पाछे
वातव्याधिमेंलिष्योछे तीसूंभी आमवातकोरोग दूरिहोयछे अथवा
सूंठि टका ८ भर गऊको घृतसेर १ दूधसेर ४ सूंठिनेंमिहींवांटि
घृतमेंमकरोय दूधमें पकाय कसार करिले पाछे पांड टका ५० भ
रको चासणीकरे ईंचासणीमें घृतसूं मकरोई सूंठि मावा समेत नाषे
पाछे चासणीमें येओषदिनाषे सूंठि टका १ भर नागकेसर टका
१ ये सारिओषदि मिहींवांटि चासणीमें नाषे पाछे ईंकीगोली टकाये
केक भरकी वांधे पाछे गोलीयेकेक दोन्यूंवपतां पायतो आमवा
तनें दूरिकरे सरीरनें पुष्टकरे वलकरे पराक्रमकरे इति सूंठिपाकः अ
थवा मेथी टका ८ भर सूंठि टका ८ भर यांदोन्यांनें मिहींवांटि ग
उको दूधसेर ४ में पकावे यादोन्यांनें घृतमें मकरोय यांकोपरोमा
वोकरे पाछेसेर ४ पकी मिश्रीकी चासणीकरे पाछे चासणीमें यो
मावो नाषे अर ये ओषदि नाषे सोलिषूंछूं मिरचि टका १ भर चि
त्रक १ भर पीपलि टका १ भर धणो टका १ भर सूंठि टका
१ भर पीपलामूल टका १ भर अजवायण टका १ भर जीरो टका
१ भर सोंफ टका १ भर जायफल टका १ भर कचूर टका १ भर
तज टका १ भर पत्रज टका १ भर नागरमोथो टका १ भर यां सा
रांनें मिहींवांटि चासणीमें नाषे पाछे सारांको येकजीवकरिटकाये
कयेक भरकी गोलीकरे पाछे गोली १ रोजीना पायतो आमवातनें
वातव्याधिनें विसमज्वरनें पांडुरोगनें उन्मादनें न्नृगीनें प्रमेहनें

[illegible]

अर वातरक्तनें अमलपित्तनें मथवायनें नेत्रविकारनें प्रदरनें यासा रारोगानें योदूरि करैछे. वीर्यनें वधावैछे इति मेथीपाकः अथवा ल सणको रस टंक २ गऊकोघृत टंक २ यांदोन्यांनें मिलाय रोजीना पीवैतो आमवात जाय अथवा सींधोलूण टंक ५ हरडेकीछालि टंक ५ पोहकरमूल टंक ५ महुवो टंक ५ पीपलि टंक ५ यांसारांनें मिहीवांटि पाछे अरंडको तेल सेर १ ले सोंफको अर्क सेर १ ले कांजी सेर २ ले दहींकोमठ्ठो सेर ४ ले यांसारी औषधां समेत एकठां करी कढाहीमें चढावे नीचे मंद आंचदे सर्व रस वलिजाय तेलमा त्र आयरहे तदि उतारिले पाछे इनें टंक २ रोजीना पायतो अथ वा लगावैतो आमवात जाय भूप वधावैतो इति ब्रह्मसिंधवाद्यं तैलम्. अथवा पारो सोधीगंधक सूंठि कुटकी त्रिफला किरमाला की गिरि ये बराबरि ले हरडैकीछालियेक औषधिसूं तिगुणीले प्रथम पारा गंधककी कजली करे पाछे इंमें ये औषदि मिलावे पाछे इंनें मासो १ सूंठि अर अरंडकीजड यां दोन्यांका काढासूं लेतो आम वातको रोग ततकाल जाय १ इति आमवातारिरसः

आमवातवालो इतनीवस्त पाय नहीं दधीं, दूध, गुड मछलीको मांस उडदका चूनकीवस्त मांस ये पायनहीं यसारा भावप्रकासमें छे. अथवा गुगल सेर १ कडवो तेल टका ८ भर हरडेकी छालिको चूर्ण सेर १ वहेडाको छालिको चूर्ण सेर १ आंवलाको चूर्ण सेर १ पाणी सेर २४ तींमें येऔषदि सर्व नाषे पाछे कढाहीमें पाछे जल को चतुर्थांश आयरहे तदि उतारिले पाछे अग्निउपरि ओर चढा य इनेंक्यूं गाढोकरिले पाछे इंमें येऔषदि और नाषे सूंठि टंक २ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ त्रिफला टंक २ नागरमोथो टंक

भ. टी. आमवातवालोरोगी मूंडिरो मदान्नेपन करैतो मारोगकी वृद्धि नहीं होय. भावप्र में रहैतो मामद्रास्थ्यपिमूत्र नहींवावै, अर इंमहमें मूंडिपाकछिम्पोडै मीनावविधिपों बराबर भरगोली टका १ भरकीलिपीजे, सो नेप रोगनें देखकर देनीयोग्यछै.

२ देवदारु टंक २ सोधीगंधक टंक २ सोध्योजमालगोटा १०० प्रथ
म पारागंधककी कजली करै पाछे कजलीमें येसारी वस्त मिलावै
पाछे गूगलका रसमें ये मिलावै पाछे मासो १ ताता पाणीसूं इनें
लेतो आमवातनें ततकाल दूरिकरै अर यो भूष घणीकरै धातनें
वधावै बूढासूं जवान करै अर वायका रोगानें भगंदरनें सोजानें सू
लनें ववासीरनें यांसारांरोगानें योदूरिकरै इति व्याधिशार्दूलगूगल
अथवा हरडेकीछालि सींधोलूण निसोत इंद्रायणकीजड सूंठि इंद्रा
यणका फलकी मींगी. यांसारांनें मिहीवांटि लोहका पात्रमें जल
घालि तीमें ये नाषे पाछे मधुरी आंचसूं पकाय छोटावोर प्रमाण
गोली वांधे गोली १ गरमपाणीसूंले उपरें वणाघृतमूं चावलषाय
तो आमवातको रोग जाय इति आमारि गुटिका येसाराजतन वैद्य
रहस्यमेंछे. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि त्रिफला नागरमोथो
वायविडंग चव्य चित्रक वच इलायची पीपलामूल झाडरूपकीज
ड देवदारु तुंवरु पोहकरमूल कूट दोन्यूंहलद सोंफ जीरो सूंठि पत्र
ज धमासो संचरलूण जवषार साजी गजपीपलि सींधोलूणये सा
री ओषदि वरावरिले यांकी वरावरि सोध्योगूगल ले पाछे यांओष
धानें मिहीवांटि गूगलमें मिलावै पाछे इनें टंक २ घृतकेसाथि अ
थवा सहतकेसाथि रोजिना लेतो आवातनें उदावर्तनें पांडुरोगनें
कृमिकारोगनें विषमज्वरनें उन्मादनें आफरानें कोढनें सोजानें
यांरोगानें यो दूरिकरछे धन्वंतरजी ईंको नाव द्वात्रिंशत् गूगल
काव्योछे यो वीरसिंहावलोकनमेंछे. अथवा सोध्योगूगल सेर १
पाड्योनेल टका ८ भर त्रिफला सेर ३ पाणी सेर २८ तीमें त्रिफला

अ. टी. व्याधिशार्दूलगूगल लिखेछो जीमें गूगलतोल १. हरडेको चूर्णतोल १. सोंठ [illegible] [illegible] सोंठको चूर्णतोल २. चूर्णभर ४ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

नाषि औटावे पाछे पाणीको चोथोहीसो सेर ६ आयरहे तदि ईं पाणीनैं छाणि औरु अग्निउपरि चढाय काढोकरिले पाछे त्रिफ लाका जलमैं ये औषदि नांषे गूगल नांषे तेल नांषे अर सूंठि टंक२ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ त्रिफला टंक २ नागरमोथो टंक २ देवदारु टंक २ गिलवै टंक २ निसोत टंक २ दांत्युणी टंक २ वच टंक २ जमीकंद टंक २ पारो टंक २ सोधींगंधक टंक २ धतुराका वीज टंक ४ यांसारांनैं मिहीवांटि वे त्रिफलाका जलमैं मिलाय येक जीवकरि पाछे ईनैं मासो १ रोजीना ताता पाणीसूं लेतौ भूष अ ति घणीलागै यो धातनैं वधावैछे सरीर निरोगो करिदेछे अर आ मवातनैं मथवायनैं कटिकीवायनैं भगंदरनैं गोडांकीवायनैं जांघां कीवायनैं पथरीनैं मूत्रकृच्छ्रनैं इतनारोगांनैं योगूगल दूरिकरेछे इति सिंहनादगूगल संपूर्णम् योजोगतरंगिणीमैंछे अथवा सोधींगंधक टंक ५ तामेसर टंक ५ पारो टंक २ सारटंक २ यांसारांनैं येकठाक रि अरंडकां पानाऊपरि ढालै पाछे ईनैं परलमैं वांटि पीपलि पी पलामूल चव्यचित्रक सूंठि यांको काढोकरि ईंकी पुट १ दे अर वहेडाका काढाका रसकी पुट २० दे अर गिलवैका रसकी पुट १० दे अर यां सारां औषध्यांकी वरावरि ईमैं सेक्यो सुहागो नांषे सुहा गासूं आधोईमैं विडलूण नांषे विडलूण वरावरि ईमैं कालिमिरचि नांषे अर मिरचि वरावरि ईमैं डासल्यां नांषे अर सूंठि पीपलि त्रिफला लवंग येसारा येकेक मिरचि वरावरि नांषे पाछे यांसारांनै मिहीवांटि यांको येकजीवकरे पाछे ईनैं मासो १ रोजीना जुदाजुदा अनुपानसूं षायतो सर्व रोग मात्रनैं योरस दूरिकरेछे. भूष घणी व धावैछे. अर आमवातनैं दूरिकरेछे स्थूलपुरसनैं कृशकरेछे. अर कृ

म. टी. व्याधिगाढ्यकुमव सिंहनादगूगल लिख्योछे. इयामैं तामस्वमोगर. पेण हैं घोवितो पाणी मोचन्द्र विशमर्दीत्यानो. मारग. धनांतनीय। दोमगूं औषध्यांको अंश एई भाग जाणै. दछै मेर पहकरवै औषध्यां विकार प्रमाण गांगिकरी.

सनें पुष्टकरेंछे इंकी च्यारि रतीकी मात्राछे सो कंठपर्यंत भोजन क
खोवो ततकाल यो पचायदेंछे. इति आमवातसूररसः यो सारसंग्र
हमेंछे अर दहीं मछली गुड दूध उडदकेचूर्ण ये आमवातवालो न
पाय इति आमवातरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथ पित्तव्याधिकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० कडवारसका पा
वासूं पटाईका पावासूं गरम वस्तका पावासूं दाह कारिवावाली व
स्तका पावासूं तीपीवस्तका पावासूं उपवासका करिवासूं तावडा
का सेवासूं घणामैथुनका करिवासूं घणालूणका पावासूं क्रोधका
करिवासूं तिसका रोकिवासूं भूपका रोकवासूं पेदका करिवासूं म
द्यादिकका पीवासूं इतनी वस्तांका करिवासूं गरमीको कोपहोय जा
यछे कदे भोजनने जीर्ण होताथकां सरदऋतुके समें ग्रीष्मरितुके
विषे मध्यान्हके समें आधीरातकेसमें पित्तहै सो कोपकूं प्राप्ति होय
छे सो पित्तका ४० रोगछे. त्यांकानाम अर लक्षण लिप्यते ज
वानीमें सुपेदवाल होयजाय १ लालनेत्रवहबोकरै २ मूत्रलालरहै
३ नेत्रपीलारहै ४ मूत्रपीलोरहै ५ मलपीलोरहै ६ नपपीलारहै ७
दांतपीलारहै ८ सरीरपीलारहै ९ अंधेरी आवोकरै १० सर्वत्रपी
लोदीपवोकरै ११ नींदथोडीआवै १२ मूंढोसूकै १३ मुपमेंदुर्गंधि
आवै १४ मूंडोतीपोरहै १५ गरमसासनीसरै १६ मूंढापाटोरहै
१७ डकारमें धूवोनीसरै १८ भोलिआवै १९ इंद्रीसिथिलहोजाय
२० क्रोध घणो आवै २१ दाहरहै २२ अतिसार रहबोकरै २३ ते
ज सुहावै नहीं २४ सीतलतासुहावै २५ कहीं वस्तसूं धापैनहीं २६
सर्ववस्तसूं अति प्रीतिरहै २७ भोजनकर्‍यां दाहहोय २८ भूप घणी
लागै २९ नकसीरादिकहोय ३० मलपतलोरहै ३१ मलगरमऊतरै

* [illegible]

३२ मूत्रगरमऊतरे ३३ मूत्रकृच्छ्रहोय ३४ वीर्यकोअल्पपणोहोय ३५ सरीर गरमरहै ३६ पसेवघणो आवे ३७ पसेवमें दुर्गंधिआवे ३८ हाथ पगामें न्याऊघणीहोय ३९ सरीरमें फूटणां अर फोडा फुणसी घणांहोय ४० ये चालीसरोग गरमीकाछे अथ येसाराही पित्तकारो ग त्यांका सामान्यपणासूंजतनलि० नींबकीछालिनें आदिलेर तीषा द्रव्यका पावासूं मिश्रीनें आदिलेर मीठाद्रव्यका पावासूं चंदननें आ दिलेर सीतलवस्तका लगावासूं सीतलपवनकासेवासूं सीतलछाया कारहवासूं रात्रिमें रहवासूं षसकाबीजणाका पवनसूं चंद्रमाकीचां दणीसूं तहपानाकारहवासूं दूधका पीवासूं जुलाबकालेवासूं रुधिर का काढावासूं इतनी वस्तांकाकरिवासूं पित्तकारोग दूरिहोयछे इति पित्तव्याधिकी उत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम्. अथ कफकीव्याधिकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० भारी वस्तका पावासूं मीठावस्तका पा वासूं घणीचीकणीवस्तका पावासूं मंदाग्निसूं घणादहींका पावासूं दिनकासोवासूं सीतलवस्तका पावासूं घणा बेठारहवासूं इतनी व स्तांसूं कफको कोप होयछे परभातकैसमें भोजन करिचुके जींवप तमें वसंतऋतुमें कफको कोपहोयछे. अथकफका २० वीस रोगछे त्यांको लक्षण लिष्यते मूंडो मीठोरहवोकरै मुष कफसूं लिप्योरहे २ लालपडे ३ नींद घणीआवे ४ कंठमें घूंघरोबोले ५ कडवा रस की वांछराहे ६ गरम वस्तकी वांछारहे ७ बुद्धिजडतारहे ८ चेतथो डोरहे ९ आलस घणोआवे १० भूपलागेनहीं ११ मंदाग्निहोय १२ जंगलघणोजाय १३ मल सुपेदहोय १४ मूत्र घणो ऊतरे १५ मूत्रसुपेदहोय १६ वीर्यकी अधिकता घणीहोय १७ निश्चलपणो रहै १८ सरीर भारीहोय १९ सरीर ठंडारहे २० येकफका वीसरोगछे

न. टी. आमवातरोगपाछै पित्तरोग लिप्योछे ग्रन्थीमंदला ४० छे अर [illegible] [illegible] दारनी आदिलेकरपांणीन पित्तरोगछे. [illegible] आगलीछोछे. [illegible] [illegible] [illegible] है ओंको कोईही [illegible] नहीं करणी. अर यांका [illegible] [illegible] [illegible]

अथ कफकारोगांको सामान्यजतन लिख्यते. लूणीवस्तका पावासूं कषायली वस्तका पावासूं कडवी वस्तका पावासूं पेदका करिवासूं कुरलांका करावासूं वमनका करावासूं पसीनासूं लंघनका करिवासूं तिसकारोकियासूं हुक्काका पीवासूं कुस्तीका करिवासूं जलक्रीडासूं गरमवस्तका पावासूं चित्रकका पावासूं नासका लेवासूं मारगका चालीवासूं जागिवासूं मैथुनसूं इतनीवस्तकाकरिवासूं कफका बीसरोग दूरिहोयछे. इति कफव्याधिकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागर नामग्रंथे ऊरुस्तंभ आमवात पित्तव्याधि कफव्याधिरोगांका भेदसंयुक्त उत्पत्ति लक्षण जतन निरूपणंनाम नवमस्तरंगः समाप्तः ९

१० अथ वातरक्तरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० लूणका पावासूं उन्हीवस्तका पावासूं अजीर्णसूं गल्यामांसाका पावासूं बडा मूंगांका पावासूं कुलत्थका पावासूं उडदका पावासूं घणी तरकारीका पावासूं दारूका आसवका पीवासूं मांसका पावासूं माछलीका पावासूं दहींका पावासूं कांजीकापीवासूं विरुद्धवस्तका पावासूं अजीर्णमें भोजनकस्यांसूं क्रोधसूं दिनमें सोवासूं हाथी घोडा ऊंटका दौडावासूं इतनीवस्तासूं सकुमार पुरसके सुपीपुरसांके वातरक्तको आजार कोपकूं प्राप्त होयछे अथ वातरक्तको स्वरूप लिख्यते सर्व सरीरमें लोही दग्ध होजायछे पाछे ओरक्त दुष्ट हुवोथको दोन्यूं पगांमें चूयवा लागि जायछे अथ वातरक्तको पूर्वरूप लिख्यते पसेव घणा आवे. अथवा आवे नहीं सरीर कालो पडिजाय सरीरका स्पर्शको ग्यानहोयनहीं थोडीसी चोटमें पीडवणीहोय संधिसंधि सिथिल

[illegible]

होजाय आलस घणों आवे सरीरमें फुणस्यांहोय आवे गोडामें जांघमें कटिमें हाथपगांकी संधिमें पीडहोय सरीर भारीहै सूनो होजाय सरीरमें दाहहोय सरीरको रंग औरसो होजाय सरीरमें लाल चाठा पडिजाय ये लक्षण होय तदि जाणिजे वातरक्त होसी. अथ वायका अधिकको वातरक्तको लक्षण लिष्यते. पगांमें सूलादिक घणीहोय अर फुरके अर सोजो होय अर लूषो होय अर कालाहोय अर चोवासूं नाड्यांमें अर आंगुलीकी संध्यांमें संकोच होय सरीर जकडबंध होय सरीर कांपे अर सरीर सुनोसो दीसे ये लक्षण जीमें होयतो वायका अधिकको वातरक्त जाणिजे अथ रक्ताधिकवातरक्तको लक्षण लिष्यते जीमें सोजो होय पीड घणीहोय ललाईनें लीयां होय जीमें चिमचिमीहोय षुजालिहोय येजीमें लक्षण होय तीनें रक्ताधिक वातरक्त कहिजे अथ पित्ताधिक वातरक्तको लक्षण लि० जीमें दाह होय मोह होय पसेव आवे मूर्छाहोय मद होय तिसहोय स्पर्श सह्योजाय नहीं पीडा होय सोजो होय पकिजाय गरम घणोहोय येलक्षण जीमें होय तीनें पित्ताधिकवातरक्त कहिजे अथ कफाधिक वातरक्तको लक्षण लि० सरीरमें सल पडिजाय सरीर भारो होजाय सरीर सोजाय सरीर चीकणो होजाय सरीर ठंडो होजाय सरीरमें षुजालि आवे येलक्षण जीमें होय तीनें कफाधिक्य वातरक्त कहिजे अर येसब लक्षण जीमेंहोय तीनें सन्निपातको वातरक्त कहिजे. अथ वातरक्त हाथांमें होयछे. तींको लक्षण लि० जियांपगथलीमें होयछे तेसे हथेलीऊपरि फुणस्यां उगेरे होयछे. पाछे सारा सरीरमें होय अथ वातरक्तको अ

भ. टी. वातरक्तरोग ८ प्रकारकोहै. सो इहांपां नहीं लिष्याहै सो यहै टीकामें लिषूं. वाताधिक्य १ पित्ताधिक्य २ कफाधिक्य ३ रक्ताधिक्य ४ सन्निपात ५ वातपित्त ६ वातकफ ७ कफपित्त ८ ऐसें पांचको द्वन्द्वजहै. ओडदन दोय गहिै. कारण पांचमें ये मिल रयाहै.

साध्य लक्षण लिप्यते. पगथलीसूंलेर गोडातांई फुणस्यांहोय अर फाटिवा लागिजाय अर चूयवा लागिजाय अर वलमांस अग्निको नास होजाय योवातरक्त असाध्य जाणिजे अर ईनेंवरस येकको जाप्यजाणिजे.

अथ वातरक्तकाउपद्रवलि० नींद आवेनहीं. रुचिजातीरहे सा सहोय धावे मांसगलिजाय मथवाय होय पीडाहोय तिसहोय ज्व रहोय मोहहोय सरीरकांपे हिचकीहोय अंगुल्यांगलिवालागिजाय ग्यांचिहोयफुणस्यांपकिजाय पीडहोय भोंलि आवे अंगुल्यां वांकि होजाय फोडामेंदाहहोय येईकाउपद्रवछे अथवारक्तका जतनलि० वातरक्तवालाके लोहीकढाजे जोकां करिके अथवा सींगीकरिके अ थवा पाछणांकरिके अथवा सीरकरिके पणिलोही अतनूं अनुमान माफिककढाजे वाय वधेनहीं जेठातांई. अरवातरक्तवालानें इतनो वस्त करिवो जोग्यनहीं. दिनमें सोवो कोपकरिवोपंदकरिवो मेथुनक रवो कडवो पावो गरम वस्तको पावो भारि वस्तको पावो लूणको पा वो पटाईको पावो इतनीवस्तको करिवो योग्यनहीं. अरइतनीवस्त को करिवो जोग्यछे. पुराणाजव पुराणागोंहुं पुराणीपीली. इतनीव स्तपाजे अथवा लावोतीतरवटेरअरहड चणामूंगमसूर कुलथयणों नीरपोटणी. वथवो लूणप्योचोलयो वथवाकेभेद घकरिको पत घ कीरकोदूध. इतनीवस्तको करिवो जोग्यछे. अथवा घरंडकोजड गिलवे यांको काढो जोग्यछे. अथवागूगल टंक १ गिलवेका का ढासूं देतो जोग्यछे. अथवा अरंडको तेल टंक २ गिलवेका का ढामें नापिपीवेनों वातरक्तजाय अथवा मंजिष्ठादिकका काढासूं वा

१ [illegible]

होजाय आलस घणों आवै सरीरमें फुणस्यांहोय आवै गोडामें जांघमें कटिमें हाथपगांकी संधिमें पीडहोय सरीर भारयोरहै सूनो होजाय सरीरमें दाहहोय सरीरको रंग ओरसो होजाय स रीरमें लाल चाठा पडिजाय ये लक्षण होय तदि जाणिजे वातरक्त होसी. अथ वायका अधिकको वातरक्तको लक्षण लिष्यते. पगांमें सूलादिक घणीहोय अर फुरकै अर सोजो होय अर लूपो होय अर कालाहोय अर चोवीसूं नाड्यांमें अर आंगुलीकी संध्यांमें संकोच होय सरीर जकडवंध होय सरीर कांपै अर सरीर सुनोसो दीसे ये लक्षण जीमें होयतो वायका अधिकको वातरक्त जाणिजे अथ रक्ता धिकवातरक्तको लक्षण लिष्यते जीमें सोजो होय पीड घणीहोय ल लाईनें लीयां होय जीमें चिमचिमीहोय पुजालिहोय येजीमें लक्षण होय तीनें रक्ताधिक वातरक्त कहिजे अथ पित्ताधिक वातरक्तको लक्षण लि० जीमें दाह होय मोह होय पसेव आवै मूर्छाहोय मद होय तिसहोय स्पर्श सह्योजाय नहीं पीडा होय सोजो होय पकिजाय गरम घणोहोय येलक्षण जीमें होय तीनें पित्ताधिकवा तरक्त कहिजे अथ कफाधिक वातरक्तको लक्षण लि० सरीरमें सल पडिजाय सरीर भारयो होजाय सरीर सोजाय सरीर चीकणो होजाय सरीर ठंडो होजाय सरीरमें पूजालि आवै येलक्षण जीमें होय तीनें कफाधिक्य वातरक्त कहिजे अर येसर्व लक्षण जीमेंहोय तीनें सन्निपातको वातरक्त कहिजे. अथ वातरक्त हाथामें होयछे. तींको लक्षण लि० जियांपगथलीमें होयछे तैसे हथेलीऊपरि फु णस्यां उगेरे होयछे. पाछे सारा सरीरमें होय अथ वातरक्तको अ

न. टी. वातरक्तरोग ८ प्रकारकोछे. सो ईग्रंथमें नहीं लिष्याछे सो अठे टीकामें लिषांछां. वाताधिक्य १. पित्ताधिक्य २. कफाधिक्य ३. रक्ताधिक्य ४ सन्निपात ५ वातपित्त ६ वातकफ ७ कफपित्त ८ जीमें पांचको इलाजछे. जोद्वंद्व दोष नहींछे. कारण पांचमें ये मील रह्याछे.

साध्य लक्षण लिख्यते. पगथलीसूंलेर गोडातांई फुणस्यांहोय अर फाटिवा लागिजाय अर चूयवा लागिजाय अर बलमांस अग्निको नास होजाय येवातरक्त असाध्य जाणिजे अर ईनेंवरस येकको जाप्यजाणिजे.

अथ वातरक्तकाउपद्रवलि० नींद आवेनहीं. रुचिजातीरहे सा सहोय ष्यावे मांसगलिजाय मथवाय होय पीडाहोय तिसहोय ज्व रहोय मोहहोय सरीरकांपे हिचकीहोय अंगुल्यांगलिवालागिजाय ग्लांचिहोयफुणस्यांपकिजाय पीडहोय भोंलि आवे अंगुल्यां वांकि होजाय फोडांमेंदाहहोय येईकाउपद्रवछे अथवारक्तका जतनलि० वातरक्तवालाके लोहीकढाजे जोकां करिके अथवा सींगीकरिके अ थवा पाछणांकरिके अथवा सीरकरिके पणिलोही अतनूं अनुमान माफिककढाजे घाव वधेनहीं जेठातांई. अरवातरक्तवालानें इतनो वस्त करिवो जोग्यनहीं. दिनमें सोवो कोपकरिवोपेदकरिवो मैथुनक रवो कडवो पावो गरम वस्तको पावो भारि वस्तको पावो लूणको पा वो पटाईको पावो इतनीवस्तको करिवो योग्यनहीं. अरइतनीवस्त को करिवो जोग्यछे. पुराणाजव पुराणागोंहूं पुराणीपीली. इतनीव स्तपाजे अथवा लावोतीतरवटेरअरहड चणामूंगमसूर कुलत्थयणों चीरपोटणी. वथवो लूणप्यांचोलवो वथवाकंभेद घक्रिको घृत य करिकोदूध. इतनीवस्तको करिवो जोग्यछे. अथवा अरंडकीजड गिलवे यांको काढो जोग्यछे. अथवागूगल टंक १ गिलवेका का ढामें लेतो जोग्यछे. अथवा अरंडका तेल टंक २ गिलवेका का ढामें नाषिपीवैतो वातरक्तजाय अथवा मंजिष्ठादिकका काढामें ना

[illegible]

तरक्त जायसो लिषूंछूं मजीठ त्रिफला कूटकी वच दारुहलद गिलै नींबकी छाली ये सर्व बराबरिले यांनैं जौकुट करिटंक २ को काढ रोजीनालेतौ वातरक्तनैं कोढनैं पांवनैं फोडानैं यांरोगांनैं योदूरिव रैछै. येकमंडलतांईले इतिलघुमंजिष्ठादिककाथ. अथवा गिलवै व वची पवाड नींबकीछालि हरडेकीछालि हलदआंवला अरडूसो स तावरी नेत्रवालो षरेटी महलौठी महुवो गोषरू पटोल षसमजीठ रक्तचंदन येसर्वबराबरिले पाछै यांनैं जौकूट करिटंक २ कोकाढोरो जीनालेतौवातरक्तनैं कोढनैं पांवनैं दाहनैं यांरोगांनैं योकाढो दूरि करैछै, इति गुडूच्यादिकाथ. येसर्व भावप्रकाशमैंछै अथवा सोध्यो भैंसागूगलसेर १ पाणीसेर ६४ हरडेकीछालिसेर १ वहेडाकीछा लिसेर १ आंवला सेर १ गिलवै टंक ३२ भर यांसारांनैं कूटि चो सठसेर पाणिमैं यांसारी औषधांनैं औटावै पाछै यां औषधासमे तपाणीआधोआयरहै तदिइनैंउतारि छाणिले पाछैओरकढाईमैं घा लिवेमैं औटायगाढोकरि पाछैईमैयेऔषदिनाषै पारोटंक २ गंधक टंक २ वायविडंग टंक १ निसोतटंक २ गिलवै टंक २दांत्युणी टंक २ प्रथम पारागंधककी कजलीकरै पाछैकजलीमैं येऔषदि मिहीवांटि मिलाय येसारी वैगूगलमैं नाषि यांसारांको येकजीवकरि पाछै मासा ४ अथवा मासा ८ रोजीना ईमैं मंजीष्ठादिकका काढासूं लेतो वा तरक्तनैं फोडा फुणसीनैं व्रणनैं सासनैं गोलानैं कोढनैं सोजानैं उ दररोगनैं पांडुरोगनैं प्रमेहनैं मंदाग्निनैं यांसारा रोगांनैं यो दूरीक रैछै. ईको पावावालो इतनी वस्त करैनहीं पेदकरैनहीं तावडै रहै नहीं अग्निकनैं जाय नहीं पटाई पायनहीं मांस दही पायनहीं मै

न. टी. वातरक्तकाजो असाध्यलक्षण ईकाउपद्रव ईकाजो आर्वातरभेद पुग लिगाहमैं नाष णा. ग्रन्थकर्ता कठाताई कहै जो रोगछै. जीमैं अन्पनाशीनै अर पाटो भयकारीहोय जीनैग रपनहीं समझो. उपद्रव मोटोछै अनिद्रा स्वास कास भरुनि मांगगले मस्तक शूल इ०

थुन करैनहीं मार्ग चालैनहीं तावडे रहैनहीं लूणपायनहीं तेल पाय नहीं इति किसोरगूगल संपूर्णम्. अथवा भिलावा भाग्या जलमे डू बिजाय ऐसा सेर २ ले त्यांका मूंढा सारसूं घसिमेर १६ पाणीघालि ओटावे ई ओटतां पाणीमें गिलवे सेर २ कूटिनापे तदि ईपाणीको चतुर्थांशरहे तदि ईमें येओपदि कूटि नापे सो लिपूंछूं गिलवे टंक २ बावची टंक २ नींबकोछालि टंक २ हरडेकीछालि टंक २ आंवला टंक २ हलद टंक २ नागरमोथो टंक २ तज टंक २ इलायची टंक ५ गोपरू टंक ५ कचूर टंक ५ रक्तचंदन टंक ५ यांने मिहीबांटि ईभि लावा समेत एकजीवकरि अमृतवानमें राषे पाछे ईनें टंक ५ जलसूं रोजीना लेतो वातरक्तनें कोढनें बवासीरनें विसर्प नें पांवनें वायका सर्वकिकारनें रुधिरका सर्व विकारनें इतना रोगांनें यो दूरिकरैछै. ईका पावाचालो इतनीवस्त करैनहीं पेद करैनहीं तावडे रहैनहीं अ ग्निकनें रहैनहीं पटाई पायनहीं मांस पायनहीं तेल लगावैनहीं मा र्गचाले नहीं इति अमृतभल्लातकावलेह संपूर्णम् अथवा अलसीनें दूधमें पीस अथवा अरंडकी अरंडोलीनें दूधमें बाटि हाथ पगांके लेप करैतो वातरक्त जाय १ अथवा गोरीसर राल मोम मजीठ ये बराबरिले त्यांनें तेलमें पकावे पाछे ईतेलको मर्दनकरैतो वातरक्त जाय १ अथवा अरंडकीजड गिलवे अरडूसो यांको काटोकरि ती में गूगल मासा ४ अरंडको तेल टंक २ नापि पीवैतो वातरक्तनें मूलांनें मथवायनें सासनें फोडांनें यांनें दूरिकरैछै. ये वैद्यरहस्यमें छै. अथवा हरतालका पत्र चोषा ले त्यांनें साटीका रसमें दिन २ प रलकरे पाछे वेनें गाटोकरि वेकी टीकडीकरि सुकावले पाछे साटी का सारके बीचिवे हरतालकी टिकडीमेल्हि ठीकरामें पाछे ओटिकनें

[illegible]

चूल्हाऊपरि चढावै पाछै मधुरीआंचदे दिनपाच५पांचतांई रातादि न पाछै वेनैं स्वांग सीतल हुवांकाढै वा हरताल सुपेद नीकलै तोल ऊतरै पाछै ईनैं रती १ गडूच्यादिकका काढाकी साथि पायतो वातर क्तनैं अठरा प्रकारका कोढनैं फिरंगवायनै विसर्परोगनैं पावनैं फो- डानैं सर्वरोगानैं यो दूरिकरैछै. ईको षावावालो लूण षटाई कड वो रस तावडो अग्निकनैं वैठिवो ये छोडै अर सींधोलूण मीठो रस षाय इति हरतालकेस्वररसः या हरतालकी क्रियाछै सो भावप्रकास मैं लिषीछै. इति वातरक्तकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ सूल रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० सूलरोग आठ प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ आंवका रसको ५ वातकफको ६ कफपित्तको ७ वातपित्तको ८

अथ वायका सूलकी उत्पत्ति लक्षण लिष्यते पेदसूं घोडादिका का दौडावासूं अतिमैथुनसूं घणाजागिवासूं घणा जलादिकका पी वासूं चोटकालागिवासूं कषायली वस्तकापावासं कडवी वस्तका षावासूं भेयाअन्नका पावासूं विरुद्धवस्तका पावासूं सूकामांसका पा वासूं मलमूत्रकारोकिवासूंमैथुनकाकरिवासूं अधोवायका रोकिवासूं सोचका करिवासूं लंघनका करिवासूं घणाहसिवासूं इतनी वस्ता सूं वायवधै तदि इतना ठिकाणामैं सूलका रोगनैं प्रगटकरै हियां मैं दोन्यूं पसवाडामैं रोमाभैं याठिकाणामैं सूल चलावै संध्यासमै वादलांमैं सीतकालमैं याभैं वणीचालै वारंवार थंविजाय वारंवार चालिवा लागिजाय मलमूत्र रुकिजाय सूलचालै. पीड घणी होय यावायका सूलकी उत्पत्ति लक्षणछै. १ अथ पित्तका सूलकी

न. टी. वातरक्तनैं पथ्य लि० चीणा, मूंग, गंहूं, सांठचावल, छालीको गायको दूध, तूर, मापन, नवोघी, मुरगाको मांस, कडवो, षाटो, मान्योभग. कुपथ्य लि० अग्निकनैं बैठणो, दिवानिद्रा, पसेवलेणा, अम. श्रीसंग, उड़द, कुलथी, षारांस, मीठ, गडाणा, दुरि- गदिरषां. षांड. इ०

उत्पत्तिलक्षणलिप्यते, पारीवस्तका पावासूं प्रतकालीनें आदिलेर घणी तीपीवस्तका पावासूं गरमवस्तका पावासूं तिलांका पावासूं क्रोधका करिवासूं पलका पावासूं कुलथका पावासूं पटाईका पावासूं कांजीका पीवासूं दारूका आसवका पीवासूं पेदका करिवासूं तावडा का सेवासूं घणामैथुनका करिवासूं इतनीवस्तांसूं पित्तको कोपहोय अरसूलनें प्रगट करै तदि तिस घणीलगावै दाह घणाकरै नाभिकै पसेव आवै मूर्छाहोय भ्रमहोय क्रोधहोय मध्यान्हमें आधीरातिमें ग्रीष्मरितुमें सरदरितुमें इतनीजायगां घणीसूलचालै तदि जाणिजे पित्तकी सूलछै. अथ कफकीसूलकोलक्षण लि० अनूपदेसकामांस का पावासूं माछलीका पावासूं पेडाउगैरे दूधका पावासूं सांठाका चू सिवासूं मेदाका पावासूं घणामधुररसका पावासूं इतनी वस्तासूं कफ कोपकों प्राप्तिहोयछै. सूलनैंपेदा करैछै. हीयोदूपै. वमनसी आवै पासिहोय पीडहोय भोजनमें अरुचिहोय पेटमें पीडाचालै. मलउतरै नहीं मधवाय होय आवै सरीरभारीहोजाय भोजनकरयांपीडघणी होय प्रभातसमै वसंतऋतुमें घणीहोयतदिजाणिजे कफकीसूलछै. अथसन्निपातकीसूलको लक्षणलि० येकस्या सोपाछिलालक्षणसो साराहीमिलैतांनैंसंन्निपातकी सूलकहिजे. अथ आंवकीसूलकोल क्षणलि० आफरोहोय पेटमेंगुडगुडशब्द होय हीयोपकडपो जाय वमन आवै सरीरभारी होजाय दालपंडै अरकफकीसूलकासारा लक्षणमिलैतांनैं आंवकीसूलकहिजे. अथ वायकफसूलको लक्ष णलिप्यते पेटमें हियामें कंठमें दोन्यूंपसवाडमें सूलचालैतांनैं वा यकफकी सूलकहिजे ८ अथ कफपित्तकीसूलको लक्षण लिप्यते

८ [illegible] रोगीने [illegible] ... [illegible]

कुषिमैं हियामैं नाभिमैं सूलचालै तीनैं वातपित्तकोसूल कहिजै ८ अथ सूलरोगका उपद्रवलिष्यते पीड घणीचालै. जींमैं तिसहोय मूर्छा होय आफरोहोय सरीर भाखो होय अरुचि होय पासहोय सासहोय येसूलकाउपद्रवछै. अथ सूलरोगको भेदपरिणाम सूलछै तींको लक्षण लिष्यते जेता भेदसूलकाछै तेताही परिणामसूलकाछै वाहीवेंकी उत्पत्तिछै ईमैं इतनो विशेषछै, कुपितवायहैसो कफ पित्तसूं मिलिसूलनैं करैछै, अथ ईकोलक्षणालि० भोजनपच्यांपाछैसूल उपजै जींनैंपरिणामसूल कहिजै १ अथ अन्नद्रवसूलको लक्षण लि० भोजन कखोपचजाय अथवा नहींपचै सदाहीसूल रहै पथ्य चालतांभी कहींतरै सूलकी सांति होयनहींतीनैं अन्नद्रवसूल कहिजै अथ जरतपित्तकासूलको लक्षणालि० जो भोजन पचतां सूल होय तीनैं जरत्पित्तकासूल कहिजै.

अथ सूलरोगका जतनलिष्यते सूलरोगवालानैं वमन कराजै और लंघन कराजै औषधांसूं पसेव लिवाजै पाचनदीजै वास्तिकर्मकराजै साजीपारनैं आदिलेर त्यांका चूर्णदीजै कव्यादिकदीजै गरमगरम कुलत्थको सेककीजै रेतनै गरमकारजींमैं पाणीनापिवेनैं गरमागरमलेकर कपडामैं घालि तींको सेक कराजै अथवा काकडासींगी कुलत्थ तिल जव अरंडकीजड अलसीसाठिकीजड लहसणका वीज यानैं कांजीमैं सिजाय जेठै सूलचालै तैठैही सेक करा जैतो सूलजाय अथवा तिलांनैं वांटि कांजीमैंसिजाय वेमैं क्यूंतेल नापि वेंको सेक कराजै कपडाकीपोटलीसूं तो सूल ततकाल जाय १ अथवा मैंढलनैं कांजीमैं वांटि नाभिकै लेपकरैतो सूलजाय १ अथवा सूंठि अरंडकीजड यांको काढो दे तो सूल जाय १ अथवा

न. टी. सूलकालक्षण सर्वे कह्याछे. परंतु निदानयुक्त संक्षपछे. अथवा ग्रन्थविस्तारका भयसूं अन्यग्रन्थांकी सहायताथी जाणलीजो बहोत सुख होसी. अठेतो अयोजनमात्रका नो घणाहीछे.

सूंठि अर अरंडका काढामें हींग संचरलूण नापि पीवैतो सूलजाय १
१ अथवा गुडनें ओटाय तोमें जवपार नापि पीवैतो सूल जाय १
अथवा कांसीका रूपाका तांवाका पात्रमें जलघालि जठे सूल चालै
तीऊपरियेपात्रनेंफेरै तोसूलजाय १ अथवा पित्तकी सूलहोयतो
जुलावसूं दूरिहोय १ अथवा गुड हरडेकीछालि तीनेंबांटितीमें घृत
मिलाय पायतो पित्तकीसूलजाय १. अथकफकीसूलकोजतनलि०
आंवलाकोचूर्णसहतमें चाटैतो कफकीसूलजाय १ अथवा नींवकी
छालि तींकोकाढोकरितीमेंपीवाकी दारूनापि पीवैतो कफकी सूल
जाय १ अथवा जवपार सींधोलूण संचरलूण सांभरलूण पीपलि
पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि सेकीहींग यांकोचूर्णकरिईचूरणनें टं
क २ गरम पाणीसूं लेतो कफकीसूलजाय येजतन कफकी सूलका
छै. सोयेहीआमसूलका जाणिलीज्यो अथवा राई त्रिफलाकाचूर्ण
सहत घृतसूं लेतो सर्व सूलमात्र दूरिहोय १ अथवा दारुहलद चोप
कूठ सोंफ हींग सींधोलूण यांसागांनें कांजीमेंपीसि गरमकरि सुहा
वतो सुहावतो लेपकरैतो सूलदूरिहोय १ अथवा बीलकीजड अरं
डकीजड चित्रक सूंठि सेकीहींग सींधोलूण यानें बराबरिले यानेंमि
होयांटि त्यांको चूरणकरि टंक २ गरम पाणीसूं लेतो सूलजाय अ
थवा पकापेठानें लेतीका टूकडाकरितावडे सुकावै पाछै यांटूकडानें
पीतलका कचोलामेंघालित्यांका कोइला करै जुगतिसूंगपकरि येनहीं
चूल्हापर चढायनीचेंअग्निबाल कोयला करै पाछै यां कोइलानें बां
टिइंमें सूंठिको चूरण मासा २ मिलाय ईनें जलसूं पीवैतो असा
ध्यभी सूलको रोगजाय १ इति कूष्मांडक्षार. ये सर्व जतन भाव
प्रकासमेंछै. अथवा अजवायण सींधोलूण सेकीहींग जवपार संच

[illegible]

रलूण हरडैकीछालि येवरावरिले यांकोमिहि चूर्णकरि टंक २ ग
रम पाणीसूं लेतौ वायको सूल जाय १ अथवा संचरलूण टंक १
जीरोटंक ३ कालीमिरचि टंक ४ यांनैमिहीवांटि ईकै अमलवेद
कारसकी पुट ७ दे पाछैविजोराका रसकी पुट ७ देपाछे ईकीगोली
मासा ४ भरकीबांधे पाछे गोली १ रोजीना गरम पाणीसूं लेतौ वा
यकी सूलजाय १ अथवा सूंटि हरडैकीछालि पीपलि निसोत संच
रलूण येवरावरिले यांनैंमिहिवांटि टंक १ गरम पाणीसूं लेतौ सू
लनैं आफरानैं ववासीरनैं आमवातनैं योदूरिकरैछे. इति पंचसम
चूरण. अथवा सूंठिका काढामैं अरंडको तेलनापि अरसेकीहींग
संचरलूण मिलाय पीवैतौ तत्काल सूलजाय १ अथवा संपको
चूर्ण संचरलूण सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलि येवरावरिले
त्यांको चूर्णकरि टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ ततकाल सूलजाय १
अथवा सांध्योसींगीमोहरो चित्रकसूंठि कालीमिराचि पीपलि जीरो
सेकीहींग येवरावरिले यांनैं निपट मिहिवांटि ईकै भांगराका रस
कीपुट ३ देपाछे ईकीगोलीचणाप्रमाणवांधैगोली १ गरमपाणीसूं
लेतौ सूल ततकाल जाय १ अथवा संपकी भस्मकरिले अर कण
गचकी जड सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलि सींचोलूण येसर्व
बरावरिले यांनैंमिहीवांटि टंक ३ गरम पाणीसूं लेतौ सूलको रोग
जाय १ इतिसूलनासनचूर्णम. अथवा चित्रक सेकीहींग पाठसूंठि
कालीमिरची पीपलि पांचोलूण जीरो धणो छड अजवायण पीप
लामूल येवरावरिले यांनैंमिहीवांटि यांकै जंभीरीका रसकी पुट ५
देपाछे ईकीगोलीबांधे पाछेगोली १ गरम पाणीसूं लेतौ सूलनैं हि

न. टी. जीर्ण परिणामशूल कहैछे. जोपरिणाम भोजन पचनदोलां होयछै. जीर्ण कहीजे सो लि० यात परीणामशूल १ पित्तपरिणाम २ कफपरिणाम ३ वातपित्तपरिणाम ४ पित्त कफपरिणाम ५ कफवातपरिणाम ६ आमपरिणाम ७ सन्निपातपरिणाम शूल ८

याकी सूलनें पसवाडाकी सूलनें आंवकी सूलनें अरुचिनें असी प्रकारकी वायनें या गोलि ततकाल दूरिकरैछै.

इतिचित्रकादिगुटिका अथवा हरडेकीछालि सूंठि कालीमिरचि पीपलि कूचीला सांथीगंधक सेकीहींग सींधोलूण येसर्व बराबरिले पाछेयांनें मिहिवांटि चणाप्रमाण गोली बांधे गोली १ रोजीनाप्र भातसमें गरम पाणीसूं लेतो सूलनें संग्रहणीनें अतिसारनें अजी र्णनें मंदाग्निनें यागोलीदूरिकरैछै इति सूलनाशिनीगोली अथवा कूठटंक २ सूंठि टंक २ संचरलूण टंक १ सेकीहींग टंक१ यांनें मिही वांटि सहजणाकी जडका रससूं अथवा लसणकारससूं गोलीबांधे गोली १रोजीनागरमपाणीसूं लेतो सूल ततकालजाय इतिकुचिला दि गुटिका अथवा त्रिफला सार महलोठी महुवो यांनें बराबरिलेयां नें मिहीपीसि टंक १ सहत घृतमें चाटेतो त्रिदोषकीसूलजाय १ अ थवा सोध्योपारो टंक १० सोध्योसींगीमोहरो टंक१०कालीमिरचि टंक२० पीपलि टंक २० सूंठि टंक २० सेकीहींग टंक २० पांचूलू ण टंक ५ भरआनलीकोपार टंक ८ भरजंभीरीकोरस टंक ८ भरअ रसंपनेवार ७ दग्धकरि तींकाचूर्णटका ८ भरले पाछै यांसारानें ये कठांकरि नींबुकारसमें दिन ५ परलकरे पाछै ईनें टंक १ गरम पा णीसूं लेतो ततकालसूलजाय इतिसूलदावानलरस. अथवा हींगक सीसेर ऽ॥ लाहोरीफिटकडीसेर १ सींधोलूण सेर १ कलमीसोरो सेर १ यांनें वांटिदीकलीमंसूं यांनें पुवाययांकोरसकाढिले चांणी कावासणमें पाछैमासो १ रोजीना जीमके पछलजाय पछैनें दांतां फे लगावेनहीं इसीतरेलेतो सूलरोगनें गोलाकारोगनें त्रियानें उद

[illegible]

रकारोगनैं ववासीरनैं अजीर्णनैं वायकारोगनैं यांसारांनैं योदूरि करैछै. इतिसंपद्राव. अथवा सोधींगंधकतींसूं आधोसोध्योपारो या दोन्यांकीबराबरि सोध्याकंटकवेधीतांबाकापत्र यांतीन्यांनैं परलमैं घालि मर्दनकर दिन १ पाछैयांको गोलोकरि हांडीमैं लूण भरितां केवीचि योगोलो मेलैपाछै आंच दिन ३ कीदेर ईगोलांनैं पकावै पाछै ईनैं स्वांगसीतलहुवां काढै पाछै ईनैंरती १ नागरवेलीका पानसूं पुवावै तो ततकालसूलमात्रदूरि होय १ इतिसूलरोगेकेसरीरसः अथवा जीरो सूंठि कालीमिरचि सेकीहींग वच येबराबरिले यांनैं मिहीपीसि टंक २ गरमपाणीसूं लेतो सूलजाय १ अथवा त्रिफला टका १ सोधींगंधक टका ५ सारटंक २ यांनैं मिहीवांटि यांको येकजीवकरि पाछै सहत टंक२घृत टंक२या दोन्यांकीसाथि यांनैं लेतो सूलमात्रनैं वायकाविकारनैं फोडांनैं महिना ३ सेवनकर्‌यां यानैं दूरिकरैछै. १ इतिगंधकरसायनं अथवा गुड टका १ आंवला टका १ मांडूर टका ३ भर यांसारांनैं मिहीवांटि टंक २ सहत घृतकै साथि ईन पायतोसूलनैं अन्नद्रवनैं जरत्पित्तनै अम्लपित्तन परिणामसूलनैं योदूरिकरैछै. इतिगुडाद्यमंडूरं. अथवा वायविडंग चित्रक चव्य त्रिफला सूंठि कालि मिरचि पीपलि येसारा बराबरिलेअर यासारांकीबराबरिमंडूरले यांबराबरि गुडले पाछैयांसारांसूं दसगुणां गोमूत्रले पाछैयानैं कडाहीमैंघालिमधुरिआचसूंपकावै पाछै यांको एकपींडोकरिचीकणा वासणमेंमेल्हिराषे पाछै ईनैं टंक २ भोजनकै पहलीलेतो सूलनैं पक्तिसूलनैं कामलारोगनै पांडुरोगनैं सोजानैं मंदाग्निनैं ववासीरनैं संग्रहणीनै कर्मीरोगनैं गोलानैं उदरकारोगनैं अम्लपित्तनैं यांसारांनैं योदूरिकरैछै. १ इतितारामंडूरः अथवा ह

न. टी. शूलदावानलरसमैं सोध्यो सींगीमोहरो लिख्योछै. सो शुद्ध बछनागछै जो बछनागनैं गायकूं मैं दोलकायंत्रमें पकावै. दोयतोला बछनाग दोयसेर दूध पावसेर [illegible] पा.प पंटली कापडाकी पायमैं अधगीपमैं राखै नो. शुद्धहोय.

रडेकीछालि सुहागो सूंठि सेकीहींग कालीमिरचि चित्रक सोधींगं धक सींधोलूण येसारावरावरिले यांसारांकी बराबरि कुचिला ले पा छे यांसारानैं मिहिवांटि यांको येकजीवकरि मासो १ जलसूं लेतो सूलनें आफरानें वंधकुष्टनें कफका आजारनें अजीर्णनें मंदाग्निनें ज्वरनें यागोलि दूरि करेछे.

इति सूलगजकेसरी गुटिका अथवा कणगचकी जड सेकीहींग सेक्यो सुहागो सूंठि येसारा वरावरिले यांनें मिही वांटि टंक २ गरम पाणीसूं लेतो महासूलदूरिहोय येसाराजतन वैद्यरहस्यमेंछे. अथवा निसोत वायविडंग सहजणाकीफलि हरडेकीछालि कपेलो ये सारा वरावरिले यांनेंमिहींवांटि घोडाका मूत्रमें पकायले पाछे इनें टंक २ पीवाका दारूकेसाथि लेतो वायकी सूलजाय १ योच ऋदत्तमेंछे. अथवा सेकीहींग अमलवेद पीपलि संचरलूण अजवायण जवषार हरडेकी छालि सींधोलूण येसर्व वरावरिले यांनेंमिही वांटि टंक २ पीवाकि दारूकेसाथि लेतो वायकीसूलजाय १ अथवा संचरलूण अमलवेद जीरो मिरचि येसारा येकसूं येकदूणीले यांनेंमिहीवांटि बिजोराका रसमें गोली करे पाछे गोली १ गरमपाणीसूं लेतो सूलजाय १ इतिसौवर्चलादिगुटिका अथवा सेकीहींग अमलवेद सूंठि कालीमिरचि पीपलि अजवायणी संचरलूण सांभरोलूण सींधोलूण येसर्ववरावरिले यांनेंमिहिवांटि बिजोराकारसमें गोलीकरे पाछे गोली १ गरम पाणीसूं लेतो सूलजाय इति हिंग्वादिक गुटिका अथवा बिजोराकीजड टंक २ तीनेंमिहि वांटि घृतसूं पीवेतो वायकी सूल दूरिहोय १ इतिबिजपुरादिजोग येजतन सर्वसंग्रहमेंछे अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि संचरलूण यांनें वरावरिले

म. हि. [illegible]

पाछे यांनैंमिहिवांटि बिजोराका रसकी पुट ३ देरसूकायले पाछे ईंनै टंक २ सहतमै चाटैतौ त्रिदोषकी सूलदूरिहोय १ अथवा सं पकी भस्म संचरलूण सेकीहींग सूंठि कालिमिरचि पीपलि येसबब रावरिले यांनैंमिहीवांटि टंक २ गरमपाणीसूं लेतौ त्रिदोषकी सूल जाय १ अथवा हलद सहजणाकी छालि सींधोलूण अरंडकीजड भैंसागुगल सिरस्यूं मेथीदाणा सौंफ असगंध महुवो यांनैं बराब रिले यांनैंमिहीवांटि कांजीका पाणीमैं रोटीकरि वेनै पकाय अग्नि उपरि पाछे वेंका पेटउपरि सेक करैतौ पेटकी सूल दूरिहोय १ अथवा कौड्यांकीराष सोध्योसींगीमुहरो सींधोलूण सुंठि कालीमिरचि पीपलि येसर्व बराबरिले यांनैं मिहीवांटि नागरवेलका रसमें गोली रती १ प्रमाण बांधैं पाछे गोली १ रोजीना षायतौ सूलको रोग जाय १ इतिसूलगजकेसरी रसः अथवा पारो सोध्यो गंधक अभ्रक तामेस्वर अमलवेद सोध्योसींगीमुहरो येबराबरिले पाछे यां नैंमिहीवांटि आदाकारसमैंरती ३ प्रमाण गोली करै पाछे गोली १ रोजीना जलसूं लेतौ वायकीसूल दूरिहोय १ इति अग्निमुषरसः अथवा वडासंपनै वार २१ गरम करि नींबूका रसमैं बुझावैपाछे वेंको चर्णकरैपाछे आमलीकोषार ईमैं टका १ भरनांषे संचरलूण टंक ५ ईमैंनाषिसींधोलूण टका १ भर ईमै नाषि सांभरोलूण टका १ भर ईमैनाषि अर कचलूण बिडलूण टका १ ... सूंठि

छोटा बोर प्रमाण बांधै गोली १ लवंगका काढासूंलेतो सूलततकाल दूरिहोय १ इति संपवटीरसः अथवा सीसाकी भस्म टंक २ ताता पाणीसूं पीवैतो भोजनकर्यां पाछै सूल चालै सो दूरिहोय १ अथवा सोध्योपारो टंक १ सोधीगंधक टंक १ सोध्योसींगीमोहरो टंक १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका २ काकडासींगी टका २ सेकी हींग टका २ पांचलूण टका ८ आमलीकोषार टका ८ जंभीरीका रसमें बुझाइसंपकी भस्म टका ८ भर प्रथम पारागंधककी कजली करि पाछै ईकजलीमें येसारी ओषदि मिलाय नीबूका रसमें येकजी वकरे पाछै ईकीगोली टंक १ प्रमाण गोलीबांधै पाछै गोली १ जल सूं लेतो सूलनै अजीर्णनै उदरका रोगनैं मंदाग्निनै दूरिकरेछै इति सूलदावानलरसः ये साराजतन सर्वसंग्रहग्रंथमेंछै. अथ पसवाडा की सूलका जतन लिष्यते सींगीमोहरो हरताल हींग राई नौसाद २ मैणसिल लसण वच एलियो यांनें बराबरिले यांनें मिही बांटि गरम पाणीसूं ले गरम सुहावतो लेपकरेतो पसवाडाकी सूलजाय इति सूलरोग ८ प्रकारकी अर परिणामसूल अन्नद्रव जरत्पित्त का जतन संपूर्णम् इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराज राजराजें द्रश्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे वातर क्तसूल परिणामसूल अन्नद्रव जरत्पित्त यांकी उत्पति लक्षण जतन निरूपणंनाम दशमस्तरंगः १०

११ अथ उदावर्त रोगकी उत्पति लक्षण जतनलिष्यते मनुष्यकै तेरा १३ वस्तका धारण कर्यासूं उदावर्तरोग पैदाहोवछै. सो तेरा

[illegible]

वेग १३ लिपूंछूं अधोवायको वेग १ मलको वेग २ मूत्रको वेग ३ जंभाईको वेग ४ अश्रुपातको वेग ५ छींकको वेग ६ डकारको वेग ७ वमनको वेग ८ मैथुनको वेग ९ क्षुधाको वेग १० तृषाको वेग ११ स्वासको वेग १२ निद्राको वेग १३ यां तरावेगानें जोमनुष्यरोके तींके उदावर्तरोग पैदाहोय १ अथ अनुक्रमसूं अधोवायनें आदिलेर १३ वेग लिष्या त्यांकालक्षणलि० अथ अधोवायनें रोकै तींसूं रोगपैदाहोयसोलि० जो अधोवायनें रोकै तींकै मलमूत्रकारोकिवाको रोगहोय आफरोहोय पेडूमें पोतामें इंद्रीमें पीडहोय अरपेटमें वायका औरभीरोग पैदाहोय तीनें अधोवायकारोकिवाको उदावर्तरोग कहिजे १. अथ मलका रोकिवाका उदावर्तको लक्षणलिष्यते पेटमें गुडगुडाट शब्द बोलै पेटमें सूलचालै पेडूमें पीडाहोय मलउतरे नहीं डकारघणीआवे मल मुंढामें निकलीआवे वेजीमें लक्षणहोय तीनें मलका रोकिवाको उदावर्त कहिजे. अथ मूत्रका रोकिवाका उदावर्तको लक्षण लिष्यते पेडूमें इंद्रीमें सूलहोय मूत्रकष्टसूं ऊतरे मथवायहोय आंवबिनाही पेडूमें आफरो होयतौ मूत्रका रोकिवाको उदावर्त जाणिजे ३. अथ जंभाईका रोकिवाका उदावर्तकोलक्षणलि० जींमेंकांधीगलो रुकिजाय माथाको रोगहोय आवै जंभाईघणीआवे वायका और विकार होय नेत्रांमें नासिकामें पीडघणीहोय कानमें पीडघणीहोय येलक्षणहोयतदि जाणिजे जंभाईका रोकिवाको ईंके उदावर्तछे. ४ अथ आंसूंका रोकिवाका उदावर्तको लक्षणलिष्यते आनंदका आंसूनें रोकै अथवा सोचके आंसूनें रोकेतो वेंके माथो भारीहोय अर नेत्रका आजार होय. ५ अथ छींकका रोकिवाकाउदावर्तको लक्षण

ग. टी. पानाबाची मूलछे जीने लोकोकमें गुजरातीरोग कहेछे. परंतु ए [illegible] छे. ते सो मो [illegible] भेदछे. [illegible] होयछे. [illegible] मां [illegible] नामां अटक आवो. ते मे [illegible] मनुष्य जीवितनी [illegible] ते [illegible]

लिख्यते कांधामूंडेनही माथामें सूलचाले आधासीसीहोय सर्वइंद्री दुर्वलहोजाय ६ अथ डकारकारोकिवाका उदावर्तको लक्षण लि० कंठ अर मूंढो भोजनसूं भाव्यो दीपे मोहनिपटवणोदीपे सरीरमें वि थाहोय पवन सरैनहीं और वायका घणा विकार होय ७ अथ छ दिकारोकिवाका उदावर्तको लक्षण लि० सरीरमें पूजालि होय दाफडहोय अरुचिहोय मूंढाउपरि छाया पडिजाय सोजोहोय पां डुरोग होय ज्वरहोय कोढहोय हियोदूपे विसर्परोगहोय ८ अथ शु क्रका रोकिवाका उदावर्तको लक्षण लिख्यते पेडूमें गुदामें पोतामें इंद्रीमें पीडहोय अर सोजोहोय मूत्र रुकिजाय वीर्य आपरतें इंद्री मेंसूं पडिवा लागिजाय पथरीको आजार होय नेत्रका विकारहोय९, अथ भूषकारोकियाका उदावर्तको लक्षण लि० तंद्रा होय हातामें फूटणीहोय अरुचिहोय विनाश्रमही श्रमहोय सरीरक्षीण पडिजाय दृष्टि मंद होजाय १० अथ तिसका रोकिवाकाउदावर्तकोलक्षणलि० कंठ मूंढो सुके थोडोसुणे हियामें पीडहोय ११ अथ स्वासका रोकि वाका उदावर्तको लक्षण लि० दौडतां सासहोय और तीने रोकि जींके ये लक्षण होय हीयो दूपे मोह घणोहोय पेटमें गोलाको रोग होय १२ अथ नींदकारोकियाका उदावर्तको लक्षण लि० जंभाई घणीआवे अंगामें फूटणी होय आंपि भारीहोय माथो भाखो होय तंद्रा होय १३ अथ उदावर्तकी उत्पत्ति लि० कोठामें रहतो जो वाय सो लूपा कपायला कडवा भोजनसूं कुपितहुवायको उदावर्त रोगनें करैछे. अथ उदावर्तको सामान्य लक्षण लि० जहां वायको ऊर्ध्व भ्रम होजाय तीनें उदावर्त कहिजे १ अथ उदावर्तको विशेष लक्षण लिख्यते [illegible] वहवावाली जो नसां सो आवोवायनें

म. टी. उदावर्तरोग [illegible]

अर मलमूत्रनें उंचो लेजाय अर मलनें सूकायदे अर हियामें पेटमें सूल चालै वमन सो रापै अरुचिहोय अर अधोवाय मल मूत्र ये निपट कष्टसूं उतरै सास पास पीनस दाह मोह तिस ज्वर वमन हिचकी माथाको रोग हौलदिल सूणै थोडो अर वायका घणा आजार होय अर तिसकरिकै पीडित अर सरीरक्षीण पडिजाय सूल घणी चालै मलको वमनकरै इसा उदावर्तवालो मरिजाय १ अथ क्रमकरिके उदावर्तका जतन लिष्यते अथ अधोवायका रोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तीनें स्नेहपान कराजै तौ उदावर्त जाय १ अथ मलका रोकिवाका उदावर्तको जतन लि० ईनें जुलाव दीजे अर मलनें दूरिकरवावाली ओपदि दीजे इसाही अन्नदीजे. फलवर्ति दीजे तेलको मर्दन कीजे वस्तिकर्म कराजै २ अथ मूत्रका रोकिवा सूं उपज्योजो उदावर्त तींको जतन लि० जवपार टंक १ वच टंक १ यांनें पाणीमें मिही वांटि पीवैतौ मूत्रका रोकिवाको उदावर्त जाय अथवा कत्याली अर्जुनवृच्छकी जड ईको काढो लै तौ मूत्र का रोकिवाको उदावर्त जाय अथवा तेवरसीकाबीज त्यांनें पाणीमें वांटि जीमें सींधोलूण नापि पीवैतौ मूत्रका रोकिवाको उदावर्त जाय अथवा मिश्री सांठाको रस दूध दापाको सरबत पीवैतौ मूत्रका रोकिवाका उदावर्त जाय अर औरभी वायका रोग जाय ३ अथ जंभाईका रोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तींको जतन लि० स्नेहका पानसूं अथवा मर्दन कियासूं अथवा इहीकासूं पसेव लिवायासूं यो जाय अर औरभी वायका रोग जाय.

अथ आंसूका रोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तींको जतन लि० उंचा प्रकारसूं रुदन करै अर आंसू काढै तौ अथवा सूपमुंघ

न. टी. ओकदाभवाणु ऊर्ध्वगामी होयतो सरीरनें महाभयमें नाखदे. आंसू नाकमांहि नरोपजाय. लोही विगडजाय. अर जीर्ण अनेकरोगांका प्रतिभाग पडे अर देखनो विगड
.. पूर्वो विचार पडे.

आच्छीतरे सोवेतो योजाय अथवा मनोहर कथासुणेतो योजाय ५ अथ छींकका रोकिवासूं उपज्योजो उदावर्त तींको जतन लि० काली मिरचीं राई नकछींकणीनें आदिलेर तींको नासदेतो अथवा सूर्य नें देषि तींकरिछींकलेतो उदावर्तजाय अथवा तेलमर्दन कराय्जे अथवा पसेवलीवावेतो योरोग जाय ६ अथ डकारका रोकिवासूं उपज्योजो उदावर्त तींको जतन लि० तेलका मर्दनसूं प्रस्वेदसूं यो जाय ७ अथ छर्दिका रोकिवासूं उपज्योजो उदावर्त तींको जतन लिष्यते ई नें वमनकराजे लंघनकराजे जुलाबदीजे तेलको मर्दन कराजे वस्तिकर्म कराजे नासिकासूं पाणी पाजे तो योरोग जाय ८ अथ शुक्रकारोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तींको जतन लिष्यते सुंदर षोडश वरषकी स्त्रियासूं भोग कराजे तो यो जाय अथवा तेलाभ्यंगकराजे मदिरापाजे कूकडाको मांस षुवाजे साठी चावल षुवाजे वस्तिकर्म कराजे तो ये रोग जाय ९ अथ भूखका रोकिवासूं उपज्यो जो उ० चीकणा गरम रुचिकारी हलका हितकारी भोजन कराजे सुगंध पुष्पांको धारण कीजे तो योरोग जाय १० अथ तिसकारोकिवासूं उपज्यो जो उ० सीतल क्रिया सर्व हितकारी फवारा चादर दगैरे जलक्रीडा साराईनें हितकारी अर सीतल जलमें भीमसेनी कपूर नाषि तीनें सनें सनें पानकरेतो योरोगजाय ११ अथ श्रमकासास रोकिवासूं उ० येको पद दूरिकराजे विश्राम करि अथवा सीरवाकेसाथि चावल षुवाजे तो यो जाय १२ अथ नींदका रोकिवासूं उपज्यो जो उदावर्त तीं० गरम दूधमें मिश्री नाषि सुहावनी सुहावनी कनिमाषिरपीजे अथवा सूयसूं सोजे अथ

* [illegible]

वा मनोहर कथा सुणाजे तौ यो रोग जाय १३ अथवा लूपीवस्त
का पावासूं उप० तथा सर्व जातका उदावर्त जाय सो जतन लि०
हींग सहत सींधोलूण यांनैं पीसि यांकी वत्ती करि घृतसूं चोपडी गु
दामैं मेलै सुहावै जठातांईतौ थो उदावर्त जाय १ इति हिंग्वादिफल
वर्ति अथवा मैंढल पीपलि कूठ वच सिरस्यूं गुडयांनैं दूधसूं वांटि
यांकि वाती करि गुदामैं सुहावती रापै तौ यो उदावर्त जाय १ इति
मदनफलादि फलवर्ति अथवा पांड टका १ निसोत टका ३ पीपलि
टका ५ यांको चूर्णकरि भोजनके पहलै टंक २ सहतसूं लेतौ मल
गाढो दोहरो उतरतौ होयतौ दूरि होय यो उदावर्त ईसूं जाय १
इति नाराचचूर्ण अथवा सूंठि मिरचि पीपलि पीपलामूल निसोत
दात्युणी चित्रक येसर्व बराबरिले यांनैं मिहीवांटि टंक १ गुडकै सा
थि परभातही जलसूं लेतौ उदावर्तनैं फियानैं गोलानैं सोजानैं पां
डुरोगनैं यो दूरिकरैछै इति गुडाष्टकम् अथवा सूकिमूलि साठिकीज
ड पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि दसमूल किरमालाकीगिरि
यां औषधांनैं घृतमैं पकाजै पाछै ईघृतनैं पायतौ सर्वप्रकारको उदा
वर्त जाय १ इति शुष्कमूलकाद्यं घृतं. ये सर्व जतन भावप्रकासमैं
लिप्याछै. अथवा सोध्याजमालगोटा पारो सोधी गंधक सेक्यो
सुहागो सूंठि मिरचि पीपलि येसर्व बराबरिले प्रथम पारागंधककी
कजली करै पाछै ये औषदि ईकजलीमैं मिलावै पाछै ईनैं रति ४
अथवा मासो १ मिश्रीकेसाथिले तौ उदावर्तनैं आफरानैं उदरका
रोगानैं गोलानैं यो दूरिकरैछै. १ इति अजेपालरसः यो वैद्यरहस्य
मैंछै. अथवा निसोत थोहरिकापान तिलनैं आदिलेर औरभी गरम
वस्त तांका सेवनसूं उदावर्त जाय अथवा निसोत दात्युणी तत्रथा

न. टी. [illegible] तो उदावर्त रोग [illegible] तो [illegible] तो [illegible] दीजौ आराम होयछै.

द्दरी सांपाहूली किरमालो कपेलो कणगजकीजड चोप येसवे बराव रिले यांनें जोकुटकरी टंक २ रोजीना दिन ७ काढो दे. काढामें तेल टंक २ घृत टंक २ नापि लेतो उदावर्तजाय अर उदरका सर्वरोग जाय आफरो जाय तिसरोग जाय गोलो जाय यो काढो इतनारो गानें दूरिकरेंछे १३ इति उदावर्तरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसं॰

अथ आनाहरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते उदरमें आंवका बधिवासूं अथवा मलका बधिवासूं अथवा अधोवायका रुकिवासूं अथवा सरीरमें दुष्ट पवनका बधिवासूं मनुष्यके उदरमें अनाहनाम आफराको रोग पैदा होयछे. अथ आंवका आफराको लक्षण लि॰ जीं आफराकारोगमें तिस घणीहोय पीनसहोय सिरका विकार साराहोय पेटमें सूलहोय सरीर भार्‍यो रहै हीयोदुपे डकार आवे नहीं येलक्षण जीमें होय तीनें आंवको आफरो कहिजे १ अथ मलकाबधवाको आफराको लक्षण लि॰ सरीर जकडबंद होय अर कटीमें पीठमें मलमें सूलहोय मूर्छाहोय मलमें छर्दिकरे सास होय अर विसूचिकाहो अर पाछे लक्षण कह्याछे सोभीहोय तदि मलका बधिवाका आफराको लक्षण जाणिजे. अथ आफराका जतन लिष्यते. जो उदावर्तका जतन पाछे लिष्याछे सोही आफराका जाणिलीज्यो. ओरक्यूं विशेष लिषूंछूं निसोत भाग २ पीपलि भाग ४ बडीहरडेकी छालिका भाग ५ यांनें मिही बांटि यांतान्यांकी बराबरि गुड मिलाय गोली टंक १ प्रमाण करे पाछे गोली १ रोजीना जलके साथि दिन १५ लेतो आफराको आजार दूरिहोय १ अथवा सूंठि काल्यांमिरचि पीपलि सीचालूण सिरस्यूं धमासो पुठ मेंडल येसारी बराबरिले यांनें मिहीबांटि गुडमें मिलाय पकावे

ध. टी. [illegible] लिषी. [illegible]
[illegible]
[illegible].

पाछे वेंकी वातीकरे अंगुठा सिरीसी ल्डाडी पाछे वेंके घृतलगाके वा
वाती गुदामें मेले तो आफराको रोग अर उदावर्तकोरोग उदरकोरो
ग अर पेडूको रोग गोलो येसारा दूरिहोय ये साराजतन भावप्रका
समें लिष्याछे. इति अनाहनाम आफराका रोगकी उत्पत्ति लक्षण
जतन संपूर्णम्. अथ गुल्मरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते
वायपित्त कफहै सो मिथ्या अहार अर मिथ्या विहारका कुपथ्य प्र
णासूं दुष्ट हुवाथका पुरुषांके अथवा स्त्रियांके हियामें लेर पेडुमां
हिगोलाके आकार एक गांठिनें करेछे. सो ओगोलो पांचप्रकारको
छै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ अ
थ कोष्टके विषे जोस्थानमें गुल्महोय सोस्थान लि० दोन्यांपसवा
डामें २ हियामें ३ नाभिमें ४ पेडूमें ५ अथ गुल्मको सामान्यलक्ष
णलि० हिया अर पेडूके वीचि गांठी होय अर फिरे अथवा नहिं
फिरे गोलहोय अर वधतोहोय तीनें गुल्म कहिजे अर ईगुल्मरो
गमें अरुचिहोय अर मलमूत्र दोहरो ऊतरे वाय वधे आंत बोले
आफरो होय पवनकी ऊर्ध्वगति होय येजीमे लक्षण होय तीनें गु
ल्मको आजार कहिजे. अथवा गोलाकी उत्पत्तिको लक्षण लि०
लूपा अन्नका पावासूं विषमासनका वेठियासूं मलमूत्रका रोकिवासूं
सोचका करिवासूं चोटका लागिवासूं मलका क्षीणपणासूं लंघनका
करिवासूं विरुद्ध चेष्टासूं वलवानसूं युद्धका करिवासूं यांवस्तांसूं वा
यको गोलो पेदाहोयछे अथ वायकागुल्मको लक्षणलि० जो गोला
का स्थानमें पीडाको घटत वधत पणो होय अधोवायकी प्रवर्ति आ
छीतरे होयनहीं मलऊतरेनहीं मूंढासूके गलोसूके सरीरकी कांति
कालीहोय सीतज्वरहोय हियामें कूषिमें पसवाडामें यांसाराँमें पीड

न. टी. आनाहनाम आफराको रोगछै परंतु मुख्य कारण [illegible] सो [illegible] रयो. मलसकोरहै. अर मूत्र [illegible] अर [illegible] [illegible] होयछै.

होय हियामें भोजनपच्यांपाछे पीडा घणीहोय भोजन कर्याहल्क कीहोय अरलूपा कषायला कडवारसांसूं पीडावधे येलक्षण जीमें होय तीनें वायकोगोलो कहिजे १

अथपित्तका गोलाकी उत्पत्तिलि० कडवो पाटो तीपो उन्हूं याँ सांका सेवासूं क्रोधका करिवासूं अति मद्यका पीवासूं तावडाका बै ठिवासूं अग्निका सेवासूं आंवका वधिवासूं चोटका लागिवासूं रु धिरका विगडवासूं यांवस्तांसूं पित्तको कोप होयछे. अथपित्तका गोलाको लक्षणलिप्यते ज्वरहोय तिसहोय. सरीरमें पीडाहोय सू लहोय भोजन पचतां घणो पसेव आवे दाहहोय व्रणहोय गोला के हाथ लगतां पीड घणीहोय येलक्षण होयतो पित्तको गोलो जा णिजे २ अथ कफका गोलाकी उत्पत्ति लि० ठंडीवस्तका पावासूं भा रीवस्तका पावासूं चीकणीवस्तका पावासूं वैठारहवासूं दिनका सो वासूं इतनीवस्तांसूं कफकोगोलो पैदाहोयछे अर येसर्व कारण मिले तदि संनिपातको गोलो पैदाहोयछे. अथ कफका गोलाको लक्षण लि० जीमें सीतज्वरहोय सरीरमें पीडाहोय मूंढासूं कडवो पाटो वमनहोय पासी होय भोजनमें अरुचिहोय सरीर भाग्योहोय ये लक्षण जीमें होय तीनें कफको गोलो कहिजे ३ येसर्व वायपित्त कफका जीमें होय तीनें सन्निपातकोगोलो कहिजे ४ अथ स्त्रीयनें रूप जो रुधिर तीनूं उपज्यो जो गुल्म तीको लक्षण लि० यो लोही गुल्म स्त्रीके होयछे नवमा महिना पहली स्त्रीको कानोगर्भपडे कुप थ्य भोजनसूं प्रथम गर्भका रितुसमें अथवा रितुविना नी स्त्रीके या

[illegible]

वायका गोलाका जतनसों कफका गोलाका जाणि लीज्यो २ अथ
वा यांका जतन लिख्यते सेकीहिंग पीपलामूल धणों जीरो वच च
व्य चित्रक पाठ कचूर अमलवेद संचरलूण सांभरोलूण सींधो
लूण जवखार साजी अनारदाणा हरडेकीछालि पोहकरमूल डांस
ल्यां झाडरूपकीजड येसर्व बराबरिले यांनें मिहीवांटि यांके आदा
का रसको पुट ७ दे अर बिजोराका रसकोपुट ७दे पाछे टंक२ ईनें
रोजीना लेतो गोलानें आफरानें बवासीरनें संग्रहणीनें उदावर्तनें
उदरका रोगनें उरुस्तंभनें उन्मादनें सूलकारोगनें यां सारांरोगांनें
यो दूरिकरेछे. इति हिंग्वादिचूर्ण. अथवा साजी मासा ४ गुडमा
सा ४ यांनें मिलाय रोजीना पायतो गोलो जाय १ अथवा पला
सकोखार थोहरकोखार आंधीझाडाकोखार आमलीकोखार आकको
खार तिलांको खार जवखार साजी यांनेंमिहिवांटि टंक १ अथवा
टंक २ गरम पाणीसूं लेतो गोलानें सूलका रोगनें यो दूरिकरेछे.
१ इति साराष्टकम् अथवा सांभरोलूण सींधोलूण कचलूण जवखार
संचरलूण सुहागो साजी ये बराबरिले यांनें मिही वांटि यांनें थोह
रका दूधमें दिन ६ भिजोय राखे पाछे तावडै सुकावे पाछे यांनें
आकका पानामें लपेटी माटिका वासणमें मेल्ही गजपुटमें पकाय
ले पाछे ईमें सूंटि कालीमिरचि पीपली त्रिफला अजवायण जीरो
चित्रक यांनें यांखारांकी बराबरिले पाछे यांनें मिहीवांटि यांखारांमें
मिलावे पाछे ईनें टंक २ गरम पाणीसूं अथवा गोमूत्रसूं लेतो गो
लानें सूलनें अजीर्णनें सोजानें सर्व उदरका रोगांनें मंदाग्निनें उदाव
र्तनें तिल्लीनें यांरोगांनें योदूरिकरेछे इति वज्रखारचूर्णम् अथवा न
यारका पाठाकीजड़ तीनें सूंठि कालीमिरचि पीपली सींचोलूण यां

१ [illegible]

यहै सो लोहीसूं ग्रहणकरि गोलानैं पैदाकरैछै वेगोलामैं पीड घणी चालै वेमैं दाहहोय अर पित्तका गोलाका सर्व लक्षण मिलै जीमैं अर ओसर्व जागां फिरै अंगाविनाही तीमैं सूल चालै वे स्त्रीका पेटका गोलामैं गर्भका सर्व लक्षण मिलै वेनै रुधिरसूं उपज्यो गोलाको रोग जाणिजै पणि वेस्त्रीके दशवो महिनो व्यतीत होय चूकै तदि गोलाका वैद्यहै सो जतन करै ५ अथ गुल्मरोगको असाध्यलक्षण लिष्यते जीं मनुष्यके गोलो फिरै तौ अथवा नहींफिरै तो अर पीड घणी चालै सरीरमैं दाह घणो होय पथरीकीसी गांठी ऊंची होय वा गांठी मननैं बिगाडी नाषै सरीरनैं दुर्बल करिदे अग्निका बलको नासकरिदे तींगोलाका रोगनैं त्रिदोषको जाणिजै यो असाध्यछै. ६ अथ गोलाका और असाध्य लक्षण लिष्यते गोलो क्रमसूंवधै जीमैंसूलचालै काछिवाकीसीनाईं गाढोहोय सरीर दुर्बल होय भोजनमैं रुचि जातीरहै कडवो षाटो वमनकरै ज्वरहोय तिस होय तंद्राहोय पीनस होय अर अतिसारहोय हियाके नाभिके पगांके सोजोहोय तिस घणी लागै. ये रोगांवाला मनुष्यकै असाध्य लक्षण जाणिजे ७ अथ गोलाका जतन लिष्यते गरम दूधमैं अरंडोल्यांको तेल अर हरडैको चूर्ण नाषि रोजीना पीवैतौ जुलाब लागि करि गोलो दूरि होय १ अर तेलका मर्दनसूं भी गोलोजाय अथवा साजी कूठ जवषार केवडाको षार यांको चूर्णकरि ईमैं अरंडकोतेल मिलाय पीवैतो वायको गोलो जाय १

अथ पित्तका गोलाको जतन लि० निसोतका चूर्णको सेवन कराजै अथवा त्रिफलाको सेवन कराजै अथवा कपेलानैं मिश्रीकै साथि अथवा सहतके साथि दीजै तो पित्तको गोलो जाय २ अर

न. टी. स्त्रियांका पेटमैं कोईक कारणासूं अथवा मिथ्या अहार मिथ्या विहारसूं कुपथ्यका करिवासूं स्त्रीधर्मको जो रजछै तींको गुल्म पैदाहोयछै अर जीमैं गर्भका सा लक्षण सर्वहोय.

वायका गोलाका जतनसों कफका गोलाका जाणि लीज्यो ३ अथ वा यांका जतन लिष्यते सेकीहिंग पीपलामूल धणों जीरो वच च व्य चित्रक पाठ कचूर अमलवेद संचरलूण सांभरोलूण सींधो लूण जवपार साजी अनारदाणा हरडेकीछालि पोहकरमूल डांस र्‍यां झाउरूपकीजड येसर्व बराबरिले यांनें मिहीवांटि यांके आदा का रसकी पुट ७ दे अर बिजोराका रसकीपुट ७दे पाछे टंक२ ईनें रोजीना लेतां गोलानें आफरानें बवासीरनें संग्रहणीनें उदावर्तनें उदरका रोगनें ऊरुस्तंभनें उन्मादनें सूलकारोगनें यां सारारोगांनें यो दूरिकरेछे. इति हिंग्वादिचूर्ण. अथवा साजी मासा ४ गुडमा सा ४ यांनें मिलाय रोजीना पायतो गोलो जाय १ अथवा पला सकोपार थोहरकोपार आंधीझाडाकोषार आमलीकोपार आकको पार तिलांको पार जवखार साजी यांनेंमिहिवांटि टंक १ अथवा टंक २ गरम पाणीसूं लेतां गोलानें सूलका रोगनें यो दूरिकरेछे. १ इति साराष्टकम् अथवा सांभरोलूण सींधोलूण कचलूण जवपार संचरलूण सुहागो साजी ये बराबरिले यांनें मिही वांटि यांनें थोह रका दूधमें दिन ८ भिजोय रापे पाछे तावडे सुकावे पाछे यांनें आकका पानामें लपेटी माटिका बासणमें मेली गजपुटमें पकाय ले पाछे ईमें सूंठि कालीमिरचि पीपली त्रिफला अजवायण जीरो चित्रक यांनें यांपारांकी बराबरिले पाछे यांनें मिहीवांटि यांपारांमें मिलावे पाछे ईनें टंक २ गरम पाणीसूं अथवा गोमूत्रसूं लेतां गो लानें सूलनें अजीर्णनें सोजानें सर्व उदरका रोगांनें मंदाग्निनें उदाव र्तनें पित्तनें यांरोगांनें योदूरिकरेछे इति वज्रक्षारचूर्णम् अथवा न वारका पाठाकीजिड तांमें सूंठि कालीमिरचि पीपली सौंचलूण यां

[illegible]

नैं मिहिवांटि टंक २ वेंकै लगाय घृतकैसाथि रोजीना पायतौ गोलो फियो दूरिहोय १ अथवा गवारका पाठाकिगिरी मण १ जीमैं गुड टका २०० भर नाषि सहत टका १०० भर नाषै धावड्याका फूल सेर २ नाषै सूंठि टका २ मिरचि टका २ पीपलि टका २ तज टका २ पत्रज टका २ चव्य टका २ इलायची टका कचूर टका २ चित्रक टका २ नागकेसरि टका २ झाउरूपकीजड टका २ अजमोद टका २ जीरो टका २ देवदारु टका २ बोंलकी वकल टका २ आसगंध टका २ रास्ना टका २ वधायरो टका २ इंद्रजव टका २ यांनैं मिहीवांटि गवारका पाठाका रसमैं नाषै पाछै यांको येकजीवकरि चीकणावासणमैं घालि दिन २१ पृथ्वीमैं गाडीराषै पाछै ईनैं काढि टका २ भर पीवैतौ गोलानैं उदावर्तनैं उदरका विकारनैं विसूचिकानैं गृध्रसीनैं षासनैं सासनैं पांडुरोगनैं सर्व वायका विकारनैं यो दूरिकरैछै. इति गुवारका पाठाको आसव ये सर्व जतन भावप्रकासमैंछै. १ अथवा सोरो टंक १ आदो टंक १ यांनैं रोजीना पायतौ गोलो जाय १ अथवा सींपकीभस्म टंक १ गुड मासा ६ रोजीना षायतौ गोलो जाय १ इति सींपप्रयोग० अथवा लसण टंक २ दूधमैं पचावै पाछै यांकी षीर करै पाछै ईयान षीरनैं रोजीनाकर षायतौ गोलो जाय १ अथवा अरंडकी जड चित्रक सूंठि पीपलामूल वायविडंग सींधोलूण सेकीहींग यांको काढो देतौ गोलो जाय १ आफरो सूलजाय १ अथवा अजवायणी मासा १६ जीरो टंक ५ धणो टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ कुडाकी छालि टंक ५ अजमोद टंक ५ कालोजीरो टंक ५ सेकीहींग टंक ५ जवषार टंक ८ साजी टंक ८ पांचूलूण टंक ८ निसोत टंक ८ दांत्युणी टंक १० कचूर

न. टी. अष्ट क्षारलिष्याछै सोषार जुदाजुदा प्रथम काडकर तयार करणा. सोषार काडाकी क्रिया तरंग २४ पृष्ठ ५१० जपषारकी क्रियाछै. ऑमुजब सर्वजातका षार नीगरैछै. जीनैं रापणी.

टंक १० पोहकरमूल टंक १० वायविडंग टंक १० आनारदाणा टंक १० हरडेकीछालि टंक १० चित्रक टंक १० अमलवेद टंक १० सूंठि टंक १० यांसारानें मिहीवांटि विजोराकारसकी पुट १० दे पाछे टंक १ प्रमाणकी गोली करे गोली १ घृतकेसाथि रोजीना पायतो अथवा दूधकेसाथिलेतो पित्तका गोलानें दूरिकरे मद्यकेसाथिलेतो वायका गोलानें दूरिकरे दसमूलका काढाकेसाथिलेतो त्रिदोषकागोलानें दूरिकरे अर हियाकारोगानें संग्रहणीनें सूलनें क्रिमिनें बवासीरनें या गोली दूरिकरेछे इति कंकायनगुटिका अथवा लवणभास्कर चूर्ण पाछे लिप्याछे तींकालेवासूं गोलाको रोगजाय १ अथवा तिलांको काढोलेतो गोलोजाय १ अथवा भाडंगीगुड घृत पीपलि तिल सूंठि मिरचि यांको काढोलेतो गोलाकोरोगजाय १ अथवा पीपलि भाडंगी पीपलामूल देवदारु कणगजकीजड तिलांको काढोदेतो गोलाको रोगजाय १ इति कणादिकाथः अथवा मैणसिल हरिताल रूपमपी आंवलासार गंधक तामेसुर पारो ये बराबरिले प्रथम पारा, गंधककी कजलीकरे पाछे कजलीमें ये औषदि मिलाय पाछे पीपलिका काढाका रसमें परल करे दिन १ पाछे थोहरीका दूधमें दिन १ परल करे पाछे टंक १ सहतमें ले अथवा गोमूत्रमें लेतो गोलो अर सूलको रोगजाय १ इति विद्याधररसः अथवा पारो सोधोगंधक सोध्यो सुहागो त्रिफला सूंठि कालीमिरचि पीपलि सोधोहरताल सोध्यो सींगीमुहरो तामेसुर सोध्यो जमालगोटो येसर्व बराबरिले प्रथम पारागंधककी कजलीकरे पाछे कजलीमें ये औषधि यांनि मिलावे पाछे ईके भांगरका रसकी पुट ३ दे दिन ३ ताई परलकरे

[illegible]

पाछे ईकी गोली रती १ प्रमाणकी बांधे पाछे गोली १ आदाका रसमैं लेतौ गोलानै दूरिकरैछे. १ इति गुल्मकुठाररसः ये सारा जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछे. अथवा हाथकी सिर छुडावैतौ गोलाका सर्वरोग जाय १ अथवा सेकीहींग अनारदाणा विडलूण सींधोलूण ये बराबरिले यांनैं विजोराका रसमैं षरल करै पाछे टंक २ पीवाकी दारूके साथि रोजीना लेतौ वायको गोलो जाय १ अथवा साजी कूठ जवषार केवडाकोपार ये बराबरिले यांनैं मिहीवांटि टंक २ तेलकैसाथि पीवैतौ वायको गोलो जाय १ अथ योनीमैं सूल चालतीहोय तींको जतन लिष्यते त्रिफला निसोत दात्युणी दसमूल ये सर्व जुदा जुदा टका टका भरले पाछे यांनैं जौ कूटकरि ईको काढो टंक ६ को रोजीना करि छाणिले पाछे ईकाढामैं अरंडको तेल नाषि पाछे ईमैं घृत मिलाय दूधसूं पीवैतौ योनीकी सूल दूरिहोय.

इति मिश्रकस्नेहः यो जोगतरंगिणीमैं लिष्योछे. अथवा अजवायणनैं मिहीवांटि टंक ५ लूण टंक १ गुड टंक ५ ईनैं मिलाय छाछिके साथि रोजीना लेतौ गोलोजाय भूषलागै मलमूत्र आछी तरैं ऊतरै यो वृंदमैं लिष्योछे. अथवा अजवायणकी सेकीहींग सींधोलूण जवषार संचरलूण हरडेकीछालि ये बराबरिले यांनैं मिहींवांटि टंक २ पीवाका दारूके साथि रोजीना लेतौ गोलो सूल दूरिहोय१ अथवा सेकीहींग भाग १ सींधोलूण भाग २ पीपलि भाग ३ पीपलामूल ४ कंकोल मिरचि भाग ५ अजवायण भाग ६ हरडेकी छालि भाग ७ अनारदाणा भाग ८ आंबकी जडकी वकल ९भाग चित्रक भाग १० सूंठि भाग ११ फिटकडी भाग १२ यां सारानैं मिहींवांटि टंक २ रोजीना पाणीसूं लेतौ गोलानैं अरुचिनैं हृद्रोगनैं

न. टी. जो ओषधी कांकायन ऋषीकामतकांकांकायनकृतशास्त्रमैंलिषीहुई अठै लिषीछै. ईनैंकांकायननामसौंलिष्यानछे. जैसेकांकायनघृत, क्षार, वटी, चूर्ण, इत्यादि.

आफरानैं ववासीरनैं वायका सर्व विकारानैं योचूर्ण दूरिकरैछै १ अथ हिंग्वाद्यार्द्रकंचूर्णम. अथवा वच हरडैकीछालि सेकीहींग सीं धोलूण अमलवेद जवषार अजवायण यांनैं वरावरिले यांनैं मिहीं वांटि टंक २ गरमपाणीसूं लेतो सूलनैं गोलानैं दूरिकरैछै. १ इति वचाद्यं चूर्णम अथवा वडीहरडे २५ जलसेर १६ में पकावै जलमें पचतां ये ओषदिनांपे दांतूणी टका १६ भरनांपे चित्रक टका १६ भरनांपे पाछै ईकै मधुरीआंचदे अर जलको चोथांहिसोरापे पाछै पाणीमें हरडे समेत गुडटका १६ भरनांपे पाछै ओरू ओटावै अ धोरापे पाछै ईमें पीपलि टका १ सूंठि टका १ घृत टका ४ सहत टका ४ तज टका १ पत्रज टका १ नागकेसरि टका १ इलायची टका १ यांसाराको एकजीव करि अवलेहकरै पाछै टका १ भर रोजी ना पावतो जुलाब लागे अर इतनारोग जाय गोलो संग्रहणीनैं पां डुरोग सोजो विषमज्वर कोढ ववासीर अरुचि फियो हृद्रोग ये सा रा रोग जाय इति दंतिहरीतकी अथ संपद्रावसूंभी गोलो जाय अथ वा वडीजंभीरी पक्की २०० तींको रस लीजै घृतका चिकणा वासणमें वैमें ये नाषिजे सेकीहींग टका २ सींधोलूण टका १ सूंठि टका १ का लीमिरचि टका १ संचरलूण टका४ अजवायण टका १ सिर स्यूं टका ९, यांसारी ओषधांनैं मिहीवांटि जंभीरीका रसमैं नाषि दिन २१ रोडीमैंगाडिरापैपाछै टका १ भर रोजांनापावतो गोलानैं फियानैं विद्रधीनैं अष्टीलानैं वायकाफका अतिसारनैं परवाडा की सूलनैं हियाकारोगनैं नाभिकासूलनैं पेटकूडनैं अहरनैं उदरका

अ. टी. [illegible]

अ. टी. [illegible]

रोगनैं वाय कफकारोगानैं दूरिकरैछै. इति जंभीरीद्राव. ये जतन भावप्रकाशमैं लिष्याछै. अथवा नदीकोषार कुडाकोषार आककोषार सहिजणाकोषार कव्यालीकोषार थोहरीकोषार चीलकोषार छीलाकोषार बकायणकोषार आंधीझाडाकोषार कदंबकोषार अर डूसाको षार सांभरोलूण. ये सर्व बराबरिले यांमैं यांका अनुमान माफिक सेकीहींग नाषि पाछै इनैं टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ गोलानैंसूलनैं उदरकारोगनैं योदूरिकरैछै. इति नादेईक्षारः योजोगसतकमैंछै. अथवासोफ कणगचकीजड तज दारुहलद पीपलि याको काढोदे अर तिलगुड सूंठि मिरचि सेकीहींग भाडंगी येसारी औषदि काडामैं नाषि औटाय देतौ लोहीको गोलो स्त्रीधर्मपणो जातौरह्योहोय जीनैंदूरिकरै. १ अथवा जवषार सूंठि कालीमिरचि पीपलि यांनै औटाय पीवैतौ लोहीको गोलो जाय १ अथवा पारो भाग १ वंगकी भस्म १ सोधीगंधक भाग ४ तामेसर भाग ४ यांसारांनैं आककादूधमैंदिन २ षरलकरै पाछैईको गोलोकरि सरावामैं मेल्है पाछैइनैं गजपुटमैं पकावै पाछै इनैं ठंडाहुवाकाढै पाछै रती २ घृतकैसाथिईनैं लेतौ गोलानैं फियानैं उदरकारोगनैं दूरिकरै इति वंगेश्वररसः मछलीकोमांस सूकीतरकारी दालमीठाफल येगोलावालेपायनहीं येसर्वसंग्रहमें लिष्याछै. इति गुल्मरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथ यकृत प्लीहारोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनलि० यकृत प्लीह ये दोन्यूंसरीरका अंगछै. जीवणा पसवाडामैंतो यकृत रहैछै. हीयाकै नीचै १ अरबांवापसवाडामैं हीयाकैनीचेप्लीहरहैछै. इनैं लोकीकमैं

* क्षारकल्पोंमें सो औषधी हुशमें क्षारदीजेगी. वृक्षकी तथा वनस्पतीकी. होय. जाकी औषधी. तथा लकडी, छीलका, पंचांग, तथा जो उपयोगी होय. सोही लेकर नलायकर सर्व राखकरणी. पाछे जलमें राखनें मिलायकर उपरांचार [illegible] पाणी होय [illegible] रावकढाईमें घाल चूल्हे चढावो. जलमात्रजलकर क्षाररहेछै. इसीनें क्षारसंज्ञा जानना होयछे.

फियो कहेछे सोलोहांनें वहवावालीनसां त्यांको मुष्य ठिकाणोछे. अथ प्लीहरोगकी उत्पत्ति लक्षण लि॰ मनुष्यहेसो गरम वस्तपाय अथवा दहांनें आदिलेर कफकारीवस्त घणीपाय तीके येदोन्यूंक फ अरलोहीवधे तदिफियानें वधावें. तदिओफियो वध्योतको मंद ज्वरनें अरअग्निका मंदपणानेंकरें अर कफपित्तका जीके लक्षण होय सरीरको वलजातोरहे. सरीरपीलो होजाय तीनें फियोकहेछे. ओ फियो चारप्रकारकोछे. वायकोफियो १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ अथ वायका फियाको लक्षणलिष्यते पेटके नित्य आफरोरहे. नित्य उदावर्तरोगरहे. पेटमें पीडरहवो करें तो वायको फियो जाणिजे १ अथ पित्तका फियाको लक्षणलिष्यते. ज्वररहे तिसलागे. दाहहोय मोहहोय सरीरपीलोहोय ये पित्तका फियाका लक्षणछे. २ अथ कफकाफियाका लक्षणलिष्यते पीडमंदहोय फियो भारयो अरगाढो होय सरीर भारयोहोय भोजनमें अरुचिहोय. ये कफका फियाका लक्षणछे. अथ लोहीका फियाको लक्षणलिष्यते सर्व इंद्री सिथिल होजाय भ्रमहोय मोहहोय दाहहोय सरीरको रंग औरहोय सरीर भारयोहोय उदरलाल होय येलक्षण होयतो लोहीको फियो जाणिजे अर त्रिदोषको फियो होयतो असाध्यजा णिजे. अरयेहीलक्षण यकृत्रोगका जाणिजे. ८५ अथ फियाका जतन लि॰ जवषार उंटडीका दूधसूं लेतों फियो जाय १ अथवा सीपाकोभस्म दहींसूं पावनों फियोजाय २ अथवा पीपली टं॰ १ दूधकेसाथि रोजीनालेतों फियोजाय ३ अथवा आकका पानांकी रापजोमें लूणमिलाय महाकेसाथि पीवेतो फीयोजाय ४ अथवा सेकीहींग सूंठि कालीमिरचि पीपलि कूठ जवषार गीलोक्तक येथा

म. सी. [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

वरिले यांनैंमिही पीसि बिजोराका रससूं लेतौ रोजीना टंक २ तौ फियोजाय ५ अथवा छीलाकाक्षारमैं भेइपीपलानैं टंक २ रोजीना पायतौ फियो गोलेजाय ६ अथवा संपकी भस्समासा ४ जंभिरीकारसकी लारपायतौ फियोजाय ७ अथवा बावांहाथकीसीर छुडावैतौ फियोजाय ८ अथवा जीवणाहाथकीसीरछुडावैतौ यकृतजाय ९ अथवा पक्काआंबकारसमैं सहतनाषिपीवैतौ फियोजाय १० अथवा अजवायण चित्रक जवखार पीपलामूल दांत्युणी पीपलि येबराबरीले यांनैंमिही वांटि टंक २ मठाकैसाथि अथवा दारूकैसाथी रोजीना पीवैतौ फियोजाय ११ येसर्व भावप्रकासमैं लिप्याछै अथवा सींधोलूण टंक ५ जलमैं ओटाय रोजीना पीवैतौ फीयोजाय १२ येवैद्यरहस्यमैंछै. अथवा जवपार वायविडंग पीपलि कणगचकीजड अमलवेद येबराबरीले यांसूं दूणी हरडेकीछालिले यांनैं मिहिवांटि गुडकैसाथी पाणीसूंलेतौ फियोजाय १३ अथवा पीपलि सूंठि दांत्युणी येबराबरिले यांसूं दूणी हरडैकीछालिले यांनैं मिहीवांटि गुडकैसाथि लेतौ फियोजाय १४ अथवा वायविडंग इंद्रायणीकोजड. चित्रक येबराबरिले यांसूंदूणो देवदारुले सूंठि तिगुणीले साटींकीजड वायविडंग येबरारिले निसोत चौगुणींले यांनै मिहीवांटि टंक १ गरम पाणीकेसाथि लेतौ फियोजाय १५ अथवा सहजणाकीजड सींधोलूण चित्रक पीपलि यांकोकाढो करि पीवैतौ फियोजाय १६ अथवा भिलावा हरडैकीछालि जीरो ये बराबरिले यांनैंमिहिवांटि यांमैं बराबरिको गुडमिलाय टंक ५ रोजीना दिन ७ पायतौ फियोजाय १७ अथवा लसण पीपलामूल हरडेकी छालि ये बराबरिले यांनैंमिहिवांटि टंक २ गोमूतसूं लेतौ फियोजाय १८

न. टी. जीमूं ईरोगपर पथ्य लि० हलकी अन्न, थोडोभोजन, कडवी ओपधी, पानमैंथी, चंदलेई, तुराई इ० कुपथ्यलि० मेंती, छाछ, दहीं,काचरी, मैर, उरद मारीअन्न, रूपकारीचीज, तेल, गुड, मिरचीलाल, दहा, पालोल, गराफली, काकडी इत्यादि.

ये चक्रदत्तमें लिष्याछे अथवा रोहीसकी जड हरडेकीछालि सूंठि ये
वर.वांरले यांनें मिहीवांटि टंक २ गोमूत्रके साथि लेतो उदरका रोग
प्रमेह ववासीर कफकारोग फियो कोढ येजाय १९ यो जोगतरंगि
णीमें लिष्याछे अथवा सांभरोलूण हल्द राई ये तीन्यूं टका येकेकभ
रिले छाछि टका १०० भरले चीकणा वासणमें घालि दिन १५ रापे
पाछे रोजीना दिन २१ तांई टका २ भर पीवेतो फियांजाय २०

इति तक्रसंधानं यो भावप्रकासमेंछे अथवा रोहिस टका१००भ
र इंनें कुटिले बोरकी जड सेर ४ पाणी सेर१६ इंमें यांदान्यांनें ओटा
वे पाछे इंपाणीको चोथोहिसो आयरहे तदि येनें उतारि छाणिले पा
छे इंपाणीमें सेर १ गऊको घृत नाषे अर इंमें वकरीको दूध सेर ४ ना
षे सूंठि टंक २॥ साठीकी जड टंक २॥ तुंबरु टंक २॥ वायविडंग टंक
२॥ जवषार टंक २॥ पोहकरमूल टंक २॥ झाउरूपकी जड टंक
२॥ वच टंक २॥ यांसारांनें मिहीवांटि घृतमें मधुरी आंचसूं पका
वे ये ओषदि अर दूध वलिजाय घृतमात्र आयरहे तदि येनें छाणि
अमृतवाणमें घालिरापे पाछे इंनें टंक २६३ भर पथ्यकेसाथि इंघृत
नें पायतो इतनारोगानें दूरिकरे कियानें प्लीहोदरनें कुषिका सूलनें
पसवाडाका सूलनें अरुचिनें वंधकुष्टनें पांडुरोगनें छर्दिनें अति
सारनें विषमज्वरनें यो दूरिकरेछे २१ इति महारोहीतकंघृतम्. यो
चक्रदत्तमें लिष्योछे अथवा चित्रक टका १०० भर ले तांको काढो
करे इंमें कांजीको पाणी टका २०० दहींको मट्ठो टंक ४०० भर
पीपलामूल टका २ चव्य टका १ चित्रक टका १ सूंठि टका १ ता
लीसपत्र टका १ जवषार टका १ सींधोलूण टका १ दोन्यूं जीरा
टका १ दोन्यूं हल्द टका १ कालीमिरचि टका १ ये मिहीवांटि नि

म. टी. [illegible]

त्रकका काढामैं नाषे ईमैं सेर १ घृत नाषै तदि पाणी उगैरे सर्व ब लिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईनैं उतारि छाणि चोषा अमृतबाण मैं घालि राषे पाछे ईको सेवन करैतो फियानैं गोलानैं उदररोगनैं आफरानै पांडुरोगनैं अरुचिनैं विषमज्वरनैं पेडूका सूलनैं सोजानैं मंदाग्निनैं यांसारांरोगांनैं यो दूरिकरैछै. बलनैं वधावैछै. २२ इति चित्रकाद्यंघृतम्. यो वृंदमैं लिष्योछै. अर फियाका जो जतनछै सो ही यकृत् रोगका जाणिलीज्यो अथवा जवषार वायविडंग पीपलि कणगजकी जड यांका काढासूं यकृत् फियो येदोन्यूंजाय २३ इति फियायकृत्रोगकी उत्पत्तिलक्षणजतन संपूर्णम्. अथ हृद्रोगकी उत्प त्तिलक्षण जतन लिष्यते घणीगरम वस्तकापावासूं घणी भारीवस्त का षावासूं घणी षटाईका षावासूं घणी कषायली वस्तका षावासूं घणी तीषी वस्तकापावासूं घणांश्रमका करिवासूं घणी चोटका ला गिवासूं घणागाढा पिटवासूं घणीचिंताकाकरिवासूं घणां मलमूत्र कारोकिवासुं यांवस्तांसूं हियाको रोगहोयछै सो योरोगपांचप्रका रकोछै वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ कृमिको ५ अथ हृद्रोगको सामान्य लक्षणलिष्यते अन्नको पायो रसहैसो प्रथम हियामैं जाय तदिवेरसनैं वायपित्तकफ है सो विगाडि हिया नैं घणोपीडित करै तीनैं वैद्यहै सो हृद्रोग कहैछै अथ वायका हृद्रो गको लक्षण लिष्यते हियामैं पीड फैलिजाय अर हियामैं सुइका साचभका चालिजाय हियामैं झरणोसो फिरै हियामैं करोत कीसी नाईंफिरै हियामैं पथ्थर कीसी चोटलागै हियामैं कुहाडाकीसी चोट लागै येलक्षण होयतो वायको हृद्रोग जाणिजे १ अथ पित्तका हृ

* फीयोरोगछै जीनैंसंस्कृतमैं प्लीहरोगकहैछै. योरोग निर्बल आदमीकी तापका आजारमैं होय जीनैं बधैछै. घणाबैद्य ईको औषधीको उपायकरैछै. परंतु जवषार बकरीको मूत्र अनु मान माफिक रोजसायनमूं पायतो योरोग जायछै. अर मंत्रकाभाडासूंभी जायछै. मट्ठा नाम माल्माको रोगहोयछै.

द्रोगको लक्षण लि० तिसघणीलागे दाहहोय हीयोदूपे कंठमाहीसूं धूवोनीसरे मूर्छाआवे जींको सरीरसीतल होजाय पसेव आवे मूं ढोसूकिजाय येलक्षणजींमें होय तीनें पित्तको हृद्रोगजाणिजे २ अथकफका हृद्रोगको लक्षणलि०हियोभाऱ्यो होय मुषमेंसूं कफघणो नीसरे भोजनसूं रुचि जातीरहे सरीर जकडबंध होजाय मूंढोमीठो होय मंदाग्निहोय हियामें कफजमिजाय येलक्षण होय तदिजाणिजे कफको हृद्रोगछे ३ येसर्व लक्षण मिले तदि जाणिजे सन्निपातको हृद्रोगछे ४ अथ कृमिका हृद्रोगको लक्षण लि० आंतांमें कृमिहोय पाछे कुपथ्यको करवावालो मनुष्य तिल दूधगूडनें आदिलेर मीठी वस्तषाय तदिवेकाममर्मस्थानांमे पीडहोय हियोदूपे हियो सीडी जाय तदिवेंको आतमाघणो दुषपावे येजींमें लक्षण होय तींमेंकृ मिको हृद्रोगजाणिजे ५ येमें उत्क्लेदन होय थूंके घणोहियामें सू लचाले भोजनमें अरुचिहोय नेत्र कालाहोजाय सरीरसूषिजाय ये कृमिहृद्रोगका लक्षणजाणिजे अथ हृद्रोगका उपद्रवलिष्यते सर्व इं द्रियांकोग्यानजातोरहे सरीरमें पीडाहोय भोलीआवे सरीरसूषि जाय १ अथ हृद्रोगका जतनलिष्यते वहेडाका वृक्षकी वकलको चूर्णटंक २ रोजीना दूधकेसाथि अथवा घृतकेसाथि अथवा गुडका पाणीकेसाथि पीवेतो हृद्रोगनें जीर्णज्वरनें रक्तपित्तनें दूरिकरेछे अ थवाहरडेकीछालि वच रास्ना पीपलि सूंठि कचूर पोहकरमूल येसर्व बराबरिले यानें मिश्री नांदि टंक २ जलसूं लेतो हृद्रोग दूरिहोय २ अथवा हिरणकासींगको पुटपाककरि औरगऊका घृतकेसाथि पीवतो हृद्रोगनें सूलरोगनें दूरिकरेछे ३ इति हिरणका सींगको पुटपाक. अथवा पंद्री गंगेरणीकीछालि कटयालीकी वकल महुवो

अ. टी. [illegible]

टी येऔषदि वराबरिले यांनें मिहिवांटि टंक २ यांको काढोरोजीना लेतौ हृद्रोगनें वातरक्तनें रक्तपित्तनें दूरिकरैछे येसर्व भावप्रकासमें लिष्याछे अथवा कूठ वायविडंग यांनें मिहिवांटि टंक २ गोमूत्रकेसाथिलेतौ हियाकी कृमिजायपडै हृद्रोगदूरिहोय ५ अथवा गंगेरणीकीजड अरकहवाकीवकल पोहकरमूल यांनें मिहिवांटि टंक २ दूधकैसाथि अथवा सहतकेसाथि रोजीनालेतौ हृद्रोगनें सास पासनें छर्दिनै हिचकीनें दूरिकरै ६ अथवा हरडैकीछालि वच रास्ना पीपलि सूंठि कचूर पोहकरमूल यांको चूर्ण लेतौ हृद्रोगजाय ७ इति हरीतक्यादिचूर्णम्. अथवा दशमूलका काढामें अरंडको तेल अर सांभरोलूण नाषि पीवैतो हृद्रोग जाय ८ अथवा पोहकरमूल सूंठि कचूर हरडेकीछालि जवषार ये वराबरिले यांको काढो करि ईमें घृत नाषि पीवैतो वायका हृद्रोग जाय ९ येसर्व वैद्यरहस्यमेंछै. अथवा सेकिहींग वच वायविडंग सूंठि पीपलि हरडैकीछालि चित्रक जवषार संचरलूण पोहकरमूल येसर्व वराबरिले यांनें मिहीवांटि टंक २ गरम जलकैसाथि लेतौ हृद्रोग जाय १० यो जोगरत्नावलीमेंछे. अथवा पोहकरमूलनें मिहीवांटि टंक २ सहतकैसाथिले तौ हृद्रोगनें षासनें सासनें राजरोगनें हिचकीनें यो दूरिकरैछे. ११ अथवा सेकीहींग सूंठि चित्रक कूठ जवषार हरडैकी छालि वच वायविडंग संचरलूण पारो पोहकरमूल ये वराबरिले यांनेमिहीवांटि टंक १ जलकैसाथि लेतौ हृद्रोगनें अजीर्णनें विसूचिकानें दूरिकरैछे. १२ यो रसप्रदीपमेंछे. इति हृद्रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्ण. इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेन्द्र श्रीसवाई प्रताप सिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे उदावर्त अनाहगुल्मयकृत

न. टी. दसमूलकोकाढो लिष्योछे. जीमें सालपर्णी १ पृष्ठपर्णी २ बडीकटाली ३ छोटीकटाली ४ गोषरू ५ येपांच अर बिल्व. ६ अरणी ७ स्योनाक. ८ कालमरी ९ पाडल १० ये [illegible] पांचछै, मोहनमूलरी, पांचलघु. ५ बृहद. मिल १० छै.

प्लीह हृद्रोग यासवे रोगांका भेदसंयुक्त उत्पति लक्षण जतन निरू पणंनाम एकादशस्तरंगः संपूर्णम् ११.

१२ अथमूत्रकृच्छ्ररोगकी उत्पति लक्षण जतनलिप्यते पेदका करिवासं तीपीवस्तका पावासूंलूपाअन्नका पावासूं मद्यकापीवासूं नाचिवासूं दुष्ट घोडाका बेठिवासूं नदीकाजीनावरांका मांसका पावासूं काचाअन्नका पावासूं भोजनऊपरि भोजनकर्‌यांसुं अजीर्णसूं यां कारणांसूं मनुष्यके मूत्रकृच्छ्र पेदा होयछे सो आठप्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ चोटका लागीवाको ५ मलकारोकिवाको ६ शुक्रकारोकिवाको ७ पथरीको ८ अथमूत्रकृच्छ्र रोगको सामान्य लक्षणलिप्यते. कोपकूंप्रातिहुवो जो वायपित्तकफ आप आपका कारणांसूं पेडूमें प्रातिहोय मूत्रका मारगनें घणी पीडाकरे अर बडाकष्टसूं चीसचालि नीठीमूते मूत्रको वंधतो कमहोय अर मूततां पीड घणीहोय तीनें मूत्रकृच्छ्र कहिजे. अथ वायको मूत्रकृच्छ्रको लक्षण लिप्यते जांघांकी अर पेडूकी संधिमें अर पेडूमें अर इंद्रीमें पीडघणीहोय अर थोडोथोडो वारंवार मूते येलक्षण जीमें होय तीनें वायको मूत्रकृच्छ्रकहिजे. १ अथ पित्तका मूत्रकृच्छ्रको लक्षणलिप्यते पीलोलालमूतउतरे अर घणो गरम मूत्र उतरे अर बडाकष्टसूं चीसदेर मूतउतरे तीनें पित्तकोमूत्रकृच्छ्रकहिजे २ अथकफका मूत्रकृच्छ्रको लक्षणलिप्यते पेडूअर लिंग यदोन्यूं भारयोहोय अर यांदोन्यांके सोजो होजाय अर मूत्रमें झागआवें अर मूत्रकष्टसूं उतरे येलक्षण होय तीनें कफको मूत्रकृच्छ्र कहिजे ३ अर येसवे लक्षण जीमें होय तीनें सन्निपातको मूत्रकृच्छ्रकहिजे ४ अथ चोटलागिवाका मूत्रकृच्छ्रको लक्षण लिप्यते मूत्रनें वहवावा

[illegible]

ली जोनसां त्यांके कहींतरेकी चोटलागे तदि वेको मूत्र रुकिजाय अर वायका मूत्रकृच्छ्रका सर्वलक्षण मिले सोई मूत्रकृच्छ्रसूं मनुष्य मरिजाय ५ अथ मलका रोकिवाका मूत्रकृच्छ्रको लक्षण लि० जोपुरस मलकी वाधानें रोके तीके वायु कुपितहोय अर पेडूमें अर पेटमें आफरो करै अर वेंजायगां पीड घणी चाले अर मूत्र घणांकष्टसूं ऊतरे येलक्षण जीमें होय तीनें मलका रोकिवाको मूत्रकृच्छ्र कहिजे ६ अथ शुक्रका रोकिवाका मूत्रकृच्छ्रको लक्षण लि० शुक्रका रोकिवा सूं मूत्रको मारग रुकिजाय तदि पुरसके पेडूमें इंद्रीमें सूल चाले वी येनेंलीयां बडाकष्टमूं मूते ईनें शुक्रका रोकिवाको मूत्रकृच्छ्र कहिजे ७ अथ पथरीसूं उपज्योजो मूत्रकृच्छ्र तीको लक्षण लि० पथरी अर शर्करा नामरेत ये दोन्यूं पोतामें रहैछे. ये दोन्यासूं मूत्रकृच्छ्र होयछे अर वा पथरी है सो पित्तकरिके पचीथकी वाय करि सूकीथकी अर कफसूं नहींमिलि वाहीं पथरी रेतरूप होय मूत्रका मार्ग होय कर नीकले मूत्रनें रोककर ८ अथ शर्कराका उपद्रव लिष्यते हीयामें पीडाहोय सरीर कांपे सूलचाले कुषिमें मंदाग्नि होयजाय वेसेती मूर्छाहोय अर मूत्रकृच्छ्रहोय ये लक्षण होय तदि मनुष्य मरिजाय.

अथ मूत्रकृच्छ्ररोगका जतन लि० गोपरू किरमालाकीगिरी डाभकीजड कांसकी जड जवासो आंवला पाषाणभेद हरडेकीछा लि ये वरावरिले यांनें जोकुटकरि टंक २ को काढो करि काढामें सहत मिलाय रोजीनालेतो मूत्रकृच्छ्र अर पथरीको असाध्यभी रोग जाय १ इति गोक्षुरादिकाथः अथवाइलायची पाषाणभेद शिला

* मूत्रकृच्छ्ररोगवद्[illegible]अनेककारणांसूंहोयछे, परंतु पथरीकारोगको मूत्रकृच्छ्र [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जांत पीपलि गोपरू तवरसीकाबीज सींधोलूण केसरि येसारा औष
दि बराबरिले यांनें मिहीवांटि टंक २ चावलांका पाणीकेसाथिलेतो
मूत्रकृच्छ्रजाय २ अथवा आंवलाकोरस पुराणागुडकापाणीकेसा
थि रोजीना लेतो मूत्रकृच्छ्रजाय ३ अथवा दूधमें पुराणो गुड नाषि
अथवा मिश्रीनाषि गरम सो धापर रोजीना पांवेतो मूत्रकृच्छ्रजाय ४
अथवा चोटकालागिवासूं उपज्योजो मूत्रकृच्छ्र तीको जतन लिष्यते
आंवलाकारसमें सहत नाषि पांवे अथवा साठीकारसमें सहत नाषि
पांवेतो मूत्रकृच्छ्रजाय ५ अथ मलकारोकियाका मूत्रकृच्छ्रको जतन
लि० गोपरूको काढोकरि तीमें जवषार नाषि पांवेतो यो मूत्रकृच्छ्र
जाय ६ अथवा त्रिफला टंक ५ बोरको जडको बकल टंक ५ यां दो
न्यांनें रात्रिमें भेय परभाति वे पाणीहीमें वांटि वेमें सींधोलूण नाषि
पांवेतो मूत्रकृच्छ्रजाय ७ अथवा जवषार मासा ५ मिश्री मासा ५
याने वांटि जलसूंलेतो मूत्रकृच्छ्र निश्चै जाय ८ अथवा मिनकादा
ष टंक ५ मिश्री टंक १० दहींकामठो टंक १० ये तीन्यूं मिलाय पां
वेतो मूत्रकृच्छ्रजाय ९ अथवा गोपरूकी जडसमेत ईको काढो करि
तीमें सहत मिश्री नाषि पांवेतो मूत्रकृच्छ्रजाय १० येसर्वजतन भा
वप्रकासमें लिष्याछे. अथवा गिलवे सूंठि आंवला आसगंध गोप
रू ये बराबरिले यांनें जौकुटकरि टंक २ रोजीना ईको काढो पांवेतोमू
त्रकृच्छ्रजाय ११ अथवा पाका नींबूकारसमें गऊकोकच्चोदूध नाषिन
नें आवे जीतो रोजीना पांवेतो स्त्रीकी जांनिकादोषनें उपज्योजो
रोगतीनें अरदाहनें प्रमेहनें मूत्रकृच्छ्रनें येदूरिकरेछे १२ अथ
वा हरडैकीछालि गोपरू किरमालाकी गिरि पाषाणभेद धमासो
अरडूसो येसर्व बराबरिले यांनें जौकुट करि टंक ५ कोकाढोकरि

[illegible]

तीमें सहत नापि रोजीना पीवैतो दाहसंयुक्त मूत्रकृच्छ्रनें अंधकुष्ठनें यो दूरिकरैछे १३ इति हरितक्यादिक्काथः अथ लोहीकष्टसूं मूततो होय तींको जतन लि० डाभकीजड कांसकी जड दोवकीजड सरकनाकीजड सांठाकीजड यांको काढो देतो लोही मूततो आछयो होय १४ इति तृणपंचकम्. अथवा पक्का पेठाका रसमें मिश्री मिलाय पीवैतो मूत्रकृच्छ्रजाय १५ इति कूष्मांडरसः अथवाकव्यालीका रसमें सहत नापि पीवैतो मूत्रकृच्छ्रजाय १६ अथवा गोपरू टका २ भरईमें आठगुणो पाणी नापि तींको आधोपाणीराषे पाछे ईनें छाणि ईपाणीमें गूगल टका ७ भरनाषे पाछे ईनें औरु पकावे पाछे ईमें सूंठि टका १ कालीमिरचि टका १ पीपलि टका १ हरडैकीछालिटका १ वहेडाकी छालि टका १ आंवला टका १ नागरमोथो टका१ ये मिहीवांटि गुगलमें नाषे पाछे यांको येकजीवकरि मासा ५ रोजीना जलसूं लेतो मूत्रकृच्छ्रनें मूत्राघातनें प्रमेहनें प्रदरनें वातरक्तनें शुक्रका दोषनें यांरोगांनें दूरिकरैछे. इति गोपुरादि गूगलम्. अथवा जीरो टका १ गुड टका १ रोजीनापायतो मूत्रकृच्छ्र जाय १८ अथवा जवपार टंक २ गऊकी छांछिसूं पीवैतो मूत्रकृच्छ्रका पथरीका दोन्यूंरोगजाय १९ इति जवपार तक्र जोगः अथवा पारो भाग १ सोधीगंधक भाग ४ यां दोन्यांकी कजली करे पाछे याकजलीव डा कौडामें भरे पाछे सुहागो पाणीमें वांटिकौडाके मूंढे लगावे पाछे वाकोडानें कुलडीमें मेली गजपुटमें फूंकिदे पाछे स्वांगसीतलहुवांवे कुल्हडी माहिसूं वेकौडानें काढिमिहीवांटिले पाछे रती ४ भरले अरईमें मिरचि २१मिहीवांटि मिलाय घृतकेसाथि पायतोमूत्रकृच्छ्र जाय २० इति लघुलोकेसुररसः येसर्व जतन वैद्यरहस्यमें लिप्या

न. टी. अक फेनकगोपरूलिन्याछे. जेठेतोगोपरूकाफलमायलेनाचाहिजे. यारेपणांमदाष, आजेठे पुस्ओपधिको उरचारछे येठेतो दोपणी गोपरूलेणो. अर दूजी गोपरूछे, जीनें ... छे. जीके दोयछाकांटाहोयछे, सोतो ईकोपरूजीमेंलिणो, गैनदीपिछेमदछे.

छे. अथवा निरूहवस्तिका करिवासूं उत्तर वस्तिका करिवासूं मूत्र कृच्छ्रजाय २१ अथवा सतावरी कांसकी जड डाभकी जड गोपरू विदारीकंद सालरकीजड किसोरया यांको काढोकरि तीमें सहत मिश्री नापि पीवेतो मूत्रकृच्छ्रजाय २२ यो चक्रदत्तमेंछे. अथवा तेवरसीकावीज महुवो दारुहलद यांको काढोकरि पीवेतो पित्तको मूत्रकृच्छ्रजाय २३ अथवा केलीका रसनें गोमूत्रमें नापि पीवेतो कफको मूत्रकृच्छ्र जाय २४ अथवा इलायची मिहीवांटि जलसूं लेतो कफका मूत्रकृच्छ्रजाय २५ अथवा मूंगांकोचूर्ण टंक १ चांवलांका पाणीसूं लेतो कफको मूत्रकृच्छ्रजाय २६ अथवा गोपरू सूंठि यांको काढो करिलेतो कफको मूत्रकृच्छ्र जाय २७ यो वृंदमेंछे. अथवा वडीकट्याली पाठ महलोठी महुवो इंद्रजव यांको काढो लेतो सन्निपातको मूत्रकृच्छ्र जाय २८ अथ शुक्रका रोकिवाका मूत्रकृच्छ्र शिलाजीत सहतमें मिलाय पायतो शुक्रकारोकिवाको मूत्रकृच्छ्रजाय २९ योचक्रदत्तमेंछे. अथवा उत्तमस्त्रीसूं संगकरेतो योमूत्रकृच्छ्रजाय ३० अथवा परेटीकी जडको काढो लेतो संपूर्ण मूत्रकृच्छ्रजाय ३१ अथवा गोपरूको पंचांग टका १०० भर ले तीनें कूटि आठगुणांपाणीमें ओटावे तीको चतुर्थांशरहे तदियनें छाणिले पाछे वेमें मिश्री टका ५० भरकी चासणीकरे अवलेहकी सायमें ये औषदि नाषे सूंठि टका २ पीपलि टका २ इलायची टका २ जवपार टका २ केसरी टका २ कहूयाकूंपकी वकल टका २ तेवरसीकावीज टका २ वंशलोचन टका ८ भर यांसारी औषधांनें मिहीवांटि ईमें नाषे पाछे टका १ भर रोजीना पायतो मूत्रकृच्छ्रनें दाहनें वंधकुष्टनें पथरीनें लोहीका मूतवानें मधुप्रमेहनें यो दूरिकरछे ३२ इति गोक्षुरावलेह.

म. टी. इणकी मूत्रकृच्छ्रआदिकने [illegible] लिखीछे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ये सर्व जतन सर्वसंग्रहमेंछे. इति मूत्रकृच्छ्रकी उत्पत्ति लक्षण ज
तन संपूर्णम् अथमूत्राघातरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिप्यते
मनुष्य ईकारिकै आसंका करैछे मूत्रकृच्छ अरमूत्राघातमें भेद
कांईसोलिपुंछुं मूत्रकृच्छमें मूततां कष्टतोघणो अरमूतको बंधथो
डो अर मूत्राघातमें मूत्रको बंधतोघणो अरमूततां पीडथोडी येभे
दछै. अथ मूत्राघातकी उत्पति लक्षण लिप्यते कुपथ्य करिकै को
पकूं प्राप्ति हुवो जो वाय पित्त कफ त्यांकरिकै मूत्राघात होयछै. सो
मूत्राघात तेरा प्रकारकोछे १३ वातकुंडलिका १ अष्ठीला २ वात
वस्ति ३ मूत्रातीत ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्संग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रं
थि ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णवात १० मूत्रसाद ११ विडविघात १२ व
स्तिकुंडलि १३ अथ वातकुंडलिकाको लक्षणलिप्यते लूपोवस्तका
पावासूं अरमूत्रकृच्छका धारिवासूं वायहैसो पेडूमें जाय पीडाकरै
मूत्रकी नसांमेंजाय विचरतो थको कुपीत होजाय तदि कफहै
सो मूत्रका छिद्रनें रोकै तदि वायहैसो इंद्रीका मुषमें कुंडलकै आ
कार होय उठैरहै तदि पुरुष हैसो थोडो थोडो मूतै अर मूततां पी
डघणीहोय येलक्षणजींमें होय तीनें वातकुंडलीका रोगकहिजे.
सो असाध्यछै. ईरोगवालो पुरस मरिजाय १ अथ अष्ठीलाको ल
क्षणलि० पेडूमें आफरोहोय गुदाको पवन चलैनहीं गुदामें पवन
कीगांठि भाठासिरीसीहोजाय उठैपीडघणीहोय अर ओपवन म
लमूत्रनें रोकिदे येजींमें लक्षण होयतीनें अष्ठीलारोगकहिजे २
अथवातवस्तिको लक्षणलि० सोपुरुष मूत्रकावेगनैंरोकै तीकै
[illegible] मनडनाग्वादे

[illegible]
सामेका विहानडे, सो इरोगवाले नती [illegible] पुलाकारडे. सो नानसी [illegible]
होय. [illegible] इंद्रीद्वारा मूत्रका स्थानमें प्रवेश [illegible] अनेक [illegible]
सर्पडे. [illegible] पेटको फुलाणो होयडे. [illegible] आराम होय.

नहीं पेडूमें अरकूपिमें पीडाकरे वेनें वातवास्तिरोग कहिजे योरोग कष्टकारीछे. ३ अथमूत्रातीत रोगको लक्षण लि० मूतनें घणी वार रोके अर वेगदेर मूत्रकरे नहीं तदि पुरसके मूत मंदउतरे इनें मूत्रातीतरोगकहिजे ४ अथ मूत्र जठररोगको लक्षणलि० जोपुरस मूत्रका वेगनें रोके तींको गुदाको अपान पवनहेसो उदरनें पवनसूं भरि नाभिकेनीचे आफरो करे घणोपीडकरे तीनें मूत्रजठर रोगकहिजे ५ अथ मूत्रोत्संगको लक्षण लिष्यते पेडूकेमांहि अथवा लिंगके नसामें आयो जोमूततीनें करेनहीं तदि वेपुरषके मूत्रद्वारा थोडोथोडो लोही मूते पीडानें लीयां अथवा नहीपीडानें लीयां इनें मूत्रोत्संग रोग कहिजे ६ अथ मूत्रक्षयको लक्षणलिष्यते जो पुरसके पेदकारिके सरीर लूषो पडिजाय तींका पेडूमें रहतोजोवाय पित्त कफसो मूत्रका नासनें करेछे. पीडाअर दाहसंयुक्त तीनें मूत्रक्षयरोग कहिजे ७ अथ मूत्रग्रंथिरोगको लक्षणलिष्यते पेडूके माहिगोल अरस्थिर अरछोटी आंवला प्रमाणनीपटगाढीवाय गांठि अकस्मातउपजिआवे तीनें मूत्रग्रंथि रोग कहिजे. ८ अथ मूत्र शुक्र रोगको लक्षण लि० मूत्रको वेग लागिरह्योहोय अर मैथुन करिवानें स्त्रीकनें जाय तदिवेके वायहेसो शुक्रनें स्थानसूं भ्रष्टकरे मूत्रके पहली अथवा मूत्रके पाछे नापे आरणाछाणाकी रापका पाणी सिरीसो तीनें मूत्रशुक्र रोग कहिजे ९ अथ उष्णवात रोगको लक्षण लि० स्त्रीसंगसेती पेदसेती तावडाका पडियासेती पुरसके पेडूमें रहतो जो वाय पित्तसो पेडूनें इंद्रिनें गुदानें दग्ध करतायका हलद सरीषो मूते अथवा लोही लीयां बडा कष्टसूं मूते तीनें उष्णवातरोग कहिजे १० अथ मूत्रसादरोगको लक्षण लिष्यते पुरसके

[illegible]

कुपथ्य कीरकै पेडूमें रहतो जो पवन सो पित्तनें अर कफनें बिगाडे तदि वेंकै मूत्रनिपट कष्टसूं ऊतरै पीलो अथवा लाल अर सुपेद ऊतरै निपट जाडो ऊतरै अर गरम ऊतरै गोरोचन सिरीसो संप सिरीपो कै लोहीसिरीसो कै चूनासिरीसो थोडो ऊतरै सरीरको वर्ण सुकिजाय इनें मूत्रसादर रोगकहिजे ११ अथ विडघातरोगको लक्षण लिष्यते घणो लूषो अन्न पातो जो पुरुष सो दुर्बलो हुवोथको मलनें लियां थकां मूतै वेंकामूतमें मलकीसीदुर्गंधि आवे अर घणा कष्टसूं मूतै तांनें विडघात रोग कहिजे१२ अथ बस्तिकुंडलिरोगको लक्षण लिष्यते घणां उतावला दौडिवासूं लंघनका करिवासूं घणा षेदसूं पेडूमें कहींतरैकी चोटलागिवासूं पेडूमें गोल गांठि पडिजाय तदि वठें पीडहोय अोगांठि वडीवढीथकी हालेनहीं गर्भ कीसीनाई रहे उठे सूलचाले फुरकै उठै दाह घणो होय वेगांठीनें हाथसूं पीडै तदि मूलकी बूंद ऊतरै अर घणी पींडै तदि मूतकी धार ऊतरै अर पीड निपट घणी चालै शस्त्रकीसी चोट लागिसिरीसी इनें वस्तिकुंडलिरोग कहिजे यो रोग असाध्यछै. ईरोगवालो मरिजाय १३ अथ मूत्राघातरोगको जतन लिष्यते नरसलकी जड डाभकी जड कांसकी जड साठीकी जड परेटीकी जड यांको काढो करि ठंडोकरी तीमें सहत नाषि पीवेतो मूत्राघात रोग जाय १ अथवा कपूरनें जलसूं मिहीवांटि अर मिही वस्त्रकै वेंको लेपकरि वेंकी वातीकरे पाछे वेवातीनें इंद्रीमें मलेतो मूत्रघातको रोग जाय २ अथवा घणो गोपरू यादोन्याको काढो करि ईकाकाढाका रसमें घृतपकाय योघृतपायतो मूत्राघात मूत्रकृछ्र अर शुक्रको दोष ये तीन्यूंजाय ३ इतिगोन्यगोक्षूरको घृत अराजितनाजतन मुत्रकृछ्र अर पथरीका रोगका

न. टी. विडघातरोगनें विटघात कहेछे. यो रोग घणा दिनांका मूत्रघात वा, मूत्रकृछ्र जो रोग त्यांकाविना वपशारका होवासूं मिथ्या आहार विहारसौं मूत्रगका करिवासौं [illegible] [illegible] मूत्र गह आवछे. जदां पत्र[illegible]को एकमार्ग होवछे.

छे सो जितनाही मूत्राघातका जाणिलिज्यो ४ येभावप्रकासमें लि
ष्याछे. अथवा तंवरसीकाबीज टंक ५, धणों टंक ५ यानें रातनेंभेय
पाछे वेही पाणीमें परभांतिवांटिछाणि सींधोलूण टंक १ नापी पी
वैतो मूत्रघातजाय ५ अथवा पाटलवृक्षकोषार टंक २ संचरलूण
टंक १ ये दोन्यूं सुराके साथि पविंतो मूत्राघात जाय ६ अथवा
पीवाकी दारूमें पाटी दाडयूंको रसनापि अर वेमें इलायचीनापि
पविंतो मूत्रघातरोग जाय ७ यो वृंदमेंलिष्याछे अथवा सिलाजी
तको सेवन करेंतो मूत्राघात जाय ८ अथवा कोंछका बीज टंक ५
पीपलि टंक १ तालमषाणा टंक १ मिश्री टंक १० मिनकादाष
टंक १० यानें मिहींवांटि गरम दूधमें सहत घृतसूं पविंतो शुक्रका
रोकिवाको मूत्राघातजाय ९ अर इह प्रयोग वंध्याके पुत्र उपजावा
वालोछे. येसर्वसंग्रहमें लिष्याछे. अथवा चित्रक ऽ॥ गोरीसर टंक
५ परटीकी जड टंक १० दाषआध पाव ऽ इंद्रायणकी जड टंक
५ पीपलि टंक ५ त्रिफला टंक १० महुवो टंक १० वडा आंवला
टंक १०० पाणी सेर १६ में यांको काढो करे पाछे यांको चतु
र्थांश आय रहै तदि ईनें उतारि छाणिले पाछे ईकाढामें घृतसेर ४
नापि पकावे तदि ओपदि अर पाणी वलिजाय घृतमात्र आयरहै
तदि ईनें छाणिले पाछे ईमें वंसलोचन अधपाव ऽ नापे पाछे गि
लोना अधपाव ऽ पायतो सर्व प्रकारका वीर्यका दोषनें पोहन दूरि
करेछे अर स्त्रीके गर्भनें करेछे अर मूत्राघातनें प्रदररोगनें जोंति
कादोसनें मूत्रकृच्छ्रनें यां सर्वरोगानें दूरिकरेछे. १० इति चित्रका
द्यं घृतम्. यो चरकमें लिष्योछे. अथवा त्रिफलाको काढोकरि तामें
गुड दूध नापि पविंतो मूत्राघातको रोगजाय ११ अथवा पाटल वृ

[illegible]

रलू नींबकी छालि हलद गोपरू पलासकी वकल ये वरावरिले यांको काढो करि तीमें गुड नाषि पीवैतो मूत्राघातरोग जाय १२ अथवा सुंदर अर चतुरस्त्रीसूं मैथुन करै तो मूत्राघात जाय १३ ये सर्व आत्रेयमें लिष्याछै. इति मूत्राघात रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन सं०

अथ मूत्ररोधको जतन लिष्यते योजतन मूत्रकृच्छ्र मूत्राघातकोछै सोही ईका जाणिलीज्यो. क्यूंविसेषछै सो लिषूंछूं. काकडाकावीज त्रिफला सींधोलूण यांनैं वरावरिले पाछै यांनैं टंक मिहीवांटि आणि गरमपाणीसूं पीवैतो मूत्ररोधजाय १ अथवा तिलांनैं काकडानैं दग्धकरि तींकोपार काढि औपार टंक २ दहींसहतकेसाथिलेतो मूत्ररोध रोगजाय २ अथ मूत्रनिपट गरमऊतरै तींको जतन लिष्यते चंवेलीकीजडनैं वकरीकादूधसूं वांटिपीवैतो योरोग जाय ३ अथवा कमलकी जडनैं गोमूत्रसूं वांटि वेमें तिलमिलाय पीवैतो मूत्ररोधजाय ४ इति मूत्ररोधका जतन संपूर्णम् येआत्रेयमें लिष्याछै. अथ अस्मरीरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते अस्मरीनैं लौकीकमें पथरी कहेछै. सो पथरीकोरोग च्यारि प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ वीर्यका रोकिवाको ४ यांचात्यांमें कफमिल्योछै ये जमरूपछै अथ पथरीकी उत्पत्ति कहेछै. पेडूमें रहतोजोपवन सो पेडूकावीर्यनैं पेडूका मूत्रनैं पेडूका पित्तनैं पेडूका कफनैं सुकाय करिकै पथरीनैं क्रमसेती उपजाय देछै. अठै दृष्टांतदीजेछै जैसे गऊका पित्तमें गोरोचन वधिजाय तैसंपुरसकै पथरी पैदाहोय अथ पथरीको पूर्वरूप लिष्यते पथरीको रोग संनिपातसूं पैदाहोयछै. पथरी वालाका मूतमें मस्तवकराकीसीगंध आवै

* तिलनाला नरा कागडा नरा दोऊ औषधी सममागलेकर लोहकी कढाईमें नयाँ [illegible] जननपूं घनी निर्जिब करे नहीं सुमाकर टंदी होन जदी कढाईमें बासीकाभिवर सुमानेंन में भिजोवे घना पानीमें मसलकर ऊपर सोरायो नितरयाणीने कढाईमें औटावे जबमाव हुरजाय कढाईकै नीचे खरडीकर नाषीदे सो खारलेणो.

पेडूमें आफरो होय पेडूमें पीड घणीहोय अर मूत वडाकएसूं ऊतरे ज्वरहोय भोजनमें अरुचिहोय ये पथरीका पूर्वरूपका लक्षणछे. अथ पथरीरोगको सामान्यलक्षण लि० नाभिमें मूत्रकी नसामें पेडूमें माथामें यांमें पीडघणीहोय मूत्रकीधार बंधी येक पडेनहीं मूत्रकोमार्ग रुकिजाय अर वापथरी मूतका मार्गनें छोडिदे तदि ईपुरसके सुष उपजे मूत आछीतरे पीलो ऊतरे अर वाकोपकूं प्राप्तिहोय तदि यो हानिलीयां वडी पीडानें लीयां मूतें. अथ जीमे वायघणीहोय ई सीपथरीको लक्षण लिष्यते. जींमें मूततां पीड घणी होय दांतानें चावे मूततां कांपणी लागिजाय मूततां इंद्रीमें पीडहोय नाभिमें पीडहोय मूततां पुकार उठे मूततां मल कारिदे मूनकी बुंदबुंद ऊतरे पथरीको रंग कालो होय अर पथरी कांटासा होय येलक्षणहोय जीनें वायकी पथरीको रोग कहिजे. १ अथ पीत्तकी पथरीको लक्षणलिष्यते. पेडू अग्निसिरीसो जलेनाणिजे राधिसरीसो पकिगयोछे अथ पथरीविदामका छयोडासिरीसी होय अर पीली होय लालहोय सुपेदाईनेंलीयां येलक्षण होय तीनें पित्तकी पथरी कहिजे २ अथ कफकी पथरीको लक्षण लिष्यते पेडूमें पीडघणी होय पेडू सितलहोय अर भारयो होय अर वेकीपथरी चीकणी मिलगिली होय अर सुपेदहोय अर कुकडाका अंडाकी वरावरिहोय येजीमें लक्षण होयतीनें कफकीपथरी कहिजे ३ अथ शुक्रका रोकिवासूं उपजीजोपथरी तीको लक्षण लिष्यते. जो वडो पुरुष तीके मैथुन करिवाकी इच्छा होय अर वो शुक्रकेरोक रहीतरे जावादे नहीं तीके शुक्रकी पथरी पेदाहोय इंद्रीअर पोतांकेनीचिस्थानमेंपेनें सुकाय पथरीकारिदेपाछे वापथरी पेडूमें पीडऽयलावे मुन महापरहीं

स. टी. [illegible]

उतरिवादे पोतासूजिजाय वेंको शुक्रजातोही रहै अर ओ इंद्रीनैं पी डाकरै तदि इंद्रीद्वारा शुक्रनीसरै अथवा ओइंद्रीनैं पीडित करै तदि वायहै सो वे पथरीका निपट छोटारेत सरीसा टूकडा करिदे तदि ईनैं शर्करा कहैछै ४ अथ पथरीका उपद्रव लि० सरीर दुबलो होजाय सरीरमैं पीडाहोय कूषिमैं सूलहोय अरुचिहोय सरीर पीलो होय मूत्राघातहोय अर नाभि पोता सूजिजाय मूत रुकिजाय ये ईका उपद्रवछै. अथ पथरीरोगका जतन लिप्यते. सूंठि अरण्यू पाषाणभेद कूठ गोपरू अरंडकी छालि किरमालाकी गिरी ये बराबरिले यांनैं जौकूटकरी टंक ५ को काढो करै तीमैं सेकीहींग जवपार सींधोलूण ये नाषि पथरीवालोमनुष्य ईकाढानैं पीवैतो वेंको पथरीको रोग मूत्रकृच्छ्र ये दोन्यूं दूरिहोय अर ये कोठाकी वायनैं ववासीरनैं उपदंसनैं यो दूरिकरैछै. अर यो दीपन पाचनछै. १ इति सूंठ्यादिकाथः अथवा इलायची पीपलि महवो पाषाणभेद पित्तपापडो गोपरू अरडूसो अरंडकीजड ये बराबरिले यांनैं जौकूट करी यांको काढो करै ईकाढामैं शीलाजीत नाषि पीवै तो पथरीनैं मूत्रकृच्छ्रनै यो दूरिकरैछै.

इति एलादिकाथः २ अथवा पेठाकारसमैं सेकीहींग जवपार नाषि पीवैतो पेडूकी पीडनैं पथरीका रोगनैं यो दूरिकरैछै ३ अथवा वरण्याकी छालि पाषाणभेद सूंठि गोपरू यांको काढो करि जवपार नाषि पीवैतो पथरीनैं दूरिकरैछै ४ अथवा गोपरूको चूर्णकरी टंक ५ तीमैं सहत मिलाय भेडका दूधसूं पीवैतो पथरीको रोग जाय ५ अथवा वरण्याकी जडको काढोकर तीमैं गुड नाषि पीवैतो पथरीका रोगनैं पेडूकी सुलनैं यो दूरिकरैछै ६ अथवा आदाकोरस

न. टी. पथरीका रोगपर उपचार शास्त्रमें लिख्यो छै. परंतु मोटी हुयापाछै ईसो इलाज होणो मुसकल छै. कारण आपणी अनुकमताँ पथरीकी बढण घणी होयछै. मीरीका गर्भ आपणो धयनायछै. तीसौं महाकष्ट होयछै.

जवपार हरडेकीछालि मलयागिरीचंदन यांको काढो करै तींमें हींग नापि पीवेतो पथरी जाय ७ अथवा वरण्याकी वकल टका १०० भरले तीनें चोगुणा पाणींमें औटाय तींको चोथोहींसो रापै तींमें गुड टका १०० सोभरकी चासणी करै तीचासणीमें सूंठि टका १ पेठाकावीज टका १ वहेडाकीमींगी टका १ वथवाकावीज सहजणाकावीज येदोन्यूं टका एकेक भर नापै दाप टका २ इलायची टका १ हरडेकी छालि टका १ वायविडंग टका १ यांको चूर्ण करि वेमें नापै पाछै यांको येकजीवकरि रोजीना टका २ भर पायतो पथरी जाय ८ इति वरण्यादिगुडको अवलेह अथवा मजीठ तेवरसीका वीज जीरो सौंफ आवला वोरकी मींगी सोंधोगंधक आंवलासार मेणसील ये वरावरिले यांनें मिहीवांटि टंक १ रोजीना सहतकै साथि पायतो पथरी निश्चैजाय ९ अथवा कुलत्थ टका २ भर तींको काढोकरी तींमें सींधोलूण मासा २ सरपंपाको रस मासा २ नापि पीवेतो पथरी जाय येसर्व भावप्रकासमें लिप्याछै १० अथवा हलदको चूर्ण टंक ५ गुड टका १० कांजीमें मासो १ नापि पीवेतो पथरी इंद्रीद्वारा छटिपडै ११ अथवा संचरलूण सहत दूध तिलांकी नालिकाराप पीवाकी दारुमें नापि दिनतीन पीवेतो पथरी जाय १२ यो चक्रदत्तमें लिप्योछै. अथवा तिलांकी नालीकापार टंक २ सहत टंक ५ ये दूधकेसाथि दिन १५ पीवेतो पथरी निश्चै छडिपडै १३ अथवा गोलकाकडीकी जड टंक २ तीनें रातनें भेवै पाछै ईनें परभात वेही पाणींमें वांटि दिन ७ पीवेतो पथरी इंद्रीद्वारा छडिजाय १४ ये राजमार्तंडमें लिप्याछै. अथवा कुलत्थ सींधोलूण वायविडंग सार मिश्री सांठाको रस जवपार पेठाकोरस तिल

१. टी. पथरीनें [illegible]

पार पेठाकाबीज गोषरू याको काढो करि ईकाढामें गऊकोघृतपका य टका १ भर रोजीना षायतो पथरीनें मूत्रकृच्छ्रनें मूत्राघातनें शुक्रकाबंधनें यांसारां रोगांनें यो दूरिकरैछे १५ इति कुलत्थाद्यंघृतम् यो वृंदमें लिष्याछे अर मूंग जव गोहूं चावल दूध घृत टींडस्यां सींधो लूण ये ईरोगनें पथ्यछे. इति अस्मरीनाम पथरी रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथ प्रमेहरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लि० घणा बेठिवासूं घणां सोवासूं घणादहींका षावासूं नवीन पाणीका पीवासूं बकरा भेडकाका मांसका षावासूं गुडनें आदिलेर घणामीठा षावासूं कफकारी जोवस्त तींका षावासूं घणा श्रम करिवासूं घणां मैथुनका करिवासं तावडाका रहवासूं विरुद्धभोजनसूं गरम भोजन करिवासूं घणामद्यका पीवासूं षाटा कडवा रसका षावासूं पुरषके प्रमेहको रोग पैदा होयछे. अथ कफका पित्तका वायका जो प्रमेह त्यांकी संप्राप्तिनाम जनमसो लि० कफहे सो पेडूमें प्राप्तहुवो जोमेद अर मांस अर शरीरको जल तीनें दूषितकरी अर कफका प्रमेहनें करैछे ऐसेही पित्तहे सो गरम द्रव्यासूं कुपितहुवोथको पेडूमें प्राप्तहुवो जोमेद अर मांस अर सरीरको जल त्यांनें दूषितकरि अर पित्तका प्रमेहने करैछे ऐसेही वायहे सो आपकी अपेक्षा करी आपसों क्षीण जो कफ पित्त तीनें क्षीणहुवांथका पेडूमें प्राप्तहुवो जो शुद्धमांसको स्नेह तीनें मींजीनें अर सरीरका जलनें पेडूका नसांका मूढामें प्राप्तिकरि वायका ४ प्रमेहनें करैछे. अर कफकातो १० प्रमेह साध्यछे क्यूं दोषदुष्याकासमान जतनथकी अर पित्तका प्रमेहछे ६ सो जाप्यछे जाप्यकाई जतनकिये द्व्यारहे क्यूं याका विषम जतनछे क्यूं दोष दुष्यांका विषमपणाथकी एर्टे दोष

* प्रमेहरोगनें ग्राममें प्रमेहको है आदि भाषामें परमो कहेछे. अर मूत्राघातमें भी परमाको भेदछे. और परमाका भेदतो अनेकछे, परंतु मुख्यतो वात, पित्त, कफ ये तीन हैं, परमाको रोग जनरलहोमाहीं उत्पन्नहोवेछे.

दूपितछे. अर दुष्य रसमांसादिकछे. सीतल मधुरादिकपित्तहारी द्रव्यछे. अर वायका प्रमेह च्यारिसो असाध्यछे ये जायनहीं क्यूंमीजीनें आदिलेर वेगंभीरधातुछे. सोसर्व सरीर व्यापिछे अर सरीरका विनास कारीछे ईकारणसूं वायका प्रमेह असाध्यछे.

अथ प्रमेहवीस २० प्रकारकाछे. त्यांकानामलिष्यते उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सांद्रप्रमेह ३ सुराप्रमेह ४ पिष्टप्रमेह ५ सुक्तप्रमेह ६ सिकताप्रमेह ७ सीतप्रमेह ८ शनैप्रमेह ९ लालाप्रमेह १० ये दसतो कफका प्रमेहछे. अर क्षारप्रमेह १ नालप्रमेह २ कालाप्रमेह ३ हरिद्राप्रमेह ४ मंजिष्टप्रमेह ५ रक्तप्रमेह ६ येछह ६ पित्तका प्रमेहछे. अर वसाप्रमेह १ मज्जाप्रमेह २ मधुप्रमेह ३ हस्तिप्रमेह ४ ये वायका जाणिजे ये २० वीस प्रमेह वाग्भट सुश्रुत चरक भावप्रकासादिककामतसूंछे अर आत्रेयजीका मतमूं विसेसछे. सो लिषूंछूं १ पूयप्रमेह तक्रप्रमेह २ पीडितका प्रमेह ३ शर्कराप्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ येप्रमेह आत्रेयकामतसूं विशेष लिष्याछे. अथ प्रमेहको पूर्वरूप लि० दांत तालवोजीभ यांके मेल घणोहोय हाथ पगांके दाहहोय देह चीकणीहोय तिस घणी लागे मूंढो मीठोरहे येलक्षण होय तदि जाणिजे प्रमेहहोसी. अथ प्रमेहको सामान्य लक्षण लिष्यते घणो जाडो अर घणो पतलो मूत्रहोय तदि जाणिजे ईके प्रमेहको रोगछे अथ कफका दस १० प्रमेहछे त्यांका अनुक्रमसूं लक्षणलिष्यते. अथ उदकप्रमेहको लक्षण लिष्यते निर्मल मूत्र घणो मूत्र सुपेद मूत्र सीतल मूत्र गंधरहित मूत्र जलसरीषो मूत्र कबुंयेक जाडो अर चीकणो

म. गी. [illegible]

मूतै तीनैं उदकप्रमेह कहिजे १ अथ इक्षुप्रमेहको लक्षण लिख्यते साठाको रससिरिसो निपट मीठोहोय तीनैं इक्षुप्रमेह कहिजे २ अथ सांद्रप्रमेहको लक्षण लिख्यते जैसे वास्यो पाणी पड्योथको वासणमें जाडोहोयजाय तिसोजाडोपुरस मूतै तीनैं सांद्रप्रमेह कही जे ३ अथ सुराप्रमेहकोलक्षणलि० जीकामूतमें दारूकीसी बासआ वे अर वेंको मूतऊपरतो निरमल दीसै अर नीचे जाडो होय तीनैं सुरा प्रमेहकहिजे. ४ अथ पिष्टप्रमेहको लक्षणलिख्यते चावलांनै आदिलेर जो चून तीनैंपीसि तींका पाणीसिरीसो मूतै सुपेद कष्ट कारिकै अरमूततां रोमांच होय आवै तीनैं पिष्टप्रमेह कहिजे ५ अथ सुक्र प्रमेहको लक्षणलिख्यते वीर्यसिरीसो मूतै अथवा वीर्यनैं लीयां मूतै तीनैं सुक्रप्रमेह कहिजे ६ अथ सिकताप्रमेहको लक्षण लिख्यते वीर्यकीरतनैं लीयां मूतै तीनैं सिकताप्रमेह कहिजे ७ अ थ सीतलप्रमेहको लक्षण लिख्यते वारंवार मूतै घणों सीतल मूतै तीनैं सीतल प्रमेह कहिजे ८ अथ शनैः प्रमेहको लक्षण लिख्यते सनैं सनैं निपट मंदमंद मूतै तीनैं शनैः प्रमेह कहिजे ९ अथ ला ला प्रमेहको लक्षणलि० लालकी तांतीनैं लियांमूतै तीनैं लालाप्रमेह कहिजे १० यह दस कफका प्रमेहछै. अथछै ६ पित्तका प्रमेह तीमें प्रथम सारप्रमेहको लक्षण लिख्यते जींका मूत्रमें पारकोसो वर्ण हो य अर पारकोसोही वेमूतका रसको स्पर्शहोय अर पारका पाणीसि रीसो मूतै तीनैं पारप्रमेह कहिजे १ अथ नीलप्रमेहको लक्षण लि० जींको मूत नीलटांचका रंगसिरीसो उतरै तीनैं नीलप्रमेह कहिजे २ अथ कालाप्रमेहको लक्षणलि० स्याही सिरीसो काको मूतै ती नैं कालप्रमेह कहिजे ३ अथ हरिद्रा प्रमेहको लक्षणलि० हल्दका

न, टी: प्रमेहरोगसामान्य. जीमें कफका १० पित्तका ६ वायका ४ अर [illegible] [illegible] लक्षणलिख्याछै. जींको निदान ऊपर लिख्योछै. परंतु यहां श्री वायका ४ [illegible], सो असाध्यछै अर बाकीका साध्यछै.

रंगसिरीसो मूते अर करडो मूते तीनैंहरिद्राप्रमेह कहिजे ४ अथ मंजिष्टप्रमेहको लक्षणलिप्यते मजीठका पाणीकारंगसिरीसो मूते अरजीमें दुरगंधि आवे तीनें मजीठप्रमेह कहिजे ५ अथ रक्तप्रमेहको लक्षणलिप्यते लोहीसिरीसो मूते जीमें दुरगंधी घणि आवे अरगरम मूते अर लूणनेंलीयां मूते ईनें रक्तप्रमेह कहिजे ६ ये पित्तका ६ प्रमेहछे. अथ वायका ४ प्रमेहछे तीमें प्रथम वसा प्रमेहको लक्षणलिप्यते शुद्ध मांसको जोघृत तीनें लीयां मूते अर वेंको रंगनेंलीयां मूते तीनें वसा प्रमेह कहिजे १ अथ मज्जाप्रमेहको लक्षणलिप्यते हाड मांहिलीमींजीनें लीयां मूते अर वेंका रंग सिरीसो मूते अर वारंवार मूते तीनें मज्जाप्रमेहकहिजे २ अथ क्षौद्रप्रमेहको लक्षणलिप्यते कषायलो जींको मूत होय सहतासिरीसो जींको मूत मींठोहोय अर लूपो मूत होय तीनें क्षौद्रप्रमेह कहिजे. ३ अथ हस्तिप्रमेहको लक्षण लि० हाथीकोमद चूवेजीयान मूत्रक्षरवोही करेजीनें हाथीप्रमेह कहिजे ४ ज्यांपुरुषांके कोईप्रमेह हुवेछे. अर वेंपुरस जतन करेनहीं अर प्रमेहनें दिन घणांलाग जाय अर वेपुरुप कुपथ्य करवोकरे तदिवां पुरुषांके मधुप्रमेह हो जाय येमधुप्रमेह असाध्यछे. अथ कफका प्रमेहका उपद्रवलि० अन्नपचेनहीं भोजनमें अरुचिहोय. छादणी होय नींद घणी आवे पासीहोय पीनसहोय ये कफका प्रमेहका उपद्रवलिप्याछे. अथ पित्तका प्रमेहका उपद्रवलि० पेटमें इंद्रीमें सुलहोय पोतापाटण लागिजाय ज्वरहोयआवें मोहहोय तिमरहोय पाटीडकार आवे मूर्छा होय अतिसारहोय येपित्तका प्रमेहका उपद्रवछे. अथ वायका प्रमेहको उपद्रवलि० जीमें उदावर्तको रोगहोय आवे मर्मोरुकाँपे हो

[illegible]

दस १० पीडिकाछै सोप्रमेहवाला रोगींके होयछै त्याही कारणासूं पुरुषांको पीडिका दस होय अरज्यां पुरुषांकेसरीरमें मेददुष्टहुवोछै त्यांके प्रमेहविना भी ये दस पीडिका होयछै. अथ दस १० पीडिकाकाउपद्रवलिष्यते तिस पासीमांसकोसंकोच मोहहिचकी मंदज्वरविसर्प मर्मकोरोकिवो येयांकाउपद्रवछै. अथ पीडिकाका असाध्य लक्षणलि० गुदाके हीयाके मस्तकको कांधाके मर्मस्थानके मंदाग्निवालाके यांस्थानांमें फुणसीहोय तीनैं असाध्य कहिजे केईक आचार्यांको मतछै स्त्रियांके प्रमेहकोरोग होय नहीं क्यूं स्त्रीहै सो महिनाकी महिनां स्त्रीधर्म होयछै, तींसेती स्त्रीकासरीरका सारारोगजाता रहेछै. अथ प्रमेह जातोरह्यो होय तींको लक्षण लिष्यते जींको मूत निर्मलहोजाय अर पतलोपाणीसिरीसो होजाय अरजींकोमूत कडवो अरतीषो होजाय तींकै प्रमेह गयो जाणिजे. अथरक्तपित्त रक्तप्रमेहको भेदलि० जींकासरीरको हलदसिरीसो वर्ण होजाय अरजींको मूतलोही सिरीसो होजाय तींकै रुधिरप्रमेह जाणिजे नहीं वेंको रक्तपित्तको कोप जाणिजे अथ प्रमेहरोगका जतन लिष्यते प्रमेहवालानें इतनी वस्तपावो जोग्यछै, सांऊं, कोद्रु, गोंहू, चणा, अरहड, कुलत्थ, जव मूंग, मोठ साठ्याचावल येसारापुराणा पावो जोग्यछै अरतीषा साग पत्र अरहिरणको मांस इत्ताप्रमेहवालाके येकुपथ्यछै गुडनें आदिलेरमीठीवस्त दूध घृत तेल छाछि दारुपीवाकी औरपटाई सांठाकोरस पिस्यो अन्न अनूपदेसको मांस येप्रमेहवालानें वरज्याछै अर कफका दसप्रमेहछैतीनें यो काढो योग्यछै नागरमोथो हरडेकीछालि लोद कायफल येबराबरिले यानें जौकुटकरि टंक ५ ईंको काढो रोजीना सहत नाषिलेती

न. टी. पीडिका दसलक्षणो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कफका प्रमेह जाय १ अथवा पस लोद कहवाकीवकल अर रक्त चंदन येवराबरिले यांनें जौकुटकरिटंक ५ यांको काढो रोजीना सहत नापि लेतो पित्तका प्रमेह जाय ३ येजतनभावप्रकासमेंछे. अथ जलप्रमेहको जतन लिप्यते धवरूपकीवकल कहवारूपकी वकल रक्तचंदन सालररूपकीवकल ईको काढो लेतो जलप्रमेहजाय २ अथ रक्तप्रमेहकोजतनलिप्यते वास्यापाणीमेंदापांको सरबतकरे तीमें महलोटी सुपेदचंदन नापिपीवेतो रक्तप्रमेह जाय. ४ अथ क्षारप्रमेहको जतनलिप्यते सुंदरस्त्रीकासंभोगसूं क्षारप्रमेह जाय ५ अथवा धवरूपकी वकल कहवारूपकी वकल अरलूकी वकल किसोस्या केलीकी माहिली सुपेद वकल कमलकीजड दाप यांको काढो देतो क्षारप्रमेह जाय. ६ अथ तक्रप्रमेहको जतन लिप्यते लोद कहयाकी वकल पेर नींबका पान आंवला रक्तचंदन यांको काढो करि गुड घाली लेतो तक्रप्रमेह अर पीडिकाप्रमेह ये दोन्यूं जाय. ७ अथ सुक्तप्रमेहको जतन लिप्यते. दोब मूर्वा डाभकीजड कांसकीजड दांत्युणी मजीठ सालरकीवकल यांको काढो लेतो शुक्रप्रमेहनें अरु रुधिरप्रमेहनें यांदोन्यांनें योदूरिकरेंछे. ८ अथ घृत प्रमेहको जतनलिप्यते त्रिफला, किरमालाकीगिर अरबेंकीजड मूर्वा सहजणाकापान नींबकापान केलिकीसुपेद वकल तिनकादापयांको काढो देतो घृतप्रमेह जाय ९ अथ इक्षुप्रमेहको जतनलिप्यते. कूठ पित्तपापडो कुटकी मिश्री यांको काढो देतो इक्षुप्रमेह क्षाय १० अथवा धरणपांकी जड पाडल धमासो अरलू ढीलाकी जड यांको काढो देतो इक्षुप्रमेह जाय ११ अथ पित्तका प्रमेहको जतनलिप्यते

[illegible]

दस १० पीडिकाछे सोप्रमेहवाला रोगीके होयछे त्याही कारणासूं पुरुषांको पीडिका दस होय अरज्यां पुरुषांकेसरीरमें मेददुष्टहुवोछे त्यांके प्रमेहविना भी ये दस पीडिका होयछे. अथ दस १० पीडिका काउपद्रवलिष्यते तिस पासमांसकोसंकोच मोहहिचकी मंदज्वरवि सर्प मर्मकोरोकिवो येयांकाउपद्रवछे. अथ पीडिकाका असाध्य लक्षणलि० गुदाके हीयाके मस्तकको कांधाके मर्मस्थानके मंदाग्निवालाके यांस्थानांमें फुणसीहोय तीनें असाध्य कहिजे केईक आचार्यांको मतछे स्त्रियांके प्रमेहकोरोग होय नहीं क्यूं स्त्रीहे सो महिनाकी महिनों स्त्रीधर्म होयछे, तींसेती स्त्रीकासरीरका सारारोगजाता रहेछे. अथ प्रमेह जातोरह्यो होय तींको लक्षण लिष्यते जींको मूत निर्मलहोजाय अर पतलोपाणीसिरीसो होजाय अरजींकोमूत कडवो अरतीषो होजाय तींके प्रमेह गयो जाणिजे. अथरक्तपित्त रक्तप्रमेहको भेदलि० जींकासरीरको हलदसिरीसो वर्ण होजाय अरजींको मूतलोही सिरीसो होजाय तींके रुधिरप्रमेह जाणिजे नहीं वेंको रक्तपित्तको कोप जाणिजे अथ प्रमेहरोगका जतन लिष्यते प्रमेहवालानें इतनी वस्तपावो जोग्यछे. सांऊ, कोद्रु, गींहूं, चणा, अरहड, कुलत्थ, जव मूंग, मोठ साल्याचावल येसारापुराणा पावो जोग्यछे अरतीषा साग पत्र अरहिरणको मांस इत्ताप्रमेहवालाके येकुपथ्यछे गुडनें आदिलेरमीठीवस्त दूध घृत तेल छाछि दारुपीवाकी ओरपटाई सांठाकोरस पिस्यो अन्न अनूपदेसको मांस येप्रमेहवालानें वरज्याछे अर कफका दसप्रमेहछेतीनें यो काढो योग्यछे नागरमोथो हरडेकीछालि लोद कायफल येवरावरिले यानें जोकुटकारि टंक ५ इंको काढो रोजीना सहत नाषिलेतो

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible] काठी [illegible] [illegible]. आ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible]. [illegible] चाहिजे अर गो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ध्यानमें राखणा.

टंक २ सहत टंक १० मिलाय गऊका दूधकेसाथि रोजीना पीवै तोमधुप्रमेहनें अर मूत्रको अवरोध योदूरि करैछे. १८ येसर्वजतन आत्रेयमें लिष्याछै. अथ चंद्रप्रभागुटिका लिष्यते कचूर टंक १ वच टंक १ नागरमोथो टंक १ चिरायतो टंक १ देवदारु टंक १ हलद टंक १ अतीस टंक १ दारुहलद टंक १ पीपलामूल टंक १ चित्रक टंक १ धणो टंक १ त्रिफला टंक १ चव्य टंक १ गजपीपलि टंक १ जवषार टंक १ साजी टंक १ सींधोलूण टंक १ संचरलूण टंक १ सांभरोलूण टंक १ सार टंक ५ मिश्री टंक २ सोध्या सिलाजीत टंक ४ सोध्योगूगल टका ४ यां सारांनेंमिही जुदा जुदा वांटेपाछै यांसारांनें येकठाकरि मिलाय यांको येकजीवकरि अरपारो टका १ सोध्योगंधक टका १ अभ्रक टका १ पाछै पारा गंधककी कजलीकरै येसारा औषदि ईमे मिलावै पाछै मासा ४ च्यार ईनें सहतकेसाथिलेतो सर्वप्रमेहमात्रनें ववासीरनें क्षयीनें वीर्यका दोषनें नेत्रांका रोगानें दांतांका रोगानें पांडुरोगनें पांवनें सूलनें उदरका रोगनें मूत्रकृच्छ्रनें मूत्राघातनें फीयानें षासीनें कोढनें यासारांरोगानें योदूरि करैछे १९ इति चंद्रप्रभागुटिका अथवा त्रिफला टका ४ जीरो टका ४ धणो टका ४ कौंछकाबीज टका ४ छोटीइलायची टका २ दालचिनी टका २ लवंग टका २ नागकेसरि टका २ तुकमरीयाकाबीज टका २ यांसारांनें मिहीबांटि येक जीवकरै पाछै यांनें मिश्रीघृतमें मिलाय यांका लाडु टका येकेक भरका करैपाछै रोजीना लाडु एक एक प्रातःसमै षायतो प्रमेहमात्रनें दूरिकरैछे. इति प्रमेहहारिचूर्ण २० अथ मधुप्रमेहको जतनलिष्यते सोध्योपारो सोध्योगंधक कहवाको चकलू मिश्री येबरावरिले यांनें षरलमें मि

अ. टी. चंद्रप्रभागोटीके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कमलकीजड कहवाकीजड इंद्रजव धवकीबकल आमिलीकी बक ल आंवला नींबोली यांमें मिश्रीनाषि पीवैतो पित्तप्रमेह जाय.१२ अथ कफका प्रमेहको जतनलिष्यते. वायविडंग राल कहवारूषकी वकल कायफल कदंबकीबकल लोद विजयसार यांको काढो लेतो कफका प्रमेह जाय १३ अथ संपूर्ण प्रमेहमात्रको जतन लिष्यते. नागरमोथो त्रिफला हलद देवदारु मूर्वा इंद्रजव लोद यांको काढो करि देतो संपूर्ण प्रमेहमात्रनें अर मूत्रग्रहनें दूरिकरैछै १४ अ थवा काकलहरी हरडेकी छालि हलद कहवाकी वकल येसरावरिले यांनें मिहीवांटी यांकी वरावरि इंमें मिश्री मिलाय टंक ५ सहतकै साथि लेतो सर्वप्रकारको प्रमेहजाय १५ अथ मधुप्रमेहको जतन लिष्यते वडकी जडकीवकल अरलूकी जडकीवकल चारोलीकारू षकी वकल आवलाकी जडकीवकल पीपलकी जडकी वकल किर मालाकी जडकीवकल महलोठी लोद नींबकीछालि पटोल वरण्या की वकल दांत्युणी मींढासींगो चित्रक कणगचकीजड इंद्रजव त्रि फला सोध्याभिलावा सूंठी कालीमिरचि तज पत्रज इलायची येसर्व वरावरिले यांनें मिहीवांटि टंक २ सहतकैसाथि रोजीना लेतो मधु प्रमेह जाय १६ अथवा वडकी जटानें आदिलेर ये औषदिछै त्यांको काढोदे अथवा येतलकरै अथवा यांको घृतकरै इंतेलकातो मर्दन करै अर घृतको पानकरैतो मधुप्रमेह जाय १७ इति न्यग्रो धाद्यंचूर्णम. अथवा सोधी सोनामषी पाषाणभेदसोध्यासिलाजीत चंदन कचूर पीपलि वंसलोचन येसर्व वरावरिले यांनें मिहीवांटि

म. टी. [illegible] प्रमेहतो, [illegible] औषधी [illegible]. [illegible] पित्तजुदीहाते [illegible] एकदिन [illegible] औषधी [illegible]. [illegible] दावनही, [illegible]. [illegible] [illegible] १ [illegible], २ [illegible], ३ [illegible] ४ [illegible]. [illegible] [illegible].

हीवांटि अर साळरकी जडकी पुट ३ देपाछे परल्करे पाछे ईकी गोली मासा १ प्रमाण बांधे पाछे गोली १ रोजीना पायतो मधुप्र मेह जाय २१ अथवा लोद टका १ सहतसूं ले अथवा पंरेटीका काढासूं लेतो प्रमेहजाय २२ अथवा गिलोयसत त्रिफलासार ये तीन्यूं मिलाय टंक १ सहतसूं पायतो प्रमेह जाय अथवा निर्भासिं घाडा रेवतचीनी येवराबरिले यांनेमिहीवांटि टंक २ जलकेसाथिरो जीना लेतो घणादिनकोभी प्रमेह दूरिहोय २४ अथवा पकागूल रीकाफल टका १ सींधालूणकीसाथि पायतो असाध्यभी प्रमेहजा य २५ अथवा वंगेस्वर रसरती १ सहतसूंले अर ईऊपरि पकाग लकरिका फलांकोचूर्ण सहतसूं लेतो असाध्यभीप्रमेह दूरिहोय २६ अथ वंगेस्वर रसकी क्रियालिप्यते रांग पाव ऽ। चोपोले ईनेगा लि ईमें गलतां अधपावऽ।पारो नाषे पाछेईकोथालीमें पतली पापडी करे पाछे वांका छोटाछोटा टूक करि जुदाराषिजे पाछे छाणा २ था पड्यां बडाबडासेर पांचका गोबरका करायये केकछाणा ऊपरिकेसूला सेर १ कोचूर्ण विछावे जुगतिसूं तीमध्ये महदीको चूर्ण सेर १ मि लावे यांदोन्यांकी बीच बीपारारांगका टूकडाने यां दोन्याका चूर्णसूं जुगतिसूं दाबिदे ऊपरि दूसरो छाणादे पाछे वाने निर्वातस्थानमें जुगतिसूं फूंकिदे पाछे वाने स्वांगसीतल हुवां जुगतिसूं काढे येका फूलासुपेद होयजाय ओ तोल कतरे यावंगेस्वरकी क्रियाछे ईका गुणको पारनहीं यो सर्वरोग मात्रनें दूरिकरेछे. जुदाजुदा अनुपान सूं इति वंगेश्वर रसकीक्रिया संपूर्णम् २७

अथ सुपारी पाकलिप्यते दीपणी सुपारि टका ८ तीने मिहीवा टि गऊको घृत टका ८ तीमें ईने ओसणिसेर ३ गऊका दूधमें

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] बुद्धिको [illegible]

ईंको परो मावोकरे पाछे इमावामें ये ओषद्यां मिहीवांटि नाषे सो लिषूळूं नागकेसरि टंक ५ नागरमोथो टंक ५ चंदन टंक ५ सूंठि टंक ५ कालीमिरचि टंक ५ पीपली टंक ५ आंवला टंक ५ कोंच ळकाबीज टंक ५ जायफल टंक ५ लवंग टंक ५ धणों टंक ५ चारोली टंक ५ तज टंक ५ पत्रज टंक ५ इलायची टंक ५ दोन्यूं जीरा टंक ५ सींवाडा टंक ५ वंसलोचन टंक ५ यानें मिहिवांटि ईमावामें नापि पाछे मिश्री टका ५० भरकीचासणी करे ईंचासणी में ओषद्यांसमेत मावो नापे पाछे वेंकी टका १ येकेक भरकी गोळी वांधे गोळी १ प्रभात गोळी १ संध्या पायतो अतना रोगानें दूरिकरे प्रमेहनें जीर्णज्वरनें आम्लपित्तनें ववासीरनें मंदाग्निनें शुक्रका दोषनें प्रदरनें यांरोगानें यो दूरिकरेंछे. अर सरीरनें पुष्ट करेछे. २८ इति सुपारी पाकः अथ गोपरू पाक लिप्यते. गोपरू सेर ३॥ आधइनें मिहीवांटि गऊकोघृत सेर १ में भकरोवे पाछे गऊको दूध सेर ५ तीमें ईकोपरो मावो करे ईमावामें ये ओषदि नाषे सो लिषूळूं वोल्कोगिरि टंक २ कालिमिरचि टंक २ सार टंक ५ जायफल टंक २ समुद्रसोस टंक ३ इलायची टंक २ भीमसेनीकपूर टंक २ पत्रज टंक २ दालचिनी टंक २ हल्द टंक २ कूठ टंक २ तालमपाणा टंक २ अफीम टंक २या ओषद्यांसुं आधो भाग यानें मिहिवांटि वेमें नाषे पाछे सेर च्यारि ४ मिश्रीकी चासणी करे ईचासणीमें ओषद्यांसूंधो मावो मिलावे पाछे ईंकी गोळी टंक ५ प्रमाणकी करे गोळी १ रोजीना सयतो सयतो पायतो प्रमेहनें दूरिकरे अर वीर्यकों स्तंभकरे स्त्रियानेंघणीप्रसन्नकरे इतिगोपरूपाकः २९ अथवा चित्रक सोंचो गंधक सुंठि कालिमिरचि पीपळि पारो सोंघोलूंगी

[illegible]

मुहरो त्रिफला नागरमोथो येबराबरिले पाछै पारागंधककी कजली करैपाछै कजलीमें येऔषदि मिहींवांटि मिलावैपाछै इंकैभांगराका रसकी पुट १ दे परलकरै पाछैगोली रतीप्रमाणकीबांधै गोली १ रोजीनाप्रभात पायतो अठाराप्रकारका कोढानें योदूरिकरैछै ३० इति पंचाननगुटिका येजतन वैद्यरहस्यमें लिष्याछै भीमसेनीकपूर मासो १ कस्तूरी मासो १ अफीम मासा ४ जायपत्री मासा ४ यां सारानैं नागरवेलीकापानाका रसमें वांटैपाछैरती १ प्रमाणगोली करै पाछैगोली १ रोजीनादूधमें मिश्रीनापि तींकैसाथि लेतो प्रमेह मात्र दूरिहोय अरस्तंभनकरै ३१ अथ घृतप्रमेहको जतनलिष्यतै गिलवै चित्रक पाठकूडाकोछालि सेकीहींग कुटकी कूट येबराबरिले यानैंमिहींवांटि टंक २ जलसूं लेतो घृतप्रमेहजाय ३२ अथवा आंवला हलद ये बराबरिले अर टंक ५ यानैं रात्रिनैं भेयपरभात वेही पाणीमें वांटिईमैंसहतनापिरोजीना पीवैतोप्रमेहमात्रजाय ३३ अथवा सोधीगंधक सोध्योपारोसोधीसोनामषी सूंठि मिरचि पीपलि त्रिफला सिलाजीत चोरकीमींगी हलद कैथ येबराबरिले पाछैपारागंधककी कजलीकरै तींमें येऔषदिमिहींवांटि मिलाय तींकैभांगराका रसकोपुट २१ देपाछै टंक १रोजीना पायतो प्रमेहमात्रदूरिहोय ३४ इतिमेघनादरसः अथवा पारो अभ्रक बराबरिले यानैं आंवलाका रसमें परलकरै दिन ७ पाछै रती १ रोजीनापायतो प्रमेह मात्र जाय ३५ इति हरिशंकररसः अथवा इलायची भीमसेनी कपूर मांडुंगी जायफल गोपरू सालरकोनिकल मोचरस पारो अभ्रक बंगसार ये बराबरिले यानैं परलमें मिहींवांटि रति २ रोजीना सहतसूं लेतो प्रमेहमात्रदूरिहोय ३६ इति प्रमेहकुठाररसः अथवा नर्क

* भीमसेनीकपूरनें [illegible], [illegible]. [illegible] र [illegible]. [illegible]. [illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible], [illegible]. [illegible].

वणाकाबीज टंक ५ चावलांका पाणीमें पीसि वेमें गऊको घृत मि लाय रोजीनापीवेतो घणादिनाकोभीप्रमेह जाय ३७ येसर्व जतन सर्वसंग्रहमें लिष्याछे. इतिप्रमेहहरणकाजतनसंपूर्णम्. अथ प्रमेह पीडिकाका लक्षण अर जतन आत्रेयकामतसूं लिष्यते पित्तकीपी डिकापीली अथवा लालहोय दाहहोय ज्वरहोय १ अर वायकीपी डिका कालीहोय सरीरकांपे मूततां मूलहोय पुरस विकल होय जाय २ कफकीपीडिका सूपेद होय जाडीहोय सीतल होय मोडी पचे सोजानिर्लीयांहोय ३ येसर्वलक्षणजीमें होय तीनें सन्निपातकी पीडिका कहिजे ४ धवकहवाकी वकल कदंबकी वकल बोरकी वक ल सिरस्यूंकी वकल नींबकीवकल यांकोकाढोकरि ईपाणीसूं वेपीडि कानें धोवेतो ओपीडिका आछीहोय. १ अथ इंद्रीऊपरिराधिपडि गई होय तींको जतन लिष्यते कहवाकी वकल कदंबकी वकल तिं दूकी अंतरछालियांका काढासूं धोवेतो इंद्रीकी राधिआछीहोय. २ अथइंद्रीऊपरि वायकी पीडिका होय तींको जतनलिष्यते भांगराको रसतुलसीकापानपटोलकापत्रयांनें कांजीसूं वांटिलेपकरेतोपीडि का जाय ३अथपीडिकाको जतनलिष्यते महलोठी कूठ रक्तचंदन पस रोहिस गेरू कमलगट्टा येदूधमें वांटि पित्तकीफुणस्यांके लेप क रेतो वांको दाहदूरिहोय ४ अथ इंद्रीकीफुणसी पकीजाय तींको जतन लिष्यते. सीतल जलसूंसो १०० वारको धोयो माषन तींको लेप करेतो वांको दहादूरिहोय ५ अथवा कदंबकापान कहवाकापान दाडयूंका पान गेरकापान आंवलाकापान यांनें गरम पाणीनें वांटि लेप करेतो फुणस्यांकी राधिजाय ६ अथवा त्रिफलाका भुरकासूं रा धिजाय७ अथवा कांजीका धोवासे ऊाडिकाधोवासे सीतल जलका

म. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

धोवासूं राधि आछीहोय येजतन आत्रेयनें लिप्याछे. ८ इति प्र
मेहपीडिकाका जतनसंपूर्णम्. अथ रसरत्नाकरकोजतनलिप्यते क
पासकीमींगी भैंसिकी छाछिमें दिन ७ परलकरे पाछे वेनें मासा २
रोजीना पायतौ लाला प्रमेह जाय १ अथ बहुमूत्रप्रमेहको जतन
लिप्यते मूर्छा पारो वंग अथवा वंगेश्वरसार अभ्रक यांनें बराब
रिले त्यांनें सहतमें दिन १ परलयेरे पाछे मासा १ सहतसुं रोजी
ना पायतो बहुमूत्रपणो जाय २ इति तालकेमुर रसः ईरसने लि
यांपाछे पक्का गूलरकाफल टंक २ ईकोचूर्ण ईरस ऊपरिले तौ बहुमू
त्रपणो जाय ३ अर पंचवक्ररस मासा २ लेतौ बहुमूत्रपणो जाय ४
येजतन रसरत्नाकरमेंछै. इतिप्रमेहरोग अर पीडिकारोग यांकी
उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णाम्. इतिश्रीमन्महाराजधिराजराजराजें
द्रश्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे मूत्र
कृच्छ्र मूत्रघात अश्मरी शर्करा प्रमेह यांसवेरोगांका भेदसंयुक्त उ
त्पत्ति लक्षण जतन निरूपणंनाम द्वादशः स्तरंगः संपूर्णम् १२

अथ मेदरोगकीउत्पत्तिलक्षण जतन लिप्यते घणोंऐसकाकरि
बासूं बैठ्यारहवासूंदिनका सोवासू कफकारी वस्तकापावासूं मधुर
अन्नका पावासूं घृतनें आदिलेर चीकणीवस्तकापावासूं मेदवधेछै.
जदिमेदवधे तदिपुरुषहेसो क्यूंबीकामकरिवाकूंसमर्थ होय नहीं
ओनिकमोहुवोथको पड्योरहे क्यूं ओर धातजोछे हाडमांजी वीर्यते
मेदनें वध्याथकांपुष्टहोय नहीं ओआदमी निकमो होजाय १ अथ
मेदका ओरदोषलिष्यूंछूं जीकें मेद होय तीको क्षुद्रस्वासहोय तीस
होय मोहहोय कृशाहुतो सोवे शरीरमें पीडा होय ओके आवे प
सेव आविसरीरमें दुरगंधि आवे मैथुन करिवामें समर्थ होय नहीं

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]

ये मेदवालाके लक्षणछे. अथ मेदकोस्थानलिष्यते. प्राणिमात्रके मे
दहेसो उदरमें रहेछे. ईकारण मेदहे सोउदरनें वधावेछे पाछे उदर
वध्योथको अग्निनें दीप्यमान करेछे क्यूं मेदकारके ढक्योछे मार्ग
जिनकोएसो जो वायसो कोष्ठहांमेविचरे तदि अग्निकूं देदीप्यमान
करि पावाहोकी वांछारापे तदि मनुष्यहे सो घणो पायोथको अ
नेक भयंकर आजारांनें घणांदिनांमें पैदाकरे. पाछे उदरमें रहतो
जो अग्निअरपवनसूंस्थूलजो ओमेदवालो पुरुषतीनें वेदग्धकरेएठे
दृष्टांत दीजेछे. जैसेवनमें रहतोजो अग्निसो पवननें सहायता लेकर
वननें दग्ध करेछे जैसे पाछो मेद घणो वध्योथको पेटमें रहतो जो
वायपित्त अग्निवेघणां विकारांनें पैदाकरे ईपुरषनें मारिनाषे १ अथ
स्थूलको लक्षण लिष्यते. मेदमांस जदि घणावधे तदि पुरुसके हूंगा
उदरस्तन येवध्याथका घणाथलथलाट करताहाले अर वेपुरषका
बल मांस उत्साह जातारहे ईनेंस्थूल कहिजे पाछेस्थूल पुरुसके ये
भयंकर रोगछे विसर्प भगंदर विषमज्वर अतिसार बवासार पां
वनें आदिलेर औरभी रोगकरे अथ मेदवाला रोगीको जतन लि
ष्यते. पुराणांचावल मूंग कुलथ कोद्रू येपाय लेपन वस्तिकर्म ये
दूकरियो चिंता कुस्ती मार्ग चालिवो सहतको पावोजवकोपावो जा
गिवो पारोरस अरंडका पानाकी तरकारी हींग चावलांको मांड
इननेंवस्त ईरोगवालानें सेवो जोग्यछे अथवा गिलोय त्रिफला
यांका कादासूं मेदको रोगजाय १ अथवा गिलोय त्रिफला यांको
काढोकरि तीमें स्वार सहतनाषि पीवेतो मेदको रोगजाय२ अथवा
वास्या ठंडा पाणीमें सहत नाषि पीवेतो मेदको रोगजाय ३ अ
थवा उन्हू अन्नपाव अथवा चांवलांको मांड पीवेतो मेदको रोग

[illegible]

जाय ४ अथवा सुंठि मिरचि पीपलि चित्रक त्रिफला नागरमोथो वायविडंग यांका काढामें गूगल नाषि पीवैतो मेदको रोगजाय ५ अथवा पीपलि सहतसूं रोजीना षायतो मेदको रोगजाय ६ अथवा धत्तूराका पानांकोरस तींको मर्दन करिवो करैतो मेदको रोग जाय ७ अथवा पारो तामेसुर सार बीजाबोल यांनें बराबरिले यांनें मिहींवांटि ईनें कूकरभांगराका रसमें दिन ३ परल करै पाछे रती २ ईनें रोजीना सहतसूं चाटैतो मेदको दोस जाय ८ इति वडवानलरसः यो वैद्यरहस्यमेंछे. अथवा चव्य जीरो सुंठि कालीमिरचि पीपलि सेकोहींग संचरलूण येबराबरिले यांनें मिहीं वांटि जवांका सातूंके साथि टंक २ रोजीना पीवैतो मेदरोग जाय ९ योचक्रदत्तमें लिष्योछे. अथवा वायविडंग सुंठि जवसार पीपलि सार यांनें मिहींवांटि टंक १ तीनें जव अर. आंवलाको चूर्णमिलाय सहतसूं लेतो मेदको रोगजाय १० अथवा बोरका पानांकी बकल तीमें कांजीको पाणिनाषि अर इहांमें अरण्यांको रस अर शिलाजीत नाषि पीवैतो मेदको रोगजाय ११ अथवा गिलवै इलायची कूडाकीछालि आंवला येसारा अनुक्रमसूं येकसूं येक वधताले अर गूगल यांसारांकी बराबरिले ट्यांको येकजीवकरि पाछे ईनें टंक १। सहतके साथि लेतो मेदकोरोग भगंदर येजाय १२ इति अमृतागूगलः येचक्रदत्तमेंछे अथवा त्रिफला अतीस मूर्वा निसोत चित्रक अरडूसो नींबकीबकल किरमालाकीगिरी पीपलामूल दोन्यूंहलद गिलवै इंद्रायण पीपलि कूठ सिरस्यूं सुंठि येबराबरिले यांको काढोकरि तीमें तुलसीको रस नाषि ईका अनुमान

* कूकर भांगरानाम एक बूटीछे. [illegible]

माफिक पाछे ईमें तेलपकावे पाछे ईको तेलको मर्दन करे अथवा ईको वस्तिकर्म करेतो मेदका रोगानें कफका रोगानें योदूरि करेछे १३ इति त्रिफलाद्यं तेलम् योचक्रदत्तमेंछे. इतिमेदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथ देहसें पसेवांसूं दुर्गंधि आवती होय तींको जतनलिष्यते अरडूसाका पानांको रस तींमेंसंपको चूर्ण मिलाय तींको लेपकरे अथवा बिलपत्रका पानामें संपको चूर्ण मिलाय लेपकरेतो सरीरको दुरगंधिजाय. १ अथ कांपामें वास आवती होय तींको जतनलिष्यते नींबूका पानाका रसको लेप करेतो कांपाका पसेवको दोपदूरिहोय २ अथवा हलदनें अधवलोकार तीनें वांटि पाणीमें लेप करेतो कांपांकी दुर्गंधि जाय ३ अथवा नागकेसरि सिरसकी वकल लोद पस हरडेकीछालि यानें पाणीमें वांटि यांको उवटणो करेयो सरीरकी दूरगंधिको दोपदूरिहोय ४ अथवा बोलिका पानानें जलमें वांटि वाको मर्दन सरीरके करेपाछे स्नान करि नायेतो सरीरको दुरगंधिपणाको दोप दूरिहोय ५ येजतन भावप्रकासमें लिष्याछे. अथ सरीरकी दूरगंधि दूरि होवाको उवटणोलिष्यते. तांबूलका पान हरडेकीछालि कूठ यानें पाणीमें वांटि सरीरके मर्दन करेतो सरीरकी दुरगंधि जाय ३ यो वृंदमेंछे. अथ स्त्रीका अछ्यारंग करिवाको लेपलि० हरडेकीछालि लोद नींबकापान दाडवंकीवकलआंबकी वकल यानें जलसूं निहीवांटि ईको सरीरको लेप करेतो देहकी कांतिनें करे ७ यो काशिनाथपद्धतीमेंछे. अथ कांपकी दूरगंधि हरिवाको जतनालि० कूठ लोंग्यूंहलद यानें गोमूतमें वांटि अथवा गोवरमेंवांटि जलनूं ईको लेपकरेतो कांपकीवास दूरिहोय अर ईसूं कोढयोजाय ८ यो चक्रदत्तमें छि

म. टी. [illegible]

प्योछे और सरिरकी दूरगंधि दूरिहोवाको जतनलिप्यते. कुलथ कूठ छडछडीलो चंदन सेक्यो जवको चून तज वच यांनें जलसूं मिहीवांटि सरीरके मर्दन करैतौ सरीरकी दुरगंधिजाय ९ योशा ङ्गधरमेंछे अथ कार्श्य रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिप्यते. इंका इर्यरोगनें लोकांकमें षीण कहेंछे वायल वस्तका पावासूं लूषा अन्नका पावासूं लंघनका करिवासूं घणामैथूनका करिवासूं पढ्का करिवासूं भयसूं धनपुत्रादिकका नाससूं घणा सोचका करिवासूं यां करणांसूं पुरसके कार्श्य होयछे. १० अथ क्षीणपणका रोग को कक्षण लिप्यते. कूला उदर कांधी येसूकिजाय नसां निकलि आवे हाड चामडी सरीरकी अवसेस आयरहे सरीर दुबलो हो जाय ये लक्षण होयतौ पीणपणाको रोग मनुष्यके जाणिजे ११ अथवा मनुष्य अत्यंत पीण पडिगयो होय तांको इतना रोगहोय सो लिपूंछूं फीयो होय पासीहोय क्षयीरोगहोय गोलाको रोगहोय अर ववासीर होय उदरको रोगहोय संग्रहणी आफरानें आदि लेर औररोग होय अर केईपुरुष दीपतकातो दूबलाक्सूं ज्यांके मेदको भागतो सरीरमें थोडो अर वीर्यको हींसो सरिरमें घणोरहै अर औ मैथुन घणोकरे अर वेको वंधेज घणो रहे अर ओ स्त्रिया कों गर्भरापिदे अर केईक दीपतकातो सरीरकापुष्ट अर बलहीन अर मैथुनादिकमें समर्थ नहीं तांनें पीण कहिजे क्यूं वेकासरीरमें मेदको भागतो घणो अर शुक्रको विभाग थोडो जीसूं ओपुरुष पी णही जाणिजे १२ अथ कृसनाम पीणपणांका रोगका जतनलि प्यते जितनी बलकरी ओपधांछे अव जीतनी पंधनकी ओपधिछे अर जितना पुष्टकारी घृत दूध मांसनें आदिलेर पदार्थकाछे त्यांनूं

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

क्षीणपणो दूरिहोयछे. अर यांका जतन पुष्टाईका ग्रंथ समाप्तिमें लिपस्यां. १३ अथ असाध्य क्षीणपणाका रोगको लक्षण लिप्यते. जिहपुरसके स्वतःस्वभावसेती षीण होय अर अग्नि मंदहोय अर जिहपुरसके स्वतःस्वभावसेतीहीसदाही वेंको सरीर निर्बल होय तींको जतन नहीछे ये सर्व जतन भावप्रकासमें लिप्याछे १४ इति कार्श्य नाम षीणपणाका रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्ण.

अथ उदर रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिप्यते मंदाग्नि वाला पुरसके निश्चै पैदाहोयछे पण उदरका सर्वही आठप्रकारछे तीनें आदिलेर अर सर्व उदररोग मंदाग्निवाला पुरसके निश्चैपैदा होयछे. १ अथ उदर रोगकी औरभी उत्पत्ति लिप्यते. अजीर्णसों उदर रोगहोय अत्यंत दोषनें उपजावै इसीवास्ते षाई तो उदररोग होय. दोषांको संचय होय अथवा मलको अथवा आंवको संचय कोष्टमें होय तदि पुरसके उदर रोग पैदा होय १ अथ उदर रोगकी उत्पत्ति लिप्यते. कुपथ्यसूं संचयकूं प्राप्ति हुवो जो वाय पित्त कफ सो जलनें वहवाली नाडयां त्यांनें रोके हियाका पवननें अर अग्निनें अर गुदाका पवननें भलेप्रकारदूषित करे आठ प्रकारका उदर रोगनें पैदाकरेछे १ अथ उदररोगको सामान्य लक्षण लिप्यते पेटमें आफरो होय चालिवाकी सामर्थ्य जातीरहे सरीर दुबलो होजाय मंदाग्नि होजाय सरीरमें सोजो होय हाडांमें फुटणीहोय मलमूत्रआच्छीतरे ऊतरे नहीं सरीरमें दाह होय येलक्षण होय तदि जाणिजे ईकें उदरको रोगछे. १ अथ उदर रोग आठ प्रकारकोछे सो लिषूंछूं. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ तिल्लीको ५ मलका बंधहोवाको ६ चोटका लागि

१. [illegible]

चाको ७ जलोदरको ८ अथ वायका वातोपरको लक्षण लिप्यते जींपुरुषके पगांके हाथांके नाभिके सोजो होय कूपिमें पसवाडामें कटिमें पीठिमें यांमें पीडाहोय. अर संधिसंधिमें पीडाहोय सूकोपास होय सरीर भार्यो होय मलउतरै नहीं सरीरकीत्वचा नप नेत्र ये कालापडिजाय पेटमें पीडाचालै आफरोहोय पेट बोलिबोकरै येलक्षण होय तदि वायका उदरको विकार जाणिजे १ अथ पित्तोदरको लक्षण लिप्यते जींमें ज्वरहोय मूर्च्छाहोय दाह होय तिसहोय कडवो मूंडोरहै भौंलि अतिसार ये सारा रोग होय अर सरीरकी त्वचा पीलि हरी होय सरीरमें पसेव आवै अरदाहहोय धूवांनेंलीयां डकार आवै त्वचाको स्पर्शकोमल होय अरत्वचा पकीसीहोय येजांमें लक्षण होय तीकै पित्तको पित्तोदररोग जाणिजे २ अथकफोदर को लक्षण लिप्यते जीकासरीरमें पीडाहोय सोवै घणो सोजो होय सरीरभार्यो होय हीयो दूपै भोजनमें अरुचिहोय. मोडो पचै सरीर ठंडोहोय अर पेट बोलिबोकरै येजीमें लक्षण होय तीनें कफोदर कहिजे ३ येजीमें सर्वलक्षण होयतीनें सन्निपातको उदररोग कहिजे ४ अथ दुस्योदरको लक्षण लिप्यते जींपुरसकीवैरी कहीत रेसूं कहीं पुरसनें सिहकानप अथवा मूंछ्का वालकहीं दुष्टजिनावरको मल मूत्र रुधिर होय अथवा जहर कहांसूं मिलिजो अन्नपानमें पुवायदे तीकै योदुस्योदर पैदा होयछै सो तीका सरीरको लोही अर वाय पित्त कफ येसाराही सरीरमें कुपित होयछै अर सन्निपातका भयंकर उदर रोगनें पैदा करै पाछै ओ उदर रोगहै सो महकादिनामें कुपित हुवोथको वे पुरसके घणोंदूपित करै मूर्च्छा करैछै. मृत्युतुल्य इनें दुष्योदर कहिजे ४ दुष्योदर त्रिदोषोदर एक

* आठ प्रकारका उदररोगछे. [illegible] रोगकहैछे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

हैछे ५ अथ ओहोदरनेफियो कहैछेतीकोलक्षणालिप्यते गरम वस्त का पावासूं अरगरम वस्तका पीवासूं दुष्ट हुवोजो लोहीसो कफ सूं फियानें ववावेछे पाछे फियोवध्योथको उदरकारोगानें पेदाकरेछे वांवापसवाडामें तदिवसेती मनुष्यहेसो सिटाय जायछे. येमनुष्य के मंदाग्निहोयजाय जीर्णज्वरहोयजाय वल जातोरहे येलक्षणहोय तदिल्लीहोदर कहिजे ५ अथ मलका वद्धगुदोदरको लक्षण लिप्य ते जोपुरसके अन्नहेसो विना सोध्योपायतीमें वाल अथवा कांक रारेत यांसूं मिल्योथको पाय तीके दोपानें लियाथका मलको संच य होय तदि ओपुरषहेसो कष्टसेती थोडोथोडो गुदाद्वारा मलनें उ तारे अरवेपुरुपका हियो अरनाभि वध जाय तीनें वैद्य वद्धगुदोद रकहैछे ६ अथ क्षतोदरको लक्षण लिप्यते जो पुरुष पापाणनें आदिले रेतसूं मिल्यो आन्नपाय तीपुरसकी आंतानें काटतोथको ओ अन्नपाणी सिरीसो होय गुदाद्वारा नीकले अर वंकी गुदा राति दिन वहवोईकरे अर वंकोपेडू वधे अरपेडूमें पीडघणीचाले ईनें क्ष तोदर कहिजे क्षतोदरअपरिस्रावी वद्धगुदोदर एकहीछे. ७ अथ जलोदरको लक्षणलिप्यते जोपुरुष घृतादिक पायो होय अथवाव स्तिकर्म कर्‍यो होय अथवा जुलाव लियो होय अथवा वमनक र्‍यो होय ईसोपुरसयां कर्मांऊपरि सीतलपाणि पीवे तोपुरसके उल नें वहवावाली नसांहेसो दूपितहोय अर स्नेहकरिके लोपांजो वेही नसां त्यांकिविसें जलोदरनें पैदा करेछे. ओसीतलजल पाछे आन लोदर पैदाहुवोथको नाभिके चोगुरदाई गोल अरचीकणो अरव ओपेथे पाणीकीमसककीनाई जलसूं भर्‍योथको तदि ओमनुष्यहै सो वेसतो घणुत तृपि होय अर येमनुष्यको सरीरकांपे येलक्षण

प. टी. [illegible]

जींमें होय तीनें जलोदरकहिजे ८ येसवेंही आठूं उदर रोग उप
जतांही कष्टसाध्यछे अरबलवान पुरसकों जित्ते जलोदर नहीं होय
तित्ते अर तत्कालकाहुवा थका जाप्यछे १ अथ उदर रोगकों अ
साध्य लक्षण लिप्यते बद्धगुदोदर होयतो एक पक्षउपरांति अ
साध्य जाणिजे अर जलोदर असाध्यहीछे २ अथ पुनः असाध्य
लक्षणलिप्यते पसवाडामें सूल चाले जींका नेत्रापर सोइ होय अर
इंद्री वाकीहोय जींका सरीरकी त्वचागलिजाय अर जींकासरीरको
लोही मांस बल जातोरहै अग्नि मंदहोय जाय ओ पुरस असाध्य
जाणिजे ३ अथ पुनः असाध्य लक्षण लिप्यते पसवाडामें सूल
चाले मानु पसवाडा टुटिगयाहोय अन्नमेंसूं रुचि जातीरहै सरी
रमें सोजो होय अवे अतिसार होय जाय अर जींको उदर रीतो
छे अर भाल्योदीपे तोउदररोगनें असाध्य जाणिजे ४

अथ वातोदरको जतनलि० दसमूलका काढामें अरंडको तेल
नापि पीवेतो वातोदर दूरीहोय १ अथवा त्रिफलाका काढामें गोमू
त्र नापि पीवेतो वातोदर जाय २ अथवा कूट दांत्युणी जवपार
पाठ सींधोलूण, संचरलूण, सांभरोलून, वच सूंठि येसराबरिले यां
नेंमिहीवांटि टंक ५ गरम जलसूं लेतो वातोदर जाय ३ इतिकुष्ठा
दिचूर्णम्. अथवा हरूपोल्योलसण टका १०० तीनेंवांटि पाणीसेर
१६ में ओटावे तीमें ओटतांही ये ओषदि नापे सूंठि टका १ अ
लीमिरचि टका १ पीपलि टका १ साजीखार टका १ संचरलूण
टका १ बिडलूण टका १ त्रिफला टका ३ दांत्युणी टका १ सहज
णाकी बकल टका १ अजवायण टका १ गजपीपलि टका १ नि
सोत टका ६ यांनेंमिहीवांटि येलसणका काढामें नापे इमें तेलसेर

म. ये उदररोग [illegible]
[illegible]
[illegible]

२ नापे पाछे ईनें मधुरीआंचसूं पकावे येसवंरस अर ओषदि व लिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईमें उतारीवासणमें भरराषे पाछे ईमें टंक ५ प्रातःकाल आपकी अग्निमाफिक पीवेतो सगला उदरका रोगजाय अर मूत्रकृच्छ्रनें उदावर्तनें अंत्रवृद्धिनें पार्श्वशूलनें आंवसूलनें अरुचिनें फियानें अष्ठीलानें हडफुटणीनें सर्ववायका रोगानें यो महिनायेकमें दूरिकरेछे. ४ अथ पित्तोदरको जतनलिष्यते जुलावका लेवासूं पित्तोतर जाय. ५ अथ कफोदरको जतन लिष्यते निसोतको चूर्ण टंक २ ऊंटणीका दूधमें नापि अर अरंडको तेलनापि टंक ५ अर इहीमें पीपलि पिपलामूल चित्रक अधेलाभरि नापि येदूधनें महीना तांई गरमकरि पीवेतो कफोदर जाय. ६ अथ सन्निपातका उदररोगको जतन लिष्यते सूंठि त्रिफला यांको काढोकरि तीमें दही अर तेल अथवा घृत नापि पकावे पाछे ओतेल अथवा घृत ईनें यो पायतो सन्निपातको उदररोग जाय ७ अथवा गरम दूधमें अरंडकोतेल अर गोमूत नापि पीवेतो वायको उदररोग जाय. ८ अथवा छाछीमें संचरलूण पीपलि नापि पीवेतो वातोदर जाय. ९ अथवा मिश्री कालिमिरचि येजलसूं पीवेतो पित्तोदरजाय. १० अथवा अजवायण झाउरूपकी जड जीरो सूंठि कालीमिरचि पीपलि यानें वांटि टंक ५ गरम पाणीसूं लेतो कफोदर जाय. ११ अथवा सूंठि कालिमिरचि पीपलि जवषार संचोलूण यानें वांटि टंक ५ गरम पाणीसूं पीवेतो सन्निपातको उदररोग जाय. १२ अथ नागपणचूर्ण लिष्यते अजवायण झाउरूपकी नहन्ने धणां त्रिफला पीपलि कालोजिरो अजमोद पीपलामूल वायविडंग येसर्व वरावरिले दांतुणी येक ओषदीका हिस्सासूं तिगुणीले नि

[illegible]

सोत एक औषधिका भागसूं दूणीले इंद्रायणएक औषदिका भागसूं दूणीले थोहरीकोदूध सर्वसौं चौगुणोले यांसारानें मिहीवांटि थोहरीका दूधकी ईंके पुट १ दे पाछै सुकाय टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ उदरका रोगांनैं वायका रोगांनैं दूरिकरै अर ईंवोरकी वकलका काढासूं लेतौ गोलाको रोगजाय ईनैं दारूसूं लेतौ आफराकोरोग जाय अर मठासू लेतो बंधकुष्ठ जाय अर ईनैं दाडयूंकारस कैसाथि लेतौ बवासीर जाय गरम पाणीसूं लेतौ अजीर्णजाय अर यो भगंदरनैं पांडुरोगनैं षासीनैं सासनैं क्षयीरोगनैं संग्रहणीनैं कोढनैं मंदाग्निनैं विसमात्रनैं यो चूर्ण दूरिकरैछै जैसे भगवानकासुदर्शन चक्रदैत्यांनैं मारै तैसेतो नारायणचूर्ण यां रोगांनैं दूरिकरैछै. १३ इति नारायण चूर्णम्. अथवा थोहरीकोदूध दांत्युणी त्रिफला वायविडंग कट्याली चित्रक कूकर भांगरो येसारासेर २ ले यांसूं चौगणो पाणीवाले अर ईमैं सेर १ गऊको घृत नाषै पाछै मधूरैं आंचसूं ईनै पकावै येसारावलि जाय घृतमात्र आयरहै तदि ईनैं उतारि पात्रमैं घालि राषै पाछै ईनैं टंक २ लेतौ जुलाबलागि उदरकारोगांनैं दूरिकरै १४

इति नारायणघृतम्. अथवा साठीकी जड दारुहलद कुटकी पटोल हरडैकीछालि नींवकीछालि देवदार सूंठि गिलवै येसर्व बरावरिले यांनैं जौकूटकरि टंक ५ को रोजीना काढोले तींकाढामैं गोमूत अरगूगल नाषि रोजीना पीवैतौ कफोदर पसवाडाकीसूल सास पांडुरोग ये सारा जाय १५ इति पुनर्नवादिकक्वाथः येसारा भावप्रकासमछै. अथवा अजवायण टका १४ सेक्योसुहागो टका २

---

* इंद्रायण, कटुवृंदावन. तूंबो गडतूंबो तसतूंबो इंद्रवारुणी, यहनाम प्रसिद्धछै. ईंकीवेल धरतीऊपरपसरैछै. मतीरा,तथा कलिंग सरीसांवेल, पान, फल होयछै. परंतु मतीरासूंपान फलछोटाहोयछै, कडवीघणीछै, ईंकोगुणरचनादिकनेंविशेषछै. उदरविकारनैं उत्तम औषधी ईंकाफलमैं अजवायण भरकर सुकायांपाछै. गरम जलसूं फांकीलीयां पेटपीडमीटै.

यांको चूर्ण करि टंक २ गरम पाणीसूं लेतो उदरका रोगजाय. १६ अथवा पीपलि टका ५ तानें थोहरीका दूधमें दिन ७ भेवे रोजीना सुकाय छायामें पाछे यानें मिहीबांटि मासा ४ जलसूं येकदिनका आंतरासूंले ईऊपरि छाछि चावल पायतो उदरको रोगजाय. १७ इति उदरामयचूर्णम्. अथवा पीपलि १००० तींके थोहरीका दूध की पुट ७ दे अथवा हरडेका चूर्णके थोहरीका दूधकी पुट ७ देतानें टंक १ गोमूतसूं लेतो सर्व उदरका रोगजाय १८ अथवा दांलूणी पीपलि सूंठि ये बराबरिले अर चोपथांसारांसूं दूणोले विडलूण यांसूं चौथाईले पाछेयानें मिहीबांटि टंक १ गरमपाणीसूं लेतो फि यानें गोलानें मंदाग्निनें पांडुरोगनें यां सारांनें यो दूरिकरैछे १९ अथवा आकका पानानें अर सींधोलूण मटकीमें घालि वेंका मूं डानें टांकि फूंकिदे पाछे यानें बांटि टंक ५ रोजीना छाछिसूंले अ थवा गवारका पाठासूंले तो उदरका रोगजाय २० अथवा सूंठि गुड अथवा गुडहरडे अथवा गुडपीपलि यानें टंक २ रोजीना पा यतो उदररोगनें सोजानें पीनसनें पासनें अरुचिनें जीर्णज्वरनें बवासीरनें संग्रहणीनें कफका अर वायका रोगांनें इनें सर्वांधका यारोगांनें दूरिकरैछे. २१ ये साराजतन वैद्यरहस्यमें लिप्याछे. अथ जलोदरको जतन लिप्यते नीलोथूथो गंधक पीपलि हरडेकी छालि ये बराबरिले यानें मिहीबांटि यानें थोहरिका दूधनें दिन ५ परलकरै पाछे फिरमाळाकी गिरिका रससूं दिन ५ परलकर पाछे ईनें मासो १ रोजीना गरम पाणीसूं लेतो जलोदर जाय ईऊपरि चावल पाय ऊपरि आमिलीको सरबत पीवै. २२ इति उदरारि रसः यो जोगतरंगिणीमेंछे. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि यां

[illegible]

सोत एक औषदिका भागसूं दूणीले इंद्रायणएक औषदिका भागसूं दूणीले थोहरीकोदूध सर्वसौं चौगुणोले यांसारानैं मिहीवांटि थोहरीका दूधकी ईंके पुट १ दे पाछे सुकाय टंक २ गरम पाणीसूं लेतौ उदरका रोगांनैं वायका रोगांनैं दूरिकरै अर ईंबोरकी बकलका काढासूं लेतौ गोलाको रोगजाय ईंनैं दारूसूं लेतौ आफरकोरोग जाय अर मठासू लेतौ बंधकुष्ठ जाय अर ईंनैं दाडयूंकारसकैसाथि लेतौ ववासीर जाय गरम पाणीसूं लेतौ अजीर्णजाय अर यो भगंदरनैं पांडुरोगनैं षासीनैं सासनैं क्षयीरोगनैं संग्रहणीनैं कोढनैं मंदाग्निनैं विसमात्रनैं यो चूर्ण दूरिकरैछै जैसे भगवानकासुदर्शन चक्रदैत्यांनैं मारै तैसेतो नारायणचूर्ण यां रोगांनैं दूरिकरैछै. १३ इति नारायण चूर्णम्. अथवा थोहरीकोदूध दांत्युणी त्रिफला वायविडंग कटयाली चित्रक कूकर भांगरो येसारासेर २ ले यांसूं चौगणो पाणीवाले अर ईंमैं सेर १ गऊको घृत नाषे पाछै मधूरी आंचसूं ईंनै पकावै येसारावलि जाय घृतमात्र आयरहै तदि ईंनैं उतारि पात्रमैं घालि राषै पाछै ईंनैं टंक २ लेतौ जुलावलागि उदरकारोगांनैं दूरिकरै १४

इति नारायणघृतम्. अथवा साठीकी जड दारुहलद कुटकी पटोल हरडैकीछालि नींबकीछालि देवदार सूंठि गिलवै येसर्व बराबरिले यांनैं जौकूटकरि टंक ५ को रोजीना काढोले तींकाढामैं गोमूत अरगूगल नाषि रोजीना पीवैतौ कफोदर पसवाडाकीसूल सास पांडुरोग ये सारा जाय १५ इति पुनर्नवादिकक्वाथः येसारा भावप्रकासमछै. अथवा अजवायण टका १४ सेक्योसुहागो टका २

* इंद्रायण, [illegible] यहनाम प्रसिद्धछै. ईंकीवेल धरतीऊपरपसरैछै. [illegible] पांन, [illegible] होयछै. परंतु मतीरासूंपान फलछोटाहोयछै, कडवीघणीछै, ईंकोगुणरेचनादिकमेंविशेषछै. उदरविकारनैं उत्तम औषधी ईंकाफलमैं अजवायण भरकर सुकायांपाछै. गरम जलसूं फांकीलीयां पेटपीडमीटै.

यांको चूर्ण करि टंक २ गरम पाणीसूं लेतो उदरका रोगजाय. १६ अथवा पीपलि टका ५ तांनैंथोहरीका दूधमें दिन ७ भेवे रोजीना सुकाय छायामें पाछे यांनें मिहीवांटि मासा ४ जलसूं येकदिनका आंतरासूं ले ईंऊपरि छाछि चावल पायतो उदरको रोगजाय. १७ इति उदरामयचूर्णम्. अथवा पीपलि १००० तांकें थोहरीका दूध की पुट ७ दे अथवा हरडेका चूर्णकें थोहरीका दूधकी पुट ७ देतीनें टंक १ गोमूतसूं लेतो सर्व उदरका रोगजाय १८ अथवा दांत्यूणी पीपलि सूंठि ये बराबरि ले अर चोपयांसारांसूं दूणीले विडलूण यांसूं चौथाईले पाछेयांनें मिहीवांटि टंक १ गरमपाणीसूं लेतो फि यांनें गोलानें मंदाग्निनें पांडूरोगनें यां सारांनें यो दूरिकरेछै १९ अथवा आकका पानानें अर सींधोलूण मटकीमें घालि वेंका मूं डानें टांकि फुंकिदे पाछे यांनें वांटि टंक ५ रोजीना छाछिसूं ले अ थवा गवारका पाठासूं ले तो उदरका रोगजाय २० अथवा सूंठि गुड अथवा गुडहरडे अथवा गुडपीपलि यांनें टंक २ रोजीना पा यतो उदररोगनें सोजानें पीनसनें पासनें अरुचिनें जीर्णज्वरनें ववासीरनें संग्रहणीनें कफका अर वायका रोगांनें ईनें सर्वांथका यांरोगांनें दूरिकरेछै. २१ ये साराजतन वैद्यरहस्यमें लिप्याछै. अथ जलोदरको जतन लिप्यते नीलाथूथो गंधक पीपलि हरडेकी छालि ये बराबरिले यांनें मिहीवांटि यांनें थोहरिका दूधमें दिन ८ परलकरे पाछे फिरमालाकी गिरिका रसमें दिन ८ परलकरे पाछे ईनें मासो १ रोजीना गरम पाणीसूं लेतो जलोदर जाय ईउपरी चावल पाय ऊपरि आमिलीको सरबत पीवे. २२ इति उदरारि रसः यो जोगतरंगिणीमेंछै. अथवा सूंठि कालीमिरचि पीपलि पां

की सोईको लक्षण लिष्यते सरीर त्वचा कोमल होय जीमैंक्यूं गंधनैं लीयाहोय पिली होय ललाईनेंलीयां होय सरीर भ्रमैं ज्वर होय पसेव घणाआवे तिसघणीलागे मंदहोय आवे शरीरकोस्पर्श सुहावे नहीं नेत्र लाल होय शरीरकी त्वचामैं दाह घणो होय ये लक्षण होय तींनैं पित्तकीसोई कहिजे. २

अथ कफकीसोईको लक्षण लिष्यते जींके सोईसें सरीर भारयो होय अर चामडी पीलीहोय भोजनसूं रुचि जातीरहै नींद घणी आवे-अग्नि मंदहोय सोईऊंची नहीं होय रात्रिनें वधिजाय ये लक्षण जींमैं होय तीनें कफकी सोई कहिजे. ३ अर दोयदोय दोसांका जींमैं लक्षण होय तींमैं दोयदोय दोसांकी सोईकहिजै वातपित्तकी ४ वातकफकी ५ कफपित्तकी ६ अरजीसोईमैं सर्वदोसाका लक्षण मिलै तींनैं सन्निपातकी सोईकहिजै ७ अथ चोटलागिवासूं उपजीजो सोई तींको लक्षण लिष्यते शस्त्रादिकका लागिवासूं उपजी जो सोई अथवा सीतपवनका लागिवासूं उपजी अथवा दहीकापावासूं उपजीजो सोई अथवा भिलावाकालागिवासूं उपजीजोसोई अथवा कौंछिका लागिवासूं उपजीसोई अथवा जमीकंदनें आदिलेरतींका लागिवासूं उपजीसोईसो वायेक जागांकी सोई सारा सरीरमैं फैलिजाय अर वेसोईमैं दाह घणो होय लालहोय आवे और पित्तका सर्व लक्षण मिलै ये लक्षण जींमैं होय तींनैं शस्त्रादिकका लागिवाकी सोई जाणिजे ८ अथ विसेल जिनावरादिकाते उपजी जो सोई तींको लक्षण लिष्यते विसेल जिनावरांका मूत्रका स्पर्श करिवासूं

----

* न. टी. सोथरोगसरीरको नाशकारकछै. शरीरकी [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] स्थूलकरैछै महादुष्टव्याधिछै. ईवास्ते वैद्यजीवनग्रंथमैं. लोलिंबराजमैं, रत्नकलामैं कहीछै.सुंठ, चिरायतो कुटकी. यांकोचूर्ण समभागको मासा १० गरमपाणीमैं फांकीदेणी. अथवा पाढ हलद, रिंगणी, नागरमाथो, जीरो, पीपल, पीपलामूल, चवक, चित्रक सुंठ. ये समभाग चूर्ण [illegible] फांकिलेतो सोजोजाय.

सोई होय अथवा डाडका लागिवासूं सोईहोय दांताका काठिवासूं सोईहोय नपका लागिवासूं सोई होय विसेल जिनावरांका मल मूत्र वीर्य येवस्तांका स्पर्शकयां सोई होय विसवृक्षका पवनका स्पर्शकयांसूं सोई होय जहरका पावासूं अथवा लागिवासूं सोई होय त्यांको यो लक्षण वेसोईमें पीडा घणीहोय सरीरमें घणीफैलि जाय दाह घणो होय. तदि जाणिजे याविसकीसोईछे ९ अथ सोईका उपद्रवलिप्यते पासहोय तिसहोय छर्दिहोय सरीर दुर्बल होय ज्वरहोय भोजनमें रुचि जातीरहै ये सोईका उपद्रवछे याउप द्रवांवालाको जतन कीजे नहीं १ अथ सोईवालाको कष्टसाध्य ल क्षण लिप्यते पेडूसूंलेर स्तनाताई सोई होय वा कष्टसाध्यछे अर सर्व सरीरमें सोई होय वा सोई असाध्यछे. २ अथ पुनः असाध्य लक्षण लिप्यते पुरसकेतो प्रथम पगांसूं लेर मुपउपर तांई सोई चालै स्त्रीके प्रथम मुपकी सोई होय अर पगांताई आवे वा सोई असाध्यछे. ईको जतनछे नहीं अर प्रथम पेडूमें होय अर सर्वत्र फैलै वासोई वादोन्यांके असाध्यजाणिजे. ३ अथ सोथरोगको ज तनलिप्यते. सूंठि साठीकीजड अरंडकीछालि पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक यांको काढो लेतो वायको सोजो जाय १ पटोल त्रि फला नींबकीछालि दारुहलद यांको काढो गूगल नापि लेतो पित्त की सोईनें तिसनें ज्वरनें यांओपधांको काढोदूरिकरैछे. २ काली मकोकारसमें साठीकी जड वांट लगावैतो सोजो जाय ३ अथ क फकी सोईको जतन लिप्यते पीपलानें अथवा हरडैनें थोहरीका दूधमें भिजोय दिन ३ पाछेयानें सुकाय निहिचांटि टंक २ रोजीना दिन १० लेतो सनिपातकी सोई जाय ४ अथ मिलावाकी सोई

४. [illegible]

को जतन लिष्यते तिल अर कालीमाटी भैसका दूधमैं तथा भैंसि
का माषनमैं वांटि यांको लेपकरैतौ भिलावाकी सोई दूरिहोय
अथवा महलौटी कालातिल भैसिको दूध अर भैसिको माषन तां
यांनैं वांटि यांको लेपकरैतौ भिलावाकी सोई जाय ६ अथवा स
लवृक्षका पानाको लेपकरैतौ भिलावाकी सोई जाय ७ अर विसकं
सोईका जतन विषका प्रकर्णमैं लिषस्यां अथ सोथरोगका साम
न्य जतनालिष्यते हरडैकीछालि हलद भाडंगी गिलवै चित्रक दार
हलद साठीकीजड सूंठि यांको काढोलेतौ उदरकी पगाकी मूंढाकं
सोई ततकालजाय ८ इति पथ्यादिक्काथः अथ पोताकी सोईको ज
तन लिष्यते त्रिफलाका काढामैं गोमूतनाषि पीवैतौ पोताकी सोई
जाय ९ अथवा विषषापरीकी जड देवदारु सूंठि यांका कादास्
सोई जाय १० अथवा दांत्युंणी निसोत सूंठि कालीमिरचि पीपलि
चित्रक यांको काढो लेतौ सोई जाय ११ अथवा सोनामुपी विष
षापरो नींबकी छालि गोमूत यांको काढो लेतौ सोईजाय १२ अ
थवा साठीकीजड दारुहलद सूंठिसहजणाकीजड सरस्यूं यांनैं कां
जीका पाणीसूं वांटि क्यौं गरम करि लेपकरैतौ सर्व सोइमात्र दूरि
होय १३ अथवा गुड आदो अथवा गुडसूंठि अथवा गुड हरडैकी
छालि अथवा गुड पीपलि यांनैं मिहीवांटि टंक २ सूंलेर टका १
भरतांई वधतीषाय महिनायेक १ ताईतौ सोजानैं पीनसनैं गला
कारोगनै सासनैं षासनैं अरुचिनै जीर्णज्वरनैं ववासीरनैं संग्रहणी
नैं कफवायका विकारनैं यांसारा रोगानैं यो दूरिकरैछै. २४ अथ
वा पीपलि सूंठि यांनैं मिहीवांटि यांवराबरि गुडमिलाय षायतौ
सोजानैं आंवनैं अजीर्णनैं सूलनैं यांनैं दूरि करैछै. २५ अथवा

न. टी. जंगमविष छै. ज्यांमैं भीसोथकी अधिकता छै. अरस्थावरविष छै. ज्यांमैं बीविष छै. जीं सैंसोथ होयछै. जैसे भिलावाकाप्रसंगसौं अरभिलावाकावृक्षकी छायामैंरहैतौ छरीरमैंसोथ होय जावेछै. ईयानयांका. डंकसौं. पानसौं. पानसौं. स्पर्शसौं. विषकोसोथ होयछै.

गुडटका ३ भर सूंठिटका ३ भर पीपलिटका ३ भर मंडूर टका १ भर तिलटका १ यांसारांनें मिहींवांटि यांको येकजीवक रि पाछे टंक २ रोजीना पायतों सर्वप्रकारकी सोइ जाय. १६ अथवा सूकी मूली साठीकीजड दारुहलद रास्ना सूंठि यांको काढोकरिईर समें तेलपकायले पाछे ईतेलको मर्दन करेतो मूलसंयुक्त सोई जाय १७ येसर्व जतन भावप्रकासमें लिष्याछे. अथ सोजाका दाहका दूरि होवाको लेप लिष्यते वेहडाकीमींजीनें पाणीमें वांटि येंको लेप करेतो सोजाका दाहको दोस दूरि होय. १८ अथवा साटीकीजड दारुहलद गिलवे पाठ सूंठि गोपरू येवरावरिले यांनें मिहींवांटि टंक २ गोमूत्रसूं पीवेतो सर्वप्रकारको सर्वसरीरमें फेल्यो सोजो जाय अर इसूं आठ प्रकारको उदररोग जाय अर ईसूं व्रणमात्र जाय १९ इति पुनर्नवादि चूर्णम् अथवा साटीकीजड नींवकी छालि. पटोल सूंठि कुटकी गिलवे दारुहलद हरडेकी छालि यांको काढो लेतो सर्वांगसोथनें पासनें उदररोगनें पांडुरोगनें यांसारां नें योदूरि करेछे. २० इति पुनर्नवादिकाथः इतिसोथ नाम सोजा कारोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ वृद्धि रोगछे त्योंकी कर्मे अंडवृद्धि अर अंत्रवृद्धिरोग कहेछे तींकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते अंडवृद्धि ६ प्रकारकीछे. वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ मेदको ५ मूत्रको ६ अंडवृद्धि येक प्रकार हो वायको १ अथ अंडवृद्धिका सामान्य लक्षण लिष्यते अधोगामी जो पवन है सो आपका कारणासूं कुपित हुवोथको आंटामें अर आंतांकी सं ध्यांमें प्राप्ति होय अर ऊठही विचरतोथको उठे सोजानें अरलकीं करे पाछे वांनीनवा अंडानें अर आंडाकी पालका मंडाणनें वद

१. टी. [illegible]

वावालीजो नसातीमैं ओदुष्टपवन प्राप्तिहोय वांनसांनैं पीडितकरै अर वा दोन्या अंडानैं अर दोन्यां आंडाका भंडारयांनैं वधाय देवै छै तीनैंवैद्य अंडवृद्धिकहैछे. १

अथ वायका अंडवृद्धिको लक्षणलि० वायकरिकै भरीएसीजो लुहारकी धमनी तींकोसो स्पर्शहोय अरलुषी होय अर विगर कारणहीं वेमैं पीडा होय तीनैं वायकी अंडवृद्धिकहिजे १ अथ पित्तकी अंडवृद्धिको लक्षणलि० पक्यो जोगुलरीको फल तींसरीसो सोजो होय अर वेमैं दाह होय तीनैं पित्तकी अंडवृद्धिकहिजे. २ अथ कफकी अंडवृद्धिको लक्षण लि० जो अंडवृद्धिसीतलहोय अर भारी होय अर चीकणी होय अरजीमैं षुजालिहोय अर करडीहोय अर वेमैं पीडथोडी होय तदि जाणिजे या अंडवृद्धि कफकीछै. ३ अथ लोहीकादुष्टपणाकी अंडवृद्धिको लक्षण लिष्यते कालीहोय फोडा जीमैं घणाहोय अर पित्तकी वृद्धिका जीमैं लक्षण मिलै तीनैं रक्तदुष्टकी अंडवृद्धि कहिजे. ४ अथ मेदकी अंडवृद्धिको लक्षण लिष्यते सर्व कफकासा जीमैं लक्षण होय अर कोमलजो ताडको फल तींसिरीसो होय तींनैं मेदकी अंडवृद्धि कहिजे. अथ मूत्रका रोकिवाका अंडवृद्धिको लक्षणलि० जोपुरुष मूत्रका वेगनैं रोकै अरमारगमैं चालैतींको मसकसरीरसो कोमल अंड वधै अर वेमैपीड होय अर मूत्र कष्टसूं ऊतरै तिनैं मूतकारोकिवाका अंडवृद्धि कहिजे ६ अथ अंत्रवृद्धिकी उत्पत्ति लक्षणलि० ज्यांवस्तांसूंवातहै सो कोपकूं प्राप्तिहोय इसातो भोजनकरै अर सीतल जलमैंतिरैजुद्धमैं ऊवोरहै तीसूं भारका उठावासूं मार्ग चालिवासूं अंगांकूंअठींउठी करिवासूं

न: टी. कडवी गिलवै गिलोय, नीमगिलोय गलो गडुची, गुलवेल इतनातो नामप्रसिद्धछे. वलडी होयछे. पानमोटा नागरवेलकापानासिरीसा होयछे. जामैंक्युंयेकफारकछे. लकडी जाडी होयछे. मोटावृक्षऊपरचढेछे लंबी बहुतहोयछे नींबका वृक्षऊपरकीमैं गुण अधिकछे. लकडी माहींसुं सत्वनीकलेछे. सोगिलोयसत्वउत्तम औषधीछे.

ओर कोई भयंकरवस्तका करिवासूं यां कारणासूं पवनहैसो संकुचितहोय सरीरकीछोटी आंतांकाअवयवांनें आपका स्थानथको नीचे प्राप्तिकरे पेडू अर जांघा तींकी संधिमें आफरोकरे अर उठे पीडाकरेपाछे मनुष्य हे सो हाथसूं अंडानें भींचे तदि ओ आंडचालि आपका स्थानस्थानमें बेठिजाय अर ओरूं कहितरे आफरा होय तदिवारे नीकली आवे अर जींपुरसके वायको संचय घणोहोय तींके आंतां अवयवमिली अंत्रवृद्धिनें करिलेवेछे. ओ अंत्रवृद्धिवायकी वृद्धिकी तुल्यछे. यो अंत्रवृद्धिरोग असाध्यछे. ७ अथ अंडवृद्धिको जतनलि० पाणीकी वृद्धिको पाणी कढायांसूं जायछे. १ मेदको चर्बीकढायां जायछे २ दूधमें अरंडकोतेलनापि महिना पेकतांई पीवेतो वायकी अंडवृद्धिजाय ३ अथवा गूगल अरंडकोतेल येदोन्यूं गोमूतसूं पविेतो पित्तकी अंडवृद्धिजाय ४ अथवा रक्तचंदन महुवो कमलगट्टा पस कमलकीजड यांनें बराबरिले पाछे यांनें दूधसूं मिहीवांटि उठेलेप करेतो पित्तकी अंडवृद्धिनें दाहनें पीडानें यो लेप दूरिकरेछे ५ अथवा सूंठि कालिमिरच पीपलि त्रिफला यां कोकाढोले तांमें जवषार सींधोलूण नापिपीवेतो कफकी अंडवृद्धि दूरिहोय ६ अथवा कडवीतूंबी लूर्पायांवस्तांको सुहावतो सुहावतो सेककरे अरयांकापाणीको तरडो देतो सर्व प्रकारकी अंडवृद्धिजाय ७ अथवा वारंवार उठे जोकलगायउठाको लोही कढावो करे तो रक्तका कोपको अंडवृद्धिजाय ८ अथवा जुल्लाबसूं रक्त की अंडवृद्धिजाय ९ अथवा मिश्री सहत पाणीमें नापि पीवेतो रक्तका कोपको अंडवृद्धिजाय १० अथवा सीतल द्रव्यका लेपनसूं रक्त अर पित्तको अंडवृद्धिजाय ११ अथवा तुलसीका पानानें [illegible]

[illegible]

वतौ लेप करैतौ मेदको अंडवृद्धिजाय १२ अथवा गोसो उत्तरगयो होय तींको आछ्यो होवाको औषदि लिष्यते. भेडीको घृत कांसीकी थालीमैं मथै तींमैंरालमिलावै पाछै औरूमथै पाछैवेमैं क्यूंशीगीमो हरो मिलावै पाछै ईको गोसाकै मर्दन करैतौ गोसो आछौ होय १३ औषदि अंडवृद्धिकी पैरीको गूंद टंक १५ वच टंक १० सूंठि टंक१५ गऊको दूध पैसा ८ तींमैं सालिममिश्री पईसा ८ भरमिलाय टंक ४ रोजीनादिन २१ ताई अंडाकौ लेपकरैतौ अंडवृद्धिजाय १४ अथवा आंडाकी सीमणीका पसवाडाके नीचे मिही वस्त्रकरिवेंनैं बांधै तौ मूत्रको अंडवृद्धिजाय ये सर्वजतन भावप्रकासमैंछै. अथवारास्ना महलौठी गिलवै अरंडकीजड परैटी किरमालाकीगिरी गोपरू पटोल अरडूसो यांकोकाढो करैतीमैं अरंडको तेल नापि पीवैतौ अंत्रवृद्धिजाय १६ अथवा हरडैकीछालि चिरायतौ घणौ येसारी पैसा पैसा भरिले लवंग पैसापोण भरिले सोनामुषी टका १ भर मिश्रीयांसारांकी बराबरिले अर मिश्रीबराबरि सहत मिलाय रोजीना टंक २ षायतौ निश्चै अंडवृद्धि दूरिहोय १७ ये वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै इति अंडवृद्धिअंत्रवृद्धिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथ वध्मरोग ईनैं लौकीकमैं वद कहैछै. तींकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते घणीभारी घणी कफकारी वस्तषाय अथवा भाषा मांसका षावासूं अथवा पित्तकारी मिथ्याविहार स्त्रीसंगसूं कुपीत हुवोजो पित्तसंयुक्त वायसो पेडू अर जांघ तींकी संधिमैं सोजानैं लीयां गांठिनैंकरैछै. वागांठी ज्वरनैं अर सूलनैं करै अरपगांमैं पाडाकरैछै तीनैं वैद्य हैसो वध्म रोग ईनैं लौकीकमैं वद कहैछै १ अथ वदको जतनलिष्यते हरडैकी छाली पीपली सींचोलूण येवरा

न. टी. अंडवृद्धिरोगमैं जोमुत्रकोरोगछै. जीनैंतौनस्तरसूं पाणीकाढैतौ तत्काल आराम होयछै. अर मेदको वृद्धिरोगछै. जीनैं नस्तरसौं कुशल वैद्यहैसो चीरके चरबीकाढै जद आराम होयछै अर अंत्रवृद्धिरोग असाध्यछै. जीनैं दाबैतौ बडो येकाविळक्षणशब्दकरैछै.

वरिले यानें मिहीवांटि यानें अरंडका तेलमें भूनेपाछे टंक २ यानें पायतों वदको रोगजाय १ अथवा जीरो झाडरूपको वकल कूठ गोहूं बोरकापान यानें कांजीका पाणीमेंवांटि वदके लेप करेतो वद को रोगजाय २ ये भावप्रकासमें लिप्याछे. अथवा तत्कालको मा ख्योजो कागलो तीके माहिलो मलले तींनेंस्थूंयेक गरम करि वद के बांधे अथवा लेप करेतो तत्काल वद आछोहोय ३ यो वैद्यरह स्यमें लिप्याछे. अथवा कुंदरू भेडीका दूधमें वांटि वेके लेप करेतो वद आछोहोय ४ इति वदरोगकीउत्पतिलक्षणजतन संपूर्णम्. अथ गलगंड १ गंडमाला २ अपची ३ ग्रंथि ४ अर्बुद ५ यां रोगांकी उत्पति लक्षण जतनलि० जींपुरसका गलाके आंडकोसीनाई गा ढो सोजो होय लटके ओ सोजो वडो होय अथवा छोटो होय तीनें वैद्यहेसो गलगंडरोग कहेछे. अथ गलगंडको सामान्य लक्षणलि प्यते वाय अर कफ ये दोन्युं गलामें दुष्टहोय अर गलाके वीचि मेदनें पकडि सनें सनें मेदनें अंडकीसीनाई आपकाचिन्हांनें लेप चायदेछे तीनें गलगंड कहिजे सो गलगंड तीन प्रकारकोछे. वा यको १ कफको २ मेदको ३ अथ वायका गलगंडको लक्षण लि प्यते जींमें पीड घणीहोय अर गलाकीनसां काली होय अथवा लालहोय अर वामें कठोरपणो होय अर मोडोवधे अर पचे नहीं अर मूंढो विरस होय जाय अर वेंको ताल्वो अर गलो लप्यो सो दीसे कलकरिके येजींमें लक्षण होय तीनें वायको गलगंड क हिजे १ अथ कफका गलगंडको लक्षणलिप्यते गलाके आंडकी सीनाई लटकतो सोई स्थिररहै. अर भारीरहै अरवेमें पुजालि प णीआवे अरयामीतल होय अरनोईवर्णे अर मोटोपीड अर जेने

[illegible]

पीडकम होय अर वेंको मूंढो मीठो होय अर तालवो अरगलोक फसूं लीप्योंदीसै तीनैंकफको गलगंड कहिजै २ अथ मेदका गलगंडको लक्षणलि० ओचीकणोहोय कोमलहोय पीलो होय अर वेमैंपुजालि होय अर वेमैं पीडहोय अरगलाकी संधिमैं घीयाकी सांनाई लटकै अर वेंकी जड थोडीहोय अर वेंका देहका अनुमानमाफिक घटै वधै अर वेंकी मूढोचीकणो होय अरओगलाहीमैंबोलै येलक्षण जींमैंहोय तीनैं मेदको गलगंड कहिजै. ३ अथ गलगंडको असाध्यलक्षणलि० जंकै सास नीठी आवै अर वेंको सर्व सरीर कोमल होजाय अरओवरस एक उलंघि जाय अर भोजनमैं रुचि जातीरहै अर सरीरक्षीण पडिजाय अर स्वर आछ्यो नीकलै नहीं ओगलगंडवालो असाध्यजाणिजै ४ अथ कंठमालाको लक्षणलि० जींकागलाकै अथवा कांपकै अथवा कांधांकै अथवा पेडूकी अर जांघांकी संधिमैं बोरप्रमाण अथवा आंवलाप्रमाण मेद कफकी घणीगाढी गांठि पडिजाय तीनैं वैद्य गंडमालाको रोग कहेछै १ अथ अपचीको लक्षणलिष्यते अरवाहीगंडमाला घणांदिनकी होजाय अर वेमैं येलक्षण होय वा गांठि पकिजाय अर वेमैं राधिघणीपडि कारि वहनीकलै अर वैऊंठेही पैदा होतीजाय अर मीटतीभीजाय अर दिन वेमैं घणालागै तीनैं वैद्य हैसो अपची कहेछै १ अथ अपचीको असाध्यलक्षणलिष्यते पसवाडामैं सूलहोय घासहोय ज्वरहोय अर वमन होय येलक्षण होयतो असाध्य जाणिजै १ अथ ग्रंथि जीनैं गांठि कहेछै. तांको लक्षणलिष्यते वाय पित्त कफ हैसो लोहीनैं मांसनैं मेदनैं नसांनैं दू

---

* वदरोगछै. जीनैं लोकीकमैं वदकी गांठकहेछै. योरोग वहुधा गरमीका आनारथी होयछै. कोई कोई मनुष्यकै एक एक तरफ काउमैं घणी मोटी लंबीसारखी गांठहोयछै. कोई कोईकै दोयतरफहोयछै. ईंकै छेपादिक तथा पटी वहुत प्रकारकीछै. परंतु काची गांठकै, सो गावणी घणी श्रेष्ठछै.

पितकरे अर गोल ऊंची सोइनें टीयां ऐसी जो गांठि तीनें पेदाक रेछे. सो इनें वैद्य ग्रंथिनाम गांठि कहेछे. सो यागांठि पांच ५ प्रकारकीछे वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ मेदकी ४ नसांकी ५ अथ वायकी गांठिको लक्षण लिप्यते प्रथम वा गांठि चामडानें पेंचिकरि वडीहोय पाछे वेमें चटका चाले. पाछे वेमें व्यथा घणीहोय अर वा फूटे जदि निर्मल लोहीनें वहे १ अथ पित्तकी गांठिको लक्षण लिप्यते येगांठिमें अग्नि वणीवले दाह होय अर धूवोंनी सखां जिस्यो लागे सींगडासूं पेंछे जीसी पीड होय लाल रंगकी पाके वा पीली होय फूटे जीनें रक्त घणोनीकले २ अथ कफकी गांठको लक्षण लिप्यते वा गांठि सीतल होय जींको वर्ण औरसो होय जींमें अल्प पीडा होय पुजालिजीमें घणीहोय पथरसिरीसी गांठि होय मोडी वधे वा फूटे जदि जाडी राधि नीसरे लोही नहीं नीसरे येलक्षण जीमें होय तीनें कफकी गांठि कहिजे ३ अथ मेदकी गांठिको लक्षणलि० जींसरीर माफिक यागांठि वधेघटे वागांठिचीकणी होय अर वडी होय पुजालि होय वेमें पीडघणीहोय अर वा फुटे तदि पलसिरीसो घृतसिरीसो वेमें नीकले तीनें मेदकी गांठि कहिजे. ४ अथ नसकी गांठिको लक्षणलिप्यते वागांठि निर्बल पुरसके पेदमूं ऊपजे नसांनें संकोचकरे वायगांठिनें उपजावे वा गांठि ऊंचि अर गोल होय अर वेमें पीडा होय अर कोमल होय अथवा करडीहोय पीडाभीनहीहोय अर यागांठि मर्मस्थानमें होयतो निश्चेही असाध्यछे अर नहीतो यागांठि कष्टसाध्यछे ५ ये मर्मस्थानभीलिषूंछूं. गाल गलो कांधो सरीरकी संधि होयां गुदाके निकटि पीठि येमर्मस्थानछे. अथ अर्बुद रोगकी उत्पत्ति लक्षणलि

[illegible]

पीडकम होय अर वेंको मूंढो मीठो होय अर तालवो अरगलोक फसूं लीप्योदीसै तीनैंकफको गलगंड कहिजे २ अथ मेदका गल गंडको लक्षणलि० ओचीकणोहोय कोमलहोय पीलो होय अर वे मैंषुजालि होय अर वेमैं पीडहोय अरगलाकी संधिमैं घीयाकी सी नाई लटकै अर वेंकी जड थोडीहोय अर वेंका देहका अनुमानमा फिक घटै वधै अर वेंकी मूंढोचीकणो होय अरओगलाहीमैबो लै येलक्षण जीमैंहोय तीनैं मेदको गलगंड कहिजै. ३ अथ गलगं डको असाध्यलक्षणलि० जींकै सास नीठी आवै अर वेंको सर्व सरीर कोमल होजाय अरओवरस एक उलंघि जाय अर भोजन में रुचि जातीरहै अर सरीरक्षीण पडिजाय अर स्वर आछ्यो नीकलै नहीं ओगलगंडवालो असाध्यजाणिजे ४ अथ कंठमा लाको लक्षणलि० जींकागलाकै अथवा कांषकै अथवा कांधीकै अथवा पेडूकी अर जांघांकी संधिमैं बोरप्रमाण अथवा आंवला प्रमाण मेद कफकी घणीगाढी गांठि पडिजाय तीनैं वैद्य गंडमा लाको रोग कहैछे १ अथ अपचीको लक्षणलिष्यते अरवाहीगंड माला घणांदिनकी होजाय अर वेमैं येलक्षण होय वा गांठि पकि जाय अर वेमैं राधिघणिपडि कारि वहनीकलै अर वेऊंठेही पैदा होतीजाय अर मीटतीभीजाय अर दिन वेमैं घणालागै तीनैं वैद्य हैसो अपची कहैछे १ अथ अपचीको असाध्यलक्षणलिष्यते पस वाडाभैं सूलहोय षासहोय ज्वरहोय अर वमन होय येलक्षण हो यतो असाध्य जाणिजे १ अथ ग्रंथि जीनैं गांठि कहैछे. तींको ल क्षणलिष्यते वाय पित्त कफ हैसो लोहीनैं मांसनैं मेदनैं नसांनैं दू

* [illegible] गांठकहैछे. योरोग बहुधा गरमीका आजारसौं होय है. कोई [illegible] एक एक तरफ काखमैं घणी मोटी लंबीसारषी गांठहोयछे. कोई को [illegible] बहुत प्रकारकीछे. परंतु काषी गांठके, तो [illegible]

षितकरै अर गोल ऊंची सोईनैं लीयां ऐसी जो गांठि तीनैं पैदाक रैछे. सो ईनैं वैद्य ग्रंथिनाम गांठि कहैछे. सो यागांठि पांच ४ प्र कारकीछे वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ मेदकी ४ नसांकी ५ अथ वायकी गांठिको लक्षण लिष्यते प्रथम वा गांठि चामडीनैं षैं चिकरि बडीहोय पाछै वेमैं चटका चालै, पाछै वेमैं व्यथा घणीहोय अर वा फूटे जदि निर्मल लोहीनैं वहै १ अथ पित्तकी गांठिको लक्षण लिष्यते वेगाठिमैं अग्नि घणीवलै दाह होय अर धूवोनी सस्यां जिस्यो लागै सींगडीसूं षैंछै जीसी पीड होय लाल रंगकी पाकै वा पीली होय फुटै जीमैं रक्त घणोनीकलै २ अथ कफकी गा ठको लक्षण लिष्यते वा गाठि सीतल होय जींको वर्ण ओरसो होय जीमैं अल्प पीडा होय षुजालिजीमैं घणीहोय पथरसिरीसी गांठि होय मोडी वधै वा फुटै जदि जाडी राधि नीसरै लोही नहीं नीसरै येलक्षण जीमैं होय तीनैं कफकी गाठि कहिजे ३ अथ मेदकी गां ठिको लक्षणलि० जींसरीर माफिक वागांठि वधैघटै वागांठिचीक णी होय अर बडी होय षुजालि होय वेमैं पीडघणीहोय अर वा फुटै तदि पलसिरीसो घृतसिरीसो वेमैं नीकलै तीनैं मेदकी गांठि कहिजे. ४ अथ नसकी गांठिको लक्षणलिष्यते वागांठि निर्बल पुरसकै पेदसूं ऊपजे नसांनैं संकोचकरै वायगांठिनैं उपजावै वा गांठि ऊंचि अर गोल होय अर वेमैं पीडा होय अर कोमल होय अथवा करडीहोय पींडाभीनहींहोय अर वागांठि मर्मस्थानमैं हो यतौ निश्चैही असाध्यछै अर नहीतो यागांठि कष्टसाध्यछै ५ वे मर्मस्थनभीलिपूंछूं. गाल गलो कांधो सरीरकी संधि हीयो गुदाके निकटि पीठि येमर्मस्थानछै. अथ अर्बुद रोगकी उत्पत्ति लक्षणलि

न. टी. कंठमाळरोगप्रसिद्धछे. परंतु ईमें घणाविस्मरणहोयछे. कारण योरोग विशेषकर कं ठमेंहीहोय. सोयावातनहींछे. मुख्यस्थानतो कंठहीछे. परंतु माळाके आकारफुणस्यांहोय कर गुमहोतीजाय पकतीजाय फुटतीजाय फेरहोतीजायछे.

ष्यते जो पुरुस मास घणो षातोहोय अर अन्नादिक थोडो षाय तींके वायपित्त कफ हैसो दुष्ट होय वेंकालोहीनैं अर मांसनैं वे बिगाडि वेंकासरीरमैं अथवा सरीरका येक देसमैं वडीगोल स्थिरजीमें थोडीपीडा जींकी जड थोडी मोटीवधे पचैनहीं ईसी मांसकी गांठि होय तीनैं वैद्यहैसो अर्वुदरोग कहैछे सो ओ अर्वुदरोग दोय २ प्रकारको येकतो रक्तार्वुद १ येक मांसार्वुद २ अथ रक्तार्वुदको लक्षणलिष्यते आपका कारणांसूं दुष्टहुवाजो पित्त सोरुधिरनैं अर नसांनैं संकुचित करै अर वांनैं पीडाकरै वाका मांसका पिंडकर मांसका अंकुरां सेती वानैंढकै पाछै वेनैंक्यूंयेक पकाय अर लोही संयुक्त वेनं घणोवहावै निरंतर वेनैं रुधिरको अर्वुद कहिजे योअसाध्यछे ईरक्तका नासथकी सरीरमैं ओर उपद्रव पांडुरोगनैं आदिलेर करैछे १ अथ मांसार्वुदकी उत्पत्ति संयुक्त लक्षणलिष्यते जींपुरसकै कहींतरैसूं मुठीनैं आदिलेर कयांहींकीवेका सरीरकै चोटलागै जींजिगांको मांस दुष्टहोय तदि ओमांस दुष्ट हुवोथको ऊठे सोजानैं करै सो वे सोजामैं पीड नहीं अरवे सोजाको देहकावर्ण सिरीसो रंगहोय अर ओसोजो पकै नहीं अर ओसोजो पथरो सिरीसो गाढोहोय अर ओसोजो थिररहै ये जीमैं लक्षण होय तीनैं मांसार्वुद कहिजे येभीअसाध्यछे २ अथ अध्यर्वुदको लक्षणलि० जो अर्वुद मर्मस्थानमैं उपजै अथवा नसांमैं उपजे ओछोटोभीछे तीनैं अध्यर्वुद कहिजे १

अथ अर्वुदरोग पकै नहीं तींको कारण लिष्यछे इमें कफका अधिकपणाथकी अरमेदका अधिकपणाथकी पकै नहीं ज्युंयो असाध्यछै १ अथ गलगंडनैं आदिलेर येरोग कह्या त्यांका अनुक्रमसूं जतन लिष्यते सरस्यूं सहजणाकावीज सणकावीज, अलसी जवलीकावीज ये वरावरिले यांनैं वांटि छाछिमैं मिहीवाटि यांको लेप

करैतौ गलगंडनैं गंडमालानैं गाठिनैं यांरोगानैं तात्काल दूरिकरै १ अथवा सरस्यूं जलकूंभीकीराष यांदोन्यांनै तेलमैं वांटि यांको लेप करैतौ गलगंडरोग जाय २ अथवा संषाहूलीनैं जलसूं वांटि वेनैं छाणि प्रातसमैं दिन १५ पीवै ऊपरिसूं गऊको घृत घणोपायतौ गलगंडरोग जाय ३ अथवा कुटकीनैं वांटि वेनैं पक्कीघीयाका फल मैं रात्रिमै भिजोय राषै पाछै वेही जलमैं वेने वांटि छाणि दिन ७ पीवैतौ गलगंडरोग जाय ४ अथवा गिलवैनींबकीछालीछड तुणकी छालिपीपलि ये दोन्यूं षैरेटी देवदारु येबराबरिले यांको काढोकरि ईकाढाकारसमैं तेलपकावै पाछै ईतेलनैं टंक ५ रोजीना दिन १५ पीवैतौ गलगंडरोग जाय. ५ इतिअमृतादितैलम्. अथवाजवमूंग पटोल कडवीवस्त लूषो अन्न, वमन, लोहीका छुडावौ पाछणाको देवो येसारागलगंड रोगानैं आछया. ६ अथवा जलकुंभी सींधोलूण पीपलि यांनैं वांटि प्रभातसमैं सूंठि नाषिपीवैतौ कंठमाला जाय ७ अथवा वरण्याकी जडको काढो तीमैं सहत नाषि पीवैतौ कंठ माल जाय ८ अथवा कचनाराकी वकल टंक ५ भर सूंठि टका १ भर पीपलि टका १ भर मिरचि टका १ भर हरडेकीछालि टंक ५ वहेडाकीछालि टंक ५ आंवला टंक ५ वरण्याकीछालि टंक २ तज टंक १ पत्रज टंक १ इलायची टंक १ यांनैं मिही वांटि यांवरावरि ईमैं सोध्योगूगल मिलाय ईको येकजीवकरि मासा ४ प्रभातही जलसूं रोजीना लेतौ गलगंडनैं अर्बुदनैं गांठिनैं व्रणनैं गोलानैं कोढनैं भगंदरनैं जुदाजुदा अनुपानसूं यांरोगानै दूरि करैछै. १० इति कचनारीगूगलम् अथवा वायविडंगकी जड ईको काढो करि तीमैं जल भांगराकोरस नाषि तीमैं तेल अनुमान माफिक नांषि

न. टी. रक्तार्बुदमैं रुधिर जादानीकलजायतौ ईरोगमाहस्यौ औरही रोगकी संप्राप्ति होय जायछै. जीसौं वैद्यनैं पुरो विचार राषणो कारण रक्तो मुख्य शरीरमैं राजाछै ओआर् वहार पथ्यापथ्यकीसावचेती राषणी.

मधुरी आंचसूं ईनें पकावै तदि रसमात्र बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईमें सिंदूर नाषि उतारिले पाछे ईको लेप करैतोकं ठमाल जाय.११

इति चक्रमर्दनतैलम्. अथवा चिरमीको पंचांगले तीनैं जलसुं वांटि वेमैं अनुमानमाफिक तेल नाषि मधूरि आंचसूं पकावे तदि रसबलि जाय तेलमात्र आयरहै तदि ईतेलको वेकै मर्दनकरैतो कं ठमाला जाय १२ इति गुंजादितैलम्. अथ अपचीको जतनलिष्यते सिरस्यूं नींबकापान भिलावा यांनैं घालि बकरीका मूतमैं यांनें वां टिलेपकरैतो अपची जाय १३ अथवा रक्तचंदनहरडेकीछालि लाष वच कुटकी यांनैं पाणीमैं वांटि ईपाणीमैं तेलपकावे पाछे ईतेलकोम र्दनकरैतो अपचीरोग जाय १४ इति चंदनादि तैलम् अथवासूंठि कालीमिरचि पीपलि वायविडंग महुवो सींधोलूण देवदारु यांनें पा णीसूं मिही वांटि ईमें तेलनाषि मधूरि आंचसूं पकावे जल बलिजा य तेलमात्र आय रहे तदि ईतेलकी नास लेतो अपची जाय १५ इति व्योपादितैलम्. अथ गांठको जतन लिष्यते साजीमुलीकोपार संषको चूर्ण यांनैं पाणीमैं वांटि लेपकरैतो गांठनैं अर्बुदनें यां दो न्यांनैं यो दूरिकरैछे १६ अथ जात्यादिघृत आगें व्रणरोगमें कह स्यां तीसूं गांठि उगैरे व्रणमात्र सर्वजाय अथ अर्बुदको जतन लि ष्यते हलद लोद पतंग धमासो मैंणसिल यांनें मिहीवांटि सहतमैं पाछे ईको लेपकरैतो मेदको अर्बुदरोग दूरिहोय १ अथवा मूलि कोपार हलद संषकोचूर्ण ये जलमैं मिही वांटि लेपकरैतो अर्बुद जाय २ अथवा कूट पारीलूण वडको दूध यांनें मिही वांटि लेपकरै तो अर ऊपर वडकोपान वांधै दिन ७ तो अर्बुदरोग जाय ३ अ

न.टी. कचनारको वृक्षमोटो होयछे, देशप्रसिद्धछे, ईकीछालनें चकल कहेछे. सो अंतराछ छेणी गोरपछे. ईछालमें कंचनकी भस्म होयछे और अनेक औषधीमें योगपडायछे. ईका पत्रको साग होयछे गुणकारीछे विशेष गुण निघंटमें लिष्याछे.

थवा सहजणाकी जड अर सहजणाकाबीज सरस्यूं तुलसीकापान जव कनीरकी वकल इंद्रजव ये बराबरिले पाछै छाछीसूं मिहीवांटि ईंको लेप करैतौ अर्बुदरोग जाय ४ येसर्वजतन भावप्रकासमैं लिष्याछै अथवा लाल अरंडकीजड छीलाकीजड यादोन्यानैं चावलांका पाणीमैं वांटि लेपकरैतौ गलगंडजाय ५ अथवा किरमालाकी जड चावलांका पांणीमैं वाटि लेप करैतौ कंठमालाजाय ६ अथवा संभालूकीजड जलसूंवांटि लेपकरैतौ कंठमालाजाय ७ अथवा सिरस्यूं सूकरकी विष्ठा यानैं बराबरिले यांनैं ठीकरामैं बालि पाछै कडवातेलमैं मिहीवांटि वैंको लेपकरैतौ कंठमाल जाय ८ येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. इतिगलगंड कंठमाला अपची ग्रंथि अर्बुद यांरोगांकी उत्पत्ति लक्षणजतन संपूर्णम्.

इतिश्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रताप सिंहजी विरचिते अमृतसागर नामग्रंथे सोथरोगअंडवृद्धि अंत्रवृद्धि वध्मनाम वद गलगंड कंठमाला अपची ग्रंथिनामगांठ अर्बुद अध्यर्बुद यांसारां रोगांका भेदसंयुक्त उत्पति लक्षण जतन निरूपणं नाम चतुर्दशस्तरंगः समाप्त १४

१५ अथ श्लीपदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते जोपुरुष पुराणो जलतलाव उगैरैको सीतलहीजल छरितुमैं पीवैतौ तींपुरुषकै यो श्लीपदरोग निश्चै होयछै. अथ श्लीपदरोगको सामान्य लक्षण लिष्यते जींकै पेडू अर जांवांकी संधिमैं सोजो घणो करै पीछै पीड घणीकरै. वापीड ज्वरनैं करै पाछै वासोई ऊठासुं चालै सो क्रमसूं पगांताई आवै ईनैं वैद्यहैसो श्लीपदकहैछै. कोईक आचार्य हाथकै कानकै इंद्रीकै आंपकै होठकै नाककै भी सोई होय

न. टी. कंठमाल, अर्बुद, अपची, याकेवास्ते पथ्य लि० हलकोअन्न पुराणोघृत, मूंग, कुलत्थ, पंदला, तुरा, एकांत, विरेचन, इ० कुपथ्य लि० छाछ, दही, तेल, हिंग, पें, गुड, मिरचलाल, श्रम, धूप, दिनमेंनिद्रा, विसम अपचारी इत्यादि.

तीनैंभी श्लीपद रोग कहैछे. वो श्लीपदरोग च्यारि ४ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथवा वायका श्लीपदको लक्षण लिष्यते कालो होय लूषोहोय ओफांटिजाय जीमैं पीडघणीहोय ज्वरहोय १ अथ पित्तका श्लीपदको लक्षण लिष्यते चीकणो होय पीलोहोय स्थिरहोय विनाकफ भाखापणौ अर करडापणौ होय २

अथ सन्निपातका श्लीपदका लक्षण लिष्यते जौ श्लीपदकैछिद्र घणा होय चुयवा लागिजाय वंबाकीसी नाईंहोय ओश्लीपद सन्निपातको जाणिजे ओ असाध्यछे अथ श्लीपदको जतनलिष्यते ईरोग वालानैं लंघन लेप स्वेद जुलाव लोहीको छुडायवो गरमवस्तको पावो येसारा आछया. अथवा सरस्यूं सहजणाकीजड देवदारु सूंठि यांनैं गोमूतमैं वांटि यांको लेप करैतौ श्लीपद जाय २ अथवा साठीकी जड सूंठि सिरस्यूं यांनैं कांजीमैं वांटि यांको लेपकरै तौ श्लीपदजाय ३ अथवा धत्तुराकीजड अरंडकीजड संभालूकीजड सहजणाकीजड सिरस्यूं यांनैं पाणीसूं मिहीवांटि ईको लेपकरैतौ श्लीपद जाय ४ अथवा सहदेई तालफलका रससूं वांटि ईंको लेपकरैतौ श्लीपदजाय ५ अथवा सापोटक वृक्षकी वकलको काढो तीमैं गोमूत नाषि पीवैतौ श्लीपद जाय ६ अथवा हलद अरगुड येदोन्यूं बराबरिले यांनैं मिहीवांटि येकजीवकरि जोपुरस गोमूतसूं ईनैं पीवैतौ श्लीपद रोगनैं दाहनैं कोढनैं योदूरिकरैछे ७ अथवा साठीकीजड त्रिफला पीपलि येबराबरिले यांनैं मिहीवांटि टंक २ सहतसूं लेतौ घणादिनाको श्लीपद जाय ८ अथवा वडी हरडैका चूर्णमैं अरंडको तेल मिलाय वेमैं गोमूतनाषि दिन १५ पीवैतोश्ली

न. टी. श्लीपदरोगवालाके पगजाडोहोयछे. सोयोरोगके वछणगामें होय इसीवात नहींछे. ओरोग ओर स्थानमेंभी होयछे. सोई रोगनैं लोकप्रसिद्ध नाम रसको विकारकहैछे. सो विकार हाथांमे. पगांमें. कानांमें ओरभी अंगमें रहजातहैछे.

पदरोग दूरिहोय ९ येसर्व जतन भावप्रकाशमैं लिष्याछै. अथवा वधायरो पीपलि सूंठि कालीमिरचि वायविडंग यांनैं मिहिवांटि पाणीमैं पाछै अनुमान माफिक ईमैं तेलमिलाय पाछै ईमैं मधुरी आंचदे पकावैतदि ओपाणी वलिजाय तेल आयरहै तदि उतारिले पाछै ईंकोमर्दन करैतौ श्लीपदरोग जाय. १० अथवा धत्तूराका बीजांनैं येकसूं वधेवीस तांई तींउपरिसीतल जलपीवैतौ श्लीपदरोग जाय. ११ येसर्व जतन वैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. अथवा मजीठ महुवो रास्ना जाल साठीकीजड यांनैं मिहिवांटि कांजीमैं लेपकरैतौ पित्तको श्लीपद जाय १२ अथवा अंगूठा उपरलीनसांको लोही कढावैतौ पित्तको श्लीपद जाय १२ अथवा कैसौंधीकी जड तींनैं टंक २ गऊका घृतकैसाथि पीवैतौ श्लीपदजाय १४ अथवा पीपलि त्रिफला देवदारु ईमैं नाषे पाछै यांनैं मिहिवांटि टंक २ रोजीनाकाजीकापाणीमैं लेतौ श्लीपदनैं अजीर्णनैं वायका रोगांनैं फियानैं यांसारारोगांनैं योदूरिकरैछै. अर भूष घणी वधावैछै १५ इतिपिपल्यादि चूर्णम् योवृंदमैंछै. इति श्लीपदरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ विद्रधीरोगकी उत्पती लक्षण जतन लि० हाडांमैं रहतो जोवाय पित्त कफ सो ईका सरीरकी त्वचा लोही मांस मेदयांनैं विगाडि अर सनैं सनैं ईंपुरपकै भयंकर सोजानैं पैदा करैछै. सो सोजो गोल होय अर पीडनैं लीयांहोय अर ऊंडो घणोहोय अर वडोघणोहोय येजीमैं लक्षण होय तींनैं वैद्य हैसोविद्रधी कहैछै. सोविद्रधीरोग ६ प्रकारकोछै. वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ चोट लागिवासूं उपजी ५ रक्तविद्रधी ६ अथ वायकीविद्रधीको लक्षणलि० वासोई कालीहोय अथवा लालहोय क्षणे

न. टी. श्लीपदरोगनैं उपचार बहुधा लिष्याछै. परंतु ईरोगनैं वमन विरेचन फायदोघणो करैछै. कारण विरेचनसौं. मवाद पटैतो वासोई हलकी पडै, पाछै. लेपादिक औषधी ईमैं ओषधी दीयासूं आराम होय. अर असाध्य हुवो पको जाय नहीं.

कमैं थोडीहोय जीमैं ऊठताही नानाप्रकारका पकिवाका चिन्हहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं वायकीविद्रधी कहिजे १ अथ पित्तकी विद्रधीको लक्षण लि० वासोई पक्या गुलरिकाफल सिरीसी होय अर कालीहोय ज्वरदाहनैंलीयां होय अर वासोई तत्कालपकी जाय ये जीमैं लक्षण होय तीनैं पित्तकी कहिजे २ कफकी विद्रधीमैं कफका लक्षण होयसो कफकी कहिजे ३ अथ सन्निपातकी विद्रधीको लक्षणलि० जीसोईमैं नानाप्रकारको वर्णहोय अर जीमैं नानाप्रकारका स्राव होय अर वासोई गलाकी गांठ कनैंहोय अर वासोईविसमहोय कदैतो घटै कदै वधै अर वा वडीहोय अर वेको पकिवोभी विसमहीछे. कदेकतो वेगीपकै कदेकमोडीपकै येजीमैं लक्षण होय तीनैं सन्निपातकी विद्रधीकहिजे. ४ अथ चोट लागिवाकी विद्रधीको लक्षणलि० जीस्थानमैं चोटलागै उठैही पित्तनैं वावायहैसोपित्तसंयुक्त लोहीनैं विगाडै पाछै. ऊठै सोईनैं करै अर ज्वर तिस दाह वाय उपजावै अर वेविद्रधीमैं पित्तकाभी लक्षण मिलै ये जीमैं लक्षण होय तीनैं चोटलागिवाकी उपजी विद्रधी कहिजे. ५ अथ रक्त विद्रधीको लक्षण लि० वासोई कालिहोय अर वेमैं फोडाघणा होय अर वेमैं पीड दाह ज्वरयेभी होय अर पित्तकी विद्रधीकाजीमैं सर्व लक्षण होय तीनैं रक्तविद्रधी कहिजै. ६ अथ साध्य असाध्य जाणिवाकै वास्ते अंतर विद्रधीको लक्षण लि० जुदाजुदा अथवा मिल्या ईसावाय पित्त कफ हैसो कुपथ्यसूं कोपकुं पाति हुवाथका सरीरकैमाहि येक गांठि गोलाकै आकार वांबीकोसीनाईऊंची ईसीपैदा करैछै. सरीरकै माहि तीनैं वैद्यहैसो अंतर विद्रधी कहैछै वा अंतर

न. टी. मजीठ. मंजिष्ठा रंग लाल नीकलैछै. कपडा रंगीजैछै. काष्ठजातीछै. झाडकी वहरी पछै. देसप्रसिद्ध मजीठछै. रंगवर्णेछै. ४ महुवो प्रसिद्ध नामछै. मधूकवृक्षका फूलहोयछै. मद उत्पन्न होयछै. महुवाकी मदिरानीनैं माध्वी मदिरा कहैछै. राजानामछै. जीनैं रायगेन कहैछै. देसमैं राटप्रसिद्धछै. वायुका रोगउपर वलवानछै रायाकहैछै.

विद्रधी दस प्रकारकीछे येकतो गुदाके विसै होयछे १ पेडूका मुषमें २ नाभिमें ३ कूषिमें ४ पेडूअर जांघकीसंधिमें ५ हिया अर तिसका स्थानके विचै ६ फियामें ७ हियामें ८ अर नाभिके जीवणी कानी ९ तिसका स्थानमें १० अथ गुदाकीविद्रधीको लक्षणलि० गुदामें विद्रधी होयतो पवन आछी तरे चालै नहीं. वायपवन रुकि जाय १ पेडूका मुषमें विद्रधी होयतो वेंके मूत्रकृच्छ्रको रोग होय २नाभिमें विद्रधी होयतो वेंके हिचकी घणी आवे अर पेडूमें आफरोरहे ३ अर कूषिमें विद्रधी होयतो उठे वायको कोप होय ४ अर पेडूजांघकी संधिमें विद्रधी होयतो कटिमें पीठीमें पीडघणीहोय ५ हियाके अर तिसका स्थानके विचै विद्रधीहोयतो पसवाडाको संकोच होय ६ अर ऊठे पीड घणी होय फियामें विद्रधी होयतो सास आवे नहीं ७ हियामें विद्रधी होयतो सर्व अंगामें पीडहोय सर्व अंग रुकिजाय अर षास होय ८ अर नाभिके जीवणीकानी नाभिके विद्रधी होयतो सासको रोगहोय ९ अर तिसका स्थानमें विद्रधी होयतो जल घणोपीवे धापे नहीं. १०

अथ विद्रधीको साध्यासाध्य लक्षण लिष्यते नाभिके ऊपरि पकि विद्रधीछे. वा फूटिवेकी राधिऊपर जायछे. अर नाभिके वीचली विद्रधीछे सोवापुटिवेकी राधि नीचे जायछे जो विद्रध्यांकी राधिनीचे जाय सोतो प्राणी जीवे अर ज्यांविद्रध्यांकी फूटिकरि राधिऊपरि जाय वे प्राणी मरिजाय १ अथ पुनःअसाध्य लक्षण लिष्यते हियामे नाभिमें अर पेडूमें विद्रधी होयतो आछी नहीं औरस्थानामें आछी अर विद्रधी काची अर पक्की अर दग्ध होय गई होय तीनें सोजाकीसीनांई देपिलीजे १ अथ माहीली

न. टी. जोविद्रधीकी गांटप्रसिद्धछे. परंतु अंतरविद्रधी शरीरके माहिलाँ जाकी जडऊंडी होयछे वैद्यकालक्षणमें मोडी आवे. सर्वरूपनेको प्रसिद्धलुवा स्पष्ट मालम पडेछे जीर्णचतुर वैद्य है सोर्वेको पूर्वरूप देपतांही निश्चयकरणी.

विद्रधीको असाध्य लक्षण लिष्यते आफरो होय छर्दि होय तिस घणीहोय हिचकी होय जींमें पीड घणी होय येजीमे लक्षण होयतो ओ प्राणी मरै १ अथ विद्रधीको कष्टसाध्य लक्षण लिष्यते वा विद्रधी कच्चीहोय अर वायकी होय वडी होय छोटी होय वा मर्मस्थानमैं होय सो कष्टसाध्यजाणिजे १ जो विद्रधीसन्निपातकीछे अर हियामें नाभिमें अर पेडूमैंछे अर वा रुकिजाय अर वा मूठी प्रमाण होय वाविद्रधी असाध्य जाणिजै अर मूठी प्रमाण मांस लोहीको गोलोभी होहछै सोविद्रधीतो पकिजाय अर गोलो पकै नहीं योईमें भेदछै. १ अथ विद्रधीको जतन लिष्यते सर्व विद्रधीमात्रकूं जो कलगाय वांकोलोही काढै तौ विद्रधी आछी होय १ अथवा जुलाबसूं पित्तकी विद्रधीजाय २ अथवा विद्रधीपकैनहीं जीतैव्रणका सोजाकोसो जतन करै ६ अथवा अरंडकीजडको काढोकरि तीमें तेल अथवा घृत पकावैं पाछे वेकी सुहावतौ सुहावतौ सेक करैतो वायकी विद्रधी जाय ४ अथवाजव गोहूं मूंग यांका चूननैं घृतसूं पकाय वेकौ लेपकरैतौ विद्रधी विनापकीभी आछी होय ५ अथवा आसगंध पस महुवो रक्तचंदन यांनैं दूधसूं पीसि ईमें घृत मिलाय निवाईकरि लेप करैतो पित्तकी विद्रधी जाय ६ अथवा ईट वालु रेत लोहको मैल गोबर यांनैं मिहींवांटि गोमूतमें सिजाय ईकै सुहावतौ सेक करै अथवा लेपकरैतौ कफकी विद्रधी जाय ७ अथवा दस मूलका काढामें तेल अथवा घृत नापिवेंको तरडोदतो विद्रधीका व्रणको सोजो अर वैंकी सूल जाय ८ अथवा रक्तचंदन मजीठ हलद महुवो गेरू यांनें दूधसूं सिजाय लेप करैतो लोहीकी अर चोट लागिवाकी विद्रधी जाय ९ अथवा कालोजीरो ई

न. टी. वाविद्रधीसाध्यछै. वाअसाध्यछै. वाजाप्यछै. ईंधीनिश्चयकरणी. परंतु आपोछकी विद्रधीछै जीनैंमाणाकीद्रवावाडीजाणकरमानकीसगुद्धिकरकैसाध्यकीव्रणतासोव्रणवाक ग्णोपोग्यछै. योरोगणाभोवणाको धान्यमें रापणो.

द्रायणकी जड तोरूं यांको काढो टंक २ कोलेतौ कोठाकीउपजी वि द्रधी जाय १० अथवा सहजणाकी जडकोरस तीनै सहत मिलाय पीवैतौ अंत्रविद्रधी जाय ११ अथवा सहजणाकी जडका काढामैं सेकीहींग सींधोलूण नाषि प्रभातही पीवैतौ अंत्रकी विद्रधी जाय १२ येसवे जतन भावप्रकासमैं लिष्याछे इति विद्रधीरोगकी उत्प त्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथ व्रणका सोथ रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते व्रणसोथरोगहै सो छ प्रकारकोछे. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीका दुष्टपणाको ५ कहीं तरैकी लकडी उगैरे चोटलागिवाको ६ यां कारणांसूं प्रथम व्रण होय पाछे व्रणके सोथ होय अथ व्रण सोथको लक्षण लिष्यते वायको व्रण विषम पकै पित्तको व्रण तत्कालपकै कफको व्रण मोडोपकै लो हीकोभी व्रण तत्कालपकै चोट लागिवाको व्रण तत्कालही पकै १ अथ व्रणसोथ नहीं पक्यो पक्योतींको लक्षण लिष्यते वैव्रणसोथ मैं गरम थोडीहोय अर सोजो थोडोहोय अर ओ व्रणसोथ करडो होय अर वैंकी त्वचा व्रणसिरीसीहोय वैमैं पीडाकमहोय अर सोजो थोडोहोय ये लक्षण होय तदि जाणिजै व्रणसोथ काचोछे १ अथ पक्या व्रणसोथको लक्षण लिष्यते वासोई अग्निकीसीनाई वलै अर वासोई पारकी सीनाई पकै वासोई कीडीकीसीनाई काटै वासो ई छुरीकीसीनाई काटै अर वासोई दंडकीसीनाई मारै अरवा सोई हातसूं पीडी नहीं मानूं अर वोसोईसुई करिकै विंधि नहींमानू अर वैसोईमैं दाह घणोहोय अर वैसोईकोरंग औरं सो होय अर वासोई अंगुलीकरि पीडीजै नहींमानू आसनकै विसै सोवाकै विसै

न. टी. विद्रधीरोगमें निदानकरतां वैद्य भूलजायछे. कारण एकगोळो पेटमें होयछे सो स्थिरगोळोवायूका संबंधसों होयछे, सोवोगोलो अरविद्रधी एकसारीमालुम पडेछे. सोभरोसा में रहेजायतां याविद्रधी असाध्यहोयजायछे जीसों नीगेंराषणी. विद्रधीतोपाकेछे अरगोळो पाकेछे नहींछे.

सातिकूं प्राप्ति होय वीछूका काव्याकीसीनाई जीते वासोई गाढी होय तीतनैं वेसोईका पकावाको जतन करै वेनैं फाडैनहीं अर वे सोईमैं ज्वरहोय तिसहोय अरुचिहोय ये लक्षण जीमैं होय तदि जा णिजै वासोईपकिगई अथ व्रणसोथ पकिगयो होय तींको लक्षण लिष्यते वेंसोजामैं पीडनहीं होय ललाई थोडीहोय घणोऊंचो नहीं होय अर वेंसोजामैं सलघणा पडिजाय अर वेमैं पीडहोय अर पु जालि घणी आवे सर्व उपद्रव जातोरहै वासोई न जाय त्वचा फा टिवालागिजाय वेमैं आंगुलीसौंपीड्यांराधि नीसरै ये लक्षण जीमैं होय तदि जाणिजे व्रणसोथ पकिगयोछै. वेमैभी वायविनापिडा नहीं पित्तविना पकिवो नहीं कफविना राधिनहीं ईकारणसूं पकि वाके समये तीन्यूंहीहोय १ अथ परिपाकअवस्थामैं औरभी म तांतरका लक्षण लिष्यते वेंका जतन करि वामैं ढील करैतो पित्त है सो कोप करिजाय कफको ग्रहण करि लोहीनैं पकायदे ओलोही पक्यो थको राधिनैं करिदे अथवा राधिकाडै नहीं तींकादोपलिष्यते जैसे तृणांका समूहनैं पवनसूं प्रेर्यो थको अग्नि दग्ध करैछे तैसेंही वेंकी राधि काढैनही तो वेंका सरीरकामांसनैं रसांनैं याराधि षाय जायछे १ अथ सोजाका काचापक्याका ग्यानके अर्थ वैद्यका गु णदोष कहिजैछे. जो कच्चाव्रणनैं जाणैं अरपचताव्रणनैं जाणैं. अर जो पक्या व्रणनैं जाणै सो तो वैद्य अर यांनैं जाणै नहीं सो वैद्य नहींछे. वेचोरकी वृत्तिकरिवावाला वैद्य चोरछे. १ जो वैद्य फोडा व्रणनैं कच्चानै फोडै अर पक्कानैं फोडैनहीं सो वैद्य नहींछे. वावैद्या नैं कच्चापक्काकोंग्यान नहीं वे वैद्यनैं चांडाल भंगीकीसीनाई जाण

न. टी. व्रणरोगनाम घाव, गुमडो, फुणसी, गांठ इत्यादिकछे. सोकशो होयजीने तो गांठ कहेछे. जोतुपणा अढीढ फापोलाई, औरभी पणाजातकी गांठछे. तीकैवासे पकावानै सी टीस बांधणो पणो अछछे- डाकरडोफ पोटीस बांधेछे, मूलिपूंछ, गगांको आटो, दूध, इत्या दि, पीरत पांकी न्हणीकर बांधे गरम गरम तो गांठ अछ्दी पकेछे, पाछे फाडिदे.

नो २ इति व्रणसोथकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथ व्रणरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते प्रथम व्रण है सो च्यारप्रकारकोछै एकतौ वायको १ पित्तको २ कफको ३ रक्तको ४ यांदोसांका एकेकशस्त्रादिकका लागिबाको ५ वामैं वायपित्तकफका त्रिदोषको है सो ८ आठप्रकारकाछै. सो जुदा जुदा लिष्यते वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ वायपित्तको ५ वायकफको ६ कफ पित्तको ७ सन्निपातको ८ अथ वायका व्रणको लक्षण लिष्यते ओ व्रण है सो स्थिरहोय कठिण होय मंदश्रवे पीड घणी होय जीमैं व्यथा घणीहोय फुरकै घणो कालो घणौ होय येलक्षण जींव्रणमें होय तीनै वायको व्रण कहिजे १ अथ पित्तका व्रणको लक्षण लिष्यते जीमैं तिसहोय मोह होय ज्वरहोय आलापणोहोय जीमैं दाहहोय पीडहोय जीमैं फाटिहोय जीमैं दुर्गंधिलीयां राधिनीकलै येलक्षणजीमैं होय तीनैं पित्तको व्रणकहिजे २ अथ कफका व्रणको लक्षण लिष्यते जीमैं घणो आलापणो होय भाखौ होय चीकणा होय जीमैं पीडा कमहोय पीलोवर्ण होय मोडोपकै ये जीमैं लक्षण होय तीनैं कफको व्रग कहिजै ३ अथ लोहीका व्रणको लक्षण लिष्यते ओव्रण लाल होय अर जींव्रणमैं लोही घणोनीकलै ४ अर जींव्रणमैं वायपित्तको लक्षण होय तीनैं वायपित्तको कहिजे ५ जींव्रणमैं वायकफको लक्षण होय तीनैं वायकफको कहिजे ६ जींव्रणमैं कफपित्तको लक्षण होय तीनैं कफपित्तको कहिजै ७ जींव्रणमैं सर्व कारण वा लक्षण होय तीनैं सन्निपातको कहिजै ८

अथ शुद्ध व्रणको लक्षण लि० जीभका नीचरलापौंदासिरीसी

न. टी. वाय, पित्त, कफ, येतीन्यूं दोषछै सोव्रणादिकफापरिपाकमैं मूर्तिमाननिथेहोयछै सो कुसळवैद्यनैं निगारापणी योग्यछै. सोडिपूंतूं. जैंधेपरिपाकमैं वायुविनारीडानहीं होय. पित्तविनापकावनहीं होय. कफविनापीपरादनहीं होयछै.

जींकी कांति होय अति कोमल होय निर्मलहोय चीकणो होय जी मैंपीडा थोडी होय आछीजींकी विवस्थाहोय वेमें राधिउगेरैक्यूं भीनीसरैनहीं तदिजाणिजेयो व्रणशुद्धहुवो १ अथ दुष्ट व्रणको लक्षण लि० जींमें राधिलोही दुर्गंधिये वहोत निकलिवोकरै अर जींमें सोजो रहवो करै अर स्थीरपणोरहै वेनैं दुष्टव्रण कहिजे१ जीमें अंकुरशुद्धनीकलता होय तींको लक्षणलि० अर जींव्रणमेंस्यौंपीलोरंग अथवा दूसरो वर्ण होय अर राधि उगेरैजोमैंसु जातिरहै अर अंकुर नीसरवा लागिजाय तीनैं व्रण भरिवाके वास्ते अंकुरत व्रण जाणिजै १ अर भलेप्रकार व्रण भरतोहोय तींको लक्षण लि० व्रणमें अंकुर शुद्धनीसरै तीमें गांठि नहींहोय जांमें सोजो नहींहोय तीनैं भलेप्रकार व्रण भर्यो जाणिजे. १ अथ व्रणका सुपसाध्यादिकको लक्षण लि० ओव्रण मर्मस्थानमें नहींहोय अर त्वचामें अर मांसमें होय अर तरुण पुरसकै होय अर पथ्य चालतो होय अर सीतकालहोय इसापुरस केतो व्रण सुपसाध्यछै १ अर वायपित्त कफकोतो व्रण होय अर नसांमें मेदमें मींजीमे माथाकी भेजी सिरीसामें जो व्रण श्रवैतो ओव्रण आछ्यो होयनहीं अर शस्त्रादिकांकी चोटसूं उपज्यो जोव्रण तीमेंवसा मेदमींजी अर माथाकी भेजी सिरीसो वे व्रणमे नीसरैतो ओ व्रण आछ्यो होय १ अर कोढिके अर विपपातो होय तींके राजरोगके अर मधुमेहीके अरव्रणमें व्रणहोयजींकै इतना पुरसांके व्रण है सो कष्टसूं आछ्यो होय १ अथ पुनःव्रणको असाध्य लक्षण लिप्यते. व्रणके माहिघणो दाह होय अर व्रण वारासूं सीतलहोय अर वेपुरसका सरीरको मांस लोही जातो रह्यो होय अर सास पास अरुचि येजींके

न. टी. जीतौंपरिपाकमें जोपीडापणीहोय तोवायुवउवानजाणज्यो. अर पकाव जाशांपतो तत्काउपकैनडे पित्तमादाजाणज्यो. अर राप घणी होयवा वैठे कफनादाजाणज्यो. रीतयों दोपांकी अधिकतादेपकरउपायकरैतो जरूररोगमेंजीते.

होयजाय अर ओवूढो होय अर वें व्रणमैं लोही राधिनीसरिवों करै अर ओ मर्मस्थानमैं होय इसाव्रण आछ्यानहीं होय सोवैं वैद्य वेंको जतन करनहीं आपको जसचाहैतौ ये वायपित्त कफयां दोसांका व्रणका लक्षण कह्या १ अथ आगंतुक व्रण कहिजै. तर वारिनैं आदिलेर जो शस्त्रादिकांका लागिवासूं उपज्यो जो घाव तीनैं व्रणसंज्ञा कहिजैछै. त्यांकी उत्पत्ति लक्षण लिष्यते तरवारि सेल तीर छुरी गोली वाण फरसी उगैरे कहीकी ईंपुरसकै कैठेही सरीरमैं लागै तींका लागिवासूं पुरसकै वा व्रणका नाम तथा वा घा वांकी नानाप्रकारकी आकृति होयछै. सोवा आकृति मुष्य ६ प्र कारकीछै. सोहूं लिषूंछूं छिन्न १ भिन्न २ विरुद्द ३ क्षत ४ पिच्चि त ५ दुष्ट ६ अथ छिन्न व्रणको लक्षणं लिष्यते जो पुरस तरवार नैं आदिलेर शस्त्रकरिकै टेढो कट्यो होय अथवा सुधो कट्यो होह जो ओ घाव वडोहोय अर मनुष्यका सरीनैं पृथ्वी ऊपरि नाषि देतीनैं वैद्यहैसो छिन्नव्रणकहैछै. अथ भिन्नव्रणको लक्षण लि ष्यते वरछी सेलतीर छुरी तरवारीनैं आदिलेर यांकी जोकैं लागै तींका लागिवा करिकै कोठो कहींतरे कटजाय तीं कोठा कटिवाकरि वेंको लोही चलै तदि ओलोही कर उदर भरिजाय तदि ओलोही सूं भर्‌यो जो उदर ज्वरनैं दाहनैं पैदा करैछै. पाछै ओलोही इंद्रीद्वा रा गुदाद्वारा मूंढा द्वारा नासिका द्वारा नीसरै अर वेंकों मूर्छासास तिस आफरो अरुचियांनैं पैदाकरैछै. अर मलमूत्र वेंकारुकिजाय पसेव आवै नेत्रलालहो जाय मूंढामें लोहीकीवास आवै सरीरमैं दुरगंधी आवैं हियामैं पसवाडामैं सूल चालै येजीमें लक्षण होय तीनैं भिन्नव्रण कहिजै २ अथ विरुद्द व्रणको लक्षण लि० जींपुरस

न. टी. कफसोंन्योताप अधिक होयछै. जींरापनैं सरीरका व्रणमैं रोकणीनहीं कोईवीवा सादिकांकी युक्तिसौं रापनैं बाहरनीकलतीकरदेणी. कदाचित वैरापनैं सरीरमैं रोकदेवेछै. सोवाराघ मांसगतहुई पकीपणो नुकसानकोरछै.

के शस्त्रकी माहिली अणीकी लागे वेंको अंगकटि जाय वे घावनैं विरुद्ध कहिजे ३ अथ क्षतव्रण जींघावमैं तीरउगैरे रहगयो होय तीं कालक्षण लि० जोघाव कालोहोय सोजासंयुक्तहोय फुणस्यानैं ली यां होय अर वेघावमैं वारंवार लोही नीसरै अर ओघाव कोमल होय अर वेघावको मांस बुदबुदासरीरसो ऊंचोहोय अर वेघावमैं पी डाहोय तींघावनैं शस्त्रसमेत जाणिजे. ४

अथ कोठमैं तीरइत्यादिक रहगयो होय तींको लक्षण लिख्यतेस रीरकी सातूं त्वचामैं उल्लंघि करिकै अर सरीरकी नसांनैं उल्लंघिक रिकै पाछैं वाही नसांनैं विदीर्ण करै अर कोष्ठकै विसै रह्यो जो वे शस्त्रादिकसो वे आफरानैं करैछे. अर व्रणका मूंढामैं अन्ननैं अर म लमूत्रनैं लेवार आवैछे तदि जाणिजे ईका कोठमैं सल्यछे, अथ असाध्य जो कोठमैं रहतो रक्त अर मल तींको लक्षण लिख्यते को ष्ठमैं रहतो जो लोही सोपीलोहोय तदि वेंको सरीरभी पीलो होय अर हाथ पग मूंढो वेंको सीतल होय अर वेंका नाकको स्वासभी सीतल होय लालजींका नेत्रहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं असाध्य कोठमैं रहतो रक्त मल तींको लक्षण जाणिजे यो असाध्यछे. ५ अथ क्षतव्रणपच्चितव्रणका लक्षणलि० जीमैं अति छिन्नका लक्षण नहिमिले अर जींमैं अतिभिन्नकाभी लक्षण नहिमिले दोन्यांकामि ल्यांजीमैं लक्षण होय ओव्रण विषम होह सो वेंका हाडमैं व्रण होय वेनैं पच्चित व्रण कहिजे. ६ अथ घृतव्रणको लक्षण लि० जीं कै ईंट पथर भींतउगैरे कहींतरहसूं शरीरकी चामडी घसिजाय वा चामडी शरीरसूं दूरिहोय जाय वे चामडीमैं चेपनीसरिवोकरै अर

न. टी. भिन्नव्रणछे. सो शस्त्रादिकांकादशरसूं होयछे जीमैं दो कानुरनक्षणापकर रक्तवंद ?जे कारणरकजादानीछेनो निर्बलताहोयछे. मुर्छा भावेछे. अनेकउपद्रवहोयछे. ईवास्ते चि- . समपदेषकर यथायोग्यउपचारकरे. अथवा गोळीतीर आदिकेपरीमैं रहजाय तो बेरागूं दवागुं काढतो तुरत आरामहोयछे. पाव पीजे नहीं.

वेमैं दाह होय वेनैं घृतव्रणकहिजे ७ अथ व्रणका ओरभील० जीं
कै मांसनसां संधि मर्मस्थानयांमैं चोटलागी होय तींको सामान्य
लक्षणलि० जींकै भ्रमहोय प्रलापहोय ढहपडै मोहहोय चेत जातो
रहै ग्लानि होय दाह होय शिथल अंगहोय पीडघणीहोय मांसका
जलसिरीसो जींको लोही होय अर सर्व इंद्रियांका धर्म जाता रहै
पाछै कह्याजो पांच मर्मस्थान त्यांनैं जो वांकी चोट लागि यांकोयो
लक्षण कहिजे अथ मर्मस्थान नसां संधि हाड येव्रणसूं विंधिगयो
होय तींका जुदा जुदा लक्षण लि० इंद्रका धनुषसिरीसो सावणकी
डोकरीसो जींको लोहीनीसरै तींकै क्षतजव्रण कहिजे ओ व्रणवा
यका अनेक रोगांनैं करैछै. अर तीरनै आदिलेर शस्त्रछै अर तर
वारीनैं आदिलेर शस्त्रछै त्यांकरिनसांविंधिजाय त्यांसूं उपज्यो जो
व्रण त्याकरि सरीरहैसो कुवडो होय अर सरीरका अंग अंगमैंपी
डा होय चाल्यो जायनहीं वहोतमोडोवामैं अंकुर आवै तदि जा
णिजे ईकीनसां विंधिगईतींको ईकैव्रणछै. वेव्रणकै सोजो घणोहोय.
वेंको बल जातोरहै अर संधिमैं घाव लाग्यो होयतो संधिको हलि
वो चलिवो जातोरहै. अर वेमैं पीड घणी होय रातिदिनमैं जकप
डैनहीं तींकैहाडमैं सस्त्रादिकसूं उपज्यो व्रणजाणिजै अर मर्मस्था
नमैं चोटलागिवासूं व्रणहोय तींको सरीको वर्ण पीलो होय
ओव्रण स्पर्शसहैनहीं ८ अथव्रणका १६ सोलो उपद्रवछै त्यांनैं
लिपजैछै वेमैं विसर्परोग १ पक्षघात २ सिरमुडैनहीं ३ अपतान
४ प्रमेह ५ उन्माद ६ व्रणमैंपीडा ७ ज्वर ८ तिस ९ कांधोमुडै
नहीं १० पास ११ छर्दि १२ अतिसार १३ हिचकी १४ सास
१५ कांपणी १६ ये व्रणरोगका उपद्रवछै. अथ अग्निदग्धकी उत्प

न. टी. व्रणरोगछप्रकारकोलिख्योछै. छिन्न १ भिन्न २ विरुद्ध अथवा अविरुद्ध ३ क्षत ४ पि
चित ५ दुष्ट ६ येछजातकाव्यामैंछिन्न भिन्न विरुद्धाकालक्षणलिख्याछै. अरक्षतका अरपिचित
का भेगाहीलिख्याछै. अर दुष्टव्रणकासर्वयिरितसाध्यअसाध्यछै.

त्ति लक्षणलि० प्रथम अग्निदग्ध दोय प्रकारकोछे. एकतो तेलादि कसूं दग्धहुवो १ दूसरोलोह अग्निनें आदिलेर दग्धहुवो २ पुनः अग्निदग्धच्यारि प्रकारकोछे प्लुष्ट १ दुर्दग्ध २ सम्यकदग्ध ३ अतिदग्ध ४ अथप्लुष्ट दग्धको लक्षणलिष्यते अग्निसूं दग्ध हुवोछे अर वेंकोवर्ण और सो होय जाय वेनें प्लुष्ट कहिजे १ अथ दुर्दग्धको लक्षणलिष्यते जीमें दाह घणोहोय अर वेमें पीड घणीहोय अर फोडाहोय आवे अर मोडोमिटै तीनें दुर्दग्ध कहिजे २ अथ सम्यक् दग्धको लक्षणलि० जींका अंगको तांबासिरीसो वर्णहोय अर ओ वूढोनहीं होय अर जींमें दाह अर पीडाहोय अर फलै नहीं तीनें सम्यक् दग्ध कहिजे ३ अथ अतिदग्धको लक्षण लिष्यते जींकीत्वचा अर मांस सर्व दग्ध होयजाय अर यांसूं शरीर जुदो होजाय अर नसां स्नायू हाडसंधि येसारादग्ध होजाय अर वेमें पीडहोय दाहहोय ज्वरहोय तिसहोय मूर्छा जींमें अंकुरमोडोआवे वर्ण औरसो होजाय येजीमें लक्षण होय तीनें अतिदग्ध कहिजे.

अथ दोसांसें उपज्या इसाज्यो सरीरव्रण तीका जतनलिष्यते वैजतनसर्वमें मुष्य इग्यारा ११ प्रकारकाछे. सो क्रमसूं लिष्यांछां अरसुश्रुत चरकमें तो व्रणका जतन साठि ६० प्रकारसूं लिष्याछे प्रथमतो लेप १ पाछे औषध्यांका जलसूं निवायो तरडो २ पाछेवांसकी लकडीसूं अंगुठो मसालि वेंके पसेव ल्यावणा ३ पाछेकही तरे लोहीछुडावणो ४ पाछे औषध्यांको पाटो बांधि वेंके पसेव ल्यावणां ५ पाछेवेनें पकावणो ६ पाछे शस्त्रादिकांसूंचीरोदेणो ७ पाछे व्रणनें अंगुठासूं दाबि वेमाहिलीराधिकाढणी ८ पाछे व्रणकोसो

न. टी. मर्मस्थानमें शस्त्रादिकका लागिवासों जो व्रणहोयछे. जींमें कुपथ्यका करणासूं अप [illegible] होयछे.
[illegible]

धिवो ९ पाछै वामैं अंकुर ल्यावणो १० पाछै वेनैं त्वचाका वर्ण सिरीसो करिदेणो ११ अथवा वायका सोजादूरि करिवाको लेप जैसे लायलागीहोय अर वें लायनैं जल बुझायदे जैसे यो लेपहैसो सोजाकीपीडनैं दूरिकरैछै विजोराकीजड छड देवदारु सूंठि रास्ना अरण्युं येबराबरिले यांनैं जलसूं मिहीवांटि निवायो लेपकरैतो वायको सोजो दूरिहोय १ अथ पित्तका सोजाका दूरि करिवाको लेप लिष्यते महुवो रक्तचंदन दोब आवला कमलकीजड षस नेत्रवालो पदमाष यांनैं बराबरिले यांनैं जलसूं मिहीवांटि सीतलही लेप करैतो पित्तको सोजो दूरिहोय २ अथवा वडकीजड गूगलकीजड वेतकीजडकी वकल यांनैं जलसूं मिहीवांटि ईमैं औषद्यांसूं दसवोहिसो घृत घालिवेंको लेप करैतो पित्तको सोजो जाय ३ अथ कफको सोजो दूरि होवोको लेप लिष्यते नगदबाबची मींढासींगी मजीठ राल आसगंध सतावरी यांनैं जलसूं मिहीवांटि निवायो लेप करैतो कफको सोजो जाय ४ अथवा पीपलि षली सहजणाकी जडकी वकल वालूरेत हरडैकीछाली यांनैं गोमूतसूं मिहीवांटि निवायो लेप करैतो कफको सोजो जाय ५ अर रातिनैं लेप कीजैनहीं अथ औषद्यांका जलसूं निवायो तरडोदे सो अनुक्रमसूं लिष्यते हरडैकीवकलनैं ओटाय ईको सुहावतो वे सोजाका दाहकै तरडो देतो वेकोदाह तत्काल दूरिहोय ६ अथवा वायनैं दूरि करिवावाली जो औषद्यां त्यांका काढाका जलसूं वेंकै तरडोदे अथवा तेलको वेंकै तरडोदे अथवा मांसका रसको वेंकै तरडोदे अथवा गरमगरम घृतको वेंकै तरडोदे अथवा गरम कांजीको वेंको तरडोदेतो वायको सोजो दूरिहोय १ अथ पित्तको सोजो दूरिक

न. टी. सुश्रुतका मतसौं व्रणका जतन साठ प्रकारकाछै. सोतोविस्तारघणोछै जीसूं एठै नहींलिष्याछै. अर ईग्रंथमैंग्याराप्रकारसौं जुदाजुदालिष्याछै. सोवानैं पूर्वविचारकरबुद्धिमौं ध्यानमेंलेकरव्रणरोगनैं शुद्धकरणौं. धीरजसौं.

रिवाकी तरडोलिष्यते. सीतल औषद्यांका काढाका तरडासूं दूधसूं घृतसूं पांडसूं सांटाकारससूं तरडोदे पित्तको सोजो जाय २ अथ कफका सोजाकी दूरिहोवाको तरडो लिप्यते कफनैं दूरिकरिवा वाली औषद्यां त्यांको गरम गरम तरडोदे अथवा तेल पारको जल गोमुत यांका तरडासूं कफको सोजो दूरिहोय ३

अथ रक्तका सोजाको अर पित्तका सोजाको जतन एकछै. ४ अथ व्रणका सोजाको अंगूठा उगैरे मसलिकरि पसेव लिवाणा ५ जो करडो व्रणहोय तीनैं अंगूठासूं अथवा वांसकिस्वांफ लकडीसूं सनैंसनैं मसलि वेंके पसेव लिवावैतो ओ ढीलो पडि आछ्यो हो जाय अर वेंकोवर्ण ओरसो होय अर कालोवर्ण होय अर वेंमें पी डावणीहोय ईसा व्रणका सोजाके अथवा कहींविसेल जिनावरका व्योहोय तीं सोजाके जोक लगाय वेंको लोही काढीनापणो अथवा पाछणादेर लोही काढी नापणो एक कानीतो सारा जतनछै. अर येक कानी लोहीकाढिवो यो एकही सारा जतनकी बराबरिछै. ६ अथ व्रणकाचा अर पकवानके सनमुष होय रह्या त्यांके औषद्यां को वांधिवो तीकरवेंके पसेव आयवो सोलिप्यते जोकाचा अर प कवाके सनमुष होयरह्या जो व्रण त्यांके येऔषदि वांधि पकावैतो वेव्रण आछ्या होय सो औषदि लिपूंछूं दसमूल परेटी रास्ना आ सगंद पीप अरंडकीजड अथवा ईंका फल निर्गुंडी साठी सहजणो पीपलि सींवोलूण सूंठि सणकावीज कपासका वीज अलसी कुल त्थ तिल जव सिरस्यूं मुलकावीज सौंफ नींवकापान नागरवेली कापान गुलेवासका पान यांनें उगैरे जोपावे त्यांनें गरम करिवा

भ. टी. ऊपरजो कह्योछै सोजाकोरोग योंऊपरछेपछैजोपैविजोराकोनहलिषीछै. पणिजोरो एकतीसुकीजातको फलछै, जीनैंमातुलिंगकहेछै, संस्कृतमें मुंगडाईमें तुरंजनामकहेछै. उप मफलछै. गुनकारीछै जीको मुरंबोपणोअंछदोयछै. योकप्रदमिद्दछै. परंतु ईकागुनतो येव [illegible] विसेषकर जाणछै. इसीमकांगतो ईनैजाता(?)मनुष्यकनें गहरायेछै.

कैवांटि बांधे अथवा यांको काढो करि तींको तरडो दे सुषपूर्वक आछीतरह क्रियासूंतौ वेवायका व्रणांको सोजो आछयोहोय ७ अथ व्रणका सोथका दूरि करिवाको लेपलिष्यते साठीकी जड देव दारु हलद सूंठि सहजणाकी बकल सिरस्यूं यांनैं षटाईसूं वांटि निवाया करिवाको लेप करैतौ सर्वप्रकारका व्रणको सोजो दूरि होय ८ अथ व्रणका पकिवाकि विधि लिष्यते व्रणहै सो लेपादिकां करि पकै नहीतौ येऔपदि व्रणनैं पकायदे सो लिषूंछूं सणकीजड सहजणाका फल तिल सिरस्यूं अलसी दारूं काढिवाको जावो ज व गोहूं नींवका पान उगैरै यांनैं सिजाय व्रणकै बांधैतौ व्रण पकि जाय ९ अथ व्रण पकिगयोहोय तींकै चीरोदे तींकी विधिलिष्यते जींव्रणमैं राधि पडिगईहोय तींकै चतुरवैद्यकने शस्त्रसेती चीरोदि वाय वेंकी राधि काढिनापै पाछै मल्हिमादिक लगावैतौ व्रण आ छ्योहोय १० अथ अतना आदमीकै चीरोनही लगावे सोलिष्य ते बालककै बूढाकै जीसूं चीरो सह्योजाय नहींतींकै क्षीण पुरसकै डरपस्यालकै स्त्रीकै मर्मस्थानमैं जोव्रणहोय तींकै इतना आदम्यां कै चीरो दीजै नहीं वेंकै औषद्यांसेती भेदनकरि वेंकी राधि कढाय आछयोकीजे सोवे भेदन औषदि लिषजेंछै कणगचकीजड. चित्रक दांत्युणी भिलावा कनीर कबूतरकीविष्ठा यामैंसूं कहींको लेपकरैतौ ओव्रण आपही फुटै वेंकीराधि नीकलि जाय ११ अथवा पारी लूण जवषार साजी आंधीझाडाकोपार यामे कहींको लेपकरैतौ व्रणछी राधि नीसरिजाय १२ अथवा ओव्रण घणोगाढो होयतौ हाथीका दांतनैं जलमैं घसि वेंकी व्रणकै बूंददेतौ वेंकोसोजो दूरि होय वेंकी राधिनीसरिजाय १३ अथपीडनलिष्यते राधिजीमैं पडि

न. टी. रक्तश्राव करणो लिष्योछै. सोजो यथायोग्यविनारकर छोडीकढावे जो हसौं अथ वा पाछणासो अथवा ओरभी प्रकारसौं छोडी कढाणीश्रेष्ठछै. कारणपकायकर आरामकरै जीनैंपणादिनलागे भयोउपाय छयछै.

गई होय अर मर्मस्थानमें होय इसा व्रणके चीरोदीजे नहीं त्यांके ये औषदिलगाय वेकीराधि काढी नाषिजेतो वैव्रण आछ्याहोय सो ये औषदि लिषूंछूं जव, गोहूं, उडद यानें मिहीवांटि पाणीसूं वानें निवाया करि बांध अर व्रणका मूंढामाहिसूं राधिकाढि नाषे पाछै वेंकै मल्हिमादिक लगावे तदि औव्रण आछ्योहोय १८

अथ व्रणशोधन लिष्यते जोव्रण काचो होय तींकै पटोलकापान १ अथवा नींबकापान त्यांनें सिजाय यांकापाणीसूं व्रण आछ्याहोय २ अर गूलरिकी वकलका काढासूं धोवैतो व्रण आछ्यो होय ३ अर किरमालाकी वकलका काढासूं धोवैतो कफको व्रण आछ्यो होय ४ अर पीपलिकी वकल गूलरिकी वकल वडकीवकल वीलकीवकल यांका काढासूं व्रणका सोजानें उपदंशनें धोवैतो ये आछ्यो होय ५ अथवा तिल सिंधोलूण महलोठी नींवकापान दोन्यूंहलद निसोत नागरमोथो यांनें बराबरिले अर जलसूं वांटि याको लेप करैतो व्रण पकिवेकी राधिनीसरिजाय ६ अथवा नींबकापान तिल दांत्यूंणी निसोत सिंधोलूण यानें मिहीवांटि यांको लेप करैतो दुष्टव्रण आछ्यो होय ७ अथवा नींबकापान सिजाय बांधे तो दुष्ट व्रण आछ्यो होय ८ अथवा हरडे निसोत सींधोलूण दांत्युणी कलहारिकी जड सहतनें यांनें वांटि यांकी व्रणके वाती देतो दुष्ट व्रणभी आछ्यो होय ९ अथवा व्रणका मूंढासूक्ष्महोय त्यानें नींबउगैरैका पानाको रस उगैरे यां औषधांकी वातीदेता वे व्रण आछ्या होय १० अथवा नींबका पान घृत सहत दारुहलद महुवो यांकी वातीकरि व्रणनें दे ११ अथवा तिलानें औटाय वेकी

न. टी. व्रणरोगमेंपथ्याहि० जव, गोहूं, शालिचावल, मसूर, तुर, मूंग, षिचडी, घृत, मेऊ, बैंगण, परेवा. करेला, परवल, इत्या० कुपथ्यहि० षटाई, षंटाई, षार, श्रम, व्यवार छोवारे. मीठंग, दिननिद्रा, जागरण, फिरणो शाकपान, बीडी, कांजी वगरेसूनिश्चय

व्रणकौं वातीदेतौ व्रण आछयौ होय १२ अथ व्रणको रोपणनाम अंकुर ल्यावे सो लिष्यते ज्यां व्रणाकी राधि नीसरगई होय अर वेंव्रण भरेनहींत्यांके नींवका पानानैं औटाय पाछै वे पाणीसूं व्रण नें धोवै पाछै सहत मिलाय तेलको फौहोवेंकै देतौव्रण भरिजाय १३ अथवा आसगंध लोद कायफल महलोठी मजीठ धावड्यांका फूल यांनैं वांटि व्रणकै वांधेतौ व्रणभरि आछयोहोय १४ अथ व्रणमैं दाहसूल उपजि आयो होय तींको दूरिकरिवाकोलेप जवांको आटो सहत तेल घृत येसर्व मिलाय क्यूं गरमकरि लेप करैतौ व्रणको दाह सूल जाय १५ व्रणमैं कृमीपडिगई होय तींका दूरिहोवाको लेप कणगचकीजड नींवकीछाली निर्गुंडी यांनैं वांटि योंको लेप करैतौ व्रणको कृमी मिटिजाय १६ अथवा लसणको व्रणके लेपकरैतौ व्रणकी कृमी मिटिजाय १७ अथवा हींग नींवकीछालि यांको लेपकरैतौ व्रणकी कृमीमरै १८ अथव्रणमैं छोतिपडिवेमैं पाजिपीड कृमीपडिगई होयतींको दूरिहोवाकीधूणी नींवकापान वच हींग घृत लूण सरस्यूं यांनैं येकठा घृतमैं वांटि यांकी व्रणकै धूणी देतौ व्रणकी कृमि पाजि पीडजाय १९ ये सर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै अथ व्रणका भरिवाकीमल्हिम कडवो तेल पैसा २ भर पाणी पैसा २ भर यां दोन्यांनैं कांसीकी थालीमैं घालि दिन १ तांई हाथसूं मसलै पाछै ईंकैमाही राल पइसा ५ भरमिहि वांटि ईंमैंमिलावै पैरसार टका १ भर मिहि वांटि ईंमैं मिलावे कूठ टंक ५ ईंमैं मिहि वांटि मिलावे नीलोथुथो टंक २ ईंमैं मिलावै वेरजो टंक १ मिरचि टंक १ मिहि वांटि ईंमैं मिलावे पाछै यांसारांनैं निपट मिहि वांटि हातसूं मथै पाछै व्रणकै ईंनै लगावैतौ व्रण तत्कालभरि

न. टी. व्रणका उपचारतथानिदानघणाछै. ग्याकांग्रंथमैंविस्तारछै. परंतुव्रणरोपनमैंतोनींवकोवृक्षबलवानछै. व्रणके ऊपरलेपकरणोंठीकछै. अर व्रणमैं यांओषधांकीवत्तीकै जाटोलेप करव्रणमैं मेलैतो व्रणभरै.

जाय २० अथ आगंतुक व्रण कहिजे तरवारीनें आदिलेर शस्त्रत्या कालागिवासूं उपज्योजो व्रण त्यांका जतन लिष्यते ज्यांपुरुषांके तर वारनें आदिलेर नानाप्रकारकी धारछे ज्यांके त्याकालागिवासूंवां की त्वचाफाटि जाय अथवा त्वचाकी नानाप्रकारकी आकृति होजा य त्यां आकृत्यांनैं आछ्या स्याणा सथियाकनैं पाटका सूतसूं सि मावे निर्वातस्थानमैं १ पाछैं वा टांकाकौं व्रणाका स्थानमैं गोहांकी मैदा तीमैं पाणी घृत घालि पकावे वेंको पाणी बलिजाय घृतमात्र आयरहे इसीतरें वेकीलोइ करि सुहावतो वेंऊपरि सेककरैतो ओ व्रण तत्काल आछ्यो होय २ अथवा कुटकी मोम हल्द महलो ठी कणगचकी जड अर कणगचका पान अर कणगचकाफल पटो ल चवेलीका पान नींबकापान यांमैं घृतघालि पकावे पाछे पाणीब लिजाय घृतमात्र आयरहेतदि ईंघृतको सुहावतो सुहावतो सेक करैतो वोव्रण तत्काल आछ्यो होय ३ ये जतन वैद्यरतनमें लिष्या छै. अथवा शस्त्रादिकांकारिजींको लोही घणोनीसरि गयो होय तीं के वायकी पीडा होय आवे तींकादूरि करिवावास्ते वेनें घृतपान कराजे अर जींको षडगादिकांकारि गात्रछिन्न होय तींके गंगेरणीकी जडकोरस वेमें भरिदेतो वे व्रण तत्काल भरिजाय अर आछ्या होय जाय ४ ईव्रणवालानें सीतल जतन सर्व आछ्याछे अर शस्त्रला गिवेंकोरुधिर आमासयमें जायतो वेपुरसनें वमन करावांच्योआ छ्यो होय अर पेडूमें रुधिर जायतो आंजुलावसूं आछ्यो होय अथवा वांसकीछालि अरंडकी वकल गोपरू पापाणभेद यांको काढोकरि तीमें सेकीहींग सींधोलूण ईमें नाषिपावेतो कोठाको रु

म. टी. कणगचकी जड कहेछे. सोकणगचको [illegible] ओरकणगचने [illegible] जराको [illegible]छे. [illegible] कहेछे. ओर नागमोथा कहेछे. [illegible] पान गोळहोयछे. [illegible] होयछे. पानकदरा होयछे. [illegible] [illegible]. काळीमिरचि [illegible] नाचनोछे. [illegible]छे.

धिर निकलवो आछ्यो होय ५ अर जव कुलित्थ सींधोलूण येषावा मैं लूषा आछ्याछै. अथवा चवेंलीकापान नींवकापान पटोल कुट की दारुहलद हलद गौरीसर मजीठ हरडैकीछालि मोम नीलोथूथो सहत कणगचका वीज येसर्वबरावरिलेयांकी बराबरि गऊकोघृतले अरयांसौं आठगुणो पाणीले यांनैं मधुरी आंचसूं पकावे तदिपाणी बलिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईंघृतमैं वाति ऊगैरे करिव्रणकै लगावैतौ गंभीरनैं आदिलेर सर्व व्रण आछ्या होय इति जात्यादिघृतम् ६ अथवा चवेंलीकापान नींवकापान पटोलकापान किरमालाकापान मोम महुवो कूट दारुहलद हलद कूटकी मजीठ पदमाष हरडैकीछालि लोद तज कमलगट्ठा गौरीसर नीलोथूथो किरमालाकी गिरि ये बराबरिले यांको काढोकरि तींकाढाका रसमैं तिलांकोतेल पकावे मधुरी आंचसूं वेंकाढाको रसवलिजाय तेलमात्र आयरहै तदिवें तेलनैं उतारि आछ्या वासणमैं घालिराषे पाछे ईंतेलनैं वातीउगैरे कहींतरैसूं वांव्रणकों लगावे तौ ओव्रण तत्कालभरि आछ्यो होजाय ७ इति जात्यादितैलम्. अथवा चित्रक लसण हींग सरपंषा गौडदेशमैं प्रसिद्धछै. कलहारीजडीकीजड सिंदूर अतीस कूट कडवोतेल अरयांओषघ्यां माफिक पाणी नापे पाछे मधुरी आंचसूं पकावे तदि वेमैंवो पाणी बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि तेल ओर वासणमे घालि रापे पाछे ईंतेलको कपडाकी बत्तिसों कहींतरैव्रणके लगावैतो व्रणमात्रनैं दुष्टव्रणनैं नाडिव्रणनैं यो तेलतत्काल दूरि करेछे.

इति विपरीतमल्लतैलम्. अथवा गिलवै पटोकीजड त्रिफला वायविडंग ये बराबरिले त्यांनैं मिहिवांटि यां बराबरि गूगलले पाछे

न. टी. शस्त्रादिकांका प्रहारसुं मनुष्यके लोहीगणोनीसरजायतोवोमनुष्य पक्षोनकातहो पजायछै. जीसोंवायुप्रबलतत्कालहोयकररोगांकीप्रवर्तिकरछे. जीवासंवैपनें विचारनाहिनें. लोहीनें अटकातै. यापनें मापादेनहीं.

यानें मिलाय येकजीवकरि टंक २ पाणीसूं रोजीना पायतो व्रण मात्रनें वातरक्तनें गोलानें उदररोगानें योगूगल दूरि करेछे. ९ इति अमृतादिगुगलम्. येसर्वजतन भावप्रकाशमें लिष्याछे. अथ ३ प्रकारसूं कहींतरेंसूं अग्निसूं दग्ध होगयो होय त्यांका साराही अनुक्रमसूं जतन लिष्यते. अग्निसूं कहींतरे दाजिगयो होयजो पुरुष तीनें अग्निवासूं तपावै ओपुरस वेगो आछ्यो होय १ अथवा वेपुरसकै अगरनें आदिलेर गरम ओषधांको वेदाज्यांऊपरि लेप करैतो ओ वेगो आछ्याहोय २ योप्लुष्टको जतनछे अथ दुर्दग्धको जतन लिष्यते ओषधांका घृतमें अथवा इहीं घृतनें गरमकरि पाछे ईनें ठंडोकरि ईंको लेप करैतो दुर्दग्धपणो आछ्यो होय ३ अथ सम्यक् दग्धको जतन लिष्यते तवापीर वडकीजड रक्तचंदन सोनागेरू गिलवै यानें घृतसूं मिहिवांटि यांको लेपकरै तो सम्यक् दग्ध आछ्योहोय ४ अथ अतिदग्धको जतन लिष्यते बुरामांस काढि नाषे पाछे साठीचावल तिंदू यानें घृतसूं मिहीवांटि वेंको लेपकरै ऊपरि गिलवैका पान बांधैतो अतिदग्धपणो आछ्यो होय ५ अथवामोम महुवो लोद राल मजीठ रक्तचंदन मूर्वा येसर्व बराबरिले यानें मिहिवांटि गऊका घृतमें पकावै पाछे ईघृतको लेपकरैतो अतिदग्धपणाकी अग्नि दूरिहोय अर सरीरमें मांस ओर होय आवै ६ इति चित्रकादिघृतम् अथवा पटोलका पंचांगको काढोकरि तीमें कडवोतेल पकावै वेंकाढाकोरस वलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि वेनें लगावैतो अग्निका दाज्याकादाह अर श्रवयो अर वेंकी फांडा येसाराजाय ७ येसर्व जतन भावप्रकासमें लिष्याछे अथवापुराणो आलो चूनो पावाको तीनें दहींका पाणीमें

अ. टी. मनुष्यकै चोटलागिजानूं गाढाऊतणाणांपिंडकूदवाणों दूणांहोजावै. जाभांणंपी होजावैतो वैमनुष्यनैं मनाईगहतमूं दईंजोमनुष्यदोरगारदोणछे, गोसमपाईपणी ओसदिं मनुष्यकामांसहीहोपछे, इंसपभैदह. ४१० कदूणां लिपीछे.

वाटि अग्निका दाज्याउपरि लगावैतौ औ आछ्यौ होय तेलकौ दाज्यो होयतौ वेंकाफफोलाभी दूरिहोय ८ अथवा जवानैं वालि तीलांका तेलमैं वांटि पाछै वेकौ दाज्याउपरि लेपकरै औ आछ्योहोय. ९ अथवा सेक्यो जीरो तीनैं मिहिवांटि वें बराबरि मोम राल घृतमें मिलाय ईंको लेपकरैतौ अग्निको दाज्यो तत्काल आछ्योहोय १० अथ तेलउगैरै कहितरैसूं दाज्यौ होय तींको जतन लिष्यते तिलांकातेल ऽ। अरपावाको चूंनो आलो पुराणोपईसा ३ भर तीनैं हातसूं मसलिपहर १ येक वैनैं रावसोकरिले पाछै वेनैं रुईका पहलासूं वैकै लगावै तौदाज्यातत्काल आछ्याहोय. ११ अथ व्रणग्रंथिरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनालिष्यते विगरिपेद हीसरीरमांहिसूं नीकलतोजो दुष्ट लोही तीनैं पवन सोस करिकै वेंकी गांठी पैदाकरिलेछै. वेगांठिमैं दाह अर षुजालि घणी होय तीनैं व्रणग्रंथि कहिजै १२ अथ व्रणग्रंथिको जतनलिष्यते कपेलो वायविडंग तज दारुहलद यानैं मिहिवांटि जलसूं अर वेमैं तिलांको तेल नापि मधुरी आंचसूं पकावै औपाणी वलिजाय तेल मात्र आय रहै तदि ईतेलको लेप करैतौ व्रणग्रंथि जाय १३ इति व्रणग्रंथि व्रणरोगकी अग्निदग्धरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम्. अथ भग्नरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते भग्नकहिजे हाडकोटूटिवो सोदोयप्रकारकोछै. एकतौ कांडको १ येकसंधिको २ कांडकोतो नल १ कपाल २ पहूंच्यानैं आदिलेर ३ अर संधिको ४ प्रकारकोछै. उत्पत्ति १ विश्लिष्ट २ विवर्तित ३ तिर्यगत ४ क्षिप्त ५ अथ ६ अर सरीरकी संधि भावै जेठांकी टूटि होय कहींतरै तींको सामान्य लक्षणलिष्यते संधिस्थानमैं पीडाघ

न. टी. विपरीतमल्लतैल लिष्योछै सो औषधांको विपरीत योगसौं नामछै. परंतु भेडेल कालेदपकर लिषोछै कलहारीकीजड उपविषछै. चित्रक अमिछै. लहसण हींग इत्यादिक योगछै. परंतु ओतेल मजबूद सरीसोछै.

णीहोय उठतां पसरतां येकठाकरिता अर ऊठे सपरस सुहावैनहीं तदि जाणिजे कहींतरे संधिटूटिछे. अथ उत्पिष्टसंधि टूटिवाको लक्षणलिष्यते दोय हाडांकीसंधि टूटिहोय ऊठे चहूंओर सोजो घणो होय अर ऊठे पीडा होय तदि जाणिजे उत्पिष्ट संधि टूटिछे १ अथ विश्लिष्ट संधि टूटिवाको लक्षणलिष्यते ऊठे सोजोहोय अर रात्रिमें पीडा सोजो घणोहोय जीमें येलक्षणहोय तीनें विश्लिष्ट संधि टूटि जाणिजे २ अथ विवर्तितसंधि टूटिवाको लक्षणलिष्यते. पसवाडामें पीड घणीहोय अर उठेसोजो पीड रहवोई करे येजीमें लक्षण होय तीनें विवर्तित संधि टूटि कहिजे. ३ अथ तिर्यगति संधि टूटि होय तीको लक्षण लिष्यते ऊठे सोजो होय पीड घणी होय येजीमें लक्षण होय तीनें तिर्यगति संधि टूटि जाणिजे ४ अथ क्षिप्त संधि टूटिहोय तींको लक्षण लिष्यते जीमें विषम सूलहोय साथलमें कदेक थोडी कदेक घणीहोय येलक्षण होय तीनें क्षिप्त संधि टूटि जाणिजे ५ अथ अधःसंधिटूटिहोय तींको लक्षणलिष्यते जो आसंधि नीचरली टूटिछे तीके नीचे पीड होय तीनें अधःसंधि टूटीजाणिजे ६ अथ संधिविना कांड कहिजे हाड टूटा होय नल कपाल वलयनें आदिलेर त्यांको लक्षणलिष्यते नरसलकीसी नाईं वेहाडाछिद्र छिद्रलियांहोय सूधाहोय तीनें नल कहिजे. अथ हाड टूटिवो बारा १२ प्रकारकोछे सो लिष्यते कर्कट १ अश्वकर्ण २ विचूर्णित ३ कचित कहिजे यंत्रितकयो ४ अस्थिच्छित ५ कांडकेविसे भग्न ६ अतिपातिन ७ मज्जागन ८ प्रास्फुटित ९ वक्र १० छिन्न ११ द्विधाकरयो १२ जिसा यांका नाम तिसाही

* [illegible]

लक्षण जाणि लीज्यो. अथ हाड टूट्यो होय तींको लक्षण लिष्यते. अंगसिथिल होजाय अर ऊठे सपरस सुहावैनहीं अर ऊठे सरीर फुरके अर सरीरमैं पीडाहोय अर सूलहोय अर राति दिनमै कदें हीचैन पडे नहीं. ये जीमैं लक्षणहोय तदि जाणिजे ईंको कहींतरे सूं हाड टूटौछै अथ भग्नरोगका कष्टसाध्य लक्षणलिष्यते अग्नि मंद होयजाय कुपथ्य करिवोकरै अर वायको सरीर होय अरजीमैं ज्वर अतिसारादिक होय ओ भग्नरोगी कष्टसूं वचै अथ भग्नरोगको असाध्य लक्षणालि० जींको कपाल फाटिगयोहोय कटि टूटिजाय अर संदि संधि पुलिजाय अर जांघ फिसिजाय १५ अर ललाटको चूर्ण होजाय अर स्तनकी जागां टूटि जाय हीयो फाटिजाय गुदा फाटिजाय कनपट्टी फाटिजाय पींठ फाटिजाय अर माथो फाटिजाय ओ असाध्यजाणिजे. १ अथ पुनः असाध्य लक्षणालि० हाडांनैं आछया प्रकार बांध्याछै पाछै गाढा बांधणी आवै अर वै षोटा पाणामैं वंधिजाय अर ऊठे चोट लागणी आजाय अर मैथुनादिक करणी आजाय ओहाड टूटिवो असाध्य होजाय २ अर सरीरमै स्थानका हाडांके चोटलाग्योजो चिन्हहोयछै सो लिष्यते कंठाके तालवाकै कनफट्यांकै कांधाकै सिरकै गोडाकै कपालकै कानकै आंषिकै यां जागां कहींतरैकी चोटलागैतो ऊठाका हाठ नय जाय पौंहचाका पींडी उगैरै सूधा हाडछै. सो वांका होय जाय कपालनैं आदिलेर जोगोल हाडछै सो फाटिजाय दांतउगैरै छोटाहाडछैसो टूटिजाय १ अथ भग्नरोग कहिजे हाड संधिको टूटिवो तींका जतनलिष्यते प्रथम चोट उगैरै कहीं तरैसूं हाड अर संधिटूटिजायतो वेंही वपत ऊठे ठंडो पाणीनाषे पाछै बुद्धिवान आद

न. टी. भग्नभंगरोगमें अहारव्यवहार पथ्यापथ्य यथोक्त करणायोग्यछै. अर मथीमैंदुनतक रणी नहीं. तावडे फिरणो नहीं. कुपथ्य कोईबी नहीं करणो. जो आपका शरीरकै जीनें आराम करणेकी इच्छाहोय सो धीरजसैं व्याधीनें जीतणी.

मांहैसो वैंको औषद्यांको सेक करै अथवा पाटो बांधिवो करै अर ऊठेजो इलाजकीजेसो सीतल इलाज कीजे अर जोबुद्धिवान पुरष होय सो पाटी सीथल नहींबांधे. अर निपट गाढीभी नहींबांधे आछीतरै साधारण बांधै सिथल बांध्यांआछीतरै स्थिरमिलैनहीं अर गाढी बांध्यां त्वचाकै सोजो अर पीड अर चामडीको पकीवो होय जाय ईवास्तै पाटी साधारणही बांधिवो जोग्यछे. २ हाड संधिटूटाकी जायगां डाभ सेती बांधे औषद्यां आलीकरि अथवा चोटकी जायगां आलो कादो लगावैतो हाड संधिटूटीआछीहोय ३ अथवा मजीठ महुवो यादोन्यांनें ठंडापाणीसूं मिहीवांटि ओ हाडटूट्यो होय वैठै वांकोलेप करैतो ओ आछ्योहोय ४ अथवा सौ १०० वारको धोयो घततीमें साठ्याचावलवांटि वांको लेपकरैतो ओ आछ्यो होय अर हाडकीसंधि टूटी होयतो बोरपीपलकी लापगौंहूं कहुवारूपकी बकल येघतमें बांटि टंक ५ दूधसूं पीवैतो संधिटूटी अरहाडटूट्यो आछ्यो होय ५ अथवा लाप कहवाकी वकल आसगंध परेटी गूगल येबराबरिले यांको येकजीवकरि टंक २ दूधकेसाथि लेतो हाडटूट्यो संधिटूटी आछीहोय ६ अथवा गौंहांनें आधावालिले फिटकडीमें पाछे वांनें मिहीवांटि टंक ५ सहत टंक १० केसाथि चाटे रोजीना दिन ७ तो हाडटूट्यो आछ्योहोय ७ अथवा आंवला मेदालकडी तिल ये ठंडा पाणीसूं मिहीवांटि [illegible] जागां लेप करैतो हाड टूट्यो संधिटूटी आछी [illegible] अर [illegible] ममाई मनुष्यका मांसका मिलैसो अनुमान [illegible] तर देतो वैंका हाड अर संधिटूटी आछी होय ९ [illegible] चो- वावालाकै मांस सोरवो दूध घत पुष्टाईकी [illegible] री

न. टी. अस्थिभंग नाम[illegible]. जीनें हाडटूटो कहेछे के जीनें [illegible] जांगोस काडामलीमांनाई [illegible] जीनें विपूचित कहेछे येतही नाम मालिक [illegible]

अतनीवस्त ईंने आछी नहीं लूण. कडवीवस्त पारषटाई मैथुन तावडो षेद लूखो अन्न वालककी अरमोव्यारकी चोटवेगीआछी होयवूढाकी अररोगीकी चोटवेगी आछीहोयनही १० अथवा लाष टंक २ दूधसूं दिन १५ पीवैतौटूट्योहाड आछयो होय. ११ अथवा पीलीकोड्यांको चूर्णरती २ तथा ३ औटाया दूधसौं पीवैतौ टूटोहाड जूडे १२ येसवंजतनवैद्यरहस्यमैं लिष्याछै. अथवा बोलकीवकल त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि यांसारांकी बरावरि गूगल नाषै पाछै यांको येकजीवकरि टंक २ रोजिनादिन १५ दूधसूंलेतो सरीरवज्रकोसो होजाय १३ अथवा वौंलकीवकलटंक २ ईंनै मिही वांटि सहतसूं महिनायेकतांई लेतौ सरीर वज्रकोसो होजाय १४ यो जोगतरंगिणीमैंछै. अथ मुद्गर उगैरे कहींतरैकी चोटलगी होय तींका आछया होवाकी विधिलिष्यते. मैथी मैदालकडी सूंठि आंवला यांनैं गोमूतमैं मिहीवांटि चोटकै लेपकरैतौ चोट आच्छीहोय १५ इतिभग्नरोगकी उत्पत्ति लक्षणजतन सं०

अथ नाडीव्रणरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० जो अग्यानवैद्य सथियो छै सो यागुमडांकाव्रणनैंकाचो जाणिवेको जतनकरै नहीं वेंकी राधि काढैनहीं वाराधिव्रणकैमांहि नसांमैं धासिजायपाछै वेका स्थानानैंविगाडिदेपाछैवा कहींतरै वारैनींसरै. वेराधिकाघणाप्रभावसूं इंवास्तेवाराधि नाड्यांमैं नलकीसीनाईनलमैं जैसै जलवढै तैसै नाड्यांमैंराधिवढै. ईवास्तैं ईरोगकौं नाडीव्रणकहिजै १ ओनाडीव्रणरोग पांच ५ प्रकारकाछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ शास्त्रादिककाचोटलागीवाको ५ अथ वायकानाडीव्रणकोलक्षणलि०काठोमिहीन् जींकोमूंडोहोय अरजींमैं

न. टी. मनुष्यकैहाडटूटजाय जींकैपाटायेपार्थयाथैछै जींमापाटाकावांध्यापीछैवेनै हाल पाछकरिवादेनहीं अरकुपथ्यकरिवादेनहीतो साराम तुरत होयछै कदाचितहालचालकुपथ्य सौंसाध्यहोयतोभी ओमनुष्य असाध्यहोयछै.

अथनाडि व्रणका जतन लिष्यते सूक्ष्म मूंढाका व्रणछे, त्यांमैं राधिनीकलिवो करैतौ वैंकै थोहरिका दूध अथवा आकका दूधमैं दारुहलद भिजो तीनै घसि तीकी वातिकरि वेव्रणका मूढामैं दे तो ओ व्रण भरिजाय १ अथवा किरमालाकीजड हलद मजीठ यांनैं सहतमैं मिहि वांटि वैंकीवाति करै वे व्रणमैं जुगतिसूं वैद्यदेतौ व्रण आछ्यौ होय २ अथवा चवेलीका पानाकोरस आककीजड किरमालाकीजड दांत्युणी सींधोलूण. संचरलूण जवषार यांनैंमिहि वांटि यांकीवातिमिही व्रणका मूंढामैं जुगतिसूं देतौ ओव्रणभरिकै आछ्योहोय ३ अथवा जात्यदिघृत अथवा जात्यादितैलयां सूंभि यो नाडिव्रणरोग जायछे. ४ अथवा त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि यांवरावरि सोध्योगूगल यांनैं मिही वांटि यांको येक जीव कारि टंक २ रोजीनादिन ४९ सीतलजलसूं लेतौ सर्व प्रकारकी नाडीव्रणरोगजाय पथ्यमैंरहैतौ ५ अथवा गूगल सिंदूर यांदोन्यांनैं मिही वांटि ईनैं जतनसूं व्रणमैं भरैतौ नाडीव्रण रोग आछ्यो होय ६ ये सर्व भावप्रकासमैं लिष्यछे. अथवा आंधाझाडाकावीज तिल यांनैं मिही वांटि ईनै जतनसूं नाडीव्रणकौ लेपकरैतौ वायकौनाडीव्रण आछ्यो होय ७ अथवा तिल मजीठ हाथीकोदांत हलद यांनैं मिही वांटि पित्तका नाडीव्रणकौ लेपकरैतौ पित्तव्रण नाडीव्रण जाय ८ अथवा तिल महलौठी दांत्युणी नींवकीछाली तथापान सींधोलूण यांनैं मिही वांटि यांकालेपकरैतो नाडीव्रण रोगजाय ९ अथवा तिल सहत घृत येकठांकरि लेपकरैतौ वाकको व्रण आछ्यो होय १० अथवा सहतकी वत्तीसैं अथवा लूणकी वत्तीसैं दुष्टव्रण आछ्यो होय ११ अथवा तेलकी वत्तीसूं दुष्टव्रण आछ्यो होय

न. टी. वंबुळकी छालको योग लिष्याछे जीमैं लीपीछे सरीरवज्रकोसो होय जाय सोपा वात ग्रंथकर्ताकी एक आनंदकी इच्छाछे. जैसैं हरेक मनुष्यकहैछे. यो रूपदो गरवारपार जिरयोछे. ईपानही जाणज्यो. परंतु सरीर मजवूत पट होय जायछे.

१२ अथवा साजी जवपार कपलो महंदी सुहागो सुपेद पेरसार ये बराबरिले यानें गऊका घृतमें मिही वांटि दिन १ पाछे ईनें व्रणमें भरेतो व्रणकी कृमिमरिजाय व्रणकी सोजीजातीरहे अर ओ व्रण भरिजाय १३ इतिस्वर्जकादि घृतं योचक्रदत्तमें लिप्योछे अथवा स मालुकापानांकारसमें तेलपकाय वेतेलकीबाति व्रणमें देतो व्रण आ छ्योहोय १४ इतिनिर्गुंडीतैलकम् यो वृंदमेंछे. अथ सुपेदमल्हिम कीविधि राल पईसा १ भर सुपेदो पईसा १ भर सुपेदो मोम पईसा दोय २ भर मुरदासिंगी पईसा १ भर राल सुपेदो मुरदासिंगी. यानेंपुव मिही वांटि पाछे गऊको घृत पईसा ६ भर गरम करि ईमें मोम पिघलाय सुद्धकरे अरवे मिही वांटि ओषधिभी वेमोमकाघृ तमें वेहीवपत नाषे पाछे वेही समें कांसीकी थालीमें पाणी नापिवे पाणीमें मोमसुद्धा ये औषदि नाषि हाथसूं पूबधोवे वार १०८ पा छे व्रणके ईनें लगावे तो व्रण आछ्यो होय १५ अथवा पारोसोधी आंवलासारगंधक ये बराबरिले यादोन्यांकी बराबरि मुरदासिंगी ले अर यातीन्यां बराबरि कपेलोले यानें थोडोसो नीलोथूथोनाषे यासारांसूं चोगुणो ईमें गऊको घृत नाषे अर ईमें नींबकापानाको रस अनुमान माफिक नाषे पाछे या सारांनें घृतमें पूबघोटे दि न दोयताई. पाछे व्रणके लगावे तो व्रणमात्र सर्व आछ्या होय १६ यो वैद्यरहस्यमें लिप्योछे. अथवा सुपेदमोम मस्तंगीगूंदमें दा ल नीलो थूथो सुहागो साजी सिंदुर कपेलो मुरदासिंगी गूगल कालीमिरचि सोनागेरु इलायची. वेरजो सुपेदो हींगलू सोधीगंध क ये सर्व बराबरिलेमोमविना सारानें यकठां जुदा वांटे अर मोम नें गऊका घृतमें अग्निऊपरि तपाय शुद्धकरिले पाछे सर्व औषदि

[illegible]

ईमोममैं मिलाय षूब मिहीषरलमैं दिन २ वांटि येकजीवकरिपाछै सस्त्र उगैरे अर सर्व दुष्ट व्रणभीईका लगायासूं आछयाहोय १७ यो वैद्यकुतूहलमैं लिष्योछै. अथवा नीलो थूथो कपेलो मूरदा सिंगी सुपेद षैरसार सुपेदो सिंदूर हिंगलू मोम केसरि गऊको घृत येसर्व वरावरीले पाछैं गऊका घृतनै तातोकरि पहिली ताताघृतनैं नीचैउतारि ईमैं प्रथम नीलोथूथो वांटिनाषै पाछै वेही वषत ईमैं मोमनाषै पाछै ईनैं पघलाय ले पाछै ईमैंये औषदि वांटिनाषे यांसा राको येकजीवकरि पाछै ईनैं कांसीकीथालीमैं घणो जलनाषि ईमैं येसारीमोमसुधांये औषदिनाषै हथेलीसूंदिन १ षूबमर्दनकरै पाछै ईनैं मल्हिमनैं व्रणमात्रकै लगावैतौ व्रणमात्र चांदीउगैरे सर्व आ छ्याहोय १८ यो वैद्यकुतूहलमैछै. अथवा हिंगलू पईसा ३ भर सुपेदमोम पईसा ३ भर साजी पइसा १ भर नींवकापानाकीटीक डीकरि गऊकाघृतमैपकावै अर मोम घृतमैंपघलायलेमुरदासिंगी पईसा १ भर पाछै ईनैंवांटि यां सारांको येकजीवकरि पाछै व्रणकै लगावैतौ व्रणमात्र आछ्याहोय १९ अथ सरिरमैं हाथ पगांउगैरे फाटि फाटि व्याऊसी पडिजाय तींका आछ्या होवाको मल्हिम लि० राल पईसा १ भर काथो पईसा १ भर कालीमिरची पईसा १ भर गऊको घृत पईसा ४ भर चवेलीको तेल पईसा ४ भर यां औषधांनै मिहीवांटि लोहका कडछलामैं मल्हिम करिले पाछै ईनैं लगावैतौ हाथ पग उगैरे कठही फाटतौ होयतौ निश्चै आछ्यो होय २० अथ मल्हिम नींवकी नींवका पानाकोरस सेर एक १ काढै पाछै गऊको घृतपाव ऽ। कडच्छलामैं चढाय येनैं तातो करै

न. टी. नाडीव्रणजे।नासूरछै. जींकाछेद्रमैं सली पाछै जदां वैको मूलस्थान होय. जदां ताईंपावली जायछै. पाछै औषधकी वर्ती पाछै तोवो भरजायछै, परंतु नासूरकी मापावणी फैलेछै. पणादिनाको होयजदां वैमैं सलीद्वारा डेरनाई चीरकर घावघाव देवैनो जो। वेगो भरैछ.

ओघृत तातोहोय तदिवे मेराल पईसा ४ भर नाषे वेनें पिघलावे तदिओ पानांकोरस वेमें सुसिजाय जाडो होजाय तदिवेमें काथो पईसा १ नीलोथूथो पईसा १ मुरदासिंगी पईसा १ भर येवांटि वेमेंनाषि येक जीवकरि पाछे ईनें कपडाके लगाय फोडाके व्रणके ऊपरि लगावेतो व्रणनिश्चै आछ्यो होय २१ अथ व्रणकरी ऊठाकी त्वचाकोरंग ओर सो होय जायतो त्वचाका वर्णसरीसो करीचाकी ओषदि लिष्यते. मैणसिल मजीठ लाष दोन्यूंहलद येवरावरिले यांनें घृतसहतसूं मिहीवांटि वेंत्वचाके लेप करेतो सरीरकी त्वचा सरीसो वेंको वर्णहोय २२ इतिनाडीव्रणरोगकी उत्पति लक्षण जतन संपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे सोपद विद्रधीव्रणसोथ सारीरव्रण वायपित्तकफादिकांका आगंतुक व्रण शस्त्रादिकांका अग्निदग्धव्रणग्रंथिभग्ननाडीव्रण यां सर्वरोगांकाभेद संयुक्तउत्पतिलक्षणजतननिरूपणंनामपंचदशस्तरंगःसमाप्तः १५

अथ भगंदररोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनलिष्यते. गुदाके आसपासचोगडदाई दोय अंगुलमाहीफुणसीहोय अर फुटेऊठेफुणसी अववोकरे वेनें ईवास्ते भगंदर कहीजेछे. भगकेभी चहूंओरभी होयछे. अर गुदाके अर बस्तके वीचेभी होयछे. भगकोसी तरयो रोग होयछे. ईवास्ते ईनें वैद्य भगंदर कहेछे. सो भगंदर पांचप्रकारको छे वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ शस्त्रादिकाकी चोटलागिवाको ५ अथ वायका सतपोतक भगंदरको लक्षण लिष्यते. जो पुरस कसायलो अरलूषो बहुत भोजनकरे तींके वाय

१ भगंदरऊपर अनेक यतन कहेछे. परंतु एक प्रत्यक्ष गुणकारक यतन लीख दी [illegible] कालो रेशो कीजे सो [illegible] तोला १० [illegible] तोला १ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] होय.

हैसो कोपकूं प्रातिहोय गुदाके कनैफुणसीकरै वेंकों आलसकरि पुरस जतनकरैनहीं तदि वाफुणसीपके अर ऊठेपीडघणीकरै अर वाफुणसी फुटेतदिवेमैं राधिउगैरै मलमूत्र वीर्य येभी निसरिवो करै अर वेंके चालनीसरिसाछेद्र होयजाय ईनैं सतपोतक भगंदर कहिजे १

अथ पित्तका उष्ट्रग्रीव भगंदरको लक्षण लिष्यते गरम वस्तका घावासूं पित्तहैसो कुपितहोय गुदाके चौगुडदा दोय अंगुलकी जायगांमैं लाल फुणस्यांनै पैदाकरैछै. वा फुणसी ततूकाल पकिजाय अर वेमैं गरम गरमराधि नीसरै अर वाफुणसी ऊंटकी गरदन सरीसी ऊंचीहोय आवै वेनैवैद्य हैसो पित्तको उष्ट्रग्रीवभगंदर कहैछै. २ अथ कफका परिश्रावी भगंदरको लक्षणलिष्यते. ऊठेषुजालिघणी चालै अर वेमैं पीड थोडीरहै अर वाफुणसी सुपेद होय अर वा श्रवबोहीकरै तीनैं परिश्रावी कफको भगंदर कहिजे ३ अथ सन्निपातको संबूकावर्त भगंदरको लक्षण लिष्यउे वाफुणस्यामैं बहोत प्रकारकीतो पीडा होय अर वेफुणस्यांका बहोत प्रकारका वर्ण होय अरवा श्रवबोहीकरै अर वा फुणसी मिनकादाप सिरीसीहोय अर वा फुणसी संपमाहिली नाभिसिरीसीहोय तीनैं सन्निपातकी संबूकावर्त भगंदरकहिजे. ४ अथ शस्त्रादिककी चोट लागिवाका भगंदरको लक्षणलिष्यते. गुदाकेकनैं कांटानैं आदिलेर लाग्योहोय अथवा ऊठे षुजालियासूं नषादिक लागिजाय अथवा उठाकाबाललेता पाछणाकी ऊठेलागिजाय तदिऊठे फुणसी होय अर वा फुणसी फुटै अर वेकीराधिका सूगसूं और ऊठे फुणस्यां होय जाय अर वेफुणस्यां जावै नहीं अर श्रव

न. टी. छोरूउपचारके अर्थ जो कोईबी भाग्यवान आमछम वणाय कर ईकी चोपीगरिब मनुष्यके वास्ते बांटयो करे करे तोवडो पुन्यअरयशवधेछे. सोआमछम उपरलिषछे. जीर्ने नीब कापानां कोरमकेर १ लिष्योछे. पानें ३१२ ओळी २२ मैं. मळमछेसो.

चढिवो उग्यानाजपायनहीं भगंदर आछ्यो होय गयो तौभी वरस
एकताई करैनहीं ये सर्व भावप्रकासमैं लिष्योछे. अथवा रसोत दो
न्यूंहलद मजीठ नींबका पान निसोत तेजबल दांत्युणी यांनैं मिही
वांटि भगंदरको यांको लेपकरैतौ अर यांहीसूं वेनैं धोवे तौ भगंदर
आछ्यो होय ७ अथवा कुत्ताका हाडका चूवा यांनैं गधाका लोही
सूं मिही वांटि पथ्थरऊपर अर भगंदरकै लेप करैतौ भगंदर आ
छ्यो होय ८ अथवा विलाईका हाडनैं त्रिफलाकारससूं मिही वांटि
भगंदरकै लेपकरैतौ भगंदर जाय ९ अथवा विलाईका हाडकी राप
कूकराका हाडकी राष तीनैं लोहका पात्रमैं गऊका घृतमैं घासि भगं
दरकै लेप करैतौ भगंदर जाय. १०

अथ रूपराजरसकी विधि. पारो भाग २ तांबाकामैलका भाग
४ च्यारि यां दोन्यांनैं येकठांकरि कागलहरीका रसमैं दिन १५
परलकरै पाछै यांनैं तांबाका संपुटमैं मेलै आसपास ऊपर वालू
रेतसूं हांडी भरै पाछै वेंकै नीचें आंच दे लकड्यां पुत्र प्रहर ८ की
पाछै स्वांग सीतल हुवां संपुटनैं वे माहिसूं काढे पाछै संपुट माहि
सूं वेनैं काढि वेमैं घृत सहत सुहागो येदे पाछै वेनैं पक्की मूसिमैं
मेल्हेकी अघमसीकारि धवणीसूं वैनैं पुत्र धुवावे तदि ओचक्र पा
यफिरै तदि वेनैं वैमाहिसू काढै तदि योरस सिद्धी होय पाछै ईरस
नैं रति ३ तीनसहतसूं लेतो भगंदर निश्चै आछ्यो होय ऊपरसूं त्रि
फलाको काढो पीवै अरपथ्थरहै ११ इतिरूपराजरसः अथ रविसुंद
ररसलिष्यते पारो भाग १ आंवलासारगंधक भाग २ पाछै या
दोन्यांको परलमैं घालि कजलीकरै पाछै यांनैं कवारका पाठाकार
समैं परलकरै पाछै ईंको गोलोकरै. वे गोलानैं तांवाका संपुटमैं

न. टी. फाळामैं दाद अथवा पाज ओरभी कारण होयछे. जेंदेपाज. पुनाळवा हाकारथा
गूं नपादिकको प्रहार अथवा और कारणांनूं फोडाकुणवी होजाय ज्यानैं चतुर मनुष्य —
न सांपुताळे अर आराम करै. नही तो भगंदर होय जायछे.

मेले वे संपुटनें हांडीमें मेले आसपास वेंके चौगुडदाई राप देवेके बीचि संपुटमेले पाछे वेंकेनीचे अग्निवाले दिन १ तांई पाछे स्वांग सीतल हुवांवेमाहिसूं वेनें काढे पाछे वेंकेजंभीरीका रसकीपुट ७ दे पाछे ईनें रती १ सहत घृतसूं चाटेतो भगंदरजाय ईऊपर मूसली लसणपांवे ईपायाऊपरि मीठो अहार करेनहीं दिननें सोवेनहीं मैथुनकरेनहीं ईउपर सीतल भोजन करेनहीं इति रविसुंदररसः १२ यो रससिंधुमें लिष्योछे इति भगंदररोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपुर्णम् अथ उपदंशरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते अथ रस का करिवासूं अर इंद्रीके कहींतरेंसूं नष अर दांत लागिजाय तीसूं अथवा स्त्रियांके गरमीका प्रभावसूं अथवा स्त्रियांका भगऊपरि घ डाकठोर बालहोय आवे त्यांका उपाडिवासूं अथवा योनिकोछिद्र मिहींहोय तीसूं स्त्रियांकी जोनिदूषित होयती कारणांसूं अथवा लिंगेंद्रीनें धोवेनहीं ईकारणासूं अथवा स्त्रीपुरुषांसूं मैथून घणोकरे इकारणांसूं पुरषके लिंगेंद्रीकेविषे पाच प्रकारको उपदंशरोग होय छे अर नानाप्रकारका जो कुपथ्यकरिवो त्यांकारणांसूं उपदंस होयछे. सो उपदंशरोग ५ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ कफ को ३ सन्निपातको ४ अर किंहीतरे लिंगेंद्रीके नषदंतादिककोचो टलागिवाको ५ अथ वायका उपदंसको लक्षण लिष्यते लिंगेंद्रीके विषे गरमीकरि पीडाहोय व्याऊकीसीनाई फाटिजाय अर आफुरके अर ऊठेकाली फुणस्यां होय जायतो जाणिजे वायको उपदंसछे १

अथ पित्तका उपदंसको लक्षणलि० ऊठेफुणस्यांपीलीहो अर ऊठेघणोंचेपनीसरे अर ऊठे दाहहोय अथवा फुणस्यां लालहोय

१ भगंदररोग [illegible]

येजीमें लक्षण होय तदि पित्तको उपदंसजाणिजै २ अथ कफका उपदंसको लक्षण लिष्यते जींमैं षाजि घणीहोय. सोजोघणोहोय वेफुणस्यां सुपेदहोय अर जाडो जाडो वामेश्रवै येजीमैं लक्षण होय तीनैं कफको उपदंस कहिजै. ३ येसर्व लक्षण जींमे होय तीनैं सन्निपातको उपदंसकहिजै. ४ अथ उपदंशको असाध्यलक्षण लिष्यते. जीं लिंगेंद्रीकोमांस विषरीजाय अरवेमैं कृमीपडिजाय अर इंद्रीगलजाय अर आंड आवसेस आयरहै ओ उपदंस असाध्य जाणिजै ५ अथवा उपदंसजींकै हूवोछै. अर वेंको जतन नहीं करै अर विषयकरतोजाय अर वेमैंक्रिमि पडिजाय अर वेंकी इंद्री गलजाय ओ पुरस मरै. ६ अथ लिंगारसको लक्षण लिष्यते. जीं पुरसकी लिंगेंद्रीकै विषै धानका अंकुर सरीसा ऊपर होजाय कूकडाकी सीषासरीसा होजाय अर लिंगेंद्रीकै माहि अर वेंकी संधिकीनसांमैं पीडाघणीहोय अर वा इंद्रीचूवालागिजाय वेनैं लिंगार्स कहिजै. १ अथ उपदंशको जतनलिष्यते. जोक लगाय उठाको लोही कढाजै अर वानैं पकतानैं पकवादेनहीं इसीतरै करैतो उपदंस जाय १ अथवा साठीकीजड गिलवै सूंठि महलोठी वडका कोमलपान यानैं औटाय ईंपाणीसूं लिंगेंद्रीनैं धोवैतो उपदंसजाय२ अथवा लिंगेंद्रीकी नसांछुटावैतो उपदंसजाय ३ अथवा वडका कोमल पत्र कहुवाकीवकल जामुणीवकल लोद हरडेकीछालि हलद येबरावरिले यानैं जलसूं मिहीवांटि लिंगेंद्रीकै लेपकरैतो लिंगेंद्रीकी सारीव्यथा अर ऊठाको सोजो दूरीहोय. ४ अथवा लिंगेंद्री पकिजायतो लिंगेंद्रीनैं याही ओषधांसूं धोवैतो उपदंस जाय ५ अथवा त्रिफलाका काढासूं वेनैं धोवै अथवा भांगराका रससूं वेनैं धोवै

न. टी. भगंदर रोगवालानैं ग्रंथकर्ता उग्या अनाज मना करेछै: सो उग्यनाजांन्यूंहूं. को ईवी अन्न होय जीनेवे भीजो. अथवा अन्न दूजेदिन अंकुरयुक्त होय जीपे अंकुरउगे. जैसे मूग मोठ, निणा ने भिजोगांनीछै. उगेछै. ज्यानैं उग्यो अन्नकहेछै. सोनाजनहीं षावणो।

अथवा कमलका पाणीसूं वेनें धोवे अथवा याको उठे लेप करेतो उपदंस जाय ६ अथवा मिझन्याक्पको बकलको चूर्ण अथवा दाड्यांकीबकलको चूर्ण यानें मिहीवांटि लिंगंद्रीके लेप करेतो उपदंस जाय ७ अथवा सुपारीनें पाणीमें घस लगावेतो उपदंस जाय ८ अथवा कडाहीमें त्रिफलानें वालिवेकीरापकरि सहतसूं उपदंशके लेप करेतो उपदंश आछयो होय ९ अथवा पटोल नींबकी छालि त्रिफला चिरायतो पैरसार विजेपार गूगल यानें बराबरीले पाछे यानें औटाय पीवेतो उपदंस जाय १० अथवा चिरायतो नींबकीछाली त्रिफला पटोल कणगजकीजड आंवला पैरसार विजेपार यांको काढोकरि तींकाढामें घृतपकावे पाछे पाणी बलि जाय घृतमात्र आयरहे तदि ईघृतको लेपकरेतो अथवा ईघृतनें भोजनमें पायतो उपदंस जाय ११

इतिभूनींटादिघृतम्. और घृत कोढका जतनमें लिष्याछे. अर व्रणका जतनमें लिष्याछे सो घृत लगावे अथवा भोजनमें पावेतो उपदंसजाय १२ अथवा जुलाबका लेवासूं उपदंस जाय १३ अथवा जांगीहरडेकीपईसा ८ भर सुपेदकाथोपईसा १ भरनीलोथूथो पईसा १ भर यानेंमिहीवांटिपाछेपकानींबू १०० का रसमें परल करे योरससूपायदे पाछेयाकीगोलीनासा १ भर कीजे पाछेगोली १ रोजीना दिन १५ दही केसाथिले अर पथ्यरहेतो उपदंस निश्चै आछयोहोय १४ अथवा नीलोथूथो भाग १ काथो भाग १ मुरदासींगो भाग २ सुपारीकी राप भाग २ यानें मिहीवांटि उपदंसकी घांदीके यांको भुरको देतो उपदंस निश्चै आछयोहोय १५ अथवा पारो गंधक हरताल सींदुर मणसील यानें तांबाका पात्रमें तांबाका

न. टी. वगैरहका रोगोंमें [illegible] मुर्दा [illegible]
[illegible]
[illegible]

घोटासूं घृतमैं वांटि दिन ३ पाछैईनैं लगावैतो उपदंसजाय १६ अ
थवा मस्सादूरिहोवाका जतन पाछै लिष्याछै त्यांकरिकैलिंगार्सको
जतन वैद्यकरिले इतिउपदंस रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम्.
येसर्व भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथ सूकरोगकीउत्पत्ति लक्षणजत
नलि० जोमुरषपुरस होय सोविगारिविचाखां मूर्षाका कह्यांसूंलिंग
नैवधायो चाहे पट्टीकरिलेपादिकांकरि तींपुरसके अठाराप्रकारको
लिंगकैविसैसूकरोग पैदा होयछै. सो सूकरोग अठाराप्रकारकोछै.
सर्षपिका १ अष्ठीलिका २ ग्रंथित ३ कुंभिका ४ अलजी ५ मृदि
त ६ संमूढपीडिका ७ अवमंथ ८ पुष्करिका ९ स्पर्शहानि १० उ
त्तमा ११ शतयोनक १२ त्वक्पाक १३ शोणितार्बुद १४ मांसार्बु
द १५ मांसपाक १६ विद्रधी १७ तिलकालक १८ अथसर्षपिकाको
लक्षणलिष्यते. जींके कहींतरैसूं लिंगके सिरस्यू सिरीसी गोरीफुण
सीहोजाय वायकफकरिकै तीनैं सर्षपिका नाम सूकरोग कहिजै १
अथ अष्ठीलिका सूकरोगको लक्षणलिष्यते कहींतरै वेंका लिंगकै
विसै करडी अर वांकी पीडालियां फुणस्यां होय तीनैं अष्ठीलिका
सूकरोग कहिजै २ अथ कुंभिकासूकरोगको लक्षणालि० कहीं का
रणांसूं रक्तपित्तसूं जींका लिंगकै जामुणकी गुठलीसिरीसी फुणसी
होयजाय तीनै कुंभिका सूकरोग कहिजै ४ अथ अलजीसूकरोग
कोलक्षणालि० जींकी इंद्रीकैविषै प्रमेहकी फुणसी होय जाय तीनैं
अलजीसूकरोग कहिजै. ५ अथ मृदितसूकरोगको लक्षणलिष्यते
जींकी इंद्रीकहींतरै मसली गईहोय अर वेमैं पीडहोय आवे वाय
करिकै तीनैं मृदित सूकरोग कहिजै ६ अथ संमूढ पीडिकासूकरोग

न. टी. उपदंसकारोगीनै पथ्याछि० मूग, भात गेंवांकीरोटी, घृत, तुराई, सोभांजनकी फळी, जाडीकोदूय, गरमपाणी, हलको भोजनइ० कुपथ्य० हींग तेल, लालमिरच, बैंगण, गुड, आचार, वाजरो, चिणा, मोट, गरमचिज दिनमैंनिद्रा, श्रम, स्त्रीसंग पाटी. इ०

गको लक्षणलि० जींकीइंद्रीको मांस विपरिजाय अर ऊठेपीडघ
णीहोय सो ओ सर्वदोषका कोपकोछै. वैनैं मांसपाककहिजै १६
अथ विद्रधीसूकरोगको लक्षणलि० जींकालिंगकैविषै संन्निपात
काकोपसूं फुणस्यां ऊठै वेनैविद्रधीसूकरोग कहिजै १७ अथ तिल
कालकसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्रीविषै काली अर नाना
प्रकारका रंगनैलीयां अर विसनैलीयां ऐसी फुणस्यां होय अर वे
फुणस्यां पकिवालागिजाय अर ज्यामैं राधिपडै इंद्रीगलिजाय या
सन्निपातका कोपसूं होयछै. ईंनै तिलकालक सूकरोगकाहिजै १८
अथ सूकरोगको असाध्यलक्षण लिष्यते. मांसार्वुद १ मांसपाक
२ विद्रधी ३ तिलकालक ४ येच्यारि आछ्या नहींहोय १ अथ
सूकरोगका जतनलि० अठराहीसूकरोगांकाविपनैं दूरिकरिवावा
ला जतनकीजै १ अथवा लिंगेंद्रीको जोकासूं दुष्टलोहीकढाय ना
पिजैतो सूकरोग जाय २ अथवा इंद्रीनै आछ्याजुलावदीयां सूक
रोगजाय ३ अथवा लघु भोजनासूं सूकरोगजाय ४ अथवा त्रि
फलाका काढासूं गूगल पायतो सूकरोगजाय ५ आछी औषद्यांका
लेपांसूं सेकवासूं सूकरोगजाय ६ सीतल जतनासूं सूकरोगजाय.
७ अथवा दारुहल्द तुलसी महलोठी धूमसौं यामैं तेलनापि प
कावै ये औषदि सीजिजाय तदि ईंतेलको मर्दन करेतो सूकरोग
जाय ८ अथवा पंरेटीको तेलकरिकै मर्दन करेतो सूकरोगजाय ९
येसर्व संग्रहमैं लिष्याछै. इति सूकरोगकोउत्पत्ति लक्षण जतनसं
पूर्ण. अथ कुष्ठकाहिजै कोढकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० विरुद्ध अ
न्नपानका पावापीवासूं पतलीचीकणी भारि ये जोवस्त त्यांका पा
वासूं वमनका वेगकारोकिवासूं मलमूत्रका वेगका रोकिवासूं वणा

न. टी. सूकरोग अठाराजातको लिष्योछै. जीमैं जुदाजुदा लक्षणमुजब जाणज्यो. अरघु रुरोगीनैं परेज. अथवा बदपरेजछै. सोजादंसकारोगनैं लिष्यामुजब जाणज्यो. अरष्ठ तूमरोगछै. कारण सरीरमैं कमकुवतपैवासे कुत्त आवानें विपरीन ज्यावकरै जींकै होयछै.

को लक्षणलि० जींकै दोन्यूं हाथांसूं कहींतरे इंद्रीपीडीगई होय तींकरिवेंके उठै फुणस्यां होय तीनै संमूढपीडिकासूकरोग कहिजै ७ अथ अवमंथसूकरोगको लक्षणलि० जींका लिंगकैमध्य कहीं कारणसूं वडी अर घणी फुणस्यांहोय जाय. कफ लोहीका दुष्टप णासूं अर वामैं पीडाहोय रोमांच होय आवे तीनै अवमंथसूकरो ग कहिजे ८ अथ पुष्करिकासूकरोगको लक्षणलि० जींकी सूपा रिकै ऊपरिपित्तलोहीका कोपसूं फुणस्यां घणीहोय वेनै पुष्करिक सूकरोग कहिजै ९ अथ स्पर्शहानिसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्री कहींकारणांसूं हाथ उगैरैको स्पर्शसहैनही तीनै स्पर्शहानिसू करोग कहिजै १० अथ उत्तमासूकरोगको लक्षण लि० जींपुरसकै अजीर्णसूं मूग उडद सिरीसी रक्तपित्तका कोपसूं लिंगकै विषै लाल फुणसी होजाय तीनै उत्तमा सूकरोग कहिजै. ११ अथ सतपोतक सूकरोगको लक्षणलिख्यते जींका लिंगकैविषै कहींकारणांसूं वात लोहीका कोपसूं छिद्रघणा पडिजाय वेंकेसतपोतक सूकरोग कहिजे १२ अथ त्वक्पाकसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्री वायपित्तक फकरिकै पकिजाय अर ऊठे दाहहोय आवे अर पीडासूं सरीरमैं ज्वरहोय आवे तीनै त्वक्पाकसूकरोग कहिजै. १३ अथ सोणिता र्बुदसूकरोगको लक्षणलिख्यते. जींकी इंद्रीविषै कालीलाल फुणसी होय आवै अर ऊठेपीडहोय आवे तीनै शोणितार्बुदसूकरोग क हिजै १४ अथ मांसार्वुदसूकरोगको लक्षणलिख्यते. जींकीइंद्रीपर कठण फुणसीहोय सो मांसार्वुद कहिजै. १५ अथ मांसपाक रो

* उपदंस महारोगछै जीनै लोकीकमैं गरमीको आजार कहैछै. गरमीकोरोग महाखराब छै. ऊपर उपदंसरोगको निदानमैं पत्र ३१८ ओली ८ मैं लिपीछै. ईरोगकी उत्पत्ति घणी परीतो. स्त्रियांकामसंगसूं होयछै. रोगलीस्त्री कुत्सितपुरुष. यांमैं यो रोगव्यभिचारका घणां प्रसंगसूं होयछै. अर यारोगवाळो सरमसूं पढछी तो कहैनहीं. पछै ईरोगकी वृद्धि हुवांसूं कठिणछै. यासूं वैद्यनैं जलदी कहैतो आराम होय.

गको लक्षणलि० जींकीइंद्रीको मांस विषरिजाय अर ऊठेपीडघ
णीहोय सो ओ सर्वदोषका कोपकोछे. वैनै मांसपाककहिजै १६
अथ विद्रधीसूकरोगको लक्षणलि० जींकालिंगकैविषै संन्निपात
काकोपसूं फुणस्यां ऊठै वेनैविद्रधीसूकरोग कहिजै १७ अथ तिल
कालकसूकरोगको लक्षणलि० जींकी इंद्रीविषै काली अर नाना
प्रकारका रंगनैलीयां अर विसनैलीयां ऐसी फुणस्यां होय अर वे
फुणस्यां पकिवालागिजाय अर ज्यामैं राधिपडै इंद्रीगलिजाय या
सन्निपातका कोपसूं होयछे. ईनै तिलकालक सूकरोगकहिजै १८
अथ सूकरोगको असाध्यलक्षण लिष्यते. मांसार्बुद १ मांसपाक
२ विद्रधी ३ तिलकालक ४ येच्यारि आछया नहींहोय १ अथ
सूकरोगका जतनलि० अठराहीसूकरोगांकाविषनैं दूरिकरिवावा
ला जतनकीजै १ अथवा लिंगेंद्रीको जोकासूं दुष्टलोहीकढाय ना
पिजैतौ सूकरोग जाय २ अथवा इंद्रीनै आछयाजुलावदीयां सूक
रोगजाय ३ अथवा लघु भोजनासूं सूकरोगजाय ४ अथवा त्रि
फलाका काढासूं गूगल पायतौ सूकरोगजाय ५ आछी औषधांका
लेपांसूं सेकवासूं सूकरोगजाय ६ सीतल जतनासूं सूकरोगजाय.
७ अथवा दारुहलद तुलसी महलौठी धूमसौं यामैं तेलनापि प
कावै ये औषदि सीजिजाय तदि ईतेलको मर्दन करैतौ सूकरोग
जाय ८ अथवा पंरैटीको तेलकरिकै मर्दन करैतौ सूकरोगजाय ९
येसर्व संग्रहमैं लिष्याछै. इति सूकरोगकीउत्पत्ति लक्षण जतनसं
पूर्ण. अथ कुष्ठकहिजै कोढकी उत्पत्ति लक्षण जतनलि० विरुद्ध अ
न्नपानका पावापीवासूं पतलीचीकणी भारि ये जोवस्त त्यांका पा
वासूं वमनका वेगकारोकिवासूं मलमूत्रका वेगका रोकिवासूं वणा

न. टी. सूकरोग अठाराजातको लिष्योछे. जीमैं जुदाजुदा लक्षणमुजब जाणज्यो. अरसूकरोगीनैं परेज. अथवा नदपरेजछै. सोउपदंसकारोगमैं लिष्यामुजब जाणज्यो. अरछ तूमरोगछे. कारण सरीरमे कमकुवतपैणासे कुवत आवानै विपरीत उपावकरे जीकै होयछे.

अग्निकातापिवांसूं घणा भोजनका करिवासूं सीतउष्णका नहीं गि णवासूं तावडाका रहिवासूं श्रमका करिवासूं भयका लागिवासूं अ रतावडोभय श्रमयांसूं दुषीहुवोजो पुरुष अर ततकाल याऊपरि सीतल पाणीपीवै तींकारणासूं अर अजीर्णमैं भोजनकरै जींसू अर वमन जुलावनैं आदिलेर ज्यांमैं कुपथ्यकरै ज्यासूं नवीन जलका पीवासूं दहीं मछलीषावासूं घणालूणका षावासूं घणीषटाईका षा वासूं अर उडदमुली पीस्योअन्न तिल हलद गुड यांका घणां षा वासूं दिनका सोवासूं ब्राह्मणका सरापसूं और अनेक प्रकारका घणा षावासूं घणा स्त्रीसंगसूं और अनेक प्रकारका पापकरिवासूं मनुष्यांकै वायपित्त कफहैसो दुष्ट हुवाथका अर सातूधात दुष्ट हु ईथकी वेकासरीरकालोहीनैं मांसनैं वैंका सरीरका वलनैं दूषित करै अर अठार १८ प्रकारका कोढानै ये कारण यांनैं प्रगट क रैछै अथ अठारा प्रकारकाकोढत्यांकानाम लि० कापाल १ उदुंवर २ मंडल ३ रिक्षजिव्हं ४ पुंडरिक ५ सिध्माकहीजैविभूती ६ का कारण ७ एककुष्ट ८ गजचर्म ९ चर्मदल १० किटिभ ११ वैंय्या दिक १२ अलस १३ दाद १४ पाव १५ विस्फोटक १६ सता रू १७ विचर्चिका १८ याअठरांमध्ये ७ महाकुष्ट कापाल १ उ दुंवर २ मंडल ३ सिध्माविभूति ४ काकारण ५ पुंडरीक ६ रिक्ष जिव्हं ७ अरइग्यारा ११ साधारण अथ कुष्टरोगको पूर्वरूपलि० पहलीव्रणहोय वै व्रण कौमलहोय अथवा परधरो ज्यांको स्पर्श होय अथवा वै व्रणलूषा होय अथवा वाव्रणामैं पसेव आवै अ थवा तावडामैं पसेव आवै नही अथवा व्रणकोवर्ण औरसो होय वांव्रणांमै दाहहोय वामैं पृजालिआवै वात्वचा सोय जाय वांव्र

न. टी. सतपोतकसूकरोगछै. सो इंद्रीउपरमाठिस पढी, मल्हिम इत्यादिक घणा उपउपा यकरै ज्यांसौं गुण आवणतो घणो मुसकलछै. परंतु सरीरमैं इंद्रीबिगडकरवांदी पणीपडै पछै छेदहोपकरयणाछेद्रवधे जीनैं सतपोतक कहिजैछै.

णामैं पीडाहोय वे व्रण ऊंचा होय वांव्रणांमैं सूल घणी होय अर तत्कालवांकी उत्पात्ति होय अर घणादिनातांइरहैअरकुपथ्यतोथोडो करै अर कुपथ्यको कोप घणो होय अर वानै हुवारोमांच होवोकरै अर वामैं लोहीनीसरै येजीमैं लक्षण होय तदिजाणिजे ईंके कोढ होसी १ अथ कोढकोसामान्य लक्षणलि० पूर्वजन्मका पापसेती मनुष्याकी बुद्धि है सो विकुर्वित हुईथकी कुपथ्य करै पाछै वा कुपथ्यांसूं कोपकूं प्राप्ति हुवोजोवाय पित्तकफसो सरीरकी नसांमैं प्राप्तिहोय अर सरीरकी त्वचानैं अर सरीरका लोहीनैं अर मांसनैं दूषित करै अर सरीरकी त्वचाकोरूप औरसोही करदेछै. तीनै वैद्यहैसो कोढकहैछै १ अर वायसरीरमैं घणोकोपकरै तदि कापाल कुष्ठनैं पैदाकरैछै. सरीरमैं घणो कफ करै तादि कापालकुष्ठनैं पैदा करैछै. सरीरमैं पित्तकोपकूं प्राप्ति होय तदि औदुंबर कोढनैं पैदाकरैछै. सरीरमैं कफकोपकूं प्राप्तिहोय तदि मंडल नाम कोढकूं करैछै अर वायपित्त सरीमैं कोपकूं प्राप्तिहुवाथका विवचिनामकोढ अर रिक्षजिव्हना कोढनैं पैदाकरैछै. अर वायकफसरीरमैं कोपकूं प्राप्तिहुवाथकाचर्म कुष्ठनैं कीटिभकुष्ठनैं सिध्मानैं अलसकुष्ठनैं वैग्यादिकाकुष्ठनैं पैदाकरैछै. पित्तकफसरीरमैं कोपकूं प्राप्ति हुवाथका दाहनैं सतारुपीनामकोढनैं पुंडरीककोढनैं विस्फोटककोढनैं. पांवनैं चर्मदलकोढनैं पैदाकरैछै साराहीवायपित्तकफसरीरमैं कोपकूं प्राप्तिहुवाथकाकाकारणनामकोढनैं पैदाकरैछै अथ१सातमहाकुष्ठके मध्यकाकापालिककोढको लक्षण लि० जींकासरीरकीत्वचा काली अरलाल अर जागां जागां फाटीअरलूषी अरकठोर अरसूक्ष्महोय अर वेमैं पीडघणाहोय वेकोढनैं वैद्यकापालनामकहैछै याकोढ विस

न. टी. जोमनुष्य अज्ञानतासौं तिलो. तपारदी उंगेरै करैछै सोपाछैवांजीनैं घणो अंदेशो करणापडेछै. कारण औषधीकीतेजीसांनवासायचेतीहोयतो अल्पकालगुणकरै. अरपंदमैं यथोक्त औषधीदेवासौंपूर्णगुणकरैछै. इतिध्यानमेंलेनी.

मछे दोहोरोजाय १ अथसातमहाकुष्ठमध्ये ओदुंबरछेतींको लक्षण लिष्यते जींकासरीरकी त्वचामैं दाहवणो होय अर ललाईघणीहोय अर षुजालघणीचालै रोमरोममैं अर रोमपीला होय अर सरीरकी त्वचा गुलरकापक्याफलसिरीसी होय तीनै ओदुंबरकोढकहिजै २ अथ महाकुष्ठामैं मंडलकोढको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचासुपेद अरलालहोय अर वास्थिररहै अर चीकणी होय अर ऊंची होयअर आली रहवोकरै ईनै वैद्यमंडलनामकोढकहैछे३ अथ सिध्मानामविभूतीकोढको लक्षण लिष्यते जींकीत्वचासुपेदतांबासिरीसीहोयअर त्वचासूक्ष्महोय अरवेत्वचामैंषाजिआवै अरत्वचामिहीं मिहीउतरी जाय अर वाविभूती मुष्यहियामैंघणीहोयघीयाकाफुलसिरीसीतीनै वैद्यसिध्मानाम विभूतिकोढकहैछे ४ अथमहाकुष्ठमध्यकाकारणनामकोढतींको लक्षणलिष्यते जींकीत्वचाचर्म सिरीसीहोय विचमैंकाली अंतमैंलाल ऐसी होयअरवापकैनहीं जींमैंपीडघणी होयईनैवैद्य का कारण नामकोढकहैछे योसन्निपातका कोपसूं उपजै यो आछयो होय नहीं ५

अथ महाकुष्ठमध्येपुंढरीकनामकोढ तींकोल० लि० जींकीत्वचा सुपेदललाईनैलीयांकमलकीपापडीसिरीसीहोय योकफकाकोपसूंहोयछे. ईनै वैद्यपुंडरीकनामकहैछे ६ अथ रिक्षजिव्ह नामकोढतींको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचा रक्तपर्यंत अंतमैलालहोय जींमे काली भीहोय तीनै रिक्षजिव्हनामकोढकहैछे ७ अथग्याराक्षुद्रकोढछे तीं मध्ये एक कुष्टनामकोढतींको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचामैंपसेव नहीं आवै अर वडो जींकोस्थानहोय मछलीका टूकसिरीसो होय

न. टी. संसारमैं कोढरोगमहादुष्दाइ औरनिंदकछे. घणामोठापापांसूं होयछे. परंतुसाध्य तो ११ग्याराछे,सोसाधरपाछे. ज्यांकोपुछलोपानै ३२५ मैंलिष्याछे. औरवाकी अठारेंसात कोढछे. सोअसाध्यछे. वडाकष्टदाईछे. निंदकछे. ज्यांहि वास्ते यांग्रंथमैं मोठामोठाउपायलिष्याछे, औरदान, पुण्य, जप, होमादिक. गुरु ब्राह्मणसेवा इत्यादि उपाय सत्यछे.

तीनैं एककुष्टनामकोढकहैछे. १ अथ गजचरमकोढको लक्षणलि० हाथीकी चर्मसिरीसी जींकी त्वचा जाडी होय तीनैं गजचर्म कोढक हिजे. २ अथ चर्मदलकोढको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचा सूलनैं लीयांलालहोय अरजीमैं षाजिचालै अरजीमैं फाव्यासाहोय अर जींका हाथकास्पर्शते सहसकैनही तीनैं चर्मदलकहिजे. ३ अथ विचर्चिकाकोढको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचामैं फुणस्यां षाजनैं लीयां होय अर फुणस्यांकाली होय अरज्यां फुणस्यांमैं चेपनी सरै याहाथ पगांमैं होयछे तीनै विचर्चिका नाम कोढ कहिजे ४ अथ पामानामपांवकोढको लक्षण लिष्यते जींकासरीरकै छोटी छोटीअ रघणी फुणस्यांहोय अरजामैं चेपनीसरै अर जामैंपाज आवै अ र लालफुणस्यांहोय अरदाहहोयतीनै पामानाम पांवको कोढकहि जै. ५ अथ दादनाम कोढको लक्षण लिष्यते जींमैंपाजि आवै अर लालफुणस्यां होय अर त्वचासूं ऊंची होय येलक्षणजीमैं होय तीनैं दादनाम कोढकहिजे ६ अथ दादकोभेद कछदादकोढ तींकोलक्षण लिष्यते जींका हाथ पगांकै अथवा काछमैं ढुंगांकै जो फुणस्यां होय जींमैं घणो दाहहोय तींकै कछदादकोढ कहिजे ७ अथ विस्फोटकनाम कोढको लक्षणलिष्यते जींकी त्वचामै फोडा काला अर लाल अर छोटा होयतीनैं विस्फोटक नाम कोढ क हिजे ८ अर किटिभनाम कोढको लक्षण लिष्यते जींकी त्वचानैं सूका व्रणकास्थानकीसीनाई कालापरषरा कठोर ज्यांको स्पर्श होय तीनै किटिभनाम कोढकहिजे. ९ अथ अलसकनाम कोढको

न. टी. अष्टादशकुष्टछे. घो शरीरमैं सप्तधातुगतछे. जीमैं उत्तरोत्तर बलवान समझणो चा हिये, जैसे प्रथमचर्ममैं आदिलेकरउत्तरउत्तरनामपरीरमैं त्वचासै रुधिरमैं रुधिरसैंमांसमैं ऐसे उत्तरसैं उत्तर बलवान होतो जायछे ऐसैंहट मज्जासक्शुक्र तांईपहोचे. ज्यूं असाध्य होतो जायछे प्रथम चर्ममैंछे. सोसाध्य चर्म. रुधिरमैंछे. सोभीसाध्य अरमांसमैं मेदमैं स्थीमैं तांई कष्टसाध्यछे. अरु महाजरिथमज्जा शुक्रमांमैं पहुंचतो असाध्य होयछे.

लक्षणलिष्यते जींकी त्वचामैंवडी फुणस्या ललाईनैंलीयाहोयजीमैं षाजिआवै तीनै अलसनामकोढकहिजे. १० अथ सतारूनामको डको लक्षणलिष्यते. जींकीत्वचामै फुणस्यां लाल काली दाहनैली यां होय तींनै सतारुनाम कोढकहिजै. ११ येअठारानाम कोढतो कह्यां अथ सरीरकी सातुधातांमैं प्राप्तहुवो जो कोढ त्यांका जुदा जुदालक्षणलिष्यते. अथ रसधातमै प्राप्तहुवो जोकोढतींकोलक्षण लिष्यते. त्वचामैंस्थितजोकोढ तींकीत्वचाको स्वरूप औंर सोहोय अर त्वचालूषीहोय अर त्वचा सोय जाय रोमांच रहवो करै पसेव घणोआवै, येजीमैंलक्षण होयतदि रसधातमैं प्राप्ति हुवो कोढ जा णिजै. १ अथ रुधिरमैं प्राप्तहुवो जोकोढतींकोलक्षण लिष्यते जीमैं षाजि आवै अर राधिनीसरै तादिजाणिजे लोहीमैं प्राप्त हुवोकोढछै. २ अथ मांसमैं प्राप्त हुवो कोढतींकोलक्षणलिष्यते औंकोढपुष्टघ णोहोय अर मूंढोघणोसूकै अर फुणस्यां कठोरहोय अर वामेंपीड होय येलक्षणहोयतौ मांसमैं प्राप्तहुवोकोढ जाणिजे. ३ अथ मेदमैं प्राप्तहुवोजोकोढ तींकोलक्षणलिष्यते हाडांकोनासहोयजायकुहुणी आयरहे चाल्यो जायनहीं सर्वअंग टूटिवा लागि जाय थोडीचोट सर्वत्र फैलीजाय मूंढोसूकै. फुणस्यां कठोर होय अर वामैं पीडहो य. येजीमैं लक्षणहोय तींनैं मेदमैं प्राप्तहुवो कोडजाणिजे. ४ अथ हाड अर मींजीमैं प्राप्त हुवो जोकोढतींको लक्षण लिष्यते. नाकग लिजाय. नेत्र लाल होय जाय. अर या व्रणांमें कृमीपडिजाय कंठ कोस्वर घांघो होय जाय अर व्रणांमैं पीडहोय तदि जाणिजे हा

---

* शरीरमैं अनेक प्रकारकारोगछै. ज्यांकी जुदी जुदी प्रवर्तिकछै परंतु घणारोगतो वंश परंपरामूंचालैछै. घणारोगतो उडकर लागेछै घणारोग वात पित, कफकी. प्रकृतिका गिग डवामूं होयछै षाज पांव नेत्रदूषणा. इत्यादिक उडकर लागेछै. गलतकोढ, कोढमाप्रसा ध्य. क्षयी भगंदर वंशपरंपरासूं चाल्या आवैछै, जींवास्ते दान पुन्य जपादिक श्रेष्ठछै. गलत कोढ पिताका प्रेतकर्म करणेवाला पुत्रकौं कुष्टहोयछै.

डमैं अर मींजीमै प्राप्तहुवो कोढछे ३ अथ वीर्यमै प्राप्त हुवोजो कोढ तींको लक्षण लिष्यते तींका मातापिताका वीर्यमैंकोढकोदोस घणोहोय वाका हुवाजो बेटा बेटी सोभी कोढीहीहोय ७ अथ कोढ को साध्यासाध्य लक्षण लिष्यते. कोढ वाय कफको होय अर त्वचा लोहीमांसमैं रहतो होय सोतो साध्य जाणिजै अर कोढमेदमै जाय प्राप्त होय अर दोय दोसको होयसो जाप्य जाणिजै अर कोढ मींजीमैं जाय प्राप्तहोय अर कृमि पडि जाय अर दाह होय आवे अर मंदाग्निहोय जाय अर त्रिदोसको होयसो कोढ असाध्य जाणिजै अर शुक्रमै प्राप्त हुवोजोकोढ सोभि असाध्य जाणिजै १ अथ कोढको असाध्य लक्षण और लिष्यते कोढ विपरीजाय अर चूवालागिजाय अर जींको कंठस्वर घांघो पडिजाय अर वेनै वमनविरेचन कटिकचादेनहीं इसा पुरुषनैं कोढ मारिनापें १ अथ कुष्ठको भेद एक श्वित्रीभीछे. तींकीउत्पत्ति लक्षण लियते. जोकोढकी उत्पत्तिसोही स्वित्रीकी उत्पति स्वित्रीलाल होय अर चुवे नहीं कोढचूवे ईमै यो भेद अर स्वित्रीकोभेद येककालासछे. यो लालहोयछे पुनः स्वित्रीदोय प्रकारको एक तोवायपित्तकफसूं उपज्यो अर एक व्रणसूं उपज्यो अथ श्वित्रीकोढको साध्यासाध्य लक्षण लिष्यते मिहीहोय कालावालाभै होय एकदोसकोहोय नवीन उपज्यो होयनहीं अग्निसूं उपज्योहोय ईसो श्वित्रीकोढ साध्य जाणिजै. ईसै और लक्षण होयसो श्वित्रीरोग असाध्य जाणिजै.

न. टी. जीमे विपरीत हुवोयकोगलत क्रिमी पडजाय. विपरिजाय. दुर्गंधिआवे सो महा असाध्यहोयछे. सो पूर्वजन्मादिकांका पातकांसूं प्राप्ति होयछे ज्यांने निवृत्ति करणवास्ते प्रायश्चित श्रीहरी भजनछे. जैसे सवाई जयपूरकाप्रांतदेश ढुंढाडछे. जीमें डिग्गीनामा एक मोठो स्वस्थानछे. जीमे एक श्रीकल्याणरायजी महाराजका मंदिरछे. जेठे कोई कुष्ठी मनुष्य जायछे अरु ऊठे नगरमें भीख मांगकर षायछे, नित्यदर्शनकरे. अरु स्वाभिमानछोडकर नतिदीनहोयकर रहछे संपदायुक्त होयतोभी.

अथ कुष्ठका मिकापथकी कुष्ठजैसे और मनुष्यके जायलागै तैसें ही औरभी येरोग और पुरुषांकैभी जाय लागैछै. यां रोगांवालांको प्रसंग करैतौ अथवा गात्रसूं गात्र मिलावैतौ अथवा एकठां भोजन करैतौ अथवा एकठां सोवैतौ अथवा आपसमैं वस्त्रपहरैतौ अथवा आपसमैं कहींवस्तको लेपकरैतौ इतनारोग उडि औरकै जाय लागै. सोरोग लिषूंछूं. सोस १ कोढ २ ज्वर ३ राजरोग ४ आंषि दूषणी ५ सीतलानै ६ आदिलेर येरोग उडिजाय लागैछै. पुनःकोढको असाध्य लक्षण लिष्यते गुह्यस्थानमैं होय हाथमैहोय होठांमै होय सोकोढ जाय नहीं. अथ कोढरोगका जतन लिष्यते हरडैकीछालि कणगचकीजड सिरस्यूं हलद बावची सींधोलूण वायविडंग येसर्व बराबरीले त्यांनै गोमूतमैं मिहीवांटि कोढकै लेपकरैतौ कोढदूरिहोय १ इति पथ्यादिलेप अथवा बावचीनै मिही वांटि आदाका रसकीवेकै पुटदे पाछै कोढकै उवटणोकरैतौकोढ जाय २ अथवा ब्रह्माजी मार्कंडेयजीनै बतायो जोप्रयोग सो कोढनै आदिलेर जो औरभीरोग त्यांका दूरिकरिवावास्तैसो हूं ऐठै लिषूंछूं नींवका फुलांकै समैतौ नींवका फूलले अर नींबका फलांकै समै नींवका फलले अर नींबकी वकलले नींबकीजडले अर नींबका पानले योनींवको पंचांग नवोले अर दोन्यूं हलद त्रिफला सूंठि कालीमिरचौ पीपालि ब्राह्मी गोपरू सोध्याभिलावा चित्रकवायविडंग सार बाराहीकंद गिलवै बावची किरमालो मिश्री कूठ इंद्रजव पाठ पैरसार येबराबरिले यांनै मिहीवांटि नागरमोथाका रसकी यांकै पुटदे अर नींवका पंचांगकी यांकै पुट ७ दे पाछै भांगराका रसकी यांकै पुट ७ दे पाछै यानै छाया सुकाय मिहीचूर्ण करिले पाछै आछ्योदिन देपिकोढ वालानै जुलावदे सहतकैसाथि अथवा पैरसारका काढाकैसाथिपरभातकासमै गरम पाणीसूंले प्रमान अ

घेलासूं पाछे. क्योंवधतोजाय टकाभरतांई उपरहलको भोजनकरे घृतसमेततो अतनारोगांनें दूरि करे ज्योंचीनें उदंबरनें पुंडरीकनें कापालनें दाहनें किटिभनें अलसकनें सत्तारूनें विस्फोटकनें येसारी जातिका कोढछे त्यांनें विसर्परोगांनें इतना रोगांनें यो निंवपंच अवलेह दूरिकरेछे ३ इतिपंचनिंवअवलेह अथवा वावची टका ५ भर सोध्योगुगल टका ५ भर सोधी सोनामुषी टका ३ भर सार टका २ भर गोरषमुंडी टका ३ भर कणगचटका १ भर षैरसार टका ४ गिलवे टका २ निसोत टका २ नागरमोथो टका २ वायविडंग टका १ हलद टका १ तज टका १ नींबको पंचांगटका ५ त्रिफला टका ३ चित्रक टका २ भर यां सर्वनें मिहिवांटि टंक २ प्रमाणसहत घृतकेसाथि गोलीकरे पाछे प्रभातही गोली १ गोमूतसूं लेतो कोढमात्रनें वातरक्तनें पांडुरोगनें उदररोगनें प्रमेहनें गोलानें यांरोगांनें यो दूरिकरैछे. अर बूढापणानें योदूरिकरैछे जुवान पणानें करैछे ४ इतिस्वायंभुवोगूगल अथवा चित्रक त्रिफला सूंठि मिरचि पीपलि जीरो कलौंजी वच सींधोलूण अतीस चव्य कूठ इलायची जवषार वायविडंग अजमोद नागरमोथो देवदार ये बराबरिले यांसर्वकी बराबरि सोध्योगूगल ले पाछे यासर्वनें मिहीवांटि येकजीवकरि घृत सेतीपाछे मासाच्यारि भरकी गोलीकरे पाछेगोली १ भोजनके समै षायतो कोढमात्रनें कृमिनें व्रणमात्रनें संग्रहणी ववासीरनें मूंढाकारोगनें गृध्रसीनें गोलानें यांसारांरोगांनें यो दूरिकरैछे. इतिकैसोर गूगलः अथवा सोध्याभिलावासेर

---

* भिलावानामसंस्कृतमें भल्लातकहैछे. मराठीमें बिब्बाकहैछे. गुजरातीमें भिलामाकहैछे. रुधिरका बिगाडानें षणाश्रेष्ठछे. गलतकोढने मिटावेछे. एकहकीम कितावमें लिषीछे. भिलावापाव १ तिलकालापाव १ पुरासाणी अजवायण पाव १ तीनचीजवारीकपीसगोली सुपारीप्रमाणकी वांधणी गोली १ प्रातः गोली १ संध्यादिन ४० तांई पथ्यचीणाकी रोटीदे र पाछे षारो सर्व टाले शरीर शुद्धहोय. कोढरोग जाय. पाछिलीछे.

२ पाणीसेर १६ में औटावे वा औटतांमै गिलवेसेर २ कूटिनापे पाछै ईपाणीको चतुर्थांश आयरहै तदिउतारि छाणिले पाछै यांनैं गऊको घृतसेर १ नाषै गऊको दूधसेर ४ ईमै नाषै मिश्रीसेर ऽ१ ईमैनाषैं सहतसेर ऽ॥ ईमैनाषैं पाछै ईमैं मधुरी आंचसूं पकावै ये सर्व जाडीहोय जाय तदिईनैं आंचसूं उतारि ईमैं ये औषदि नाषै वावची टंक २ पवाडकावीज टंक २ नींवकीछालि टंक २ हरडैकी छालि टंक २ आंवला टंक २ सींधोलुण टंक २ नागरमोथो टंक २ इलायची टंक २ नागकेसरि टंक २ पित्तपापडो टंक २ पत्रज टंक २ नेत्रवालो टंक २ षस टंक २ चंदन टंक २ गोषरू टंक २ कचूर टंक २ रक्तचंदन टंक २ येसारी औषदि मिहिंवांटि मिलावा उगैरैका वे जाडारसमैं येनापि येकजीवकरै ईनैटका येकभर प्र भातही जलकैसाथि रोजीनालेतो सर्वकुष्ठमात्रनैं वातरक्तनैं ववासीरनैं योदूरिकरै ईअमृतभल्लातकको पावावालो इतनीवस्त करैनहीं षेदकरैनहीं तावडेरहै नहीं अग्निकनै जायनहीं पटाई पायनहीं मांस दही पायनहीं तेल लगावैनहीं मार्ग चालैनहीं. ६

इति अमृतभल्लातकावलेह अथवा नींवकीवकल गोरीसर मंजीठ कुटकी त्रायमाण त्रिफला. नागरमोथो पित्तपापडो. वावची जवासो वच पैरसार रक्तचंदन पाठ सूंठि भाडंगी अरडूसो चिरायतो कुडाकीछालि निसोत इंद्रायणकीजड मूर्वा वायविडंग इंद्रजव चित्रक मानपात गिलवै वकायण पटोल दोन्यूंहलद पीपलि किरमालाकीगिरि सतोन्यू वेतसोधी चिरमी कलहारीजडीकी जड रास्ना साठीकीजड दांत्यूणी सोध्या जमालगोटा भांगरो कटसेलो. अंकोटक सापोटक येसारी औषदि टका भर लेत्यांनैं जोकूटकारै से

न. टी. तोभी पारीत करछै. प्यारमासा तथा छ मास सेवन. करैतो कुष्ट जायछै. वायमै भरीशक्तिछै. अठ महाभल्लातक अवलेह लिप्याछै. जीमैं औष्याभिलावासेर ४ गोंआंगर पाणी औटायत्यार ४ सेरपाणी रायणां.

रसोला १६ पक्कापाणीमैं औटावे तींको चतुर्थांश आयरहे तदि ईनैं उतारि छाणिजे पाछै भिलावासोध्यासेर ४ सोलासेरपाणीमैं औटाय ईंको चतुर्थांस जुदोराषै पाछै यां दोन्यांनैं एकठामिलाय ले पाछै यां दोन्यांकारसमैं गुड टका १०० भरकी चासणीमैं ये औषदिनाषैं सूंठि टका १ मिरचि टका १ पीपलि टका १ त्रिफ ला टका ३ नागरमोथो टका १ वायविडंग टका १ चित्रक टका १ सींधोलूण टका १ चंदन टका १ कूठ टका १ अजमोद टका १ सींधोलूण टका १ पत्रज टका १ नागकेसरी टका १ इलायची टका १ येसारीऔषदि मिहींवांटि अवलेहमै नाषि ईंकोयेकजीव करै पाछै आछयो दिनदेषि टका २ भर रोजीना ईनैं पायतौ सर्व कोडमात्रनैं ववासीरनैं व्रणमात्रनैं कृमिरोगनैं रक्तपित्तनैं उदावर्त नैं कासनैं सासनै भगंदरनैं यांसारां रोगांनैं योदूरिकरैछै. अर जुवान पणानैं करैछै सरीरकी परमकांतिनैं करैछै भूषनिपट घणी वधावैछै ईंकापावावालो पटाईउगैरै कुपथ्य करैनहीं गरमवस्त षा यनही इतिमहाभल्लातकअवलेह ७ अथवा मजीठ त्रिफला कुटकी वच दारुहलद नींवकीछालि गिलवै यांनैं वरावरिले यांनैं जौकूट करि टंक ५ को काढो रोजीना लेतौ कोढमात्रनैं वातरक्तनैं विसर्प नै विस्फोटकनैं यो दूरिकरैछै अभ्यासकरवोथको इतिलघुमंजिष्ठा दिकाथः ८ अथवा मजीठ वावची पवाड नींवकीछालि हरडेकीछा लि हलद आंवला अरडूसो सतावरि परैंटी गंगेरणीछालि मह लौठी महुवो. कव्याली पटोल पस गिलवै रक्तचंदन येसर्व वराव रिले यांनैं जौकूटकरि टंक ५ भरको काढो करिदेतौ सर्वकुष्ठमात्रनैं वातरक्तनैं योदूरिकरैछै. इतिमध्यमंजिष्ठादिकाथः अथवा मजीठ

न. टी. भावप्रकाशमैं सहस्र १ भिलावाछिष्याछै. सो हजारभिलावाको वजनसेर ४ आसरे होयछै. सोयो औषधी कुसल वैद्यनैं करणी. योग्यछै. हरएक कोईभी करसीजीनैं महादोष लागसी.

इंद्रजव गिलवे नागरमोथो वच सूंठि हलद दोन्यूं कव्याली नींबकी छालि पटोल कूठ कुटकी भाडंगी वायविडंग चित्रक मूर्वा देवदारु जलभांगरो पीपलि त्रायमाण पाठ सतावरी पैरसार विजैसार त्रिफला चिरायतो वकायण किरमालाकीगिरि निसोत बावची रक्तचंदन वरएयो दांत्युणी साषोट अरडूसो पित्तपापडो गोरीसर अतीस जवासो इंद्रायणकीजड येसर्व बराबरिले यांनें जोकूटकरि टंक ५ पांचका कादो रोजीना करिदेतौ अठारा प्रकारका कोढमात्रनें वातरक्तनें लोहीकाविकारमात्रनें विसर्परोगनें त्वचाकासून्यपणानें यां सारांरोगांनें यो दूरिकरैछे. १०

इतिबृहन्मंजिष्ठादिकाथ अथवा कालीमिरचि निसोत नागरमोथोहरताल देवदारु दोन्यूंहलद छड कूट रक्तचंदन इंद्रायणकीजड कलौंजी आककोदूध गोवरकोरसये सारि औषदि अधेलाअधेला भरिले सींगीमोहरोपईसा १ भरले कडवोतेलसेर १ ले पाणीसेर ४ गोमूतसेर ८ पाछे यांसारांनें मधुरी आंचसूं औटावे पाछे येसवंजलउगेरे बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदिईनें उतारिले पाछे ईको मर्दनकरैतो सर्व कुष्ठमात्रनें योदूरि करैछे. ११ इतिलघुमरीच्यादितेलम् अथवा कालीमिरचि निसोत दांत्युणी आककोदूध गोवरकोरस देवदारु दोन्यूंहलद छड कूठ रक्तचंदन इंद्रायणकी जड कलौंजी हरताल मैणसिल कनीरकीजड चित्रक कलहारीकीजड नागरमोथो वायविडंग पवाड सिरसकीजड कुडाकीछालि नींबकी छालि सतोन्याकीछालि गिलवे थोहरीकोदूध किरमालाकीगिरि पैंरसार बावची वच मालकांगणी येसर्व औषदि टकाटका भरिले सींगीमोहरो टका २ भरले कडवो तेलसेर ४ ले गोमूत सेर १६

न. टी. कोढरोगका जतनमैं लघुमंजिष्ठादिकाथ. मध्यमंजिष्ठादिकाथ बृहन्मंजिष्ठादिकाथछे अरु लघुमरीच्यादितैल महामरीच्यादितैलछे. यो कुष्ठक्रियामूं करणी वो महारोगादिक आराम होसी.

ले यांसरांनैं एकठाचढाय मधुरी आंचसूं पकावै पाछै सर्व गोमूत उगैरै बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि उतारि छाणिलै पाछै ई तेलको मर्दन करैतो सर्व कोढमात्रनैं व्रणमात्रनैं पांवनैं व्योचीनैं दादनैं फोडांनैं मुषकी छायानैं यां रोगांनैं ईतलको मर्दनसिरैछै. अर ईको मर्दन करयौथको जीवनपणांनैं करैछै अरयो वाय मात्र का रोगनैं मनुष्यका घोडाका हाथी उगैरै कानै दूरि करैछै १२ इति महामरीच्यादितैलं अथवा हरतालकापत्रचोषाले त्यांनैं चित्र ककारससूं दिन १ षरल करै वाईयांही हरतालनै साटीकारससूं दिन १ परलकरैछै ईकी टीकडी करि आछीतरै सुकावैपाछै ईहर तालनैं साटीका पंचांगका षारकेवीचिमेली चूलैचढावै ईहरताल कोधूवोनिकलिवादेनही ईसीतरै वेहरतालकीटिकडिनैंवेसाटीकाषार केवीचि षुव दाविदे पाछै वेंकैनीचैमधुरी आंचदे निरंतररात्रदिनता ई पाछै वधावणीदिन ४ तांई पाछै स्वांगसीतल हुवा वेहरतालकी टिकडीनैं वैसाटीषार माहिसूं निपट जावतांसूं चतुर मनुष्यकाढै वा हरताल तोलपुरी उतरैं निर्धूमहोय अर सुपेदहोय पाछै ईहरताल नैं रती २ मनुष्य पाय ईउपारे गुडूच्यादिकको क्वाथ लेतो अठरा प्रकारका कोढनैं वातरक्तनैं उपदंसनैं फिरंगवायनैं याहरताल दूरि करैछै. अर ईहरतालको पावावालो लूण षटाई कडवोरस तावडो ये सेवे नहीं अर लूणविनानहीरह्यो जाय तो सींधोलूणपाय अर मीठो घणो पाय १३ इति हरतालकी विधिः इहीनैं तालकेस्वररस कहैछै. अथवा पारो सोधीगंधक तामेस्वरसार गूगल चित्रक सि लाजित कुचीला वच अभ्रक ये सर्व वरावरिले कणगचका वीज

१. ताम्रभस्मनैं तामेस्वरकहैछै परंतु ताम्रभस्म शुद्धहोय तो गुणकरैछै. कदाचित अशुद्ध रहोंयकी महा औगुणकरैछै याग्रंथमें ताम्रभस्म क्रियातरंग २३ मैं कहीछै. सोयथायोग्यछै. परंतु क्रियासिद्धिछै परीक्षाकर छेणी परिक्षासायूत उतरैतो भस्मशुद्धजाणिजे. परिक्षामे कसर होयतो भस्म अशुद्धछै.

एक औषदिसूं चौगुणाले प्रथम पारागंधककी कजलीकरे पाछे ई
कजलीमें येसारी औषदि मिलाय येकजीवकरि पाछे ईने टंक २
सहत घृत केसाथि रोजीना षाय ऊपरसूं चावल दूधही षायतो
गलत कोढ जाय. अर सरीरवेंको महा सुंदर कामदेवसिरीसो हो
जाय ये रस षाय जिते स्त्रीसंगकरै नहीं १४ इतिगलतकुष्ठादि
रसः अथ विभूतिको जतन लिष्यते कूठ मूलीकाबीज सिरस्यूं केस
रि हलद यानें सिरसका जल करि पकाय लेपकरैतो घणादिनकी
भी विभूती जातीरहे १५ अथवा केलीकोषार हलद दारुहलद मू
लीकाजीव हरताल देवदारु संषकोचून ये बराबरिले यानें नागर
वेलका पानांकारसमें मिहिबांटि लेपकरैतो विभूति दूरिहोय १६
अथ चर्मदलकोढको जतन लिष्यते आमचूर ईमें किंचित् सींबो
लूण जलसूं तांबाकापात्रमें तांबाकाघोटासूं षूबपीसिवेंके लेपक
रैतो चर्मदलकोढजाय१७अथ पांवको जतन लिष्यते जीरो टका१
सिंदूरटंक ५ यांदोन्यांनें कडवातेलमें षूबबांटि पकाय ईको लेपक
रैतो पांव आछीहोय १८ अथवा मजीठ त्रिफला लाष कलहारी
कीजड हलद आंवलासार गंधक यानें बराबरिले यानेंमिहीबांटि
तावडे षूब गरमकरि पाछे. यांको लेपकरैतो पांव जाय १९ अथवा
पारो दोन्यूंजीरा दोन्यूंहलद कालिमिरचि सिंदूर आंवलासार
गंधक मैणसील यानें बराबरिले पाछे पारागंधककी कजलीकरि ई
कजलीमें येऔषदि मिहिबांटि गऊका घृतमें दिन १ परलकरे
पाछे ईको मर्दन करैतो पांवजाय २० अथवा पारो आंवलाषार
गंधक नीलोथूथो काथ महदी पुरासणी अजवायण मोम मालका
गणी येसारी औषदि बराबरिले पारागंधककी कजलीजुदी

न. टी. विभूतीका जतनमें केलीकोषार लिष्योहै. सो करणेकीविधि, केलकाथान पी-
लका उगैरे काटमूकायकरयानें बालकर राष करलेणी पाछेंयाराष पाणीमें घोलकर निथारके
पाछे कडाईमें औटायषार जमालेवणो.

करै अर मोमनैं घृतमें जुदीपिघलावै ये औषद्यां जुदीवांटे पाछे पा
रागंधककी कजलीमें सारि औषद्यां गउकाघृतसूं एकठीवांटिदिन
१ तांई पाछे ईंको मर्दन करैतौ पांवउगैरै लोहीका सर्व रोगजाय
२१ अथवा सोधीआंवलासार गंधक टंक २ नीलोथूथो मासा ३
यांदोन्यांनै पाणीसूं मिहिवांटि गोली १ वांधिले पाछे ईंगोलीनैं
मिहीकपडामै बांधै पोटली करै यापोटली गोहांकीवाटी अलूणीमे
सेकैवाटी तीनच्यारिमैं पाछे बाटीघृतमैं चोपडिषुवावै अथवा यांको
वूरासूं चूरिमो करिषाय दिन ५ तांई तौपांवउगैरै लोहीका सर्ववि
कार जाय २२ अथवा सिंधोलूण पंवाडका बीज सरस्यूं पीपलि
यांनैं कांजीका पाणीमैं मिहीवांटि लेपकरैतौ षुजालि दूरिहोय २३
अथ कछदादकी औषदि लि० आकका पानाको रस अर हलद
का काढाकोरस यांमैं सिरस्यूंको तेल पकावै पाछे ईंतेलको मर्दन
करैतौ कछदाद जाय २४ इतिअर्कतैलम् अथवा मैंणसील हिरा
कसी आंवलासार गंधक सींधोलूण सोनामुषी पथरफोडी सूंठि
पीपलि कलहारी कनीर पवाड़ वायविडंग चित्रक दांत्युणी नींबका
पान येसारी ओषदि अधेला अधेला भरिले त्यांनै जलसूं मिही
वांटि ईंका पाणीमैं कडवोतेल सेर २ दोय पकावै तीमध्ये आक
कोदूध अर थोहरीकोदूध अदपावनापै अर ईंमै गोमूतसेर ४
नापै पाछै यांनैं मधुरी आंचसूं पकावै येसारि वलिजाय तेलमात्र
आयरहै तदिईंको मर्दन करैतौ असाध्यभि कछदाद जाय पांव पु
जाल लोहीका सर्वरोग जाय २५ इति कछराक्षसनामतैलम् अथ
दादका जतनलि० कूठ वायविडंग पवाडकाबीज तिल सींधोलूण
सरस्यूं येवरावरिले यानै पटाईसूं मिहीवांटे पाछै ईंको लेपकरैतौ

न. टी. अर्कतेलई सो आकडाकापानाकोरस सेर ४ हळद टका १ तेलधरमूंको अथवा पले पाछे हळदी पाणीमें पोटळुगदीकरे. या रसमें मिळायदे पाछे तेल पाक कराहीमें उका ले तेल मात्रारणो सो अर्क तेलहै.

दादकोढ दूरिजाय २६ अथवा दोव हरडेकीछालि सींधोलूण पवा
डकाबीज कंणीरकीछालि येबराबरिले पाछै यानैं कांजीमैं अथवा
छाछीमैंवांटि ईको लेपकरैतौ दाद कछदाद जाय पाजभीजाय २७

अथ श्वित्रीनाम कोढतींको जतनलिप्यते वहेडाकीछालि हरडे
कीछालि कटुंवर वावची यांको काढोलेतौ श्वित्रीनामकोढदूरिहोय
२८ अथवा हरताल मैणसील चिरमी चित्रक यांनै गोमूतमैं मिही
वांटि लेपकरैतौ श्वित्रीनाम कोढदूरिहोय २९ अथवा दडघल
सांपाहुली वावची आंवला पैरसार यांको सेवनकरै अरपथ्यम रहै
तौ श्वित्रीनाम कोढदूरिहोय ३० येसाराजतन भावप्रकाशमैं लिष्या
छै. अथवा हलद टका ८ भर गऊको घृतटका ६ भर गऊको दूध
सेर ४ मिश्री टका५० भर सूंठि टका १ भर कालीमिरचि टका १ पी
पलि टका १ तज टका १ भर पत्रज टका १ भर नागकेसरी टका १
भर वायविडंग टका १ भर निसोत टका १ भर त्रिफला टका १
भर केसरी टका १ भर नागरमोथो टका १ भर पाछै यांनैं मिही
जुदांवांटि घृतमैं मकरोय हलदमैं दूधमैं ईकौपरो मावो करै पाछै
ईमावासमेत पांडकी चासणीकरि चासणीमैं मावो अरसारि औ
पद्या ईमैं नापै पाछै ईकीगोली टका येकेक भरकी बांधै गोली १
रोजीना पायतौ कोढनैं पूजालीनैं फोडानैं दादनैं यां रोगांनैं दूरि
करैछै. ३१ इतिहरिद्रपंडः अथ हरतालमारवाकी विधि. हरताल
चोपी तबकियाले तींमै दसवांहिसा सूवागाकाटूक मिलाय वेकीवा
फताका कपडाकी च्यारी पुटकी पोटली करै पाछै वापोटली जंभी
रीकारसकै बीचमेल्हि डोलकायंत्र करि पाछै वेकैनींचे आछीगादी
आंचदे पहरदोयकी २ ओरूं औटावे पाछै ईहांतरै कांजीका पाणी

म. टी. हरतालकी क्रियाछिपीछै. घोनत्र क्रियालेगां. गुरनै ता पना ओमी नीनें [illegible]
कपीरत्रयें बणावणी. कारण या चीजडरजामछै. ईने दनाबुद्धिला विचारयो रापे गां नेप ई
पडछै. बुद्धिवानछै.

में औटावे पाछे इहींतरे पेठाकापाणीमैं औटावै पाछे इहीं तरे ते
लमै औटावे पाछे इहींतरे त्रिफलाकापाणीमैं औटावे पाछें ईहर
तालनैं कहींतरेंकी षटाईमै धोयले पाछे ईहरतालनैं छीलाकीवकल
कारसमैं परलकरे २ रात्रिदिन पाछे ईनैं तावडेसुकाय ईको गोलो
करे पाछे ईगोलानैं सरावसंपुटमै षूब जतनसूं मेलै पाछे वेस
रावाके षांमदे पाछे गजपुटदेआरणाछाणामैंफूंकिदे पाछे स्वांगसी
तल होय जदि वेमाहिसूं वे हरताल संपुटनै काढे पाछे ईसंपुट
माहिसूं वेहरतालनैं काढे पाछे वेहरतालनै बकरीकादूधसेति दिन
१ षरलकरे पाछे ईको गोलोकरि औरु तावडे ईगोलानैं सुकायले
पाछे पलासकीराषसेर ४ पक्की हांडीमें घालिवेराषकैवीचिमै हरता
ल गोलो भेलैषूबनिपटगाढीदाबै वाराष हांडीमै दावि भरे मुंढातांई
पाछे वाहांडी चूल्हे चढावैनीचे आंचदे वैको धूवोंनीसरवादेनहीं इ
सीतरे दावि वाराष हांडीमे भरे पाछे आंचअनुक्रमसूं दे मंदमंद
अर निपटगाढी प्रहरवत्तिसकी ३२ पाछे ईनै स्वांगसीतल हुवां
ईहरतालनैं वेमाहिसूं काढे वाहरतालईमाहिसूं सुपेदनीकलैनिर्धूम
तोलकीपुरी पाछे ईनै पुराणागुडकै साथि रति १ पाय ईऊपरिचणा
कीरोटीसाटी चावलगऊको घृत दिन २१ येपाय ईऊपरि लुणष
टाईपायनहींतो अठाराप्रकारका कोढनै वातरक्तनैं फिरंगवायनैं
याहरताल दूरि करेछे ३२

इति हरताल मारणविधिः अथवा पारो टंक २ सोधीगंधक
टंक २ हरताल टंक २ मैणसिल टंक २ वावची टंक ५ धूमसो

---

* कंदूलामषाजकोछे. जीनै षरूजबी कहेछे. यडोसरावरोगछे. ईकैवास्ते अनेक औषधी
छे परंतु दक्षिण हैदराबादमैं एक विद्वान् वैद्यचंनजीलतोछा. जीनैपूछी. गुरामावभोषाजको
रोगसाधारणछे. मनुष्यनै हैरानपणो करेछे. सुगमउपायकहो उत्तर. हैश्रीधर जंगलीविदाष
को मगजदहीमैं पिसकर षाजकै मर्दनकरै तो आराम होय पाछे या औषदि घणाकै लगाईगो
बिलाअटपट्ट आराम हुवाछे.

टंक २ सिंधूर टंक २ दोन्यूं हलद टंक ५ यांसारांनैं गऊका घृत सूं षूव मिहींवांटि लेपकरैतौ तावडेरहै प्रहर २ पाछे स्नान करैतौ कंडूनैं दाहनैं कृमिनैं कोढनैं दिन ३ माहिदूरिकरै ३३ अथवा छी लाकीजडकी सूकी वकल टका २५ भरतींकी रापकरै तींकैवीचिचो पीहरताल तवकीयां मासा २५ जतनसूं वेमैं मेलै नवीनगाडि आछी हांडीमैं दावै पाछे वेहांडी ऊपरि सरावोदेवेनैं मूंधा पाछेवे हांडीनैं चूल्हे चढावे पाछे वेकैंनीचे निपटगाढी अग्निवालै पहर १० तांई पाछे स्वांगसीतल हुवांवेनै वस्त्रसूं छाणिले पाछे ईरापनैं रती १ विनासेक्या जीराकै साथिलै जीरो मासा १ वांट्यो यां दोन्यां नैं येककरि पक्कानागरवेलीका पानांके साथि सीतल जलसूं पाय ईऊपरि चणाकी रोटीपाय अलूणी मंडल एक १ तांई ईकोपावावा लो पवन तावडो पायनहीं ईविधिसूं रहैतौ अठारा प्रकारकाको ढनैं वातरक्तनैं व्रणमात्रनैं पिडिकानैं वातव्याधिनैं यांसारां रोगानैं यो निश्चय दूरिकरैछै ३४ अथ दादका जतन लिप्यते पवाडका वीज वावची सिरस्यूं तिल कूटदोन्यूं हलद नागरमोथोये वरावरिले यांनैं छाछिमै षूव मिहींवांटि पाछे ईको लेपकरैतौ दाद कंडू व्योंची ये सारादूरिहोय ३५ अथ कोढकादूरिहोवाको लेप नीलाथूथो सु हागो येदोन्यूं टंक २ वावची टंक ५ यांतीन्यांनैं मिहींवांटि जलभां गराका रसकीयांकै पुट ७ दे पाछे यांको लेपकरैतौ कोढ जाय ३६ ये सर्व जतन वैद्यरहस्यमें लिप्याछै. अथ महा लेपलिप्यते पारो टंक १ संपकोपार टका १ आंधी झाडाकोपार टका १ तिलांकोपार टका १ साठीकोपार टका १ हरडेकोपार टका १ अरडूसाकोपार टका १ पटोलकोपार अरंडकोपार जवपार सुहागो साजी नोसा

न. डी. पाकीगुद्धहरताल अषी८० जातकी वायूनैं तवारीधनैं, कुष्टनैं प्रमेहनैं इलनैं गुमावैछै. कायीरदीओपीटी रंगमैं एयानीयारे जीमैं मो वाजुकरै, लिपकरै, पंगुकरै, इत्यादि इत्यादि जो कार्यी हरताल ओगुणकरैतौ पाकी अनारको रस पावै तो दोषहरै.

दर आवलासार गंधक पांचूलूण कूठ सूंठि कालिमिरचि पीपलि डा सख्यांकीजड कणगचकी जड कलहारीकीजड हलद जमींकंद गोर षमुंडीकोषार कडुवाकोषार पीपलिकोषार राई सिरस्यूं सिंदूर सि लाजित पापडषार कपेलो लोद थोहरीकीजड आककीजड निलोथू थो चित्रक आकका पंचांगकोषार येसारीऔषदि जुदी जुदी टका टका भर लीजे पाछै यासारी औषद्यांनै मिहीवांटि एकठी गोमूत सूं ताम्रका वडापात्रमैं राषै पाछै इहींमैं इतनीवस्त औरनाषे भै सीकोमूत घोडाको मूत बकराको मूत हाथीको मूत ऊंटकोमूत नींबू कोरस जंभीरीकोरस विजोराकोरस नारंगीकोरस चणषार सहज णाकारस सातूधानाकी कांजी राईकासंजोगकीये सारीत्रांका अनु मानमाफिक घालै वेंको मूंढोढाकि दिन २१ जावतासूं मेलिराषे. पाछै ईकोलेपकरैतो सर्वकोढमात्र दूरिहोय अर येरोगभी ईकालेप सूं जाय गंडमाला विसर्प बवासीर न्यौंची वायका सर्वरोग महीना येक १ मैं ये सर्वरोग जाय ६७ येरससंग्रहमैं लिष्याछै. इति को ढरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनसंपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे भगंदर उपदंस लिंगार्सकरोग कोढयांसर्वरोगांका भेदसं युक्त उत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनाम षोडशःस्तरंगः १६

१७ अथ सीतपित्त उदर्दकोढ उत्कोढ यांरोगांकी उत्पत्तिलक्षण जतन लि०सीतलपवनकास्पर्श कर्यांथका कफ अर पवनहैसो दुष्ट होय पित्तकरिकै सहित आपका कारणकरिकै दुष्टहोय त्वचाकै माहि अरबारैवाय अर कफकरिके सीतपित्तादिक रोगानैं पैदाक रैछै. १ अथ सीतपित्तादिकको पूर्वरूप लिष्यते तिसलागै अरुचि

न. टी. कोढीने पथ्य लि० गहूं, लाल चावल मूग तुर मसूर. जंगली पशूको मांस तुराई कोमलबेंगण लहसण, जायफल, राई केसर, चीणामोठ इत्यादि अपथ्य, षाटो, षारो षीषो दही, दूध गुड, तीव्र उडद सीसेवन, मद्य श्रम इत्यादि.

होय वमनसीआवे देहमें पीडाहोय सरीर भार्योहोय नेत्रलालहो य येलक्षणहोय तदि जाणिजे सीतपित्तादिक रोगहोसी १ अथ सीतपित्त उदर्दको लक्षणलिष्यते जैसे कोडीका काव्या दाफडहोय आवे तैसे त्वचाऊपरिदाफड घणा होय जाय अर वामें पाजिआ वे अर पीडघणीहोय और छादणीहोय अर ज्वरहोय अर दाहला गिजाय तदि जाणिजै सीतपित्तछे. अर इहीनें उदर्द कहिजे वाय को अधिक होयतो सीतपित्त जाणिजे कफको अधिक होयतो उ दर्द जाणिजे योशशिररितुमे घणो होयछे. १

अथ कोढउत्कोढको लक्षणलिष्यते. वमन आवतानें रोके तदि पित्तकफदुष्ट हुवाथका लाललाल पुजालिनें लियांदाफडशरीरमेंकरी देतीनें कोढ कहिजे येथोडीवार रहै अर येही घणीवार रहैतो उत्को ढ कहिजे १ अथ सीतपित्त उदर्द कोढ उत्कोढ यां रोगांका जतन लिष्यते औषधांसूं वमन कराय देतो सीतपित्त उदर्द दूरिहोय १ अथवा पटोल नींबकीछालि अरडूसो त्रिफला गुगल पीपलि यांको काढो देतो सीपित्त उदर्दजाय २ अथवा जुलाबदेतो सीत पित्त उदर्द जाय ३ अथवा कडवा तेलको मर्दन करै अर सरीरनें गरमपाणीसूं धोवेतो सीतपित्त उदर्द जाय ४ अथवा त्रिफला सह तसूं षायतो सीतपित्त उदर्द जाय ५ अथवा कुटकीको जुलावले मिश्रीका संजोगसूं तो सीतपित्त उदर्दजाय ६ अथवा गुडआंवला षाय अथवा सूंठि अजवायण कालीमिरचि पीपलि जवषार यांको चूर्ण टंक २ दिन ७ सात गरमपाणीसूं लेतो सीतपित्त उदर्द जाय ७ अथवा आदाकोरस पुराणोगुड षायतो सीतपित्त उदर्दजाय ८ अथवा अजमोद टंक ५ गुड टंक ५ यांदोन्यांनें येकठांकरि

न. टी. पित्तरोगको निदान और औषधी तो लिषीछे. भोजनमांहेनी. अवपथ्यातर छिंटूं पथ्य, जालवारत, मूंग कुळथी गरमपाणी, पचनवंध इ. कुपथ्य आनकरणां. पकेवळेणो. गारी वट, मज भोजनकरणां इत्यादिनहीं करणा.

दिन ५ पांचरोजीनाषायतौ सीतपित्त उदर्दजाय ९ अथवा सरस्यूं हळद पवाडकाबीज तिल यांसारांनैं कडवा तेलमैं मिहीवांटि लेप करैतौ सीतपित्त उदर्द जाय १० अथ वकायणका वकाकी वकल टंक ५ मिहीवांटि गऊकाघृतकै साथि पीवै तौ सीतपित्त उदर्दजाय ११ अथवा लोहीकढाजैतौ सीतपित्त उदर्द जाय १२ अथवां आंवळांनैं अर नींवका कोमल पानानैं घृतमै तलि टका १ प्रमाण मनुष्य दिन १५ षायतौ फोडांकारोगांनैं पित्तनैं कृमिनै सीतपित्तनै पुजालिकारोगनैं गरमीकारोगनैं कफकारोगनैं यो दूरिकरैछे. अथवा छोल्या आदाका टूक छोटा छोटा सेर १ का करै अर गऊकोघृतसेर॥ ले गऊको दूधसेर २ लेर्तीको मावोकरै तींमैं आदाका टूक घृतसूंचोपडिवेमै नाषै पाछैवेही मावानीचै आंचदे वेको षैरो मावोकरै अर मिश्रीसेर १ येककीचासणीकरै पतलीअवलेहकीसी तींचासणीमैं मावोनाषि अर ये औषदि मिहीवांटि नाषै सोलिपूंछूं पीपलामूल मिरचि सूंठि चित्रक वायविडंग नागरमोथो नागकेसरि तज इलायची पत्रज कचूर येसारी औपदि जुदीजुदी टका १ येकेक भरिले यांनैं मिहीवांटि वांनैं मिश्रीकी चासणीमैं नांपं पाछै ईनैं रोजीना टका १ संध्यानैं पायतौ सीतपित्तनै उदर्दनैं कोढनैं उत्कोढनैं राजरोगनैं रक्तपित्तनैं पासनैं सासनैं अरुचिनैं वायका गोंलानैं उदावर्तनैं सोजानैं पुजालिनैं कृमिरोगनैंउदरकारोगनै यांसर्वरोगांनै यो अवलेह दूरिकरैछे अर यो वलवीर्यनैं वधावैछे. अर सरीरनैं पुष्टकरैछे. १४

---

* पत्र ३ सीतपित्तादिकछे. सो प्रसिद्धछे. जामै पित्ती एक उपद्रवछे. सो पांको आगां तर्भेदछे. जीमै साध्य असाध्य, कष्टसाध्यछे. पित्ती होयकर तत्काळ आछी होयछे. सो तो साध्यछे. औषधीसेपायकी जाय सो कष्टसाध्यछे. कदाचित् शरीरमें रहजायतो असाध्यछे. बिगाडकरेछे औरभी अनेक जातिकारोग पैदाकरैछे. जीनै हरएक पायनसों आछी करणी चाहिजे.

इति आर्द्रकपंड अवलेहः ये सर्व जतन भावप्रकासमें लिप्या छे. अथवा सींधालूणनैं घृतमें मिहीवांटिकैं सरीरकै मर्दनकरे पाछे लाल कामलो ओढैतौ पित्तीकोरोग जाय १५ अथवा गऊको घृत गेरू सींधोलूण कसूंभाका फूल येवरावरिले त्यांनें मिहीवांटि सरीरकै उबटणो करैतौपित्ती दूरिहोय १६ अथवा चिरायतौ अर दूसो कुटकी पटोल त्रिफला रक्तचंदन नींवकी छालियांको काढो लेतौ पित्तीकारोगनैं फोडानैं दाहनैं ज्वरनैं मुपसोसनैं तिसकारोगनैं व मननैं यांसारां रोगांनैं यो काढो दूरिकरैछे १७ अथवा आरणा छाणाकीराष सरीरकै मर्दन करैतौ पित्तीजाय १८ अथवा फिटकडी नागरवेलीका पानांकारसमैंवांटि वेंकासरीरकै मर्दन करैतौ पित्तीजाय १९ अथवा लसण टका भरषाय अथवा त्रिफला टका ५ भर मिहीवांटि सहत सौंचाटैतौ पित्तीजाय २० ये सर्वजतन वैद्यरहस्यमै लिप्याछे अथवा मेथीदाणा टका १ भरकालीमिरचि टका १ भर हलद टका १ यां सारांनमिहीवांटि पाछे यांको आदाकारसकी पुट ३ दे पाछे गोली टंक २ प्रमाणकरै पाछैगोली १ रोजीना पायतौ पित्तीकासर्व विकारांनें दूरिकरैछे. २१ यो वैद्यरहस्यमें लिप्योछे इतिसीतपित्तउदर्द कोढ रोगयेपित्तका भेदछे. त्यांकी उत्पत्तिलक्षणजतन संपूर्णम्. अथ अम्लपित्तकी उत्पत्तिलक्षणजतन लिप्यते लूणकापावासूं पटाईकापावासूं कडवीवस्तका पावासूं गरमवस्तांका पावासूं ओर्हीपित्तहेसो कोपकूंप्रातिहोय अम्लपित्तनें पैदाकरैछेसो अम्लपित्तरोगभी ३ प्रकारकोछे. वायको १ कफको २ कफवायको ३ अथ अम्लपित्तकोलक्षणलि० अन्नपचैनहीविनापदकलो श्रम होय वमनसो आवो करै कडवी पाटी डकार आवे

न टी. नारुमें पित्तीनारुके घो वेगपूर्क होयछे, जीमे कोईके यो पाणीमें कोई जंतु पीवामें आवेछे. और नारू रोगका पूर्वरूपमेंभी पित्ती नीसरेछे यार पित्तीको रोगमी छे सो विद्वान् वैद्य जाणलेछे. औरइसापाएण पित्तीकानें मांजीमूरका छाइनी चुकावे.

सरीर भाखौ होय हियामें कंठमें दाहहोय भोजनमें अरुचिहोय ये लक्षणहोय जीनें आम्लपित्तकहिजे १ योआम्लपित्तदोय प्रकार कोछे एकतो ऊर्ध्वगामीसोतो मुषमांही होयकारि जाय येक अधो गामी गुदाद्वाराभी होयछे. अथ ऊर्ध्वगामी आम्लपित्तको लक्षण लि० जोवमन करेसो हखौ पीलो नीलो कालो लाल अत्यंत नि र्मलभी मांसका जलसिरीसो अर आम्लपित्तकफसौं मिल्यो होय तो घणो चीकणोछादे अर करडो सलूणोतीषोछादे. १ अथ अधो गामी आम्लपित्तको लक्षण लि० जींकामलमें नानाप्रकारका वर्ण होय अर तिसहोय दाह होय मूर्छाहोय मोहहोय हीयोदूषे वमन सो आवे शरीरमें दाफड होय आवे डकारघणी होय अर कंठमें कुषिमें हियामें दाह होय सरीरमै पीडाहोय हाथ पगांमें दाहहोय भोजनमें अरुचिहोय ज्वरहोय येलक्षणजीमेंहोय तदि जाणिजे ईके आम्लपित्तको रोगछे. १ अथ आम्लपित्तकेविषे औरभीदोसांको मिलापछे सो लि० ईआम्लपित्तकेविसे वायकोभी मिलाप होयछे. अर कफकोभी मिलाप होयछे. अैठे वैद्यहैसो मोहकूं प्राप्तिहोयछे. अथ दोष भेदकरिके आम्लपित्तको भेद लिष्यते जीमें कांपणीहो य प्रलापहोय मूर्छाहोय शरीरमें चिमचिमाही होय अर शरीरमे पीडा अर सूल होय अर अंधेरी आवे अर भौलीआवे अर मो हहोय अर हर्षहोय आवे तदि जाणिजे आम्लपित्तमें वायको मिलापछे १ अथ कफथूक सरीर भाखो होय अरुचिहोय शरीर में सीतलागे वमन होय अग्निजातीरहे वल जातोरहे सरीरमें पु जालि आवे अर नींद घणीआवे येजीमें लक्षण होय तदि जाणि जे ईआम्लपित्तमें कफ मिल्योछे. अथ आम्लपित्तको साध्य अ

न. टी. आम्लपित्तकारोगके अर्थ अठे निदान औषध लिखणी जरूर नहीछे. कारण ग्रंथका- रां लिखणेमें कमती नहीं करीछे. परंतु हमारि उक्ति यांहीछे आम्लपित्तमें वायु कफ यांको मि- लाप होयछे जठे वैद्यजनें निजरपोंचाणी योग्यछे.

साध्य लक्षणलि० आम्लपित्तको रोग नवीन उपज्यो होय सोतो साध्य जतनकयां जाय अर योही घणादिनको होय सो जाप्यजाणिजे अर योही घणादिनको होय अर पथ्यचालैनहीं सो असाध्यजाणिजे १ अथ आम्लपित्तरोगका जतनलि० आम्लपित्तरोगवालानैं पटोल नींबकीछालि अरडूसो येबराबरिले त्यांको काढो करि ईसेतो वमन कराजैतो आम्लपित्तजाय १ अथवा मैंढल सहत सींधोलूण यांकरिवमन कराजैतो आम्लपित्त जाय २ अथवा जुलाबसूं आम्लपित्तजाय ३ अथवा निसोत सहत आंवलायांको जुलाबदेतो आम्लपित्तजाय ४ अथवा ऊर्ध्वगामी आम्लपित्त होय तीनैं वमन कराजै अर अधोगामी आम्लपित्त होय तीनैं जुलाब दीजे ५ अथवा जवांकोसातु अथवा गोहांकोसातु अथवा चावलांको सातू मिश्रीका संजोगसूं पायतो आम्लपित्त जाय ६ अथवा जव अरडूसो आंवला तज पत्रज इलायची यांको काढो सहतनापिकर पीवैतो तत्काल आम्लपित्तजाय ७ अथवा गिलवै नींवकीछालि पटोल यांकोकाढो करि सहतनापि पीवैतो महा भयंकरभी आम्लपित्तजाय ८ अथवा अरडूसो गिलवै पित्तपापडो चिरायतो नींवकीछालि जलभांगरो त्रिफला कुलत्थ यांकोकाढो सहतनापिदेतो आम्लपित्तजाय ९ इतिदशांगकाथः अथवा भोजन करि आंवलाकोरस पीवैतो आम्लपित्तनैं वमननैं अरुचिनैं दाहनैं मोहनैं तिमिरनैं व्रणनैं मूत्रकादोषनैं योदूरिकरैछै. अर योही बूढापणानैं दूरिकरि तरुणकरैछै. १० अथ कूष्मांडावलेह पकापेठानैं छोलितीकाबीज गिरिकाढि तीनैंकूटि तीकोरस टका १०० भरले पाछै टकासो १०० भरही गऊको दूधले अर टका ८ आठभर

न. टी. आम्लपित्तरोग अधोगामी अ. ऊर्ध्वगामी [illegible] सो अधोगामी. और चढती [illegible] सो ऊर्ध्वगामी. जैसे अधोगामी को जुलाब [illegible] ऊर्ध्वगामी नैं वमन [illegible] दीजै [illegible]

आंवलाले अर टका ८ भर मिश्रीले अर गऊको घृत टका ८ भरले यांसारानैं मधुरी आंचसूं पकावै पाछै ईंकी अवलेहकीसी चासणीकरै पाछै टका १ भर अथवा टंक ५ रोजीना षायतौ आम्लपित्त जाय ११ अथवा नारेलकीगिरीनै छोली तीनैं पत्थरऊपरिवांटिले पाछै वेगिरिसूं चौगुणी बनारस षांडले तींकीचासणीकरै अर वेंवांटि गिरिनैं गऊकादूधमैं पकाय वेंको मावोकरै औ मावो वे चासणीमैं नाषै पाछै ये औषदि मिहिवांटि चासणीमैं नाषैधणो पीपलामूल तज पत्रज नागकेसर इलायची ये सारीऔषदिटंक येक येकले पाछै यां सारांनै मिलाय यांको येकजीवकरि टका १ भरकी गोलीबांधे अथवा टंक ५ भरकी गोलीबांधे गोली १ रोजीना षायतौ अम्लपित्तनैं रक्तपित्तनैं सूलनैं दूरिकरैछै. १२ इति नालेरषंडःयेसर्वेजतन भावप्रकाशमैंछै. अथवा मिनकादाषनैं धोयतींकी मींगीकाढि तींबराबरिवडी हरडकी वकलका चूर्णनैं पाछै यांदोन्यानैं बराबरिमिश्रीमिलाय यांकी गोलीटंक २ कीबांधे पाछै गोली १ रोजीना षायतौ अम्लपित्तनैं हियाका कंठका दाहनैं तिसनैं मूर्छानैं भौलिनैं मंदाग्निनैं आमवातनैं दूरिकरैछै १३ इति द्राक्षादिगुटिका अथवा सूंठि कालिमिरचि पीपालि त्रिफला इलायची नागरमोथो वायविडंग पत्रज येबराबरि यांसारांकी बराबरि लौंगले यांसारांसौंदूणी निसोतले यांसारी औषधांकी बराबरि मिश्रीले यांको चूरणकरि टंक २ सीतल जलसूं लेतौ आम्लपित्त जाय ४ इति अविपित्तकचूरणम्. इति अम्लपित्तकी उत्पत्ति लक्षणजतन संपूर्णम्.

अथ विसर्परोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते लूण पटाई

* आम्लपित्तरोगछै सो दुष्साध्यछै. विद्वानवैद्य ईरोगनैं पछाणौ. कारण ईरोगमैं घणी वारीकीछै. ईंकाउपावतो अनेकछै. परंतु आछीकाबंदेद लिष्याछै. सो उत्तम औषधछै तथा देशको औषधभी घणो गुणकारीछै. ये औषधी प्रसिद्धछै.

साध्य लक्षणलि० आम्लपित्तको रोग नवीन उपज्यो होय सोतो साध्य जतनकर्‍यां जाय अर योही घणादिनको होय सो जाप्यजाणिजे अर योही घणादिनको होय अर पथ्यचालेनहीं सो असाध्यजाणिजे १ अथ आम्लपित्तरोगका जतनलि० आम्लपित्तरोगवालानें पटोल नींबकीछालि अरडूसो येपरावरिले त्यांको काढो करि ईसेती वमन कराजेतो आम्लपित्तजाय १ अथवा मेंढल सहत सींधोलूण यांकरिवमन कराजैतो आम्लपित्त जाय २ अथवा जुलावसूं आम्लपित्तजाय ३ अथवा निसोत सहत आंवलायांको जुलावदेतो आम्लपित्तजाय ४ अथवा ऊर्ध्वगामी आम्लपित्त होय तीनें वमन कराजे अर अधोगामी आम्लपित्त होय तीनें जुलाव दीजे ५ अथवा जवांकोसातु अथवा गोहांकोसातु अथवा चावलांको सातू मिश्रीका संजोगसूं पायतो आम्लपित्त जाय ६ अथवा जव अरडूसो आंवला तज पत्रज इलायची यांको काढो सहतनाषिकर पीवैतो तत्काल आम्लपित्तजाय ७ अथवा गिलवे नींबकीछालि पटोल यांकोकाढो करि सहतनापि पीवैतो महाभयंकरभी आम्लपित्तजाय ८ अथवा अरडूसो गिलवे पित्तपापडो चिरायतो नींबकीछालि जलभांगरो त्रिफला कुलत्थ यांकोकाढो सहतनापिदेतो आम्लपित्तजाय ९ इतिदशांगकाथः अथवा भोजन करि आंवलाकोरस पीवैतो आम्लपित्तनें वमननें अरुचिनें दाहनें मोहनें तिमिरनें व्रणनें मूत्रकादोषनें योदूरिकरेछे. अर योही मूडापणानें दूरिकरि तरुणकरेछे. १० अथ कूष्मांडावलेह पकापेठानें छोलितीकाबीज गिरिकाढि तीनेंकूटि तीकोरस टका १०० भरले पाछे टकासो १०० भरही गऊका दूधले अर टका ८ आठभर

न. टी. आम्लपित्तरोग अधोगामी अ. ऊर्ध्वगामीहोइसकीदाइनीचलीकोअधोगामी. और ऊपरकीदाइनीचलीकोऊर्ध्वगामी. जैसेअधोगामीतोजुलावसौ जीतणो और ऊर्ध्वगामीनेवमनऊपर जीतदेणो परंतुरोगीकोबलाबलदेषणो.

आंवलाले अर टका ८ भर मिश्रीले अर गऊको घृत टका ८ भ
रले यांसारानैं मधुरी आंचसूं पकावै पाछे ईंकी अवलेहकीसीचा
सणीकरै पाछे टका १ भर अथवा टंक ५ रोजीना पायतो आ
म्लपित्त जाय ११ अथवा नारेलकीगिरीनै छोली तींनैं पत्थरऊप
रिवांटिले पाछे वेगिरिसूं चौगुणी बनारस षांडले तींकीचासणीकरै
अर वेंवांटि गिरिनैं गऊकादूधमैं पकाय वेंको मावोकरै औ मावो
वे चासणीमैं नाषै पाछे ये औषदि मिहिवांटि चासणीमैं नाषैधणो
पीपलामूल तज पत्रज नागकेसर इलायची ये सारीऔषदिटंक
येक येकले पाछे यां सारांनै मिलाय यांको येकजीवकरि टका १
भरकी गोलीवांधै अथवा टंक ५ भरकी गोलीवांधै गोली १ रो
जीना पायतो अम्लपित्तनैं रक्तपित्तनैं सूलनैं दूरिकरैछे. १२ इति
नालेरषंडःयेसर्वजतन भावप्रकाशमैंछे. अथवा मिनकादापनैं धो
यतींकी मींगीकाढि तींबराबरिबडी हरडकी वकलका चूर्णनैं पाछे
यांदोन्यानैं बराबरिमिश्रीमिलाय यांकी गोलीटंक २ कीवांधै पाछे
गोली १ रोजीना पायतो अम्लपित्तनैं हियाका कंठका दाहनैं
तिसनैं मूर्छानैं भौलिनैं मंदाग्निनैं आमवातनैं दूरिकरैछे १३ इति
द्राक्षादिगुटिका अथवा सूंठि कालिमिरचि पीपालि त्रिफला इलाय
ची नागरमोथो वायविडंग पत्रज येवराबरि यांसारांकी बराबरि
लौंगले यांसारांसौंदूणी निसोतले यांसारी औषद्यांकी बराबरि मि
श्रीले यांको चूरणकरि टंक २ सीतल जलसूं लेतो आम्लपित्त
जाय ४ इति अविपित्तकचूरणम्. इति अम्लपित्तकी उत्पत्ति लक्ष
णजतन संपूर्णम्.

अथ विसर्परोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते लूण पटाई

* आम्लपित्तरोगछे सो दुष्टव्याधीछे. विद्वानवैद्य ईरोगनैं पछाणो. कारण ईरोगमैं घणी बारीकीछे. ईकाउपायतो अनेकछे. परंतु आद्यौकायबेद लिष्याछे. सो उत्तम औषधछे तथा पेठाको औषधभी घणो गुणकारीछे, ये औषधी प्रसिद्धछे.

गरमवस्तका पावासूं विसर्परोग पैदाहोयछे सो औ विसर्परोग फे ल्यो थको सात ७ प्रकारकोछे. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ वातपित्तको ५ वातकफको ६ कफपित्तको ७ अथविसर्परोगको सामान्यलक्षणलिष्यते लूण षटाई गरमनें आदि लेर ये पाछे लिष्योछे त्यांकाघणा पावासूं वाय पित्त कफयेकोपकूं प्राप्तिहोय सरीरकालोहीनें मांस उगेरे सातधातनें विगाडि शरीरमें छोटी वडी फुणस्यांका मंडलनें शरीरमें फैलायदेछे. ईवास्ते वैद्यांईरोगको नामविसर्प काह्योछे १ अथ वायका विसर्प लक्षण लिष्यते शरीरमें आपका कुपथ्यका कारिवासूं वाय कोपकूं प्राप्ति होय शरीरमें कठेही छोटीछोटी फुणस्यां पैदाकरे तदि फुणस्यां शरीरमें फैलिजाय तदि वायज्वरका सर्व लक्षण वेमेंमिले अर वामें सो जो होय आवे अर पीडघणी होय अर वेफुणस्यां फाटिवालागि जाय अर वामें पांवसिरीसी पीडघणी होय अर वामें पूजालिघणी आवे १ अथ पित्तका विसर्पको लक्षण लिष्यते आपका कुपथ्यसूं पित्तकोपकूं प्राप्तिहोय शरीरमें छोटी वडी फुणस्यां हुईहोय सोवे फैलिजाय तदिवांमें पित्तज्वरका सर्व लक्षण मिले अर वेफुणस्यांवे गदेर वर्णाफैलिजाय अर घणीलाल होय २ अथ कफकाविसर्प रोगको लक्षणलि० आपका कुपथ्यका कारिवासूं कफकोपकूं प्राप्ति होय शरीरमें छोटीमोटी फुणस्यांनें फैलाय दें पाछे वामेपाजिघणी आवे अर वेफुणस्यांचांकणी होय अर वेमें कफज्वरका सर्व लक्षण मिले ३ अथ सन्निपातका विसर्परोगको लक्षण लिष्यते आपका कुपथ्यका कारिवासूं सन्निपातकोपकूं प्राप्तिहोय शरीरमें छोटीवडी फुणस्यां पैदाकरि वाफुणस्यांनें सरीरमें तत्काल फैलायदे अरवा

न. टी. मिथ्याआहार[illegible] त्रिदोषकोपप्राप्ति होवे [illegible] प्राप्तिहोवछै. [illegible] [illegible]

फुणस्यांमें पाछे कह्याछे सोलक्षणवामें होयजाय अर सन्निपातज्व रका सर्वलक्षण होजाय ४ अथ वातपित्तविसर्परोगको लक्षण लि ष्यते. जींकासरीरमें वायपित्त आपका कुपथ्यका करिवासूं कोपकूं प्राप्तिहोय शरीरमें छोटीवडी फुणस्यांमै पैदाकरै सो वै फुणस्या स रीरमें फैलिजाय तरिआग्न्याख्यानाम वाफुणस्यांनें कहे अग्निसरी सोवांको रूपहोय अरजींमें वायपित्तज्वरका लक्षणमिलै अर छर्दि मूर्छा अतिसार तिस भ्रम येभी जींमें होय अर सरीरका हाड टूटै अंगामें पीडाहोय अंधेरीआवे अरुचिहोयसारोसरीर अंगारा सिरीसो वलै जींजींस्थानमें होय तींतींस्थाननें कालोकरि नाषै अर नीलो अथवा लालकरि नाषै जैसैं लायकादाज्यांको मर्मस्था नमें फैलिजाय वेकोअंग घणोपीडाकूं प्राप्तिहोय वैंकी संज्ञा जा तीरहे नींद आवेनहीं सासहोय आवे हिचकी होयजाय सरीरमें चैन पडैनहीं मनदेहसर्वविगडिजाय सरीरकोग्यानजातो रहे यो विसर्परोग निपट असाध्यजाणिजे ५

अथ वातकफ विसर्परोगको लक्षण लिष्यते वायकफ आपका कुपथ्यका करिवासूं कोपकूं प्राप्तिहोय शरीरमें छोटीवडि फुणस्यां नें पैदाकरै वानैंफैलायदे वाफुणस्यांनें ग्रंथाख्यानामकहिजे वो गांठिसिरीसो होयछे. योपवनहैसो कफकरिके रुक्योथकोकफनें घ णोप्रकारभेदे पाछे त्वचानसांनसांमें प्राप्त हुवो जो लोहीतीनें औ दूषितकरै वडाछोटागोल भारयापरधरा इसा गूमडाकी मालानें पै दाकरै तीमें वणी पीड अर लाललाल ज्वरनें लियां अरश्वासश्वा स अतिसार मुषसोस हिचकी वमन भ्रम मोह सरीरकोरंग औ रसो अरमूर्छा अंगफुटणी मंदाग्नि येभी जींमें होय तन्दि जाणिजे

न. टी. अक तीनहीप्रकारका दोषांकालक्षण एकही रोगमें मीलैतो त्रिदोषको लक्षण जाणना. तांनें सन्निपात त्रिदोषकोरोगकहेछे. तो बुद्धिमानपुरुषहोय सो पांदोषांका रूपनें मथना मगमकारणनें ध्यानमें लेकर बरोबर समझणो योग्यछे.

चायकफको विसर्परोगछे. ६ अथ कफपित्तका विसर्परोगको लक्षणलिष्यते कफपित्त आपका कुपथ्यका कारणासूं कोपकूं प्राप्ति हुवोयको सरीरमें छोटीवडी फुणस्यांनें पैदाकरिवानें फैलायदे वाफुणस्यांनें वैद्य कर्दम महाभयंकर विसर्परोग कहैछे. तीमें येलक्षण होय ज्वरहोय सरीर जकडबंदहोयजाय नींदआवे नहीं तंद्रा होय सरीरमें पीडा होय अंगांमें फुटणी होय प्रलापहोय भ्रमहोय भूषजाती रहै हाडहाडटूटे तिसहोय सरीर भारयो होय आंवजाय इंद्रियांपकि जाय अंग अंगमें पीडाहो फुणस्यांसारासरीरमें घणी फैले घणी लाल चीकणि कालिमेंली सांजानेलीयां भारी मोडी पके गंभीरजीको पाक जीमेंवलत घणीराधिजीमेंघणी कांपे सरीरकी नसां नीसरी रहे अरजीमें मुरदाकोसी दुरगंधिआवे येजीमें लक्षण होय तीनें कर्दमनाम विसर्परोग कहिजे. ७ अथ शस्त्रादिकका वावसूं उपज्योजो विसर्प तींकोलक्षण लिष्यते शस्त्रादिककी चोटलागिवासूं कोपकूं प्राप्तिहुवो जोवाय सोलोहीसमेत पित्तकूं दुष्टकरे कुलत्यसिरीसो सरीरमें फुणस्यांनें पैदा करे जोविसर्पछे पाछे वाफुणस्यांका फोडाहोजाय अर वामें सोजोहोय अर ज्वर होय ये भी होयजाय लोहीकालो होयजाय ८ अथ विसर्परोगको उपद्रव लिष्यते ज्वरहोय अतिसारहोय वमन होय तिसहोय मांसको विपारिवो बुध्दि ठिकाणे नहीं रहे अरुचिअन्नपचैनहीं येईका उपद्रवछे. अथ विसर्परोगको साध्यअसाध्य लक्षण लिष्यते वाय पित्त कफकी जुदीजो विसर्प अरप्याभिसूं उपज्यो जो विसर्प अर मर्म स्थानमें उपज्यो जो विसर्परोगसो असाध्यजाणि

न. टी. कोई घने पान पान विपरीत होयछे जैसे जवकलोननार भोजनकरणो. अथवा अति भोजनकरणो अथवा अति भूषो रहणो. अथवा विपरीत भोजनकरणो ऐसेही स्याम्यद्वारनामजीमें ग्रहग्रानहीहोय अतिपातअतिरूप्य. अतिविरणो विपरीतअनरहार ..... होयछे.

जै. १ अथ विसर्परोगका जतन लिष्यते जुलाब वमन औषद्या का लेप रुधिरकढावो येसाराही जतन विसर्परोगनैं आछ्या. १ अथ वायका विसर्परोगको जतन लिष्यते. रास्ना कमलगट्टा देव दारु रक्तचंदन महुवो परैटी यांनैंबराबरीले यांनैं दूधसूं घृतसूंमिही वांटि लेपकरैतो वायको विसर्परोग जाय १ अथपित्तका विसर्परोग को जतनलिष्यते. किसोरथासिंघाडा कमलगट्ठा जलको सिवाल रक्तचंदन यांनैं वांटि धोयाघृत सीतल जलसूं लगावै तो विसर्परोग जाय. २ अथ कफका विसर्परोगको जतनलिष्यते त्रिफला कमल गट्ठा पस लजालू कनीरकीजड नरसलकी जड जवासो यांनैं जलसूं मिहीवांटि लेपकरैतो कफको विसर्प जाय. ३

अथ दशांगलेपः तगर सिरसकीजड महलौठी रक्तचंदन इला यची छड तीन्यूंहलद नेत्रवालोयांनै मिहीवांटि जलसूं यांमैंगऊको घृत नाषि लेपकरैतो सर्व प्रकारको विसर्पजाय ४ अथवा चिरायतो अरडुसो कुटकी पटोल त्रिफला रक्तचंदन नींबकीछालियांनैं बराबरि लैयांनै जौकुटकरि. टंक २ कोकाढोदेतो विसर्परोगनैं दाहनैं ज्वरनैं सोजानैं पुजालिनै फोडानैं वमननैं इतनारोगांनैं योकाढोदूरिकरैछै ५ अथवा कणगच सतोन्याकीबकल कलहारीकीजड थोहरकोदूध आककोदूध चित्रक जलभांगरो हलद सींगीमोहरो येबराबरी टका टकाभरि अर गोमूत सेर २ लेपाणीसेर २ तेलतिलांकोसेर १ पाछैयांनैं एकठांकरै पाछैयांकैनीचै मधुरी आंचदे सर्वरसवलिजाय तेलमात्र आयरहैतदिईको मर्दन. करैतो विसर्पनैं फोडानैं व्योंचानैं योतेलदूरिकरैछै. ६ येसर्वजतन भावप्रकासमैंछै. अथवा वडकी जटा नागरमोथोकेलीकोबीचलोगर्भ यांनैं धोयावृतसूं लेपकरैतो

* विसर्परोगमविद्धछै. घणोदुष्टछै. त्रिदोषयुक्त मसाध्यछै. जींवास्ते त्रिफलादि लेप लिष्योछै सो श्रेष्ठछै. त्रिफलाको प्रमाणतो हरडै बेहेडा आंवला समभाग लेणा. अरकोईक वैद्य संप्रदायमैं दोय.एकहरडै बेहेडा च्यार आंवला योभीप्रमाणछै.

विसर्परोगानें गाठिनें यो लेपदूरिकरैछे. ७ अथवा सिरसकी वकलनें १०० सोवार धोयाघृतकैसाथि मिहीवांटि लेपकरैतो विसर्परोगसर्व प्रकारकोरोगजाय ८ अर कोढ फोडासीतलायोसर्वरोग जोककालागिवासूं निश्चैजात ९ ये सर्वजतन वैद्यरहस्यमैंछे. इतिविसर्परोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ स्नायुरोग स्नायुकहै जे वालोतीरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते पोटा जलका पीवासूंदुष्टअन्नका पावासूं कोपकूं प्राप्तिहुवो जोवायसो हाथ पगांकेविषै फफोलानें अथवा सोजानें करैछे. पाछे वाफफोलांनें ओवायहैसो फोडिकरिफफोलांकीजगांऊठे पित्तहैसो नसांनेंसुकायतांतिसिरीसा डोरानें ओकुपितहुवोथको जोवाय तीनें करैछे. सोतांतिसिरीसो डोरोहैसो छाछि सातूका पिंडबांधिवासूं सनैसनै वारैनीकलीपडै अर ओटूटि जायतो कोपकूं प्राप्तिहोय अर ओ वारैनीकलीआवै तौओजातोरहै अर ओ ओर सरीरमें जातो रहै. अथवा हाथमें अथवा पगांमें कांहींकारणसूं टूटिजाध तौटूटोमनुष्यनें पोडोकरिदे येजींमें लक्षणहोय तींनें वालाकोरोगकहिजे १अथ वालाका जतन लिष्यते हींग टंक ५ तीनें सीतल जलसूं दिन ३ पायतो वालाको रोग कदे होयनहीं १ गऊकोघृत ऽ। रोजीनादिन ३ पीवैतो वालाको रोगजाय २ अथ निरगुंडीको रस दिन ३ पईसा ४ भररोजीना।दिन ३ पीवैतो वालाकोरोग जाय ३ अथवा कलौंजीकी जडसीतल जलसूंदिन ७ पीवैतो वालाको रोगजाय ४ अथवा अरंडकी जडकोरस गऊका घृतसूंदिन ७ पीवैतो वालाको रोगजाय ५ अथवा अतीस नागरमोथो भाडंगी सूंठि पीपलि बहेडाकीछालि येबरावरिले यानें मिहींवांटि टंक २ रोजीना दिन ७ गरम पाणीसूं दे

भा. टी. विसर्परोगमें रक्त निकासादि फोडा फूनणी धाम पाक. ममूरिका इत्यादिकमें पथ्य लि० पुरानाचावल, मांगमूंग, मसूर, करेला, कडवातो भोजनकरणो, परवल, दाख, अनार, धूम, मद्दे, दुष्टमल इ० कुपथ्य लि० वायुनेरची, भय, कोप, तेज, सीतो पाणी इत्यादिक.

तौवालो जाय ६ अथवा सहजणाकी जड अर पान यांनैं कांजीका पाणीसूंवांटि सींधोलूण मिलाय पाछै वेमैं वालाउपरि वांधैतौ वालोजाय ७ अथवा कांटावालिजलि तींकीजड तीनैं जलसूं वां टिवाला ऊपरि दिन ७ वांधैतौ निश्चैवालो जाय ८ ये सर्व जतन भातप्रकाशमैं लिष्याछै. अथवा कूठ सूंठि सहजणाकीजड यांनैंपा णीसूं मिहीवांटि वालाऊपरि लेपकरैतौ अथवायांऔषधांनैं पीवैतौ वालोजाय ९ अडवा धत्तूराकापानांकौ तेल लगाय वालाऊपरिवां धैतौ वालोजाय १० अथवा बंबूलकाबीज त्यांनै कांजीसूं सिजाय वालाऊपरिवांधैतौ वालोजाय ११ अथवा वालाका मंत्रसूं वालो जाय सोमंत्रलिषूंछूं ॐविरूपनाथवामनकै पूतसूतकाटिकिये वहुत पाकै फूटै पीडाकरैतौ विरूपनाथकीआज्ञाफूरै ईमंत्रसूं वालाऊपरि गुडनैवार ७ मंत्रि वालावालानै पुवाजैतौ वालोजाय १२ येजतनवैं द्यरहस्यमै लिष्याछै अथवा कबतरकीवींटकी सहतसूं गोलीबाधि दिन ७ निगलाय देतौवालो कदैंभीनीसरैनहीं १३ योवैद्यरहस्यमै लिष्योछै. अथवा सहतमैं साजीवांटि ईको लेप करैतौ वालोजाय १३ इति वालारोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम्.

अथ विस्फोटकरोगकी उत्पत्तिलक्षणजतनलिष्यते कडवीवस्त कापावासूं पटाईका पावासूं तीषीवस्तका पावासूं गरमवस्तका पा वासूं लूणीवस्तकापावासूं पारीवस्तकापावासूं अजीर्णकारहवासूं भोजनऊपरि भोजनकरिवासूं तावडामेरहवासूं सीत उष्ण वर्षाऋ तु येजोतीनो घणां अथवा नहीं अथवा यांका विपरितपणातैं को पकूं प्राप्तिहुवो जोवायपित्त कफ येदोपसौं शरीरकी त्वचामैं प्राप्त होय सरीरका लोहीनैं अर मांसनैं अर हाडनैं दूपित करैछै. सरी

न. टी. स्नायुरोगईनैं नारूवाळोनहरवाकहैछै. ईकोनिदानसर्वप्रकारसाग्रंथकर्तानावर्णनकी कीरीतयांकहीछै. अरुउपचारभी बहुधाकहाछै. परंतुऔरकोकपैं तंत्रमंत्रादिकभीवहुत मनुष्य करैछै. इसीवीनवविद्धवातछै, एकनारू, दोनारू, परंतुजोविधिपूर्वक औषधीकरणा.

रमें भयंकर फोडानें पैदा करेंछे. पहलीज्वरने उपजायकारे सोईन विस्फोट रोगकहिजे. १ अथ विस्फोट रोगको लक्षण लि० ज्वर तोयांफोडामें मानूं आगिसिरिसीदीनीछै: इसा फोडाहोय वेफोडा रक्तपित्तसूं उपज्याछे. सरीरमें सर्वत्रहोय अथवा कहींहोय तीनें विस्फोटक कहिजे १ अथ वायका विस्फोटकको लक्षणलिप्यते. मथवाय होय फोडामें पीडहोय ज्वरहोयतीसहोय हाड फुटणोहोय फोडांको व्रणहोय येलक्षण होयजीनें वायको विस्फोटक जाणि जें १ अथ पित्तका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते ज्वरहोयदाहहोय फोडांमें पीडाहोय फूटैवेगो पकैवेगो श्रवैवेगो तिसहोय फोडाको पीलो लालवर्णहोय येलक्षण होयतो पित्तको विस्फोटक कहिजे. २ अथ कफका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते छर्दिहोय अरुचिहोयमो डोपकें तीनें कफको विस्फोटक जाणिजे. ३ अथ वातपित्तका वि स्फोटकको लक्षण लि० घणीपीडहोय अर वायपित्तका लक्षणमि ल्ताहोय तीनें वायपित्तको विस्फोटक जाणिजे. ४ अथ वायकफ का विस्फोटकको लक्षण लि० सरीर भारीहोयपुजालिचालेतो क फको जानिये. ५ अथ पित्तकफका विस्फोटककोलक्षणलिष्यते पा जिआवे वेमें दाहहोय ज्वरहोय छादणीहोयतोकफपित्तकोजाणिजे ६ अथ सन्निपातका विस्फोटकको लक्षणलिष्यते फोडाकेवीचिपा डोहोय अर ऊंचोभीहोय अर फोडो गाढोहोय थोडो पकैफोडामें दाहहोय ललाई घणीहोय तिसहोय मोहहोय छर्दिहोय मूर्छाहोय फोडामें पीडहोय ज्वरहोय प्रलापहोय शरीरकांपैयेलक्षणहोयतीनें सन्निपातको विस्फोटक कहिजे. याअसाध्यछे. ७ अथ लोहीका

न. टी. नारूकी भौरपी नहणाऊ परंतु पहलीपानीविरुद्धै. सोंठि० नीम गुरवेलकी [illegible] नकौकायपानीपुंतिवनो. पछैनागरवेलकापानप्याछेना. पानवानवेरि मीरचीयकक ओ पछेदेवाउके ऊपर पानऊपरपानबंधाकरसोडीवारपणी. दिन ३ पछे फोडो अच्छ होयजाय.

विस्फोटकको लक्षणलि० जींमै पित्तका फोडांका सर्वलक्षण होय फोडाको चिरमीसिरीसो वर्णहोय जींमें लोहीनीसरे जींमें दाहहोय योजतनसूंभी आछ्यौनहींहोय ८ अथ विस्फोटकका उपद्रवलि० तिसहोय स्वासहोय मांसको संकोचहोय वेमैं दाहहोय हिचकी चलै ज्वरहोय फोडाफैलिजाय मर्मस्थानमैं ईंकाउपद्रवछै ९ अथ विस्फोटकको साध्यअसाध्यलक्षण लि० एक दोषकोसाध्य दोय दोषको कष्टसाध्य त्रिदोषको अर वणोजींमै उपद्रवसो असाध्यछै१

अथ विस्फोटकरोगको जतनलिख्यते. विस्फोटक वालानैं लंघन अर वमन अर जुलाव अरपथ्य भोजन अर पुराणी साली चावल जव गोहूं मूंग मसूर अरहड ये आछाछै. अथवा दसमूलको काढो रास्ना दारुहलद पस कव्याली गिलवे धणो नागरमोथो यांको काढोदेतो वायको विस्फोटकजाय १ अथवा दाप कुंभेर छवारा पटोल नींवकीछालि अरडूसो कुटकी चावलांकीपोलि जवासो यांको काढोदेतो पित्तको विस्फोटकजाय २ अथवा चिरायतो वच अरडूसो त्रिफला इंद्रजव कुडाकीछालि पटोल यांको काढो सहतमिलाय देतोकफको विस्फोटकजाय३अथवा चिरायतो कुटकी नींवकीछालि महलौठी नागरमोथो पटोल पित्तपापडो पसं त्रिफला कुडाकीछालि यांको काढोदेतो सर्वप्रकारको विस्फोटक जाय ४ अथवा चावल कुडाकीछालि यानैं जलसूं मिहिवांटि फोडाऊपरि लेप करैतो विस्फोटकजाय ५ अथवा गिलवे पटोल चिरायतो अरडूसो नींवकीछालि पित्तपापडो पैरसार यांको काढोदेतो विस्फोटक रोगको ज्वरजाय ६ अथवा चंदन नागकेसरि गौरीसर चौलाईकी

* पनूराकोरस नागरंवलकोरस, चमेलीकोरस, गुपेददोमकोरस, पैणविल, पारो, गंधक कजलीमें मैणविलरीतकरजींमे सिरसेलतेल पाळकर पाउकरे. पाछे प्यारसमर्जीमे पाकर रळपहर २ दोयकरे कानका ठामवें नपापीणीका ठावपें पाछेपाछे छपकरेतो भगाप्यां पंजाय. विस्फोटकजाय. सत्य ओषधीछे. हमारीपतवार्नीछे.

जड सिरसकी वकल चवेलीकापान यांनेंजलसूं मिहिवांटि लेपकरै तो विस्फोटक जाय ७ अथवा कमलगट्टा रक्तचंदन लोद घस गो रीसर यांनें जलसूं वांटि लेपकरैतो विस्फोटक जाय ८ अथवा जी यापोताकी मींजी जलसूंवांटि लेपकरैतो विस्फोटकनें पांकोलाइनें गलाकीगांठिनें कानकीगांठिनें ओर फोडाफुणसीमात्रनें यो लेपदू रिकरैछे. ९ येसर्वजतन भावप्रकारसमें लिष्याछे दशांगलेप कीशोर गूगल येभीईनें आछ्याछे. इति विस्फोटक रोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् अथ फिरंगरोगकीउत्पत्ति लक्षणजतनलि० योफि रंगरोग उपदंश वायको भेदछे. सोघणीगरमवाली स्त्रियांका संग करिवासूं अथवा वेंकोसंगकहीं ओर कर्योहोय सोओ ऊठमूतें उ ठेयोभीमूतें अथवा वेंको कहींतरें भोजनादिकको संगकरैतो वाय का कोपका कारणांसूं कोपसूं प्राप्तिहोय ईरोगनें प्रगटकरै अथवा योघीण पुरुषहोय अर मैथून वारंवारकरै तदियो निपट क्षीणपडै तदि ईकें वेंवेज रहैनहीं. अर ईकै वायकी नानाप्रकारकी सरीरमें पीडाहोय तदि ईका वायपित्तकफ येसाराही कोपकूं प्राप्तिहोय ई आगंतुकनाम फिरंगवायनें येदोष प्राप्तिकरै सो फिरंगवाय तीन प्रकारकोछे सरीरके मांहीं नसांमें धसिजाय १ सरीरकी त्वचाकै ऊपररहै २ अर माहिवारेभी रहै ३ अथ सरीरकी त्वचाकै वारै होय तींको लक्षणलि० लिंगंद्रीकै ऊपरै फुणसी अर फाटिचाउगेरै चिन्हहोय अर ऊठयोडी पीडाहोय सोतो सुषसाध्यहीछे. योजतन कर्यांमिटिजाय १ अथ सरीरकी संध्यांमें अर नसांमें धसिगयो होय तींको लक्षणलि०शरीरमें कीडीकाछ्याहोय इसाचाठापाडेजा

भ. टी. विस्फोटकरोगको पूर्वरूप[illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

य मोरांमैं जांघांमैं पीड्यांमैं यांमैं घणीपीडाहोय अर ऊठे सोजो होय योकष्टसाध्यछै. २ अथ सरीरके मांहिवारै होय तींको लक्षण लि० येसर्व लक्षणकह्याछै सोहोय अर घणांदिनांतांई रहै सोघणो कष्टसाध्यछै. ३ अथ फिरंगवायका उपद्रवलिष्यते सरीरक्षीण पडिजाय बलजातो रहै नाकगलिजाय अग्निमंदहोय मांसरुधिर जातोरहै अर हाडमात्र आयरहै येईकाउपद्रवछै ये आछ्यानहीं १

अथ फिरंगवायका जतनलिष्यते रसकपूरकासाध्यासेती फिरंगवाय निश्चैजाय सोरसकपूरकासाधिवाकी अर षावाकीविधीलिष्यते रसकपूर रती ४ लेतीनैं गोंहुंकाचूननैं पाणीसूं ओसण तींके वीचिरसकपूर मेलि वेंकीगोली करै पाछै लवंगांनैं मिहीवांटि अर गहूंका चूनकी गोलीरसकपूर समेत वेनै लवंगांका चूर्णमैं लपेटै पाछै वेगोलीनैं निगलीजाय दांत लगावैनहीं सीतलजलसूं निगलै ईऊपरी नागरवेलीको पानचावै काथाचूनावीना ईऊपरि लूण पायनहीं पटाईपायनहीं. पेदकरैनहीं तावडैनहीं ईसीतरे दिन २ करैतौ फिरंगवायजाय ६ अथ संप्रसारणगुटिकालि० पारोटंक १ पैरसार टंक १ अकलकरो टंक २ सहत टंक ३ यांसारांनैं परलमैं मिहीवांटि यांको येकजीवकरै पाछैयांकी ७ सात गोलीकरै गोली रोजीना प्रभात सीतलजसूं लेतौ फिरंग वाय जाय ईउपरि लूणपटाइ पायनहीं २ अथवा पारो टंक २ आंवलासार गंधक टंक २ चावल टंक २ यांतीन्यांनैं परलमैं मिहीवांटि कजलीकरै पाछैयांकी पुडी सातकरै पाछै पुडी १ येकेककीरोजीना इंद्रीकै धूणीदेतो फिरंगवायजाय ३ अथवा पीलाफूलकी परैटीकापानाकोरस टंक १

न. टी. जीमेंनिलक्षणपीडाहोय अरुयहनकरणी नहींआवे इमीकारणासूं रोगममजणो योग्यछे, अपथ्यलि० हलकोअन्न,लंघन, जुलाब, हलदी पुराणासाठकाचावल. नवांकरि गागूलाभनरमपथ्य. गोहूं मूंग मसूर अहद इ० अपथ्य लि० रुखरी पदार्थ, वीर्य गरम बहुत लून कसायली अतिभोजन इ०

ले अर पारो टंक १ ले यांदोन्यांनें दोन्यूंहाथामेमसलिपारानें अर वेरसनें हाथांमेंचूरावदे पारोदीसे जठातांई पाछे याहाथांनेंक्यो त पायलेपसेव आवे जठातांई ईसीतरे दिन ७ करैतो फिरंगवायजा य अर लूण पटाई पायनहीं ४ अथवा निंबकापान टंक ८ हरडे कीछालि टंक ८ आंवला टंक ७ हलद टंक १ पारो यांसारांनें मिहींवांटि मासा ४ ईनें सीतल जलसूं रोजीना दिन ७ लेतो फि रंगवाय माहिलो अर बारलो जाय ५ अथवा चोपचीनीकोचूरण मासा ४ सहतसूं दिन १५ चाटैतो फिरंगवाय जाय ईउपरि लूण पटाईपायनहीं अर पावतो सींधोलूण पाय ६ अथवा पारो टंक १ तीनेंकटसेलाकारससेती परलकरे पाछे ईमें गुगल टंक ५ नांपे अ कलकरो टंक ५ गऊको घृत टंक ५ ये मिहींवांटि ईमें नांपे पाछे सहत टंक ५ त्रिफला टंक ५ ईको साथि ईचूरणनें टंक १ रोजीना दिन २१ पायतो अथवा ईको मर्दनकरेतो फिरंगवाय जाय ईउप रि लूण पटाई पायनहीं ७ ये सर्व जतन भावप्रकासमें लिप्याछे अथवा जुलाबसूं अथवा लोहीका कढावासूं फिरंगवायजाय ८ अ थवा पारो हिंगूल. नीलोथुथो हिराकसीस सोध्यो आंवलासार गंधक येसर्व बराबरिले त्यांनें परलमें मिहींवांटि एकजीवकारे ईको भुरकोदे अथवा ईकोलेपकरेतो फिरंगवाय जाय ९ इतिसूतकाद्यो लेपः अथवा सौवारको धोयोघृत तीकोलेप करेतो फिरंगवायजा य १० अथवा कडवो तेल टका २ मोम टंक ५ कांपलो वेरजो ये दोन्यूं अधेला भरिले सिंदूर टंक २ ले सोरो टंक २ ले मुरदासिंगो टंक २ यांसारांनें मिहींवांटि पीतलकापात्रमें मथूरो आंनसूं

[illegible]

यानें पकाय पाछे अपका हाथांसूं मथि डाबीमें घाल राषे पाछे ईकी कागली देतौ फिरंगका गूमडानैं उपदंसनैं घावनैं यामल्हिम अछयाकरैछे. ११

इति मलहरमल्हिम अथवा सिंदूर अधपावऽ॥ गऊको घृतसेर १ यादोन्यांनै मथि सरीरके लेपरकैतौ पाछैकोदूंका परालनैं सरी रके लपेटे इसितरै दिन ३ करै ईंऊपरि षीरषायतौ व्रणमात्र वि स्फोटक फिरंगकागुमडा येसर्व सूकिजाक १३ अथवा पारोअरसी सो येबराबरिले पाछैयांदोन्याकीपरलमैंकजलीकरै अरगोहांकातु स अमलीकाचीयां नींबकापान घरकोधूमसो येसाराबराबरीले अरयांनैं नींबूकारससूं षरलकरै पाछे टंक २ भरकीगोलीबांधे पाछे सरीरने वस्त्रसूंढांकि करि इसीतरैदिन ७गोली १ कीधूणीलेतौ सर्वप्रकारको विस्फोटक जाय ईउपरिषीरषाय दिन २१ तथा १४ अथवा त्रिफला पैरसार जाय पत्री येबराबरीले यांनै पाणीमें औटा य मूंढानैधोवौ पाछैधूणीलेतौ फिरंगवायजाय१५ अथवाकालोजीरो कूट येदोन्यु तीन तीनटांकले अरपुराणो गुड यांसूं तिगुणोले यांनैं कूटियाकीगोली १५ करै पाछे गोली १ प्रभातगोली १ संध्यापाय तौ फिरंगवाय जाय ईंऊपर गौहांकीरोटी घृतसूं चोपडिषाय १६ इतिफिरंगगजकेसरीरसः अथवा हींगलू मासा ६ सुहागो मासा १० अकलकरो मासा १० मोममासा १० पाछैयांनैं मिहीवांटि ईकीगोलीरती १ प्रमाणकी करै पाछैवोईका कोइलामें गोली १ ये ककीदिन ७धूणीदेतौ फिरंगवायजाय १७ अथवा सहजणाकीवक ल वडकी वकल झांऊरूपकी वकल नींबकी वकल जलभांगरो

फिरंगवायरोगछे. जींके अनेकउपायकह्याछे. परंतुमिलावाकी औषधीनिदानमेंपकने छे अथवायेय आपकी षातरीमुजब वोभ्यामिलावाको उपचारकरेतौ योरोगजाय परंतु द मातात्रिष्यागूं कोईबी मिलावासाचीनहीं. कारणवहरीजीनसछे. वास्तेवैद्यका हाथसे देवी तो सुषीहोसी.

कठचाली कचनारकी वकल यांको काढोलेतौ फिरंगवाय जाय दिन ७ में १८ अथवाहींगलूमासा ४ मेणसलि मासा ४ यांनैमिहीवां टि बोरकी लकडीकी अगनीमें मासा २ किचूर्णादे निवांतस्थानमें कपडोउढाय तौ फिरंगवायजाय १९ इति हींगुलादिधूमगुदाकेद अथरसकपूर मूंढे आयोहोयतीको जतन लिप्यते. पीपलीकी वकल गुलरीकी वकलले छक्षजो छोटो वडतीकी वकलले वडकी वकलवे तकी वकल यांको काढोकरितीका कुरलाकरैतो मूंढाको सोजो दूरि होय २० अथवा जीरो टंक ५ पैरसार टंक २ यांनें जलसूंवांटि छालांके लगावैतो मुपपाक दूरिहोय २१ इति फिरंगरोगकी उत्पत्ति लक्षणाजतन संपूर्णम्. अथ मसूरिकानामसीतला तीको उत्पत्तिलक्ष ण जतनलि० कडवी वस्तकापावासूं लूणपारी वस्तका पावासूं विरुद्ध वस्तकापावासूं भोजनउपरिभोजन करिवासूं घणासाकादिक कापावासूं दुष्टपवनकासेवासूं दुष्टग्रहका आवासूं देशमें सीतला का उपद्रवांसूं यांकारणांसूं ईसरीरमें लोहीनें यो दोप दुष्टकरे म सूरकें आकृति फुणस्यांनें पैदाकरैछे. सोमसूरिका नामरोग १४ प्रकारकोछे. वायको १ पित्तको २ लोहीको ३ कफको ४ सन्नि पातको ५ चर्मज ६ रोमांतिक ७ अरसातूं धातगतरसगत ८ र क्तगत ९ मांसगत १० मेदगत ११ अस्थिगत १२ मज्जागत १३ शुक्रगत १४ अथवायकी मसूरिकाको लक्षणलि० नैके फुणस्यांको लीहोय लालहोय लूपीहोय ज्यांमें पीडाघणीहोय करडी होय मो डीपके येलक्षणहोय तद्विजाणिजे वायकीमसूरिकाछे १ अथ पि त्तकी मसूरिकाकोलक्षण लिप्यते जांकिफुणस्यांलालहोय पीलीहोय

न. टी. फिरंगरोग पुरुषनकी भोग[illegible]. यांकि पुरु[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अनुलोमनि[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न. आदि[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कालीहोय दाहनैलीयां होय जीमैं घणीपीडाहोय अर वेगीपके ये. लक्षणहोय तदि पित्तकी मसूरिकाजाणीजे. २ अथ लोहीकी मसूरिकाको लक्षणलिष्यते जीमैं अतिसारहोय अर जीमै घणोज्वरहोय अर पित्तका लक्षण होय येजीमैं लक्षण होय तीनै लोहीकीमसूरिका कहिजे.३अथ कफकी मसूरिकाको लक्षण लिष्यते जीमैं फुणस्या सुपेदहोय अर चीकणीहोय अरवडीहोय अरजीमैं षाजिआवै अर मंदपीडाहोय अर मोडीपके येलक्षण जीमैं होयतीनैं कफकी मसूरिकाकहिजे. अथ सन्निपातकी मसूरिकाको लक्षणलि० जीमैं फुणस्यांनीलीहोय अर मोडीपके अर घणीहोय अर चिपटी होय अर फैलिजाय अर विचमैं षाडानैं लीयांहोय अर जीमैं पीड घणीहोय अर जीमैंराधि पडतीहोय येजीमैं लक्षण होय तीनैं सन्निपातकी मसूरिका कहिजै. ५ अथ रसमैं प्राप्तिहुई जोमसूरीका तींको लक्षण लिष्यते त्वचामैं प्राप्ति हुईजो मसूरिका जीकी पाणीका वुदवुदा सिरीसीहोय अर यांमैं स्वल्प दोपहोय अर वेफुटै जदिवामैं पाणीनीसरै. ६ अथ लोहीमैं प्रातिहुई जो मसूरीका तींकालक्षण लिष्यते फुणस्यांको लाल आकारहोय अर येततूकाल पकै अर त्वचामाही होजाय अर येही अतिदुष्ट हुई साध्य नहीछै अर येही फूटीथकी लोहीनैं वहावैछे ७ अथ मांसमैं प्राप्तिहुईजो मसूरिका तींकोलक्षणलि० वेफुणस्यां कठोरहोय अर चीकणीहोय अर मोडीपकै अर त्वचामांहि होय अर गात्रमैं सूलचालै अर पुजालिहोय अरमूर्छा अर दाह तिसहोय ८ अथ मेदमें प्रातहुइजो मसूरिका तींकोलक्षण लि० वेफुणस्यां मंडलके आकार होय अर

न. टी. मसुरिकारोगछे. सोमसूरके आकार औरमसूरके रंगहोय. उलाईने ओयाछोटी फुणसी होयछे सो रीतमुजवछे. ईमैंदोषांका विपर्ययपणानुं रंगविरंगहोय अरु कारण सवै विपरीतहोय सोअसाध्यतामैं प्राप्तिहोनेकीरीतछे जोनें निर्गपांचापकर ईस्योपतन करे भगु ओषधी विचारकरकरे तोमुखसाध्यहोय.

कोमल होय क्यूंकऊंचीहोय अर वेमें भयंकर ज्वर होय अर वफुण स्यांवडी अरचीकणीहोय अर सूलनेंलीयां होय अर जीमेंसास अर अप्रतीतिहोय अरजीमें तापहोय ईमें कोईकसोजीवे ९ अथ हाडमें मींजीमें प्राप्तहुइजो मसूरिका तींकोलक्षण लि० वेफुणस्या छोटीहोय अर गात्रकी समान होय अर लूषीहोय अर चीपटी होय क्यूंक ऊंचीहोय. अर वेमें मोहघणोहोय अरपीड अप्रीतिये घणाहोय. १० अथ शुक्रमे प्राप्तिहुइजो मसूरिका तींको लक्षण लिष्यते वेफुणस्यां पकीसांठेठहांसूं दीसे अरचीकणी अर जीमेंघ णीघणीपीडा अरजीमें अप्रीतिहोय अरदाह अर उन्मादयेभीजी मेंहोय ऐसालक्षण होयसो जीवेनही ११ अथ चर्ममें उपजीजो मसूरीका तींको लक्षणलि०वेफुणस्यां चर्ममें उपजीथकी कंठनें रो किदेछे अर अरुचिनें करेछे. अरतंद्रानें करेछे. अर प्रलापनें करेछे. अप्रीतिनें करेछे या वणाजतनकीयासूं आछीहोयछे १२ अथ रो मांतिकानाम रोमरोममें प्राप्तिहुईजो मसूरिका तींको लक्षणलि ष्यते प्रथम ज्वरहोय रोमरोममें फुणस्यांहोय आवे क्यूंकऊंची या कफपित्तसूं होयछे. ईमें पास अरुचिहोय ईनेंरोमांतिका कहिजे १४ अथ मसूरिकाको असाध्यलक्षणलिष्यते त्वचामें रक्तमें मसू रिकाहोय अर पित्तसूं उपजीहोय अथवा कफसूं उपजीहोय अथवा कफपित्तसूं उपजीहोय सोतो साध्यजाणींजे यातो विनाजतनही आछीहोय १ अथ मसूरिकाको असाध्य लक्षणलिष्यते या सनि पातसूं उपजीहोय अर मूंगांसिरीसांजींको वर्णहोय अथवा जामु णसिरीसोजींको वर्णहोय अथवा लोहासिरीसो जींको वर्णहोय

भ. टी. मसूरिका [illegible] [illegible] मोर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अथवा अलसीकाफुलसिरीसो जींकोवर्णहोय ईंका अनेक वर्णछै यामसूरीका असाध्यछै. अर ईंमैं येलक्षण होयसोभी असाध्यजाणिजै.२ अथ मसूरिकाको जतनलिष्यते मसूरिकाकोआरंभकैविषै सुपेदचंदननैंभिजोय ईंकोघासोलेदिन ७तौमसूरिका थोडीनीकलै अथवा मव्हाकोरस पीवैतौ मसूरिका थोडीनीसरै. १ अथ वायकी मसूरिकाको लक्षणलिष्यते दशमूल रास्ना आंवला पस धमासो गिलवै धणौं नागरमोथो यांको काढोदेतो वायकी मसूरिका आच्छीहोय. २ अथवा मजीठ वडकाअंकूर सिरसकीवकल गुलरिकीवकल यांको घृत घालि लेपकरैतौ वायकी मसूरिका आछीहोय ३ अथवा गिलवै महुवो दाष मूर्वा दाडमकीवकल यांकोकाढोगुडनाषिदे तौ वायकी मसूरिका आछीहोय ४ अथवा मसूरिकामैंसाली काचावल मूंग मसूर मिश्रीये पाय लूण पायनहीं थोडोसींधोलूण पाय ५ अथ पित्तकीमसूरिकाको जतनलिष्यते. पटोलकी जडको काढोले अथवा मव्हाकोरसपीवैतौ पित्तकी मसूरिका आछीहोय ६ अथवा नीवकीछालि पित्तपापडो पाठ पटोल दोन्यूंचंदन पस कुटकी आंवला अरडूसो जवासो यांको काढोमिश्रीनाषि लेतौ पित्तकीमसूरिका आछीहोय ७अथ लोहीकी मसूरिकाको जतनलिष्यते ईंमैंलोहीकढाजैतौ लोहीकीमसूरिका आछीहोय ८ अथ कफकीमसूरिकाको जतन लिष्यते अरडूसो चिरायतो त्रिफला जवासो पटोल नींबकीछालि यांकोकाडो सहतनाषि देतौ कफकी मसूरिका आछीहोय. ९ अथ सर्वमसूरिका मात्रको जतनलिष्यतेपाठ पटोल कुटकी दोन्यूंचंदन पस आंवला अरडूसो जवासो यांको

* मसूरीका नामछै सो सीतलाको भाषांतर्भेदछै सीतलाको रोग माताका उदरको कारणछै. यहरोग कठिणछै. घणाबालक मरिजायछै. घणा काणा. तथा आंधा होजायछै. ईरोगकी अधिष्ठाता देवी सीतलाछै, परंतुघणा अंग्रेजीविद्वान् लोगवो ईको यत्न घणा श्रेष्ठकरैछै. जीसूं बालक दुप पावै नहीं. तिनकूं काटेछै:—

काढोमिश्रीनापि देतो सर्वमसूरिकामात्र आछीहोय. १० अथ म सूरिकामें कंठमें व्रणहोय गयाहोय तींकोजतनलिष्यते आंवला म हुवो यांको काढोकरि तीसें सहतनापि तींका कुरलाकरेतो कंठका व्रण आछ्याहोयँ. ११ अथ मसूरिकामें आंष्यां चिपांगईहोय तीं कोजतनलिष्यते महुवाकापाणीमें अरंडको सेककरेतो आंपि पूले. १२ अथ मसूरिकामें नेत्रांमें व्रणहुवाहोय तींकोजतनलिष्यते महु वो त्रिफला मूर्वा दारुहलद कमलगट्टा षस लोद मजीठ यांकोलेप करेतो नेत्रांकाव्रण आछ्याहोय फेरउठे व्रणहोयनहीं. १३ अथवा वडकीवकल गुलरिकीवकल पीपलिकीवकल यांको नेत्रांके ऊपरि लेपकरेतो नेत्रआछ्याहोय. १४ अथवा आरणाछाणाकीरापलगा वेजांसूं मसूरिका आछीहोय. १५ येसर्व जतन भावप्रकासमें लि ष्याछे. अथ मसूरिकाको भेद सीतला तींको स्वरूद लिष्यतेप्रथम ज्वरहोय विपम विपम कांई कदे थोडी होय कदे घणीहोयकदेसी तलागे कदे गरम होय तींकोभेलिमनहीं पाछे मसूरिकाआकारफु णस्यांनीसरे वेवडीहोजाय ज्वरके तीनदीन ३ पाछे नीसरीवोकरे दिन ७ साततांईतो ईपाछेढलेतीनें सीतलाकहिजे. यासीतलासात ७ प्रकारकीछे. अथ सीतलाकाजतन लि० आरणाछाणाकीराष नीचेविछाइजे सीतलापकीहोयतो १ अथवा नींमकीडालीसेंतींमा पीउढाइजें २ ईकाज्वरके विषं सीतलजलपाइजें ३ सीतलानें मनो हरसीतलजलमेंस्थापिजे पवित्रहोय. सीतलाकोपुजनकीजें ईसीत लामें घणी औषदीकोजतन कीजेनहीं ४ अथवा सीतल जलसूं हलदनें पावेछे तींके सीतलाकोफोडा निपटऊमहोय अथवा के लीकाजलसूं सुपेद चंदननें अथवा अरडूसाका रससेंती महुवानें

[illegible]

अथवा सहतसेंतीं महुवानै जो पुरुष बालकनैं सीतला प्र
थमपावैतो वेंकै सीतलाको विचार कोई होयनहीं. ६ अथ सीत
लावालाकीरक्षालि० जींघरमैं सीतलावालोरहै तींघरकै वारणै
नींबकापान बांधिजै. अथवाचंदन अरडूसो नागरमोथो गिलवे
दाष यांको काढोदीजै तौ सीतलाकी ज्वरजाय ७ अथवा जप होम
दान ब्राह्मणभोजन शिवपार्वतीजीको पूजन श्रद्धासूं कराजै ८
अथ सीतलाकै आगै सीतलास्तोत्र पढाजै सो स्तोत्र लि० स्कंद
उवाच भगवन्देवदेवेशसीतलायास्तवंशुभम् वक्तुमर्हःस्यशेषेणवि
स्फोटकभयापहम् १ ईश्वरउवाच ॥ वंदेहंसीतलांदेवीं सर्वरोगभया
पहाम् यामासाद्यनिवर्ततेविस्फोटकभयंमहत् २सीतले सीतलेचेति
योब्रुयाद्दाहपीडितः विस्फोटकभयंघोरं क्षिप्रंतस्यविनश्यति ३ य
स्त्वामुदकमध्येतुधृत्वासंपूज्यतेनरः विस्फोटकभयंघोरंकुलेतस्यन
जायते४सीतलेतनुजान्रोगान् नृणांहरसुदुस्तरान् विस्फोटकविशी
र्णानांत्वमेकामृतवर्षिणी ५ गलगंडग्रहारोगायेचान्येदारुणान्नृणाम्
त्वदनुध्यानमात्रेणसीतलेयांतिसंक्षयम् ६ नमंत्रंनौषधंकिंचित् पाप
रोगस्यविद्यते त्वमेकासीतलेत्रासिनान्यांपश्यामिदेवताम् ७ मृ
णालतंतुसदृशीनाभिरुन्मध्यसंस्थिताम् यस्त्वांविचिंतयेद्देवितस्यमृ
त्युर्नजायते ८ श्रोतव्यंपठितव्यंवैनरैर्भक्तिसमन्वितैः उपसर्गविना
शायपरंस्वत्ययनंमहत्९ सीतलाष्टकमेतच्चनदेयंयस्यकस्यचित्कि
न्तुतस्मैप्रदातव्यंभक्तिश्रद्धान्वितायच १० इति श्रीस्कंदपुराणेसीत
लाष्टकसंपुर्णम् अथ सीतलाकाओरभेदलिष्यतेवायकफसूं उपजीइ
सीतकोद्रवाकहिजै कोद्रकीसीआकृतिहोय वायकफभीहोयवैमें अंग
अंगकेविषै गरमी होयछै सरीरसारोदरदरायो जाय यासातदिनमें

न. टी. कारण ईमसुरिकामें जो माताका रोगको भेदलिष्योछे. यो माताको निदान लिष्योछे. जो पुजवष्यानमे राषणो चाहिजे. अर ईरोगवाळाके ओकीक प्रसिद्ध उपचारछे यो करणा. अर ऊपरका साधन करणा.

अथवा बारादिनमें ओषदि विनाहीआछीहोय इनेलोकीकमें बोद रीकहेछे. ईमें गरमीवर्णाहोय सरीरमें भोरिकहेछे. अरसरीरमें सर स्यूं आकारपीली फुणस्यां होय येसर्व बालकांकें होयछे येसर्व सी तलाका भेदछे इति मसूरिकानामसीतला बोदरिभोरियांकीउत्पत्ति लक्षणजतन संपूर्णम्. इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजरा जेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे सीतपि त्त उदर्द कोढउत्कोढ आम्लपित्त विसर्प स्नायुकनामवालो विस्फो टक फिरंगवाय मसूरिकानामसीतला बोदरी भोरि यां सर्वरोगांका भेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षणजतननिरूपणंनामसप्तदशस्तरंगः समाप्तः

१८ अथक्षुद्ररोगांकीउत्पत्ति लक्षणजतनलिप्यते अथ अजग छिकानाम फुणसी तींको लक्षण लिप्यते वाफुणसी चीकणीहोय सरीरकावर्ण सिरीसीहोय जीमें पीडनहीहोय अर मूंगप्रमाण होय याकफवायसूं उपजेछे. १ अथयवप्रख्याफुणसीको लक्षण लि ष्यते यवके आकारहोय करडीहोय गठीलीहोय मांसमें रहतीहोय याकफवायसीं उपजेछे. २ अथ अंत्रालजी फुणसीको लक्षणलि० वाफुणसी भारीहोय सूधीहोय ऊंचीहोय मंडलनें लीयां होय राधि जीमेंथोडीहोय याकफवायसीं उपजेछे. ३ अथ विवृतानाम फुणसी को लक्षणलि० फाटामूंढाकी जीमें घणो दाहहोय पक्यागूलरिका फल सिरीसीहोय मंडलनें लीयां होय अथकच्छपिका फुणसी कालक्षणलि० पांच तथा छहगांठिहोय वेभयंकरहोय काछबासिर सी ऊंचीहोय याकफवायसूं उपजेछे. अथवल्मीक फुणसीको लक्ष णलि० कांधामें होय कांपमें होय हाथमें होय पगांमें होय गलामें होय यांस्थानांमें बांबीके आकारजोगांठिहोय. कुपथ्यका करिवासं

२. [illegible] भी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

लाकै पाछैवागाठिवधे तींकाअनेकमुपहोय वामुपमैंराधिनीसरै अ रवामैं पिडाहोय अर वाऊंची होय अर वाविसर्परोगकीसी नाई फै लीजाय ईंको जतनछै नहीं ६

अथ इंद्रवृद्धनाम फुणसीको लक्षणलि॰ कमलकै विचैवेकर्णि कामैं कमलगट्टारहैछै. तींकैआकारफुणस्यांहोय चोफेरवोवायपित्त सूं ऊठिछै. तींनैं इंद्रवृद्धानाम फुणसिकहिजे ७ अथगर्दभिकाफु णसींको लक्षणलि॰ मंडलकै आकार गोलहोय अर ऊंचीहोय अर लालहोय अर वेमैं पीडाहोय यावायपित्तसूं उपजीछै ईंनैंगर्दभिका फुणसी कहिजे ८ अथ पाषाणगर्दभ फुणसी तींको लक्षण लि॰ या दाढिकीसंधिमैं होय सोजानैलियांवास्थिरहोय ईंमैं पिडमंदहोय याचीकणीहोय ईंनै पाषाणगर्दभफुणसी कहिजै ९ अथ पुनसी काफुणसी तींको लक्षणलि॰ कानकै विचैहोय वामैंपीड घणीहोय अर वास्थिरहोय यावायकफसूं उपजीछै ईंनैं पुनसिकाकहिजै १० अथ जालगर्दभफुणसी तींको लक्षण लिष्यते जोसोजो पहलीथोडो होय अर ओविसर्पकीसीनाई फैलिजाय अरओ पकैनही. अर ओ दाहज्वरनैं करैछे. योपित्तसूंउपजैछै. तीनै जालगर्दभ फुणसी कहिजे ११ अथ इरवेलिकाफुणसी तींको लक्षण लिष्यते जोमस्तगमैं गो लफुणसीहोय अर जीमैं पीडघणीहोय ज्वरनैंलीयां यासन्निपातसूंहो यछै. ईंनैइरवेल्लिकाकहिजे १२ अथकांपोलाईको जतन लक्षणलि॰ भुजाका एकदेशमैं अथवा पसवाडाका एकदेशमे अथवा कांधाका एकदेशमैं कालोफोडोहोय पीडानैंलीया वायपित्तका कोपसूं होयछै

व्रणपुरुनामवालो जीनैं नारू कहेछै जीनैं डाक्टर लोक जलकी उत्पत्ति कहेछै आगे एक अंग्रेज गोडामूंधा पाणीमैं पधकर कोई तलावमे सिकारकरवानैं पस्यो जीके गोडांदे पचा- स नारू दोन्यूं पगांमे नीधन्या. वास्ते कोईक भकद जडगंदो भाडांकी छायामैं होयछै. जिषमैं स्नान करेतो नारू होय. रांमका नागमैं बारीक जंतुरा प्रवेश होयछै.

ईने कापोलाई कहेछे. अर केई पाछणांका दोपसूं कापमें फोडाहो
य तीनें कापोलाइकहिजे १३ अथ अग्निरोहिणी फुणसी तींको ल
क्षणलिप्यते कांपका एकदेशमें मासनेवीदीर्ण कारवावालाफोडा
भयंकर होय अर वाफोडामें दाह ज्वरभी होय अर मानुंवाफोडामें
अंगार भरिदीयांछे ईने अग्निरोहिणीकहिजे यासन्निपातसूं उपजी
छे १४ अथ चिप्पनामफुणसी तींको लक्षणलि० वायपित्तहेसो न
पकामांसमें रहकरिकें दाहनें अर पाकनें करेछे. तदि ईचिप्पनाम
फुणसीनें पेदाकरेछे १५ अथ कुनपरोगनपजीका जातारह्याहोय
तींको लक्षण लिप्यते वायपित्तकफये थोडाकोपकों प्राप्तहोयतदि पु
रपके कुनपरोगनें करेछे १६ अथ अनुशयीफुणसीको लक्षणलि
प्यते वाफुणसी गंभिरहोय जींको आरंभ अल्पहोय सरीरकावर्ण
सिरीसीहोय पगमें ऊपरिहोय मिहीजींको कोपहोय येजीमें लक्षण
होय तीनें अनुशयीफुणसी कहिजे १७ अथ विदारिकाफुणसी
कोलक्षणलि० वाफुणसी विदारिका कंदसिरीसी गोलहोय कांपकी
संधिमें अथवा जांघकीसंधिमेंहोय अर सन्निपातसूं उपजीहोय
तीनें विदारिकाफुणसी कहिजे १८ अथ शर्करानाम फुणसी तींको
लक्षण लिप्यते कफ मेद वाययेहेसो मांसमेंनसामें प्राप्तहोय गांठिनें
सहतसिरीसी अथवा घृतसिरीसी अथवा वसासिरीसीनें पेदाकरे
छे. सोवागांठि वधीथकी मेलालोहीनें चलावेछे. अर सरीरका
मांसनें सुकायदेछे तीनें शर्कराफुणसी कहिजे १९ अथ शर्करार्बु
दफुणसीतींको लक्षणलिप्यते वाद्गुष्टगांठि होयतीमें चेपघणोना
सरे नानावर्णको अर मासीनसो लोहीनें घणोस्रवबोहोकरे तीनें
शर्करार्बुदकहिजे २० अथ व्याडके लक्षणलिप्यते जींकापगघणा

[illegible]

लूषाहोय अर फिरवोकरै तींकी पगथलीमैं वायहैसो व्याउनै करैछे. २१ अथ कदर फुणसीको लक्षण लि० पगमैं अथवाहाथमैं कांकरीचूभीहोय अथवा कांटोचूभ्योहोयतींकरिकै बोरकीसीगांठि होयजाय ऊंची तीनैं कदर कहिजे. २२ अथ षारवाकोलक्षणालि० दुष्टकादाका स्पर्शकरियांथकां पगकी आंगुलीकै नीचै षाजिआवै अर ऊठे दाहहोय आवै अर पीडाहोय तीनैं षारवोकहिजे. २३ अथ इंद्रलुप्तनाम लौकीकमैं उंदरीलागीकहै तींकोलक्षणलि० रोम रोममें रहतोजो पित्तकोवायकरिकै सहित बध्योथको वालानैं दूरिकरैछे, पाछै लोहीसहित कफ हैसो कैंसांनैं उपजावासूं रोकिदे ईनें इंद्रलुप्त अथवा चांयलोकहिजे. २४ अथ अरुंपिकायोभी इहींको भेदछै तींकोलक्षणलिप्यते कैंसांकी भूमिमैं षाजिघणीचालै अर वा भूमिलूषी पडिजाय कफ वायका कोपकरिकै ईनैं दारुणक कहिजै. कफ अर लोही मस्तगमैं कोपकूं प्राप्तिहोयतदि मनुष्यांकै अरुंपिकानैं प्रगटकरै. २५ अथ जोवनअवस्थामैं सुपेदवालहोय तींकोलक्षण लि० क्रोधसैंती अथवा सोचसेती सरीरकी गरमीहैसो सिरमैं जाय तदि पित्तहैसो कैंशांनैं सुपेद करिदे. २६ अथ ल्हसणकालक्षणालि० कालो अर चीकणोहोय अर वेमैं पीडनहींहोय ओकफ लोहीसूं उपजैछे. अर या सरीरकी साथिही उपजैछे. ईनैं ल्हसणकहिजे. २७ अथ मस्साकोलक्षण लि० वेंकै पीडनहींहोय कालोहोय सरीरसूं उडदसिरीसो ऊंचोहोय योवायुसूं होयछे. ईनैं मस्साकहिजे. २८ अथ तिलको लक्षणालिप्यते. कालोहोय तिलकै उनमानहोय पीडजामैं नहींहोय देह बराबरिहोय ये वायपित्तकफका आधिक्यसूं होयछे. अर घणां होयछे. यांनैं तिल कहिजे. २९

भ. टी. कुनषनाम रोग लिष्याछै यो योरोग हातांका अर पगांका नषांमांहि होयछे. यो नैनषजातावीरहैछे. अर जो कदाचित् रहै तो ऊपरसों ऊंचा षडांडू जीसा होय जाय. वेन षनीचे बैठ जाय. षाडासा पडजाय. पीडाहुवाकरहै.

अथन्यच्छको लक्षणलिप्यते वडोहोयछे अथवा छोटोहोय कालो होय अथवा सुपेदहोय गोलहोय पीडनहींहोय जीनेन्यच्छकहिजे. ३० अथ लिंगवर्तिकाको लक्षणलिप्यते लिंगेंद्रीकामसलिवाथकी अथवा येनें पीड्याथकी अथवा ऊठेचोटलागिवाथकी लिंगेंद्रीकेवि पे वायहेसो विचरतोथको लिंगेंद्रीकी चामडीनें उथल अर सुपारी केनीचे एकगांठिनें करिदे ऊंचीपाडानें लीयां वा वायसूं उपजेछे ईनें लिंगवर्तिकानाम रोग कहिजे. ३१ अथ अवपाटिका रोगको लक्षणलिप्यते स्त्रीकीजोनीको मूंडोनिपट सांकडोहोय तीस्त्रीकनेंपु रुपहेसो हर्षथको संगकरिवानेंजाय अथवा आपका सरीरका म लसूं तदि वेपुरुषकी लिंगेंद्रीकी चामडीउतरिजायतीने अवपाटि कानामरोगकहिजे. ३२ अथ निरुद्धप्रकाशरोगको लक्षणलिप्यते लिंगेंद्रीमें वाय आयवसे तदिसुपारीकी चामडीमें रहकर सुपारी नें चामडीसूं ढकि अर मूतका मारगनेंरोकदे अर ऊठहीं वायसूं मि लि पीडनेंकरे तदि ईनें निरुद्धप्रकाश नामरोग कहिजे. ३३ अथ मणीनामरोगको लक्षणलिप्यते निरुद्धप्रकाशरोगनें हुवांपाछे मूत कीधार विनापडि मिहीचाले अर वेकाश्रोतको मूंडो चोडोहोय जाय तीनें मणीनामरोग कहिजे. ३४ अथ संनिरुद्ध गुदरोगको लक्षणलिप्यते. मलकीवायाका वेगनेंरोके जोपुरुष तीके वायहे सो गुदाका वडामार्गनें छोटामार्गकरिदे तदि छोटामार्गका प्रभावसूं वैके मैलरूपी विष्टाहेसो वडाकष्टसूं उतरे ईनें संनिरुद्धगुदरोगक हिजे. यो भयंकरछे. ३५

अथ वृषणकच्छरोगकोलक्षणलि० जोपुरुष स्नाननहीं करतो होय तीकाफोताके पुजाळ आवे जीमें पसेव आवे पुजाळरूपी

चाले तदिऊठे षुजालिवासूं फोडाहोय आवै पाछे वाफोडांमें राध वहै तदि ऊंठै कफ अरलोहीका कोपसूं उपज्योहृपणकच्छुरोगक हिजे. ३६ अथ गुदभ्रंशरोगकोलक्षणलि० मोडानीवाही अर अ तिसारयादोन्यांहिसूं पुरष षीण पडिजाय अर वेंको सरीर लूपोप डिजाय अर ओ दुर्बल होजाय तदिवे पुरुपकी गुदावारै नीसरी आवै तदिईनै कांचिकहिजै३७अथसूकरदंष्ट्रकरोगको लक्षण लि० जींकीत्वचापकिजाय अर उठेपीड घणीहोय अर ऊठेदाह लागि जाय अर लाल जागांहोय अर ऊठेषुजालि घणीचालै अर ज्वर होय आवै ईनैं शूकरदंष्ट्रकरोगकहिजे ३८. अथ क्षुद्ररोगकाजतन लि० अजगल्लिकानै आदिलेर जोफुणस्यांछे त्यांको जोकांकारि लो हीकाढि नापणो १ अथवा पक्याजोव्रण त्यांकाजोजतन पाछे लि ष्याछे सोकरिछे त्यांकरियेरोग आछ्याहोय २ अथवा फिटकडी सौंफकोपार यांनैं सीतलजलसूं मिहिवांटि यांको लेपकरैतो अज गल्लिकानैं आदिलेर जो सारीफुणस्यां आछीहोय ३ अथवा मैण सिल देवदारु कूठ यांनैं पाणीसूं मिहिवांटि यांको ईकैं लेपकरै पाछे येपकिजाय तदियांके शस्त्रसूंचीरादे यांकीराधिकाढि पाछे वेंमल्हम कह्याछै त्यांकरि ये निश्चै आछीहोय ४ अथवा सहिजणो देवदारु यांनैं जलसूंवांटि पाछे लेपकरैतो विदारिका फुणसीआछीहोय ५ अथ ईरवेल्लिकाफुणसीको जतनलिष्यते पित्तका विसर्पको जतनछे सो ईको जतनछे ६ अथ पिनसीका फुणसीको जतनलिष्यते प्र थम नींवका पान बांधे ईनें पकावे पाछे मैणसिल कूठ हलद तिल यांनैं मिहिवांटि यांको लेपकरै यांने पकावै पाछे चीरादे ईकी राधि

* उहसनामरोगछे. शरीरऊपर काळो चाटो होयछे. अर गृगडारंगकोबी होयछे. लोकप्रसिद्धछे. जीनैं लोकीकर्मे शुभस्थान अंगपर होय जो शुभ कहेछे. अशुभमें अशुभ कहेछे. अरु ऐसेही निडनें अरुमरसानें शुभाशुभकरेछे. परंतु धर्मं ऊपरकारोगमात्रछे वात, पित्त, कफादिकसुं होयछे. ओर तो भ्रममात्रछे.

काढे पाछे मल्हिम लगावेतो पिनसीका आछीहोय ७ अथ पाषा णगर्दभफुणसीको जतन लिख्यते प्रथम जोंकासूं लोही कढावणो अथवा उन्हालेपकरे ईनें पकावे पाछे व्रणाका जतनसूं ईंकाजतन करे. ८ अथ वल्मीकफुणसीको जतनलिख्यते ईनें पकाय ईंके चीं रोदीजें पाछे लूंण चित्रक यांको लेपकरे पाछे ईंकी राधिकाढिनाखे पाछे अर्बुदरोगका जतन करिईनें भरिले ९ अथवा जोंकनें आ दिलेर ईंको लोहीकढाजे १० अथवा कुलत्थकीजड गिलवे लूण किरमालाकीजड दांत्यूणी निसोत यांनें पाणीसूं मिहिवांटि पाछे ग रमकरि ईमेंक्यूं घृतमिलाय ईंको लेपकरेतो पापकिजाय पाछे चीं रोदे ईंको मुरदार मांस काढिनाखे पाछे व्रणका आछ्याहोवाकी म ल्हिमसूं या आछीहोय ११ अथवा मेणसिल इलायची अगर रक्तचंदन कूठ चंपकीपान भिलावा छोछानींबकापान यामें तेल पकावे पाछे ईतेलनें ईंके लगावेतो वल्मीक फुणसी सोजासंयुक्त आछीहोय १२ इतिमनशिलातैलम्. अथ कांपोलाई अर अग्निरो हिणी या दोन्यांका जतनलिख्यते प्रथम जलोकासूं याकोरुधिर क ढाजे अथवा पित्तका विसर्पको जतन सो ईंकोजतन १३ अथवा देवदारु मेणसिल कूठ यांनें बराबरिले यांनें जलसूं मिहिवांटि क्यूं गरमकरि ईंको लेपकरे अथवा ईंको क्युं सेक सुहावतो गरम का पोलाईके पिंडीबांधेतो कांपोलाई आछीहोय १४ अथ अवपाटि काको जतनलिख्यते चीकणीवस्तसूं सनेसनें सुहावतो सेककरेतो अवपाटिका आछीहोय. १५

अथ निरुद्धप्रकाशकोजतनलि० चूकाकारसमें तेलनें पकाय वे तेलको सेककरे अथवा शूकरकाघृतको सेककरेतो निरुद्धप्रकाश

[illegible]

क आछयोहोय. १६ अथ सन्निरुद्धगुदको जतन लिष्यते सुहावतो गरम तेलको सेककरै अथवा वायनैं दूरिकरिवावाला तेल त्यांको सेककरैतो सन्निरुद्ध गुदरोगजाय. १७ अथ वृषणकच्छुरोगकोजतन लि० राल कूठ सींधोलूण सिरस्यूं यानैं जलसूं मिहीवांटि ईको उवटणो करैतो वृषणकछुरोगआछयोहोय. १८ अथ गुदभ्रंशकांचरोग को जतन लिष्यते. गऊका घृतनैं आदिलेर चीकणा द्रव्यछे त्यांसूं सुहावतो सेककरैतो गुदभ्रंश जाय. १९ अथवा कमलनीला कोमलपान त्यांनैं सुकायतीमैं मिश्री मिलाय टंक २ रोजीना पायतो कांचनीकलतीरहै २० अथवा उंदरांका मांसको घृततींको कांचके लेपकरैतो कांच नीकलती रहै. २१ अथवा डांसया चित्रक लूणस्योंचलकीगिरी पाठ जवपार येवरावरिले तींकोमिहीचूर्ण करि टंक २ गऊकीछालिसूं रोजीना लेतो गुदभ्रंशनाम कांचकोरोग जाय २२ अथवा मूसाको मांस अर दसमूलयांमैं पाणी घालि यांको क्वाथक रैपाछे ईक्वाथमैं तेलपकायले पाछे ईतेलकोमर्दन करैतो गुदभ्रंश कांचकोरोगजाय. गुदसूलजाय अर भगंदर येरोग जाय. २३ इति मूषक तैलम्. अथवा छकछूंदरीकोतेल मूषक तेलकीसाना ई करिले तींकालेपसूं गुदभ्रंशकोरोग जाय २४ अथ वासमालूणीकोरस बोर की जडको रस दहीं छालि इंमे सूंठि अर जवषार घृतनापि ईमैं पकावै पाछे ईघृतनै टंक ५ रोजीना पायतो गुदभ्रंशको रोगजाय २५ इतिचांगेरीघृतम् अथ शूकरदंष्ट्ररोगका जतन लि० जलभांगराकीजड हल्द यानैं मिहीवांटि जलसूं जठे जठे सूर काट्योहोय तठे ईको लेप करैतो शूकरकी दाढको विष आछ्यो होय. २५ अथ अलपनामपारवो तींको जतन लिष्यते पटोल मैणसिल नींबू गो

न. टी. रोगमूलका भावांतर्भेदछे. त्यांनैं विचारपूर्वक बुद्धिवों उपचार करणो अर जो ग्रंथमैं कह्याछे जोऔषध सो शरिका बलाबल देषकर करणा योग्यछे. कारण मूलका रोगमात्र मर्मस्थान लिष्या जावछे.

रोचन कालिमिरचि तिल कल्यालिकोरस कांजी यामें कडवो तेल पकावे पाछैपारवाको ईंको मर्दन करेतो पारवा आछ्याहोय २७ अथवा कणगचकाबीज हल्द हीराकसी महुवो गोरोचन हरताल ये बराबरिले यांनें सहतसूं मिहींवांटि ईंको लेपकरेतो पारवा आछ्याहोय २८ अथ ब्याउको जतन लिष्यते गरमगरम तेल सुहावतो ईंकोसेककरेतो ब्याउआछीहोय २९ अथवा मोम जवपार घृतमें मिलाय गरम गरम ब्याउमें भरेतो ब्याउ आछीहोय ३० अथवा राल सींधोलूण सहत घृत यांसारांनें कडवातेलमें मथ पाछे यांनें ब्याउमें भरेतो ब्याउ आछीहोय ३१ अथवा सहत मोम गेरु घृत गुड गूगल राल यांनें मिहींवांटिमिलाय यांको येकजीव करि ब्याउमें भरेतो ब्याउ आछीहोय ३२ अथवा धतुरकाबीज जवपार यांनें कडवातेलमें पकाय ईंतेलको मर्दन करेतो ब्याउ आछीहोय ३३ अथ कदरको जतन लिष्यते जीकापगमें कांटोकांकरी चुभीहोय तदिवेंके आंटण पडिजाय तदिवे आंटणानें तातातेलसूं सेंके अथवा आकको दूध गुडमिलाय बांधे तो कदरको रोगजाय. ३४ अथ तिलको जतन लिष्यते सरस्यूं साजीहल्द केसरी यांनें मिहींवांटिजलसूं उवटणोकरे पहली छूरीटगेरसूं यांनेरगड उवटणो करेतो सरीरकातिलजाय.

अथ मस्साका जतन लिष्यते साजीचूनो सावण जलमेंवांटि मस्साके लगावतो मस्सादूरिहोय. ३६ अथ जनमणी नाम लसणतींको जतन लिष्यते ल्हसणनें पाछणासूं रगड ईउपरि सरस्यूंहल्द कूठ साजी [illegible] उवटणो करेतो [illegible] जाय ३७ अथ [illegible]

म. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

ईरोगविषे जलौकानै आदिलेर त्यांसूं रुधिर कढावणो अथवा सु
पारीकीराष काथो कपेलो मुरदासींगी नीलोथुथो यांको भूरको क
रि लगावै तौचेप्योजाय ३८ अथवा लोहकापात्रमैं हरडैनैं हलद
का रससूं रगडै पाछै ईनेगरमकरि लगावैतौ चेप्यौजाय. ३९ अथ
कुनषरोगको जतन लिष्यते सारमासो १ सहतसूं रोजीना षाय
तौ अथवा कुटकीको सावनकरैतौ कुनषरोगजाय ४० अथ मस्सा
तिल लसण यांको दूसरो जतनलि० हिंगलू सेक्यो नीलो थुथो ये
दोन्यूं पईसा १ भरिले सिंदूर टंक १ रालटंक ७ यांसारांनैंछ ८
टका भरयागऊकाघृतमै कांसीकी थालीमैं लोहकादंडसूं अथवा
तांबाका घोटासूंदिन ३ रगडै तदि औ काजलसिरीसो होजाय त
दिईको लेपकरैतौ मस्सा ल्हसण सारवा फोडा पुजाली येसर्व
जाय ४१ अथवा कालीजीरी टंक २ नोसादर टंक ५ सींपकोचूर्ण
टंक ७ नीलोथूथो टंक २ यांसारांनैं मिही पीसि यांकै अरणीका
रसकी पुट ३ देपाछै जलभांगराकारसकी पुट ३ देपाछै तावडै सु
कावै पाछैवाछडीका मूतसूं ईकी गोलीबांधै पाछै वाछडाका मूतसूं
इहीगोलीनैं घसि अर मस्साकै ल्हसणकै लगावैतौ तिल मस्सा ल
सण येसाराजाय. ४२ अथ पुजालिको जतन लिप्यते लोहका पा
त्रमैं लोहका घोंटासूं आंवलासार गंधक पारो नीलोथूथो येतीन्यूं
येक येक भाग वधताले त्यांनैं गऊकाघृतमैं रगडै पाछै यांको लेप
करैतौ पुजालि दूरिहोय. ४३ अथ जोवनअवस्थामैं सुपेदबाल
होय तींको जतन लिप्यते लोहचूर टंक २ आंवकीगुठली टंक २
आंवला २ वडीदोयहरडैकोचूर वहेडो १ यांसारांनैं मिहीवांटि लो

ज्याउरोग भोगिद्धऊे पगांकी पर्डांमैं होयछै. शीतकालमैं पगफाटै जीकैं वास्ते राऊ
तोलो १ तेलतीलीको तोलो १ येऊ कुडछीमैं काढो गरम करै तेलमैं रालमिलाय गरमागरम-
कै मांदिजऊमिलाय. इलाज करै जद फरजांव होय मल्हम होयकै ज्याऊमैं भरैतो
आराम होय.

हुकापात्रमें भांगराकारसनूं दिन ७ निगोन [illegible] पाछे [illegible] केलेपकरैतो स्यामहोय ४४ अथवा [illegible] अथवा [illegible] जड सहजणाकाफूल कुंभेरकीजड लोहचूर जलभांगरो त्रिफला यांसारानें तेलमें पकाय पाछे लोहकापात्रमें घालि पाछे पृथ्वीमें महिनों १ गाडिराखे पाछे ईंतेलनें सुपेद वालांकें लगावैतो वाल काला होय ४५ अथवा त्रिफला नींबकापान लोहचूर जलभांगराको रस गाडरीकोमूत यानेंमिहीवांटि सुपेद वालांके लगावैतो वालश्याम होय ४६ अथवा पापड्योषार मासो १ सिंदूर मासो १ मुरदासिंगी मासो १ पावाको चूनो मासा ८ यानें सिलाऊपरि पाणीसूं घडी ३ निपटरगडै ईंको रंगकालो नपऊपरि आवै तदि सुपेदकेसांके लगावैतो केस कालाहोय ४७ अथवा माजूफल लेनवा मोटात्यानें भोभलीमें सेकोलैफाटे जठातांईयानें वल्यानें नहीं ईसीचतुराईसूं सेके पाछे माजूफलतो १ लेसींधरासोमासो १ लेनीलोथुथोरती ४ लेनौसादररती ३ लेल्वंगारती २ फिटकडीरती २ लोहचूरमासो १ यांसारानें आंवलाकारसकापाणीमें लोहकाकडछलामें लोहकाघोटासूंपहर १ रगडै पाछे येकोरंगनपऊपरआवै तदि सुपेदकेसनें आंवलाकापाणीसूं धोयकेसाऊपरि यांकोगाढो लेपकरै लेपऊपरि अरंडकापान बांधे पहर १ राखे पाछे आंवलाकापाणीसूं धोयनाखैतो केस काला होय ४८ अथवा पावाको चूनो अथवा अहरणकीराप अथवा कोल्याकीराप तीनें सीसासूंरगडै ईमें [illegible] गोपीचंदननाखे मुरदासिंगिमासो १ नाखे पाछे रगडै अर नपऊ कालोरंग आवै तदि ईंकोकेसांके लेपकरै ऊपर अरंडकापानबांधै तोकेस कालाहोय ४९ अथ केंद्रीलागोहोय तीको जतन लिख्यते

[illegible] मुरदासिंगी [illegible]
[illegible]
[illegible]

पटोलका पानाकारसमैं कुटकीनैं वांटि ईंको लेपकरैतौ वालगया होय जठैवालउगिआवै ५० अथवा हाथीदांतकीराप बकरीकादूध मैं मिलाय लगावै तौवालउगिआवै ५१ अथवा कमलकीजड दाप तेल घृत दूध यांसारांनैं वांटि लेपकरैतौ वालउगिआवै. ५२ अथवा चवेलीकापान कणगचकीजड कनीरकीजड चित्रक यांमैं तेल पकावै पाछैईतेलको मर्दन करैतौ वालउगिआवै ५३ अथ चांयकोजतन लि० चिरंजीनैं कडछलामैं वालिसजीवतीसी पाछै वेनैं वांटिलेपकरैतौ चांयकोरोगजाय ५४ येसर्व जतन भावप्रकासमैंछै. इतिक्षुद्ररोगांका लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथ सिरनाममस्तकरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते मस्तककारोगग्यारा ११ वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ क्षीणपणाको ६ कृमिको ७ सूर्यावर्त ८ अनंतवात ९ संकनामकनपटी दूपवाको १० अर्द्धावभेदका ११ येइग्यारा प्रकारका मस्तककारोगछै. सोमुष्यतौ दुष्ट भोजनसूं होयछै १ अथ वायका सिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींकामस्तकमैं विनाकारणही घणीपीडहोय अर रात्रिमैं निपटघणीहोय अर ओपदीका लेपकस्या सेककस्या आरामहोय तदि जाणिजे वायकी पीडाछै. १ अथ पित्तकासिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींकोमाथो अग्निसिरीसोवलै अर सिरकाटूकहुवाजाय अर जींका नेत्रमैं पीडाहोय घणीकूटवा सिरीसी अरसीतपणाकरि रात्रिमैं विशेप होय तदि जाणिजे पित्तकीपीडाछै. २ अथ कफकासिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींको मस्तगकफसूं लीप्यो थको होय अर भास्योहोय अर ठंडोहोय अर आंष्यांकै नासिकाकै मूंढाकै जींकै सोई होय अरजींको शिरवलै

न. टी. जींकै ऊररे तथा ऊसरणीकि ऊपरि तथा भागिपाकै ऊररे अथवा दगाहोकोई भविजिस्गाजल्पांकीबीनाईपीडा होयछै. जींकै गुगरछेट नामकी ओपधी गुपेद गुरेदानीसी होयछै अंग्रेजी ओपधीछै.

हुकापात्रमें भांगराकारससूं दिन २ भिजोय राखे पाछे सुपेद केंसा के लेपकरेतो स्यामहोय ४४ अथवा केतकीकीजड अथवा केवडाकी जड सहजणाकाफूल कुंभेरकीजड लोहचूर जलभांगरो त्रिफला यांसारानें तेलमें पकाय पाछे लोहकापात्रमें घालि पाछे पृथ्वीमें महिनो १ गाडिराखे पाछे ईतेलनें सुपेद वालांके लगावेतो बाल काला होय ४५ अथवा त्रिफला नींबकापान लोहचूर जलभांग राको रस गाडरीकोमूत यांनेंमिह्वीबांटि सुपेद वालांके लगावेतो वालश्याम होय ४६ अथवा पापड्योपार मासो १ सिंदूर मासो १ मुरदासिंगी मासो १ पावाको चूनो मासा ८ त्यांनें सिलाऊपरि पा णीसूं घडी ३ निपटरगडे ईंको रंगकालो नपऊपरि आवे तदिसुपे दकेंसांके लगावेतो केस कालाहोय ४७ अथवा माजूफल ले नवा मोटात्यांनें भोभलीमें सेकीलेवेंफाटे जठातांईवांनें बल्यादे नहीं ईसीचतुराईसूं सेंके पाछे माजूफलतो १ लेसींघरासीमासो १ ले नी लोथुथोरती ४ लेनौसादररती ३ लेलवंगारती २ फिटकडीरती २ लोहचूरमासो १ यांसारानें आंवलाकारसकापाणीमें लोहकाकड़छ लामें लोहकाघोटासूंपहर १ रगडे पाछे वेंकोरंगनपऊपरआवे तदि सुपेदकेसनें आंवलाकापाणीसूं धोवेकेंसाऊपरि यांकोजाडो लेपकरे लेपऊपरि अरंडकापान बांधे पहर १ राखे पाछे आवलाकापाणी सूं धोयनाखेतो केंस काला होय ४८ अथवा पावाको चूनो अथवा अहरणकीराप अथवा कांठ्याकीराप तीनें सीसासूंरगडे ईमें स्त्री गोपीचंदननाखे मुरदासिंगिमासो १ नाखे पाछे रगडे अर नपके कालोरंग आवे तदि ईकोकेंसांके लेपकरे ऊपर अरंडकापानबांधे तोकेंस कालाहोय ४९ अथ ऊंदरीलागीहोय तीको जतन लिख्यते

न. टी. सर्व मुखनासिकरोगों और जो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पटोलका पानाकारसमैं कुटकीनैं वांटि ईको लेपकरैतो वालगया होय जठैवालउगिआवै ५० अथवा हाथीदांतकीराप वकरीकादूध मैं मिलाय लगावै तौवालउगिआवै ५१ अथवा कमलकीजड दाप तेल घृत दूध यांसारांनैं वांटि लेपकरैतौ वालउगिआवै. ५२ अथवा चवेलीकापान कणगचकीजड कनीरकीजड चित्रक यांमैं तेल पकावै पाछैईतेलको मर्दन करैतौ वालउगिआवै ५३ अथ चांयकोजतन लि० चिरंजीनैं कडछलामैं वालिसजीवतीसी पाछै वेनैं वांटिलेपकरैतौ चांयकोरोगजाय ५४ येसर्व जतन भावप्रकासमेंछै. इतिक्षुद्ररोगांका लक्षण जतन संपूर्णम्.

अथ सिरनाममस्तकरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते मस्तककारोगग्यारा ११ वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ क्षीणपणाको ६ कृमिको ७ सूर्यावर्त ८ अनंतवात ९ संकनामकनपटी दूषवाको १० अर्द्धावभेदका ११ येइग्यारा प्रकारका मस्तककारोगछै. सोमुष्यतौ दुष्ट भोजनसूं होयछै १ अथ वायका सिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींकामस्तकमैं विनाकारणही घणीपीडहोय अर रात्रिमैं निपटघणीहोय अर ओपदीका लेपकस्या सेककस्या आरामहोय तदि जाणिजे वायकी पीडाछै. १ अथ पित्तकासिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींकोमाथो अग्निसिरीसोवलै अर सिरकाटूकहुवाजाय अर जींका नेत्रमैं पीडाहोय घणीकूटवा सिरीसी अरसीतपणाकरि रात्रिमैं विशेप होय तदि जाणिजे पित्तकीपीडाछै. २ अथ कफकासिरोरोगको लक्षणलिष्यते जींको मस्तगकफसूं लीप्यो थको होय अर भास्योहोय अर ठंडाहोय अर आंप्यांके नासिकाके मूंढाके जींके सोई होय अरजींको शिरवलै

न. टी. जींके ऊरो तथा ऊख्यांकि ऊपरि तथा आगियाके ऊरे नगवा इमाहीकोई नमिनिस्यागल्यांकीसीनाईपीडा होयछै. जींके गुगरडेट नामकी औपधी गुरर गुरेदावीली होयछै अंग्रेजी औषधीछै.

ये लक्षण होय तदि जाणिजै कफकी पीडाछै ३ अथ सन्निपातका सिरोरोगको लक्षण लिख्यंते पाछैये कह्यासोसारालक्षण जींके होय तदि जाणिजै सन्निपातकी पीडाछै ४ अथ लोहीका सिरोरोगको लक्षणलि० जींमे पित्तका लक्षणसारामिलै अर हाथको स्पर्श मस्तककैसहैनही तदि जाणिजै रक्तकी पीडाछै ५ अथ षीणपणासूं उपज्योजो सिरोरोग तींकोलक्षण लि० सरीरकोवल जातोरहै तादि मस्तकरीतो पड जाय तदि सिरवल अर मस्तकमें घणीपीडा होय तदि जाणिजैं षीणपणाकीपीडाछै. ६ अथ क्रमिपणासूं उपज्यो जो सिरोरोग तींको लक्षण लिख्यते जींको शिर घणी पीडाकूं प्राप्ति होय अर घणो फुरकै अर जींकानाकमें करिलोही अर राधिवर्णीनीसरै अर वैंको सिरनिपटघणोत्रलै ये लक्षण जींमे होय तदि क्रमिकीपीडाजाणिजै ७ अथ सूर्यावर्तरोगको लक्षण लि० सूर्यकाउदय होवताही सिरकेविषै मंदमंदपीडाहोय अर ज्यूंज्यूंदिन चढै त्यूंत्यूं पीडा वधै दोयपहरांताई अर आंष्यांमें भवारामें पीडा घणीहोय अर दोय पहरांपीछै पीडाकम होतीजाय ईनै सूर्यावर्त कहिजै ८ अथ अनंतवात सिरोरोगको लक्षणलिख्यते वाय पित्त कफ येतीन्यूं दोष दुष्ट हुवाथकाकांधीकेविषै घणीपीडाकरै अर नेत्राकै विषै भवारांकैविषै कनपट्यांकै विषै नीपटघणीपीडाकरै दाढानंहलवा देनहीं अर कपोलकैविषै कांपणांकरै अर नेत्रविकार करै अर सिरकैविषै पीड घणीकरै ईनै अनंतवात कहिजै ९

अथ संषनाम कनपटीदूर्ष तींको लक्षण लि० पित्त अर लोही अर वाय ये दुष्ट हुवाथका कनपटीमें पीडघणीकरै अर कनपटीनें लालकरिदे अर सरीरमें दाहकरै सिरका दूतकरै गलानें रोकदे

न. टी. [illegible] पाणी [illegible] हुवापकर [illegible] मार्थाको [illegible] भारान रोगछे. दाहजनी होय. [illegible] पेन होय. [illegible]. [illegible] फाटै नर [illegible].

ईनैं संपनाम सिरोरोग कहिजै ईरोगवालो तीनदिनजीवै १० अथ अर्द्धावभेदकसिरोरोगको लक्षणलिष्यते लूषीवस्तका पावासूं भोजनऊपरि भोजनकरिवासूं पूर्वकापुन्यसूं घणा मैथुनकरिवासूं मलमूत्रकारोकिवासूं षेदका करिवासूं यांसूं वायपित्त हुवो कफनैं ग्रहण करे ओवाय कांधींनैं भवारांनैं अर कनपट्यानैं काननैं नेत्रानैं ललाटनैं यांसारांहीनैं आधाआधाहीनैं ऐसी पीडाकरैं मानूंशस्त्रकी वज्रकी लागीछै ईनैं अर्द्धावभेद कहिजै. अर यापीडानेत्रांमैं कानांमैं घणी वधीथकी मनुष्यांनैं मारिनाषै ११ अथ वायका सिरोरोगको जतनलिष्यते वायकातेल अथवा सादोयेहीतेल त्यांकोमर्दनकरै अर वायनैं दूरिकरिवावाली वस्तांनैं षायतौ वायकोसिरोरोगजाय १ अथवा खारकुठार रसकी नासलेतौ नानाप्रकारकी सिरकी पीडाजाय २ अथवा उडदांकाचूननैं जलमैं ओसणी वेकी रोटीकरै वेरोटीनै प्रहर १ सिरकै वांधैतौ सिरकीपीडा दूरिहोय ३ अथ सिरोबस्तिलि० सिरकै ऊपरि उडदांका चूनकी पाणीमैं ओसणि वाडकरै अंगुल १६ की अथवा अंगुल ८ कीतीनैं गरमतेलसूं पूर्णकरि ओतेल प्रहर १ अथवा घडी ४ माथाऊपरि निश्चलबैठि राषैतौ वायका सिरका रोगांनैं डाढांका कांधीका कानका माथाका यांसारांरोगांनैं योशिरोवस्तिदूरिकरैछै ईनैं दिनपांच सातसेवनकरैतौ ५ इतिशिरोवस्तिसंपूर्णम् अथ पित्तका शिरोरोगको लक्षणलिष्यते चंदन कमलगटायानैं सीतलजलसूं वांटि ये लेपकरैतौ पित्तकी मथवायजाय ६ अथवा १०० सोवारको धोयो घृत तींको लेपकरैतौ पित्तकी मथवाय जाय ७ अथवाखारकुठार

---

* किमिरोगमस्तकमैं होयछै. योमहादुष्टछै. अर जींका अनेक उपायछै. परंतु मुंडासार्वो नाम औषधी होयछै. लोकप्रसिद्धछै. जींके फलनहींछै. परंतु जींकीडालीमैं पेडमैं गांठि होयछै पीली गांठ्यांमैं फूलसुपेद फुंदाविरीधी गांठ होयछै. जींऔषधीनैं वाकूकर मस्तकमैं बांधे तो आराम होयछै.

रसकपूर केसरि मिश्री चंदन यांनें बकरीका दूधमूं वाटियांकोलेप करेतो पित्तको मथवाय जाय ८ अथवा सूंठि अर गुड यांदोन्यांनें पाणीमें वांटियांकी नासलेतो सर्वप्रकारकी मथवाय जाय ९ अथ लोहीकी मथवायको जतनलि० पित्तकी मथवायका अर ईका ज तन एकछे ईमें लोहीछुडावो विशेषछे. १० अथ कफकी मथवाय को जतनलि० ईमथवायमें लंघनकरावो जोग्यछे. अथवा कफ हारी औषध्यां त्यांनें वांटि त्यांका गरमलेपकरैतो यामथवायजाय ११ अथ सन्निपातकी मथवाय सन्निपातनें दूरिकरे त्यां औषध्यां को लेपकरै अथवा वां औषध्यांने पायतो या मथवाय जाय १२ अथ षट्बिंदुतेल लि० अरंडकीजड तगर सौंफ जीवंतसींधालूण रास्ना जलभांगरो वायविडंग महलौठी सूंठितिलांकोतेल यांऔष ध्यांसूं अठगूणोले तेलसूं चौगूणो जलभांगराको रसले तेलसूं चौ गुणोंही बकरीकोदूधले पाछे यां सारांनें एकठांकरि मधुरीआंचसूं कडाहीमें पकावे येसब बलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईतेलकी नाकमें बूंदछे ६ कीनासलेतो सिरकाविकार साराजाय अर दां तांकारोग नेत्रांकारोग साराजाय १३ इतिषट्बिंदुतेलम्. अथ पी णपणासूं हुवोजो मथवाय तींको जतन लिष्यते तीने पीणपणानेंदू रिकरे इसा जतनकर्‌यां यामथवायजाय १४ अथ क्रिमिसूं उपजी जो मथवाय तींकोजतनलि० सूंठि मिरचि पीपलि किरमालाकी जड सहजणाकाबीज येबराबरिले यांनें बकरीका मूतमेंमिहींवांटि यांकी नासलेतो माथाकी क्रिमिजाय १५

अथ सूर्यावर्त नाम आधासीसी तींको जतन लिष्यते दूध अर घृत यांनेंमिलाययांकी नासलेतो आधासीसीजाय १६ अथवा

न. टी. मस्तकरोगमें [illegible], आधासीसी अर [illegible] ग्रंथमें लिख्याछे यांमें कोइ कोइ तो साध्यछे. कोइ कष्टसाध्यछे. कोइ असाध्यछे. [illegible] उपचारनिवारी [illegible]. यांको [illegible].

गुडका घृतका मालपुवा षायतौ अथवा षीरषाय अथवा तिलाको सेककरावैतौ आधासीसी जाय १७ अथवा जलभांगराको रस बकरीको दूध येबरावरिले त्यांनैं तावडांसूं गरम करै पाछै ईंकी नासलैतौ आधासीसी जाय १८ अथवा सींगीमोहरो आफू आककीजड धत्तूराकी जड सूंठि कूठ ल्हसण हिंगयांनैं गोमुतसौंमिही वांटि गरमकरि माथाकै लेपकरैतौ आधासीसी जाय १९ अथवा ईंनैं जुलावदीजैतौ आधोमाथो दूषतौ रहै २० अथवा गरम भोजनसूं यो आछयो होय. २१ अथवा वायविडंग कालातील ये दोन्यूं वांटियांको लेपकरैतौ आछयो होय २२ अथवा मिश्री दूध काचानारेलको पाणी येसर्व मिलाय यांनैं पीवै अथवा ईंकी नासलेतौ आधासीसी अर आधोमाथो दूषवोयेदोन्यूं आछया होय २३ अथ अनंतवातसिरोरोगको जतन लिष्यते आधासीसीको अर ईंको जतन एकछै.अथवा माथाकीनसकीशीर छुडावै तौ यो आछयोहोय अथवा सहतका मालपुवा पायतौ अनंतवातसिरको रोगजाय २४ अथ पथ्यादिक्काथ लिष्यते हरडेकी छालि वहेडा आंवला हलद गिलवै चिरायतौ नींवकीछालि गुडये सर्व वरावरिले यांनैं जौकूटकरि ईंको काढो लेतौ भंवारादूषवो कनपटीदूपती नेत्रांकारोग आधोमाथो दूपतौ ये रोग जाय अथवा ईंकी नासलेतौ २५ इतिपथ्यादिक्काथः अथ कनपटी दूपती होय तींको जतन लिष्यते दारुहलद हलद मजीठ गौरीसर पस कमल गठा यानैसीतल जलसूं मिहीवांटिकनपट्यांकै लेपकरैतौ कनपटी आछीहोय २६ अथवा सीतल जलसूं सीतल औषदिकोलेपकरै तौ कनपटी आछीहोय २७ अथवा महलौठी उडद ये दोन्यूं वरा

न. टी मस्तककी व्याधीपर षड्बिंदुतेल लिष्याछै. सो योतेल पर्णकतिमौं करै अर ईंकासिद्धहुवा तेलका टोपा ६ छ एक एक नाककी नसोंटीमैं जुदा जुदा पाछै जीनैं तेलकहैछै. सो प्रसिद्धछै. अर जीवंतीनैं जीवापोना कहैछै.

हीवांटि लेपकरैतौ मथवाय जाय ३८ अथवा आंत्रकीछालिको ले
पकरैतौ घणीभी मथवायजाय ३९ अथवा जलभांगराकोरस कूठ
गऊकोमाषन यांतीन्यांनै वांटियांको लेपकरैतौ घणीभी मथवाय
जाय ४० अथवा पीपलि मिरचि लोद येवरावरिले यांनै मिहीवांटि
यांकीदिन ३ नासलेतौ आधासीसी उगैरे मथवायजाय ४१
अथ कपालकाकीडाको जतनलिष्यते कडवाककोडाकापानाको
रस तींकी नासलेतौ कपालकाकीडाजाय ४२ अथवा पीपलि आं
धोझाडो सरस्यूं आकिकडोडीकावीज यांको सीतल जलसूं लेपक
रैतौ मथवाय जाय ४३ येजतन वैद्यवल्लभमैंछे. अथ माथका के
सवधिवाको जतन लिष्यते छडछडीलो कूट कालातिल गौरिरस
कमलगट्टा यांनैं सहत अर दूधसूं मिहीवांटियांको लेपकरैतौमाथा
काकेसवधे ४४ अथवा चिरम्यानैं मिहीवांटि तीनैं जल भांगरका
रसमैं योचूर्ण अर तिलको तेल पकावै ईंतेलमैं इलायची छड कूठ
मिलाय ईंतेलको मर्दनकरैतौ कैंसवधै ४५ अथवा छड परैटी बो
लसिरीकीछालि आंवला कूठ यांनैं मिहीवांटि जलमैं यांको लेपकरै
तौ कैंसवधैं ४६ अथ मथवायको और जतन लिष्यते लवंग मिरचि
हिंग यांतीन्यांकूं जलसूंवांटि चणाप्रमाण नासलेतौ मथवाय निश्चै
जाय ४७ अथ अर्धासीसीका दूरिहोवाको सिद्धमंत्र लिष्यते ॐन
मोकालीदेवीकिलिकिलेवासीमृथोम्यासे हणवंतवीरहाकमारेआधा
सीसी अधकपालीनाशै जाजारे पापणी जाजारेहित्यारी न जायतौ
तारागुरुनीआज्ञा हनुमंतवीरनीआज्ञागरुडपंपनीआज्ञामेरीभक्ति
गुरुकी शक्तिफुरोमंत्रईश्वरोवाचा ईमंत्रसूं माथाके वार २१ सनेसनै
फूंकदेतौंइसूं आधासीसीनिश्चैजाय अर ईमंत्रनेकृष्णपक्षकी चौदस

न. टी. उनमो अंजनानंद दुष्टनिकंदहनुमंत वीरकी हाकवागे तो आधासीसी नागे नहीं
भागे तो गुरु तो गोरषनाथकी आम्याफिरै गुरुकी शक्ति हमारी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाचा.
ईमंत्रसौं वार २१ शुद्धि होकार सूर्योदय पनपतानी चौंपाळे

१४ केदिनशक्तिमाफिक जलपिवो करेतो इहमंत्र सिद्धरहे. ४८ अथ दूसरोमंत्र ॐ नमो आधासीसी हुंहूंकारी पहरपचारी मुषमुंदिपाट लेमारी अमुकारे सीसरहे मुषमहेश्वरकी आज्ञाफुरे ॐ ठंठंस्वाहा वार २१ मंत्र जपे अंगुली मस्तकऊपरी फेरेतो आधासीसीजाय ४९ इति मस्तकरोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन संपूर्णम् अथ नेत्रां का रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते प्रथम नेत्रको मंडल छै सो दोयअढाई अंगुलप्रमाणछै, अथवा आपका अंगुठाकाउदरप्र माणछै सोनेत्रमंडलमें चोराणवे ९४ रोगछै, सारंगधरका मत सूं अर केईक आचार्यांकामतसूं अठतर ७८ रोगमुष्यछे. दृष्टिमें तो १२ रोगछे. नेत्रमे २ दोयरोगछे. और नेत्रकी काली जागामें ४ रोगछे. नेत्रकासुपेदभागमें ११ रोगछे. नेत्रकामार्गमें १९ रोग छे नेत्रकीवाफण्यांमें २ रोगछे. नेत्रकीसंधिमें ९ रोगछे, सर्वनेत्र मे १७ रोगछे. ऐसे नेत्रकेविषे ७८ रोगछे. चरकमें लिष्याछे. सुश्रुतमें ७६ लिष्याछे, वायका १० पित्तका १० कफका १३ लो हीका १६ सन्निपातका २५ नेत्रांकेवारे २ ऐसा ७६ लिष्याछे. अथ नेत्रांका रोगांकी उत्पत्तिलि० तावडानेआदिलेरसरीरमें गर म हुई होय, पाछे नदी तलाव बावडी उगेरे जो जलतीमें पुरुष प्र वेश करेतीसूं अथवा दूरीकादेपिवासूं दिनकासोवासूं पसेवसे नेत्रा मेंरजपडेतीसूं नेत्रांमें धूवांजावासूं छर्दिकारोकिवासूं घणावमनका करिवासूं गरमवस्तकापावासूं कांजीकुलत्थउडद यांकापावासूं अधो वाय मलमूतयांकारोकिवाकरी ऋतुका विपरित पणांकरि क्रोधक रिवासूं घणांमैथुनकाकरिवासूं आंसूकारोकिवाकरि सूक्ष्मवस्तुकादे षिवाकरिइनें आदिलेर जोवस्ततांका करिवाकरियांवस्तांसूं नेत्रांका

न. टी. [illegible] [illegible] लिखोछे [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

७८ रोगपैदाहोयछै. अथ प्रथमदृष्टिकारोगलिप्यते दृष्टिकहजे कहातीको लक्षण नेत्रमंडलकैविषै कालीजागांमैं मसूरिकाकीदालिप्रमाणयेक माणस्योछै. सो ओमाणस्यो पाचमहाभूतासूं उपज्योछै अर ओ आग्यासरीसो चमकै छै. अर ओ अविनासी जोतेज ततसरूप ओसिद्धछै, अर ओई नेत्रगोलामैं चारिपटल करिदेछै. पटलकहिजे कांदाकाछौंत सिरीसी झिल्ली तींकरिकै यासारी आपि आच्छादित होयरहीछै. अरवादृष्टि निपटसीतलरूपछै. ईनैंबुद्धिवान् दृष्टिकहैछै. सोयादृष्टिजलकै अर लोहीकै आधारछैं. ईदृष्टिकै च्यार पटलछै प्रथमपटलतौ तेज अर जल त्याको आश्रयछै. दूसरोपटल मांसकै आश्रयछै. तीसरोपटल मेदकै आश्रयछै. तींमें तेज जल मास मेद अग्नि यापाचका आश्रयछै. अथ प्रथम पटलमैं हुवोजेरोग तींकोलक्षण लि० प्रथमनेत्रका पटलकीदृष्टिमें जोरोग रहैछै तींपुरपनैं कदेकजथार्थसांगोपांग दीसैनहीं पहलापटलमैंदोपथोडोरहैछै. अथ दूसरापटलमैं हूवो जोरोग तींकोलक्षणलिप्यते जींका नेत्रका दूसरा पटलमैं आयो जोदोप तीनैं मापी माछर केसयाका समूहदीसै दूरिका निकट दीपै निकटका दूरिदीपै दृष्टि भ्रमतीरहै अर घणा जत्नसूंभी सुईको छेद्रदीसैनहीं क्यूंदृष्टिहै सोघणीविव्हल होजाय. २ अथ तीसरापठलमैं हुवोजो दोप तींकोलक्षणलिप्यते तीनं ऊंचोदीसै अर नीचाको दीसैनहीं रूपका समूह भी दीसैनहीं जाणिजे वस्त्र आडो आयगयोछै कान नाक नेत्रयेओरसादीसै दृष्टिमैं दोपघणो आयरह्यो होय तोनीचरलीवस्त ऊपरदीसै ऊपरली वस्त नीचेदीसै अर जींका नेत्रका पसवाडामैं दोपहोय तीनैं पसवाडाकी वस्त दीपेनहीं अर नेत्रकै च्यारूं ओर

न. टी. अनंतर नेत्रांका रोगाका निदान लक्षण नाम ग्रंथकर्ता शास्त्रकी रीतसौं वर्णन कियाछै. सो सूक्ष्मरोगानैं विचार करणा योग्यछै कारण यासरीरकी सर्व मुसदाई [illegible] छै. अर यां नेत्रामैं जो अविनासी जोतछै, सो मनुष्यप्राणको मूलछै.

रहतो जो दोष तीनें आकुल व्याकुल चकचौंधो दीसे ओर दृष्टिम ध्य रहतो जो दोष तीनें वडाको छोटोदीसे अर दृष्टिमें स्थित जो दोस तीनें पसवाडाका एकका दोयदीसे दोयका तीनदीसे अर घ णाहोय त्यांकीगिणती आवेनही ईसादीपे येलक्षण तीसरापटलका दोपका जाणिजे ३ अथ चतुर्थ पटलमें हूवोजो दोप तीकालक्षण लिष्यते चोथा पटलमें उपज्यो दोसतीनें लोकीकमें तिमर कहेछे, अर ईने केईक आचार्य ईवैद्यक शास्त्रकाजाणिवावाला ईचोथापटल कारोगनें लिंगनास कहेछे लिंगनास कहिजे. कहा यां नेत्रांकी तेजो मयी जो पुतली सो नीलीकाच सिरीसी होजाय अर ईमें लक्षणहो य क्यूंई पटलमें दोप घणो होयछे सूर्य चंद्रमा नक्षत्र आकाश बीज ली येनिर्मल तेजछे सोभी आछ्यादीसेनहींये सारही भ्रमताहीदीपे सोईदोपनें तिमिर कहेछे अथवा ईनें लिंगनास कहेछे अर लोकीक में ईनें निर्जलो कहेछे केईक मोतियाविंद कहेछे ४ अथ ओर शा स्त्रकामतसूं ईलिंगनास अर मोतियाविंदको लक्षणलिष्यते योलिं गनास मोतियाविंदरोग ६ प्रकारकोछे वायको १ पित्तको २ क फको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ परिम्लायनको ६ परिम्लाय ननाम लोहीसूं मूर्छित हुवोजोपित्त तीकोछे अथ वायका लिंगना सको लक्षण लिष्यते जीकेवायको लिंगनासहोय तीनें संपूर्णव स्त भ्रमतीदीपे अर सर्व वस्तमलीनसीदीपे अर सर्ववस्तक्यूं येक लालदीसे अर सर्ववस्त कुटिलनाम वांकीदीपे तदि जाणिजे ईके वायको लिंगनासछे १ अथ पित्तका लिंगनासको लक्षणलिष्यते पित्तको लिंगनासजीके होय तीनें सूर्य चंद्रमा नक्षत्र आग्या ईंद्र को धनुष्य बीजली येसारा भ्रमतादिसे यासर्व वस्त नीलीसीदीसे

१ मोतियाबिंदकोलिंगनास भी नेत्रकामध्यबिंदुमेंछे और नेत्रका ईसबाबसूं [illegible] मारेछे, [illegible] मध्यबिंदुका [illegible] नारी और जदां [illegible] वहांछे तदां [illegible] [illegible] होवेछे [illegible] मोतियाविंद [illegible] कहेछे. श्री, [illegible]

तदि जाणिजै ईंकै पित्तको लिंगनासछै. २ अथ कफका लिंगनास कोलक्षणलिष्यते जींकै कफको लिंगनासछै तींनैं जोदीषै सोचीकणो अर सुपेद दीषै अर वैनेत्र मनुष्यके जलसूं भरयाहीरहै. ३ अथ सन्निपातका लिंगनाशको लक्षणलिष्यते जींको सन्निपातको लिंगनाश होय तींनैं नानाप्रकारका आकारदीषै अरहीन अधिक अंगदीषै अर सारीवस्त तेजरूपीदीषै अर पाछै कह्यासोभी लक्षण होय. ४ अथ लोहीसूं उपज्योजो लिंगनास तींको लक्षणलिष्यते जींकै लोहीको लिंगनाश होय तींनैं लालदीषै अर सुपेददीषै हरया काला पीला साराहीवस्तदीषै. ५ अथ परिम्लायिनसूं उपज्यो जोलिंगनाश तीको लक्षणलिष्यते रक्तसूं मूर्छित हुवोजो पित्त तींनैं परिम्लायिन कहिजे तींकरि उपज्यो जो लिंगनाश तींनै दशदिशापीलीदीषै जाणिजै सर्वत्र सूर्यही उग्याछै वृक्षांउगैरै सर्ववस्तु दग्धहुवा अग्निसिरीषाहीदीषै. ६

अथ लिंगनाशको और स्वरूपलिष्यते वायको लिंगनाश अरुणहोय पीलानीलयां अर नीलो होय १ अर ऐसोही पित्तको होय २ अरु कफको सुपेद होय ३ अर सन्निपातको विचित्र होय ४ अर लोहीकोलालहोय ५ अथवायनै आदिलेर ७ प्रकारको लिंगनाश कह्योतींका नेत्रका मंडलजुदाजुदा स्वरूपलिष्यते वायको नेत्रमंडल अरुण होय १ पित्तको नेत्रमंडलनीलो होय कांसीकावर्णसिरीसो होय अर पीलो होय २ अर कफको नेत्रमंडल वणो चीकणो होय अर संपसिरीसो कुंदकाफूल सिरीसो पीलोहोय चंचल होय ईनेत्रमंडलमैं सुपेद बुंद होय. ३ अथ सन्निपातका नेत्रमंडल को लक्षण लिष्यते ईनेत्रमंडलमैं मूगांसिरीसो अथवा पद्मका पत्र

न. टी. नेत्ररोग करहाउे ज्यां रोगवालानें पथ्य अवश्य करणो योग्यछे जीवासे पथ्य नाम ग्राह्यकरणो अपथ्यनाम छोडणो. जीनें छौपीकमें रोग अर बदपरेज करैछे जीनें ग्राचकसौ सो रैजो. नग्राष नहीं छेणो इसी निश्चय रापणी.

सिरसो नेत्रमंडलहोय अर पाछे लक्षण कह्योछेसोभीहोय ४ अथ लोहीका नेत्रमंडलको लक्षणलिप्यते योनेत्रमंडल लालहोय ५ पारिम्लायिननेत्रमंडलको लक्षणलिप्यते जींकासरीरमें पित्तदुष्टहुवो होय तींपुरुपकीदृष्टि पीलीहोय अर वेनें सारीवस्त पीलीही पीलीदीषे १ अथवा दुष्टपित्त तीसरापटलमेंजाय प्राप्ति होय तींका स्वरूप लिप्यते. वेपुरुपनें दिनमें दीपैनहीं अर रात्रिनेंदीपे. चंद्रमाकाशीतलपणातेंक्यूं पित्तको अलपपणोरात्रिमें होय जीसूं १ अथ कफकरिजींकी दृष्टि विदग्धहुईहोय तींकोलक्षण लिप्यते जींकीदृष्टिकफकरि विदग्ध होय तींनें सर्व सुपेदहीदीपे. योरोग प्रथम द्वितीय पटलमें होयछे. २ अथ रक्तांधनामरातींधाको लक्षणलिप्यते तीसरापटल में कफ आवे तदि रक्तांधहोय दिननेंदीपे रात्रिनें दीपेनहीं ईने लोकीकमें रातिंधोकहैछे. अथ धूमदर्शिरोगको लक्षणलिप्यते. शोकसेती ज्वरसेती पेदसेती सिरमें तापजाय प्राप्तिहोय तदिमनुप्यकी दृष्टि हैसो धुवांसेंति व्याप्तहोय तदि ईमनुप्यनें सारीवस्तु धूवांसिरीपीदीसे. २ अथ ऱ्हस्वजातिरोगको लक्षणलिप्यते जो पुरुप वडाकष्टसेंतीभीवडीवस्तनें देपे सोवावस्त दिनमें छोटीहीदीपे अर रात्रिमें जथार्थ दीपे तींनें ऱ्हस्वजाति रोगकहिजे ३ अथ नकुलांध रोगको लक्षणलिप्यते जींपुरुपकी दृष्टितो आछीतरहसूं दीपे अरवेदृष्टिमें दोप आय प्राप्तिहोय तदिवेनें दिनमें चित्रविचित्रदीपे ईने नकुलांध कहिजे. १

अथ गंभीरकारोगको लक्षण लिप्यते जींपुरुपके सासनें लेता वेंकीदृष्टिमांहि वडिजाय अर नेत्रमें पीडाचालिजाय ईनें गंभीरनाम रोग कहिजे. १ अथ विनाकारणही लिंगनाश होय तींको लक्ष

न. टी. [illegible]

ण लिष्यते जींकी दृष्टिनिर्मलछीसो विनाकारणही कालीहोयजाय तींनैं विनाकारण लिंगनाश कहिजै. १ इति दृष्टिरोगाः अथ कालानेत्रमंडलमैं हुवो जो रोग त्यांका नाम अर वाकीसंष्या लिष्यते येच्यारीरोग ईकृष्णमंडलमैं होयछै. सव्रणशुक्र १ अव्रण शुक्र २ अक्षिपाकात्यय ३ अजकाजात ४ अथ सव्रण शुक्रको लक्षण लि० नेत्रकी काली जागामैं पूतलीऊपरि पोप आयो होय अर वेदोपकरिमाणस्यो ढकिजाय अर वाबूंदनेत्रमेंघडि जाय अर वेमैं सुईकासाचभकाचालिजाय अर वेमैं गरमगरम पाणी पडिवो करै तीनै सव्रणशुक्र कहिजै. १ अथ सव्रण शुक्रको साध्यासाध्य लक्षण लिष्यते वाबूंद दृष्टिकै समीप होय नही अर गाढीनही होय अर इसूं विपरीत लक्षण होय सो असाध्य जाणिजै. १ अथ अव्रण शुक्रको लक्षण लिष्यते. जींकी काली पूतलीका माणस्यां ऊपरि शुक्रकी बूंद आई होय अरवाबूंद हालैचालै अर वाबूंद संपसिरीसी चंद्रमा सरीसी कुंदका फूलसरीसीहोय अथवा आकास सरीसी होय अथवा वादलसरीसी होय ओ अव्रणशुक्रजाणिजै. योनिपट साध्यछै १ अथ अव्रणशुक्र साध्यछै पणि ईकी अवस्था भेदकरि ईको कष्टसाध्य लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रको मांस विपरिजाय अर वाबूंद ऊंडी होय अर वा नसांमैं हुई होय अर वा गाढी होय अर वा दूसरा पटलमैं होय अर च्यारूं ओर लाल होय अर वा घणा दिनांकी होयतो अव्रण शुक्र असाध्यजाणिजै ईका जतनकीजै नहीं १ अथ ईको और असाध्य लक्षण लिष्यते जींकानेत्रमैं आंसू गरमपडै अर नेत्रमें फुणस्या होय अर माणस्यांऊपरि शुक्रकी बूंद मूगसमान होय अर तीतरकी पांप सरीसी

न. टी. नेत्ररोगीनैं अपथ्यनाम कुपथ्य लि० छां. मूंगफली नाम मूंदमूंग साळकाळीक तथा, साळपैठो, कूष्मांड, पानांको शाक, उडद, सीवंग, जागरण, आप, गुवारफली, पारो पाटो, गरम चातल, शीतळ, ऊपादि, इत्यादि वर्ज्य.

होय ओभी अव्रण शुक असाध्य जाणिजे १ अथ अक्षिपाकात्य यनेत्ररोगको लक्षण लिप्यते. जींकानेत्रकी सुपेद जगां सारी सू जिजाय अर आंसूं घणांपडे अर ऊठे पीडघणी होय अर ओने त्रदोषांसूं पकिजाय ईनें अक्षिपाकात्ययरोगकहिजे योभी असा ध्यछे. १ अथ अजकाजात नेत्ररोगको लक्षण लि० जींकी आंपि बकरीकी मींगणी सिरीसी होजाय अर वेमें पीड चाले अर आंपि लालरहे अर लालही जींमें आंसूं आवे. जाडाजाडा ईनें अजका जात नेत्ररोग कहिजे. १ येचारूं कृष्णमंडल रोगछे. अथ नेत्रका शुक्लभागमें उपज्यो जो रोग त्यांकानाम अर वांकी संख्या लि ष्यते ईनेत्रका शुक्लभागमें ग्याराेरोगछे ११ प्रस्तार्यम १ शुक्लार्य म २ रक्तार्यम ३ अधिमांसार्यम ४ स्तायवर्म ५ शुक्ति ६ अर्जुन ७ पिष्टक ८ शिराजाल ९ शिरापीडिका १० बलस ग्रथित ११ ये इग्याराही कफकरिकें गुंप्यानेत्रका शुक्लभागमें होयछे अथ प्रस्ता र्यम नेत्ररोगको लक्षण लिप्यते ईनेत्रकाशुक्ल भागमें गरमनेलियां अरवडो अरकालो अर लालचिन्हहोय तीनें प्रस्तार्यम नेत्ररोग कहिजे. १ अथशुक्लार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिप्यते नेत्रका सुपेद भागमें सुपेदही अर कोमलसो वधे तीनें शुक्लार्यम नेत्ररोगकहीजे २ अथ रक्तार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिप्यते नेत्रका सुपेद भागमें पद्मसिरीसो कोमलजो मांसवधे तीनें रक्तार्यम रोग कहिजे. ३ अथ अधिमांसार्यम नेत्ररोगको लक्षण लिप्यते नेत्रकासुपेद भागमें म डो अर कोमलअरपुष्ट कालजासिरीसो चिन्हहोय तीनें अधि मांसार्यम नेत्ररोग कहिजे ४ अथ स्नायुवर्म नेत्ररोगको लक्षण लि

* शुक्लार्यम नेत्ररोगछे. सुपेदछे नेत्रना गोलकनाम [illegible] सुपेद भागछे. तेमें रोग छे. सुपेद रंगनो [illegible] छे. नेत्रनागोलकनो [illegible] छे. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ष्यते नेत्रका सुपेद भागमैं करडो अर स्थिर चिन्ह होय तीने स्ना यवर्म नेत्ररोगकहिजे ५ अथ शुक्तिनाम नेत्ररोगतींको लक्षण लि० जींकानेत्रका शुक्लभागमैं काली अर मांससरीसी बूंद घणीहोय तीनच्यारि तीनैं शुक्तिनामनेत्ररोग कहिजे. ६

अथ अर्जुनरोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रकाशुक्लभागमैं सुसाका रुधिरसिरीसीयेकबुंदहोय तीनैं अर्जुननाम नेत्ररोगकहिजे ७ अथ पिष्टकनाम नेत्ररोगतींको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रकाशुक्ल भागमैं वायकफकाकोपकरि मांस ऊंचोहोय आवे पीस्यांचूनसिरीसो तीनै पिष्टकनाम नेत्ररोग कहिजे ८ अथ सिराजालनेत्ररोगको लक्षणलि० जींका नेत्रकासुपेदभागमैं नसांकासमूहकठण अर पीला होयआवे जीनै शिराजाल नेत्ररोग कहिजे. ९ अथ शिरापीडिकानाम नेत्ररोग तींको लक्षणलि० जीका नेत्रका सुपेदभागमैं सुपेदफुणस्यां नसांकरि आव्रत होय तीनै सिरापीडिकानाम रोग कहिजे. १० अथ बलास ग्रंथित नेत्ररोगको लक्षणलि० जींकानेत्रका सुपेदभागमैं कांसी सरीसो सुपेद अथवा कमल सरीसोवर्ण अर कठोरऐसोचिन्ह होय तीनैं बलासग्रंथित नेत्ररोग कहिजे. ११ ये नेत्रका शुक्ल भागका इग्यारारोगछै. ११ अथ नेत्रका मर्मस्थानमैं २१ रोगछे सोदोन्यूंनेत्रांनैं ढकै नीचरली अर ऊपरली पापडी त्यामैं येरहैछै. उत्संग पीडिका १ कुंभिका २ पोथकी ३ वर्त्मशर्करा ४ अर्शवर्त्मा ५ शुक्लार्श ६ अंजननामिका ७ बहुलवर्त्मा ८ वर्त्मबंधक ९ क्लिष्टवर्त्मा १० वर्त्मकर्दम ११ श्यामवर्त्मा १२ प्रक्लिन्नवर्त्मा १३ अक्लिन्नवर्त्मा १४ वातहर्पवर्त्मा १५ वर्त्मार्बुद १६ आश्रामस्तनिमेप १७ शोणितार्श १८

न. टी. नेत्रकाकोपाथे जो सुपेद कोयोछै जीमें रोगादिक व्याप्ति होय ज्यांका जुदाजुदा विभाग अर नाम अर निदान लिष्याछै. जीमैं बुद्धि प्रवेशकरकर यथार्थ ज्ञानसौं नेत्रां रक्षाकरणी अर स्याणा वैद्यकनैं ओषधी कराणी.

क्षण १९ विसवर्मा २० कुंचन २१ अथ उत्संगपीडिकाकोल क्षणलिष्यते नेत्रकी ढकवावाली वाफण्यानाम कोया तीके माहिफुणा सीहोय अर तीको माहिही मूंढोहोय वाफुणसी लालहोय घणीऊं चीहोय अर वा लोहीसूं उपजीहोय अर बडोहोय अर जीमें पा जिचालै येजीमें लक्षणहोय तीनें उत्संगपीडिका कहिजे १ अथ कुंभिका पीडिकाको लक्षण लिष्यते जीका नेत्रका अंतकाभागमें कुं भिकाबीज सरीसी फुणसीहोय अर वा फुणसी फूटबोकरे अर अ ववोकरे अर वासोईनें लीयांहोय तीनें कुंभिकानाम नेत्ररोग कहि जे. २ अथवा पोथकी नामनेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जीका कोयामा हिलाल सिरस्यूंकेमानि फुणसीहोय अर वा बहुतझरे अर वेमें पा जिवणीआवे अर वेमें पीडाहोय ईनें पोथकीपीडिकानाम नेत्ररो ग कहिजे. ३ अथ वर्त्मशर्करापीडिका नाम नेत्ररोगको लक्षणलि ष्यते. जीका कोयामें सूक्ष्म फुणसीघणीहोय अर परधरीहोय अर भारीहोय तीनें वर्त्मशर्करारोगकहिजे ४ अथ अर्शोवर्त्मा पीडिका नाम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जीका कोयांमाहि तेवरसीककडी काबीजसरीसी फुणसीहोय अर जीमें पीडकमहोय अथवा फुणसी चीकणीहोय अर कठोरहोय वेनें अर्शोवर्त्मा फुणसिको नेत्ररोगक हिजे. ५ अथ शुष्कार्शनेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जीका नेत्रकाको यानें बडावडा अंकुर परधरा भयंकर होयतीनें शुष्कार्शनाम नेत्र रोगकहिजे. ६ अथ अंजननामिका नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जीका नेत्रकाकोयांमाहिफुणस्यां होय अर दाहनें लीयांहोय अर लालहोय अरवे फुणस्यां कोमल होय अरवे फुणस्यां छोटीहोय ज्यांमेंपीडमंद होय तीनें अंजननामिका नेत्ररोग कहिजे ७ अथ

न. टी. नेत्रकार्यविकारमें भी बहोतभयानक जानवो अर वहां [illegible] [illegible] होवे अर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible].

बहुलवर्त्मा फुणसी नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका कोयांमांहि चहु और फुणस्यांहोय एकवर्णकीघणी वानैं बहुलवर्त्मा फुणसी नेत्ररोग कहिजे ८ अथ वर्त्मबंधकनाम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका नेत्रका कोयांमैं सोजोहोय अर वेमैं थोडीपुजाली आवै अर वेमैं थोडी पीडहोय अर सोईसूंनेत्र ढकिजाय तीनैं वर्त्मबंधक नाम नेत्ररोग कहिजे ९ अथ क्लिष्टवर्त्मानामनेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका नेत्रांका कोयांको मार्ग अकस्मात् लालहोजाय अर जींमैं मंदपीडाहोय तीनैं क्लिष्टवर्त्मा नेत्ररोग कहिजै १० अथ वर्त्मकर्दम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींकानेत्रमांहि पित्तसंयुक्त लोही दग्धहोय कुपथ्यसूं तींकीआंपि गीडसूं आलीघणीरहै तीनं वर्त्मकर्दमनामरोगकहिजे ११ अथ श्यामवर्त्मानाम नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका नेत्रका कोयांका मार्गमांहिं अर वारे काली सोईहोय अर वे सोईमैं पीडाहोय अर वेमैंपाजि आवै अर गीड भी आवै तीनैं श्यामवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १२ अथ प्रक्लिन्नव र्त्मानेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींका नेत्रका कोयांकै वारै सोईहोय अर ऊठेपीड नहींहोय अर गीड घणांआवै तीनैं प्रक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १३ अथ अक्लिन्नवर्त्मा नेत्ररोगको लक्षणलि ष्यते जींकी आंपिधोवे वा नहींधोवे तोपूले नहीं मींचिहीरहै तीनैं अक्लिन्नवर्त्मानेत्ररोग कहिजे १४ अथ वातहतवर्त्मा नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते जींकीपलक आछीतरै मिचैनहीं अर पुलीहीरहै त दिपीडरहे अथवा नहींरहे अथवा आंपिमिची रहे ईनैं वातहतवर्त्मा नेत्ररोग कहिजे १५ अथ वर्त्मार्बुद नेत्ररोगको लक्षणलि० जींका नेत्रका कोयांका मार्गमांहि गांठि लांबीहोय जींमैं पीडनहीहोय

न.टी. जोवर्त्मरोग नेत्रांमेंछे. सो सर्व निदानपूर्वकयाछे. परंतु मार्गमें आपकी बुद्धिको विचार विलक्षणछे. कारण जेमें कर्दम संयुक्त वर्त्मकर्दमरोगछे. ओकर्दमसो नेत्रकफिपरहै अर अनेकांगका कादाछिलीका भागो कर माहाभूतक ओघमो.

अर गाठि लालहोय तीनें वर्त्मार्बुद नेत्रकोरोग कहिजे १ अथ अश्वस्तनिमेषनेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींकानेत्रका कोयानेत्रमां हिपैठीजाय वायकरीके बाफणीनें चलावै ईनें अश्वस्तनिमेष नेत्र रोगकहिजे १७ अथ शोणिताशंनेत्रकारोगको लक्षणलि० जींका कोयाकीबाफणीका मार्गमें फुणसीका कोमल अंकूर होय त्यानेंदू रिकरिवावास्तैंबांधे सोवे अंकूर वधवोकरे तीनें शोणिताशं नेत्ररो ग कहिजे १८ अथ लगणनाम नेत्ररोगको लक्षणलिष्यते जींका नेत्रका कोयांका मार्गमेंगांठि बोर प्रमणाहोय अर वागांठिपकेनहीं अर करडीहोय अर वैमें पाजिआवे अर नेत्रमें गीडआवे तीनें लगणनेत्रकोरोगकहिजे १९ अथ विषवर्त्मा नेत्रका रोगकोलक्षण लिष्यते. जींका नेत्रका कोयांके घणांछिद्र पडिजाय अर कोयांऊप रि सोजो चढिजाय नेत्रमांहि आंशू घणां आवे रहैनहीं तीनें विष वर्त्मा नेत्रको रोगकहिजे २० अथ कुंचननाम नेत्रकोरोगको लक्षण लिष्यते वायपित्त कफ हैसो जींकानेत्रका कोयांका मार्गनें संकोच करे कोयानें नेत्रांसूं उघडवादे नहीं क्यूंभीवस्त देषवादे नहीं ईनें कूंचन नामनेत्रको रोगकहिजे. इति नेत्रांका कोयांको रोग संपूर्णम, अथ नेत्रकी बांफणीकादोय २ रोगछे पक्ष्मकोप १ पक्ष्मशांत २ अथ पक्ष्मकोपबाफणीकारोगको लक्षणलि० जींका कोयांकी बाफणीजातीरहै अथवा कोयानें धसिजाय अथवा बाफ णियांमें पाजघणीआवे योरोग वायकाकोपकारे जाणिजे. योरोग बहुतभयंकरछे. ईमें सोजोभी होयछे. योअसाध्यछे ३ अथ पक्ष्म शांत बाफणीकारोगको लक्षण लिष्यते नेत्रकाकोयांकी बाफणी जातीरहै. अर ऊठेपाज आवे अर ऊठेपलतरहै पीपितका कोपसूं

* [illegible]

होयछे ईनें पक्ष्मशातनामवाफणीकोरोग कहिजे. २ अथ नेत्राकी संधिमें नवरोगछे ९ त्यांकानामलि० पुयालस १ उपनाह २ पैत्तिक श्राव ३ कफश्राव ४ सन्निपातश्राव ५ रक्तश्राव ६ पर्वणिका ७ अलजी ८ जंतुग्रंथि ९ अथ पूयालसनेत्रकीसंधिकरोगको लक्षणलिष्यते नेत्रकीमाहिली पूतलीकनें कोयांका अंतमें जोवासंधिछे सोवादूपणीआय अर पकिकरि वा सूजिजाय अर वेंगीड राधिस रीसी जाडीजाडी घणीआवे ईनें पुयालसनाम नेत्रकी संधिकोरोग कहिजे. १ अथ उपनाहनाम नेत्रकीसंधिकारोगकोलक्षणलिष्यते नेत्रकीसंधिमें वडीगांठिहोय अर वा पकेनहीं अर वेमें पाजिआवे अर वेमें पीडनहीहोय तीनें उपनाहनाम नेत्रकी संधिको रोगकहिजे २ अथ पैत्तिकश्राव नेत्रकी संधिकारोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमें जलकां आंसूं हलदसिरीसा पीलाघणां आवे वेनें पैत्तिक श्राव नेत्रकी संधिको रोगकहिजे. ३ अथ कफश्राव नेत्रकी संधिका रोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमें जलका आसूं सुपेद जाडा अर चीकणा आवे तीनें कफश्राव नेत्रकीसंधिको रोग कहिजे. ४ अथ सन्निपातश्राव नेत्रकी संधिका रोगकोलक्षणलिष्यते जींका नेत्रकी संधिमें नासूर पडिजाय अर वेमें दुरगंधिलीयां राधि आवोकरे तीनें सन्निपातश्राव नेत्रकी संधिको रोगकहिजे. ५ अथ रक्तश्राव नेत्रकी संधिका रोगको लक्षणलिष्यते. जींका नेत्रकी संधिमें गरम लोही घणो नीसरे तीनें रक्तश्रावनेत्रकी संधिको रोगकहिजे. ६ अथ पर्वणिका नेत्रकी संधिकारोगको लक्षणलि० जींका नेत्रकी संधि तांवाका वर्णसिरीसी लालहोय अर मिही होय अर पकिजाय ईनें पर्वणिका नेत्रकी संधिकारोग

न. टी. नेत्रांकारोग ओषध्यांसूं आरामहोयजायछे. परंतु साध्यरोगतत्काळ आरामहोयछे. अरकष्टसाध्य घणांदिनांमें अनुक्रमसूं उपायकरतां आरामहोयछे. अर जोरोग याप्यछे सो तोरोग यहांतक यत्नकरावे अर आरामहोणां कठिनछे.

कहिजे. ७ अथ अलजीनाम नेत्रकोसंधिका रोगकोलक्षणलिष्यते. जीका नेत्रकी संधि तांवासिरीसी लाल होय अर मिहीअर बल तनेंलीयां अर पकी सोनासिरीसीहोय तीनें अलजी नाम नेत्रको संधिको रोगकहिजे. ८ अथ जंतुग्रंथि नाम नेत्रकी संधिकारोगको लक्षणलि० जीका नेत्रकी संधिकी गांठिमें कृमि पडिजायअरवेमुं वाफणी ज्यातीरहे अर ऊठे पुजालिआवे नहीं अर वेंका नेत्रकीसं धिमें अनेक मिहीन मार्ग होजाय अर नेत्रमें पीडाघणी होयतीनें जंतुग्रंथिनाम नेत्रकी संधिकोरोगकहिजे. ९ अथ नेत्रका औरस मस्तरोग त्यांकी संष्या अर नामलि० वायको अभिष्पंद १ पित को अभिष्पंद २ कफको अभिष्पंद ३ रक्तको अभिमंथ ४ वायको अभिमंथ ५ पित्तको अभिमंथ ६ कफको अभिमंथ ७ रक्तको अ विमंथ ८ संशोथपाक ९ अशोथपाक १० हताधिमंथ ११ वातप र्याय १२ शुक्लाक्षिपात १३ अन्यतोवात १४ अम्लाध्युषित १५ शिरोत्पात १६ शिरोहर्ष १७ अथ नेत्रकी समता १ अर नेत्रकी विसमता २ अथ वायका नेत्रका अभिष्पंद ईनें लोकोकमें आंष दूषणी कहेछे. तींको लक्षणलि० जींकी आंषिमें पीड घणीहोय जीका रोमांच होय आवे, अर आंषिमें पुजालि आवे नेत्रकरडाहो जाय अर माथोचलै अर जींका नेत्रका आंसूं सीतल पडेतदि ई नें वाताभिष्पंद नेत्रकोरोग कहिजे.

अथ पित्तका अभिष्पंद गरमीसूंआंषिदूषणी आवै तींको लक्ष णलिष्यते. जींका नेत्रांमें दाहघणो होय अर आंषीपकिजाय अर नेत्रांनें सीतलताई सुहावे अरजींका नेत्रांमें धुवोनीसरे अर जी कानेत्रांमें गरम आसूंनीसरे अर नेत्रपीलाहोय [illegible] पित्तको अ

भिष्पंद नेत्ररोग कहिजे २ अथ कफका अभिष्पंदको लक्षणलि० जींकी आंषिनैं गरम सुहावे अर नेत्रसीतलवणारहे अर जाडो जाडो बहुत झरे इंनैं कफका अभिष्पंद नेत्रकोरोग कहिजे. ३ अथ रक्ताभिष्पंद नेत्ररोगको लक्षण लिष्यते. जींका नेत्रलालहोय अर आंसूं तांबाका वर्णसिरीसा पडे अर नेत्रांमैं दहाहोय अर नेत्रांनैं सीतलताई मुहावे अर गरम आंसू पडे तदि जाणिजे लोहिकाअभिष्पंद नेत्रकारोगकोछे. अथवायका अधिमंथईनें लोकी कमैं घणी आंषि दूषणी आईकहेछैं. तीको लक्षणलि० आंषि दूषणीआवे तीमैं कुपथ्यकरे तदि आंषिमैं घवकाघणांचाले जाणिजे आंषिफूटि जासी. अर आंषिमैं इसारूला चाले जाणिजे आंषिमैं झरणोघालि आंषिने मथैछे. अधोशिर अधरहोजाय माथो वलिऊठे जीमै आंसूं सीतलआवे तदि जाणिजे ईंके वायको अधिमंथ नेत्रको रोगछे ५ अथ पित्तका. अधिमंथको लक्षण लिष्यते जींकी आंपिदूपणी आई होय ओगरमवस्त पटाइ उगैरेपाय कुपथ्यकरे तदि वेंकी आंपिमें रूला घणाचाले जाणिजे आंपिधवकासूं फूटिजासी. अर आंपिमैंदाहहोय अर पकिजाय अर नेत्रानें सीतलताई सुहावे आंसू पीलानीसरे नेत्रपीला होय तादि जाणिजे पित्तका अधिमंथको ईंके नैत्रकोरोगछे. ६ अथ कफकाअधिमंथको लक्षणलिष्यते जींकी आंपिमैं रूलाघणा चाले जाणिजे आंपि बैठि जासी अर वेनें गरमसुहावे आंप्यांकेसोजो होय अर पाज आवे अर जाडो जाडो बहुतझरे ईंनें कफकोअधिमंथ नेत्रकोरोग कहिजे. ७ रक्तका अधिमंथको लक्षण लिप्यते जींकी आंपि दूपणीआई होय अरजीमे लोही विगडे ईसाकुपथ्य करेजींकी आंपि

न. टी. आंषदुषणी मानेछे जींनें लोकीकमैं आंषआईकहेछे. अर शास्त्रमें अभिष्यंदकहेछे. सो यो अभिष्यंदछे सो वातपित्त कफादिकसौं बहुपाहोयछे. जींपर अनेक उपायछे. आराम होयछे परंतु वाउकारैबहुपाहोयछे.

में ल्लायघणाचाले जाणिजे आंपिवेठीजासी अरवेको आंपिमें ताबा कावर्णसिरीसा गरमआसूं पडे अरलाल आपिहोय अर दाहहोय पकिजाय तदि जाणिजे रक्तको अधिमंथका नेत्रकोरोगछे.८ कफको आधिमंथ सात ७ दिनमेंनेत्रको फोडे लोहिको अधिमंथ ५ दिनमें नेत्रनें फोडे वायको अधिमंथ ६ दिनमें नेत्रनें फोडे पित्तको अधि मंथ तत्काल नेत्रनें फोडे अथ संसोथपाक नेत्ररोगको लक्षणलि० जींका नेत्रामे आंसूं आवे अरपाज आवे वेंका नेत्रपक्यागूलरि का फलसरीसा पकिजाय अर नेत्रांऊपरि सोजो होयजाय अर जींका नेत्र लालहोय तीनें संसोथ पाक नेत्रकोरोगकहिजे ९ अथ असोथपाक नेत्रकारोगको लक्षणलिप्यते जींका नेत्रांऊपरि सोजो होय नहीं अर पाजआवे अर पक्यागूलरका फलसरीसा पकिजा य अर नेत्रलालहोय तीनें असोथपाक नेत्ररोगकहिजे. १० अथ हताधिमंथ नेत्ररोगकोलक्षणलिप्यते जींका नेत्र सूकिवासूं बैठिरहे अर वामें पीडघणीहोय जेसे कमलसूकिजाय इसानेत्रहोय जाय तीनें हताधिमंथ नेत्रकोरोग कहिजे. ११ अथवातपर्यायनेत्रकोलक्ष ण लिप्यते. जींकाभंवारामें अर नेत्रांमें वारंवार पीडघणीचाले ती नें वातपर्याय नेत्ररोग कहिजे १२

अथ शुक्लाक्षिपाक नेत्रकारोगको लक्षणलि० जींका नेत्रमूंदि जाय अरबले अर लालहोय जाय अर आछीतरेंसूझे नहीं अर लूखाहोय जाय वसारा तीनें शुक्लाक्षिपाक नेत्रकोरोग कहिजे.१३ अथ अन्यतोवात नेत्ररोगको लक्षणलिप्यते जींकीपांथिशिर दाढी कान भंवारा आंपियांमें वायकीपीड़ घणीचाले तीनें अन्यतोवात नें

* [illegible]

त्ररोगकहिजे. १४ अथ अम्लाध्युषितनेत्ररोगको लक्षणलि० जी
कानेत्रसाराकाला अर लालहोजाय अर पकिजाय अर वेमेंसोजा
नैंलीयां दाहहोय अर नेत्रांमें पाणी आवे तींनें अम्लाध्युषित नेत्र
रोगकहिजे. १५ अथ शिरोत्पात इनें लौकीकमें सवलवाय कहेंछे
तींको लक्षणलि० जींकी आष्यांमें पीडहोय अथवा नहींहोय
अर वेकी आष्यांकीनसां तांवासिरीसी लालहोय चहुंओर ईनेंशि
रोत्पात सवलवायनेत्रको रोगकहिजे. १६ अथ शिरोहर्ष नेत्रका
रोगको लक्षणलि० जोपुरुष अज्ञानथकी ईसवलवायको जतनन
हीकरे तींकी आंषिमें आंसूं वारंवार वहोत पडिवोहीकरे अर वा
नेत्रांसूंक्यूं भीदीसैनहीं ईनें शिरोहर्ष नेत्ररोगकहिजे. १७ अथ
नेत्रांकोरोगगयो नहीं तींको लक्षणलि० नेत्रमें पीडरहे अर वेमें
ललाईरहे अर वेमें पाजिरहे अर वेमें सूलभीरहे तदिजाणिजे ई
का नेत्रमेंरोगछे रोगगयोनहीं. १८ अथ नेत्रकोरोगजातो रह्यो
तींको लक्षणलि० नेत्रमेंक्यूंभीपीडनहीरहे अरपाजक्यूंभी आवे
नहीं. अर वेंकेसोजोहोयनहीं अर आंसूं उगेरे वेमें क्यूंभी आवेन
हीं. अर वा नेत्रांको निपटआछयो वर्णहोय अर मिहीभी सर्व वस्त
जथार्थ दीसैतींका नेत्रकोरोगगयो जाणिजे. २ यापरीक्षा अर नेत्र
रोग वालाके अतनीवस्तकरिजे नहीं सुरमाउगेरे काजलघालिजे
नहीं घणोघृतपुवाजेनहीं अर कपायली पटाई उगेरे कुपथ्य करा
जैनहीं गरिष्टभोजनकराजे नहीं स्नानकराजेनहीं पानउगेरे गरम
वस्तु पुवाजेनहीं जितेनेत्रांके आरामहोय जिते इति नेत्रांका सम
स्तरोगांकीउत्पत्तिलक्षण निदानसंपूर्णम् अथ समस्तनेत्ररोगकाज
तन लि० नेत्रांकारोगवालानें लंघन अर लेप अर स्वेदकर्म अर सि

न. टी. उपचारथीं आंकानेत्रांका रोगचाल्या जायछे, इयांकालक्षण बहाविलक्षणतासों जाण्याजायछे जैथे कोई भारवाहीहोयछे अर मारचो पण अनजुक होयछे इयांका भार उतर जायछा पाछे नीरांतवंूंरछे जीनें सुपहोय भियानगुसीहोयछे.

रकी नसकी सिरछुडावो अर आश्चोतनकर्म करिवो अर ईनं आदि लेर औरजतन त्यांकरि नेत्रांकाविकारसर्व जायछे. अथ आंपिदू पणी आई होय तींको जतनलि० जोंकीआंपिदूपणी आईहोयतींके दिन ३ तांईतो अंजनादिक कीजेनहीं ओनेत्रका दूपणाकूकाचो जाणिपाछे नेत्रको दूपणापणोचौथे दिनपकिजायतदिनेत्रमेंअंजन औपदि करेतो ओनेत्र वेगो आछ्योहोय १ हेमंतऋतुअर शिशिरऋतुमेंतो अंजनमध्यान्हिमें करिजे अर ग्रीष्मऋतु अर शरदरितुमें मध्यान्हपहली अंजनकीजे अर वर्षारितुमें वादल नहीं होय तदि अंजनकीजे. अर वसंतरितुमें चाहेतदिही अंजनकीजे जो सुरमाउगेरे अंजन करेतो ईंके नेत्ररोग कदेही होयनहीं प्रथमतो वांईआंपि आंजिजे पाछे जीवणी आंपि आंजिजे. यासंप्रदायछे अथ आंपिदूपणीको लेपलि० हरडेकीछालि सींधोलूण सोनागेरु रसोत ये वरावरिले त्यांनें जलसूं मिहीवांटि नेत्रांऊपरि लेपकरेतो सर्व नेत्रांका रोगजाय. १ अथ दूसरो लेपलिप्यते लोहकापात्रमें नींबूंको रसनापि पाछे ये रसनें स्यूंपेक जाडोकरे पाछे नेत्रऊपरि लगावैतो नेत्र दूपताआछ्याहोय १ अथ नेत्रकादुपिवानें तत्काल दूरिकरे सोलेपलिप्यते अफीममासो १ फुलाईफिटकडीमासो १ लोद मासो १ यांनें नींबूका रसमेंवांटि यांनें स्यूंलोहकी कुडछीमें गरमकरि पाछेंयांको नेत्रांऊपरि लेप करेतो नेत्रतत्काल दूपतारहै ३ अथ नेत्रका आछ्या होवाको औरलेप लिप्यते मुलहठी गेरु सींधोलूण दारुहलद रसोत ये वरावरिले त्यांनें जलसूं मिहीवांटि नेत्रऊपरि लेप करेतो नेत्रका दूपिवाका सर्वरोगजाय. ४ अथ आंपदूपे तींका आछ्या होवाकी पोटलीलि० पठाणीलोद मासो

[illegible]

१ फुलाई फिटकडी मासो १ रसोत मासो १ महलौठी मासो १ यांनैं मिहीवांटि गवारका पाठाका रसमैं अथवा पोस्तका पाणीमैं अथवा जलमैं मासो १ भरकीपोटलीकरिदूपता नेत्रका ऊपरिवार वार फेरैतौ नेत्र आछ्या होय. ५ अथ नेत्रमैं वायकरि सूल चाल तीहोय तींकै आछ्योहोवाको सेक लि० पठाणीलोदनैं मिही वांटि वेनैं कपडासूं छाणिवेनैं घृतमैं भूनेपाछे वेनैं गरम पाणीसूं सेकैतौ नेत्र आछ्याहोय. ६ अथ नेत्ररोगनैं आछ्याकरिवाकैवास्तै ईतरै अतनाजतनकरैतौ वैद्य ठगावैनहीं, ईसंप्रदायसूं सो जतन सारंग धर वाग्भटादिकांकामतसूं लि० सेक १ आश्च्योतनकर्म २ पींडी वांधणी ३ विडालकर्मनाम आंष्यांऊपरि लेपकरावो ४ तर्पणनाम नेत्रमांहि घृतरसादिक घालणो ५ पुटपाक ६ अंजन ७ शस्त्र कर्म ८ ईप्रकार नेत्ररोगका जतन कराजै. अरंडकापान वकल जड यांनैं औटाय यांको जलकरि ईजलनैं वकरीका दूधमैं औटा वै योजलवलिजाय दूध आयरहै तदि वेदूधनैं क्योंगरमकरि आं पिऊपरि तरडोदेवै सौ १०० वार वोलैजितैतौ वायका दूपिवाकी आंपि आछीहोय ७ अथवा दूधमैंक्यूं सींधोलूण नापि गरमकरि सुहावतौ इहींतरैं आंपिऊपरि तरडोदेतौ वायकी आंपि आछीहोय. ८ अथवा हलद दारुहलद सींधोलूण यांमैं दूधपकाय ईदूधको आंपिऊपरि तरडोदेतौ आंपि आछीहोय. ९ अथ गरमीसूंआंपि दूपणी आई होय तींको सेकलिप्यते पठाणीलोद महलौठा यांनैं मिहीवांटि घृतमैं सेकी पाछे वकरीकादूधमैं यांनैंपकावै पाछैईदूध को आंपिकै तरडोदेतौ गरमीका दूपवाकी आंपि आछीहोय. १० अर लोहीका दुष्टपणासूं आंपिदूपै तींकोभी योही जतनछै. ११

न. टी. आरामहुवापाछे, मनुष्य नेत्रांकैवास्ते नावडो, शीत, तावडो, हवा, घटाईपणी महनत पणोनेत्रांसूं देखणो, पणोदूरकी दृष्टिपसारणी, अर नेत्रांनैं पणीठंडी ओसरी, अथ वाकोईवी चीज पाळणी नहीं. नेत्रांकै कोईप्रहार लगाणादेनहीं.

रकी नसकी सिरछुडावो अर आश्चोतनकर्म करिवो अर ईनैं आदि लेर ओरजतन त्यांकरि नेत्रांकाविकारसर्व जायछे. अथ आंपिदूषणी आई होय तींको जतनलि० जींकीआंपिदूषणी आईहोयतींकै दिन ३ तांईतो अंजनादिक कीजैनहीं ओनेत्रका दूषणाकूकाचो जाणिपाछै नेत्रको दूषणापणोचौथे दिनपकिजायतदिनेत्रमेंअंजन ओषदि करैतो ओनेत्र वेगो आछ्योहोय १ हेमंतऋतुअर शिशिरऋतुमेंतो अंजनमध्यान्हिमें करिजे अर ग्रीष्मऋतु अर शरदरितुमें मध्यान्हपहली अंजनकीजे अर वर्षारितुमें वादल नहीं होय तदि अंजनकीजे. अर वसंतरितुमैं चाहेतदिही अंजनकीजे जो सुरमाउगैरे अंजन करैतो ईके नेत्ररोग कदेंही होयनहीं प्रथमतो वांईआंपि आंजिजे पाछे जीवणी आंपि आंजिजे. यासंप्रदायछे अथ आंपिदूषणीको लेपलि० हरडेकीछालि सींधोलूण सोनागेरु रसोत ये वरावरिले त्यांनैं जलसूं मिहीवांटि नेत्रांऊपरि लेपकरैतो सर्व नेत्रांका रोगजाय. १ अथ दूसरो लेपलिष्यते लोहकापात्रमें नींबूंको रसनापि पाछे ये रसनैं क्यूंयेक जाडोकरे पाछे नेत्रऊपरि लगावैतो नेत्र दूपताआछयाहोय १ अथ नेत्रकादूपिवानें तत्काल दूरिकरै सोलेपलिष्यते अफीममासो १ फुलाईफिटकडीमासो १ लोद मासो १ यांनैं नींबूका रसमेंवांटि यांनैं क्यूंलोहकी कुडछीमें गरमकरि पाछेवेंको नेत्रांऊपरि लेप करैतो नेत्रतत्काल दूपतारहै ३ अथ नेत्रका आछ्या होवाको ओरलेप लिष्यते महलोठी गेरु सींधोलूण दारुहलद रसोत ये वरावरिले त्यांनैं जलसूं मिहीवांटि नेत्रऊपरि लेप करैतो नेत्रका दूपिवाका सर्वरोगजाय. ४ अथ आंपदूपे तींका आछया होवाकी पोटलीलि० पठाणीलोद मासो

न. टी. ज्यांकानेंमहलका, मस्तकदुखको, मनमगन, ज्याकाविषमैउमावाधिक गाव आ- १ अरनेंधांसूं पर्णावारीकवस्तुदीपै, भरंगमादिलेर मांघपदार्थीम्हदीपै भाईकोलोभपदांव नहीं, ज्यांका नेत्ररोग आपछे ज्यांमें ये लक्षण होयछे.

१ फुलाई फिटकडी मासो १ रसोत मासो १ महलौठी मासो १ यांनैं मिहीवांटि गवारका पाठाका रसमैं अथवा पोस्तका पाणीमैं अथवा जलमैं मासो १ भरकीपोटलीकारिदूषता नेत्रका ऊपरिवार वार फेरैतौ नेत्र आछ्या होय. ५ अथ नेत्रमैं वायकारि सूल चाल तीहोय तींकै आछ्योहोवाको सेक लि० पठाणीलोदनैं मिही वांटि वेनैं कपडासूं छाणिवेनैं घृतमैं भूनेपाछे वेनैं गरम पाणीसूं सेकैतौ नेत्र आछ्याहोय. ६ अथ नेत्ररोगनैं आछ्याकरिवाकैवास्ते ईतरै अतनाजतनकरैतौ वैद्य ठगावैनहीं, ईसंप्रदायसूं सो जतन सारंग धर वाग्भट्टादिकांकामतसूं लि० सेक १ आश्च्योतनकर्म २ पींडी वांधणी ३ बिडालकर्मनाम आंष्यांऊपरि लेपकरावो ४ तर्पणनाम नेत्रमांहि घृतरसादिक घालणो ५ पुटपाक ६ अंजन ७ शस्त्र कर्म ८ ईप्रकार नेत्ररोगका जतन कराजै. अरंडकापान वकल जड यांनैं औटाय यांको जलकरि ईजलनैं बकरीका दूधमैं औटा वै योजलवलिजाय दूध आयरहै तदि वेदूधनैं क्योंगरमकरि आं पिऊपरि तरडोदेवै सौ १०० वार वोलैजितैतौ वायका दूपिवाकी आंपि आछीहोय ७ अथवा दूधमैंक्यूं सींधोलूण नापि गरमकरि सुहावतौ इहींतरैं आंपिऊपरि तरडोदेतौ वायकी आंपि आछीहोय. ८ अथवा हलद दारुहलद सींधोलूण यामैं दूधपकाय ईदूधको आंपिऊपरि तरडोदेतौ आंपि आछीहोय. ९ अथ गरमीसूंआंपि दूषणी आई होय तींको सेकलिप्यते पठाणीलोद महलौठी यांनैं मिहीवांटि घृतमैं सेकी पाछे बकरीकादूधमैं यांनैंपकावै पाछैईदूध को आंपिकै तरडोदेतौ गरमीका दूषवाकी आंपि आछीहोय. १० अर लोहीका दुष्टपणासूं आंपिदूषै तींकोभी योंही जतनछै. ११

न. टी. आरामहुवापाछे, मनुष्य नेत्रांकैवास्ते तापडो, शीत, शरदी, हवा, पटाईपणी महनत घणीनेत्रांसूं देषणो, घणीदूरकी दृष्टिपसारणी, अर नेत्रांनें घणीठंडी मोषणी, अर वाकोंईभी चीज घालणी नहीं. नेत्रांकै कोईमकार उजावादेनहीं.

अथवा त्रिफला लोद महलौठी मिश्री नागरमोथो यांनैं सीतलज लसूं मिहींवांटि ईंको नेत्रकै तरडो देतौ लोहीसूं दूपती आंषि अ छीहोय. १२ अथ आश्च्योतनकी विधिलिष्यते आश्च्योतन कर्मर तिनैं नहीकीजै. आंषि उघाडिरापै तीमैं आठबुंद ८ औषधांका रसकी नाषिजै. सीतकालमैं गरम नाषिजै उष्णकालमैं सीतल ना पिजै. १३ वायकी आंष दूषैतौ तीषी औषदिनाषिजै कफकी आं पिदूषैतौ तीषी लूषी अर ऊनी औषधिको रसनाषिजै. १४ अथ वायसूं आंषिदूषै तींको लेपलिष्यते नींबका पानांकोरस पाणीघा लि काढे तीमैं लोदनैंवांटि गरमकरै पाछे वेंकोलेपकरै आंषि ऊप रितौ वायकी रक्तपित्तसौं दूपती आंषि आछीहोय १४ अथ रक्त पित्त अर वायसूं आंषिदूषै तींको जतनलि० नेत्रनैं उघाडि स्त्रीका दूधकाटोपा ८ नाषैतौ गरमीकी लोहीकी दूपती आंषि अछीहोय. १५ अथ वायसूं आंषिमैं रूलाचालै अर जतनकया आरामहोय नहीं तींकाललाटकी नसकीसीरको क्यूं लोहीकढाजै. अथवाभ वारा ऊपर डामदेतौ नेत्रकारूला अछयाहोय, १६ अथवा सह जणाका पानाकीपिंडी अथवा नींवका पानाकीपिंडी नेत्रऊपरिबां धैतौ कफका नेत्रका रूलाजाय, १७ अथ नेत्रमैंगरमीकारूलाचा लै तींकाजतनलिष्यते आंवलानैं पाणीसूंवांटि वेंकीपिंडीबांधै अ थवा वकायणका पानाकीपिंडीबांधैतौ नेत्रका गरमीकारूलाजाय १७ अथवा त्रिफला लोद यांनैं कांजीका पाणीमैंवांटि पाछे यांनैं घृतमैंतलै यांकीपिंडीबांधैतौ गरमीका अर कफका रूलाजाय १८ अथ नेत्रमैं रूला अर सोई पाज होय तींकाजतनलि० सूंठि नींव

* नेत्रकाकारणासूं मस्तकमैं वेगवाछेछे. ज्यांनैंरूक्षाकदेछे. [illegible] यछे. [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] [illegible]. [illegible].

कापान ईमैं क्यूं सींधोलूण नाषि यानैं मिहीवांटि ईकीपिंडी नेत्रके वांधैंतौ नेत्रकारूला सोई षाज. ये सर्वजाय. १९ अथ नेत्रकी गुहांजणीको जतन लि० नेत्रकी गुहाजणीने घृतसूं सैंके पाछे वेगुहाजणीनै शस्त्रसूं फोडे वेऊपरि मेणसिल हरताल तगर सींधोलूण ये वरावरिले यानें सहतसूं मिहीवाटि ईको लेपकरैतौ गुहाजणीजाय २० अथ नेत्ररोगवास्तै तर्पणकिविधिलिख्यते जीजायगां पवन चालैनहीं तहांसूधौं सुवाणीजें. पाछे वे नेत्रऊपरि चोगडदाई ऊडदां कोचून मिहीपीसि वेंनै पाणीसूं ओसणिवेंकी नेत्रांकैवाडिकीजै अंगुल २ कीपाछे वेमैं घृतक्यूं गरमकरि सुहावतौ अथवा सौ १०० वारकोधोयो अथवा दूधईमैं राषे जितै १०० वारकी गिणतीगिणै तितनैं राषैतौ नेत्रकारोग बांकापणो बांफणीजातीरही होयसो आपि आछीतरे उगडैनही सौतिमिर फूलां मथवाय रूला येसारा रोग ईतरपणसूं जायछे. योतर्पण वादलामें उष्णकालमें चिंतामें भ्रममें नहीकराजे २ इतितर्पणविधिः

अथ नेत्रांजन लिख्यते शंखकीनाभि वहेडाकीमींजी हरडैकीमींजी. मैणसिल पीपलि मिरचि कूठ वच येवरावरिले यानें वकरीका दूधसूं मिहीवाटि अंजन करैतौ फूलो तिमिर नेत्रांमैं मांसकीवृद्धि नेत्रमैं काच आयो होय जीनें पटलनैं रातींधानैं ओर नेत्रांका रोगनैं यो अंजन दूरि करैछे. २२ इतिचंद्रोदयगुटिका. अथ लेपनीगुटिका लिख्यते कणगचका वीजनैं मिहीवांटि यांकै केसूलाका रसकी घणी पुटदे पाछैयांकीगोलीकरे पाछे ईगोलीनें पाणीसूं घसि अंजन करैतौ फूलाने आदिलेर नेत्रका सर्वरोग जाय. २३ अथ दंतवर्ति लिख्यते. सूरकोदांत गऊकोदांत गधाकोदांत संपकीनाभि

न. टी. नेत्राकारोगांमैं अंजनकैवास्ते जोचंद्रोदयगुटिकालिषीछे जीमें शंसकीनाभिलिषीछे सो.वानाभीनामछे. जोशंसको मध्यभागछे. जीमें मांटाछापणाहोयछे अर वैंकीकठनतापनीछे. जीमूंअंजनमें छानीछे.

अविंधमोतीं समुद्रकाझाग येसारा बराबरिले यानें मिहींबांटि यांको अंजन करैतो सर्वप्रकारका फूलाजाय. २४ अथवा कमलगट्टा सहजणाकाबीज नागकेसरि यानें मिहींबांटि अंजन करैतो नींद आवैनहीं. २५ इतिनींददूरिहोवाको अंजनस० अथ रोपणी गुटिकालि० तिलकाफूल ८० पीपलीकाबीज ६० चवेलीकाफूल ५० मिरचि १६ यानें मिहींबांटि गोली करिराखे पाछै गोलीनें पाणीमें घसिईको अंजनकरैतो तिमिर अरजुनरोग फूलोमांसवृद्धिनें आदिलेर सर्वरोगजाय २६ अथ स्नेहनीगुटिका रसोत दोन्यूंहलद चवेलीकाफूल अथवापान नींबकापान यानें मिहींबांटि गोबरकारससूं अंजन करैतो रातींधोजाय २७ अथ द्वितीयस्नेहनी गुटिका लि० आवलाकाबीज बहेडाकाबीज हरडैकाबीज यानें मिहींबांटि यांको अंजन करैतो नेत्रकापाणीनें अर वातरक्तरोगनें यो अंजन दूरिकरैछै. २८ अथवा नीलोथूथो सोनामूषी सींधोलूण मिश्री संपकीनाभि मैणसिल गेरू समुद्रकाझाग कालीमिरचि येबराबरिले यानें मिहींबांटि सहतसूं अंजन करैतो तिमिरनें नेत्रमें कांचआवोहोय तीनें फूलनैंयो अंजन दूरिकरैछै. २९ अथ फूलकादूरिहोवाको अंजन लिख्यते चीणियां कपूरनें बडकादूधसैंतो अंजन करैतो दोयमहिनाको फूलोजाय. ३० अथ नींदकोदूरिहोवाको अंजन लिख्यते दोयकालीमिरचि मिहींबांटि घोडाकी लालसूं अथवा सहतसूं अंजन करैतो नींदजातीरहै. ३१

अथ तंद्राका दूरिहोवाको अंजन लिख्यते. मूंगो कालीमिरचि कटकी वच सींधोलूण यानें बराबरिले यानें बाछडाका मूतसूं घसिईको अंजन करैतो तंद्राजाय. ३२ अथ रसांजन गुटिका रसोत रा

न. टी. निद्रानाश अथवा अतिनिद्रा [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

ल चवेलीकाफूल मैणसिल समुद्रकाझाक सींधोलूण गेरू काली मिरचि येवरावरिले यांनैं मिहींवांटि सहतमैं अंजन करैतौ नेत्रकी षाजिनैं वाफणीजाति रहीहोय त्यांनैं योआच्छीकरै ३३ अथ मोतियाबिंदका दूरिहोवाको अंजन लि० गिलवैकोरस टंक २ सहत मासो १ सींधोलून मासो १ यांसारांनैं येकठां करि मिहींवांटि अंजन करैतौं मोतियाबिंदतिमिर धूंधि कांचनैं अदिलेर सर्व रोग जाय ३ अथवा साठीकीजडनैं स्त्रीकादूधसूं घसी अंजनकरैतौ सर्व रोगनेत्रांकी षाजि ज़ाय साठीकीजडनैं सहतसूं घसि अंजन करैतौ नेत्राकोपाणीपडतोरहैं. साठीकीजडनैं घृतसूं रगडि अंजन करैतौ फूलोजाय. साठीकीजडनैं तेलसूं घसि अंजन करैतौ तिमिरजाय साठीकीजडनै कांजीसूं घसि अंजन करैतौ रातींधोजाय ३५ अथ नेत्रांमैं पाणीपडै तींका दूरिहोवाको अंजन लिष्यते बोलका पानको काढोकरितींको रसकाढै पाछै तींरसनै छाणि ओरूं गाढो करै पाछै ईमैसहतमिलाय ईको अंजन करैतौ नेत्रांको पाणी पडतो रहै ३७ अथ निरमलिका फलनें पाणीमें घसि ईंको अंजन करैतौ नेत्रांको पाणी पडतो रहै ३७

अथ नेत्रांका निर्मल करिवाको अंजन लिष्यते निर्मलीका फलने सहतमैं घसि ईमैंक्यूं कपूर मिलाय अंजन करैतौ नेत्र निर्मल होय ३८ अथ जींका नेत्रमैं मोतियाबिंदकाच उगैरै यासूं झैनहीं तींका आछ्या होवाको अंजन लिप्यते कालासापका मांसको घृत अर संपकीनाभि अर निरमलि यांनैं मिहींवांटि नेत्रांमैं अंजन करैतौ मोतियाबिंदउगैरै रोगजाय अर ईनें सूझै ३९ अथवा मुरगाका अंडाकाछ्यांत मैणासिल कांच संपकिनाभि चंदन सीं

न. टी. निर्मलिनाम औषधीलिषीछे. सोकृतकनाम वृक्षकाबीजछे. यामैं नेत्रनाफकरणो शक्तिछे. जैसेपोमागाकोगृद्लपो जलपाशोषराकोनींको पात्रभरकर निर्मलीनें जलमैंबक्कर पानलमैं पाल देवैतो पात्रपढीमैं जलनिर्मलहोयछै.

धोलूण येसर्व वरावरिले यांनें मिहींवांटि अंजन करैतो मोतियाविंद फूलानें आदिलेर नेत्रकारोगजाय ४० अथ नेत्रकासर्वरोग दूरि होवाको अंजनलि० कालिमिरचि मासा २ पीपलि मासा २ समुद्र झाग मासा २ सींधोलूण मासा २ सूरमो मासा २ यांनें निपट मिहीवांटि चित्रानक्षत्रकेदिन ईकी अंजन करैतो फूलो पाजि काचने त्रमें आयो होय तींउगैरे नेत्रका सर्व रोगजाय ४१ अथ नेत्रका सर्व रोग जावावालो अंजन लिष्यते पपरयानें मिहीवांटि पाछे वेनें जलमें डवोयदे पाछे वेंके ऊपरिलो पाणीलेतो जाय तींनें जुदोरापे वारवारको पाणी अर नीचैरह्यो जोपपरयाको चूर्ण तेनें लेनहीं अर औपपरयाको पाणीछे सोजुदापात्रमें सुकायदे तींकी पापडी करिले पाछे वेपापडीकें त्रिफलाका रसकी पुट ३ दे पाछे ईपापडी को दशऊहींसो ईमें कपूर मिलावे पाछे इनें ओरू मिहींवांटि पाछे ईनें अंजन करैतो नेत्रांका सर्वरोगजाय ४२ अथ नेत्रां सर्व रोग हरवाको ओर अंजन लि० सुरमानें अग्निसूं गरम करि त्रिफलाकारसमें वारसात ७ डवोवेपाछे स्त्रीकादूधमें ऐसींतरे वार ७ डवोवेपाछे गायका मूतमें इसीतरे वारंवारतातो तातोकरि ईसुरमानें डवोवे पाछे ओरू स्त्रीकादूधमें वार ५ डवोवेपाछेईनें वांटि ईके अंजन करैतो नेत्रांका सर्वरोगजाय ४३ अथनेत्रकी दृष्टिकरिवावालीसलाका लि० सीसानें अग्निमें गालि गालि त्रिफलाकारसमेंवारसो १०० डवोवे पाछे ईसीही तरे जलभांगराका रसमें वार ५० डवोवे पाछे इसीही तरे सूंठिका रसमें वार २५ डवोवे पाछे ईसीही तरे घृतमें वार ५० डवोवे पाछे ऐसेंहीगोमूतमें वार २५ डवो

---

८ श्लो० सीसांकुपूरितमुखः प्रतिवासरं यः काश्यपेनपयसंदिनपंचकंम. । भांगेकलीषु नयमोन कदाचिदक्षिरोगमयक्षा विपुलांमजतेमनुष्यः ॥ १ ॥ अर्थ-दिनदिनमनिपक्षालिनमें ।।ओर्थी मुंहमें मारपूसार्णतनकमं नेत्रांकनतीनराजनीदेहपर्वमाछिदके सो मैं ।।दनमहिषु:नरपावाडी नेत्रघंबीदीहमारामदोप आंगपरमैंकिर्सा।.

वै पाछे सहतमें वार २५ डवोवै पाछे वकरीका दूधमें वार २५ ड
वोवै पाछे ईसीसाकी सलाकाकरै पाछे ईसलाकानें नेत्रमें फेरैतो
सर्वप्रकारका नेत्रका रोगजाय ४४ अथ नयनामृत अंजनलि० सो
ध्यासीसानें गालिवेवरावर वेमें पाणी घालिदीजे पाछे पाराकी व
रावर वेमें सुरमोघालिअर सारांको दस वोहिंसो ईमें भीमसेनी
कपूर नाषे पाछे यांसारांनें मिहिवांटि ईको अंजनकरैतो नेत्रका
सर्वरोग जाय ४३ अथ सर्प उगेरैका जहरका दूरिकरिवाको अं
जनलि० जमालगोटाकीमाहिलि मींजीलीजे तीनें नींवूका रसकी
पूट ३१ दीजे पाछे ईकीगोलिकीजे पाछे ईंगोलीमें मनुष्यकी लाल
सौंघसि नेत्रमें अंजन करैतो सर्प उगेरैका जहरदूरिहोय. ओआ
दमी मूवोभीजीवे २६ येसारा अंजन सारंगधरमें लिष्याछे. अथ
आंषि दूषति होयतींका आछ्योहोवाको श्रीहजूरको वतायो नूकसो
लि० अतारकिदवा अरुजांगी हरडे ये दोन्यूं ओषदि पाणींमें घसि
आंष्यांके चोगडदा लेपकरैतो वायपित्त कफयां तीन्यूं आजारांमें
कोईविकारसूं आंषि दूषणी आई होयतौ वेआंषिके शीघ्र आ
रामहोय योनुकसो अजमायो हुवोछे. अथवा वाग्भटका मतसूं
मोतियांविंदको लक्षणलि० कच्चामोतियाविंदको जालो सलाकाकरि
उतारिजेनहीं. पक्कामोतियाविंदको जालो उतारिजे अथपक्कामो
तियाविंदको लक्षणलि० माणास्यांऊपरि दहींसरीसो मठासरीसो
वूंद आयजाय अर वेनैक्यूंभी दीसैनहीं अरवे नेत्रमें पीडादिक
क्यूंभी होयनहीं तीनेत्रको सलाकाकरि जालोउतारिजे अर
इतना आदमीको नेत्रको जालो उतारिजे नहीं पीनसका रोगवा
लाको पासिवालाको अजीर्णवालाकोडरपस्यालको वमन कर्‍यो

न. टी. अतारकीदवाळिपीछे. जीनेअंजरूतकहेछे अरया औषधीगुणकारीछे. परंतु अंज
रूतकीआपणां नीमकोगुंदलेणोचाहिजे. अरयावातप्रसिद्धछे. नेत्रकारोगमें नीमकाफळ
फूल. पान. रस. सर्वकामआवेछे.

होय जींको माथाका रोगवालाको अर कानमें पीडाचाले नेत्रमें सू
लचाले तींको इतना आदम्यांका नेत्रको जालो उतारिजे नहीं अ
रश्रावण कार्तिक चैत्र यां महिनामांहि जालो उतारिजें नहीं. अर
साधरण कालहोय तदि जुलावदे शरीरनें शुद्धकारि भोजनकारि
आछ्यानिर्मल स्थानमें वैठाय पवनादिक जेठे नहींहोय तेवैद्य म
ध्यान्ह पहली आंप्यांका रोगमें प्रवीण ऐसोवैद्य आंप्याका रोग
नें दूरिकरिवावालो ऐसाकने जालोलिवावें ओवैद्यहैसो वैनेत्रका
रोगीनें पालथीकारि वैठावें वेरोगीके पीछे शाणा आदमी चतुरनें
वैठावे ओ आदमी दोन्यूं हाथांसूं रोगीनें पकडे वैनें हालवादे नहीं
ईसीतरे वेनेंवैठावे पाछे वैकी आंपिमें ओवैद्यसलाका घाले निप
ट चतुराईसूं वैकीआंपिमें सलाकाफेरे नेत्रका प्रांतभागमें जालानें
फोडिसारानेत्रकोजालो दूरिकरे. पाछेवे जालामांहिसूं वेमाणस्या
ऊपरली धाविकारकी बूंददहपडे तदि ईमनुष्यनेंसर्ववस्त जतार्थ
दीपे अर सलाकाफेर्यां पहलीनेत्रनें मूंडाकी वाफसूं फूंकदे पसेवयु
क्तकरिले अर वैद्य आपका अंगुष्ठासूं वेरोगीका नेत्रमसलि नेत्र
कोमेल येकठोकरिले पाछे शलाकासूं जालोले अर वैद्यभी आप
कोहाथ ओर तरे हलावैनहीं. ईविधिसूं नेत्रकोजालो लेपाछे रोगी
कीवणीपातरजामाकरि वैनें सूझायदे पाछे वेरोगीकी आंपिऊपरि
घृतका फोहावांधे अर वेरोगीनें सूंधोसुवावे पवन चिलकाउगेरे
आवादेनहीं ईसी जायगासुवाणो अर वे रोगीको सिरउगेरे सारो
सरीर हलायवादे नहीं अरवे रोगीनें छींक पास डकार थूकवो घ
णांपाणीपीवो दांतण स्नान पेदउगेरे कर्म करिवादेनहीं अर वैनें
औंधोसोंवादेनहीं निपट हलको भोजनकरावे घृतादिक गरिष्ठसों

न. टी. [illegible] नेत्रका जालो [illegible] नेत्रके जाला [illegible]
को [illegible] उतारमो [illegible]. कारण [illegible] मूर्छा [illegible] जालो [illegible]
कमान कोछे. [illegible]

पायवा दे नहीं ईविधि दिन ७ करैपाछै क्यूंघृत घालि पतलो हल
को अन्नको पलेवो पुवावै प्यावै पाछै वायनैं दूरिकरिवावाला मि
श्रीनैं आदिलेर द्रव्य पुवावै ईसीतरै मंडल १ तांई रापै क्यूं कुप
थ्य करिवा दे नहीं पवनतेज अर मिहीवस्तनैं देपवा देनहीं अरनेत्रा
नैं सीतलताई होय इसीवस्त दोव उगैरे देषवादे इसीतरै करैतौ
मोतियाविंदनैं आदिलेर नेत्रकासर्वरोग जाय पाछै यांके मोतिया
बिंदको सीतलचसमो लगावैतौ यो रोगईके कदे होयनहीं. यो मो
तियाबिंदको जतन वाग्भटमैं लिष्योछै ४८ अथ पांडुरोगका दूरि
करिवाको अंजन लि० हिंगनैं दडघलकारसमैंघसि नेत्रामैं अंजन
करैतौ पांडुरोगपील्यौ जाय ४९ अथ नेत्राका दूषवाको नारायणां
जनलि० तुलसीकापानांकोरस अर बीलकापानांकोरस येवराव
रिलेपाछै यांदोन्यांनैं कांसीकापात्रमैंघालै अर दोन्यांकी वरावरि
स्त्रीको दूधघालै पाछै यांतीन्यांनैं कांसीकापात्रमैं घालि गजवे
लीका घोटासूंपहरदोयरगडै पाछै वेही पात्रमैं तांवांका घोटासूंपह
रदोय रगडै पाछै ईको अंजन करैतौ नेत्रकोसूल अर नेत्रको पकिवो
तत्काल जाय ५० अथ नयनामृतगुटिका सूंठि हरडैकी छालि कु
ल्त्थ पपस्यो फिटकडी पेरसार मांजूफल येसारीओपदि वरावरि
ले अर भीमसेनी कपूर कस्तूरी अवींधमोती ये एकएक ओपदिका
तोलसूं आधाआधाले पाछै यांसारांनैं परलमैं मिहीवांटि पाछै नीं
वूकारसमैं दिन ५ परलकीजे पाछै यागोली जलमैं घसि अंजन
करैता नेत्रांकोतिमिरजाय अर ईगोलीनैं स्त्रीकादूधसूं घसि अंजन
करैतौ फूलो पटल जाय अर ईगोलीनैं सहतसूं अंजन करैतौ ने
त्रांको जल पडतो रहै अर ईनैं गोमूतसूं आंजैतौ रातींधोजाय

न.टी. नयनामृतनामगुटिकामैं जोपपरयोलिप्योछै सोशुद्धपपरयोलेनोचै.सांकंकावर्नमैं प्रहर २९ आंचदेणी अरभीमसेनीकपूरछै सोईनैं शुद्धकपूरकहैछै अरअवींधमोतीछै मुक्ताफलछै कोईं मोटानहीं पाउदेणां सुक्तानहीं वातछै.

अथ केलिका रससूं आंजैतो नेत्रकी मास वृद्धि जाय ५१ इति नव नाम्रत गुटिका. अथ नेत्रांकी वाफणी जातीरही होय तींको अंजन लि० आंधीझाडाका पानांनें गोमूतमें वांटि पाछे ईंसूं आधो पप खोले पाछे यांदोन्यांनें परलमें वांटि यादोन्यांकैवीचि जसतका मिहिपत्रकरिमेले पाछे ईंके कपडमीटीदे सुकाय आरणा छाणामें गज पुटमें फूंकीदे पाछे स्वांगसीतल हुवां काढे पाछे ईंनें मिहीवांटि ईंको अंजन करैतो नेत्रांकी वाफणी आवे ५२ अथ सीतलाका फूला दूरिहोवाको अंजनलि० गवाकी दाढनें मिहीवांटि वेंको अंजन करैतो सीतलाको फूलोजाय ५३ अथ सबल वायका दूरि होवाको अंजनलि० आंवला अर गंधक सेती मासोतांबो तीनें मिहीवांटि वेंको अंजन करैतो सबलवाय पटलनें आदिलेर नेत्रांका सवैरोगजाय ५४ येसवं जतन वैद्यरहस्यमेंछे. अथ फूलाधूंधिकादूरि होवाको जतनलि० चोपो नीलांथूथो टंक ५ फिटकडीफूलाई टंक ५ पीपली भीजोयवीज काढिले टंक ५ मिश्रीमासा ५ यानेंमिही वांटि काजलकरि यो काजल नेत्रांमें घालैतो फूलो ढलको धूंधिये साराजाय ५५ अथ चंद्रोदयगुटिका० शंपकीनाभि वेहेडाकी मींगी हरडैकीछालि मैणसिल पीपलि कालीमिरचि कूठ वच ये औषदि सवे वरावरिले त्यांनें वकरीका दुधसूं मिहीपीसि गोलीकरि रापे पाछेगोलीनें जलसूं घसि अंजन करैतो तिमिरनें नेत्रका मांसकी वृद्धिनें पटलनें कांचनें रातींधानें अर फूलानें योदूरि करैछे ५६

अथ चंद्रप्रभागुटिका हलद नींवकापान पीपलि मिरचि वायविडंग नागरमोथो हरडैकीछालि ये सर्व वरावरिले यानें मिहीवांटि

१ [illegible] ॥ [illegible] वध १ अर्थ—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बकरीका मूतसूं दिन ३ परलकरै पाछै यांकी गोलिकरि छाया सु
कावै पाछै ईंगोलीनैं गोमूतसूं घसि अंजनकरै तौ नेत्रकाकाचनैंदू
रिकरै अर जलसूं घसिअंजन करैतौ तिमिरनैं दूरिकरैछै सहतसूं
घसिअंजन करैतौ पटलनैं दूरिकरै अर ईनैं स्त्रीका दूधसूं घसि
अंजन करैतौ फूलानैं दूरिकरै ५७ इतिचंद्रप्रभावर्ति० अथ द्वाद
शामृत हरीतकी लि० हरडैकीछालिको भाग १ बहेडाकीछालिको
भाग २ आंवलाका भाग ४ सतावरी टका २ सार टका १ मह
लौटी टंक २ तज टंक ५ सींधोलूण टंक ५ पीपलि टंक ५ अर मि
श्रीयांसारांकी बराबरिले पीछै यांसारांनैं मिहीवांटि टंक २ सहत
अर घृतकैसाथि रोजीनादिन ४९ पायतौ तिमिरनैं पटलनैं नेत्रां
का काचनैं रातींधानैं फूलानैं नेत्रमैं जलआवै तीनैं सबल वायउ
गैरै सर्वनेत्रांकारोगांनैं याद्वादशामृतहरीतकी दूरिकरैछै. ५८ अथ
त्रिफलादिगुटिका त्रिफलाकोरस सेर १ गिलवैकोरस सेर १ आं
वलांकोरस सेर १ जलभांगराकोरस सेर १ अरडूसाकोरस सेर
१ सतावरीकोरस सेर १ बकरीकोदूध सेर १ कमलगटा त्रिफला
महलौटी पीपलि दाप मिश्री कव्याली यांसारांकोरस सेर ऽ॥ ले
यांसारामैं गऊको दूधसेर ३ पक्कोनापै पाछै मधुरीआंचसूंपकावै
येसर्व बलिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईंघृतनैं टका २ भररो
जीना पायतौ नेत्रको तिमिर काच फूलोसर्व० वायउगैरै रोगजाय
५० इति महात्रैफल्यघृतं अथ गरमकाविकार दूरिहोवाको अं
जन लेपकीविधिलि० आंपीदूपै वासोइ होय आवै अंगकैतौ आं
पिमैं अंजनकर्‌यां वा लेपकीया आरामहोय सोध्योसुपेदो मासा
१० तींका सोधिवाकीविधि सुपेदानैं मिहीवांटि चीणीका वासणमैं

न. टी. चंद्रप्रभानामगुटिकाछिपीछै योभेलपीकाआदिमें तोगुटीकाछिपीछै. अंतमें इनें चंद्रप्रभावर्तीछिपीछै. जीमें योहीभेदछै. जोंकीगोलीकरछै योतोगुटिका अर इंकादिवनी वि धीकरछै जीनें वर्तिकहेछै.

घणापाणीसूं धोयेले सुपेदो नीचोंबेठि जाय तदिंवेको पाणीकादि नापै ईतरे तीनवार कारलीजे पाछे अंजरूत ओषदि अत्तारकीमा सा३ लीजे तींकासोधिवाकीविधि अंजरूतनें मिहीपीसे पाछे बेटी वालीस्त्रीको दूधले अर ईमें इतोमिलावे जोपहर आठमें सुसि जाय इतरे पुट ५ दे पाछे कतीरो मासा १ भीमसेनी कपूर रती ४ नि संसतो ओषदि अतारकी मासा २ धोंलोगूंदमासा १ तोलमाफि कसर्व ओषदि भेलीकरे गुलावका जलमें परलकरें पाछे येकजीव हुवा वोरप्रमाण गोलीबांधे पाछे लगावणी होय अथवा आंजणी होयतदि गुलावका जलमें अथवा सादा जलमेंही अंजन तथालेप करेतो गरमका सर्व विकार दूरिहोय ६० इति गरमका अंजनलेप कीवि० इतिनेत्रांका सर्वरोगाकी उत्पति लक्षण जतनसं० अथ कानांकारोगांकी उत्पत्ति लक्षण जतन नामलि० कानांकारोग सुश्रुतमें अठावीस लिप्याछे सोलिपूंछूं कर्णशुल १ कर्णनाद २ वधिर्नामवहरा पणो ३ क्ष्वेड ४ कर्णश्राव ५ कर्णकंडू ६ कर्णगूथ ७ कर्णप्रतिनाद ८ कृमिकर्ण ९ चोटलागिवासूं कर्णमें व्रणहोय १० अर दोपासूं कर्णमें व्रणहोय ११ कर्णपाक १२ पूतिककर्ण १३ वायको कर्णसोथ १४ पित्तकोकर्णसोथ १५ कफको कर्णसोथ १६ लोहीको कर्णसोथ १७ वायको कर्णार्श १८ पित्तको कर्णार्श १९ कफको कर्णार्श २० लोहीको कर्णार्श २१ वायको कर्णके अ र्बुद २२ पित्तको कर्णके अर्बुद २३ कफको कर्णके अर्बुद २४ रक्तको कर्णके अर्बुद २५ मांसको कर्णके अर्बुद २६ मेदको कर्णके अर्बुद २७ नसांको कर्णके अर्बुद २८ चरकमें कर्णपालिके विषे चाररोग वघता कह्याछे. उत्पात १ उन्मथक २ दुःखवर्धन ३ परलेहिन ४

न.टी. गोलीरांकी वा गुटिकाकोऐसेजिसको अंजन होय जडे वैद्यदेवो करणेरी आवश्यकतां छे.ऐसी डाक्टरलोक आंखिका अंजन करणेमें गुजन होवछे. अर गुटिका वापरणे गुजम होवछे.

अथ कर्णशूलको लक्षण लि० जींका कानमें वाय धसिजाय अर ओ कोपकूं प्राप्तिहोय जदि कानमें घणो सूलचलावे ईनें कर्णसूल कहिजै. १ अथ कर्णनादको लक्षण लि० जींकाकानकाछिद्रमें वाय धसिरहैतदि वेपुरषके कानमें भेरीको मृदंगको संषनें आदिलेर अनेक शब्द बोले तीनें कर्णनाद कहिजै. २ अथ वाधिर्यको लक्षण लिष्यते बालक अर बूढो घणां दिनको बहरो जो होय सो आछयो होय नहीं. ३ अथ क्ष्वेडकर्णरोगको लक्षणलिष्यते जींका का कानमें वाय पित्त कफ येधसिजाय अर वेंका कानमें वांस फाडिवा कासा शब्द होय तीनें कर्णक्ष्वेडरोग कहिजै. ४ अथ कर्णश्रावको लक्षण लिष्यते जींकाशिरमेंचोट लागिहोय अथवा जींका कानमें जलपड्योहोय वेंका कानमांहिसूं राधिवहवो करे तीनें कर्णश्राव कोरोग कहिजै. ५ अथ कर्णकंडूको लक्षणलिष्यते. जींकाकानमें कफसंयुक्त वायवढे ओकानमें षाजिकरे तीनें कर्णकंडू कहिजै. ६ अथ कर्णगूंथको लक्षण लिष्यते जींका कानमें पित्तकी गरमी धसिजाय अर कफनै सोसिलै तींका कानमें मली घणी आवे तीनें कर्णगूथ कहिजै. ७

अथ कर्णप्रतिनादको लक्षण लि० ओकर्णगूथ पतलो होजाय अर पाछे ओकानमें आय प्राप्ति होयतीनेंकर्णप्रतिनाद कहिजै. ८ अथ कृमि कर्णको लक्षण लि० जींकाकानमें वुग पतंग जिनावर कान खजुरानें आदिलेर कोई जिनावर धसिजाय तींका कानमेंफ डफडावे. अरवे पुरुषनें पीडकारि घणो व्याकुल करिदे अर वेंकी भूष उगेरै सर्वजातीरहे तीनें कृमि कर्णरोग कहिजै. ९ अथ कर्णवि द्रधीको लक्षणलि० यादोयप्रकारकीछे, एकतो कानमें चोटलागित्र

न. टी. नेत्रांका रोगांके तांई पथ्यापथ्य तो लिष्याहीछे. जींमुजबजाणिलेणी. अर अबे कर्णरोगलिष्याछे सो कर्णनामकानकारोगछे. जांमें विशेष करके बालकांके वहोत सह रावो मोटामनुष्य घणा होयछे.

ण पडिजाय अरयेक दोषासूं कानमें व्रण पडिजाय पाछे वेकानमा हिसूं लोहीराधि वगैरे सर्वनीसरै. अर कानमें दाहवगैरे सर्वरहे तीनैं कर्णविद्रधी कहिजे. १०, ११ अथ कर्णपाकको लक्षण लिख्यते जींका कान पित्तकरि पकिजाय अर वेंका कानमें राधिनीकले सोकादासिरीसी नीसरै तीनैं कर्णपाक कहिजे.१२ अथ पूतिकर्णको लक्षण लिख्यते जींका कानमें व्रणपडे पाछे वेंका कानमें जल पडिवो करै अरवेमें राधिभी पडे तीनै पूतिकर्ण कहिजे. १३ अथ वाय पित्तकफ लोहीका प्रभावसूं जोहोय जाय सोयांका लक्षणसूं जाणिलीजे १४ अर वाय पित्त कफ लोही यांका प्रभावसूं कानमें अर्श पैदा होयछे मस्सारूप सोयाका लक्षणासूं वेभी जाणि लिज्यो अर कानमें वायपित्त कफ लोही मांस मेद नसांये सातूही येक अर्बुदनाम रोगगांठि रूप होयछे. तीनैंभीकरैछे. तींका लक्षण पाछे कह्याछे. अर्बुदरोगमेंसो जाणि लीज्यो ७ अथ ये कानमे सर्व २८ रोगछे चरककामतसूं कानकेनीचे ४ रोगछे सोलिखूंछूं वायको १ पित्तको २ कफको ३ लोहीको ४ अथ कर्णपालिकेविषे ५ त्यांकानाम लक्षणलि० अथपरिपोटकको लक्षण लि० कानाकी लोलि कोमलवणीहोयछे ईनें स्त्री वधावाको करै तदि कानकी लोलिसूजि जाय अर वेमे पीडहोय आवे ईनैं परिपोटक कहिजे. १ अथउत्पातको लक्षण लिख्यते. कानकी लोलीमे भार्यो गहणो पहरै तींका संजोगसूं अथवा कहींतरे लोलीने पैचिवासूं लोलिउपरि सोजो होयहीआवे अरदरद होय अर पकिजाय अरपीडहोय तीनैं उत्पातरोगकहिजे. २ अथ उन्मथको लक्षणलिख्यते. जींकानकी लोलि

न. टी. कर्णरोगके. गोटामांहासंबंधे अनेक प्रकारका लिख्याछे. [illegible] यहुनाछे, पूरवो कोनिदानलिख्याछे, वाग्भटसुश्रुतमेंकानिदानका भेदमें लिख्याछे. अब औषधीनोंप्रयोग लिखाछे, परंतु औषधोंमें [illegible] औषधीपण्याछे. यासे निदानभेदसे [illegible] [illegible] औषधीकरीतो आरामहोय. अगस्तकर्णरोगनों पुस्तकमें आराम होवछे.

हठसूं बधायोचाहे तादिवेंठे वायकोपकरि कफसंयुक्त सोजानेंकरे अरऊठेही पाजिनेंकरे ईनें उन्मथ कहिजे. ३ अथ दुःखवर्धनको लक्षणलि० जींका कानकीलोली दुःखसूं विंधिगईहोय अरऊठेपीड होय अर पकिजाय तीनें दुःखवर्धन कहिजे.

अथ परिलेहिनको लक्षण लिष्यते जींका कानकी लौलीऊपरि कफ लोहीका कोपकरि सस्यूं सरीसी फुणस्या होय जाय अर ऊठे पाजि आवे अरदाहहोय अर पकिजाय तीनें परिलेहिन कहिजे. ५ अथ कर्णरोगका जतनलिष्यते. आदाको रस सहत सीं धोलूण तेल ये सर्वयेकठांकरि यांनें क्यूं गरमकरि कानमें घालेतो कानकी पीडकर्णनाद अर वहरा पणो अरकर्णक्ष्वेड ये सारारोग दूरिहोय. १ अथवा ल्हसणको रस अदाको रस वण्याकी जड कोरस केलिकोरस यांसारांनें येकठांकरि क्यूं येकगरमकरि कानमें नापेतो कानकीपीड ऊगेरे कानको रोगजाय. २ अथ कानकी सूल दूरिहोवाकोजतनलि० आककाकोमल पानानें पटाईसूं पीसिईको रसकाढे ईमें तेल अर लूणनापे पाछे ईनें थोहरीकी लकडीमें घाले पाछे वेलकडीके कपडमिटिकरिवेंको पुटपाक करिवेंको रसकाढे पाछे ईरसनें क्यूंगरमकरि कानमें घालेतो कानकी सूलजाय. ३ अथवा आककापानांके घृतलगाय अग्निसूंवानें तपाय वांकोरस काढे पाछे ईरसनें क्यूंगरमकरि कानमें नापेतो कानकी सूलजाय. ४ अथवा वकराका मुतमेंसींधोलूण नापि वेंनें क्यूंगरमकरि कानमें नापे तो कानकी सूलजाय. ५ अथवा अरलूकी जडकारसमें मधूरीआंचसूं तेलपकाय औरस वलिजाय तेल आयरहे तदि ईतेलनें कानमें नापेतो त्रिदोषसूं उपजीभी कर्णसूलजाय. ६ अथ वहरापणानें आदि

न. टी. नेत्रकारोग अर कर्णरोगमेंदोषरोगछे. घोतीनजातकारोगछे जांमें प्रथमतो देवीक में रोगी. दूजोदोषरोगी. तीजोप्रकृतिसहजरोगी ज्यांमें देवीका अर दोषजन्यकातो उपाव छे, अर जो प्रकृतिका सुभावसोंछे ज्यांका उपावनहीं.

लेर कानका रोगानें दूरिकरे सोतेललिप्यते. कडवातेलमें सूंठि मिरची पीपलि कुठ पीपलामूल आंवीझाडाकोषार जवषार वीलकी जडकोरस गोमूत येनापि मधूरी आंचसूं पकावें पाछे येसारा वलि जाय तेलमात्र आयरहे तदि ईतेलनें कानमें रापेतो वहरापणानें कानमें शब्दहोय जीनें कानवहतो होय जीनें यांसारां रोगांनें यो तेलदूरिकरेंछे. ७ इति बिल्वतेलम् अथवा वीलका काचाफल यांकोरसकाढि तींमेंसाजीको चुर्णनापे पाछे वेनें पीवेतो कानकीपीडनें कनकावहरापणानें कानमांहिदाहनें यांसारांनें दूरिकरेछे. ८ अथ कानमें राधि वहतीहोय तींका आछ्या होवाको तेल लिप्यते आंवलाका पानांकोरस जामुणीका पानांकोरस महुवाका पानाकोरस वडकीवकलकोरस चवेलीकापानांकोरस यांमें तेलनापि मधुरी आंचसूं पकावे येसर्व वलिजाय तेलआयरहे तदि ईतेलनें कानमें घालेतो कानकी राधिवहतीरहे ९ अथवा स्त्रीकादूधमें रसोत घसिजीमें सहतमिलाय कानमें घालेतो कानवहतो रहे १० अथवा कुठ हींग वचदारुहलद सोंफ सूंठी सींधोलूण यांनें मिहीवांटिबकराका मूतमें घालि अर यांमें तेलनापि मधुरी आंचसूं पकावे येसर्व वलि जायतेल मात्र आयरहे तदि ईतेलनें कानमें घालेतो कानकीराधी वहतीरहे ११ अथ कानमें व्रणपडिगयो होय तींको दूरिहोवाको तेल लिप्यते मोटीसींपाका चूर्णनें कडवातेलमें पकावे पाछे ओतेल कानमें घालेतो कानकोव्रण आछ्योहोय १२ अथवा आंवलासार गंधक टका १ मेणसिल टका १ हलद टका १ कडवो तेल टका ८ भरधत्तूराका पानांकोरस यांसारांकी वरावरिले यांनें मिहीवांटि म

भ. टी. बोदहनीगरबोलछे. पी निरदनाछे. कोरे छिनाछिछे. वतनें घानमें छिद्र पहिये नाक को मनुष्य सन्दापछे. भदत धननूं गुंजीवछे. भर देगीदी बोरवी भ. ये कनतके दनके आगमनहोयछे.

धुरी आंचसूं पकावै येसर्व बलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंते लनैं कानमैं नाषैतौ कानको व्रण आछ्यौ होय १३

अथ कानमें कृमिपडिगईहोय तींका दूरि होवाको जतनलि० कृमिरोगकादूरिहोवाका जतन पाछै लिष्याछै सोदेषिलीजो १४ अथवा वैंगणकी जडकोरस सिरस्यूंकातेलकै साथि ईंकोधूवों कान में देतौ कानकी कृमिजडपडै १५ अर कानका सोजाको अर कानका अरसका अर कानका अर्बुदरोगका जतन यां पाछिलांरोगां में लिष्याछै सोदेषिलीज्यौ १६ ये सर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथ बहरापणानैं दूरिकरै तींकोतेल लिष्यते मूलिकी जड कोरस कडवोतेल सहत येबराबरिले त्यांनैं क्युं गरमकरि कानमैं घालैतौ बहरापणौ जाय १६ अथवा मिश्री अर इलायची यांनैं मिही बांटि कानमैं राषैतौ बहरापणौजाय १७ अथ कानकीपीडा दूरिहोवाको तेललि० सूंठि पीपलि सींधोलूण कूठ हींग वच लसण तिलांकोतेल पाका आकका पानांकोरस त्यांनैं मधुरी आंच सूं पकावैं येरसउगैरै सारावलिजाय तेल आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमें नाषैतौ कानकीपीडा दूरिहोय १८ अथ कानका सर्वरोगांको हरबाको तेललि० जाडी अर मोटी सींपाकोचून पदमाप हींग तुंबरू सींधालूण कूठ कपासकीमींगी यांनैं बांटि पाछै यांको काढोकरि यांकाढामैं कडवोतेल टका ७ भरनाषै अर हुलहुल कोरस यांसर्वकी बराबरिनाषै पाछै ईंनैं मधुरी आंचसूं पाकावै ये रसउगैरै सर्वबलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंतेलनैं कानमें नापैतौ कामका व्रणनैंराधिनैसिरै जीनैं बहरापणानैं कानका शब्दनैं आदिलेर सर्वरोगांनै योदूरिकरै १९ अथवा कूकर भांगराको

न टी. कर्णरोगेंमेंपथ्य लि० वमन, विरेचन, गहूं, शाल, मूंग. घृत, पुंताक, तुराई इ० अपथ्यलिष्यते. दांतण रात्रको. मस्तकगूंथाकान, मर्दन. जडभक्ष, मोटोशब्दपणा बकवाद लडाई, क्रोध, नाप इद इ०

रसपाव ऽ। हरफारेवडीकोरस लसणकोरस पईसा ४ भर सोंप टंक २ वच टंक २ कूठ टंक २ सूंठि टंक २ मिरचि टंक २ पीपलि टंक २ लवंग टंक २ वकरीकोदूध अधसेर ऽ॥ कडवोतेल टका ५ ये सारा येकठाकरि मधुरी आंचसूं पकावै ये सारावलिजाय तेल मात्र आयरहे तदि ईतेलनें कानमें घालैतो वहरापणो अर राधि पडै सो और कानका रोगसाराजाय २० अथ कानकी राधिवहैं तींकी औषदि लिष्यते समुद्रफेन सुपारीकीराष काथ यानें मिही बांटि कानमें नाषेतो कानवहतोरहे २१ ये साराजतन वैद्यरहस्य में लिष्याछे अथ कानकीलोल पकिगईहोय तींका आछयाहोवा कोतेललि० सतावरी आसगंध दूध एरंडकी अरंडोली तीलांको तेल यानें मधुरी आंचसूं पकावे येसारावलिजाय तेलमात्र आय रहे तदि ईतेलनें कानकी लोलीकै लगावैतो कानकी लोलकी पीड उगेरे सारिमिटे अर लोलवधे २२ अथ परिपोटिकाको आछया होवाको तेललि० जीवनीयगणमें तेलपचावे ईतेलको मर्दन करै तो परिपोटिका आछीहोय २३ अथवा जोकांका लगावासूं उतपातरोग जाय २४ सुरमो कलहारी वावची कंक जीनावरको मास यामें तिलांको तेलपकावे मधुरी आंचसूं पाछे रसवलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि ईतेलनें कानकी लोल्की लगावैतो उन्मथ जाय २५ अथवा जामुणकापान आंवकापान वडकापान यांको काढोकरि ईकाढामें तेलपकावे पाछै ईतेलको मर्दनकरैतो दुःसवर्ध नरोगजाय २६ अथवा गोवरका छाणासूं सेकै अथवा कपूर कै

न. टी. बालकांका कानछिद्राछे [illegible] घायवेली [illegible]. कारण [illegible] ओनें कानकी छोलनें [illegible] होवासूं [illegible] [illegible] छे [illegible] पकिजाय पूजमारछे. [illegible] सुपारी [illegible] [illegible] वाकर [illegible] आरामहोय. परंतु [illegible] [illegible] देणांछे.

दूधसूं अथवा गोमूतसूं ईंको लेपकरैतो कानकीलौल आछीहोय २७ ये साराजतन भावप्रकासमैंछै, इतिकर्णरोगसं० अथ नासिकाका रोगकीउत्पत्ति लक्षण जतन लिष्यते नासिकामैं ३४ चोतीस रोगछै. अपिनस १ पूतिनाश २ नासापाक ३ पूयशोणित ४ घणीछींक आवै ५ छींकआवैनहीं ६ नाकवलिवोकरै ७ प्रतिनाह ८ प्रतिश्राव ९ नाससोथ १० प्रतिश्यायपांच प्रकारको १५ नासार्वुद सातप्रकारको २२ नाशार्शच्यारिप्रकारको २६ नाससोथ चारिप्रकारको ३० नासिकामैं रक्तपित्त च्यारिप्रकारको. ३४

अथ पीनसको लक्षणलि० जींका नाकमैंकफकरिकै सासआछीतरैं आवै नहीं अरनाक रुकिजाय अर नाक सूक्यौरहे अरजीमैं धूवोनीसरैं अर जींकानाकसूं सुगंध दुरगंधकोवास आवैंनहीं ईनैंपीनस कहिजै. १ अथ पूतिनाशकोलक्षण लि० जींका गलाका तालवाका मूलको वायहैसो पित्तनैं कफनै लोहीनैं दूपितकरै अर वेमूंडामैं अर नासिकामैं ओवाय दूरगंधि काढै स्वासकै मार्गतीनैं पूतनस्यरोग कहिजै. २ अथ नासापाकको लक्षण लिष्यते जींका नाकमैं पित्तदूपित होय अर नाकमैं फुणसी करैं अर वेनै पकावै अरवे माहिसूं राधिकाढै तीनैं नासापाक कहिजै. ३ अथ पूयरक्तको लक्षण लिष्यते जींका ललाटमैं कहीं तरेसूं चोट लागैतदि वेंकै दोप कोपकूं प्राप्तिहोय अर नासिकाद्वारा राधिनैं लीयां लोहीनीसरै तीनै पूयरक्त रोगकहिजै. ४ अथ वक्षस्यूं नाम छींकघणी आवै तींको लक्षण लिष्यते जींका नाकमैं दुष्टपवन होय ओपवन नाकका मर्मस्थानमैं दुपितकरै पाछै ओकफसूं मिलै तदि ओ घणी वारंवारछींकनैं प्रगटकरै तीनैं वक्षस्यूनामरोग कहिजै. ५

न. टी. नासारोगकी संष्या ३४ करीछै, तीनैं पीनसनामछै. तीनैं. अपीनसभी कहैछै, अर प्रतिस्यावपूपांच्यातासंप्याछै. जींमैं प्रतिश्याय ५ प्रकारको जुमछै १५ नासार्बुद ७ नासार्श ४ नासासोप ४ नासारक्तपित्त ४ जुमछै ३४ ईग्रंथकीरीतछै.

अथ वक्ष्यस्थूको ओर लक्षण लिप्यते जोपूरपनाकमें मिरचिनेंआ दिलेर ओषदिघाले अथवा सूर्यकानीदेषे अथवा नाकमें त्रण उगे रेघाले तदि वैका नाकमें छींक गणी आवें. ईनेंभी वक्ष्यस्थूनाम रोग कहिजे. ६ अथ वक्षस्थूं अंसको लक्षण लिप्यते जींका नाकमें कफ दग्धहोय जाय पित्तकरिके तींपुरपने छींक आवे नहीं ईनें वक्षस्थूं अंशाको रोग कहिजे. ७ अथ दीप्तिरोगको लक्षण लिप्यते. जींका नाकमै पित्त कुपितहोय अर नाकमे दाहघणो करे अर ना कमे धूवोनीसरे वीवाय पवनसूं नाक चलै ईनें दीप्तिरोग कहिजे.८ अथ प्रतिनाहको लक्षण लिप्यते वायकरिके संयुक्त कफहे सो ना कका सुरनें रोकिदे सास आवादे नहीं तीनें प्रतिनाह कहिजे ९ अथ अतिश्रावको लक्षण लिप्यते जींका नाकका सुर मांहि जाडो अर पीलो सुपेदाईनें लीयां नांक मांहिसूंनीसरे तीनें प्रतिश्रावक हिजे. १० अथ नासासंसोपको लक्षण लिप्यते जींका नाकमें वा यपित्त कफयेतीन्यूं दुष्ट होयतो ओ महाकष्टसूं सासले तीनें नासा संसोप कहिजे. ११ अथ प्रतिष्यायको लक्षण लिप्यते जीके पी नस रोग होय अर ओ आलसकरीके वैंको जतन करे नहीं तदि ओपीनसवधि अर कोपकरे ओर ओर स्थानमें जाय पाछे प्र गटे तदिवैंको ओर अनेक निजला उगेरे नामपडे अर ओघनेक रोगानें करे. १२ अथ पीनसको पूर्वरूप लिप्यते जीनें छींक आवे अर माथो भारो रहे अर अंगजकडबंद होजाय अर रोमांच होय ईनें आदिलेर ओर उपद्रव होय तदि जाणिजे ईके पीनस रोग होसी ३१ अथ वायका पीनसको लक्षण लिप्यते जींका नाक मांहिहोय पीलासनै लीयां गरमगरमपाणीपडे अर प्रानतु

न. टी. [illegible] [illegible] [illegible]

ष्य कृस होय जाय अर वेको सरीर गरम रहै अरजींकानाकमां हि अग्निरूप धुवोनीसरै अर वो वमनभीकरै तींनैं वायपित्तको पीनसकहिजे. १४ अथ कफका पीनसको लक्षणलि० जींका नाकमां हिसूं जाडो जाडो सुपेद कफ घणोनीसरै अर वेकोसरीर सुपेद होजाय अर आंष्यांऊपरि सोई होय अर माथो भास्यो होय अ रगलामैं तालवामैं होठांमैं सिरमैं षाजिघणी होय तदिजाणिजे ईंकै कफकोपीनसछै. १६ अथ सन्निपातका पीनसको लक्षण लिष्यते जींकानाकमैं ये पाछै कह्या सो सर्व लक्षण होय अर ओपीनस वारंवार होय अर जतन कस्यां जाय नही अर पकैभी नहीं ईनैं सन्निपातको ऊपपीनस जाणिजे. योअसाध्यछै. १७

अथ दुष्टपीनसको लक्षणलिष्यते जींको नाकवारंवार झरिवो करै अरसुकि जाय अर सास नाकसूं आछीतरै आवैनही ना करुकिजाय अर कर्दमपुलिजाय अर सुगंधिदुरगंधिकोग्यान रहै नहीं ईनैं दुष्टपीनसकहिजे. १७ अथ लोहीका उपज्या पीनसको लक्षणलि० जींकी छातिमैं चोट लागिहोय तींको लोहीको पीनस होय तींकानाकमैं लोहीपडै अरयेंकै पित्तका पीनसका लक्षणहोय अर वेंकीआंषि लालहोय येलक्षण जींकै होय तींनैं लोहीको पीन स कहिजे. १८ अथ पीनसको असाध्यलक्षण लि० आलसकरिकै पीनसको जतनकरैनहीतो सर्वही पीनसअसाध्य होयजाय. १९ अथ पीनसवालाके नाकमें क्रमिपडिजाय तींको लक्षण लि० जीं कानाकमैं पीनस करिकै सुपेद अरचीकणी अर छोटी क्रमिपडि जाय अर दीसैनही तींकै सिरको रोगहोयजाय अर ओरभीरोगां नैं प्रगट करै बहरापणानैं नेत्रकारोगानैं सोजानैं अग्निमांद्यनैं पा

न. टी. शार्ङ्गधरमैं नासारोग १८ कह्याछै. जींमैं केरोगांका नामांतर नामभी कह्याछै ज्युपछै १६ संष्याछै. परंतु बुद्धिमानतो शास्त्रको घाघि अर गुरुको ऊपदेश ध्यानमैं राष कर उपचार करो.

सोनें यारोगानें यो कृमिपीनस प्रगटकरे. अरनाकमें अर्बुदनामें
गांठि ७ प्रकारकीहोयछे. अरसोजो ४ प्रकारको नाकमें अरस
४ प्रकारको. रक्तपित्तनाकमें ४ प्रकारको होयछे. सोयांका लक्षण
पाछानें लिप्याछे सोबुद्धिमान जाणिलीज्यो ३४ अथ पीनसका
काचापणाको लक्षणलि० जींको शिरभाखोरहै भोजनमें अरुचि
रहै नाकझरवोकरै होलेंबोले सरीरक्षीण पडिजाय थुकेघणो. येल
क्षणहोय तदि काचोपीनसजाणिजे अथ पकापीनसको लक्षण लि
प्यते जींका नाकको कफजाडोनीसरै अर नाककाछिद्रके चीप्यो
भीरहै अरजींको वर्णभी आछ्यौ होयजाय अरजींकोसुरभी आ
छोहोयजाय अर भुप उगेरे सर्व लागे तीनें पक्योपीनस कहिजे.
१२ अथ नाकका रोगाका जतनलिप्यते कालीमिरचि गुड दहीं ये
तीन्यूं मिलाय उनमान माफिकपायतो पीनसको रोगजाय १ अ
थवा कायफल पोहकरमूल काकडासींगी सूंठि कालीमिरचि पीप
ली कलोंजी येसारी मिहीवांटि यांकोचुर्ण टंक २ आदाकारसमेले
अथवा ईंको काढो लेतो पीनसनें सुरभंगनें सन्निपातनें कफने पा
सने यांसारानें योदूरिकरै २ अथवा कायफल हिंग मिरचि लाप
इंद्रजव कूट वच सहजणाकीजड वायविडंग यांको काढो लेतोपीन
सजाय. ३ अथ व्योपादिगुटिका सुंठि कालीमिरचि पीपलि चित्रक
तालीसपत्र डांसस्यां अमलवेद चव्य जीरो इलायची तज पत्रज. ये
बराबरीले यानें मिहीवांटि यांबराबरि पुराणोगुडले त्यांकी टंक
२ भरगोलीकरे गोली १ रोजीनादिन १० पायतो पीनसनें पास
[illegible]

[illegible]

ट्याली दांत्युणी. वच सहजणाकीछालि तुलसीकापान सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण यांसारांनैं मिहिवांटि यांमैं तेलपकावै पाछै ईंतेलकी नासलेतौ पीनसजाय ५ इतिव्याघ्रीतैलछै अथवा सहजणाकीछालि कव्याली निसोत सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण बीलकापानांकोरस यांमारानै तेलमैं पकावै पाछै ईंतेलकी नासलेतौ पीनसजाय. ६ इतिशिग्रुतैलम्.

अथ जीनैं छींकघणीआवै तींको जतन लि० घृत गुगुल मोम यांसारांकी नाकमैं धूणीदेतौ छीक आवतीरहै.७अथवा सूंठि कूठ पीपली बीलकीगिरि दाष यांको काढोकरि ईमैं तेलपकावै पाछै ईंतेलकी नासलेतौ घणीछीक आवै सो दूरिहोय. ८ अथ पीनसका दूरिहोवाको चूर्ण० वायविडंग सींधोलूण हिंग गूगल मैणसिल वच यांनै मिहीपीसि ईंनै सूंघैतौ पीनसजाय ९ अथ पीनसका दूरिहोवाको तेललि० भांगका पानाकोरस सींधोलूण ईमैं तेलपकावै पाछै ईंतेलनैं सूंघैतौ पीनसजाय. १० अथ नाकमैं अर्शनाम मस्साहोय तींकोतेल लि० धूमसौ पीपलि दारुहलद आंधीझाडाकाबीज जवषार किरमालाकीगिरि अथवा वकल सींधोलूण यांमै तेलपकावै पाछै योतेल नाकका मस्साकै लगावैतौ मस्सो दूरिहोय ११ औरनाककारोग कह्याछै त्यांका जतन वारोगमैं बुद्धिवान् देषि लीज्यो १२ येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै. अथवा जोपुरष सोवाकैसमै आधोऔटायो पाणीपीवै तींका पीनसको रोगजाय. १२ अथवा जीरो घृत षांड येमिलायं पायतौ पीनसजाय.१४इति नासिकाका रोगांका जतन संपूर्णम्. अथ मुषका रोगांकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते अथ मुषरोगको लक्षणलिष्यते मुषका सात

न. टी मुखरोगकी संष्या जोलिषीछै समजमैं मावसी. अर उत्पत्तिमैं जो मनुष्यदेयको मांसलिष्योछै सो जडको किनारो मांकै आवरे जो रहैछै माणीज्यांमैं [illegible] छै. निघंटमैं सो जाणज्यो.

७ अंगछे होठ १ मसूडा २ दात ३ जीभ ४ ताल्वो ५ गलो ६ गलाने आदिलेर मुपका सर्वांग ७ अथ मूंढका सर्वरोगांकी सं प्यालि० सर्व मूंढाकामिलके ६७ रोगछे होटका ७ मसूडाका १६ दांतांका ८ जीभका ५ तालवाका ९ कंठका १८ सर्वमुपमें फैल ता ३ अथ मुपरोगांकी उत्पत्तिलिप्यते. अनूपदेशका मांसका पा वासूं घणादूधका पीवासूं घणादहींका पावासूं अर ऊडदनें आदि लेर घणा पावासूं कोपकूं प्राप्तिहुवो जो वायपित्त कफ सो मुपकारो गानें प्रगटकरेंछे. १ अथ होटाका रोगांकोउत्पत्तिलि० होठकारोग ८ छे. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ लोहीको ५ मांसको ६ मेदको ७ चोटलागिवाको, ८ अथ वायका होठरोग को लक्षणलि० जींका होठ काठिण होय अर परधरा गाढाहोय कालाहोय जीमें पीडघणीहोय. अर फाव्याघणा होयतो वायका कोपको होठकोरोग जाणिजे. अथ पित्तका कोपका होठरोगको लक्षणलि० जींका होठांकै फुणस्यां होय अर वेफुणस्यां पूवाला गीजाय अर वामें चोगडदाई पीडभी होय अर वामें दाहहोय और पकिजाय अर वाकीकांती पीलीहोय तदि जाणिजे पित्तका कोपको होठरोगछे २ अथ कफका कोपका होठकारोगां को लक्षण लि० जींका होठ देहकावर्ण सिरीसाहोय अर चूवे अर ऊठे फुण स्यांहोय अर जामें पीडनहींहोय अर जामें पाजिआवे अर जामें कफ जाडो अर ठंढोनीसरे तदि जाणिजे कफका कोपका होठका रोगछे. ३ अथ सन्निपातका कोपका होठका रोगकोलक्षणलिप्य ते घडिकमेंतो काल्या होयजाय अर घडिकमें पीला होयजाय घ डीकनेंसुपेद अर जीमें घणीफुणस्यां होय अर सर्वकालक्षण जी

न. टी. [illegible] मासका रोग, मुखका रोग [illegible] [illegible],
[illegible], [illegible] पुंज, मुळकी, भात, गेहूं, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible], [illegible] [illegible] [illegible].

मैंमिलै तीनें सन्निपातका कोपको होठको रोगकहिजे. ४ अथ लोहीका कोपका होठकारोगको लक्षणलि॰ जींका होठके फुणस्या घणीहोय अर जामैं पीड घणीहोय अर जांकोरंग छवारासरीसो होय अर जामैं लोही घणोपडे येलक्षण होय तदि लोहीका कोपको होठको रोग जाणिजे. ७ अथ चोटका लागिवाका होठका रोगको लक्षणलिष्यते. जींका हौठांके कहींतरैसूं चोटलागीहोय तदि वेका होठ फाटिजाय अर ऊठे षाजिआवे अर होठ मथ्यासाहोय अर वामैं पीडभी होय तदि जाणिजे चोटका लागिवाको होठकोरोगछै ८

अथहोठांकारोगांका जतनलिष्यते. जींके होठांको रोगहोय त्यांकौ जलौकासूं लोहीकढाजैतौ होठांको रोगजाय. २ अथवा घृतमैं शुद्ध मोम नापि वेसेती होठांनैं सिकाजैतौ होठांको रोगजाय ३ अथवा चारीप्रकारकास्नेहछै तेल १ घृत २ मांसकोघृत ३ अथवा मांस मांहिलीमींजी ४ याचारूंस्नेहमैं मोम मिलायवेंकोसेककरावेतौ होठका रोगजाय. ५ अथवा होठांकीसीर छुडाय देतौ होठांको रोग जाय. ४ अथवा सीतल औषधांका लेपकरैतौ होठांको रोगजाय. ५ अथवा फूल प्रियंगु त्रिफला लोद यांनैं मिहिवांटि स्नेहमैं यांको सेकसुहावतो करैतौ अथवा सहतसूं पायतौ होठांको रोगजाय. ६ अथ प्रतिसारणविधि लि॰ होठांकेचूर्ण अवलेह अंगुलीसूं सनेसने लगावे तीनें प्रतिसारण कहिजे ७ अर होठांमैं घणांव्रण पडिगयाहोय त्यांकाजतन पाछे व्रणका प्रकर्णमैं लिष्याछे सोकरिलीज्यौ इति होठांका रोगांको जतनसंपूर्णम्. अथ मसूडांका रोगांका नामसंख्या लि॰ सीतादि १ दंतप्युपुट २ दंतवेष्टि ३ सो

न. टी. कुपथ्याउि॰ दंतकाष्ट, आनकरणो, पाटोपदार्थपाणो, दही, गुड, उडद अइमत्स पौष्टिक अन्न, दिनमैंनिद्रा, आळस, ऊंकिळणीनहीं, मळमूत्र रोकणोनहीं, मंजन, हास्य क्रोध, चिंता इत्यादि नहींकरणा.

पिर ४ महासोपिर ५ परिदर ६ उपकुश ७ वैदर्भ ८ खलिवर्द्धन ९ अधिमांसपंचनाडि १० वायसूं मसूढांकीनसनीसरे ११ पित्तसूं मसूढांकी नसनीसरे १२ कफसूं मसूढांकी नसनीसरे १३ सन्निपातसूं मसूढांकी नसनीसरे १४ चोटलागिवासूं मसूढांकी नसनीसरे १५ दंतविद्रधी. १६ अथ सीतादिमसूढांकारोगको लक्षणलिष्यते कारणविनाही अकस्मात मसूढांमें लोहीनीसर आवे अर्से लोहीमें दुरगंधि आवे लोही कालो होय अर मसूढांके मलहोय अर मसूढाविपरि जाय आपसमें पकिवालागिजाय योकफलोहीका दुष्टपणासूं उपजेछे. ईनें सीतादि मसूढांकारोग कहिजे. १ अथ दंतप्युपुट मसूढांकारोगको लक्षणलिष्यते. दांताका तीन मसूढांमें सोजो घणो होय जाय यो कफ लोहीका कोपसूं होयछे. ईनें दंतवेष्टप्युपुट रोगकहिजे २ अथ दंतवेष्टरोगको लक्षणलिष्यते जींका मसूढामें राधिलीयां लोहीनीसरे अर दांत हालवालागिजाय ईनें दंतवेष्टि मसूढाकहिजे. ३ अथ सोपिर मसूढांका रोगको लक्षणलिष्यते मसूढांमें सोजोहोय आवे अर उठे पीडहोय अर लाल पडे अर पाजिआवे ईनेंसोषिरनाम मसूढांको रोगकहिजे. ३ योकफवायसूं उपजेछे. ४ अथ महासोपिररोगको लक्षणलिष्यते मसूढांतें दांत हालवालागिजाय अर तालवो वेठिजाय तालवाके छेद्रपडिजाय यासन्निपातका कोपसूं उपजेछे ईनें महासोपिर कहिजे. ५ अथ परिद्र मसूढांकारोगको लक्षणलिष्यते जींका दांतांका मसूढाविपरीजाय अर वामें लोही वहेनहीं योपित्तलोही कफयांका कोपसूं उपजेछे. ईनें परिद्रकहिजे. अथ उपकुशमसूढाका रोग

म. टी. मसूढाकारोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कोलक्षणलिष्यते जांका मसूढामैं दाहहोय अर पकिजाय दांत हा लवालागै अर जामसूढांनैं दाव्या अथवा औषधांसूं घस्यालोही नीसरै अर वामैं पीडनहीं होय अर मूंढामैं दूरगंधि आवै योपित्त लोहीसूं उपजैछै. ईनै उपकुशरोग कहिजै ७ अथ वैदर्भ मसूढांरो गको लक्षणलिष्यते जींकामसूढांकै कहींतरैसूं चोटलागै अथवा वै घस्याजाय तदिवांकै सोजोहोय अर दांतहालवालागै अर वेमैंदाह पीडाभीहोय ईनैं वैदर्भरोग कहिजै ८ अथ खलिवर्धनरोगको लक्ष णलि० जींका मसूढामैं दांत अधिकवधै अर ऊठपीड घणीहोयवेनै खलिवर्धनरोग कहिजै ९ अथ अधिमांस रोगको लक्षण लिष्यते जीकी नीचरली दाढका अंतमैं सोजो घणोहोय अर पीडघणीहोय मूंढामैं लालपडै योकफसूं उपज्योछै ईनैं अधिमांसरोग कहिजै १० अथ मसूढांकी नसामैं रोगको लक्षणलि० वाय पित्त कफ सन्निपात अर चोटलागिवोयांसूं पांच नसांकारोग होयछै १५ अथ दंत विद्रधीरोगको लक्षणलिष्यते दांताका मसूढामैं लोहीनीसरै अर घणोसोजो होय अर दाहहोय अर पीडहोय अरराध लोही लीयां घणो श्रवै ईनैं दंतविद्रधी मसूढांको रोगकहिजै १६ अथ मसूढांका रोगांका जतनलि० अथसीतादिमसूढांको जतन लि० ईरोगमैं म सूंढांको लोही कढाजै पाछै सुंठि सरस्यूं त्रिफला यांको काढोकरि कुरला करैतो सीतादी मसूढांको रोगजाय १ अथवा हिराकसी प ठाणी लोद पीपली मैणसिल फूलप्रियंगु तेज वल ये वरावरिले त्या नैं मिहींवांटि सहतसूं मसूढांकै लगावैतो सीतादि मसूढांको रोग जाय २ अथवा तेलका घृतका कुरला करैतो सीतादि मसूढांको रोगजाय ३ अथ दंतप्पुपुटको जतन लि० ईरोगमैं मसूढांको लो

न. टी. दंतरोगमें पथ्यकरणोंचाहिये. कारणपथ्यकाकरणेसूं व्याधी कमती होवछे. प्र० लि० मुळावळणां वळावळदेरवर उलटीळणी वळावळ देपकर औषधीकाकुरला कुरला करणा.

होंकढाय तींऊपरि पाचूंलूण जवपार सहतनापि यांकोकाढोकरि तींका कुरलाकरेतो दंतप्पुपुटरोग जाय ४ अथ दंतवेष्टिकोजतन लिप्यते वेनेचीकणा भोजनकराजे. अर तेलका कुरला करावैतो येरोगजाय ५ अथ चलदंतको जतन लि० लोद पतंग महुवा लाप बोलसिरीकी वकल यांनें मिहीवांटि ईंका चूर्णनें मसूढाके मसलै तो चलदंतको रोग जाय ६ अथवा नागरमोथो, हरडेकीछालि, सूंठि, मिरचि, पीपलि, वायविडंग, नींबकापान यांनें मिहीवांटि गोमूतसूं वेकी गोली करें पाछे छायासुकाय अर सोवतां गोली १ मूंढामें रापै तो चलदंतको रोग जाय. दांत गाढा होय ७ इति भद्रमुस्तादिगुटिका संपूर्णम्, अथवा नीलाफुलको कठसेलो धमासो पेरसार जामुणीकी वकल आंवकीवकल महलोठी कमलगट्टा ये सारा बराबरिले टका टका भर पाछे यांनें सेर १६ पाणीमें औटाय चतुर्थांश जलरापै पाछे ईमें तेल तथावकरीको दूध मधुरी आंचसूं पकावै वोरसवलिजाय तेल आयरहै तदि ईंतेलका घडी २ मूंढामें रापै तो दांतगाढाहोय ८ इति सहचरादि तैलम्. अथ सौपिररोगको जतन लि० ईरोगमें मसूढांको लोही काढे पाछे लोद नागरमोथो रसोत सहत यांसारांनें मिहीवांटि सहतसेती मसूढाके लेपकरै अर पाछे दूधका कुरलाकरै तो सौपिरमसूढांको रोग जाय ९ अथ परिदरको जतन लि० प्रथम मसूढांको लोही काढे पाछे सूंठि सिरस्यूं त्रिफला यांको काढोकरि ईंका कुरला करेतो परदर उपकुशये रोगजाय १० अथ मसूढांकाव्रणको जतनलि० गूलरकापान लवण सहत सूंठि मिरचि पीपलि यांनें औटाय काढो करै अरमसूढांको शस्त्रसूं रुधिरकाढे पाछे ईंका कोराकुरलाकरै पाछे

म. टी. पुष्कनमकचूर्णैं, ईख, इलायची, पुराईं, गजबीहा, [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मसूढांके लवण उगेरै क्यूंपारलगावै तौ मसूढाका व्रण आछ्या होय अर वांकी कृमिमरिजाय अर यो रोग जातो रहे ११ अथ षनिवर्द्धनको जतन लि० ईरोगका मसूढाको मांसकाटिनाषजैपाछै सहतकाकुरलाकराजै पाछै वच तेज वल पाठ साजी जवषार पीपलि यांनैं मिहिवांटि मसूढांके लगाजै तो षलिवर्द्धन रोग जाय १२ अथ मसूढांकी नसांमैं पांचप्रकारकाव्रण त्यांका जतनलि० यांमसूढांको मांस शस्त्रासौं दूरिकरै पाछै पटोल नींबकापान त्रिफला यांको काढो करै पाछै क्यूं गरमसुहावताईका कुरलाकरै तौ मसूढांकी नसांका व्रण जाय १३ अथवा चवेलीकापान धत्तूराका पान कट्याली गोषरूको पंचांग मजीठ लोद पैरसार महलौठी यांको काढो करि ईकाढामैं मधुरीआंचसूं तेलपकावै पाछै ईतेलका कुरलाकरै तौ मसूढांकाव्रण उगेरै सर्वरोग जाय १४ इति मसूढांका रोगांका जतन संपूर्णम्.

अथ दांतांका रोगांकीनामसंष्या लिष्यते दालिन १ कृमिदंतक २ भंजनक ३ दंतहर्ष दंतशर्करा ४ कपालिक ५ श्यावदंत ७ कराल ८ अथ दालिन नाम दांतकारोगको लक्षण लिष्यते जींका दांतामैं टूटादांतकी पीडाहोय वापीड वायसूं होयछै ईनैं दालिननाम दांतको रोगकाहिजे १ अथ कृमिदंतककोलक्षण लिष्यते जींका दांतमैं कालाछिद्र पडिजाय अर हालै अरवामैं क्यूंरुधिर नीसरै अर वाको सोजोहोय अरवामैं पीडभीहोय विनाकारणही वायकीतीनैं कृमिदंतरोग कहिजे. २ अथ भंजनरोगकोलक्षणलि० जींकादांत वांकावांकाहोय टूटिजाय यो कफवायसूं उपजैछै ईनैं भंजनक रोग कहिजे. ३ अथ दंतहर्ष रोगको लक्षण लि० जीं के

न. टी दांतओरगूंभीचणा दहीं गुड उडद जदअन्न पौष्टिकपदार्थ, दिवानिद्रा अतिभोजन दंतधाउ, कोईसे गुद्धपेष्टा नहीं करनी कारणजदामाहसूं दांत ढीलाहोपडे अद सहजमें पडजाय.

सीतल जलादिकसूं लूणीवस्तसूं सीतलपवनसूं पटाईसूं दांत आं
व्याजाय पाटो होजाय योवाय पित्तसूं होयछे. तीनें दंतहर्ष कहिजे
४ अथ दंतशर्कराको लक्षणलिष्यते ज्यांका दांतामें मेलरहै वे
मेलमें कफवायसोमिले पाछे वेकादांत परथरालागे अर रेतकी
सीनाईपिरता जाय तीनें दंतशर्करा कहिजे ५ अथ कापालिका
नाम रोगका लक्षणलि० जींका दांतमाटिका घडाका कापालसरी
साहोय अर वामें छिद्रहोय अरपिरे अरवामें मेलहोयतीनें कापा
लिकरोग कहिजे ६

अथ स्यावदंतक रोगको लक्षणलि० जींका दांत दुष्ट लो
हीसूं मिल्यो जोपित्त तींकरि सारा दग्धहो जाय अर वेकादांत
काला अर सीला पडिजाय तीनें स्यावदंतक रोग कहिजे ७ अथ
कराल रोगको लक्षण लिष्यते. जींका दातामें वायहैसो सनैसनैं
बुरा घाटकाकरिदे भयंकर ईनें करालदांतको रोग कहिजे यो रोग
जतनसूंभी आछ्यो होयनहीं. ८ अथग्रंथांतरसूं हनुमोक्ष १ दां
तांकारोगको लक्षणलि० जींका दाढिमें वायकुपितहोय दातानें पक
डे दातांमें अथवा दाढिमें पीडकरे तीनें हनुमोक्ष रोग कहिजे यो
अर्दितरोगका लक्षणमिले ९ अथ दातांका रोगका जतनलि०
अथ लाक्षादितैल लिष्यते लाषको रससेर १ तिलांकोतेलसेर ३।
गऊको दुध ३। लोद टका १ कायफल टका १ मजीठ टका १ क
मलगट्टा टका १ कमलकोकेसरि टका १ रक्तचंदन टका १ मुलै
ठी टका १ यांसाराको काढा करे पाछे ईकाढामें मधुरी आंच
सूं तेलपकावे येसर्व रसउगर बलिजाय तेलबाकरहै तांहेंतेल्नें

[illegible]

मूंढामैं घडि १ राषैतौ दांतांकासाराहीआंठूं ८ रोगजाय अर दांत गाढाहोय इतिलाक्षदितैलम्. अथवा वायनैं दूरिकरिवावालाजो तेलत्यांकाकुरला करैतौ दांतांकासारारोगजाय २ अथ कृमिदंतको जतन लि० हिंगनैंक्यूं येक गरमकरि दांतांकै विचै देतौ दांतांकी कृमिजाय ३ अथवा कागलहरी नीलकी जड कडवी तुंबीकी जड यांनै मिहिवांटि यांको दांतांकै मर्दन करैतौ दांतांकी कृमिजाय ५ अथदांत आंव्यारहे तीकी औषदिलि० सांभरोलूण नरकचूर सूंठि अकलकरो यांनै मिहिवांटि दांतांकै मर्दनकरैतौ दांत आंव्याआ छ्याहोय ६ अथ दांतांका सर्वरोग जावाकी औषदि लिष्यते पाचूं लूण. नीलोथूथो सूंठि मिरचि पीपली पीपलामूल. हिराकसीस मांजूफल वायविडंग यांनैं मिहिवाटि यांको दांतांकै मर्दन करैतौ दांतांकासर्व रोगजाय ७ अथ दांतगाढा होवाकीमिस्सी लिष्यते हिराकसीस मांजूफल लोहचूर सोनामूषी मजीठ फुलाई फिटकडी त्रिफला येसारावरावरिले यांनैं षरलमैं मिहिवाटि काजलसिरीसी करै पाछै मासो १ दांतांकै मसलै ईविधी दिनसात करैतौ दांत श्यामहोय ८

अथ दांतांका सर्वविकार हरवाकी औषदि लि० फटकडी फुला ई नीलोथूथो तेजवल पापडयोकाथ पीपलीकी कचोलाप सूंठि मिर चि पीपलि आंवला हिराकसीस माजूफल मजीठ रुमीमस्तकी वो लसिरीकी वकल सींधोलूण दीपणी सुपारी येसारा वरावरिले पाछै यांनैं कूटि कपडछाण करि निगुंडीका रसकी पुट २१ दे पाछै वोलसिरीका वकलकी पुट २१ देतावडै सुकावै पाछै ईनैं मिहीवां टि क्यूं सींधोलूण मिलावै पाछै ईको दांतांकै मर्दन करैतौ दांतांका

न. टी. दांतहलणे लागनायछे जीवूं कोईरूमनुष्य कंटाळजाय अरु दांत पडावनावैछे. वयानै फेरदांताकी गरजपडै जदां वहोत इच्छाकरैछे. परंतु फेरमिळैनही जीवूं विचारकर णोचाहिजे.

सीतल जलादिकसूं लूणीवस्तसूं सीतलपवनसूं षटाईसूं दांत आं व्याजाय पाटो होजाय योवाय पित्तसूं होयछे. तीनैं दंतहर्ष कहिजे ४ अथ दंतशर्कराको लक्षणलिष्यते ज्यांका दांतामें मैलरहे वे मैलमें कफवायसोमिले पाछे वेकादांत षरधरालागे अर रेतकी सीनाईपिरता जाय तीनैं दंतशर्करा कहिजे ५ अथ कापालिकी नाम रोगका लक्षणलि० जींका दांतमाटिका घडाका कापालसरी साहोय अर वामें छिद्रहोय अरपिरे अरवामें मेलहोयतीनैं कापालिकरोग कहिजे ६

अथ श्यावदंतक रोगको लक्षणलि० जींका दांत दुष्ट लोहीसूं मिल्यो जोपित्त तींकरि सारा दग्धहो जाय अर वेकादांत काला अर सीला पडिजाय तीनैं श्यावदंतक रोग कहिजे ७ अथ कराल रोगको लक्षण लिष्यते. जींका दातामें वायहेसो सनैंसनैं बुरा घाटकाकरिदे भयंकर ईनें करालदांतको रोग कहिजे यो रोग जतनसूंभी आछ्यो होयनहीं. ८ अथग्रंथांतरसूं हनुमोक्ष १ दांतांकारोगको लक्षणलि० जींका दाढिमें वायकुपितहोय दातानैं पकडे दातामें अथवा दाढिमें पीडकरै तीनैं हनुमोक्ष रोग कहिजे वेमें अर्दितरोगका लक्षणमिले ९ अथ दातांका रोगका जतनलि० अथ लाक्षादितैल लिष्यते लाषको रससेर १ तिलाकोतेलसेर ऽ। गऊको दुध ऽ। लोद टका १ कायफल टका १ मजीठ टका १ कमलगट्टा टका १ कमलकीकेंसरि टका १ रक्तचंदन टका १ महलौठी टका १ यांसाराको काढो करे पाछे ईकाढामें मधुरी आंचसूं तेलपकावे येसर्व रसउगेरै बलिजाय तेलआयरहे तदिईंतेलनैं

* दांतकारोगमें कृमिदंतरोगछे. सोसपूर्णप्रकारसूं ओकमाविद्छे. कोईगंदेरकरेछे. दांतमें कृमिकिसीतरेरहेछे सोमेंपूछुं. एकदिन रामजीगणोजी दाक्तरकेपास में बेठाथा कोएक दंतरोगीआयो. जींकीमोटी दाढदोयदुखाती. विलायती अवजार जीसूं दांताकीयंमेंसे कृमि नीसरि. जेठमेंपाटी पूणघटी नहीछे. ओर मंत्रसंतसूं कृमिकाडेछे. सोमूटाछे.

मूंढामें घडि १ राखैतो दांतांकासाराहीआंठूं ८ रोगजाय अर दांत गाढाहोय इतिलाक्षादितैलम्. अथवा वायनें दूरिकरिवावालाजो तेलत्यांकाकुरला करैतो दांतांकासारारोगजाय २ अथ कृमिदंतको जतन लि० हिंगनैक्यूं येक गरमकरि दांतांकै विचै देतो दांतांकी कृमिजाय ३ अथवा कागलहरी नीलकी जड कडवी तुंबीकी जड यांनै मिहिवांटि यांको दांतांकै मर्दन करैतो दांतांकी कृमिजाय ५ अथदांत आंव्यारहै तीकी औषदिलि० सांभरोलूण नरकचूर सूंठि अकलकरो यांनें मिहिवांटि दांतांकै मर्दनकरैतो दांत आंव्याआ छयाहोय ६ अथ दांतांका सर्वरोग जावाकी औषदि लिष्यते पाचूं लूण. नीलोथूथो सूंठि मिरचि पीपली पीपलामूल. हिराकसीस मांजूफल वायविडंग यांनें मिहिवाटि यांको दांतांकै मर्दन करैतो दांतांकासर्व रोगजाय ७ अथ दांतगाढा होवाकीमिस्सी लिष्यते हिराकसीस मांजूफल लोहचूर सोनामूषी मजीठ फुलाई फिटकडी त्रिफला येसाराबराबरिले यांनें परलमें मिहिवाटि काजलसिरीसी करै पाछै मासो १ दांतांकै मसलै ईविधी दिनसात करैतो दांत श्यामहोय ८

अथ दांतांका सर्वविकार हरवाकी औषदि लि० फटकडी फुला ई नीलोथूथो तेजवल पापड्योकाथ पीपलीकी कच्चीलाप सूंठि मिर चि पीपलि आंवला हिराकसीस माजूफल मजीठ रुमीमस्तकी बो लसिरीकी बकल सींधोलूण दीपणी सुपारी येसारा बराबरिले पाछै यांनें कूटि कपडछाण करि निर्गुंडीका रसकी पुट २१ दे पाछै बोलसिरीका बकलकी पुट २१ देतावडै सुकावै पाछै ईनें मिहीवां टि क्यूं सींधोलूण मिलावै पाछै ईको दांतांकै मर्दन करैतो दांतांका

न. टी. दांतहलणे लागजायछे जीसूं कोईकमनुष्य फेंटाडजाय अरु दांत पडायनाषछे. ज्यांने फेरदांताकी गरजपडै जदां पडोत इच्छाकरैछे. परंतु फेरनिछैनही जीसूं विचारकर णोचाहिजे.

सर्वरोजाय ९ अथ दांतांका दूषवाकी औरऔषदि० कूटटंक ५ सूंठि टंक ५ मिरचि टंक ५ पीपलि टंक ५ पुरासाणीअजवायणी टंक ५ हरडैकीछालि टंक ५ काथ टंक ५ यांनै मिहीवांटि दांतांके मर्दन करैतौ दांतदूपतारहै १० अथवा गंगापरकीतमापू अकलकरो कायफल वायविडंग सूंठि मिरचि पीपलि लूण यांनैं मिहीवांटि यांको मर्दनकरैतो दांतदूपितारहै ११ अथ दांतहालताहोय अर वामैं पीडचालै तींकी औषदि लि० पीपलि सींधोलूण. जीरो हरडैकीछालि. मोचरस यांनै मिहीवांटि यादांतांकै रगडैतो दांतहालतारहै अर वांकी पीडजाय १२ अथवा नागरमोथो हरडैकीछालि सूंठि मिरचि पीपलि वायविडंग नींवकापान यांनै मिहीवांटियांकै गोमूतका पुट ३ देछायासुकाय गोलीकरै पाछै वागोली रातिनैं सोवतांमूंढामैं रापै अर प्रभातिवे गोलीनैंनापे पाछै कूरला करैतो दांतांका सर्वरोगजाय. १३ अथवा फिटकडी नीलोथूथो पैरसार पापड्यो काथ तेजबल कच्ची लाप वंसलोचन मिरचि आवला मजीठ रुमीमस्तगी बोलसिरीकी वकल सींधोलूण माजूफल दीपर्णा सुपारी यांनै मिहीवांटि कपडछाणकरि यांकै निर्गुंडीका रसकी घणी पुटदे पाछै यांकै चवेलीका रसकी पुटदे तावडै सुकायतोजाय पाछै बोलसिरीकी घणीपुटदे पाछै सुकाय यांनैं मिहीवांटि दांतांकै रगडै तौ दांत गाढाहोय अर दांताका सर्व रोगजाय १४ अथ दांतामैं लोहीनीसरै तींकी औषदि लिप्यते. सींधोलूण पैरसार कूट घणी सूंठिसेक्योजीरो यानै मिहीवाटि दांतामैं मर्दन करैतो दांताको लोहीनीसरतो रहै १५ इतिदांताका रोगाकाजतन संपूर्णम्. अथ जीभकारोगाकी उत्पत्तिनाम संप्या लिप्यते जीभकारोग ५ वायको

न.टी. बिनादांतका मनुष्यको स्वरूपभी बिकराल होजाय अरु मसोडाऊपर नीपकामें अंतरपणोहोय. मंगुडहोयके आसरे जोगी पुरुषी हाकोदाकी रात मौर दिन गोली भगरी

१ पित्तको २ कफको ३ अलास ४ उपजिव्हा ५ अथ वायका जिव्हारोगांको लक्षणलिष्यते. जीकी जीभफाटिजाय अर सोईहोय अर हरीहोजाय अर जीमें कांटापडिजाय अर स्वादको ज्ञानजातो रहे ये लक्षण होय तदिवायको जीभकोरोग जाणिजे १ अथ पित्तको जीभरोगको लक्षण लि० जींकी जीभमें दाहरहे अर जीभ कोवर्ण लालहोय अर कांटा पडिजाय तदि जाणिजे जीभके पित्त को रोगछे २ अथ कफकाजीभको लक्षणलि० जींकीजीभ भारी ल पावे. अर जाडीहोय जाय अर जीभमें सुपेद कांटापडेतो कफको जीभरोग जाणिजे ३ अथ अलसजीभकारोगको लक्षण लिष्यते जीभके नीचे घणोसोजो होय अर योजीभनें लठकरिदे अर डाढीनें लठकरिदे हालवादेनहीं अर जीभनीचे पकिजाय योरोग कफलो हीसूं पैदाहोयछे. ईनें अलासकहिजे ४ अथ उपजिव्हाको लक्षण लिष्यते जीभकी अणीउपरे सोजोहोय दूसरी जीभसीरीसो जाणिजे दूसरीजीभछे. अर लालघणीपडे अर वेमें पाजि आवे अर वेमें दाहहोय ईनें उपजिव्हाजीभकोरोग कहिजे ५ अथ जीभकारोगांका जतन लिष्यते. जीभका सारांरोगांका दूरिकरिवाके वास्तैलोहीकढावो जोग्यछे १ अथवा गिलवे पीपलि नींबकीछालि कुठकी यांको काढोकरि कुरला करेतो जीभकारोगजाय २ अथवा होठका जतनपाछे कह्याछे त्यांसूंभी जीभकारोगजायछे ३ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि जवषार हरडे यांनें मिहीवांटि जीभके लगावेतो जीभकोरोगजाय ४ अथवा सूंठि मिरचि पीपलि जवषार हरडेकी छालि यांमें तेलपकाय ईतेलका कुरलाकरेतो उपजिव्हा दूरिहोय ५ अथ पुनःजीभकी औषधि लिष्यते कचनारकी वकलका काढा

न. टी. जिव्हारोग तथा जीभकारोगछे. जो पांचप्रकारका कह्याछे. वीमें जोजो दोष की अधिकता होय सो सो दोषांका लक्षण देखकर वेपनें उपचारकरणो योग्यछे. नव प्रकार परपछे सो दंतरोग मुजबछे.

का कुरलाकरैतौ जीभकासर्वरोग जाय ६ इति जीभकारोगांका जतन संपूर्णम्. अथ तालवाकारोगांकी नामसंख्या लिख्यते. तालवाकारोग ९ गलसुंडी १ तुंडकेसरी २ ध्रुव ३ कच्छप ४ ताल्वार्बुद ५ मांससंघात ६ ताल्वप्युपुट ७ तालुसोस ८ तालुपाक ९ अथ गलसुंडीको लक्षण लिख्यते तालवाकीजडसूं सोजोवढो वधै अर सोजो कूटिषाल सिरीसो होय जाणिजै ईषालमें वायुभर्दिनोछै. अर वेनें तिसलागै अर पाससासभीहोय ईनें गलसुंडीरोग कहिजै यो कफलोहीसूं उपज्योछै १ अथ तुंडकेसरीको लक्षण लिख्यते ता लवाकीजडसूं उपज्यो जोसोजो सोदाह अर पीड अर पकिवानें लीयां उपजैसोयो कफलोहीका दुष्टपणासूं उपज्यो ईनें तुंडकेसरी रोगकहिजै २ अथ ध्रुवरोगको लक्षण लिख्यते. जींकातालवामें सोजोलालहो ज्वरनेंलीयां तीनें ध्रुवनामरोग कहिजै ३ अथ कच्छ परोगको लक्षण लिख्यते. जींकातालवामें सोजोकछवाके आकार ऊंचोहोय योकफसूं उपज्योछै ईनें कच्छपरोग कहिजै ४ अथ ता ल्वार्बुदको लक्षण लिख्यते जींकातालवामें सोजो कमलके आकार होय अर जीमै वडा अंकुर होय तीनें ताल्वार्बुदरोगकहिजै ५ अथ मांससंघात रोगको लक्षण लिख्यते जींका तालवामें दुष्टमांसवधै जीमै पीडनहींहोय तीनें मांससंघात रोगकहिजै ६ अथ ताल्व प्युपुटरोगको लक्षण लिख्यते जींका तालवामें वोर सरीसो सोजो होय जींमें पीडनहींहोय तीनें ताल्वप्युपुटरोगकहिजै ७ अथ ता लुसोसको लक्षण लिख्यते जींको ताल्वो सूकिजाय अर फाटि जाय अर स्वास होय आवे तीनें तालुसोस कहिजै ८ अथ ता

---

* तालवाकारोग बहुधाछे परंतु तालुपाकरोगछे सो भतिकठिणछे. बहुधा गरमीका. आ जारसूं होयछे कोईविद्वान वैद्यकूने मूंडे आनाकी औषधी छिपासूं तो रोगनाशछे फेरकूने वैद्यकी मुंडा आनाकी औषधि लिखागणो होवछे वास्तेमुंडा आनाकी औषधी मूर्ख वैद्यकूने देनीनहीं यह वाचकर सावेत होनेकीबातछे.

लूपाकको लक्षणलिष्यते जींको तालवो गरमीसूं घणोपाकिजाय तींने तालुपाक रोगकहिजे ९ अथ तालूवाकारोगांकाजतनालि० गल सूंडीरोग होय जींनेंचतुरवैद्यहैंसो शस्त्रविसकरिकै काटिनाषैतो गल सुंडीरोगजाय १० अथवा कूठ मिरचि सींधोलूण पाठमोथो. यांनें मिहीवांटि गलसूंडीके मसलैतो गलसूंडीरोगजाय २ अथवा पीपलि अतीस कूठ वच सूंठ कालिमिरचि सींधोलूण यांने मिहीवांटि सहत सेतीगलसुंडीकै लगावैतो गलसुंडीआछीहोय ३ अथवा पीपलि अतीस कूठ वच रास्ना कुटकी नींबकीछालि यांनें जौकूठकरि याको काढोलेतो तालवाकागलसुंडी तुंडकेसरीनै आदिलेर सर्वरोगजाय ४ इति तालवाका रोगांका जतन संपूर्णम्. अथ गलाकारोगांका नामसंष्या लिष्यते गलाकाअठारारोगछै पांचप्रकारकीतो रोहिणी वायकी १ पित्तकी २ कफकी ३ सन्निपातकी ४ लोहीकी ५ कंठ सालूक ६ अधिजिन्हा ७ वलया ८ अलास ९ एकवृंद १० वृंद ११ शतघ्नी १२ लिलायु १३ गलविद्रधी १४ गलौघ १५ स्वर घ्न १६ मांसतान १७ विदारी १८

अथ वायकी रोहिणीको लक्षणलिष्यते सारिजीभमें घणीपीड होय अर जीभमें सारेमांसका अंकुरनीसरि आवै अर वासूं कंठ रुकिजाय अर वायका सर्वउपद्रव होजाय ईनें वायकीरोहिणी क हिजे. १ अथ पित्तकी रोहिणीको लक्षणलि० जींकोगलो पकिजाय अर गलामें दाहहोय अर ज्वरघणीहोय ईनें पित्तकीरोहिणीकहिजे २ अथ कफकी रोहिणीको लक्षणलि० जींका गलाका श्रोतकफसूं रुकिजाय अर गलो मोडोपकै अर गलो भार्योहोय ईनें कफकी रोहिणीकहिजे. २ अथ सन्निपातकीरोहिणीको लक्षण लिष्यते जीं

न. टी. गलारोग तथा कंठरोग अष्टादशजातका कह्याछे. जीमें अमृतसागरमें नामलि ष्याछे सोहीनाम शारंगधरमैंछे. परंतु कोई कोईनाम भेदभिन्नछे. निदानमें निमानिकछे प(र)- तु वैद्यविद्वानतो सर्व देशीग्रंथ संपन्नछे.

डोजीको पाकहोय अर वेकोवीर्य दूरीहोयनहीं जतनासूंभी अर जीमें सर्वलक्षणमिलैवात्रिदोपकी रोहिणीजाणिजे. ४ अथ लोहीकी रोहिणीको लक्षणलिप्यते जींका गलामें फोडाहोय आवे अ जामें पित्तकालक्षण मिलै तीनें लोहीकी रोहीणी कहिजे. ५ अ कंठ सालूकको लक्षणलिप्यते जींका गलामें बोरकीर्मीगीप्रमाण ग ठिहोय अर गलामें परधरा २ कांटा पडिजाय अर उठेपीड होय तीनें कंठसालुक कहिजै. ६ अथ अधिजिह्वारोगको लक्ष लिप्यते.जींकी जीभकीअणीके ऊपरि सोजोहोय अर लोहीनें ल यां कफनें थूकै अर जीभ कफ लोहीसूं लीपिरहै इंनें अधिजिह्व रोग कहिजे. ७ अथ वलयरोगको लक्षणलिप्यते. जींका गला कफवधे पाछे ओगलामें सोजोनेकरें अन्न उगैरे गलामे जावा नहीं वेंको मार्गरोकिदे इंनें वलय गलाकोरोग काहिजे. ८ यो अ साध्यछे. अथ आलासरोगको लक्षण लिप्यते. जींका गलामें कफ वायवधिकरि गलामें सोजोकरे अर स्वासनें अर पीडनें प्रगटक मर्मस्थानमें छेदताथका हियामें पीडकरे इंनें अलासरोग काहिजे ९ अथ एकवृंदको लक्षणलिप्यते जींका गलामें कफ अर लोह दुष्ट हुवाथका गलाकैमाहि गोल अर ऊंची सोईनेकरे दाहनें यां अर उठेपाजिभीचाले गलोपकिजाय अर गलो भारयो कोमल लपावै इंनें एकवृंदरोग कहिजे १० अथ वृंदनाम गलारोगको लक्षणलिप्यते. जींकागलामें पित्त अर लोहीकोपकुं प्रातिहोय वा संयुक्तगलामें विनापीडा सोजानें प्रगटकरे अर गलामें दाहकरे अर तीव्रज्वरनें पेदाकरै इंनें वृंदनाम गलाकोरोग कहिजे. ११ अथ शतघ्नीकोलक्षणलिप्यते जींका गलामें मांसका अंकुर जाडा

अ. टी पंचरोहिणीनाम अंकुरात्मकरोगछे जीमें वात. पित. कफ. त्रिदोषनाम सर्वात्मक रक्त तथा मेद ये पांचरोहिणीछे ओमका आसाध्यछे. मद पाकी गुरुछे. जीमें मनुष्यका प्राणघोनरी, और वज्रपादिकमेंभी कंठरोहिणीछे.

जाडा करडा कंठनें रोकिवावाला घणां ऊगे अर वामें पीड घणी चालै प्राणांनें हरवावालो योरोग त्रिदोषका कोपसूं होयछै. सो असाध्यछै. ईनें शतघ्रीगलाको रोगकहिजै. १२ अथ गिलायुरोगको लक्षणलिष्यते जींका गलामै आंवलांकी मींगीप्रमाण गांठि होय अर ऊठेपीड कमहोय वागांठी कफलोहीसूं होयछै. अर भोजनकरतां वावुरीलागे ईनै गिलायुरोग कहिजै. १३ अथ गलविद्रधीको लक्षणलिष्यते. जींका सारागलामैं सोजोहोय अर ऊठेपीड घणीहोय योभी त्रिदोषका कोपसूं होयछै. ईनैं गलविद्रधीरोग कहिजै. १४ अथ गलौघको लक्षणलिष्यते जींका गलाकामार्गमें सोजोघणोहोय अर जींका गलामें पवनभीजाय सकैनहीं अर तीव्रज्वरहो जाय योकफ लोहीका दुष्टपणासूं होयछै ईनैंगलौघरोगकहिजै १५ अथ स्वरघ्नरोगको लक्षणलिष्यते जींकागलामें कफ दुष्ट होय गलाकास्वरनें दूरिकरै अर स्वास दोहरो लियोजाय अर घांघो बोलै भोजन कर्‍यो जायनहीं योकफ कंठका पवननें विगाडै ईनें स्वरघ्नरोग कहिजै. १६ अथ मांसतानको लक्षण लि० जींका गलामें सोजोक्रमसूंवधै अर सारागलामें फैलिजाय गलामें पीडहोय. योभी त्रिदोषसूं होयछे ईनें मांसतानरोग कहिजै. १७ अथ विदारीरोगको लक्षणलिष्यते जींकागलामै तांबाकावर्ण सिरीसो दाहनैंलियां सोजोहोय अर गलो लटकिजाय पकिजाय जींमें राधिपडै योपित्तका कोपसूं होयछै. अर गलाका पसवाडामें जठी सोवै तठीविदारी कंदसो होय. तीनें विदारीगलाको रोग कहिजै. १८ अथ गलका रोगांका जतनलिष्यते जींकै रोहिणीहोय तींका गलाकी जलोकासूं लोही काढाजेतो रोहिणीरोग आछ्योहोय. १

न. टी. जोपत्रिपातकी रोहिणी कंठरोगछै. सोतो प्रगटहोतांही प्राणहरैछै. अर कफकीरोहिणीछै सोप्रगट हुवांपाछै तीनदिननैं प्राणहरैछै. पित्तकी रोहिणीतो मनुष्यनें पांचदिनमें मारे रक्तरोहिणी मेदोरोहिणीनो कंठहीरोकै.

अथवा गलाका सारारोगांका जतनलि० वमनकरावो औषधासूं हुकोपावो. औषधांका कुरला करावो नस्तरदेवो लोहीकढावो लूण को सेकयेकफसारागलाका रोगांनें अछ्या २ अथवा स्नेहकाकुरला येवायका गलाका रोगानें आछ्या. ३ अथ पित्तका रोगका जतन लि० मिश्री सहत फूल प्रियंगू यांकाकाढासूं पित्तकागलाका रोग जाय ४ अथ कफकारोगाका जतनलि० घरकोधूमसो कुटकी यांका काढासूं कफकोरोगजाय ५ अथवा कुटकी सूंठि पीपलि मिरचि वा यविडंग दात्यूणी सींधोलूण यांको काढोकरि तीमें तेलपकावे पाछे ईंतेलकी नासलेतो कफका गलाका सर्वरोगजाय ६ अथवा विष्णु क्रांतको काढोपीवैतो रोहिणीनाम गलाको रोगजाय ७ अथवा विष्णुक्रांता अर सांपाहुली यां दोन्यांनें घोटीपीवैतो कंठसालूक तुंडकेसरी उपजिव्हक अधिजिव्हक येकवंद वृंदगिलयु येसर्वरोग जाय ८ अथ शस्त्रक्रियाकरि गलाको रुधिर कढावैतो गलविद्रधी नें आदिलेर गलाका सर्वरोग जाय ९ अथ कंठका रोगांका जतन लि० कंठरोगांकेविषे लोही कढावणो, नासदेणी, यांसूंकंठ आ छ्याहोय. १० अथवा दारुहलद नींबकीछालि इंद्रजव हरडैकीछा लि, तज यांको काढोकरि सहतनापि पीवैतो कंठका सर्वरोग जाय ११ अथवा कुटकी अतीस दारुहलद, नागरमोथो इंद्रजव यांको काढोकरि काढामें गोमूत नापि पीवैतो कंठका सर्व रोग जाय १२ अथवा हरडैकी छालिको काढो सहतनापि पीवैतो कंठका सर्वरोग जाय १३ अथवा मिनकादाप कुटकी सूंठि मिरचि पीपलि दा

* ग्रसगलाको रोगसारखो छे. भोजनकरतां पनीपीडा होयछे. जीनज्वर होयछे. गळ फाटेमें, होठमें, मसूढामें नसवामें होयछे वास्ते अनेक उपायकरेछे. परंतु [illegible] सिवाये [illegible] आरोहोयछे. जीने [illegible] छे पछे यो [illegible] तथा [illegible] ऊपर [illegible]. पांचवार तथा दशवार दिनतीनमें आराम होय. परंतु [illegible] होयछे. महारोगकी पेठमेंछे.

रुहलद तज त्रिफला नागरमोथो. पाठ रसोत मूर्वा तेजवल हल
द यांको काढो सहत नाषि पीवैतौ अथवा ईंकाकुरला करै अथवा
यांकी सहतसूं गोलीकरै गोलीमूंढामें रापैतौ गलाका कंठका सारा
रोगजाय. १४ अथ गलाका सर्वरोगांकीगोली लि० तेजवल पाठर
सोत दारुहलद पीपलि यांनैं मिहीवांटि सहतसूं गोली वांधै पाछै
ईंगोलीनैं मूंढामैं रापैतौ सर्व गलाका रोग जाय. १५ इतिगलाका
रोगांका जतन संपूर्ण. अथ समस्त मुखरोगांकी उत्पत्ति संष्या
लि० वायको मुषरोग १ पित्तको २ कफको. ३ अथ वायका मुष
रोगको लक्षणलि० जींकामूंढामैं सर्वत्र छाला होयजाय अर वामैं
पीड घणीहोय तौवायको मुखरोग जाणिजै. १ अथ पित्तका मुख
रोगको लक्षणलि० जींका मूंढामैं छाला लालहोय दाहनेलीयां अर
वैपीला होय तींनैं पित्तको मुषरोय कहिजै. २ अथ कफका मुषरो
गकोलक्षणलि० जींका मूंढामै छालासुपेद विनापिडा होय अर
वामैं षाजि आवै तींनैं कफको मुषरोग कहिजै ३ अथ मुखरोगको
असाध्य लक्षणलि० जींका होठामैं छाला होय अर मसूढामें होय
मांस लोहीका कोपसूं अर त्रिदोषका कोपसूंभी होयसो असाध्य
जाणिजै. ४ अथ समस्त मुखरोगका जतनलि० वायका मुखमैं
छाला होयतौ लूणफिटकडीका कुरला कराजै. १ अथ वायनैं दूरि
करिवावाला तेलका कुरलासूये छालाजाय. अथ पित्तका छाला
को जतनलि० महलोठी पैरसार यांनैं ओटाय. ईमैं सहत नापि ईंका
कुरला करैतो पित्तका मुखरोगका छालाजाय. ३ अथवा दूधनैं गर
मकरि क्यूंघृत सहत नापि वैंका कुरला करैतो पित्तरोगका छालाजा
य. ४ अथ कफका छालांको जतन लिप्यते नीलोथूथो फिटकडी

न. टी. मुखरोगादिकमींम वात्नु, कंद, उाळा, मुषकापोका पव्दापव्यको विचारकरणो
पथ्यलि० तुलावदंणो, उलटि, पांतीदंणी, कुरळा, धूम्रपान, मूंग कुळथी, गुवार, पानवीडा
षावड साक, रोटी पीरइत्यादि, कुपथ्यलिप्यते, दांतण, न्हान, दहीं, गुड, पटाई.

यांनें वांटि छालांके लगावैतो अरमूंढाकी लाल नांपतो जायतो क फका छाला जाय. ५ अथ सन्निपातका छालाको जतनलि० यांरो गांमें मूढांकी नसकीसीर छुडावैतो येछाला जाय. ६ अथवा चवेलि कापान गिलवे त्रिफला जवासो दारुहलद दाप याको काढोकरि तीमें सहत नापि ईंका कुरला करैतो त्रिदोषका मुषका छाला जाय ७ अथवा कालोजीरो कूठ इंद्रजव यांनें मिहीवांटि दांतांनांचेदे अर मुखमें रस जायतीनें थूकतो जायतो त्रिदोषका छाला आछ्या होय. ८ अथवा पटोलकापान आंवलाका पान चवेलिकापान यां को काढोकरि पाछे यांका कुरला करैतो त्रिदोषको मुखपाक छाला जाय. ९ अथवा पटोलका पान त्रिफला दारुहलद यांको काढो क रितीमें सहतनापि ईंका कुरला करैतो त्रिदोषको मुखपाक जाय. १० अथवा षस पटोल नागरमोथो हरडेकीछालि कूटकी महलौ ठी किरमालाकीछालि रक्तचंदन यांको काढोले अथवा ईंका कुरला करैतो त्रिदोषका मुखपाक छालाजाय. ११ अथवा तिलांकाडांक क मलकी जड घृत मिश्री दूध सहत यांसारांनें येकठाकरियांका कुरला करैतो त्रिदोषका मुषपाकका छालाजाय १२ अथवा हलद नींब कापान महलौठी कमलकी जड यांनें तेलमें पकावे पाछे ईतेलका कुरला करैतो त्रिदोषका मुखपाकका छालाजाय. १३ येसाराजतन भावप्रकासमें लिष्याछे.

अथ मुषपाकका दूरि करिवाका औरजतनलि० चवेलीकापाना नें चावैतो छालाजाय. १४ अथ पैरसारकीगोलीलि० पैरसार जाय फल भीमसेनीकपूर दिषणीसुपारीतज पत्रज नागकेसरी इलायची कस्तूरी ये सर्वबराबरिले यांनें मिहीवांटि पैरसारकाकाढामें यांकी

न. टी. मनुष्यकानाळियांका मुखमांहे फोलापर तथा नाकार तथा शरीरके मांस जाताहैजे. [illegible] पूर्णचंद्रमोद [illegible] मुखपाक [illegible] [illegible] ज्यांहूं [illegible]

गोली बांधे चणाप्रमाण पाछै गोली मूंढामैं राषैतो जीभका होठा कादांतांका मूंढाका गलाका तालवाका सर्वरोगजाय. १५ अथ दूसरीगोली० जायफल कस्तुरी भीमसेनी कपूर सुपारी यांकी बराबरी षैरसार यांनैं मिहिवांटि गोलीकरी मुषमैं राषैतो मुषका रोग जाय. १६ अथवा दारुहलद गिलवे चवेलीकापान दाष अजवायण त्रिफला यांको काढोकरी कुरलाकरैतो मुषपाक जाय. १७ येजतन वैद्यरहस्यमैंछे. अथ मूंढाउपरकी छाया दुरीहोवाका जतन लि० लोद धणो वच गोरोचन मिरचि यांनैंवांटि मुषकै लेपकरैतो छायाजाय १ अथवा सरस्यूं वच लोद सींधोलूण यांनैं पाणीमैं वांटि मुषकै लेपकरैतो छायाजाय २ अथवा रक्तचंदन मजीठ कुठ लोद प्रियंगू वडका अंकूर मसूर यांनैं जलसूं वांटि लगावैतो छायाजाय ३ अथवा जायफलनैं घसि लगावैतो छायाजाय ४ अथवा आकका दूधमैं हलदनैं भेय लगावैतो छायाजाय ५ अथवा मसूरनैं दूधसूं पीसि घृतमिलाय लेपकरै तो छायाजाय कांतिवधे ६ अथवा केसर कमलकीजड अथवा केसर रक्तचंदन लोद पस मजीठ महलौठी पत्रज कूठ गोरोचन दोन्यूंहलद लाप नागकेंसरि केसूलाफूलप्रियंगू वडका अंकुर चवेलीकापान मोम सरस्यूं वच यांको काढोकरि ईंकाढामैं तेलपकावे मधुरी आंचसूं पाछे ईंतेलको मर्दन करैतो मूंढाकी छायाकील तिल मस्साउगैरे मूंडाका सर्वविकार जाय ७ इति कुंकुमाद्यं तेलम्. येसर्व भावप्रकासमैंछे इति श्रीमन्महाराजाधिराज महाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे क्षुद्ररोग मस्तकरोगनेत्रांकारोग कानका सर्वरोग नाकका सर्वरोग मुषका सर्वरोग होठांका मसू

न.टी. पैथेदीदर्सनीमुखऊपरेछायाहोयछींडहोय जीनैंव्याङ्गप्रसीदितताकहेछे. तिलसिरीसाका छाकाळाछोटाहोय जीनैंतिलकहेछे मसूंडाऊपरमस्साहोयछे येसाकारनसूं मुखसोभाभिन होयछे. जीकाजतनउपरालिष्याछे.

ढाका दांतांका जीभका तालवाका गलका यांको भेदसंयुक्त उत्प
त्ति लक्षण जतन निरूपणंनाम अष्टादशस्तरंगः संपूर्णम् १८

१९ अथ सर्वस्थावर जंगमविषमात्रकी अर यांसूं उपज्याजो
रोग त्यांकी उत्पत्ति लक्षण जतनलिष्यते प्रथम विष दोय प्रकार
कोछै स्थावर १ जंगम २ स्थावर विषहै सो दश १० जायगांरहै
वृच्छकी जडमें १ पत्रमें २ पुष्पमें ३ फलमें ४ छालमें ५ वृक्ष
कादूधमें ६ वृक्षकासारमें ७ वृक्षका रसनाम गुंदमें ८ धातूमात्र
हरतालादिकमें ९ कंदनाम सींगीमोहरादिकमें १० या दशजा
यगां स्थवर विषरहै अथ जंगमविष १६ जायगांमें रहै सोलि
ष्यते मनुष्यादिकांकीदृष्टिमें १ सर्पादिकांका स्वासमें २ स्वानसृ
गालादिकांकी डाढमें ३ सिंहव्याघ्रादिकांका नखांमें ४ विसमरा
दिकांकामलमें ५ मूत्रमें ६ वंदरादिकांका शुक्रमें ७ हिडक्या जि
नावर स्वान सृगालनें ८ आदिलेकर त्यांकी लालमें विष ९ गरम
वस्त पाईहोय इसीजोस्त्री त्याका भगमेंविष १० अर गरमवस्त
जो पाईहोय त्यांकी गुदामेंविष ११ सर्पादिकांक हाडामें विष १२
न्यौल्या माछलानें आदिलेर त्यांका पित्तमेंविष १३ भौरादिकांका
कांटामें विष १४ मूषकांका दांतामें विष १५ सिंहादिकांका रोममें
विष १६ अथ स्थावरविषपायां जोरोगहोयछै सोलिष्यते स्थावर वि
षपायां ज्वरहोय हिचकीहोय दांत आंव्याहोय गलोपकड्योजाय
मूंढेझागआवे. छादर्णहोय अरुचिहोय स्वासहोय मूर्छाहोय जींमें
येलक्षण होय तदि जाणींजे ईस्थावर विषपायोछै. १ अथ वृक्षा
दिकांकी जडका विषपावाका लक्षणलिष्यते वृक्षादिकांकी जडका
विषपायां वमन होय मोहहोय थको होय १ अथ वृक्षादिकांका

१ [illegible]
[illegible]
को [illegible]

पत्रका विषपावाका लक्षणलिष्यते. जंभाई घणीआवे शरीरकांपै स्वासहोय. २ अथ वृक्षादिकांका फलकाविष पावाका लक्षणलिष्यते मुषमैं सोजोहोय शरीरमैं दाहहोय भोजनमात्रमैं द्वेषहोय. ३ अथ वृक्षादिकांका पुष्पका पावासूंघिवाका लक्षणलिष्यते. छर्दि होय आफरोहोय मूर्छाहोय. ४ अथ वृक्षादिकांकी वकलका रसका पावालगावाका लक्षणलिष्यते. वैंका मूंढामैं दुर्गंधि आवे शरीर करडो होयजाय मथवाय होजाय मूंढामैं कफ घणोनीसरै. ५ अथ वृक्षादिकांका दूधका विष पावाका लक्षणलिष्यते मूंढामैं झागआवे. गुदाको बंदछूटिजाय जीभभारी होयजाय. ६ अथ धातुविष हरतालादिकांका पावाका लक्षणलिष्यते. हीयोदूपै मूर्छाहोय शरीरमैं दाहलागिजाय अर तालवामैं दाहलागै ईविषसूं वेगोभीमरै अथवा कालांतरसूं मरै. ७ अथ कंदविष सींगीमोहराने आदिलेर तींका पावाका उगैरैका लक्षणलिष्यते. सींगीमोरादिकांका पावासूं मनुष्यादिक तत्काल मरिजाय हियोदूपै मूर्छाहोय. शरीमैं दाहहोय तालवोवलै. ८ अथ स्थावर विषमात्रका शुद्धहुवाका पावाका गुणलिष्यते. स्थवर विषमात्र लूपोछै अर उन्होछै तीपोछै अर ईंको सूक्ष्मगुणछै. अर योस्त्रीसंग घणो करावैछै. अर योसर्व शारिरमैं तत्काल फैलिजाय अर ऊगिआवे अर तत्काल ईंको परिपाक होय जायछै. अर येईस्थावर विषमैं दशगुणछै ९ अथ स्थावरविषका पावासूं जोरोग उपजेछै सोलि० विषका लूपापणाका गुणसूं मतिकूंविगाडै अर सर्वस्थानका बंधकानैं काढै अर विषका सूक्ष्मपणका गुणतैं शरीरकाअंग अंगमैं औविष वढिजाय अरु विषका पराक्रमसूं स्त्रीसंग घणोकरावै ईंगुणथकीशरीरका द्रो

न. टी. विषादिकथीरोगमटहोयछै. जींकाप्रकार २ कह्याछैजींमैंप्रथम स्थावरजंगम इयांकानामतथारोगउत्पत्ति सर्वप्रकासूं कहिछै. ग्रोपतुरपुरुषभूमण आमछेती.

पानें अर शरिरकी धातानें अर शरीरका मलनें विगाडे अर विषका शीघ्रपणाका गुणथकी शरिरकूं क्लेशदेवे ईवास्ते विष का जतन अति कठिनछे. १० अथ ज्यांका शस्त्रांके विषकीपाण लागिहोय त्यांका लक्षणलि० ज्यांका शस्त्रांके विषकी पाणलागी होय त्यां शस्त्रांकी ज्यांके लागे त्यांका घावतत्काल पकिजाय अर वाघावा मांहिसूं लोही घणोनीसरै अर वेंको लोही कालोहोय अर जींमें दुर्गंधि घणीआवे अर जींको मांस विषरि जाय अर जींनें तिसलागे अर जींके ताप होय अर जींके दाहहोय अर मूर्छाहोय येजीमें लक्षण होय तदि जाणिजे कहींवैरी शस्त्रकी धारकै विषदि योछे. तींकालक्षण जाणिजे. ११

अथ जोकोईकहीनें विषदियो होय तींका जाणिवाके वास्तेतीं का लक्षणलि० विषदेवावालामनुष्यकीवाणीकी चेष्टा मुंढाकी आ कृति ओरसीहोयजाय. अर कोईऊनें बूझे तदि ओविषका देवावा लो वेनें बुझ्यांको उत्तरदेनहीं अर कहवाकीकरे अर ओविषको देवावालो मोहकूंप्राप्तिहोय बोल्यो जायनहीं अर बोलेतो मूर्खकीसी तरे बोले. अर आंगुली करिके पृथ्वीनें घसें अर हसवा लागिजा य अरघरमांहिसूं बारेनीसरै थाकी करें अर अठी ऊठीवारंवारदे पतो जाय अर विषकादेवावालाको चित्त विपरीतहोयजाय, येसर्व लक्षणविषका देवावाला मनुष्यमे होयछे सो बुद्धिवान वेंनें जाणि जे. १२ अथ जंगमविषजो सर्पादिक सोजीनें काटे त्यांसूउपज्यो जो रोग त्यांका सामान्य लक्षण लिष्यते, जांके कहीं जिनावरका टयो होय तीनें निद्राआवे अर वेंके तंद्राहोय अर सर्व ज्ञानेंद्रिय जातीरहे अर दाहहोय आंध्यारी आवें अररोमांचहोय अर कं

म. टी. विषकी उपाधीमें पथ्य लि० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] आंवळाकी कढी तथा [illegible] [illegible], तथा [illegible] [illegible], दाडम, [illegible], [illegible] [illegible]

सोजोहोय अर अतिसारहोय येसर्व लक्षण कहींविषेल जिनावर का काट्याका जाणिजे. १ अथ सर्पनाम भोगीमंडल राजिलजो सर्प त्यांकाकाटिवाका जुदाजुदा लक्षण लि० वायकी प्रकृति वालो भोगी पित्तकी प्रकृतिवालो मंडलनाम कफकी प्रकृतिवालो राजिलनाम. २ येजेसर्पजीनैं काटै त्यांकालक्षणलि० भोगीसर्व जींको काटै तींका दंसकी जायगां काली पडिजाय अर वेंकै सर्ववायका रोग उपजि आवै अर मंडलनाम सर्पजीनैं काटै तींका काटवाकी जायगां पीलीहोयजाय. अर कोमल सोजो होजाय अर वेंके पित्त का सर्वरोग होजाय. ओर राजिलसर्प जीनैं काटै तींका काटवाकी जायगां स्थिर सोजोहोय अर ऊठे पीलो अर चीकणो अर झाग नैं लीयां अर जाडो वेकाटवाकी जायगां लोहीनीसरै अर वेंकै कफका सर्व रोगहोजाय अथ देशविशेपमैं अर कालविशेपमैं जोसर्पादिककाट्याछे त्यांका लक्षण लिष्यते. पिंपलकास्थानमैं देहरामैं समसानमै वंबीकनैं चोहटाकै मांहिं संध्याकैसमैं भरणी अरमघानक्षत्रकैमांहिं अर मर्मस्थानकेमांहिं जोसर्पादिकयास्थानमैं मनुष्यादिकनकूं काटै सोमनुष्य मरिजाय. ३ अथ दर्वीकरनामसर्प जींको फण कडछीसरीसो होय तींका काट्याको लक्षण लि० जींको फण पहिया सिरीसो अथवा छत्रसिरीसो कमलसिरीसो अंकुश सिरीसो होय अर ओसर्प उतावलोचालै वेनेदर्वीकरसर्प कहिजे. ४ अथ अतनामनुष्यांदिकांनैं सर्पादिककाट्या होय त्याको जतनकीजे नहीं. सोलिष्यते. अजीर्ण वालानैं गरमीकाविकारवालानैं बालकनैं बूढानैं भूषाआदमीनैं घाववालानैं प्रमेहवालानैं गर्भवती स्त्रीनैं जींका सरीरमें रुधिरनहींहोय जीनैं यां आदम्यांनैं सर्पादिक काटैतो अ

न. टी. कुपथ्यनामपरेज रापणां छोडिदेणूं. विरोधीअन्न, क्रोधकरणो नहीं भयराषणोनहीं स्त्रीसंगकरणोनहीं, दिनमैंनिद्राऊंघणीनहीं, कोदूवषानीनहीं,मूग, वटाणा,नेछ,घृत, पेसाजानहीं.

साध्यजाणिजै. ५ अथवा जींका मूंडामैं रुधिरधारपड़ै अर गूदामैं इंद्रीमैं रुधिरकी धारपडै सोभी असाध्यछै. ६ अथ [illegible] विषको लक्षण लिष्यते. स्थावर अथवा जंगम ज[illegible] सो नांकाप्रभावसूं वै औषदादिक दूषी विषहोय जाय वाकों रहै रस जातो रहै. अर पुराणी औषदादिक विषकी षायतो मूर्छा भ्रम वमनादिक होयजाय.७अथ मूषाका विषको लक्षणलि० जठे मूसोकाट्योंहोय तींजायगां लोहीपीलो नीसरै. अर ऊठे मंडल पडिजाय अर ज्वरहोय अरुचिहोय रोमांचहोय दाहहोय ये लक्षण जींकांशरीरमैंहोय तदि जाणिजै. ईनैं मूसोकाट्योछै. ८

अथ प्राणहर मूसाका विषका लक्षण लिष्यते. जींका मूसाका काट्याथकी मूर्छाहोय अंगमैं सोजो होय शरीरकोवर्ण औरसो व्हैजाय शरीरमैं पेद घणो होयजाय दंशकी जायगांलोही घणो पडै अर ज्वरहोय आवै सिर भाखोंहोय जाय लालघणी पडै [illegible] छादे ईमूसाका काट्यानैं असाध्य जाणिजै ९ अथ किरकाट्याका विषको लक्षण लिष्यते किरकांट्याका काट्याकी जायगां सोजो होय अर ऊठे जायगां काली पडि अर शरीरका नानावर्ण होय जाय अर मोहहोय आवै अर अतिसार होयजाय तदि जाणिजै किरकांट्याकाकाट्याकोंजहरछै. १० अथ विछूका काट्याका विषको लक्षणलि०जींजायगां शरीरमैं वीछूकाटै तींजायगां अग्निलागिजाय अर ऊंचोचढै जहरऊठे काटवाकी जायगां शरीर फाटिवासो लागिजाय. ११ अर वीछूका काट्याको असाध्यलक्षण लिष्यते [illegible] वीछू नीपट जहरी होय अर नाकमैं काटैतो ऊठे अग्नि घणी लागै

* [illegible] देगभूमिका[illegible] [illegible] [illegible]छै. [illegible] [illegible] परंतुयाको[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सरवै [illegible] नजर आवैछै.

वेंकीजीभ थकीजाय पीडसूं अर ऊठेको मांस पडिवा लागिजाय ईसो मनुष्य मरिजाय. १२ अथ विशेल मींडको काव्यौ होय तीं काविसको लक्षणालिष्यते. विसेलमींडको जीनें काठे तीकेंवी जायगां सोजो होय अर ऊठे पीडाहोय अर वेनें तिसलागे अर नींद घणी आवे अर छादणी होय. १३ अथ विसेलमच्छ जीनें काटे तींका लक्षणालिष्यते विसेल माछलो जीनें काटे तींका सरीरमें दाह लागे अर उठे सोजो होय अर पीडहोय. १४ अथ विसेल जोकका काव्याको लक्षण लिष्यते. ऊठे पाजि आवे सोजो होय ज्वर होय मूर्छाहोय तदि जाणिजे विषजोकका काव्याकोछे. १५ अथ विसेल विषमरे काव्यौ होय तींको लक्षण लिष्यते. ऊठे दाहहोय अर सोजोहोय अर पीडहोय पसेव आवें. १६ अथ कनसलाका काव्याको लक्षण लिष्यते जीजायगां कनसलो काटे तठे पीडाहोय अर पसेव आवे अर ऊठे दाहहोय १७ अथ माछरका विषकोलक्षणालि० ऊठे पुजालि आवे क्यौंसोजो होय अरमंद पींड होय. १८ अथ वनका माछरका काव्याको असाध्य लक्षण लिष्यते. जींमें विसेल माछर काटेजींके पिस्ती सिरिसा लाल दाफड घाव सिरिंसो ऑंडा पडिजाय अर ऊटे पीडाघणी होय ओ असाध्य जाणिजे. १९ अथ विशेल मापीका काव्याको लक्षण लिष्यते जठे विशेलमापी अथवा भंवरी मापी जीनें काटेतींका विसेलकोलक्षणलि० जीजायगांकाटे तठे काली जायगां पडिजाय दाहहोय मूर्छाहोय ज्वरहोय अर ऊठे दाफडहोय ईको काव्यौ मरिजाय. २० अथ सिंहवघेरोचितो जीनें काटेतींको लक्षणालि० जीनें सींह्यादिक काटे तींको घावपके अरवेमें राधिपडे अर ज्वर होय आवे २१

न. टी. पोहाडकीमाषी. तथाभंवरी. तथाटांटया. तथावननाछर १० जनु जंतु काटेछे. जीजायगां सोजोहोय दाहहोयछे. औरऊपरकोहानेंयमें नर्डकेघावपडेपकरे भरलोहाम्रौं छाडं देवे सानवार छोडयडे विषउतरे दोकहै.

अथ हिडक्या स्वानको लक्षणलि० जींका मूंडामें लालपडै अरम्रो स्वान आंधो होयजाय अर बहरो होयजाय अर ओ चोगरदाई दौडे अरवेकी सूधी पूछ होयजाय अर वेकी दाढी अर कांधो अर माथो घणो दूपै तींकारिवेको मूंढो नीचोरहे इसा स्वाननें अथवा सिंहस्याल व्याघ्रादिकानें हिडक्याही जाणीजे. २२ अथ हिड क्या स्वानादिक जीनें काटै तींको लक्षणलि० जीनें हिडक्यास्वाना दिक काटै तींको लोही कालोनीसरै अर वेकोहायो शिरघणोदूपै अर ज्वरहोय शरीरवेको जकडबंदहोय तिसलागै अर ऊठपाजि आवे पीडहोय शरीरकोवर्ण औरसोहोजाय, अर शरीरमें क्लेश घणोहोय भोंवल आवे दहाहोय काठवाकी जायगांपके सोजोहो य ऊठगांठि पडिजाय काटयो जठे फाटिवालागिजाय ऊठे फोडा होय आवे ये ईंका लक्षण जाणीजे. २३ अथ ईंको असाध्यलक्षण लि० जोपुरुप जलनें काचमें तैलादिकमें श्वानस्यालकों देखे अर पुकारऊठे अर वाकीसी चेष्टाकरिवा लागिजाय अर जलसेंडरे ओमरिजाय. २४ अथ स्थावर विपमात्रका जतनलि० स्थावर वि पजीनें पायाहोय तीनें ओपद्यांसूं वमन कराजेतो स्थावर विपजा य. १ विपमात्र गरमछे ईवाते सीतल सर्व जतन आछ्या २ अथवा सहत घृतयुक्त विपनें दूरिकरिवावाली ओपदीदीजेतो स्थावरविपजाय. ३ अथवा स्थावरविषवालानें पटाई मिरचि दीजे नही अर वेनें भोजनमें साठ्या चावल कोदू सींबोलूण दीजे. ५ अथवा विपका दूरिकरिवाको लेपलि० फूलप्रियंगू कांगणीकीजड पान वकल फूलबीज अर सिरसको पंचांग त्यानें गोमूतमें वांटि लेपकरेतो स्थावरविपको रोगजाय. ६ अथ दूसीविपका दूरिकरि

२. टी. अंगनविषै. कर्णादिकविषै मनकछे, परंतु महाविर्षिशकछे जाकी आवश्यकता.
३. नादशिशुक मावलिशुलेछे, जो मदोंइयायोगे यथा मुनकरहे. अर वहवनी ऊ गहीछे.

वाको लेपलि० पीपलि छड लोद इलायाचि कालिमिरचि नेत्रवालो सोनागेरू यानेंजलसूं मिहीवांटि लेपकरैतौ दूसिविषजाय. ७ येस वैजतन भावप्रकासमैंछे. अथवा चौलाईकी जडनें चावलांकापाणी सूं पीसिपीवैतौ स्थावरविषको दोष दूरिहोय. ८ अथ जंगमविषका जतन लि० अथ मृत्युपासछेदि घृत लि० हरडैकीछालि गोरोचन कूठ आककाफूल कमलकीजड नरसलकीजड वेतकीजडतुलसी इंद्रजव मजीठ जवासो सतावरी सिंगाडा यांको काढोकरि तीमें गउकोघृत पकावे पाछे ये सर्वबलिजाय घृतमात्र आयरहै तदि ईघृतमैं बराबरिको सहतनाषि ईको शरीरके लेपकरैतौ विषमात्रको दोष सर्पकाकाट्याउगैरे सर्वजिनावरको विष दूरिहोय ईघृतनें पावामें लेपमैं नासमैंदीजे ९ योभावप्रकासमैंछे. अथ सर्पकाविषका दूरिहोवाको जतनलिष्यते घृत सहत मापन पीपलिआदो मिरचि सींधोलूण यांसारांनें मिहीवांटि पीवैतौ काला सापकौभी काट्यौ आछ्योहोय १० अथवा सिरसका फूलकारसकी सहजणांका वीजांकै पुट ७ दे पाछे वेंको अंजन करैतो सांपकोकाट्यौ आछ्योहोय ११ अथवा सुपेद साटीकीजडनें पुष्यार्ककेदिन लावे पाछे वेनें चावलांका पाणीमें वांटि पीवैतौ सापकोकाट्यो आछ्यो होय. १२ अथ वीछूका विसकोजतनलिष्यते जमालगोटानें घासि विछूका डंकके लगावैतौ वीछूको विष दूरिहोय १३ अथवा नौसादर हरताल यानें पाणीसूं वांठि वीछूका डंकके लेपकरैतौ वीछूको विष दूरिहोय १४ अथवा पलासपापडानें आककादूधमें घसि वीछूकाडंकके लगावैतौ वीछूकोविष दूरि होय जाय. १५ अथवा सिरसका बीजानें बकरीका दूधमें वांटि वीछूकाडंकके लगावैतौ वीछू

न. टी. कोईकोईतो मरे तथा गोहरो तथा गडासल्यो इत्यादि उछलकर डसेछे. मरजोभी कहेछे, मैंनुं काटयोनोछे. परंतु आवाकारिद्री मनी पड़ले. लोकप्रसिद्ध वातछे.

को विपजाय. १६ अथ वींछूका विषका दूरिहोवाको मंत्र लिप्यते ॐ आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च सुपर्णपक्षवातेन भूम्यांगच्छमहाविष १ झोपक्षजोगपदज्ञश्री शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञा भूम्यांगच्छमहाविष ईमंत्रसूं वार २१ डंकऊपर झाडो दीजे तो वींछूको जहर उतरे १ अथ कनीरका विषका दूरिकरिवाका जतन लिप्यते हल्दनें दूधमें वांटि वेमें मिश्रीमिलाय पीवेतो कनीरको विष उतरे. १७ अथ धत्तूराकाविषको दूरिहोवाको जतनलि० चोलाईकी जड अथवा गिलवे त्यांने पीवे अथवा कपासका पंचांगनें पीवेतो धत्तूराको विषजाय १८

अथ आककाविष दूरिहोवाको जतनलिप्यते तिल दोव यांनें बकरीका दूधमेंवांटि लेपकरेतो आकको विषजाय १९ अथ कौंछिका विषका दूरिहोवाको लेपलिप्यते घृतको मर्दन करेतो कौंछिको विषजाय २० अथ भिलावाको विषको दूरिहोवाको जतन लिप्यते १०० सौवारका धोयाघृतको मर्दन करेतो भिलावाका जहर जाय. २१ अथ मापीकाविषका दूरिहोवाको लेपलिप्यते केसरि तगर सूंठि यांनें जलसूंवांटि लेप करेतो मापीको विषजाय. २२ अथ भौरामापिका विषका दूरिहोवाको लेपलि० सूंठि कचुतरकी विट विजोराकोरस हरताल सींधोलूण यांनें मिहींवांटि कठै लेपकरेतो भौरामापीको विषजाय २३ अथ ऊनराका विषका दूरिहोवाको जतनलि० धूमसो मजीठ हल्द सींधोलूण यांनेंवांटि पाणीसूं लेपकरेतो ऊनराकाविषजाय २४ अथ मींडकाको विषदूरिहो

७ [illegible] तथा स्थानस्थान [illegible] होयछे. [illegible] का [illegible] होयछे. [illegible] होयछे. [illegible] होयछे. [illegible] [illegible] [illegible].

वाको जतन लि० शिरसका बीजांनै थोहरीका दूधमैंवाटि लेपकरै तौ मींडकाको विषजाय. २५ अथ कनसलाका विषदूरि होवाको लेपलि० दीपगका तेलको लेपकरैतौ कनसलाको विषजाय २६ अथ सर्पका विषका दूरिहोवाको अंजन लि० जमालगोटाकि मींगकै नींबूका रसकी पुट ७ दे तावडै सुकावै पाछै ईसीही तरै लाषका रसकीपुट १ दे पाछै ईंको अंजनकरैतौ सांपको काट्योडोआछ्यौहोय २७ अथ हिडक्यो कुत्तो श्यालउगैरै काटै तींको जतन लि० योजिनावर जठैकाटै तीजागांको लोही कढाय नापिजै अथवा ऊठै लोहकी सलाका सूंडाहदीजैतौ कुत्ता स्याल उगैरैको विष दूरि होय २८ अथवा धतूराको रस टका १ आकको दूध टका १ घृत टका १ यांनैं मिहीवांटि यांको लेपकरैतौ हिडक्या गंडकको विषजाय. २९ अथवा धत्तूराका फलनैं बीजांसमेतले पाछै चौलाईकी जडकारससूं वांटै अथवा गोभीसहतसूं वांटै पाछै लेपकरैतौ हिडक्या कुत्ताकोविषजाय. ३० अथवा मापन आककोदूध तेल गुड यां च्यारयांनै बराबरिले पाछै टंक १ रोजीनादिन ७ पायतौ ईंको विषजाय. ३१ अथवा ईमंत्रसूं १०८ एकसौं आठआहुतीदे जीनै हिडक्यो काटयौहोय तींनैं चोहटे अथवा नदीकीतीर चौकोदिवाय वेनैं स्नान कराय आपपवित्रहोय ऊठे ईमंत्रसूं होम करै एकसौं आठ आहुती दे पाछै डाभसूं ईंकै झाडोदेतौ ईंको विषउतरै अथमंत्रलि० अलर्काधिपतेयक्ष सारमेयगणाधिप॥ अलर्क जुष्टमेतंमेनिर्विषंकुरुमाचिरात् स्वाहा॥ इतिमंत्रः अथवा गुड तेल आकको दूध यांको लेपकरैतौ स्वानका काटयाकोविष दूरिहोय ३२ अथवा कूकडाकी बींटको लेपकरै अथवा कुवारका पाठाकीगिरि सींधोलूण ये

न. टी. स्वानका विषऊपर औषधघणीऊे. मरु लेपादिकभीऊे. परंतु मुख्यवंतो. उलटी कराणी. अर जखमी रक्तकाढणो. अर डंकऊपर तुरत दगावा ओरलूं तथा अग्नि अछा न देवैतो गुणकरे.

को विषजाय. १६ अथ वीछूका विषका दूरिहोवाको मंत्र लिख्यते ॐ आदित्यरथवेगेन विष्णोर्बाहुबलेन च सुपर्णपक्षवातेन भूम्यांग च्छमहाविष १ झोपक्षजोगपदज्ञश्री शिवोत्तमप्रभुपदाज्ञा भूम्यां गच्छमहाविष ईमंत्रसूं वार २१ डंकऊपर झाडो दीजे तो वीछूको जहर ऊतरे १ अथ कनीरका विषका दूरिकरिवाका जतन लिख्यते हलदनें दूधमें वांटि वेमें मिश्रीमिलाय पांवेतो कनीरको विष उत रे. १७ अथ धत्तूराकाविषको दूरिहोवाको जतनलि० चौलाईकी जड अथवा गिलवे त्यांने पीवे अथवा कपासका पंचांगनें पीवेतो धत्तूराको विषजाय १८

अथ आकका विष दूरिहोवाको जतनलिख्यते तिल दोब यानें बकरीका दूधमेंवांटि लेपकरेतो आकको विषजाय १९ अथ कौंछिका विषका दूरिहोवाको लेपलिख्यते घृतको मर्दन करेतो कौंछि को विषजाय २० अथ मिलावाको विषको दूरिहोवाको जतन लि ख्यते १०० सौवारका धोयाघृतको मर्दन करेतो मिलावाका जहर जाय. २१ अथ मापीकाविषका दूरिहोवाको लेपलिख्यते केसरि तगर सूंठि यानें जलसूंवांटि लेप करेतो मापीको विषजाय. २२ अथ भौरामापिका विषका दूरिहोवाको लेपलि० सूंठि कबूतरकी विट बिजोराकोरस हरताल सींधोलूण यानें मिर्हीवांटि वांठ लेपक रेतो भौरामापीको विषजाय २३ अथ ऊनराका विषका दूरिहो वाको जतनलि० धूमसो मजीठ हलद सींधोलूण यानेंवांटि पाणी सूं लेपकरेतो ऊनराकाविषजाय २४ अथ मींडकाको विषदूरिहो

* [illegible]

वाको जतन लि० शिरसका बीजांनै थोहरीका दूधमैंवाटि लेपकरै तौ मींडकाको विषजाय. २५ अथ कनसलाका विषदूरि होवाको लेपलि० दीपगका तेलको लेपकरैतौ कनसलाको विषजाय २६ अथ सर्पका विषका दूरिहोवाको अंजन लि० जमालगोटाकि मींगकै नींबूका रसकी पुट ७ दे तावडै सुकावै पाछै ईसीही तरै लाषका रसकीपुट १ दे पाछै ईको अंजनकरैतौ सांपको काट्योडौआ छ्योहोय २७ अथ हिडक्यो कुत्तो श्यालउगैरै काटै तींको जतन लि० योजिनावर जठैकाटै तीजागांको लोही कढाय नापिजै अथवा ऊठै लोहकी सलाका सूंडाहदीजैतौ कुत्ता स्याल उगैरैको विष दूरि होय २८ अथवा धतूराको रस टका १ आकको दूध टका १ घृत टका १ यांनैं मिहीवांटि यांको लेपकरैतौ हिडक्या गंडकको विषजाय. २९ अथवा धत्तूराका फलनें बीजांसमेतले पाछै चौलाईकी जडकारससूं वांटै अथवा गोभीसहतसूं वांटै पाछै लेपकरैतौ हिडक्या कुत्ताकोविषजाय. ३० अथवा मापन आककोदूध तेल गुड यां चार्यांने बराबरिले पाछै टंक १ रोजीनादिन ७ पायतौ ईको विषजाय. ३१ अथवा ईमंत्रसूं १०८ एकसौं आठआहुतीदे जीनें हिडक्यो काट्योहोय तीनें चोहटे अथवा नदीकीतीर चौकोदिवाय वेनें स्नान कराय आपपवित्रहोय ऊठे ईमंत्रसूं होम करै एकसौं आठ आहुती दे पाछै डाभसूं ईकै झाडोदेतौ ईको विषउतरै अथमंत्रलि० अलर्काधिपतेयक्ष सारमेयगणाधिप॥ अलर्कं जुष्टमेतंमेनिर्विषंकुरुमाचिरात् स्वाहा॥ इतिमंत्रः अथवा गुड तेल आकको दूध यांको लेपकरैतौ स्वानका काट्याकोविष दूरिहोय ३२ अथवा कूकडाकी वींटको लेपकरै अथवा कुवारका पाठाकीगिरि सींधोलूण ये

न. टी. स्वानका विषऊपर ओषधपणीछे. मह लेपादिकभीछे. परंतु जुलाबदेणो. उलटी कराणी. अर ऊदाको रक्तकाढणो. अर डंकऊपर तुरत तपाया लोहाएं तथा अग्निमें जलानदेवैतौ गुणकरै.

बराबरिदिन ५ बांधेतो स्वानको विषजाय. ३३ अथवा चौलाईकी जड तुलसीकीजड वच यांनैं चावलांका पाणीमैं वांटिदिन ७ पीवै तौ स्वानकोविषजाय. ३४ अथवा चौलाईकी जडकोरस अर घृत चोप ये मिलाय दिन ७ षायतौ स्वानको विषजाय ३५ अथवा कडवीतुंबीकी जड टंक ४ सूंठि टंक ४ मिरचि टंक ४ नींबकी नींबोली टंक ४ जमालगोटा सोध्या टंक ९ निसोत टंक ७ यांनैं मिहीवांटि गुडमें गोलीबांधि टंक २ भरकीगोली १ करै गरम पाणीसूंदिन ७ तथा १४ लेतौ हिडक्यास्वानको विषजाय. ३६ अथवा कडवी तुंबीकीजड हिंगलू सोध्याजमालगोटा मिरचि फूल्यो सुहागो येबराबरिले यांकी रती २ भरकीगोली चौलाईकारसमैं बांधेगोली १ तातापाणीसूं दिनसात लेतौ स्वानकाविषजाय अर जठेकाट्यौ होय तठें ईगोलीनैं मूतसूं घसिलगावैतौ मूतहोय लट गिरिपडै. ३७ इति स्वानकाविषका जतनसंपूर्णम् इति स्थावर जंगमविषमात्रकीउत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे स्थावरजंगमविषमात्रकोभेदसंयुक्त उत्पत्तिलक्षण जतन निरूपणं नाम एकोनविंशतितमस्तरंगः संपूर्णम् १९

२० अथ स्त्रियांका प्रदरनैं आदिलेर सर्व रोगांकीउत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते अथ प्रदररोगकी उत्पत्ति लिष्यते. विरुद्ध भोजनसूं घणा मद्यकापीवासूं भोजन ऊपरि भोजन करवासूं अजीर्णसूं गर्भका पडिवासूं अतिमैथुनसूं असवारीका चढवासूं मार्गका चालिवासूं सोचसूं अतितीक्ष्णपणासूं भारका वहवासूं चोटका लागिवासूं दिनका सोवासूं स्त्रियांके वायपित्तकफ सन्निपात ये कोपकूं प्राप्त

न. टी. [illegible]
[illegible]
[illegible]

होय प्रदरकारोगनैं ये पैदाकरैछै. सोप्रदरकोरोग स्त्रियाकै चारि प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ प्रदरको सामान्य लक्षणलिष्यते स्त्रीकी जोनिमांहिसूं नानाप्रकार को लोही विनाही ऋतुनीसरै अर रुधिरनीसरता हाडफूटणी होय सर्वशरीरमैं अर पीडचालै तीनैं प्रदरकोरोग कहिजे १ अथ वायका पैरको लक्षणलिष्यते वैंकी जोनिको लोही लूषो होय अर झागनैं लीयांहोय अर थोडो थोडो जाय अर पीडनैं लीयांहोय अर मांसका पाणीसिरीसोजाय १ अथ पित्तका पैरको लक्षण लिष्यते वैंकीजोनीको लोही पीलोजाय नीलो सुपेदाईनैं लीयां लाल अर ऊन्हू घणोजाय अर सरीरमैं दाहहोय ये पित्तका लक्षणछै २ अथ कफका पैरको लक्षण लिष्यते जींकै रुधिर गूंद सिरीसो चीकणो अर काचो अर पीलो अर गुलाबकाजल सिरीसो जाय तीनैं कफको कहिजे ३ अथ सन्निपातका पैरको लक्षण लिष्यते सहत सिरीसो अथवाघृतसिरीसो माथाकी भेजा सिरीसो मुर्दाकी दुरगंधनैलीयां जींको लोही जायसो त्रिदोषका जाणिजे ४ अथ रुधिरका घणां जावाको उपद्रव लिष्यते रुधिर घणांजाय तदि स्त्रीदुर्बल होयजाय श्रमहोय मूर्छाहोय मदहोय तिस घणीलागै दाहहोय प्रलापहोय शरीरपीलो होय तंद्राहोय अर वायका औरभीरोग होय ५ अथ प्रदरका असाध्य लक्षण लिष्यते जोनिमाहिसूं निरंतर रुधिर चालवोहीकरै रहैनही अर तिसहोय दाह होय अर शरीरमें ज्वरहोय शरीर दुबलो होय वैनें असाध्य जाणिजे ६ अथ शुद्ध आर्तव नाम स्त्रीधर्मको लक्षण लिष्यते जीस्त्रीकी जोनिको रुधिर महिना की महिनैं सुसाका रुधिर सिरीसो नीसरै जींरुधिरमें दाहनहीं

५. न. टी. रसकोटांकको मात्र १ कांजे मूंदरोबरीनसों दिनोदिनमारे अरु शुद्ध रक्तवर्णको आवे जोमें वेगमिल्योनहीं मावे पुरको आवेदिन ४ तथा पांच पाछे शरीर हलको होयजाय ईंपीसीनैं आरोग्य जानिजे.

बराबरिदिन ५ बांधैतौ स्वानको विषजाय. ३३ अथवा चौलाईकी जड तुलसीकीजड वच यांनैं चावलांका पाणीमैं वांटिदिन ७ पीवै तौ स्वानकोविषजाय. ३४ अथवा चौलाईकी जडकोरस अर घृत चोष ये मिलाय दिन ७ षायतौ स्वानको विषजाय ३५ अथवा कडवीतुंबीकी जड टंक ४ सूंठि टंक ४ मिरचि टंक ४ नींबकी नींबोली टंक ४ जमालगोटा सोध्या टंक ९ निसोत टंक ७ यांनैं मिहीवांटि गुडमैं गोलीबांधि टंक २ भरकीगोली १ करै गरम पाणीसूंदिन ७ तथा १४ लेतौ हिडक्यास्वानको विषजाय. ३६ अथवा कडवी तुंबीकिजड हिंगलू सोध्याजमालगोटा मिरचि फूलायो सुहागो येबराबरिले यांकी रती २ भरकीगोली चौलाईकारसमैं बांधैगोली १ तातापाणीसूं दिनसात लेतौ स्वानकाविषजाय अर जठैकाट्यौ होय तठैं ईंगोलीनैं मूतसूं घसिलगावैतौ मूतहोय लट गिरिपडै. ३७ इति स्वानकाविषका जतनसंपूर्णम् इति स्थावर जंगमविषमात्रकीउत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम् इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे स्थावरजंगमविषमात्रकोभेदसंयुक्त उत्पत्तिलक्षण जतन निरूपणं नाम एकोनविंशतितमस्तरंगः संपूर्णम् १९

२० अथ स्त्रियांका प्रदरनैं आदिलेर सर्व रोगांकीउत्पत्तिलक्षण जतन लिष्यते अथ प्रदररोगकी उत्पत्ति लिष्यते. विरुद्ध भोजनसूं घणा मद्यकापीवासूं भोजन ऊपरि भोजन कस्यांसूं अजीर्णसूं गर्भका पडिवासूं अतिमैथुनसूं असवारीका चढवासूं मार्गका चालिवासूं सोचसूं अतितीक्ष्णपणासूं भारका वहवासूं चोटका लागिवासूं दिनका सोवासूं स्त्रियांके वायपित्तकफ सन्निपात ये कोपकूं प्राप्ति

न. टी. स्त्रियांकारोग कोईकोई विशेषछै. ज्यांरोगांनैं ग्रंथकर्त्ता स्पष्टलिष्याछै. अर क्ताकानिदान सर्वलिष्याछै. परंतु विशेषता लिषूंछूं जोकारण गर्भकोछै सो मनुष्य श्रीपुरुषकारजवीर्यकोछै ऑजीशुद्धता चाहिजे.

होय प्रदरकारोगनैं ये पैदाकरेछै. सोप्रदरकोरोग स्त्रियाकै चारि प्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ प्रदरको सामान्य लक्षणलिष्यते स्त्रीकी जोनिमांहिसूं नानाप्रकार को लोही विनाही ऋतुनीसरे अर रुधिरनीसरता हाडफूटणी होय सर्वशरीरमैं अर पीडचाले तीनैं प्रदरकोरोग कहिजे १ अथ वायका पैरको लक्षणलिष्यते वैंकी जोनिको लोही लूषो होय अर झागनैं लीयांहोय अर थोडो थोडो जाय अर पीडनैं लीयांहोय अर मांसका पाणीसिरीसोजाय १ अथ पित्तका पैरको लक्षण लिष्यते वैंकीजोनीको लोही पीलोजाय नीलो सुपेदाईनैं लीयां लाल अर उन्हू घणोजाय अर सरीरमैं दाहहोय ये पित्तका लक्षणछै २ अथ कफका पैरको लक्षण लिष्यते जींकै रुधिर गूंद सिरीसो चीकणो अर काचो अर पीलो अर गुलाबकाजल सिरीसो जाय तीनैं कफको कहिजे ३ अथ सन्निपातका पैरको लक्षण लिष्यते सहत सिरीसो अथवाघृतसिरीसो माथाकी भेजी सिरीसो मुर्दाकी दुरगंधनैलीयां जींको लोही जायसो त्रिदोपका जाणिजे ४ अथ रुधिरका घणां जावाको उपद्रव लिष्यते रुधिर घणांजाय तदि स्त्रीदुर्वल होयजाय श्रमहोय मूर्छाहोय मदहोय तिस घणीलागे दाहहोय प्रलापहोय शरीरपीलो होय तंद्राहोय अर वायका औरभीरोग होय ५ अथ प्रदरका असाध्य लक्षण लिष्यते जोनिमाहिसूं निरंतर रुधिर चालबोहीकरे रहेनही अर तिसहोय दाह होय अर शरीरमें ज्वरहोय शरीर दुबलो होय वेनें असाध्य जाणिजे ६ अथ शुद्ध आर्तव नाम स्त्रीधर्मको लक्षण लिष्यते जीस्त्रीकी जोनिको रुधिर महिनाकी महिनैं सुसाका रुधिर सिरीसो नीसरे जीरुधिरमे दाहनहीं

५. न. टी. रजस्रोटांकडो मांव २ कोठे मूंसरोवरीनसों दिनोदिनभावे मह शुद्ध रक्तरणको आवे जीमे रोगमिल्योनहीं मावे गुपतो भावेदिन ४ तथा पाच पाछे शरीर होयजाय ईंधीसिनैं आरोग्य जाणिजे.

अर रुधिर नींसरतां पीडनहीं अरपांच ५ रात्रिताई नीसरै अर घ णोनीसरै नहीं थोडोभी नीसरैनहीं तीनैं शुद्ध स्त्रीधर्मपणो जाणिजे ७ अथ स्त्रीधर्मपणो १६ दिनतांई रहैछै. अथ प्रदररोगको जतन लिष्यते संचरलूण जीरो महलौठी कमलगट्टा यांको काढो सहतना षि लेतौ. वायका पैरको रोगदूरिहोय १ अथवा महलोठी टंक २ मिश्री टंक २ यांनैं मिहीवांटि चावलकापाणीसूं लेतौ पित्तका पै रको रोगजाय अथवा रसोत टंक २ चौलाईकी जडकोरस टंक २ तीमैं सहतमिलाय दिन सात पीवैतो सर्व प्रकारका पेरका रो गजाय २ अथवा आसा पांलाकी वकलको काढोकरि तींमें दूध नाषि पीवैतो घणोभी पैरको रोगजाय ४ अथवा डाभकी जडनैं चांवलांकापाणीसूं वांटि वेनैंदिन ३ पीवैतो पैरको रोगजाय ५ अ थवा कटूंबरकी वकलको रसतीमैं सहत नाषि अथवा मिश्रीनाषे तींमैं चांवलाको पाणीनाषिपीवैतो पैरकोरोगजाय ६ अथवा दारु हलद रसोत चिरायतौ अर डूसो नागरमोथो रक्तचंदन आककाफू लं यांको काढोकरे तीमैं सहत नाषि पीवैतो लाल अर सुपेद अर पीला सर्व प्रकारका स्त्रीका पैरका रोगजाय ७ इतिदार्व्यादि क्काथः अथवा गूलरिका फलांनैं सुकाय करि पाछै वेनै मिहीवांटि वामै मिश्री सहत मिलाय वांकीगोली वाधे टका १ भरकी पाछै ईगोली दिन ७ सात पायतौ पैरकोरोग जाय ८

अथ स्त्रीयांकै पैरको भेद सोमरोग होयछै तींको लक्षण लिष्यते स्त्रियांका घणा प्रसंग करिकै सोचतैं पेदका करिवा करिके जहर कासंजोगतैं अतिसारकीसीनाईं स्त्रियांकै अथवा पुरुषांकेभीसो मरोग होयछै. वारंवारमूत घणोउतरै ईंकोनाम सोमरोग कहिजै ९

---

* पैरकारोगको नाम प्रदररोगछै. प्रदररोग साधारणतो सहजहीमैं. जायछै. परंतु असा ध्यरोग कठिणहांगछै. वास्तेवैद्य देशकाल अवस्थादेषकर औषधीकरणी हरएक उपरदी ईं करणीनहीं. कारणगर्भको स्थानछै. सो मर्मस्थानछै.

अथ सोमरोगको सामान्य लक्षण लिष्यते सुंदरहै स्वरूप ज्याको इसी जो स्त्रियां त्यांके योनिमार्गमैं होय मूतवारंवार वहोत चाले वेस्त्रीदुवली होय वांके सुषघडी येककोभी होयनहीं. घणामूतके आगे वांस्त्रियांको सिरसिथिल होजाय मूंढो अरतालवो वाको सूकिवोकरै अर वांकै मूर्छाहोय जंभाई घणी आवे अर वांकै प्रलाप होय वांकी त्वचालूषी पडिजाय अर भोजनादिकांमैं वे त्रिप्तिहोय नहीं ये लक्षण जींमैं होय तींनैं सोमरोग कहिजै. १ अथ सोमरोग को जतन लिष्यते. पक्काकेलाके मिश्रीलगाय पायतौ सोम रोग जाय. १ अथवा आंवलाकारसमैं सहत नाषि पायतौ सोमरोगजाय २ अथवा उडदांको चून महालौठी अथवा विदारीकंदयांनैं मिहीवांटी तींमैं बराबरकी मिश्री मिलाय टका १ भर दूधसूं रोजीना दिन १० लेतौ सोमरोगजाय ३ अथ सुपेद पैरजावाको जतनलिष्यते आंवलाकावीज टंक ५ त्यांनैं जलमैं भेयवांटि तींमैं सहत मिश्री नाषि रोजिना दिन १५ पीवैतौ सुपेद पैरकारोगजाय. ५ अथ मूत्रातिसारकोलक्षण लिष्यते सोमरोग घणादिनरहै तदि मूत्रातिसारहोय ईमूत्रअतिसारमैं वलजातोरहै अर मूतघणोऊतरै ६ अथ मूत्रातिसारको जतनलि० ताडवृक्षकीजडछवारा महलोठी विदारीकंदयानैं मिहिवांटि ईमैंसहत मिश्रीमिलाय टका १ भर रोजीना पायतौ मूत्रातिसारंजाय. ७ अथवा पवाडकीजडनें चावलांकापाणीसूं पीवैतौ मूत्रातिसारजाय ८ अथवा सुपेदमूसली तालवृक्षकीजड छवारा पक्काकेलांयानैं दूधसूं पीवैतौ मूत्रातिसारजाय. ९ अथ प्रदरका ओर जतन लि० उंदराकी मींगणी टंक २ ईमैं बरावरिकी मिश्री मिलाय दूधसूं दिन ३ पीवैतौ स्त्रीका लाल सुपेद सारी

न. टी. वीसप्रकारका योनिरोगछै. जीमैं कोईकोईका दांषदोष नामछै जैसे आदिनअरा नैं प्रसंसिनी कहैछै. वंध्यानै गुप्काकहैछै अंडिनीनैं अंतमुंषी कहैछै. संवृतानैं सूचीमुषी कहैछै निवृतानैं महायोनि कहैछै.

तरेंका पैर आछयाहोय. १० अथवा धावड्याकाफूल बीजाबोल मू सांकी मींगणी ये बराबरिले यांनें मिहीवांटि ईमें मिश्रीमिलाय टंक २ जलसूं लेतौ प्रदरको रोगजाय ११ इतिप्रदररोगकी उत्पत्ति लक्षण जतनसंपूर्णम्. अथ स्त्रियांकी योनिरोगकी उत्पत्तिलक्षण जतनसंख्या लि० स्त्रियांके मिथ्याआहार मिथ्याविहार कारिके वाय पित्तकफहै सो दुष्ट हुवाथकास्त्रियांकी योनिके विषैरोगनैकरैछै सो स्त्रियांके योनिकैविषै २० प्रकारकारोगछै यांकानाम लि० उदावर्ता १ वंध्या २ विप्लुता ३ परिप्लुता ४ वातला ५ लोहिताक्षरा ६ दुः प्रजाविनी ७ वामिनि ८ पुत्रघ्नि ९ पित्तला १० अत्यानंदा ११ कर्णिनी १२ कर्णिका १३ आतिचरणा १४ अनाचरणा १५ अ स्तनी १६ षंडी १७ अंडनी १८ विद्दत्ता १९ सूचिवक्रा २० अथ स्त्रियांकीजोनिकालक्षण लि० जोस्त्री स्त्रीधर्महोतां रुधिरबडा कष्टसूं छोडै झागनैलीयां तीनै उदवर्ताजोनी कहिजे. १ अर जोस्त्री स्त्री धर्म होयनही तीनै वंध्यायोनि कहिजे २ अथ स्त्रीकीयोनिमेंनित्य ही पीडारहै तीनें विप्लुताजोनि कहिजे. ३ अर जींस्त्रीकैस्त्रीधर्महो तां घणीपीडहोय तीनें परिप्लुता जोनि कहिजे, ४ अर जींकी जो निकठोरहोय अर जोनिमें सूलचाले जीनें वातलाजोनि कहिजे, ५ अर जींकी जोनिमें दाहरहै अर लोहीनीसरवोकरे तीनें लोहित क्षराजोनि कहिजे, ६ अर जींकीजोनि श्रववोकरे अर कुपितरहै तीनै दुःप्रजाविनी जोनीकहिजे दुःप्रजाविनीनाम वेजोनीमे सं तान दोहरी होवे. ७ अरजी स्त्रीकी योनिमें पवनसंयुक्त वीर्य नीसरे रुधिरनैलीयां तीनें वामिनी जोनिकहिजे ८ अर जींस्त्रीके गर्भ रहिजाय अर पाछै जातो रहे तीनें पुत्रघ्नी जोनि कहिजें

न. टी. जोग्रंथांतरमें त्रिदोषणीनाम सन्निपातकी जीमें तीनही दोषका लक्षणमिलै शूल भ्रम, इत्यादिकहोय मर षंढा अंडिनी, विवृता, शूचिवक्रा, त्रिदोषणी येपांच योनी मध्यमछै. आछ्योहोयनहीं.

९ अर जींकी जोनिमैं दाहघणोरहै अर पकिजाय सरीरमैं ज्वररहै तीनैं पित्तलायोनि कहिजे. १० अर जींकी योनि मैथुन मैं संतोषकूं नहीं प्राप्तहोय तीनैं अत्यानंदाजोनि कहिजे. ११ अर जींकीजोनि कर्णफूलके आकार होय अर वेमैं कफलोही नीसरवोकरै तीनैं कर्णिनीजोनि कहिजे. १२ जींकी जोनिमैं कफरक्त करिकै कमलकर्णिका जीसी मांसग्रंथि होय तो तीनैं कर्णिका क० १३ कफका योगसूं जोयोनिकंडूसौं घणो मैथूनचावै जींमैं गर्भ धारणाहोयनहीं. तीनै अतिचरणा कहिजे. १४ अर जीजोनिमैं वीर्यरहै नहीं तीनै अनाचरणाजोनि क० १५ अर जींस्त्रीकानिपट छोटा स्तनहोय तीनैं अस्तनीयोनि क० १६ अर जींकीयोनि पंडीतहोय अर मैथुनकरतां क्यूंनीचे लटकि आवै तीनैं पंडीजोनिक० १७ अर जींकीजोनिको छिद्र सूक्ष्महोय तीनैं अंडनीजोनिक०१८ अर जींकोमूढोवडोहोय तीनेमहाजोनिविख्यता कहि० १९ अर जींकोमूंढो सूई सिरीसो होय तीनैं सूचीवक्राजोनिक० २० अथ जोनिकंद रोगकी उत्पत्तिलि० दिनका सोवासूं अतिक्रोधका करिवासूं पेदसूं अतिमैथुनसूं जोनिऊपरी कहींतरैंकी चोटलागिवासूं अथवा जोनिकै नषदांतका लागिवासूं येकुपित हुवो जो वाय पित्त कफ सो जोनिकै विषै जोनिकंदनाम येकरोगछे तीनैं उपजावैछे. १ अथ जोनिकंदरोगको स्वरूप लि० जोनिकैमाहि येक गांठि राधि लोही नैं लीयां गुडहलकाफल सिरीसी उपजैछे कारण कह्या त्यांसूं वेनैं वैद्यकहैछे अर जोनिकंदनाम रोगभी कहैछे. १ ओ जोनिकंदनामरोग च्यारीप्रकारकोछै. वायको १ पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ अथ वायका जोनिकंदको लक्षणालि० वाजोनिमा हिली

न.टी. जीयोनिरोगमे योनिस्थान भ्रष्टहोयछे. जीनैं स्त्राणी. पुआणी. नामचुदाई वैद्यांनैं ठिकाणो वैठाय देवे. अर कपडका टुकडार मांपहाड्डिहीय तथानस्याहोग नेठे लोपपांसूं तथा मल्हमसूं लेपसूं आछीकरैछे.

गांठि लूपीहोय वेंकोवर्ण आछयो नहीं होय अर जोनिकावर्णरि रीसो वेगाठिको मूंढो फाटयोहोय वेनें वायको योनिकंद कहिजे १ अथ पित्तका जोनिकंदको लक्षणलि० वाजोनिमांहिलीगांठि दाहनें लीयांहोय अर लालहोय अर वेसेंती ज्वरहोय आवे ईनें पित्तको जोनिकंद कहिजे. २ अर जीस्त्रीके योनिकंदरोग होयछे वास्त्री वांझ होयछे ३ वास्त्रीके स्त्रीधर्म होयनहीं . ४ अथ वंध्यास्त्रीका जतनलि ष्यते जोस्त्री स्त्रीधर्म होयनहीं वास्त्री नित्यमाछलाका मांसनें षाय तौ स्त्रीधर्म होय १ अथवा कांजी नित्यषाय अथवा तिल नित्यपाय अथवा उडद नित्यषाय अथवा दही नित्यषायतौं वास्त्री स्त्रीधर्म होय तादि वेंको वंध्यापणाको दोप दूरिहोय. २ अथवा साटीकावी ज कडवी तुंवी दांत्युणी पीपलि गुड मेंढल दारुकोजावो जवपार थोहरको दूध यांसारांनें येकठा मिहीवांटि जोनिमें ईकीवाती देतौ वास्त्री स्त्रीधर्म तत्काल होय अर वेंको वंध्यापणाको दोप तत्काल दूरि होय. ६ अथवा मालकांगणी राई विजयसार वच यांनें मिही वांटि सीतल जलसूंदिन ५ पीवेतौ वास्त्री स्त्रीधर्म होय अर वेंको वंध्यापणो जाय. ४ अथ वांझ स्त्रीके पुत्रहोवाको जतनलि० परेटी गंगेरणीकी छालि महुवो वडको अंकूर नागकेसरि ये वरावरिले त्यांनें मिहीवांटि गऊका दूधमें सहतनापि टंक ५ ईचूर्णनें रोजि नादिन १५ पीवेतौ वंध्यास्त्रीके निश्चै पुत्रहोय ५ अथ स्त्री स्त्रीधर्म नहीहोय तींको जतनलि० कालातिल सूंटि मिरचि पीपलि भाडंगी गुड यांसारानें टंक १ भर औटाय ईको काढो करिदिन १५ पी वेतौ वास्त्री स्त्रीधर्म निश्चैहोय अर वेंका रुधिरको गुलमदूरिहोय. अर वेंके पुत्रहोय. ६ अथवा आसगंधका काढामें गऊका दुध अर

१ ए आसगंध नाम ओपधीछे. जींनें अश्वगंधा कहेछे.नागोरी आसगंधभी कहेछे. अश्व गंधा कहेछे.

गऊको घृत मिलाय रितुके समै स्त्री परभात दिन ५ पीवैतौ स्त्रीगर्भ नैधारै ७ अथवा सुपेद काट्यालीकी जड पुष्यनक्षत्रकैदिन उपाडी होय तीनैं टंक २ मिहीवांटिं दूधकैसाथि रितुकै समैदिन ३ स्त्रीपी वैतौ निश्चैगर्भनैधारै ८ अथवा कैटसेलाकीजड धावड्याकाफूल वडका अंकुर कमलगट्टा यानैं मिहीवांटि टंक २॥ रितुकैसमै स्त्री पी वैतौ निश्चैस्त्रीगर्भनैं धारै ९ अथवा पार्श्व पीपलकीजड अथवा ई कावीज अर सुपेदजीरो अर सरैपंपो येबरावरिले यानैं मिहीवांटि टंक २ रितुकै समै स्त्री दूधकैसाथि लेतौ वेस्त्रीकैं गर्भ निश्चैरहै अर वेकै पुत्रहोय १० अथवा जोस्त्री गर्भवती होय वास्त्री छीलोंकाये कयेक पानानैं १ गऊका दूधकैसाथि पीवैतौ निश्चैही वेकौ परा क्रमी पुत्रहोय ११ अथवा वाराहीकंद अर कवीठ अर शिवलिंगी यानैं मिहीवांटि रितुकैसमै टंक २ दूधकैसाथि जोस्त्रीलेतौ वैकै नि श्चैही पुत्रहोय १२ येसर्व जतन भावप्रकासमैंछै. अथवा विजोराँ का वीजानैं गऊका दूधमैं सिजावे पाछै वामै गऊको घृत मिलाय अर वैंवरावरि नागकेसरी मिलाय रितुकैसमैं टंक ५ मिश्रीकैसाथि दिन ७ स्त्रीपायतौ स्त्रीगर्भनैधारै १३ अथवा एरंडकी एरंडोली अर विजोराकाबीज यांदोन्यांनैं घृतसूं पीसि दूधकैसाथि रितुकै समै स्त्री दिन ३ पीवैतौ स्त्रीगर्भनैधारै १४ अथवा पीपलि सूंठिमि रचि नागकेसरि यानैं मिहीवांटि रितुकै समैस्त्री वृतकैसाथिदिन ३ पीवैतौ स्त्रीगर्भनैधारै १५ ये सर्वसंग्रहमैं लिख्याछै अथ गर्भनहीं रहवाकी औषदिलि० पीपलि वायविडंग सुहागो येबरावरिले यां

---

૧ સુપેદકટયાળીછે. જીને ઉદમણા કહેછે. ભૂરીંગણીભી કહેછે ૨ કઠસેલો પ્રસિદ્ધછે. ધાવડાફૂલબી પ્રસિદ્ધછે. વડકી જટાકા અંકુરબી પ્રસિદ્ધછે ૩ પારસ પીપળ તથા ગિડાવલી ભીકહેછે ૪ સરપંખા નામ ધોળો ધવાસો ઓરુ પ્રસિદ્ધછે ૫ છીલાકા પાન કહેછે ગો પ્રા સકા પાન ખાખરકા પાનછે ૬ વારાહી કંદને ગુકરકંદ તથા ડૂકરકંદ કહેછે ૭ બિજોરાકા બીજાનેં માતુલિંગકાબીજ તથા તુરંજકાબીજ કહેછે. મોટા નીંબુકી જાતભેછે.

नैं मिहीवांटि रितुकैसमैं स्त्रीदिन ५ जलसूं लेतौ स्त्रीगर्भनैं कदेभी धारैनहीं १६ अथवा पुराणो गुड टका १ भर तीनैं औटाय रितुकैसमै स्त्रीरोजीनादिन १७ पीवैतौ स्त्रीकदेंभी गर्भनैंधारैनहीं१८ अथवा नींबोलीका तेलका फोहानैं स्त्रीरितुकैसमैं योनिमांहि धरणमैं दिन ५ देतौ स्त्रीगर्भभी कदेंधारैनहीं १९ ये भावप्रकासमैं लिप्या छै अर स्त्रीकीजोनिकारोगांका जतनक्रमसूं लिप्यते तगर कट्याली कूठ सींधोलूण देवदारु यांको काढोकरि इकाढामैं तेल पकावै पाछै ईतेलनैं स्त्री जोनिमैं फोहासूं रापै तौ स्त्रीकी विप्लुताजोनिको रोग जाय २० अर वायका जोनिकारोगांका दूरिकरिवाकैवास्तै पाडलका पानानैं अथवा वेंकीवकलनैं सिजाय वेंकी जोनिमैं पसेव जुक्तकरै अर धोवैकरैतौ वायका जोनिकारोग जाय २१

अथ पित्तका जोनिका रोगांका दूरि करिवाकै वास्तै तिलांका तेलमैं निवोल्यांनैं पकाय ईतेलसूं योनिनैं सेकैतौ पित्तका जोनिका रोगजाय २२ अथवा पित्तनैं हरवाली ओपदिकोघृत त्यांसूंयोनिनैं सेकैतौ पित्तकायोनिका रोगजाय २३ अथवा आंवलाकारसमैं मिश्रीनापि स्त्री दिन १० पीवैतौ स्त्रीकी योनिदाह जाय २४ कूकरभांगरांकीजडकी रसनैं चांवलाका पाणीकै साथि स्त्री पीवैतौ स्त्रीकी जोनिमैं राधिपडतीहोय सोदूरिहोय २५ अथवा नींबकापान किरमालाकापान वच अर डूसाकापान पटोलकापान यांनैं औटाय ईसेती जोनिनै धोवैतौ जोनिकी दुर्गंधि जाय २६ अथवा पींपलि

न. टी. योनिका रोगसौं स्त्रीकोजात वहोत दुपपावै. अर गर्भधारण होयनहीं. रोगके कारणासूं कदाचित गर्भ धारण होयतो वाकी दुप पावै अर पूरी जणैंभी नहीं. कदाचित जणैतो विकृती रूपी जणै. पोडो पांगळो.

न.टी. रोगिस्त्रीके नपूतजीवैनहीं. कदाचित जीवैतो विकृतीनाम अंग भंग हुवो धको मन्यापू जीवै जीमैं स्त्रीको मरणान कष्ट होयछै कोई कोई मरभी जावछै. ईवास्तै गर्भ नहीं ओपधीकी कल्पना करैछै.

मिरचि उडद सौंफ कूठ सींधोलून यांनैं औटाय ईसूं जोनिनैं धोवै तौ जोनिका कफकारोग सारा जाय २७ अथ जोनिसंकोचनौ औषदि लिष्यते मूंगकाफूल षैरसार हरडै जायफल माजुफल सुपारी यांनैं मिहीवांटि मिही वस्त्रसूं छाणि स्त्री जोनिमैं राषैतौ स्त्रीकी जोनि संकीर्ण होय २८ अथवा कौंछिकी जडका काढासूं जोनिनैं धोवैतौ स्त्रीकी जोनि गाढिहोय २९ अथवा भांगिनैं मिहीवांटि ईकीपोटलीकरि स्त्रीजोनिमैं राषैतौ स्त्रीको भगमहा संकोचन होय ३० अथवा मोचरसनैं मिहीवांटि ईकी पोटलीकरै स्त्री जोनिमैं राषैतौ स्त्रीकी जोनि संकोचकूं प्राप्तिहोय ३१ अथवा आंवलाकीजड कसेलो वौंलकी जड अर वोरकीजड अरडूसाकी जड माजूफलयां सारानैं औटाय पाणीसूं जोनिनैं धोवैतौ जोनि संकोचनहोय ३२ अथवा दहींसुं जोनिनैं धोवैतौ जोनि संकोच होय ३३ अथवा सुपेद फिटकडीनैं फूलाय धावड्याकाफूल माजुफल यानैं मिहीवांटि पोटलीकरि भगमैं मेलैतौ स्त्रीको भग संकोचहोय ३४ इतिभगसंकोचनसं० अथ जोनिका सर्व रोगांका दूरिकरिवाको फलघृतलि० मजीठ महलौठी कूठ त्रिफला मिश्री परैटी मेद आसगंध अजमोद दोन्यूं हलद फूल प्रियंगु कुटकी कमलकीजड दाष रक्तचंदन चंदन येसारा अधेला अधेला भरिले अर गऊकोघृत सेर १ लेसतावरीकोरससेर ४ ले पाछै ईनैं मधुरी आंचसूं पकावैतौ येसर्व वलि जाय घृतमात्र आयरहै तदि ईघृतनैं मनुष्य अथवा स्त्री रोजीना टका १ भर पीवैतौ ओपुरुष नपुंसकभी होयतौ महाकामी वडो पराक्रमी पुत्रानैं उपजाववालो ईफलघृतका प्रभावसूं होय अर स्त्री ईघृतनैं पायतौ स्त्रीका जोनिका सर्व रोगजाय अर वंकै ईघृतकाप्र

न. टी. योनिरोगमें आहार व्यवहार पथ्यापथ्य लिंपूंहूं रेच, वमन, उबटन, छाछचावल, सामक, मूंग, मधुर, तेल, चीणा गायको तथा छालीको दूध, केला, सुराई, ६० अपथ्यानि० महनत, गरमी, मल, मूत्ररोधन इत्यादि.

भावसूं पुत्र होय दीर्घायुर्बलवालो बुद्धिवान ३५ अथ जोनिकंदरो गको जतन लि० गेरु वायविडंग हलद कायफल यांनें मिहीवांटि त्रिफलाकाकाढासूं तीमें सहत मिलाय ईंचूर्णनें स्त्रीयोनिमें रापेतौ स्त्रीको जोनिकंद जाय ३६ अथ गर्भिणी स्त्रीकारोगांका जतनलि० जीस्त्रीको गर्भनीसरतौ होय तीस्त्रीनें झाउरूपकीजड अतीस नाग रमोथो मोचरस इंद्रजव यांको काढोकरि देतौ वेस्त्रीको गर्भ पडतो रहै ३७ अथ गर्भिणीस्त्रीकी ज्वरको जतनलि० महलौटी रक्तचंदन षस गौरीसर कमलकीजड यांको काढो मिश्रीं सहतनापि पीवेतौ गर्भिणीस्त्रीकीजड जाय ३८ अथ गर्भिणीस्त्रीकी संग्रहणीको जतन लिष्यते चावलांका सातूनें आमकी अर जामुणकी वकलका का ढासूं लेतौ गर्भिणीकी संग्रहणी जाय ३९ अथवा झाउरूपकी वकल अरलूकीवकल रक्तचंदन परेटी धणो कुडाकी छालि नागर मोथो जवासो पित्तपापडो अतीस यांको काढो गर्भिणीस्त्रीलेतौ वे का अतिसारनें संग्रहणीनें ज्वरनें दूरिकरै ४० अथ स्त्रीका गर्भका पडवाको अर गर्भका श्रावकी उत्पत्ति लक्षण लि० घणामैथुनका करिवासूं मार्गका चालीवासूं असवारीकाचढवासूं पेटको पीडका चालवासूं ज्वरका आवासूं उपवासका करिवासूं चोटलागिवासूं अ जीर्णमें भोजनकरिवासूं दौडिवासूं वमनका करिवासूं जुलाबकालेवा सूं तीषी कडवी. गरम लूषी वस्तका षावासूं विषम आसनका बै

लग्यो फल कहीकी चोटलाग्यांगिरि पडै तैसै कच्चोही गर्भकहीं त रैंकी चोटलाग्यां गिरपडै ४३ अथगर्भ स्रवतो होय तींका थांबिवा को जतन लि० कमलकी जड कमलकी नाल कमलका फूल महलौ ठी यांनैं दूधकी साथि औटाय पीवैतोगर्भकोस्राव पडतोथंबै अर योही गर्भिणी स्त्रीका दाहनैं तिसनैं मूर्छानैं छर्दि नैं अरुचिनैं दूरि करे. ४४ अथ गर्भ पातका उपद्रव लिष्यते. स्त्रीकै गर्भ पडै तदि दाह होय सूल चालै पसवाडामैं अर पीठीमैं पीड होय अर पैर छूटिजाय अर मूत्र उतरै नहीं अर गर्भ और स्थानमैं जाय तींकै भी ये उपद्रव होय. ४५

अथ गर्भ पडतो होय तींका थांबवाका जतन लिष्यते डाभकी जड कांसकी जड अरंडकीजड गोपरूकीजड यांमैं गऊको दूध औटाय गर्भिणी पीवैतो वेकीहिया ऊगैरेकी सूलजाय. ४६ अथवा गोपरू महलौठी कटचाली मदनवाणका फूल यांनैं गऊका दूधमैं औटाय इंदूधनैं स्त्रीपीवैतो गर्भपडतो रहै अर स्त्रीका शरीरकी सर्व प्रकारकी वेदना जाय. ४७ अथवा कुंभारका चाककी माटीगेरू चमेलीमजीठ धावड्याका फूल रसोत राल यांको चूर्णकरि टंक ५ स्त्रीसहतसूलेतो स्त्रीका पैरउगैरै सर्व रोगजाय. ४८ अथवा भृंग जीनावरकावरकी माटी मजीठ लजालु किसोरया कमलकी जड यानैं गऊकादूधमैं औटाय इंदूधनैं स्त्रीपीवैतो स्त्रीकोगर्भ पडतो रहै. ४९ अथगर्भिणी स्त्रीके आफरो होय तींको जतन लि० डाभकी जड दोवकी जड वच रसोत हींग संचरलूण यांमैं दूध औटाय पाछै इनैं पीवैतो स्त्रीको आफरो जाय. ५० अथ गर्भिणी स्त्रीकै मूत्रउतरै नहीं तींको जतनलि० डाभकी जड दोवकी जड कांसकी

न. टी. जा स्त्रियांका आरोग्य शरीरछै. जांकै रजवीर्यका शुद्धताथी गर्भ धारण होयछै. सो वै गर्भ सुषदायक अरु तेजस्वी. पराक्रमी. दीर्घायु होयछै. परंतु अनुक्रमसूं गर्भना अहिनाका वर्णन लिष्याछै. ओसुजब करणा.

जड यांनैं दूधमें औटाय इंदूधनै स्रीपींवैतो स्रीकै मूत्रऊतरे.५१ अथ महिनाकी महिनैये ओषदि देतौ स्रीकै गर्भपडैनहींसोलि० महलौठी, सालवृक्षका बीज पीरकाकोली देवदारु लुणक्यो कालातिल रामपीपली सतावरी कमलकी जड. जवासो गौरीसिर रास्ना दोन्यूकव्याली सिंघाडा किसोरा दाप मिश्री यांनै औटाय पींवैतो महिनाकी महिनैदिन ७ तौ स्रीकौ गर्भपडैनहीं. अर और उपद्रव होयनहीं येसाराजतन ७ महिनातांई कीजैं. ५२ अथ आठवा पहिनाका जतनालिष्यते कैथकीजड कव्यालीकीजड बीलकीजड पटोलकीजड साठीकीजड यांनैं दूधमें पकाय ईदूधनैं पींवैतो गर्भपुष्टरहे. ५३ अथ नवमामहिनाको जतनलिष्यते महलौठी जवासो पीरकाकोली गौरीसर यांनैं अधेला अधेलाभरिले पाछै यांनै दूधमे औटाय दूधनै पींवैतो गर्भ पुष्टरहै. ५४ अथ दशमामहिनाका जतनलिष्यते सूंठी पीरकाकोली यांनै दूधमें औटाय पींवैतो अथवा सूंठि महलौठी देवदारू पीरकाकोली कमलगट्टा मजीठ यांनै जलमें औटाय जलनें दूधमे औटाय पाछै योपाणी बलिजाय दूध आयरहे तदि इंदूधनै पींवैतो स्रीकागर्भ पुष्टरहे निरोगरहे अर ईं स्रीकैकहींतरैको उपद्रवऊठैनहीं ५५ अथ वायकरि गर्भ सूकिजाय तींकाजतनलि० जींस्रीको वायकरि गर्भसूकिजाय तींस्रीको उदर परीपूर्ण होयनहीं पालीरहे तदि स्यापोस्रीछे सोपुष्टाईनें लियां दूध मांस रस और पुष्ट ओषदिपाय अर दूध पींवे तदि वाय दूरिहोय गर्भपरिपूर्णहोय ५६ अथ गर्भका बालकका होवाका महिनालि० स्रीहैसो नवमें महिने अथवा दशवे महिने संताननें उपजावैछे. अर कोयेक स्रीहै सो ग्यारवे अथवा बारवे महिने संताननें उप

न. टी. जोगुलपुं महवरांप ओंवाळे पान. नवार. पान.ग्यवहार. गर्भिणीतेंमी स्वामी स्रियांकारविचार करीते कृशक्रेपकां पाङ्गापनाजे वगार अर अवनकाग. पायुताक रहा ५ मो गरम करणार.

जावैछे. अर यामहिनाऊपरांत जोगभंरहै ओगर्भ विकारको जाणि जै तदि ईंगर्भका उदरका रोगांमैं गिणी अर वेंको जतन कीजै ५७ अथ स्त्रीकै सुषसुं प्रसव होवाको जतन लि० सापकीकांचली मर वौ यांदोन्यांकी भगमैं धूणीदेतौ स्त्रीसुषसूं संताननैं जणै ५८ अथवा कलहारीकी जडनैं स्त्री हाथपगांकै बांधैतौ स्त्रीकै तत्काल प्रसूति होय ५९ अथवा कूकर भांगराकी जड अर पाठकी जडनैं स्त्री हाथ पगांकै बांधैतौ स्त्रीको तत्काल प्रसूति होय ६० अथवा याईकी जडका काढामैं तिलांकोतेल नापि स्त्रीहै सोभगकै लेपकरैतौ स्त्रीकै सुषसूं तत्कालप्रसवहोय ६१ अथवा पीपलि वच यांनैं जल सूं वांटिभगकै लेपकरैतौ स्त्रीकै सुषसूं तत्काल प्रसूति होय ६२ अथवा एरंडका तेलनैं स्त्रीनाभिकै लेपकरैतौ तत्काल प्रसूति होय ६३ अथवा विजोराकी जड महुवो यांदोन्यांनैं स्त्रीपीवैतौ स्त्रीकै तत्काल प्रसूति होय ६४ अथवा साठीकीजडनैं स्त्री कटिकै बांधैतौ स्त्रीकै तत्काल प्रसूति होय ६५ येजतन भावप्रकासमैंछे. अथवा औंधाहोलीकी जडनैं काकलहरीकीजडनैं कटिकै बांधैतौ तत्काल प्रसूतिहोय ६६ योगचिंतामणिमैंछे. अथसुषसुतत्काल प्रसवकरावाको मंत्रलिप्यते. मुक्तायासाविमुक्ताश्चमुक्तासूर्येणरश्मयः मुक्तः सर्वभयाद्गर्भः देहिमाचिरमाचिर स्वाहाईमंत्रसूं जलनेवार७ मंत्रैपाछै ईजलनैं स्त्रीपीवैतौ स्त्रीकै तत्कालप्रसूतिहोय ६७ अथवा ईंजंत्रनैं स्त्रीदेपैतौ तत्काल प्रसूतहोय६८ अथ मूढगर्भकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिप्यते जोस्त्रीका सरीरमैं वायुकुपितहोय वेस्त्रीकी जोनिमांहि

१६	६	८
२	१०	१८
१२	१४	४

न. टी. प्रसूतीमें जो विपरीत कर्म होयछे. सो बडो अनर्थ होछे, मारडाले. जीने प्रसूत रोगकरे छे. अर तत्कालवींको जतन होयसोनोयवं ननननो होसो मरजाय. औंधी मूढ गर्भादिक अनेक उपद्रव होय.

अर उदरकूपिमांहि सूलनै अर मूतउतरवादेनहीं अर ओ दुष्टप वन गर्भनैं वांको करिदे जोनिमें चारि ४ प्रकारकरिकै सोप्रकार लिषूंछूं अथ गर्भमें वालकदुष्टपवनचारी प्रकारकी अथवा आठप्र कार करिरहैछै सो प्रकार लिष्यते कीलक १ प्रतिपूर २ परिघ ३ वीज ४ ऊर्ध्ववाहु, चरणक, शिर, पसवडाका भेदकरि आठप्र कारसूं बालकभगकागर्भमेंरहैछै. ८ अथ कीलककोलक्षणालिष्यते स्त्रीकै जोनिकै मूंढै कीलोसो लागिजाय तीनैं कीलक कहिजे १ अर स्त्रीकी जोनिकै मूंढै हाथपगआडा आयजाय तीनैं प्रतिपुर कहिजे २ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै आगलसी लागजाय तीनैं परिघ कहिजे, ३ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै सिर आयअटकै तीनैं वीजगुढगर्भ कहिजे ४ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै पेटआयअटकै ५ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै पस वाडो आयअटकै ६ अर स्त्रीकी जोनिकै मूंढै मुपनीचो होय ७ स्त्रीकी जोनिकै मूंढै मंगरअटकै८ ऐसेंमूढगर्भ आठप्रकारकोछै अथ मूढगर्भको असाध्य लक्षणलिष्यते जीस्त्रीको माथो ऊभो सूधोरहै नहीं लटक्योंजाय अर जीस्त्रीकीलाजजातीरहै अर जीगर्भवतीस्त्री का सर्वअंग सीतलहोजाय अरजीगर्भवती स्त्रीकी सरीरकीनसांनी लीहोयजाय वे स्त्रीको बालक मुवो जाणिजे. अर वास्त्रीभी मरिजा य १ अर जीस्त्रीका गर्भमें जोवालकमुवोहोय तीस्त्रीको गर्भफुरकै नहीं अर वैंको मूढोकालो पीलासनैलीयां होयजाय अर वैंकाना कका अर वैंका मुंढाकासासमें मूवाकीसी दुर्गंधिआवे अर पेटमें सुलचालै ये लक्षण जीमैंहोय तीनै जाणिजे ईंका उदरमें बालक मूवोछै. २ अथ जींका पेटमें बालक मुवोहोय तींको कारण लिष्यते.

८ गर्भको कारण अनेक तरेसूंछे. और गर्भमें बालक १ तथा २ तथा ३ पर्यंत होयछे. प रन्तु होवतो नहीं जाणवमाउछे. तीनतो कोईसी जायगां होयछे. पणगर्भस्थानमें आगणा कन वीईसासूं तीनताई होयछे. सिद्धान्तकोनका लिषाद्यमार्गे नो पुरुषदा शीर्षेतो पटाक्र कपर्यंत होय. परंतु गर्भस्थानमें नावणानहींछे.

जोस्त्रीको कोईभाई मातापिता पुत्र भर्तार उगेरैकोईप्यारो मस्योहोय अथवा वेका द्रव्यादिक कहींतरैसूं जातारहे अथवा वेंका उदरके क हींतरैकी चोट लागिजाय तदि वेंस्त्रीके दुषउपजे तदिवे दुषका प्र भावसूं वेकोगर्भ घणो दुषीहोय अर वेंकी कूषमैं अनेकरोग पैदा होय तदि वेंका पेटका बालक वेंका पेटमैं मरिजाय. ३ अथ गर्भि णीस्त्रीको असाध्यलक्षण लि० जींस्त्रीकी जोनिको मूंढोमूवाबालक करि ढकिजाय अर कूषिमैं सूलचाले वेगर्भनैं कमल्लकसंज्ञाकहिजे. अर पाछे कह्याउपद्रव सोभीहोय. ४ अथ मूढगर्भका जतनलिष्य ते. जीस्त्रीका गर्भासयमैं भगकैकनैं बालक बुरीतरह आयगयो हो य तींकैवास्तैनिपट चतुर घणांबालक आछीतरै जणायाहोय ऐसी दाईनैं बुलाईजे अर वादाई बालक जणावामैं कुशल होय सो हा थकै घृतलगाय ओहाथ चतुराईसूं भगमैंघालि बालकनैं सूधोकरि जीवतोही तत्काल भगमांहीसूं बारै काढेछै. ५ अथ गर्भमैं बालकम रिगयो होय तींकोजतनलिष्यते वानिपट चतुर दाईहोयसो चतुरा ईसूं भगमैं पाछणो छोटो अर तींपोघालिवेमूवा बालकका अंग अंग काटि चतुराईसूं भगकेबारै सर्व अंग काढे सो मूवाबालकनैं ईसीतरै भगमांहीसूं काढे नहींतोवागर्भवतीस्त्री वेकीसाथिमरेईवा स्तै तत्काल मूवागर्भनैं ईंतरकाढे अर मूवाबालकनै गर्भमांहिसूं काढ्या पाछै भगनैं चतुराईसूं गरम पाणीसूं धोवै अर वेहीसमय भगनैं सुहावता गरम घृतसूं अथवा तेलसूं भगनैं चोपडेतो ओभ ग कोमलरहे अर वेभगनैं सूलादिकको कोई उपद्रव होयनहीं पा छे कडवी तुंबीकापान अर पठाणीलोद यांनैं बराबरिले अर यांनैं मिहींबांटि ईंको भगकै लेपकरैतो भगज्यूंकोज्यूं आपकैठिकाण

न. टी. स्त्रीयांका सरीरांका अवयव नाम अंगभंग नाम जाणे सिक्षणताछे. ईश्वरांसचा व्यापकछे. जीनै शास्त्रका अनुकूलताओं वास्तैबुद्धिका सूक्ष्म विचारसों जाणका भविष्यै तथा पाछे वायूकी प्रवृत्ति होवाकी न्यूनादिक निगदापणो.

मिरचि पीपलि तज पत्रज नागकेसरि इलायची घणौं यांनैं मिही बांटि टंक २ पुराणागुडसूं लेतौ मकल्लकरोग जाय. ४ अथ जीस्त्री कै प्रसूतिहुई होय तीस्त्रीनैं जुक्तीसूं अहार विहार करावै. अर वा स्त्री इतनीवस्त करैनहीं पेद मैथुन क्रोधथंडीमैं रहवौ येवस्तकरै नहीं. मिथ्या अहार करैतौ वैंकैसूतिकारोग पैदाहोय. १ अथ सूतिकारोगकी उत्पत्ति लि० मिथ्याआहारतैं घणाक्लेशका करिवाकरकै विषमआसनकरिकै अजीर्णमैं भोजन करिकै अर जापामैं जोरोग होयछै सोसाराही भयंकरछै. १. अथ सूतिकारोगको लक्षण लि० अंगामैं पीडाहोय ज्वरहोय षासीहोय तिसघणीलागै सरीर भाखौ होय अर सरीरमैं सोजोहोय अर पेटमैं सूलहोय अतिसारहोय येजीमैं लक्षणहोय तीनैं सूतिकारोग कहिजै. १ अथ सूतिकारोग मैं और ज्वरादिक रोगहोय तींकी विशेष उत्पत्ति० जापामैं ज्वर होय अतिसारहोय सोजो होय पेटमैंसूलहोय आफरो होय शरीरको बल जातोरहै तंद्राहोय अरुचिहोय अर इंनैं आदिलेर और भी कोई रोगहोय वाय कफको अर बलमांस अग्नि जींकी जातीरहीहोय यांसारांही रोगांनैं सूतिकारोग कहिजै १ अथ सूतिकारोगका जतन लि० जोवस्तवायनैदूरिकरै सोसारीही औषधी सूतिकारोगनैं दूरिकरै २ अथवा दशमूलकौ काढौ सूतिकारोगनैं दूरि करै ३ अथवा गिलवै सूंठि सहजणो पीपालि पीपलामूल चव्य चित्रक नेत्रवालो यांको काढो सहतनापि देतौ सूतिकारोग दूरिहोय ४ अथवा देवदारु वच कूठ पीपालि सूंठि चिरायतो कायफल नागरमोथो हरडैकीछाली गजपीपालि धमासो गोषरू जवासो कट्याली गिलवै कालौंजीरो ये बराबरिले यांको काढोकरि अर हींग सीं

न. टी. जैसे सूंठ पीपलामूल. अजवायण इत्यादि पदार्थांसूं अर आहार, व्यवहार व स्थापथ्यथी यतन करणो. कारण स्त्रियांका जापामैं शरीरका बंधन तथा कोपरादिक मर्दी-ला निबला होयजायछे. सोये जापार्ककर्म नापारीमैं नीमर.

वेठे अथवा पलासपापडो पक्कागूलरिका फल यानें वराबरिले पाछे यानें तिलांकातेलमें मिहीवाटि वेभगके लेपकरैतो ओभगगाढो हो जाय अर इसीहीतरेदिन २१ करैतो भगके कोईरोग होयनहीं ६ अथ इंकी और औषदि लिष्यते सांपकी कांचलि कूटकी सिरस्यूं यांतीन्यांनें मिहीवांटि कडवातेलसूं भगके यांकी धुणीदेतो भगका रोगजाय ७ अथवा कलहारीकी जडनें औटाय वेपाणीसूं हाथप गानें धोवेतो भगमाहिलो मूवाबालकको दोष दूरिहोय, ७ अथ मकल्लकरोगकी उत्पत्तिलक्षणलिष्यते. जींस्त्रीके संतान हुईहोयअर वास्त्री लूषी अर वायलवस्त यातायींस्त्रीनें तीपाद्रव्य पीपलामूल उ गैरे मिल्यानहीं अर वेपायनहीं तीके वायहेसो नाभिके नीचे अ थवा दोन्यूं पसवाडामें अथवा पेडूमें वावाय लोहीनेरोकि वायकी गांठिकरे छे अथवा वायहे सो नाभिमें उदरमें पक्काशयमें सूलनें प्रगटकरैछे. अथवाओवाय पेडूमें आफरानें करैछे. अर मूतनें उतरवादे नहीं ईनें वेद्यहेसो मकल्लकरोग कहे छे १ अथ मकल्लक रोगकाजतनलिष्यते जवषारनें गरम पाणीसूं ईनें वांटि जोस्त्रीलेतो वेस्त्रीको मकल्लकरोगजाय २ अथवा पीपलि पीपलामूल मिरचि गजपीपलि सूंठ चित्रक चव्यसंभालू इलायची अजमोद सिरस्यूं सेकीहींग भाडंगी पाठ इंद्रजव जीरो बकायण मूर्वा अतीसकुटकी वायविडंग योपिप्पलादिगणछे त्यांनें वराबरिले अर यांनें मिही वांटि टंक २ गरम पाणीसूं लेतो अथवा यांको काढो करिले ईमें वयो सींधोलूण नाषेतो स्त्रीका कफका अर वायका सारारोग जाय अर स्त्रीकागोलानें सूलनें ज्वरनेंदूरिकरे अर भूपलगावे अर आं वनें दूरिकरे अर ईमकल्लकरोगनें निश्चेही दूरिकरे ३ अथ वासूठि

न. टी. [illegible]

मिरचि पीपलि तज पत्रज नागकेसरि इलायची थणौं यांनैं मिही वांटि टंक २ पुराणागुडसूं लेतौ मकल्लकरोग जाय. ४ अथ जीस्त्री कै प्रसूतिहुई होय तीस्त्रीनैं जुक्तीसूं अहार विहार करावै. अर वा स्त्री इतनीवस्त करैनहीं पेद मैथुन क्रोधथंडीमैं रहवो येवस्तकरै नहीं. मिथ्या अहार करैतो वैंकैसूतिकारोग पैदाहोय. १ अथ सूतिकारोगकी उत्पत्ति लि० मिथ्याआहारतैं घणाक्लेशका करिवाकरकै विषमआसनकरिकै अजीर्णमैं भोजन करिकै अर जापामैं जोरोग होयछै सोसाराही भयंकरछै. १.अथ सूतिकारोगको लक्षण लि० अंगामैं पीडाहोय ज्वरहोय षासीहोय तिसघणीलागे सरीर भाखो होय अर सरीरमैं सोजोहोय अर पेटमैं सूलहोय अतिसारहोय येजीमैं लक्षणहोय तीनैं सूतिकारोग कहिजै. १ अथ सूतिकारोग मैं और ज्वरादिक रोगहोय तींकी विशेष उत्पत्ति० जापामैं ज्वर होय अतिसारहोय सोजो होय पेटमैंसूलहोय आफरो होय शरीरको बल जातोरहै तंद्राहोय अरुचिहोय अर ईनैं आदिलेर और भी कोई रोगहोय वाय कफको अर बलमांस अग्नि जींकी जातीरहीहोय यांसारांही रोगांनैं सूतिकारोग कहिजै १ अथ सूतिकारोगका जतन लि० जोवस्तवायनैदूरिकरै सोसारीही औषधी सूतिकारोगनैं दूरिकरै २ अथवा दशमूलको काढौ सूतिकारोगनैं दूरि करै ३ अथवा गिलवै सूंठि सहजणो पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक नेत्रवालो यांको काढो सहतनापि देतो सूतिकारोग दूरिहोय ४ अथवा देवदारु वच कूठ पीपलि सूंठि चिरायतो कायफल नागरमोथो हरडेकीछाली गजपीपलि धमासो गोषरू जवासो कटयाली गिलवै कालीजीरो ये बराबरिले यांको काढोकरि अर हींग सौं

न. टी. जैसे सूंठि पीपलामूल. अजवायण इत्यादि पदार्थोंसूं अर आहार, व्यवहार व व्यापय्यसौं पतन करणो. कारण स्त्रियांका जापामैं शरीरका बंधन तथा रुधिरादिक सर्व ढीला निबला होयजायछै. सोवे जापरकीकसर जापादीमैं नीसरै.

धोलूणकी प्रतिवास यांको देतो सूतिकारोगनैं सूलनैं पासनैं सास नैं ज्वरनैं मूर्छानैं मथवायनैं प्रलापनैं तिसनैं तंद्रानैं अतिसारनैं व मननैं यांसारांरोगांनैं योदूरिकरैछे ५ इति देवदार्व्यादिक्काथः

अथ पंचजीरकपाक लिप्यते स्याहजीरो सुपेदजीरो सोंफ अ जवायण अजमोद धणो मेथि सूंठि पीपलि पीपलामूल चित्रक हा उरूषकी जडकी वकल बोरकी मींगी कूठ कपेलो येसारी ओषदि टका टका भरिले त्यांनैं मिहिवांटि कपडछाण करे पाछे गऊका घृ तसेर १ में मकरोवे पाछे ईंचूर्णमें सेर ४ गऊका दूधका मावामें ईंघृतसूं मकरोय चूर्णनै पकाय ईंको परोमावोकरे पाछे ईंने टका १०० भर पांडकी चासणीमें नापे पाछे ईंकी टका १ भरकी गोली करे पाछे ईंनें रोजीना जापावालीस्त्री पायतो सुवाका रोगानें ज्वरनें क्षयीनैं पासनैं सासनैं पांडुरोगनै क्षीणतानैं वायका रोगांनैं येपं चजीरकपाक दूरिकरैछे. अथ सौभाग्यसूंठिपाक लिप्यते सतवा सूंठि सेर ऽ॥ ईंनें मिहीवांटि कपडासूं छाणिकरिसेर ऽ॥ गऊका घृत में मकरोवे पाछे गऊका दूधसेर ५ कामावामें ईंनेंपकाय ईंको मधु री आंचसू परोमावोकरे पाछे सेर ५ पांडकी चासणीकरि ईंचास णीमें येओषदि मिहिवांटि कपडासूं छाणिकरि ईंनें नापसो ओष दिलिपूंछूं धणो टंक १ सोंफ टंक १ वायविडंग टका १ सूंठि टका १ कालिमिरचि टका १ पीपलि टका १ नागकेसरि टका १ ना गरमोथो टका १ येओषदि मिहिवांटि ईंचासणीमें नापि सारटंक ५ अभ्रक टंक ५ येईंमें नापे और मेवो जथारुचि ईंनें नापे पाछे

* श्रीपरमेश्वरनिषाछे. यह ग्रंथमें गर्भवतीकी औषधीको रचागोछे. और्भे पना इश्कोष्ठ निद्राकरेछे. श्रीधर अमृतसागरमें ग्रंथ कमतिलिष्योछे. परंतु प्रत्यक्षनिषाछे. एकभाग दय मीनरी किपाछे. कोईविद्वद मया विद्रक वधाक्रतधीका कछाणे विना वपामदिवा तथा नि यदकिपा विना इसारा नामका छाप्यामंधमें कमनी नहीरहसी. इसारी मानछे. कदापिइ ६ १ करायूं गुणकर लिखे विनाकरधी ओर्भे प्रसरस्याछागमी.

टका १ भरकी गोलीबांधै पाछै ईंगोलीनै स्त्रीषायतौ स्त्रीयांकी तिस कारोगनै छर्दिनैं ज्वरनैं दाहनैं षासनैं सासनैं पांडुरोगनैं मंदाग्निनैं येदूरिकरे ७ इतिसौभाग्यसूंठिपाकः अथ स्तनरोगका लक्षण लिष्यते. ईसारासरीरमैं फैलताजाय वायपित्तकफ दोषसो येदुष्ट हुवाथका स्त्रीकास्तनमैंजाय प्राप्तहोयछै वैंस्त्रीकास्तन दूधसंयुक्त होय अथवा दूधविनाका होय त्यांस्तनांकैविषै वेदुष्ट दोष हुवाहै सो स्तनांकैविषै रोगानैं पैदाकरैछै. गांठि उगैरे लोहीकाविकारनैं. ८ अथ स्तनरोगका जतनलिष्यते. स्त्रीकास्तनऊपरि वैद्यसोजो देषै तीसोजानैंविद्रधीकाजतन पाछै लिष्याछै. सो जतनकरैतौ स्तन रोगजाय अर स्त्रीकास्तनउपरि गांठि कच्चीहीछै तींगांठिनैं पित्तनैं दूरिकरिवावाली सीतल औषदि लगावैतौ स्तनको रोगजाय १ अथवा जोक लगाय स्तनकी गांठिको लोही कढावैतौ स्तनका सर्वरोगजाय. २ अथ स्तनकीपीडाको जतनलिष्यते गडूंवाकीजड नैं पाणीमैंवांटि वैंकौ लेपकरैतौ स्तनकी पीडाजाय ३ अथवा हलद धत्तूराकीजड यांनैं जलसूं मिहींवांटि लेपकरैतौ स्तनकीपीडा दूरिहोय ४ अथवा वांझ कंकोलकीजडनैं मिहींवांटि जलसूं ईंको लेपकरैतौ स्तनको रोगजाय ५ अथवा लोहनैं गरमकरि औगरमपाणी स्त्रीपीवैतौ स्त्रीका स्तनरोग जाय ६ येसर्व जतन भावप्रकासमैं लिष्याछै.

अथ रंडास्त्रीगर्भनिवारण तथा गर्भपातन कीजे वास्ते श्रीधरकी अरज लिप्यते और विशेष करके ग्रंथकी मर्याद मुजब रंडास्त्रियांका गर्भनिवारण तथा गर्भपातनका उपाव याग्रंथामें श्रीदरवारतो संक्षेपकरके फरमायाछा पणअबारकी समय देषतां मनु

न. टी. प्रसूतिका रोगांतर जो सौभाग्यसूंठिको उपचारलिप्योछै. सूंठपाकसूं भिन्नभिन्न होयछै. परंतु यापथ्यभी इरीतिसौं करणी चाहिजे. अर षार, भस्म, वेदोनलिप्याछै. सो असल परीक्षाक्रियाथका तथा सूवैद्यकाहाथका कियाथका शुरू करणा.

धोलूणकी प्रतिवास यांको देतौ सूतिकारोगनैं सूलनैं पासनैं सास नैं ज्वरनैं मूर्छानैं मथवायनैं प्रलापनैं तिसनैं तंद्रानैं अतिसारनैं व मननैं यांसारांरोगांनैं योदूरिकरैछै ५ इति देवदार्व्यादिक्वाथः

अथ पंचजीरकपाक लिप्यते स्याहजीरो सुपेदजीरो सोंफ अ जवायण अजमोद धणौ मेथि सूंठि पीपलि पीपलामूल चित्रक झा उरूपकी जडकी वकल बोरकी मींगी कूठ कपेलो येसारी ओपदि टका टका भरिले त्यांनैं मिहिवांटि कपडछाण करे पाछे गऊका घृ तसेर १ मैं मकरोवे पाछे ईचूर्णमैं सेर ४ गऊका दूधका मावामैं ईघृतसूं मकरोय चूर्णनै पकाय ईको परोमावोकरे पाछे ईनै टका १०० भर पांडकी चासणीमैं नापे पाछे ईकी टका १ भरकी गोली करे पाछे ईनैं रोजीना जापावालीस्त्री पायतौ सुवाका रोगानै ज्वरनै क्षयीनैं पासनैं सासनैं पांडुरोगनै क्षीणतानैं वायका रोगांनैं योपं चजीरकपाक दूरिकरैछे. अथ सौभाग्यसूंठिपाक लिप्यते सतवा सूंठि सेर ऽ॥ ईनैं मिहीवांटि कपडासूं छाणिकरिसेर ऽ॥ गऊका घृत मैं मकरोवे पाछे गऊका दूधसेर ५ कामावामैं ईनैंपकाय ईको मधु री आंचसू परोमावोकरे पाछे सेर ५ पांडकी चासणीकरि ईचास णीमें येओपदि मिहिवांटि कपडासूं छाणिकरि ईनैं नापैसौ ओप दिलिपुंछूं धणौ टंक १ सोफ टंक १ वायविडंग टका १ सूंठि टका १ कालिमिरचि टका १ पीपलि टका १ नागकेसरि टका १ ना गरमोथो टका १ येओपदि मिहिवांटि ईचासणीमैं नापि सारटंक ५ अभ्रक टंक ५ येईमैं नापैं और मेवो जयारुचि ईनैं नापै पाछे

* [illegible] यह ग्रंथमें गर्भपातकी औषधीकों त्यागीहै. [illegible] [illegible] अमृतसागरमें ग्रंथ [illegible] परंतु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बिना [illegible] बिना हमारा नामका छापाग्रंथमें [illegible] [illegible] [illegible] पुस्तक [illegible] [illegible]

रूप होतोहुवो. अर कहींकको स्वरूपसुंदर पुरुषको सो होतो हुवो अथवा स्वामिकार्तिकको सषा विसाष जींको नाम अग्निसिरीसी जींका सरीरकोकांति इसानैं श्रीमहादेवजी और पैदाकरता हुवा. पाछै येसाराहीमिलि स्वामिकार्तिकजींकैसाथि रहताहुवा पाछै स्वामिकार्तिकर्जासूं यांसारांमिलि अरज करि हों भुपाछां ह्माकै षावाकै वास्तै ह्मानैं कोई आजीवका द्यो तदी स्वामिकार्तिकजी महादेव जीसूं अरजकरी तदि श्रीमहादेवजी याफुरमाई जगतकैविषै पशु पंछीनैं आदिलेर तिर्यग् जोनिभीरहैछे अर मनुष्यभी रहैछे. अर देवताभी रहैछे. ईजगतमैं सोदेवता मनुष्यांनै पीडाकरैछे. अर देवता पशुपक्ष्यांनैंभी पीडाकरैछे. जथाकाल प्रभृति हुवाथका उष्ण कालमैं गरमीकरिकै अर वर्षाकालमैं सीत पवनकरिकै अर सीत कालमैं सीतकरिकै अर मनुष्य है सो नमस्कार जप होमादिक करिकै भलैप्रकार देवतांनैं प्रसन्नकरैछे. अर वादेवतांनैं भोजनको भोगदेछै. अर ईसीतरै जो मनुष्य नहींकरैछे त्यांका वालकांनैंथे पीडाकरो अर वानैंथे षावो. १ अथ वालग्रह ९ छै सोवालकांका लेवाको कारणलिष्यते. जो मनुष्यांका कुलमैं देवताकी पित्रेश्वरांकी व्राह्मणांकी अतीतांकी गुरांकी अतिथिकी पूजादिक नहींकरैछे अर वानैं भोजनादिक क्यूंनहींदेछै अर कांसीका फूटापात्रमैं जो षाय छै वांका वालकांनैंथे षावो या महादेवजीभी वाग्रहांनैं कही तद वांकी आजीवका हुई १ अथ वालग्रह ज्यां वालकांनै लागे त्यां वालकांका लक्षणालि० जींवालकनैं येवालग्रहलागे सो वालकक्षिणेकमैं तो उद्वेगकूं प्राप्तहोय अर क्षिणेकमैं डरपिवालागिजाय अर क्षिणेकमैं रोवै अर क्षिणेकमैं आपकी धायनैं नषांसूं अर दांतां

न. टी. कारण वालक अवोछे. त्यांका सुपदुषनैं समझकर पालण पोषन अर जतन, दया युक्त अर मोह युक्त होकर कोकरैछे. अर या जतनसूं वालक आरोग्य रहकर जो वालअवस्थाकी चेष्टाकरै, जदांवां वालकाथै ईश्वरशक्तिको आनंद जाण्योजायछै.

ष्याकामनपातकी कर्मादिकांमें घणाप्रवर्तहोता दीपैछे. ग्रंथमें यो उपावजदपातकी मनुष्यानें मिलेतो मनुष्यजरूर उद्योगकरे. जांने अकाजहोय अथवा सुकाजहोय पणमेंतो ये च्यार अथवा पांच औषदीको प्रकर्ण छोडिदीनूछे. कारणहमारीबुद्धिप्रमाणे यो उद्यो ग दुरस्तध्यानमें आयो नहीं जीसूं सर्व विद्वान पुरुषासूं अरजछे. घणा प्रमाणिक ग्रंथ औरबहुधापुरुषांकै हाथमें प्रवर्त होय जैसा ग्रंथमें ओउद्योग होयतो जांनें बाजवीकोईबी कहसीनहीं कारण एक तो साधारणसमय दुसरो कोई कोई मनुष्यांको मन पातकी तीसरो ग्रंथमें औषदीको उद्योग जद इसाकर्मको विस्तारघणो वधे ईवास्तै मैं च्यार पांच औषदी छोडीछे जांवास्तै विद्वानह्माराउ परक्षमाकरसी १३ इति स्त्रियांकासर्वरोगांकी उत्पत्तिलक्षण जतन संपूर्णम्. इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवा ईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे स्त्रियांकाप्रदरनें आ दिलेर स्त्रियांका सर्वरोगांकाभेदसंयुक्तउत्पत्तिलक्षण जतन निरूप णं नाम विंशतितमस्तरंगः समाप्तः २०

२१ अथ बालकांका रोगांकी उत्पत्ति लक्षणजतन लि० प्रथम बालकांका नवग्रहजुदाहीछे यानऊग्रहांसूं भिन्नके सो अपवित्रबाल कनें वेनवग्रह पीडाकरेछे, सोई कारणसूं वानवग्रहांने बालकांरी र क्षाकरणी. १ अथ बालकांका नवग्रहांका नाम लि० स्कंदग्रह १ स्कंदापस्मार २ शकुनी ३ रेवती ४ पूतना ५ ग्रंथपूतना ६ सी तपूतना ७ मुखमंडिका ८ नैगमेयनव ९ अथ नवग्रहांकीउत्पत्ति लि० ये नवग्रहस्वामिकार्तिककीरक्षाके अर्थ श्रीमहादेवजी उपजा यता हुवा सोया नवग्रहांको स्वरूप महासुंदर जांकी तीको सोस

न. बी. बालकांका [illegible] आपस्य [illegible] बालकांकी मुखमांसे [illegible] सिंदूरके [illegible] किजे. अर बालमदारा वेद अर ब्राह्मन लियावे. [illegible] [illegible] जतन करोऊ. स्याने धीमान् आशीर्वाद देवे.

रूप होतोहुवो. अर कहींकको स्वरूपसुंदर पुरुषको सो होतो हुवो अथवा स्वामिकार्तिकको सषा विसाष जींको नाम अग्निसिरीसी जींका सरीरकोकांति इसानैं श्रीमहादेवजी और पैदाकरता हुवा. पाछै येसाराहीमिलि स्वामिकार्तिकजींकैसाथि रहताहुवा पाछै स्वामिकार्तिकजींसूं यांसारांमिलि अरज करि ह्मे भुषाछां ह्माकै षावाकै वास्तै ह्मानैं कोई आजीवका द्यो तदी स्वामिकार्तिकजी महादेवजीसूं अरजकरी तदि श्रीमहादेवजी याफुरमाई जगतकैविषै पशु पंछीनैं आदिलेर तिर्यंग् जोनिभीरहैछै अर मनुष्यभी रहैछै. अर देवताभी रहैछै. ईजगतमैं सोदेवता मनुष्यांनै पीडाकरैछै. अर देवता पशुपक्ष्यांनैंभी पीडाकरैछै. जथाकाल प्रभृति हुवाथका उष्ण कालमैं गरमीकरिकै अर वर्षाकालमैं सीत पवनकरिकै अर सीत कालमैं सीतकरिकै अर मनुष्य है सो नमस्कार जप होमादिक करिकै भलैप्रकार देवतांनैं प्रसन्नकरैछै. अर वादेवतांनैं भोजनको भोगदेछै. अर ईसीतरै जो मनुष्य नहींकरैछै त्यांका बालकांनैंथे पीडाकरो अर वानैंथे पावो. १ अथ बालग्रह ९ छै सोबालकांका लेवाको कारणलिष्यते. जो मनुष्यांका कुलमैं देवताकी पित्रेश्वरांकी ब्राह्मणांकी अतीतांकी गुरांकी अतिथिकी पूजादिक नहींकरैछे अर वानैं भोजनादिक क्यूंनहींदेछै अर कांसीका फूटापात्रमैं जो षाय छै वांका बालकांनैंथे पावो या महादेवजीभी वाग्रहांनैं कही तद वांकी आजीवका हुई १ अथ बालग्रह ज्यां बालकांनै लागै त्यां बालकांका लक्षणलि० जींबालकनैं येबालग्रहलागै सो बालकक्षिणेकमैं तो उदवेगकूं प्राप्तहोय अर क्षिणेकमैं डरपिवालागिजाय अर क्षिणेकमैं रोवै अर क्षिणेकमैं आपकी धायनैं नषांसूं अर दांतां

न. टी. कारण बालक भयोछे. ज्यांका सुपतुत्रनैं सुनश्चर पालन पोषण अर जतन, दया युक्त अर मोह युक्त होकर जोकरैछे. अर या जतनसूं बालक आरोग्य रहकर जो बालअवस्थाकी चेष्टाकरै, जदांतां बालकामैं ईश्वरशक्तिको आनंद आणेलागछे.

सूं काटिवालागिजाय अर ऊंचो आकासकानी देषवोकरे अर आपका दांतांनें चाविवोकरे कुणारिवोकरे जंभाई लेवोकरे अर भें वारा चढावोकरे अर होठ काटवोकरे अर मूंढेझाग आवोकरे अर वमन करवोकरे अर अतीसारयुक्तभी होय अर वेंको शरीर पांण पडजाय अर रात्रिनें जागे अर शरीरके सोई आयजाय अर कंठकोसुर घांघो होय अर वेंका शरीरमें माछलाकीसी दुरगंधि आवे जींको शरीर दुर्वल अर मैलो होजाय अर सारीसंज्ञा जातीरहे येलक्षण जींबालकमें होय तींनें जाणिजे बालग्रह लाग्योछे, येबालग्रहका सामान्यलक्षणछे १ अथ बालग्रह जीनें लाग्योहोय तींकोविशेष लक्षणलिष्यते जींको अंगशिथल होय अर जींका शरीरमें लोहीकी दुरगंधि आवे अर स्तनको दूध पीवेनहीं अर मूंढो वांको होयजाय अर आधो अंग रहजाय अर नेत्रांमें आसूंरहे रोवेथोडो हाथकी मूठीवंधीरहे येजीमें लक्षणहोय तदि जाणिजे ईनें स्कंदग्रह लाग्योछे १ अथ विशाप ग्रहजीनें लाग्यो होय तींको लक्षण लि० जींकी संज्ञाजातीरहे अर फेरिसंज्ञा आय जाय अर कदेक हाथपगांनें नवावण लागिजाय अर मलमूत्र विनासंग्याही करिदे अर जंभाई घणीआवे मूं दे झाग आवे तदि जाणिजे ईनें विशाप ग्रहलाग्यो छे. २ अथ शकुनी ग्रहजीने लाग्योहोय तींको लक्षण लिष्यते अंग शिथिलरहे भयकरि चकित रहवोकरे अर वेंकाशरीरमें मच्छीकीसी दुरगंधि आवे अर शरीरमें व्रणघणां पडिजाय अर शरीरमें दाह होय येलक्षण जींमेंहोय तदि जाणिजे ईनें शकुनीग्रह लाग्योछे. ३ अथ रेवतीग्रहजीनें लाग्यो होय तींकोल

*[illegible] मासवाडांतील करेछे. मांसाहारीनें [illegible] करेछे. [illegible] तदर्थ [illegible], [illegible] बालकांको पालनपोषन [illegible]. [illegible] करणो चाहिये.

क्षण लिष्यते जींको मूंढो लाल अर हर्योहोय अर पीली जींकीदे हीहोय अर जींकाहाथपग कालाहोय अर पीडानैं लीयां ऐसो वा लक होय तदि जाणिजे ईंकै रेवतीग्रहकौ दोषछै. ४ अथ पूतनाग्र ह जीनैं लग्योहोय तींको लक्षणलिष्यते जींको शरीर शिथलहो य रातिदिन सोवैनहीं अर वेंकोमल पतलो पडिजाय अर वेंका शरीरमैं कागलाकीसी दुरगंधि आवै अर छर्दिहोय तिस वणीहो य जींकै येलक्षण होय तदि जाणिजे ईंकै पूतनाग्रह लाग्याछै. ५ अथ जींकै गंधपूतना लाग्यो होय तींको लक्षणलिष्यते. ओ वाल क स्तनको दूधपीवैनहीं अर अतिसार होय पास हिचकी छर्दि येभीहोय ज्वरहोय अर शरीरको वर्ण जातोरहै अर शरीरमैंलोही कीसीदुर्गंधि आवै तदि जाणिजे ईंकै गंधपूतनाका दोषछै. अथ सीतपूतनाका दोषको लक्षणलि० वालकरोवोकरै अर कांपिवोक रैअर जींकी आंत वोलै अर शरीर शिथल होजाय अर अति सार घणोहोय जींकै येलक्षणहोय तदि जाणिजे ईंकै सीतपूतनाको दोषछै ७ अथ नैगमेय ग्रहका दोषको लक्षण लिष्यते. जींकै मूंढै झागघणा आवै अर कांपैघणो अर ऊंचोहीदेपै अर पुकारघणो अर शरीरमैं दुरगंधि आवै संग्याजातीरहै तदि जाणिजे ईंकै नैग मेय ग्रहको दोषछै ८ अर येही लक्षण डाकिणीका दोषका जाणि लीजौ. ९ अथ सामान्य ग्रहांका दोषांका जतनलिष्यते गोरष मुंडी पस यांको काढोकरि ईंकाढासूं वालकनैं स्नानकरावै. अथवा हलद चंदन कूट यानैंवांटि शरीरकै लेपकरैतो वालककासामान्य ग्रहको दोष दूरिहोय १ अथवा सांपकी कांचली लसण सिरस्यूं नींवकापान विलाईकीवींट वकराकावाल मींढाकोसींग वच सहत

न. टी. वालकांका ग्रहांकी शांति भाषीन ग्रंथांमैं लिषीछै सो अठै ग्रंथकर्ता यथाक्रमसौं दीनीछै अर परंपरागत रीतछै सो स्वीकृतछै. जो आयुर्वेदका आचार्य मुख्यमुख्य ग्रंथांमैं निदान लि ष्याछै. सो वर्तमान कालका विद्वान वाकरछै.

येसारावांटि यांकी वालककौं धूणीदेतौ वालकका ग्रहांका सारादो
ष जाय और उतारावगैरे साराजतन करेतौ वालकांका ग्रहांका
दोष जाय. ३

अथ कंदग्रहानैं आदिलेर वालकका ग्रहांका विशेष जतनलि०
वालनें दूरिकरिवावाला जोटक्ष त्यांका पानांको काढोकरि तीसूं
वालकनैं स्नानकरादेवे तौ वालकांका ग्रहांका दोष दूरिहोय ४ अ
थवा सिरस्यूं सांपकी कांचली वच कागलहरी यांनै कूटि अर ईमैं
ऊंटाका अर बकराका बाल मिलावे. अर वच अर घृत मिलायईकी
वालककै धूणीदेतौ वालकांका याग्रहांकोदोष दूरिहोय. ५ अथ
स्कंदापस्मार तींका दोषको जतन लि० वीलकी जड सिरसकी
जड सुपेददोब सुपेद सिरस्यूं पाठ मरवो राई सुपेदबाबची कायफ
ल कुसुंभी वायविडंग संभालू गूलर परेंटी चिरपोटणी वकायण का
लीतुलसी भाडंगी यांको काढो करि ईंकाढाका पाणीसूं वालकनैं
स्नान करावै तौ स्कंदापस्मार वालकका ग्रहकोदोष जाय ६ अथवा
गोमूत्र वकरीको मूत भेडीको मूत भैंसीको मूत गधाकोमूत घोडा
को मूत ऊंटको यांसारां मूतामैं तेल पकावै मधुरी आंचसूं ये मू
त वलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि तेलको वालककै मर्दन करेतौ
स्कंदापस्मार वालकांका ग्रहांकादोष जाय ७ अथवा माथाका केश
हाथीको नप वळधकारोम यामैं घृत मिलाय ईंकी धूणीदे तौ वाल
कको स्कंदापस्मार ग्रहको दोष जाय ८ अथवा जवासो मैणसिल
किस्तुरी कोठकीजड यांकी वालककै धुणीदे तौ वालककै वांधे तौ
स्कंदापस्मार वालकका ग्रहांको दोष जाय ९, अथवा वालकनैं चौह
टै स्नानकरावै तौ स्कंदापस्मार अर विशापाको दोष जाय १० अथ

म. दी. [illegible]

शकुनीग्रहका दोषका दूरिहोवाको जतनलि० वेतकी लकडी आं वकी जड कैथकी जड यांको काढोकरि ईंपाणीसूं बालकनैं स्नानकरा वै तो शकुनीग्रहको दोषजाय १ अथवा झाउरूंपकी जड महुवो पस गौरीसर कमलकी जड पदमाष लोद फूल प्रियंगु मजीठ गेरू यांनैं जलसूं मिहीवांटि ईंको बालककै उवटणो देतौ बालककै शकु नीग्रहको दोषजाय २ अथवा स्कंदापस्मारका जतन कह्याछै सौ भी शकुनी ग्रहका दोषनैं दूरि करैछै ३ अथवा शतावरी अथवा इं द्रायणीकी जड अथवा नागदवणी अथवा कटयाली अथवा सहदे ई यांको पूजनकरि बालककागलाके बांधैतौ शकुनी ग्रहका दोष दूरि होय ४ अथवा तिल चावल फुलांकी माला हरताल मैणसील यांकी शकुनी ग्रहनैं बलिदे विधिपूर्वक और बालकनैं औषध्यांका जलसूं स्नानकरावैतौ शकुनी ग्रहको दोष दूरिहोय. ५ अथ रेवती ग्रह का जतनलि० अस्वगंध मीढासींगी गौरीसर साठीकीजड सेवती काफूल विदारीकंद यांको काढोकरि ईंकाढाका पाणीसूं बालकनैं स्नानकरावै तौ बालककै रेवती ग्रहको दोषजाय ६ अथवा बालक कै तेलको मर्दन करैतौ अथवा कूठ राल गूगल पस हलद यांकी बा लककै धूणादेतौ रेवती ग्रहको दोष दूरिहोय ७ अथवा सुगंधीनैं लीयां सुपेद फूल चांवलांकीपील दूध रांधीसाल दहीं यांनैं बालक के ऊपरि नाषि बालकनैं स्नान करावै अर याहीकी गऊसालमैं बलिदेतौ बालककै रेवतीग्रहको दोष दूरिहोय. ८ अथ पूतनाग्रह का जतन लिष्यते नींबकीछालि विष्णुक्रांता वणिकीछालि यांको काढो कारि ईंजलसूं बालकनैं स्नानकरावै तौ पूतनाग्रहको दोष दू रिहोय ९ अथवा नवीनविदारीकंद सुपेद दाप हरताल मैणसील

न. टी. वागभट्ट भरी आदिदेर लिपीछै वागभट्टमैं सुश्रुतमैं, चरकमैं अश्विनीकुमार संहि- तामैं, रुद्रसंहितामैं, शारंगधरसंहितामैं, अर और घणांग्रंथांमैं वर्तमानकालमैं, नारमकामभैं. तंत्र, मंत्र, उतारा, औषधीसर्वछै.

कूठ राल यांको काढो करि ईकाढाका रसमें तेल अथवा घृत पका वै पाछे ईतेल अथवा घृतको बालकके मर्दन करैतौ पूतनाग्रहको दोष दूरिहोय १०.

अथ गंधपूतनाग्रहको जतन लिष्यते नींबकापान पटोलकापा न कटयालीकापान गिलोयकापान अरडूसाकापान यांको काढो करि ईपाणीसुं बालकने स्नानकरावे तौ गंधपूतनाका दोष दूरिहोय ११ अथवा पीपलि पीपलामूल दोन्यूंकटयालि यांको काढो करि ईकाढामें गऊको घृतपकावे पाछे ईघृतको मर्दनकरैतौ बालकको गं धपूतनाको दोपदूरिहोय १२ अथवा केसर अगर कपूर कस्तुरी चंदन यांनेंमिहीपीसि बालकके आंष्यांके लेपकरैतौ गंधपूतनाको दोप दूरिहोय १३ अथवा कूकडाकीवीट बालककाकेस लसनकी छालि घृत यांनें बालकऊपरि वारि चोवटामें मेलैतौ गंधपूतना को दोप दूरिहोय. १४ अथ सीतपूतनाका जतन लिष्यते गोमूत बकरिकोमूत नागरमोथो देवदारु चंदननें आदिलेर सर्व सुगंधि यामें तेलपकावे ईतेलको बालकके मर्दन करैतो सीतपूतनाग्रहको दोप दूरिहोय १५ अथवा कुटकी नींबकीछालि पेरसार छालरी छाली कहवाकीछालि यांको काढो करि ईमें घृतपकावे पाछे ईघृत नें बालकनें पुवावे अथवा बालकके लेपकरैतो सीतपूतनाको दोप दूरिहोय १६ अथवा नींबका पानाकी बालककेधुणीदे अथवा बाल कनें चिरमिकी माला पहरावैतो सीतपूतनाको दोप दूरिहोय १७ अ थवा नदी ऊपरि मूंग चावल सीतपूतनानें समर्पण करैतो सीतपूत नाको दोप दूरिहोय. १८ अथ मुपमंडिका ग्रहका जतन लिष्यते कैथ बील अरण्यो अरडूसो सुपद [illegible]

[illegible]

ईंकाढाको बालकनैं स्नान करावैतौ मुषमंडिकाको दोष जाय १९ अथवा भांगराकोरस वच ईंमैं तेलपकावै पाछै ईंतेलको बालककै मर्दन करैतौ मुषमंडिकाको दोष दूरिहोय २० अथवा राल कूठ यांको काढो करि ईंका रसमैं घृतपकावै पाछै ईंघृतको बालककै मर्दन करैतौमूषमंडिकाको दोष दूरिहोय २१ अथवा गउका स्थान मैं बलीकरै अर उठै ईंनैं मंत्रसूं स्नान करावैतौ मुषमंडिकाको दोष दूरिहोय. २२ अथ स्नानका जलको मंत्र लिष्यते. अलंकृताकामवतीसुभगाकामरूपिणी गोठमध्यालयरतापातुत्वां मुषमंडिका २३ अथ नैगमेय ग्रहको जतन लिष्यते बीलकी जडकी वकल अरण्याकीजड कणगचकी जड यांको काढो करि ईंपाणीसूं बालकनैं स्नान करावैतौ नैगमेय ग्रहको दोष जाय २५ अथवा फूलप्रियंगु जवासो सौंफ चित्रक वृक्षकीवकल ईंनैं लौकीकमैं गुडहलको वृक्ष कहैछै याको काढो करि ईंकाढाकारसमैं तेलपकावै पाछै ईंतेलनैं पकतां ही ईंमैं गोमूत दहीं अर कांजी नापै पाछै औंर ईंतेलनैं पकावै ये सारावलिजाय तेलमात्र आयरहै तदि ईंको बालकांकै मर्दनकरैतौ नैगमेय ग्रहको दोष जाय २६ अथवा तिल चावल फूलांकीमाला लाडूनें आदिलेर मिठाई यानैं बालकऊपरिं ७ सातवार वारिवारि वृक्षका पेडमैं मेलैतौ नैगमेय ग्रहको दोष दूरिहोय. २७ अथ वारिवाको मंत्रलिष्यते अजाननश्चलाक्षीभ्रू कामरूपीमहायशाः बालंपालयतेदेवो नैगमेयोसिरक्षतु २८ येसर्वजतन भावप्रकासमैंछै. अथ रावणाको बनायो बालतंत्र नामग्रंथछै तींका मंत्रासूं बालकांकौ डाकिणीनैं आदिलेर ल्यांका आछ्या होवाका लक्षण उत्पत्ति लिष्यते बालकको जन्महूवां पाछै पहलोदिन प्रथम मास प्रथम

न. टी. वर्तमानकालमैं जो वैद्यछै. सो तो कपि कृतउपचार यत्नसामों करैछै. शायरे भ नुकूलछै. ज्यांका शुभाशुभ फल तत्काल सिद्धछै. अर जो वैद्यशास्त्रपं प्रतिकूलछै. सो वृथा उपचारमैं भटकरारछै.

वरसमें मंदानाम मातृकानें आदिलेर रावणकी बारा१२ ग्रहण छे सोबालकनें दोषकरेंछे तींका येलक्षणछे बालकके ज्वरहोय रोवे घणो ओबोलेनहीं तींका आछ्या होवामें वेकवास्ते बलिकहिजेछे नदीकादोन्यू तटांकीमाटीले वेको पुतलोकरे कोरिसैनकमें अर वे केकनें चावल सुपेद फूल ७ ध्वजा सात ७ दिवा ७ सात गुलगुला सात ७ पान गंध धूप मांस दारु येसाराबालक ऊपरिवारि पूर्वदिशाकानी चोहटे मध्यान्हकेसमे बलिदे अर पीपलकोपान माथामेंनापि बालकनें स्नानकरावेतो नंदानाम मातृकाको दोष दूरि होय १ इंतरेदिनच्यारिकरे अर बालकके सिरस्यूं मींढाकोसींग नींबकापान शिवनिर्माल्ययांकी धूणदितो बालक आछ्योहोय अथ उताराकोमंत्र लि० ॐ नमोभगवते रावणाय हन्हन् मुंचमुंच स्वाहा २० अथ बालकका जन्मसूं दुसरेदिन दूसरेमहिने दूसरेवरस शुभदानामक मातृकारावणकीग्रहण बालकनें दोष करेंछे तींकालक्षणलि० प्रथमज्वर होय नेत्र मींचेनहीं शरीर कांपिवोकरे नींद आवे नहीं पुकारबोकरे बोलेनहीं वेके आछ्या होवाकेवास्ते बलि नामउतारो लिषूंछूं जींकरिबालकनें सुषहोय सवासेर चावल दही माछलांको मांस दारु तिलांका चूर्ण येसारा सरावामें मेलिपश्चिम दिशानें चोहटे तीन ३ दिनसंध्यासमें बालकऊपर उताराकरेतो पाछे शांतिकाजलसूं बालकनें स्नानकरावे पाछे शिवनिर्माल्य घस मिलाईकारोम घृत दूध ईंकी बालककें धूणांदे अथ उताराकोमंत्र लि० ओंरावणायहन् २ मुंच २ हुंफटस्वाहा चोथे दिन ब्राह्मणनें जिमावे जथाशक्ति करावेतो शुभदाको दोषजाय. २१ अथ तीसरेदिन तीसरे मासतीसरे वर्ष पुतनानाम रावणकी ग्रहण बालकके दोष

न. टी. ओ अरिष्टिया उपायांवै [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].
[illegible] [illegible]. अर बालक [illegible] अर [illegible] [illegible]. अर [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

करैछे तींकोल० प्रथम बालकके ज्वर होय शरीरकांपै ओबोलैनहीं मूठिषोलैनहीं पुकारिवो करै आकाशमांहि देषवोकरै वें बालकका सुषके वास्तै वैंको उतारो लि० नदीका दोन्यूंतटांकी माटी गाढी ले तींको पूतलो करि पूतलानैं सरावामैं मेलै वैंके माय तांबूल रक्तपुष्प रक्तचंदन रक्त ७ सातध्वजा सात दिवा मांस सुराभातमेली दक्षिण दिसामैं तीसरे प्रहर चौहटे बलिदे पाछै शिवनिर्माल्य गूगल सिरस्यूं नींबकापान मींढाकोसींग यांकीधूणी दिनतीन तांईं दे अथ उताराको मंत्रलि० ॐनमोरावणायनमः हन् २ मूंच २ त्रासयत्रासयस्वाहा. चौथे दिन ब्राह्मणभोजन करैतौ बालकके आराम होय. ३२ अथ चौथेदिन चौथेमास चौथेवरस मुषमंडिका नामरावणाकी ग्रहण तींका दोषको लक्षणलि० प्रथम ज्वरहोय कांधी नवैनहीं नेत्रफाट्या रहै वे बोलैनही रोवोकरै सोवै घणो हाथकीमूठि बांधीरहै वैंका सूषके वास्तै उतारोलि० नदीका दोन्यांतटांकी माटी ले तींको पूतलोकरै वैंके आगै कमलका फूल मेलै गंध तांबूल सुपेदफूल चारि दिवातेरापूवा माछलाकोमांस सुरा छाछिये सारासरावामैं मेलजै पाछै उत्तरदिशामैं तीसरे प्रहरचौहटे बलिदेतो बालकके सुषहोय अथ उताराको मंत्रलि० ॐनमोरावणाय हन् २ मथ २ स्वाहा. चौथेदिन ब्राह्मण भोजन करैतो बालक आछ्यो होय ३३ अथ पांचमेंदिन पांचमैं महिनै पांचवै वरष पूतनानाम मातृकारावणकी ग्रहण तींका दोषांका लक्षण लिष्यते. प्रथम ज्वर होय शरीरकांपै ओबोलैनहीं हाथकी मुठी पोलैनहीं अथ वैंका आछ्या होवाको उतारो लिष्यते. कुह्मारका चाककी माटिले तींको पूतलो करैतींके आगेगंधतांबूल चावल सुपेद फूल पांचध्वजा पांच

न. टी. अनुभवीक वर्तमानलि० कोई कोई बाळांमें पेडा, पारवुना, काटडी इत्यादिक देखा होयछे सो कोई समयमें कुत्सीरवा लागे अर फळगल्लाजागि नावछे नदानाजी को गरे बाळीनें धूपध्यान तंत्रमंत्रादिकरेछे. जदाफिरआवूत उतरेछे.

दिवा पांचवडा ईशान दिशामें उतारोमेले पाछे शांतिका जलसूं स्नानकरावे पाछे शिवनिर्माल्य सांपकी कांचली घृत नींबका पान यांकीधूणीदेतो बालक आछ्योहोय उतारांको मंत्रलिप्यते ॐनमो रावणायनमः चूर्णय चूर्णय स्वाहा चौथेदिन ब्राह्मणभोजन करावेतो बालक आछ्योहोय. ३४ अथ छठेदिन छठेमास छठेवरस शकुनीनाम मातृका रावणकी बहण तीकादोसको लक्षणलि० प्रथम ज्वरहोय शरीरकांपे रात्रिदिनमें सुप होयनहीं ऊंचोदेषे वेकासुपकेवास्ते उतारो लि० गोहांका चूनको पूतलोकरे सुपेद फूल लालफूल पीलाफूल मद्य मांस दिवा १० ध्वजा १० वडा १० दूध जामुणीमांस दारु यांकोउतारो अग्निकोणमें मध्यान्हसमे मेलेपाछे सीतलजलसूं स्नानकरावेतो पाछे शिवनिर्माल्य ल्हसण गूगलसिरस्यूं सांपकी कांचली नींबकापान घृतयांकी धूणी अथवा उताराको मंत्र लि० ॐनमोरावणाय चूर्णय २ हन २ स्वाहा. ३५

अथ सातवे दिन सातवे मास सातवे वरस शुष्क रेवतीनाम मातृकारावणकीबहण तींका दोपकालक्षण लिप्यते प्रथम ज्वरहोय गात्रकांपे मूठी बंधीरहे रोवे बहुत तींका सुपके वास्ते उतारो लिप्यते नदीका तटको माटीको पूतलो करे तींके आगे लाल फूल मद्य तांबूललाल चावलांकी पीचडी दशदिवा मांस दारुध्वजा १३ पश्चिम दिशामें गांवके बार तीसरे पहर उतारोमेले पाछे स्नान करावे पाछे शिवनिर्माल्य मींढाको सींग सिरस्यूं पस घृत यांकी धूणीदे अथ उताराको मंत्रलिप्यते ॐनमो रावणायतेजसंहन

* [illegible]

२ मुंच २ स्वाहा. चौथैदिन ब्राह्मणभोजनकरैतो वालक आछयौ होय. ३६ अथ आठवे दिन आठवैमास आठवैवरष नानानाम मातृका रावणकीवहण तींका दोषको लक्षण लिष्यते ज्वरहोयशरीरमैं दुरगंधिआवे आहारलेनहीं शरीरकांपे वैंकासुषकै वास्तै उतारो लिष्यते. लालफूल पीलीध्वजा रक्तचंदन षीर मांस सुरायांको वलि प्रभातसमैं ईमंत्रसूं दे ॐनमोरावणाय त्रिलोक्याविद्रावणाय चतुर्दशमोक्षणाय ज्वरहन् हन् ॐ फटस्वाहा. ३७ अथ नवे दिन नवैमांस नवैवरष सूतिकानाम मातृका रावणकीवहण तींका दोष कालक्षण लिष्यते ज्वरहोयशरीरमैं पीडाहोय छादणी होयवेंकासुषकै वास्तै उतारो लिष्यते नदीका दोन्यूंतटांकी माटीको पूतलोकरे सुपेद वस्त्रपहरावे सुपेद फूलगंध तांवूल दीवा १३ ध्वजा १३ उत्तर दिशामैं गांवकै वारै उतारोकरै पाछै शांतिका जलसूं स्नान करावे गूगल नींवकापान गायको सींग सिरस्यूं घृत यांकी धूणीदे अथ उताराको मंत्र लिष्यते ॐनमो रावणाय हनहन् स्वाहा चौथै दिन ब्राह्मणभोजन करैतो वालक आछयौ होय. ३८ अथ दशवैदिन दशवैमास दशवैवरष क्रियानाम मातृका रावणकीवहण तींका दोषको लक्षणलिष्यते ज्वरहोय शरीरकांपेरोवै मलमूत्रकरिदे अथ वेंको उतारोलि० नदीका दोन्यूंतटांकी माटीको पूतलो करे पाछे गंध तांवूल रक्तफूल रक्तचंदन ध्वजा ५ दीवा ५ पूवामांससुरा वायव्य कोणमैं वलिदे पाछे काकविष्टा गऊको सींग विलाईका रोम नींवकापान घृत यांकी धूणोदे उताराको मंत्र ॐनमो रावणाय चूर्णितहस्ताय मुंचमुंचस्वाहा चौथेदिन ब्राह्मण भोजन करैतो आछयौ होय. ३९

न. टी. वालकांका दुषके तांई जो कह्याछै सर्व जतन ऊपर ध्यान करणो. अर प.मैं जे कमती तथा जादा करणो होयछै सुविद्वान वैद्यांकछै. शास्त्रानुकूल तथा इयांकी निर्मल वुद्धिरूपाह दयावान यथायारी ह्याने.

अथ इग्यारवेदिन इग्यारवे मास इग्यारवेंवरप पिपीलिकानाम मातृकारावणकी वहणतीका दोपको लक्षणलिष्यते. ज्वरहोय अहार लेनहीं अर वेंका सुपके वास्ते वेंकीवलि लिष्यते गोहांका आटाको पूतलो करे वे पूतलाकामूंढाके दूधकीधारदे पाछै रक्तचंदन पीलाफूलगंध तांबूल दिवा ७ वडा मालपूवा मांससुरा पूर्वदिशामें उतारो मेले पाछे शांतिका जलसूं स्नानकारवेपाछे शिवनिर्माल्य गूगल गऊको सींग सांपकीकांचली घृतयांकी धूणीदेअथमंत्र लिष्यते ॐनमो रावणाय मुंचमुंचस्वाहा चौथेदिनब्राह्मणभोजनकरावे तौ वालक आछ्यौ होय. ४० अथवारवेंदिन वारवेमासवारवेंवरप कामुकानाम मातृका रावणकीवहण तीका दोपको लक्षण लिष्यते. ज्वरहोय हंसे हाथसूं दूरिकरे पुकारेंघणो सासघणा ले अथ वेंकीवलि लिष्यते. गोहांको पुतलो करे पाछे गंध तांबूल सुपेदपुष्प ध्वजा ७ मालपुवा ७ यांकी वलिदे पाछे शांतिकाजलसूंस्नान करावे पाछे शिवनिर्माल्य गूगल सिरस्यूं घृत यांकीधूणींदे अथ उताराको मंत्रलिष्यते ॐनमो रावणायमुंचमुंच हन् २ स्वाहा चौथेदिन ब्राह्मणभोजन करावेतो वालक आछ्यौ होय ४१ योरावणाको मथायो कुमारतंत्र चक्रदत्तमें लिष्याछे. अथ वालकांकारोगांकी और उत्पत्ति लक्षण लिष्यते. धायकाभारयागरिष्ठ भोजनकरवांसूं अर विशम वायपित्तका आजारांसूं वालकका शरीरमें दोपहेसो कोपकूं प्राप्ति होयछे. अर एसेही कुपथ्यका भोजनसूं धायकास्तनमें प्राप्तिहोय दूधद्वारवालककै रोगनें करेछे. धायका वायका दुष्ट भोजनसूं वायदुष्ट होय अर ओवायदूधमें प्राप्तिहोय तदि ओ दूध पीवें जदिवालककौ वायका रोग होयछे. तदि ओको

[illegible]

लकषीण होजाय मूंढोसुपेद होजाय शरीर कृस होजाय अर वेंको मलमूत्रनीठउतरे ईनें आदिलेर वायका और रोगछे ऐसैही बालक पित्तका दुष्टको दुधपीवेतो बालकके पित्तकारोग पैदा होयछै. वे बालकके पसेव आवे मलपतलो होजाय. शरीर पीलोहोजाय तिसघणीलागे शरीर गरमरहे ईनें आदिलेर पित्तकारोग होयछै वैंकें लालघणी पडै नींदघणी आवै जडघणोरहै शरीरसूनोरहै नेत्रमूंढोसारोशरीर भाद्योरहै अर ज्वरनें आदिलेर और सर्व रोगछै सोवडा आदमीके जोहोयछै सोहीबालकके जाणिजे. अर बालकके जोरोग होयछै सो वडा आदमीके कोई होय नहीं तालुकंटकनें आदिलेर अथ तालुक कंटकको लक्षण लि० तालुवाका मांसनें बालकके कफ कोपकरे जदिवेके तालवामें कांटा पडिजाय अर वेंको तालवो बैठिजाय अर तालवाका वैठिवासूं बोबांको दूध पीवेनहीं मलपतलो व्हैजाय तिस घणीलागे आंपिदूपें कंठमें मूंढामें पीडा होय माथो ऊठेनहीं वमनकरे. १ अथ महापद्मरोगको लक्षणलिष्यते बालककामस्तकमें अर गुदामें रोगपैदा होय अर रतवावपेदाहोय अर पद्मकावर्णसिरीसो जींकोवर्णहोय सो वा तीन्यूं दोषाकाकोपसूं होयछै. प्रथम ओरोग कनपटयांमें होयछे पाछे कनपटयांसूं हियामें आवे पाछे हियासूं गुदामें आवे ऐसेही पेडूसूं गुदामेंजाय अर गुदासूं फेरिहियामें जाय अर हियासूं सिरमेंजाय २ अथ कुकूणकरोगको लक्षणलिष्यते. कुकूणरोग दुष्ट दूधकापीवासूं बालककेही होयछै. वेंका नेत्रदूपे. नेत्रांमें पाजिआवे आंसूं वारवार घणापडे अर ओबालक ललाट नेत्र नाक यांनें घसिवोहीकरे अर तावडाकानीं देपैनही अर वेकी आंपि पूलेनही ईनें कुकू

न. टी पैगवरकी भाष्याकै अनुगुलरहनो चाहिजै. ओबालकांका रोगछेसो सर्वलिप्याछे. अर जननकी लिप्याछे. परंतु निरपेक्षनानहीछे. निरपेक्षनानेकेनढोच सिहानोंकी छरामनामों होग. जैसे पुराणोंरमारी भोरुषिको भेद.

णकरोग कहिजे. ३० अथ तुंडी गुदापाक रोगको लक्षण लिख्यते बालकाकी गुदा पकिजाय अर वेंकीनाभिमें पीडाहोय तीनें तुंडी गुदापाक रोगकहिजे. ४

अथ अहिपूतनारोगको लक्षण लि० बालककीगुदामलमूत्रसूं लीपी रहवोहीकरे अर गुदानें धोवे अथवा कपडासूं पूंछे वातपानें जादिपाजिआवे. अर गुदालालरहे अर वो बालकगुदानें पूजालै तदि वेंको फोडाहोव वेंकी गुदापाणीसूं झरवोकरे अर वेंकी गुदा में व्रणाहोजाय भयंकर वेनें अही पूतनारोग कहिजे. ५ अथ अजगल्लिकारोगको लक्षण लिख्यते जींका शरीरमें चीकणालाल येक वर्णका मूंगप्रमाण वणीफुणस्या होजाय अर वेमें पीडनहीं होय ओकफवायसूं उपजेछै. इनें अजगल्लिकाकहिजे. ६ अथ पारिग र्भिकरोगको लक्षण लि० बालक हेसो गर्भिणी लुगाईको दूध पी वे जींके पासीहोय अग्निमंद होय शरीरमें दाहहोय अर तंद्रा हो य पीणा पडिजाय अरुचिहोय भोलिआवे अरवेंको पेट वधिजाय वेनें पारिगर्भकरोग काहिजे ७ अथ बालकका दांतांको रोगलि० बालककें दांतानें आवतां ज्वरहोय पेट छूटजाय छालेहोय छांदे माथो दूषे आंप दूषे रतवावहोय येलक्षण दांतरोगांका जाणिजे. ८ अथ बालकांका रोगांका जतनलि० जो बडा आदम्यांकै रोग होयछै अरवोही रोग बालकांकै होयतो वेहीजतन बडा आदम्यां केकरे सोही बालकांका कीजे अर बालकनें औषद दीजे सोतो येकेक वधतो दीजे वरस येकताई अर दूसरावरपसूं मासो १ दी जे यानवांदाछै अर बालककै हाथ लगावा रोगतदै रोगजाणिजे. अर वेकोजतन कीजे अथ बालककी ज्वरको विशेष जतनलि० ना गरमोथो हरडे [illegible] नीवकीछालि पटोल यांको काढोकरि तीनें सहतनाखि पाछे बालकनें प्यावै तो बालककी अग्निकारकी [illegible]

य २ इतिभद्रमुस्तादिक्काथः ९ अथ बालककौं ज्वरअतिसार होय तींकोजतनलि० नागरमोथो, पीपलि, अतीस, काकडासींगी, यां कोचूर्ण करिसहतसूं बालकनैं चटावैतौ बालककौं ज्वरातिसार जा य अर षासनैं वमननैं दूरिकरै. १० इति चातुर्भद्रादि० अथ*बाल कका अतिसारको जतनलि० बीलकीगिरि धावड्याका फूल नेत्र वालो लोद गजपीपलि यांको काढो सहत नापिदेतौ बालकांकौ अ तिसार जाय. ११ अथ बालकांका भयंकर अतिसारको जतनलि ष्यते. मजीठ धावड्याका फूल लोद गौरिसर यांकोकाढोकरि तींमें सहत नापिदेतौ बालककौ भयंकरभी अतिसार जाय. १२ इति स मंगादिक्काथः अथ बालकका आमातिसारको जतनलि० वायविडं ग अजमोद पीपलि यांनें मिहीवांटि चावलांका पाणीमें देतौ आ मातिसारजाय. १३ इति विडंगादिक्काथः अथ बालकका रक्ताति सारको जतनलि० मोचरस मजीठ धावड्याका फूल कमलकीकेस रि यांनें मिहीवांटि साठ्याचावलांका मांडकैसाथिदेतौ बालककौ रक्तातिसार जाय. १४ अथ बालकांका सर्वप्रकारका अतीसार को जतनलि० सूंठि अतीस नागरमोथो नेत्रवालो इंद्रजव यांको काथदेतौ बालकांको सर्व प्रकारको अतिसारजाय. १५ अथ बाल कांकी मोडानीवाहीको जतनलि० चावलांकी पील महलोठी मह वो यांनें मिहीवांटि मिश्रीअर सहतमें चटावैतौ बालककी मोडानि वाहीजाय. १६ अथ बालककी संग्रहणीको जतनलि० हलद चव्य देवदारु कट्यालीगजपीपली पृष्ठपर्णी सौंफ यांनें मिहीवांटि सहत घृतकैसाथि चाटैतौ संग्रहणीनें पांडुरोगनें ज्वरातिसारनें दूरिकरै

* बालकका रक्त अतिसार दुर्घट होयछे. जीनें आतानकरवाकि वास्ते अनेक आवगीछे परंतु अतिसारमें बालकके प्राण होय जदाभयतुरनम्याणि जाणिजे. यामें अतिविष जीनें अतीस कहेछे. अर मोचरस जीनें मुसारिका फूल कहेछे. धावड्याका फूल नागरमोथो इत्यादि औषधछे.

अर भूपलगावैछै. १७ इति राजन्यादिचूर्णम्. अथ बालकका पास को जतनलिप्यते. नागरमोथो अतीस अरडूसो पीपलि काकडा सींगी यांनेंमिहीवांटि सहतकेसाथि चाटैतो बालकको पांच प्रकारको पासजाय. १८ इति मुस्तादि॰ अथ पासको ओर जतन लिप्यते. कट्यालीका फूलांकी केसरि तीनें सहतसूं चाटैतो बालककी पासिजाय. १९

अथ पास सासकोजतन लि॰ मुनक्कादाप अरडूसो हरडेकी छालि पीपलि यांनें मिहीवांटि सहत अर घृतके साथि चाटैतो सास अर पासजाय. २० इति द्राक्षादि॰ अथबालककी हिचकीको जतन लि॰ कुटकीनें मिहीवांटि सहतसूं चटावैतो बालककी हिचकी अर छादर्णीजाय २१ अथबालककी छर्दिको जतन लि॰ आमलीकीगुठली अर चांवलांकीपील सींधोलूण यांनें मिहीवांटि सहतसूं चाटैतो बालककी छर्दिजाय २२ अथ बालकदूधछादे तांको जतनलि॰ कट्यालीका डोडाकोरस पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांनें मह्हीवांटि सहत घृतसों चाटैतो बालक दूधछर्दि नहीं. २३ अथ बालकका पेटमें आफरोहोय अर सूलचालै तांको जतनलि॰ सींधोलूण सूंठिइलायची सेकोहींग भाडंगी यांनें मिहीवांटि गरम पाणीसूं लेतो बालकको आफरो अर सूलजाय. २४ अथ बालकको मूत्रबंधिगयो होय तांको जतन लि॰ पीपलि मिरचि छोटी इलायची सींधोलूण यांनें मिहीवांटि मिश्री अर सहतसूं चाटैतो मूतरूकिगयो होय सो आछीतरै. उतरै. २५ अथ बालककै लालवणी पडै तांकोजतन लि॰ गोरीसर तिल लोद यांको चूर्णकरि सहत नापि बालकको प्यावैतो बालकका मूंढाकी लाल प

न. टी. बालकांका [illegible]

डती रहे. २६ अथ वालककामूंढामै छाला होय तींको जतन लि० पीपलकीवकल अर वेंका पान यानें वांटि सहतमें मिलाय चटावे तौ वालकका छाला आछ्याहोय २७ अथ वालककी नाभीके सो जोहोय तींको जतन लिष्यते पीलीमाटीनें अग्निसूं लालकरि दूध सूं नाभिके सेकैतौ वालककी नाभिको सोजोजाय. २८ अथ वालक की नाभि पकीगई होय तींको जतनलि० हलद लोद फूल प्रियंगु यानें सहतसूं वांटि नाभिके लेपकरैतौ नाभिको पकिबो दूरिहोय. २९ अथ वालककी गुदापकीजाय तींको जतन लि० रसोतनें पा णीमें पीसि गुदाके लेपकरैतौ गुदापकतीरहे ३० अथवा संप मह लौठी रसोत येतीन्यूंवांटि लगावैतौ वालककी गुदापकतीरहे. ३१ अथ वालकके दांतदोहरा आवे तींको जतन लि० धावड्याकाफू ल पीपलि यानें आंवलाकारसमें वालककामसूढांके लगावैतौ दांत आछीतरेंआवे ३२ अर लाक्षादितेलसूं वालकका ज्वरादिक सर्वरोगजाय ३३ इति श्री वालकांका सर्वरोगांकी उत्पत्तिलक्षण जतनसं० येसर्व भावप्रकासमैंलिख्याछै. इति श्रीमन्महाराजाधिरा जमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागर नामग्रंथे वालकांका सर्वरोगांका भेदसंयुक्त उत्पत्तिलक्षण जतन निरूपणंनामएकविंशतितमस्तरंगः २१

२२ अथ वाजीकरणाधिकारलि० वाजीकरणकहजे कोई जो पु रुष दीपतकोतो पुष्टदीपे अर ओनपुंसकहोय स्त्रीका कामको नहीं होय तींको जतनलि० ओनपुंसक पुरुष सात प्रकारका होयछे तीं की उत्पति लक्षणलि० स्त्रीसूंरमवाकी इच्छाकरे अर संग होयनहीं यांकारणांसूं लिंगउठे नहीं तीनें नपूंसक कहिजे. सोकारणलिष्यूंछूं

न. टी. अनेकरोग बाळकांकाछे. ज्यांके आरामहोवेको श्रीदरबार परोपकारके अर्थ छरायुक्त दांचकर फरमायाछे सोस्याणामनुष्यानें कबूलकरणा योग्यछे. अर ईश्वर अना-म्य करेछे, स्वाभियानसो. ज्यानें मनुष्यकेतो दयामाय.

कडवीवस्त पटाई गरमलूण यांका घणापावासूं वीर्यको नासहोय अथवा भयसूं अथवा सोकसूं क्रोधनैं आदिलेर तींका कारणासूं वीर्यको नासहोय तीसूं नपुंसक होय अथवा पुत्र जीवननैं आदिलेर तींकानाससूं नपुंसकहोय अथवा रोगांका आवासूं नपुंसक होय अथवा अतिमैथुनकाकरिवासूं वीर्यको नासहोय तिसूं नपुंसक होय अथवा हाथकी कहींतरे चोटलागिवासूं लिंगकी नसमारि जाय तीसूं नपुंसक होय घणा ब्रह्मचर्य रहवासूं नपुंसक होय इनैं आदिलेर औरभी कारणछे यांकारणांसूं कहींतरे लिंगकीनस टूटे सो असाध्य जाणिजे. अथ नपुंसकपणाका दूरिहोवाका जतनलि० मधुरवस्तुनैं आदिलेर नानाप्रकारका मनोहर अतिस्वाद इसा जो भोजन त्यांकरि नपुंसकपणो जाय २ अथवा महासुंदर जोस्त्री तींकीवाणि कानांनैं सुंदरलागे तींकरि नपुंसकपणा जाय ३ अथवा तांबूल सुंदर आसवको पीवो उपवन पुष्पादिकी औषधि दूध मिश्रीका संजोगकी मृगांक चंद्रोदयनैं आदिलेर सातों धात दधि सिपरणि उडद येसर्ववस्त नपुंसयपणांनैं दूरिकरेछे अथवा अमरसनैं आदिलेर भोजन भीमसेनी कपूर कस्तूरीकासंजोगकी पानकीवीडी इनैं आदिलेर औरभीवस्त तीसूं नपुंसकपणो जाय. ४ अथ गोक्षुरादिचूर्णलिख्यते गोषरू तालमषणा आसगंध सतावरी सुपेदमूसली कौंचिकाबीज महलोठी षरेटीकाबीज गंगेरणी कीछालि येसर्व बराबरिले त्यांनैं मिहीवांटि इसैंमिश्री अनुमानमाफिक मिलाय औटाया दूधकैसाथि टंक ५ रातिनैं रोजीनालै अर पथ्यरहतो नपुंसकपणो जाय. ५ अथ सुपारीपाकलि० चीकणी सुपारीसेर ८॥ तीनैं दिन ८ जलमैंभिजावै पाछै यैने सिद्धकरिर सु

[illegible]

कायलै पाछै वैंको चूर्णकरै अर वस्त्रसूं छाणिले पाछै वेवरावरि घृ तसूं मकरोय अर अठगुणां दूधमें वेको परोमावोकरै पाछै अठगु णी मिश्रीकी चासणीकरै तींमें यो सुपारीको मावोनाषे अर येऔ पदि ईमें नाषे सोलिषूंछूं इलायची परेटी गंगेरणीकीछालि पीपलि जायफल लवंग जायपत्री पत्रज सूंठि सतावरी मुसलि कौंछिका वीज विदारीकंद गोषरू दाष सालिममिश्री सिंघाडा जीरो छड वं सलोचन आसगंध केंसरी कस्तूरी कपूर चंदन भीमसेनीकपूरअ गर येसारी ओपदि टकाटका भरिले पाछै वैद्य आपकी वुद्धिमा फिकलै और मृंगाक चंद्रोदय वंगसार अभ्रक सुगंधद्रव्य मेवो आपकी वुद्धिमाफिक ईमें नाषे पाछै टका १ प्रमाण ईकोमोदक करै मोदक १ रोजीनाषाय अर पथ्यरहै तो निश्चयही नपूंसकप णोजाय इति रतिवल्लभपाकः अथ आम्रपाकलिष्यते पकामी ठा आमकोरस सेर १६ सोलाले तींमें मिश्रीसेर ४ नाषे अर ईमें घृतसेर १ एकनाषे अर ईनें माटीका वासणमें पकाय गाढोकरि ईनें चासणीसिरीसो करै चांदीकोवासण मिलैतो ईमें करै अर ईमें येऔपधि नाषे सूंठि टका ८ भर मिराचि टका ८ भर पीपलिटका २ भर धणो टका २ भर जीरो टका १ भर चित्रक टका १ भर पत्रज टका १ भर दालचिनी टका १ भर नागकेंसरि टका १ भर केंसरि टका १ भर इलायची टका १ भर लवंग टका १ भर जा यफल टका १ भर कस्तुरी मासा ४ भीमसेनी कपूर टंक १ भर सहत सेर १ पाछै यासर्वको एकजीवकरि अमृतवानमें भरिराषे पाछै ईनें टका १ भररोजीना षायतो नपुंसकपणो दूरिहोय अर

* आमपाक आममिठा रसदार रेषा वगरका जीमें गुठली छोटीहोयछे. अर जीमें रेषा होयनहीं कलमी आम तथा पायरी आम तथा हापुस आम. इसीजातमें होयछे. निकराम नाहा. ऊंअनवान ताजा. जाथें ऊपरलिखी औषधी तथा क्रियायुक्त करेतो गुणघणों होयछे. परंतु क्रियासिद्ध औषधीछे.

कडवीवस्त घटाई गरमलूण यांका घणाषावासूं वीर्यको नासहोय अथवा भयसूं अथवा सोकसूं क्रोधनें आदिलेर तींका करिवासूं वीर्यको नासहोय तीसूं नपुंसक होय अथवा पुत्र क्रोधननें आदिलेर तींकानाससूं नपुंसकहोय अथवा रोगांका आवासूं नपुंसक होय अथवा अतिमैथुनकाकरिवासूं वीर्यको नासहोय तिसूं नपुंसक होय अथवा हाथकी कहींतरै चोटलागिवासूं लिंगकी नसमारि जाय तीसूं नपुंसक होय घणा ब्रह्मचर्य रहवासूं नपुंसक होय ईनें आदिलेर औरभी कारणछे यांकारणांसूं कहींतरै लिंगकीनस टूटै सो असाध्य जाणिजे. अथ नपुंसकपणाका दूरिहोवाका जतनलि० मधुरवस्तुनें आदिलेर नानाप्रकारका मनोहर अतिस्वाद इसा जो भोजन त्यांकरि नपुंसकपणो जाय २ अथवा महासुंदर जोस्त्री तींकीवाणि कानांनें सुंदरलागै तींकरि नपुंसकपणो जाय ३ अथवा तांबूल सुंदर आसवको पीवो उपवन पुष्टाईकी ओषधि दूध मिश्रीका संजोगकी मृगांक चंद्रोदयनें आदिलेर सातों धात दधि सिपरणि उडद येसर्ववस्त नपुंसयपणांनें दूरिकरेछे अथवा अमरसनें आदिलेर भोजन भीमसेनी कपूर कस्तुरीकासंजोगकी पानकीवीडी ईनें आदिलेर औरभीवस्त तींसूं नपुंसकपणो जाय. ४ अथ गोक्षुरादिचूर्णलिष्यते गोषरू तालमषणा आसगंध सतावरी सुपेदमूसली कौंचिकाबीज महलौठी पैरेटीकाबीज गंगेरणी कीछालि येसर्व बराबरिले त्यांनें मिहीवांटि ईमेंमिश्री अनुमानमाफिक मिलाय औटाया दूधकैसाथि टंक ५ रातिनें रोजीनाले अर पथ्यरहैतो नपुंसकपणो जाय. ५ अथ सुपारीपाकलि० दीषणी सुपारीसेर ऽ॥. तीनें दिन ४ जलमेंभिजोवै पाछै येनें मिहीकतरि सु

न. टी. वाजीकरण अधिकार लिख्योछे. जीमेंयोभेदछे. ज्यानें भोगमैथुनकी इच्छाकी चलीगईछे. ज्यानेंतो कोईरीतसूं या उपचारांकी गरजनहींछे. अर दूसरीतरहका पतला सूं नपुंसकहोय गयाछे. ज्यानें तो रूमारकरणाही पड़सी.

कायले पाछै वेंको चूर्णकरै अर वस्त्रसूं छाणिले पाछै वेवराबरि घृ
तसूं मकरोय अर अठगुणां दूधमें वेको परोमावोकरै पाछै अठगु
णी मिश्रीकी चासणीकरै तीमै यो सुपारीको मावोनापै अर येऔ
षदि ईमें नापै सोलिषूंलूं इलायची परैटी गंगेरणीकीछालि पीपलि
जायफल लवंग जायपत्री पत्रज सूंठि सतावरी मुसलि कौंछिका
बीज विदारीकंद गोपरू दाष सालिममिश्री सिंघाडा जीरो छड वं
सलोचन आसगंध केंसरी कस्तूरी कपूर चंदन भीमसेनीकपूरअ
गर येसारी ओषदि टकाटका भारिले पाछै वैद्य आपकी बुद्धिमा
फिकलै और मृंगाक चंद्रोदय वंगसार अभ्रक सुगंधद्रव्य मेवो
आपकी बुद्धिमाफिक ईमें नापै पाछै टका १ प्रमाण ईकोमोदक
करै मोदक १ रोजीनापाय अर पथ्यरहै तौ निश्चयही नपुंसकप
णोजाय इति रतिवल्लभपाकः अथ आम्रपाकलिष्यते पक्कामी
ठा आमकोरस सेर १६ सोलाले तीमै मिश्रीसेर ४ नापै अर ईमें
घृतसेर १ एकनापै अर ईनें माटीका वासणमें पकाय गाढोकरि
ईनै चासणीसिरीसो करै चांदीकोवासण मिलैतौ ईमें करै अर ईमें
येओपधि नापै सूंठि टका ८ भर मिरचि टका ८ भर पीपलिटका
२ भर धणो टका २ भर जीरो टका १ भर चित्रक टका १ भर
पत्रज टका १ भर दालचिनी टका १ भर नागकेंसरि टका १ भर
केंसरि टका १ भर इलायची टका १ भर लवंग टका १ भर जा
यफल टका १ भर कस्तुरी मासा ४ भीमसेनी कपूर टंक १ भर
सहत सेर १ पाछै यासर्वको एकजीवकरि अमृतवानमें भरिरापै
पाछै ईनें टका १ भररोजीना पायतौ नपुंसकपणो दूरिहोय अर

* આમ્રપાક આમમિઠા રસદારજેની છાલપાતલી જેમેં ગુટલી છોટીહોયછે. અર જીમેં રેસા હોયનહીં કલમી આમ તથા પાયરી આમ તથા હાપુસ આમ. ઈસીજાતમેં હોયછે. [illegible] તાજા, [illegible] તાજા. જેમેં ઉપરલિખી ઓષધી તથા ક્રિયાયુક્ત કરેતો ગુણવંત હોયછે. પરંતુ ક્રિયાસિદ્ધ ઓષધીછે.

श्रीसूं संगघणो करावे अर संग्रहणीनें क्षयीनें सासकारोगनें अरु चिनें आम्लपित्तनें रक्तपित्तनें पांडूरोगनें यो आम्रपाक इतनारो गानें दूरिकरेछे. इति आम्रपाकः अथ हतरसउगैरे कहींतरे नपुंस क होयगयो होय तींको जतनलिष्यते, देसी गोपरूको चूर्णटंक५ सहत टंक ५ मिलाय वकरीका दूधकैसाथि महिना २ लेतो नपूं सकपणो दूरिहोय, अथ चंदनादितैललिष्यतेरक्तचंदन पतंग अग र देवदारु चीढ पदमाप कपूर कस्तुरी केंसरि जायफल जायपत्री लवंग इलायची वडी इलायची कंकोलतज दालचीनी पत्रज नाग केंसरि नेत्रवालो पस छड दारुहलद मूर्वा कचूर सिलाजीत नाग रमोथो संभालु फूल प्रियंगु लोहवान गूगल पस नपल्याराल धाव ड्याकाफूल पीपलामूल मजीठ तगर मोम येसारी औषधि चारि चारि मासाले अर यांको मधुरी आंचसूं काढाकरैपाछे ईकोचौथो हिसो राषे पाछे ईमें मीठोतेल सेर १ नाषे फेरिमधुरी आंचसूं प कावे पाछे काढाको रस बलिजाय तेलमात्र आयरहे तदि छाणि पात्रमें घालि राषे पाछे ईको शरीरके मर्दन करेतो बुढो आदमी मोट्यार होय और सरीरका सर्वरोग जाय इति चंदनादितैलम्.

अथ वानरीगुटिका लि० कौंछिकावीज सेर १ यांनें सेर १ गऊ का दूधमें सनेसने पकावे पाछे यांकाछोंतरा दूरिकरे पाछेयांको मिहीचूर्णकरे पाछे दूधमें औसणि छोटा छोटा ईकावडाकरे गऊ का घृतमें तलै पाछे यांसूं दूणी मिश्रीकी चासणीकरि यांवडाके गलेफदे पाछे यांवडानें सहतमें नाषे पाछे यांनें रोजीना टंक १० महिनाद्वोय पायतो नपूंसकपणो जाय ओकने पुरुष मोटो खलि तहोय वीर्यमोटो पडे इति वानरीगुटिका अथ नपुंसकपणानें दूरि

न. टी. रोगें सांग पुरुपछे. इयांकै हीनता कोरोग अनेकतरैसूं प्रगट होवछे. ओमें साध्य कष्टसाध्य. असाध्य होय जायछे. विना उपचारसौं साध्यको कष्टसाध्य होय. फेरौं विना उपचारसौं कष्टसाध्यको असाध्यहोय.

करिवाको जतन लिष्यते. अकलकरो सूंठि लवंग केंसरी पीपालि जायफल जायपत्री सुपेद चंदन येसारी ओषदि अधेला अधेला भरिले अर अफीम टका १ भरले पाछे यांसारांनें सहतसूं मिहीं वांटि उडदप्रमाण गोलीकरे गोली १ रात्रिनें रोजीनापाय ऊपर सूं दूध पीवेतौ वीर्य मोडो पडे अर नपुंसकपणो जाय येसर्व जतन भावप्रकासमें लिष्याछे. अथवा तिलांनें कूकडाका अंडाका पाणीसूं भिजोवे वार ११ पाछे वांतिलांनें टंक ५ रोजीनापाय ऊपर दूध पीवे तौ नपूंसकपणो जाय अर घणी स्त्रियासूं संभोग करे अथवा विदारी कंदको चूर्णकरे अर वे चूर्णके आला विदारी कंदका रसका पुट २१ देर सुकावतौ जाय पाछे वे विदारी कंदमें मिश्री सहत अर घृतमिलाय रोजीना टंक २ पाय ऊपर दूध पीवे तौ वूढोभी मनुष्य जवान होयजाय योवृंदमें लिष्योछे अथवा आंवलांको चूर्णकरे पाछे ईचूर्णके आला आंवलाकारसकी पुठ २१ देर सुकायले पाछे ईचूर्णनें मिश्री सहत घृत रोजीना टंक २ पाय तौ वुढोभी मोट्यार होय चक्रदत्तमेंछे. अथ मदनमंजरी गुटिकालि० सूंठि मिरचि पीपलि यांतीन्यांका चारी भागकरे पाराको एकभाग अर वंगका दोय भागकरे यांसारांकी वरावरि सतावरी तज पत्रज नागकेंसरी इलायची जायफल मिरचि पीपलि सूंठि लवंग जायपत्री यासारांका दोय भागपाछे यां सारांनें मिहींवांटि मिश्री सहतघृतमें गोली टंक ५ के अनुमानकरे पाछे गोली १ रोजीनापाय उपरसूं दूध पीवेतौ वुढोभी जवान होय इतिमदनमंजरी गुटिका० येजोगतरंगिणीमेंछे अथवा अफीम पारो येवरावरिले पाछे यांदोन्यांनें धत्तुराका वीजांका तेलमें मर्दन करे दिन

न. टी. फक्तापथ्यमेंभी प्रबल उपचार नहीं होयतो मरणांत प्राप्तिहोय जीसौं उपचार करणो योग्यछे. पण जोरोगवो अल्पछे ओर जीके मोटामोटा उपचार होय तोभी आराम नहींहोय तो वेरोगनें दुःसंनकरुनजाणनों.

३ पाछे ईमें मिश्री अर भांगे बराबरि मिलाय रतिएकपाव ऊप रि दूध पीवैतौ वीर्य पडैनहीं अर नपुंसकपणौ ईसूं जाय येसार संग्रहणीमेंछे, अथवा जायफल अकलकरो लवंग सूंठि केसरी पी पलि कस्तुरी भीमसेनी कपूर अभ्रक यांसारांकी बराबरि अफीम पाछे यांसारांनें मिहीवांटि मूगप्रमाण गोलिकरे पाछे गोलि १ तथा २ लेतौ वीर्य पडैनहीं अथ नागार्जूनी गुटिका लिंगलेपकी लि० चीणीयोंकपूर सुहागो पारोयेबराबरिले यामें पाछे अगस्थ्या कोरस सहत यामें दिन १ घरलकरै पाछे लिंगकैलेपकरे पहरएक रापे पाछे लिंगनें धोयनापे पाछे स्त्रीसूं संगकरैतौ वीर्य मोडो पडै अथ पट्टी लिंगलेपकी लि० सुपेद कंडीरकी जडकीवकल अकल करौ अजमोद कालाधत्तुराकाबीज जायफल यांसारांनें जलसूं मिहीवांटि मिरचि प्रमाण गोलीबांधे पाछेगोली १ मनुष्यकामूतसूं घसि लिंगकेलेपकरैतौ नपुंसकपणौ जाय वीर्य मोडोपडै अथवासू रकोघ्रत सहत यांदोन्यांनें परलमें घसि लिंगलेपकरे महिना १ तांईतौ लिंगकी सारी कसर मिटे अथवा सुपेद कंडीरकी जडकी छालि तीनें दूधमेंजमाय घ्रत काढे पाछे ईघ्रतमें मोहरो जायफल अफीम जमालगोटो अनुमान माफिक मिलाय लिंगलेप दिन ७ करै ऊपरपान वांधे ब्रह्मचर्यरहैतौ नपुंसकपणौ जाय इतिश्री वाजीकरणाधिकार नपुंसकपणाका दूरिकरिवाका संपूर्ण. इतिश्री मन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे नपुंसकपणाकादूरिकरिवाका लक्षण भेद संयुक्त जतन निरूपणंनामद्वाविंशतितमस्तरंगः संपूर्णः २२
२३ अथ शरीरकीपुष्टाईका जतन वूढापणानें दूरिकरिवाकासातुधा

न. टी. जो पूर्वजन्मकृतपापथी रोगकी संप्राप्तिछे त्यानें कर्मविपाकादिकमंथार्में प्रायश्चित्त त्यांसूं निवृत्तकरणोयोग्यछे. अर दान तप तीर्थ हरिस्मरण करणो योग्यछे. का- रोगीकी संज्ञी रोगछी होगछे.

तसात उपधात अर चंद्रोदयनैं आदिलर रस त्यांकीक्रिया अर वा
कापावाकीविधिलि०सोनो १ रूपो २ तांबो ३ पीतल ४ सीसो५रांग
६ लोह ७ अथ मृगांककी विधिलि० सोनाका पतलाउरक करायता
ता करै तेलमें कांजीमैं छाछिमैं त्रिफलामैं गोमूतमैं कुलत्थका का
ढामैं वारतीनतीन बुझावै पाछै सोनासूं दूणो पारोले अर सोना
का उरकानैं घटाईके साथि षरलकरै पाछै वैंको गोलोकरे पाछै
वांदोन्याकी वरावरि सोधी गंधक आंवलासार वे गोलाकै नीचे ऊ
परि देर सरावा संपुटमैं मेलि वैंकै कपडमिट्टीदे गजपूटमैं फूकिदे
ईसीतरै ईंकै पुट ३ दे तादियो मृगांकचोपोहोय १ अथवा सोनाका
चोपा उरकले तींको सोलवो हिसो ईंमे सीसोनापै या दोन्यांनैं प
टाईसूं षरलकरै पाछै ईंकै नीचे ऊपरि सोधीगंधक यांकी वरावरि
ले अर सरावामैं मेलि वैंकै कपडमिट्टिदेर गजपूटमैं फूकिदे इसीत
रै पुट ७ देतौ मृगांक चोपो वणै. २ अथवा सोनाका उरक मंगा
य वांकी वरावरि वामे पारो चरावै परलमैं पटाईसूं पाछै वांकै कच
नारका रसकोपुट १ दे पाछै वैंकै अग्निझालकारसकी पुट ३ दे
पाछै वैंकै कलहारी जडीका रसको पुट १ दे पाछै वानैं सोनाका उ
रकसूं चौथोहिसो वामैं मोतीनापै अर परलकरै पाछै वांमैं वासवै
की वरावरि सोधीगंधक नापै पाछै दिन २ परलकरै पाछै वाको गो
लोकरि सरावासंपुटमैं मेलिवैंकै कपडमिट्टि करै गजपुटमैं फूंकिदे
पाछै वैनैं स्वांगसीतल हुवांकाढैतो मृगांकचोपोवणै. ३ अथ मृगां
क पावाकीविधिलि० रति १ मृगांकले तींमें सहत टंक २ मिलाय
तींमें पीपलि १ मिलाय पायतो सासनै पासनैं क्षयिनैं अरुचिनैं

* मृगांकनामश्रेष्ठ औषधीछे. परंतु घणा ठगलोक कांसा मृगांक बणावेछे. छांलिपूंछूं गंधक आंवलासार नोसादर पारो रूपीर समभाग परलकर पहर ४ कांचकी सीसीकै कपड. माटीकर जींमें भरे आंच ऊपरधरे सीतळहुवा काढैतो सुवर्णका रंगसरीसो हुवे. मृगांक कानानमूं वेचकर ठिगेछे. यासें याननेंतो राखणी.

आदिलेर सर्वरोगांनैं दूरि करै महिना दोय खायतौ शरीरनैं पुष्ट करै पथ्यरहै षटाई उगैरे षायनहीं. ४

इतिमृगांकवि० अथ रूपरसकी. विधी लिष्यते. चांदीका उरक भाग ३ ले अर हरतालका पत्र येक १ भागले पाछै यां दोन्यांनैं पटाईसूं षरल करै पाछै याको गोलोकरि सरावा संपुटमैं मेलि गजपुटमैं फूंकिदे इसीतरै पुट १४ देतौ रूपरस निप टचोषोवणै पाछै ईनैं रती १ षायतौ घणो गुणकरै अथवा चांदी कापत्राकैनीचै उपरिरूपमष्षी बराबरिकीदे अरसरावासंपुटमैं मेलि गजपुटमैं फूंकी देतौ रूपरस चोषो होय. पाछै ईनैं रोजीना रती१ महिनो येक षायतौ घणोगुणकरै १ इति रूपरसविधिः अथ तामे सुरकी विधि लिष्यते. चोषातांबाकापत्रा जाडाकराय तेलमैं छाछि मैं त्रिफलाकारसमैं वारसात सात सोधिले पाछै वापत्रावराबरि रू पमष्षीवांटि वाकै नीचै उपरि देसरावा संपूटमैं मेलि गजपुटमैं फूं किदेतौ तामेश्वर चोषोवणै पाछै ईनैं रति १ रोजीना महिनो १ षायतौ सासषासनैं आदिलेर साररोगजाय अर घणोगुणकरै इति तामेसुरकी विधि. अथ नागेसुरकी विधि लिष्यते सीसानैं गालि गालि तेलमैं छाछिमैं गोमूतमैं कांजीमैंत्रिफलाका पाणीमैं आकका दूधमैं बुझावैवार सातसात पाछै कडछलामैं घालि चूल्हे चढायनीचै अग्निवाले पाछै सीसा उपरि पीपलकाछोडाकोचूर्ण अर आमलीका छयौडांकोचूर्ण सीसांसूं चौथाईलेवै सीसा उपरि थोडोथोडो नापतौ जाय अर लोहकी कडछोका पींदासूंवैनैं रगडतौ जाय दिन १ ताई निरंतर पाछै ईनैं जंभीरीसूं ओसाणि गजपुटमैं फूंकिदे पाछै ईसीतरै जंभीरीका पुट १० दे पाछै नागरवै

न. टी. धातुमारणथी जीर्ण स्वर्ण, रूपो, ताम्र इत्यादिकछे. क्रिया विधिपूर्वक थयीछे. परंतु स्वाभाविक नूतनी शक्ति वेगथी शरीरना कारणथी कांधीण मयूर रहमाव थी. सिद्धी शरीरने करेछे.

लका पानका रसकी पुट १८ दे पाछे सीसा बराबरिमेणसीलले तीनैं कांजीसूं षरल करै पाछै टिकडी बांधिसरावामैं मेलिगजपुटमें फूंकिदे पाछे स्वांग सीतल हुवां काढे इसीतरै पुट ६० देतौ नागेश्वर चोषो होय गुण घणों करै सर्व रोगांनैं दूरिकरै पावाकी मात्रारति १ तथा १॥ अथ दूसरी विधि लि० सीसानैं सोधिकडछलामैं चढावै नीचै अग्निवालै केवडाका घोटासूं रगडतो जाय निरंतर दिन १ वोभस्म होय लाल मात्रारति १ रोजीना दिन २१ पायतौ गुणघणोंकरै इति नागेश्वर विधि. अथ वंगेसूरकी विधि लिष्यते रांगनैं गालि गालि तेलमैं छाछिमैं गोमूतमैं कांजिमैं त्रिफलाका पाणीमैं वार ७ सात वुझावै अर आकका दूधमैं वारसात वुझावै पाछै कडछलामैं घालिचूल्हे चढावे रांगसूं चोथाई पीपलका छौडा चौथाई आमलीका छौडा त्यांनैं मिहीवांटि रांगऊपरि नापतौ जाय अर कडछलीका पींदासूं रगडतो जाय पहर दोतांई तदि ओरांग भस्महोय पाछे रांग बराबरि हरताललेषटाईसूं परलकरै गजपुटमैं फुंकिदे ईसीतरै पुट १० दे तदि वंगेसुर शुद्धहोय गुणघणोंकरै मात्रारती १ अथ रांग ऽ। ले तींबराबरि पारोले त्यांको एकजीवकरि पत्रकरै पछे छाणो १ वडोतींमैं कसेलाकोचूर सेर १ विछाय तींउपरि रांगका टूकडामेलै फेरिऊपरि कसेलाको चूरमेलि आसपास छाणादे विना पवनकी जायगांमें फूकिदे वेरांगका फूल्याहोय जाय चोघणो गुणकरै इति वंगेसुरविधिः अथ सारकीविधिलि० गजवेलिकोचूर कराय तीनैं तेलमैं छाछिमैं गोमूतमैं कांजीमैं वार सात ७ बुझावै पाछै आकका दूधकी पुट सातदे अर थोहरिका दूधकी पुट ७ दे त्रिफलाका रसकी पुट ७

न. टी. ज्यानै अनुपानसौं सुधारणा चाहिजे जेथे स्वर्णसौं विषविकार दुर्दोष तो हरडे मिश्री समभागदिन ३ तीनसेवन करतो आराम होय. रूपाका विषविकारपर सहदसौंची मकर समभाग दिनतीन ३ सेवनकरतौं आरामहोय.

दे दाडूंका पानाका रसकीपुट ७ दे इसीतरै पुट देदे भस्मकरै सि लाऊपरि वांटै सोजलऊपरि तीरै जठातांई भस्मकरैतो गुणघणो करै १ अथवा गजवेलिको चूरणकरै तींकै नींबुकारसकी अर नौ सादरकी पुट २१ दे गजपुटमैं फूंकतोजाय अर वांटितो जावतो सार चोषो होय. अर गुणघणोकरै मात्रारती १ रोजीना पावतो सर्वरोगानैं दूरिकरै इतिसारकीविधि. अथ सातउपधातूका मारवा कीविधि लिष्यते सौनमष्पी अर रूपमषी १ अभ्रक २ मैणसिल ३ हरताल ४ पारो ५ पपर्‍यो ६ सुरमो ७ अथ सौनमष्पींको सोधनलिष्यते सौनमष्पीका भाग ३ सींधालूणाको भाग १ यांदो न्यानैं लोहका कडछलामैंघालि विजोराकारसमैं अर जंभीरीकार समैं पकावै जठातांई लोहको पात्र लालहोजाय तदि सौनमष्पी शुद्धहोय १ अथ सौनमष्पींको मारण लि० सौनमष्पीनैं कुलथ का काढामैं पीसि सरावा संपुटमैं मेलिगजपुटमैं फुंकिदे अथवा तै लमैंवांटि गजपुटदे अथवा छाछिमैंवांटि गजपूटदे अथवा बकरी का दूधमैंवांटि गजपूटदेतो सौनमष्पीमरै ईंकीमात्रारति १ पायतो गुणकरै. १ अथ अभ्रकशोधन मारणवि० काला भोडलनैं लै अग्निमैं तपाय दूधमैं वुझावै अथवा चौलाईका रसमैं वुझावै अथवा पटाईमैं वुझावै तदि अभ्रक शुद्धहोय पाछै अभ्रकका जुदापत्रक रीवांनैं कूटि अर मीहीकरि सुकायदे पाछै वानै कामलामैंघालि अर वामैं सालिघालि अर अभ्रकनैं सालिसुद्धां मसलि मसलि कामलामाहिसूं पाणीकरिचारै काढे जुदावासणमैं तदि ओधान्या अभ्रक होय पाछै ईअभ्रकनैं आकका दूधमैं परलकरै ईंकीटिकडी वांधे पाछै सुकाय आककापानांमैं लपेटै ईंकै कपडमिट्टीदे बिनास

न. टी. ताम्रपिपीनिकारसों [illegible] सनतादूक नामसानक अर [illegible] भाग जलमैंपीसकर [illegible] टकाईका [illegible] दिन २ तीनतो [illegible] कर्यो [illegible] लिपनैं [illegible] अनुपानभैछे.

रावै गजपुटमें फूंकिदे ईसीतरै सातपुटदे ईसीतरै थोहरीका दूधकी पुट ७ दे ईसीतरै कवारका पाठाकी पुट ७ दे ईसीतरै चौलाईकी रसकी अथवा नागरमोथाका काढाकी अथवा कांजीकी अथवा चित्रकका काढाकी अथवा जंभीरीकी अथवा त्रिफलांकी अथवा गोमूतकी यांकी पुट सात ७ ईसीतरै दे पाछे वडकी जटाका काढाकी अर मजीठका काढाकी पुटसात सात देतो अभ्रक निपट चोपोवणे अर यो अभ्रक रोजीना रति १ षाय महिना २ दोयतांईतोप्रमेह नें आदिलेर सर्वरोगजाय अर शरीरनें घणों पुष्टकरै अर नपुंसकपणों दूरिहोय इति अभ्रक विधिः

अथ अभ्रककी दूसरीविधि लिष्यते सुपेद भोडल ले तींवरावरि गुडले तींगुडनें पाणीमें घोलै जाडो पाछे भोडलका पत्रांकैजाडोजाडो लेपकरै अर वापत्रांऊपरि सोरो भूरकावतो जाय सोरो भोडलसूं आधोले अर भोडलकी तह करतोजाय पाछे ईभोडलकी तहनें छाणामें फूंकिदे ओ भोडलपिलि जाय निश्चंद होय योभी गुण करैछे. मात्रा रतीयेक १ की इतिअभ्रकविधिः अथ हरताल को सोधन मारणलि० पीलि हरतालका पत्रकरि अर वेंकी पोटलीकरि हांडीमें कांजीघालि डोला जंत्रसूं पहर १ तांई पकायजें पाछें पेठाको पाणी हांडीमें घालितींमें डोला जंत्रसूं पहर १ पकायजें पाछें चूनाकी कलिकापाणीमें पोटलीकरि डोलाजंत्रसूंपहर ४ च्यार पकाजे ईसीतरै हरतालनें पचायां हरताल शुद्धहोय अथ हरतालको मारणलिष्यते ईसोधी हरतालनें परलमें मिहीवांटि दूधीकारसमेंदिन २ दोय परलकरै पाछे परेटीकारसमेंदिन २ दोय

* हरताल अर ओरबी सर्वप्रकारकी धातु तथा रसायण तथा भस्म मोटामोटा रसादिक छै. क्रियासिद्धछै कोइविद्वान् वैद्यकनें सीपकरकरणुं योग्यछै. अर ग्रंथमें लिपीछै. मुंगलपछै. परंतु इसक्रियामें फरक होयछै. वैद्यपरंपरावालोवालने कोई कलाकर इस क्रियाकरणी.

परलकरै पाछै ईंको गोलोकारि छायामैं सुकाय पाछै छीलाकी राप मैं हांडीनैं दाविदावि भरै तींकैवीचि ईंहरतालका गोलानैं मेलै पाछै ईंहांडीनैं चुल्हैचढाय नीचै अग्निवालै क्रमसूं मंदमन्द अर गाढी अग्निदे दिन ३ तांई निरंतर देवैंको धूवोनीसारि वादेनहीं अर धूवो नीसरैतौ धूवानैं छीलकी रापसूं दाबतोजाय पाछै स्वांगसी तल होय जदि ईंहरतालनैं हांडीमाहिसूं काढे तदिहरताल सिद्धि होय सुपेद होय पावामैं मात्रारती १ पायतौ सर्व रोगमात्रनैं या दूरिकरैछे अर भूप घणीकरैछे. इति हरताल मारणविधिः अथवा प्रथम हरतालनैं इहीविधिसूं सोधिले पाछै ईंहरतालनैं कवारका पाठाकारसमैं दिन ३ परलकरे पाछै ईंकी टिकडीकरै छायामैं सुकावै पाछै छिलाकी रापिनैं हांडीमैं दावि दावि भरि तींके वीचि ईंहरतालकी टिकडीनैं मेलै पाछै चूल्हैचढावे पाछै वेकैनीचै अग्निवालै पहर ४ कीपाछै ईंनैं स्वांगसीतल हुवां काढे अर वातोल उतरै निर्धूम होय ईंनै पानमै रति १ लेतौ याकोढनैं दूरिकरै पावामैं मोठचणाकी रोटी अलुणी पायतौ कोढजाय इति हरताल मारणविधिः अथ चंद्रोदय रसकीविधि लिष्यते सोनाका चोपा उरकले टका १ भर अर सोध्यो पारोटका ८ भरले अथवा हिंगलूको काढ्योपारोलेटका ८ भर अर सोधीगंधक आंवलासार टका १६ भरलै पाछै तीन्यांनै परलमैं घालि नांदणवणिका फूलांकारससूं दिन ३ परलकरै पाछै कवारका पाठाका रससूं दिन ३ परलकरै पाछै ईंनैं सुकाय काचकी आतसीसीसीकै कपडमठी ७ दे पाछै ईंन सुकाय ईंसीसीमैं येसारी ओपादि सोनाकाउरकसमेत भरै पाछै सीसीको मूंढो मूंदिदे अर वालुकाजंत्रमै चढाय चूल्हैनैं

भ. टी. चंद्रोदयरसलिष्योछे यात्रविद्दिनाछे. क्रियागुह्य दुर्गको मनाडीकवरातीं मछे आमैं सर्वगुणयुक्त प्रसिद्धछे परंतु मांचनी सीधी मानूलादणी कठिनछे. वांचनी आदि रस भरमादनमोतन दानपुन्यनौं येरुा प्रगट होवछे रसकियाछे.

मेल्है पाछै नीचै अग्निवालै प्रथम मंद मन्द अर गाढी ईसीतरै बालैप्रहर ३२ बत्तीसकी आंचदे पाछै स्वांगसीतल हुवा ईवालुका जंत्रसूं ई सीसीनैं काढै पाछै ई सीसीमांहीसूं चंद्रोदयनैं काढै डाबामैं भरिराषै ईको रंग हींगलू सिरीसो लालहोय पाछै षावामैं मात्रा र ति १ अर ईमैं जायफल भीमसेनीकपूर समदसोस लवंग कस्तुरी ये सारा मासा ४ मिलाय रोजीना षायतो गुण घणोंकरै उपरसूं औटायो दूध मिश्रीका संजोगको रुचि माफिक रातिनैं पीवै अर मांस उगैरै पुष्टाईकी वस्त षाय अर षटाई षाय नंहीं तो घणी स्त्रि यांसूं संभोग करै अर नपूंसकपणानैं इह चंद्रोदय दूरिकरैछै. वीर्य कौ बंधेजकरैछै इति चंद्रोदय करिवाकी अर षावाकी विधि स० अथ रससिंदूरकी विधि लिष्यते ई नैं हरगौरी रस कहैछै. प्रथम पारानै सोधै सो लि० पारानैं षरलमैं घालि हलद अर ईंट अर धुमसो अर नींबूकोरस ईसूं दिन ३ षरलकरै तदि ईकी सातुकां चली दूरिहोय पाछै त्रिफला कांजी चित्रक कवारको पाठो सूंठि मिरचि पीपलि यांमैं दिन ३ षरलकरै पाछै लसणका रसमैं षरल करै दिन ३ पाछै जंभीरीका रससैं दिन ३ षरलकरै पाछै ईनैं हां डीमैं मेलि दूसरी हांडीको मूंडो जोडै पाछै मूंढाकै पामदै चूल्है चढावै अर ऊपरली हांडीकै पींदै आलोकपडो राषै नीचै अग्निवालै तदि ओपारो ऊपरली हांडीकै पींदै जाय लागै तदि पारानैं का ढिलै अथवा हिंगलूकोपारो इही विधिसूं काढिलै पाछै ईपारानैं वांझकंकोडकारसमैं षरलकरै पाछै हांडीमैं वांझकंकोडकोरस घा लि अर ईहांडि माहिला रसमैं येवस्त और घालै सरपाक्षीजडी अर जमीकंदकोरस अर भांगकोरस भांगरोलूण सींधोलूण

न. टी. हरगौरी रस नामछे जीनें रससिंदूर कहेछे. परंतु बनाऊ रससिंदूर तो जुदोछे. ईसीक्रियासौं सिद्धकरयो रस यथार्थ होयछे. गुणयुक्त होय अर बनाऊछे सोभी काकरंग कापदीसी सांथिरोयछे. घनाभजाण ईनें चंद्रोदयभी कहेछे.

अर कांजी ये सारीबराबर हांडीमें घाले पाछे इंमें डोलका जंत्रक
रि कपडामें पारो बांधि पहर ४ पकायले तदि इहपारो शुद्ध होय
इति पाराशुद्ध०अथवा १००० नींबूकारसमें सूंठिमिरची पी
पलि राई सांभरोलूण चित्रक हींग येसारी नींबूकारसमे नापि दिन
२१ ईंरसमें पारानें घरलकरै तदियो पारो शुद्धहोय. इति पाराशुद्ध.
पाछै यो सोध्यो पारो टंक ५ भरिले अर सोधी आंवलासार गंध
क टका ५ भरले अर दोय टंक नौसादरले टंक २ फिटकडीले
पाछै यांसारांनै दिन ३ घरल करै पाछै आतसी सीसीकें कपड
मिट्टी ७ दे अरसीसीमै ये औपदिभरै पाछै सीसीकै मूंढैपामदेर वा
लूकाजंत्रमैं सीसीमेलै पाछै ईनें भट्टी ऊपरी चढावे नीचै अमिवा
लै क्रमसूं मंदमध्य अर घणी ईसीतरै अग्निप्रहर ३२ कांदे पाछै
स्वांगसीतलहुवां वालूका जंत्रमैंसूं सीसीनैं काढे पाछै सीसीमाहिसूं
ईरस सिंदूरनैं काढिवांटि रति १ रोजीना पानकै साथिपाय अर
पथ्यरहैतो सर्व रोगनैं जुदा जुदा अनुपानसूं यो दूरिकरैछै अर
भूपलगावैछै. अर शरिरनैं पुष्टकरैछै.

इतिहरगौरी रस सिंदूरकी क्रिया० अथवा हिंगूलकों काढ्यों
पारो अथवा योही सोध्यो पारो अर सोध्यो आवलापार गंधक
यादोन्यांनैं बराबरिले अर यांनैं बडकी जटाकारसमैं दिन १ घरल
करै पाछै आतसीसीसोंके कपड मिट्टी देवैमैं येभरै पाछै ई सीसीकै
इटकी पामदे अर वालूका जंत्रमें सीसीमेलै पाछै वालुकाजंत्रनें भ
ट्टीपर चढाय क्रमसूं मंदमध्य अर तीक्ष्ण आचदे प्रहर २१ की पाछै
ईनें स्वांगसीतल हुवा काढें पाछै ईनें सीसीमांहिसूं काढें ईंको रंग
हिंगलु सिरीपोहोय योरति १ पानमें पायतो गुण घणो करै सर्व

न. टी. चंद्रोदयकी सीसीमें तीनवासकी मगट चंद्रोदय होयछे. जीसें सीसाकीमें आदो [illegible] होयछे. अर सीसीके कसमें पनको जमेछे. नीचेसोंत [illegible]छे. अर सीसीको [illegible] ऊंचो थरेछे. [illegible] ओरछे. [illegible] [illegible] गुजराती [illegible].

रोगांनैं दूरिकरै इतिरससिंदुरकी क्रिया० २ अथ पारा मारवाकी विधि लि० पारानैं षरलमैं घालि गूलरीका दूधमैं पहर १ षरल करै पाछै ईंकी गोली वांधै पाछै गूलरीका दूधमैं चौषीहींग घसि ईं हिंगकीमूस २ वणावै पाछैं ईं पाराकी गोलीनैं मूसिमें मेलि दूसरी मूसिको मूहडो जोडी मूषके षामकरै पाछै ईंनै सुकाय सेर १ छाणाकी भोभरिमैं पकावै तदि ओपारो सुपेद पिलिजाय ईंकी भस्महोय याभस्म सर्व रोगमात्रनैं दूरि करैछै. इति पारा मारवाकी क्रिया० अथवा आंधी झाडांका वीजानैं मिहीवांटि यांकी मूसदोयकरै यामूसिमैं गुलरका दूधमें पारानैं परलकरै पाछै पाराकी गोलीवांधि यागोली मूसिमें मेलि अरपाराकी गोलीके नीचै ऊपरी दडघलका फुल वायविडंग पैर यांको चूरणकरि मेलै यांमूसिको गोलोकरै पाछै यागोलानै धवणिसू कोइलामें धवांवै पाछै ईंके कपडमिट्टीदे गजपुटमैं फूंकिदे तदि ईंकी भस्म होय तोल ऊतरे याभस्मसर्व रोगांनै दूरिकरै इति पाराभस्मकी क्रियास० अथ वसंतमालती रसकी क्रिया लिष्यते सोनाका उरक मासा १ मोतीमासा २ हिंगलूमासा ३ मिरचि मासा ४ सूरती पपस्यो मासा ८ रूपो मासा ८ पपस्यानै गोमूतमें प्रहर १६ डोलकाजंत्रसूं पकावै पाछै यां सारांनै परलमें घालि मापनसूं परलकरै योमापन यांमें सुसै इतनो घालि पाछै नींबूकारससूं परलकरै ओमापन सुपिजाय इतंनै परलकरै अर ईंकीचीकणास दूरकरै ईंप्रमाण चाहै जितोकरै पाछै ईंकी गोलीकरै पाछै ईंनै रती पीपलि २ सहतका संजोगसूं पायतौ रोजीना विषमज्वरनैं आदिलरै सर्वरोगानैं दुरिकरै अर

*वसंतमालतीरसछै मूतीनप्रकार तथा च्यार प्रकारकोछै जीमैं राजवसंतछै वसंतमालतीछै शुद्धवसंतछै, वसंतछै, कस्तुरी, अम्बरसहित राजवसंत होयछै कस्तुरी अम्बरबिना वसंतमालती होयछै जीमे कि० अ० सुवर्ण नही सो शुद्धवसंत होयछै जीमे की अ० दोनो सुवर्ण नही सो वसंत.

ईनें पुष्टाईका संजोगसूं षायतौ शरीरनें पुष्टकरें इति वसंतमाल तीरसः अथ हिंगलु मारवाकी विधि लिष्यते हिंगलु चोषो पईसा च्यारभरकी डलीले तीनें कडछलामें मेलै ईडली उपरि नांबूकोर ससेर २ सुसावै पाछै ई हिंगलू ऊपरि कांदाको रससेर ३ सुसावै पाछै ईडलीनें काढै औरुं कडछलामें मेलै ईडलीके नींचे उपरि सेर १ कांदाकी लुगदी देर पकायलै पाछै इंडलीनें जुदी काढै पाछै सेर १ कूचीलासेर १ राईसेर १ मालकांगणीसेर १ कांदासेर १ घृतसेर १ सहतयांसारांनें मिहींवांटियांको येक लुगदोकरे कडाहीमें मेलै अर लुगदाकै वीचिया हिंगलुकी डलीमेलै अर ईकै नीचे अग्निवालै पहर ८की तदि यो हिंगलुसिद्धि होय तोलपूरो ऊतरै रंगलालहोय ईकी षावाकी मात्रारति ऽ॥ आधकी अथवा रती १ पानमैं षायपथ्य रहैतो सर्व रोगांनें योदूरिकरै भूषघणी लगावै अर नपुंसकपणानें दूरिकरैछै इति हिंगलू करिवाकी विधि संपूर्णम्. इति पुष्टाईकी सातधात सातउपधातका मारवाकी विधि चद्रोदयनें आदिलेर रसांकी विधि संपूर्णम्. इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे पुष्टाईका सर्व जतन निरूपणन्नाम त्रयोविंशस्तरंगः संपूर्णम् २३

२४ अथ आसवांकाकरिवाकी विधि लिष्यते अथ दसमूलासव लिष्यते सालपर्णी पृष्ठीपर्णी दोन्यूंकटयाली गोषरू वील अरण्यू अरलू कुंभेर पाडल यांसारांको जडलीजे टका ५ पांच भर चित्रक टका २५ पोहकरमुलटका २० लोद टका २० गिलै टका २० आवला टका १६ घमासो टका १२ षैरसार टका १२

न०२४० मतंतर आसव लिष्याछे तीनेमें रचाकावेगमें गुण प्रतिदिनछे महाग्रंथ संयुक्त होयछे ईकी क्रियासेतूनें पाकवदोनांपांदियें [illegible] भाज्याकराईकाआसावकम गुर भर आदिसमद्रसरावे औषो गुणधीरानहोवछे [illegible]

विजैसार टका १२ हरडैकी छालि टका १२ कूठ टका १६ मजीठ टका २ देवदारु टका २ वायविडंग टका २ भाडंगी टका २ कैथ टका २ बहेडाकीछालि टका २ साठीकी जड टका २ पद्माष टका २ नागकेंसरी टका २ नागरमोथो टका २ चव्य टका २ छड टका २ फूलप्रियंगु टका २ गौरीसर टका २ कालोजीरो टका २ निसोत टका २ संभालू टका २ रास्ना टका २ पीपलि टका २ सुपारी टका २ कचूर टका २ हलद टका २ सौंफ टका २ इंद्रजव टका २ काकडासिंगी टका २ रिषभ टका २ मेद टका २ महामेद टका २ काकोली टका २ षीरकाकोली टका २ रिद्धि टका २ वृद्धि टका २ मिनकादाष टका ६० सहत टका ३२ धावड्याकाफूल सेर ५ बोरझडीसेर ५ बौलीकीछालि सेर ५ यांसारांनैं आठगुणां पाणीमैं औटाय जींको चौथो हिसोरापिजे अथवा यांसारांनैं जव कूटकरै बडामटकामैं घालिजे ईंकै अनुमान पाणीघालै अर इहाँ पाणीमैं चोपो गुडमण पक्को घालै अर पातकी जमींमैं योमटको गाडिदे मटकाको मुहुंडो ढांकि दिन २१ तांई पाछै ईको जावोऊठै तदिई जावानैं ओर मटकामैं घालै दारुकाढवाका जंत्रसूं ईन कलालकना ओर वासणमे ई आसवनै काढलीजै अर वेजंत्रके मुंडे येसुगंधिकी ओषदि नापिजे पोटली करि पस चंदनको चूर जायफल लवंग दालचिनी इलायची पत्रज केंसरि पीपलि येसारि ओषदि दोयदोय टका भरिलीजे अर कस्तुरी मासा ४ यांमें वांटि अर वेकाढिवाका वासणमे वेजंत्रके मूंढे पोटलीकरि मेलिजे इसी तरे योकरिलीजे पाछै ईनें पुराणोकरि टका २ भर अनुमानमाफिक मदात्ययका प्रकर्णमे ईंका पीवाकी विधिलिपीछै तिहमाफिक

न. टी. ऐसे ग्रंथांतरमें पंद्रहाव आसवलिख्योछे, जीमेंतरे किंचालुकछे. परंतु आसवारी विधिवाळणी आसव मुजबछे. परंतु वारुणांमें आसवांमें भेदछे. आसवाको पंतर नतराज सिद्धकरोछे. अर वारुनीको तो वासोजमें जीमें पणोअंतरछे अर प्राय नमावमें भेदछे.

पीजैतो क्षयीरोगनै छर्दिनै पांडुरोगनै संग्रहणीनै अरुचिनै सूलनै षासनै स्वासनै भगंदरनै वायका सारांरोगांनैकोढनैं ववासीरनैं प्रमेहनै मंदाग्निनै उदरकासारांरोगांनैं पथरीनैं मूत्रकृच्छ्रनैं यांसा रांरोगांनैं येदूरिकरैछै. अर भूषनैं वधावैछै. अर नपुंसकपणानैं दूरिकरैछै. शरीरनैं पुष्टकरैछै अर शरीरनैं वीर्यनैं निपट घणोव धावैछै. इति दशमूलासवकीविधिः अर इहींतरैसारा आसव दाष अंगुरनै आदिलेर करिलीजे अथवा वांका करिवाकी विधिलिष्यते अथ मूसलीपाक करिवाकीविधि लिष्यते. सुपेदमूसलीपाव १ ले कौंछिकावीज टंक २ विदारीकंद टंक २ गोषरू टंक २ सतावरी टंक २ परेंटीकावीज टंक १ गंगेरणीकीछालि टका १ भर तज टका १ भर सूंठि टका १ भर यांनैं मिहींवांटि यांवरावरि घृतमैं यांनै मकरोवै अर यांनै दूधसेर १० में पकावै अर दूधको परो मावोकरै पाछै पांडसेर ७ की चासणीकरै लाडुवाकीसी पाछै चा सणीमे येमावोनाषै अर ये औषदिभी चासणीमे और नाषै मिर चि टका २ पीपलि टका २ सूंठि टका २ दालचिनी टका २ पत्र ज टका २ इलायची टका १ नागकेंसरी टका २ कस्तुरी मासा ४ लवंग टका १ जायफल टका २ जायपत्री टका २ वंसलोचन टका १ यांओषधांनैं जुदीजुदीवांटि ईचासणीमैं नाषै अर सारवंग अभ्रक मृगांक अर हरगौरीरसयेभी अनुमानमाफिक चासणीमैं नाषै चारोली पिस्ता येभी अनुमानमाफिक ईचासणीमे नाषै पाछै यांको येकजीवकरि यांकीगोली टका १ भरवांधै यागोली रोजीना षाय एकप्रभात एकसंध्यासमै षायतो शरीरनैं पुष्टकरै अर प्रमे हादिक सर्वरोगानैं येदूरिकरैछै, इति मुसलीपाकविधिः अर ई

न. टी. पाकाधिकार ईंग्रंथमें [illegible] सो अमृतसागरमें [illegible] [illegible] विधिदुकलनाछै. अर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रूपी [illegible], अर [illegible]

हींतरे सारापाक करिलीजे. १ अथ सिलाजित सोधीवाकीविधिलि ष्यते शिलाजित परवतकोमद तीनैं लीजे अथवा वेंचुयापरवतका कांकरान लीजे पाछे वेसिलाजितनै गऊका दूधमै भिजोवै अथवा त्रिफलाका कढामै भिजोवै अथवा भांगराकारसमै भिजोवै दिन १ पाछे वेबासणमें वैनै षूबमसले पाछे वेंनें कपडामें छाणिवेनै तावडे मेलै सुकायले तदि ओशुद्धहोय १ अथवा शिलाजितकाकांकरा लेरवानैं वांटै उनापाणीमें पहर २ राषे पाछे वानै मसल ओर माटीका पात्रमें नितारले इसीतरे वारंवार महिना दोय तांई पाणी ओर पात्रमें नितारलै इसीतरे वारंवार महिना दोय तांई करतोजाय तदि ओसिलाजित शुद्धहोय अग्निमें निर्धूम होय अर अग्निमें मेल्यो उभोहोय जाय लिंगोपमायो सोध्यो सिला जित प्रमेहनें आदिलेर घणां रोगांनैं दूरिकरै अर शरीरनैं यो पु ष्टकरै इति सिलाजित सोधनविधि संपूर्णम्. अथ जवपारनें आ दिलेर सारा पार करिवाकी विधि लिष्यते पोटै आयाजवांनैं काटि वानैं सुकायलीजे पाछे वानैं वालि वांकी रापकरि वेंरापनें वासणमें भिजोयदीजे दिन दोय २ तांई पाछे तिपटीके कपडो वांधि वे कप डामें ओ रापसमेत पाणी घाली दीजे पाछे वेमें पाणी ओर घाल ताजावे सारो पाणी नीसरे जठांतांई पाछे वे पाणीनैं कडाहीमें च ढाय ओपाणी वालि दीजे तदि कडाहीमें वहे पाणीको लूण सिरी सो पार जमिजाय इहीं तरे सारापार करिजे इति जवपारनें आ दिलेर सारापार करिवाकी विधि. अथ चणपार करिवाकी विधि लि० माहकामहिनामें चणाको पेत होय जठै चणाऊपरि मिही क पडो घडी तीन चारिकै तडकेस्याणो आदमी फेरिल्यावै ओही क

* ग्रीष्मऋतुमें औषधिनमें कांईवो विशाने पाषाणको मद्रसुंवेछे गोपुरनाताननको टूकडे- णो नांका फोडकर टूकडाबारीक करणा [illegible] सारी क्रियाकरि शिलाजित प्रगटकरणा. [illegible] सिलाजित नहीं मिलेतो [illegible]

पडो रोजिना दिन १५ तांई फेर अर नित्य वे कपडानें सुकावतो जाय ओ कपडो टाटसिरीसो जाडो होयजाय जठातांई पाछे वे क पडानें पाणीमें भिजोय कडाहीमे ओर कपडासूं वेह पाणीनें छा णिले कडाहीमें ओ निताखो पाणी घाले वे पाणीनें चासणी सि रीसो गाढोकरि ओर वासणमें घालि रापैतो वहचोपो चणपार होय अर ओ पाटो घणोहोय इति चणपार करिवाकी विधिः

अथ स्नेहविधि लिष्यते स्नेहचारि ४ प्रकारको घृत १ तेल २ वसानाम शुद्धमांस घृत ३ मज्जानाममीजी सो हाडांमांहिसूं नीस रै ४ ये चारांही स्नेहपुष्टकर्ताछे १ अथ स्वेदविधिलिष्यते स्वेद च्यारि ४ प्रकारको ताप १ उष्ण २ उपनाह ३ द्रव्यस्वेद ४ ता प अर ऊष्मस्वेदहैसो कफका आजारनें दूरिकरैछे वालूरेत लूण वस्त्रतातो हाथढकणी अंगीठी यांसूं सेककरै पसेव आवे तीनें ताप स्वेद कहिजे १ लोह पींडो ईटनें आदिलेरवानें तपाय अर पसेव आवे तीनें उष्मस्वेद कहिजे २ ताप अर उष्म येदोन्यूं मिलीकरि पसेव आवे तीनें उपनाह स्वेद कहिजे ३ अर सरीरनें वस्त्रसूं ढां कि अर सरीरउपरि ताता पटाईका पाणीसूं सींचे अथवा वायनें दूरिकरिवावाली औषधांका पाणीसूं तातो तातो शरीरऊपर नांपे पसेव अणावे तीनें द्रव्यस्वेद कहिजे ४ ये चारूंही पसेव वायका रोगानें दूरिकरैछे अथ महासाल्व स्वेद लिष्यते कूलत्थ उडद गोहूं अलसी तेल सिरस्यूं साफ देवदारु संभालू जीरो अरंडोली अरंडीकीजड रास्ना सहजणाकीजड यां सारांनें लूणसंयुक्त कांजी सूं अथवा कहींपटाईसूं मिहिपीसि वेनें गरमकरि शरीरनें जठेवाय आइहोय तठे सेकेतो वायका सारारोगजाय इति महासाल्वणस्वे

भा. टी. स्नेहविधि नाम प्रस्वेदकरण्या [illegible] शरीराची मनुष्याचा अनेकरोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] अनेकरोग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] करावा. [illegible] [illegible] [illegible].

द इति स्वेदविधिः अथ वमनविधि लिष्यते शरदरितुमें वसंतरि तुमें वर्षारितुमें मनुष्यमात्रकूं वमन अर जुलाब लेवो जोग्यछे जींका शरीरमें कफकारोग होय हियांमें आदिलेर दुपता होय अर विषको दोपहोय मंदाग्निको रोग होय श्लीपदको रोग होय कोढको रोगहोय विसर्प प्रमेह अजीर्ण भ्रम षास सास पीनस मृगी उन्माद रक्तातिसार नाक तालवो होठ येपकिगयो होय कान पकिगयो होय दोयजीभ होय गईहोय अतिसारहोय पित्तका कफ का रोग होय मेदवधि गइहोय शिरको रोग होय पसवाडो दुषे त त्काल ज्वरहोय अरुचिहोय यांसारां रोगांनें वमन करिवे जोग्य छे वमनसूं. येरोग जाय १ अर इतना रोगांनें वमन कराजे नहीं तिमिरका रोगीनें गोलाका रोगींनें उदरका रोगींनै दुर्बलनै बुढानें गर्भिणी स्त्रीनै स्थूलनै चोटलागि होय जीनें मेदवालानै भूपानै उ दावर्तनें वायका रोगींनै यांनै वमन कराजे नहीं अथ वमनविधि भेदडी पतली धापिपुवाजे अर भेदडीमें दूध छाछि दहीं ये नापिजे अर निपट घणी पुवाजे कंठपर्यंत पाछे सींधोलूण सहत वच ये पु वाय ऊपरि ताती पाणी पाय गलामें अंगुली घालि वमन कराजे १ अथवा कुटकी ओरतीपीवस्त अथवा मेंढलको चूर्ण गरम गरम पाणी सूंले अथवा फिटकडी तमापु उगेरे गरम पाणीसूं लेतो वम न होय अथवा नींबनें आदिलेर कडवा द्रव्यसूं वमन होयतो ये पाछे कह्यासो सर्वरोग जाय अर वमन कर्‌या पाछे जीभके जीरा उगेरे आछी वस्त लगाय अथवा विजोरा उगेरे आछी वस्त पाजे अंतर उगेरे आछी वस्तसूंविजे आछ्या आछ्या भोजन कराजे इति वमनविधिः अथ विरेचन नाव जुलाबलेवाकी विधिलि० प्रथम

न. टी. जो करणेका होय सो ध्यानमें राखणा कारन प्रहरेद पाछे उगेरेमें जो वापू प्रवर्ति होय तो सांखिकी जायगां मर्यादीकर देखके जीर्णो पारीन वैपरी महात्मतार्यो अथ वा चतुरमनुष्यकी सहायताथीं विचारवो करे

पुरुषने विधिपूर्वक वमन कराजे पाछे वे पुरुषने पाचन द्रव्यदीजे वेकाशरीरका कफका रोग पचिजाय जठांताई अर सरदरितु व संतरितुमै निश्चै जुलावदीजे अर जरूर जुलाव दियांही यांको रो गजाय तदि चाहेजे रितुमें जुलावदीजे अर इतना रोगवाला म नुष्यनें निश्चैही जुलावदीजे तदि येरोग जुलाव दीयांजाय जीर्ण ज्वरवालो जींका शरीरमें मलको संग्रह होय वातरक्तवालो भगं दरवालो ववासीरवालो पांडुरोगी उदररोगी गोलाको रोगी हृद्रो गी अरुचिकारोगवालो जोनिकारोगवाली गरमीको रोगी प्रमेहको रोगीव्रणकोरोगी फोडांकोरोगी विसूचिकाकोरोगी नेत्रकोरोगी कृ मिकोरोगी सूलको रोगी कोढी कानकोरोगी नासिकाकोरोगी सिर कोरोगी मूंढाकोरोगी सोथकोरोगी मूत्राघातकोरोगी यांरोगांवालो रोगी जुलावलेतो ऐरोग तत्कालजाय १ अर इतनारोगवालो म नुष्य जुलावलेवैनहीं बालक वूढो शरीर जींको घणोचीकणो होय शस्त्रलाग्यांसूं क्षीणहोय डरपणस्याल पेदयुक्त तिसायो स्थूलपुरुष गर्भिणीस्त्री तत्काल ज्वरचढिहोय सो तत्काल जींकै संतान हुईहो य इसीस्त्री मंदाग्निवालो मेदकारोगवालो लूपो जींको शरीरहोय इतना रोगवालो पुरुष जुलावले नहीं अर पित्तकी तासीरवालानें कोमल जुलावदीजे अर कफकी तासीरवालानें मध्यम जुलावदीजे अर वायकी तासीरवालानें करडो जुलावदीजे तदियांको कारज होय. अथ मृदुजुलाव लि० दाप दूध हरडेनें आदिलेर अथ मध्य मजुलावलि० निसोत कुटकी किरमालानें आदिलेर अथतीक्ष्णाना म करडो जुलावलि० थोहरिको दूध चोंप दांत्यणी. जमालगोटो ओर इन्द्रा मेदीनें आदिलेर अथ पुनः जुलावलेवाकी विधि लि०

न. टी. वमननाम उलटी करावे जींमें कफको निकलै [illegible] [illegible] पाचनरोग मार, पित्त, कफ, सर्व [illegible] [illegible] वमन करावुं [illegible] [illegible]. [illegible]

प्रथम दिन पांचसाततो पुरस मुंजसले सोनामुषी टंक २ जीरो टंक १ सौंफ टंक २ मिनकादाष टंक २ गुलाबकाफूल टंक २ पांड टका १० यांसारानैं तीनपाव ऽ॥। पाणीमैं औटाय तींको पाणी पाव ऽ। राषै पाछै ईंपाणीनैं छाणि रोजीना दिन ४ पीवैतो पेटको मलपचै अर नीसरवो करै अर रोजीना चांवलांकी पिचडी घृत समेत पाय अर पांचवेदिन सोनामुषी टंक १० निसोत टंक १० गुलाबकंद टंक १० जीरो टंक २ सौंफ टंक २ पांड टंक १० यांनैं औटाय दिन दोय चारि रोजीनाले अर घृत समेत पिचडी पायतौ जुलाब आछौ लागे अर ईंसूं सारा रोगजाय पाटो पारो पाय नहीं जुलाबका दस्त ३० लागैतो उत्तम जुलाबजाणिजे अर दस्त २० लागैतो मध्यजुलाब जाणिजे अर दस्त १० लागैतो हीनजुलाब जाणिजे. १ अथ छऊरितुका जुदाजुदा जुलाब लि० वसंतरितुमैंतो सोनामुषी निसोत गुलाबकाफूल सौंफ जीरो पांडचीणी यांको जुलाब दीजे ग्रीष्मरितुमै निसोत मिश्री येदोन्यूं बराबरिले तींको जुलाबलीजे तो रोगजाय शरीर शुद्ध होय जाय. २ अथ वर्षाकालको जुलाबलिष्यते निसोत पीपलि दाष सूंठि सहत यांका जुलाबसूं रोगजाय. ३ अथ सरदरितुको जुलाबलिष्यते निसोत धमासो नागरमोथो दाप नेत्रवालो महलोटी चंदन सोनामुषी मिश्री यांको जुलावदेतो रोगजाय. ४ अथ हिमंतरितुको जुलाबलिष्यते निसोत चित्रक पाट चोप सोनामुषी वच यांकाजुलाब गरम पाणी सूं लेतो रोगजाय ५ अथ सिसिररितुको जुलाब लि० निसोत पीपलि सूंठि सींधोलूण सहत सोनामुषी यांको जुलाब लेतो रोगजाय

ऊ अभयामोदक नाम औषधीछे यो श्रेष्ठछे. ईंवास्तै औषधी तानैलेणी. गर्मी फुडी घणादिनकी छेनीनहीं. अर अनपानाम दूरदेकोछे. सोदीदूरदेकी जाडिलेणी. अठे प्रजस्तीछे गुदूरदेकीगुठली निकालदेणी. जाडीउत्तरदे सो लेणी. जद पनीयानपेतांमू औषधीवणी. याऔषधी तयारकर देणेंकीछे.

६ अथ अभयादिमोदक लि० हरडेकोछालि मिरचि सूंठि वायविडं ग आंवला पीपलि पीपलामूल तज पत्रज नागरमोथो येवरानारि ले अर यांसारासै तिगुणी दांत्युणी अर यां सारासूं आटगुणी निसोतले अर यांसारासूं छगुणी मिश्रीले अर यांसारांने मिहीवां टि सहतमें टंक २ प्रमाण गोलीवांवे पाछे गोली १ प्रभातही सी तलजलसुं लेतो जुलाव चोषो लागे गरमपाणी पीवेनहीं जठाताई जूलाव लागिवोहींकरे अर ईमें घणो जुलाव लागिवोहीकरेतो म नुष्यका सारारोग जाय. विषमज्वर मंदाग्नि पांडुरोग पास भगंदर प्रमेह राजयक्ष्मा नेत्रकारोग ववासीर कोढ गंडमाला उदरकारोग वायकारोग आफरो मूत्रकृछ्र पथरी जांघकटीकीपीडा यांसारांरो गांने यो अभयादि मोदक दूरिकरेछे अर जुवानकरेछे. इति अभ यादि मोदकविधिः

अथ जुलावलेवावालो इतनीवस्त करे सोलिष्यते. जुलावला ग्यापीछे सीतल जलसूं आंपिधोवे अंतरसूंवे पानपाय पवनका घर में रहेनहीं सीतल जलसूं न्हावेनहीं गरम जल वारंवार पीवे जठा ताई सारो जुलाव लागे अर विचहीये नहीं करेतो नाभिमें कृपि में सूलचाले पाछे जंगलउतरेनहीं अर पवनसरेनहीं पित्त उगरे रोगहोय अर शरीर भार्यो रहे दाहहोय अरुचिहोय आफरोहोय मोलि आवे छादणीहोय तो पाछे वेने पाचनादिक देर ओर शुद्ध करे. येसारारोग जाय अर भूपलागे शरीरहलको रहे १ अर जुलाव घणालागेतो मूर्छा होय गुदावारे नीसरि आवे सूलचाले अर अतिसारने आदिलेर ओरभी रोगहोय तदिवेनें सीतल जल सू स्नान कराजे अर चावल मिश्री सहत सिपरण दहीं येपुवाजे

न. टी. [illegible] जुलाबकाछे. [illegible] देणोछे. [illegible] आधीरातने जुलाबदेवेछे. अर [illegible] [illegible] तीसरा [illegible] अर जुलावको [illegible] जुलाब देवेछे.

अर बकरीको दूध मिश्रीनापि पाजे अर साठ्याचावल मसूर ये
पुवाजे तदि घणो जुलाबथंभे अर आछ्यो जुलाव लागे जींका
लक्षण लि० मनप्रसन्नरहे वायसरे सर्वइंद्रियांमें बलहोय जाय बु
द्धिनिर्मल होय जाय भूकचोषी लागे सर्वसरिरमें बलहोय १ इति
विरेचन नामजुलावकी विधि अथ छउरितुमें हरडैषावाकी विधि
लि० ग्रीष्मरितुमें एक हरडेकीछालिको चूर्णतीमें बराबरिको गुड
मिलाय रोजीनादिन ६० तांई पायतौरोग होयनही अथ वर्षारि
तुमें दोय हरडैकोचूर्ण सींधोलूणकीसाथि पायतो रोगहोय नहीं
अर सरदरितुमें मिश्रीकैसाथि तीन हरडैको चूर्णपायतौ रोगनही
होय अथ हिमरितुमें च्यारि हरडैकोचूर्ण सूंठिकैसाथि पायतौ रोग
नहींहोय अर सिसिररितुमें ५ हरडेको चूर्ण पींपलकैसाथि पाय
तौ रोगनहींहोय अर वसंतरितुमें ६ हरडेकोचूर्ण सहतकैसाथि
पायतौ रोगनहींहोय इति छउरितुमें हरडैपावाकीविधि अथ व
स्तिकर्मकीविधिलिष्यते. वस्तिनामपिचरकीसो जीरोगींकै मलमूत्र
रुकिगयोहोय वायका आजारांकरिकै सोवा पिचकारी इंद्रीमें गुदामें
देवै अर वापीचकारी जसतकी नाली घलाय बकराका आंडाकी
वर्णछै अथवा सुवर्णनें आदिलेर धातांकी नालिवर्णछै गऊका पूं
छकै आकार सोईमें औषघ्यांको जलघाली इंद्रीमें अर गुदामें या
वास्तिकर्म करिजैतौ वायका सर्वरोग जाय सोयावस्तिदोय प्रका
रकीछै अनुवासन जींकोनाम १ निरूहजींकोनाम २ अर तेल
घृतनें आदिलेर जींकीपिचरकी दीजे तीनें अनुवासन वस्तिकहिजें
२ अर निरूहवस्तिको भेदयेक उतरवस्तिछै १ अरु अनुवासन
वास्तिको भेद मात्रवास्तिछै २ यांको तोल टका २ भर जलकोछै

न. ८.७ वस्तिकर्म लिष्याछै सो वस्तिनाम मळमूत्राशयको स्थानछै. जीमें पिचकारी तथा नळीद्वारा औषधी जैसोरोग होय वैसी लिष्याप्रमाण क्रियाछै. ईवस्तिक्रियाका भेदमूं वाकब होयतौ याक्रिया करणी. वाकब नहीं होयतौ याक्रिया नुकसान करै.

इतनारोगवालानें अनुवासनवस्तिदीजे नहीं भस्मकरोगवाला
भयजुक्तने पाससासवालाने क्षयीरोगवालानें यारोगांवालानें अ
नुवासनवस्तिदीजैनहीं और रोगांवालानें अनुवासनवस्तिकरा
अर येकवरसनेलेर छ वरसताईकानेतो छअंगुलकी पिचरकीव
वस्तिदीजे अर बारावरपकांक आठ अंगुलकी पिचरकीदीजे ब
रावरप उपरांत बाराअंगुलकी पिचरकीदीजे पाछे बुद्धिका अनुमा
सूं दीजे अर पिचरकीके घृतलगाय लीजे अर वस्तिकर्मसूं शा
रमें बलवधे रोगजाय अर सीतकालमें अर वसंतरितुमें तिनमें
हवस्तिदीजे अर ग्रीपमरितुमें वर्षारितुमें अर शरदरितुमें रात्रि
अनुवासन वस्तिकर्म कीजे अर वणोचीकणो भोजनकराजैनहीं,
लको भोजनकराजे अर स्नेहमें सौंफको जल सींधोलूण नापि गुद
में वस्तिदीजे गरमपाणीपाय भोजनकराय अर फिराय अर म
मूत्रादिक कराय अर ग्रांवापसवडाकानी सुवाय अर वावीजांघ
पसारि अर दूसरिजांघनें ऊंचीकरि गुदामें स्नेहकी पिचरकीदे अ
वावांहातसूं पकडि जिमणाहातसूं भींचे तदिगुदामें पिचरकीको
ल अर स्नेहजायपडे अर पिचरकीदेतां ओदेवावालो पुरुप
लेवावालो अतनीवस्त करैनहीं जंभाई पासी छींक येलेनहीं
तालीवजावे जठातांई वस्तिकर्मकरे अथवा मूंढासूं सो १०० प
की गिणतीकरे पाछे सारासरीरनें पसारिसूंधो सोवै पाछे द
गांकी अंगुलीअंगुठानें चतुर आदमीकनें पेंचावे पाछे जऊ
ऊंधोसोवे ढूंगांमसलावे नींदलेई इसीतरे करैतो यावस्ति वाप
सारारोगांनें दूरिकरे अर यागुदामें लीनीजो वस्तिसो
गुदामाहिंसूं सारामलनें अर सारावायका रोगांनें दूरिकरेछे

अनुवासन वस्तिकर्म इहीविधि० छह सात आठ नववार येकेक दिनको अंतर करिकरिकै करीथकी सर्व वायकारोगानैं दूरिकरैछै अर अनुवासन वस्तिकर्म कयां पाछै निरूह वस्तिकारिजे. अर जाका मलासयमैं अथवा पक्वासयमैं अनुवासन वस्ति चलाईथकी हीवेको स्नेहजुक्त जल उगैरै रहजाय गुदामाहिसूं नीसरैनहीं. पेडूनै मसल्याथकांभीतौ निरूहवस्ति औरुकीजे तींकी औपदिकी वस्ति करि गुदामैं चलाजैतौ वायुसरै अर माहिलो मल नीसरिजाय अर शरीर शुद्धहोय अथवा जुलावदे काढिजे अथ अनुवासन वस्ति कादेवाको तेललि० गिलवै एरंडकीजड कणगचकीजड भाडंगी अरडूसो रोहिस सतावरी सहजणो कागलहरी यांनैं टकाटका भरिले जव उडद अलसी वोरकीजड कुलत्थ येसेरसेरलीजे यांसारी औषधांनैं ६४ चोसठसेर पाणीमैं औटाय यांको चौथोहिसो राषि तीमैं मीठोतेल सेर ४ पकायलीजे रसबलिजाय तेलआयरहै तदि ईंतेलनैं छाणि टका १ भरकी पीचरकी गुदामैं दीजैतौ सर्ववायका रोगदूरिहोय इति अनुवासनतेल० इति अनुवासनवस्तिकीविधि.

अथ निरूहवस्ति करिवाकी विधि लिप्यते. निरूहवस्तितो घणांप्रकारकीछै अर ईंकाघणांही कारणछै. अर निरूहवस्तिको अस्थापनभी नामछै. अर निरूहवस्तिको सवापईसाभरदेवाको प्रमाणछै. अतनारोगवालानैं निरूहवस्तिदीजे जींको शरीर चीकणोघणोरहै अर हियाकै चोटलागिहोयशरीर क्षीणहोय आफराको रोग होय छर्दिको रोगहोय हिचकीवालानैं ववासीरवालानैं सास पासवालानैं उदरका सोजावालानैं अतिसार वालानैं विसूचिका वालानैं उदावर्तवालानैं वातरक्तवालाने विषमज्वरवा

* आफरोनाम पेटको फूलणोछै. सो अनेकप्रकारसूं होवछै. परंतु वस्तिकर्मकेवास्ते साधारण आफराको रोगनहीं साधारण आफरातो हिंगाष्टक आदिदेर औरषीसूं आराम होगछै. मोटा कारणासूं पेटका आफराका रोगऊपर वस्तिकर्म करणो मुनासब छै.

लानें मूर्छा तिसउदर आफरो मूत्रकृच्छ्र पथरी पेरकोरोग मंदाग्नि सूलको रोग आम्लपित्त हृदयका रोग यांसारांही रोगानें जीकै कोई रोग होय जीनें निरूहवस्ति दईथकी यांसारारोगानें दूरिक रैछै. अथ निरूहवस्तिकादेवाकी विधि॰ अनुवासनवस्तिकी विधि में लिष दीनीछै या निरूहवस्तिभी दोचारिवार येकेक दिनको अं तर करि पाछै लिपीछै तिहीविधिसूं हीदीजे अर केवलवायको विका र होय तो स्नेहसंयुक्त दीजे अर पित्तको विकार होयतो दूध संयुक्त दोय वस्ति दीजे अर कफको विकार होयतो कपायलो कडवो अर मूतनें आदिलेर निरूहवस्ति दीजे अर सुकुमारकूं बालककूं बूढाकूं मृदुवस्ति दीजे अथ उत्कलेदनवस्ति विधि. अरंडकी अ रंडोली महुवो पीपलि सींधोलूण वच झाउरुपकीचकल यानें औ टाय यांकी वस्ति दीजे इति उत्कलेदनवस्ति अथ दोपहरवस्ति लि॰ सोंफ महलोठी वील इंद्रजव यानें कांजी अर गोमूतमें पासी देतो सर्व रोगजाय इति दोपहरवस्ति अथ लेखन वस्ति लि॰ त्रिफलाको काढो गोमूत सहत जवषार यांको पीचकारीदे तीनें लेख नवस्ति॰ अथ शोधनवस्ति लि॰ हरडै किरमालानें आदिलेर यांको जुलाब लागे यांकी पीचरकी देतानें सोधनवस्ति कहिजे अथ समनवस्ति॰ फूल प्रियंगू महलोठी नागरमोथो रसोन यानें दूधमें बांटि यांकी पीचरकीदीजे तीनें समनवस्तिकहिजे अथ बृंहणवस्ति लि॰ पुष्टाईकी औषधांको काढो करि तींमें मीठा द्रव्य मिलाय अर घृत मांस रसइगेरे त्यांकी पीचकारीदे तीनें बृंहणवस्ति कहिजे अथ पिच्छलवस्ति लि॰ बोरकापान सतावरी ल्हेसवामीचारस यानें दूधमें पकाय तींमें सहतनापि वस्तिदीजे तीनें पिच्छलवस्ति

न. [illegible] [illegible] [illegible] मधु, तेल, घृत, दूध, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ८. अर [illegible]

कहिजै. अथ निरूहवस्तिका तोलको प्रमाण लि० प्रथमतो किंचित् सींधोलूण नाषै पाछै वेमेंही सेर ऽ॥ सहत नाषै अर सेर ऽ॥ आध घृत नाषै पाछै यातीन्यांनैं पूवमथि यांकी पीचरकी पांचसातवार येकेक दिनकां आंतरांसूं चतुराईसूंदीजै इति निरूह वस्तिका तोलको प्रमाणसंपूर्ण. इति निरूह मात्राविधिः अथ मधु तेलकी वस्तिविधि लिष्यते. अरंडकी जडको काढोकरै तीमैं सहत अर मीठोतेल टका भरनाषै अर सौंफ पईसा १ भर सींधोलूण अधेलाभर यांनैं वांटि पाछै यांनैं मथै अर यांकी पीचरकी देतौ मेदनें गोलानें क्रिमिनैं फियानैं मलका रोगनैं उदावर्तनैं यारोगांनैं याव स्तिदूरिकरैछै अर शरीरमैं बलवधावैछे इति मधुतैलकी वस्ति० अथ स्थापनवस्तिलि० सहत घृत दूध तेल ये पईसा पईसा भर ले त्यांमैं झाऊरूपकी वकलको रस अर सींधोलूण अधेला भरनाषै यांसारांको येकजीवकरि पीचरकीदे तीनै स्थापन वस्ति कहिजै अथ सिद्धवस्ति लिष्यते पीपलि पीपलामूल चव्य चित्रक सूंठि यांकोकाढोकरि तीमैं तेल सहत सींधोलूण महलौठी यांनैं औटाययेभी मिलाय याकी पीचरकीदे तीनै सिद्ध वस्ति कहिजै अथवा फलवति लिष्यते गुदाकै माहि वारै घृत लगाय आपका अंगुठाप्रमाण जाडी लुंठि अंगुल १२ वाराकी आथी गुदामैं चलावै अर ईकी चतुराईसूं पीचरकीदे तीनैं फलवर्ति कहिजै अर निरूहवस्तिकोही भेद उत्तर वस्तिछै अर वस्तिकर्म करिवावाला गरमपाणिसूं स्नान करै अर दिननैसोवै अर अजीर्ण करैनहीं औरभी कुपथ्य करै नहीं इति अनुवासन वस्ति अर निरूहवस्तिनैं आदिलेर सर्व वस्ति संपूर्णम् अथ हुकानैं आदिलेर धूमपानकी विधि

न. टी. विशेषकर जलके आसपासमैं होयछै. अर नदीमें [illegible] होयछै. यांको झाड ऊंचो [illegible]छै. अर [illegible] [illegible] होयछै. जीनैं [illegible]छै. अर [illegible]छै सोनांका [illegible] [illegible] मांडवानैं करेछै. [illegible] दोष [illegible] होयछै.

लि० धूमपान ६ छ प्रकारकोछे. समन १ बृंहण २ रेचक ३ पा सहर्ता ४ वमन कर्ता ५ व्रणधूम ६ तीषी ओषधांकोतो धूमपान वैनै सोधन कहिजे ७ इतना रोगांनै धूमपान कराजै नहीं पेदसंयुक्तनै डरपस्यालनै दूर्षानै दांतांकारोगांनै रातिनै जाग्यो होय जीनै तिसवालानै दाहवालानै तालवाकारोगीनै उदरका रोगांनि मथवायकारोगीनै छर्दिका रोगीनै आफराकारोगीनै घावकारोगीनैं प्रमेहकारोगीनै पांडुरोगीनैं गर्भिणीलुगाइनैं क्षीणपुरुषनैं बालकनैं बुढानैं इतना पुरुषानैं धूमपान कराजैनहीं अर धूमपानहै सो वायका सर्वरोगांनैं अर कफकासर्व रोगांनै दूरिकरैछे अर सर्व इंद्रियांनै अर मननै प्रसन्नकरैछे केसांनै गाढाकरैछे दांतांनै गाढाकरैछे अर इलायचीनै आदिलेर यांको धूमोलीजै तोने समनधूम कहिजै १ अर रालनै आदिलेर यांको धूमा लीजै तीनै बृंहणधूम कहिजै २ अर तीषी ओषदीको धूमो रेचन कहिजै ३ मिरच्यादिकको धूमोकासघ्नकहिजे ४ पालको धूमो वमनकर्ता कहिजै ५ नींवनै वचनै आदिलेर जींको धूवां दीजे व्रणादिककूं तीनै बृंहण धूमकहिजै ६ अथ अपराजित धूपलिष्यते मोरकीपांष नींवकापान कल्यारीका डोडा मिरचि हींग छड कपास बकराकाबाल सांपकीकांचली बिलाईकीबीट हाथीको दांत यांनैबांटि घृतमिलाय धूणीदेतो पिशाच राक्षस भूतप्रेत डाकिणीनैं आदिलेर सर्व दोषदूरिकरै ज्वरनै दूरिकरै इति अपराजितधूप० अथ माहेश्वरधूपलि०हिंग देवदार बीलपत्र घृत गऊकाहाड कूटकी सिरस्यूं नींमकापान माथाकाकेस सापकी कांचली बिलाईकी विष्टा गऊका सींग मैंदल दांन्यूंकल्यारी कपास तुस बकराकारोम चंदन मोर

न. टी. धूमपानको [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पाष बकराको मूत यांनैंबांटि आदमीकै धूणीदेतौ पिशाच राक्षस डाकिणी भूत प्रेत साप चूडावली यांनैं आदिलेर सर्व दोष दूरिहोय अर सर्व प्रकारको ज्वर ईंधूपसूं दूरि होय इतिमाहेश्वरधूप इति हुकांने आदिलेर सर्व धूमकी विधिसंपूर्णम्.

अथ लोहीछुडावाकी विधि लि० आदमीकाशरीरमैं वैद्यहेसो लोहीकाविकारांनैं भलैप्रकारदेपिवेको लोही सेर १ तथा सेर ऽ॥ आध तथापाव ऽ। तथा आधपाव ऽ कढायजे अर सरदरितुमैंतौ विनाविकारही थोडो लोही कढाजैतौ मनुष्यकै लोहीको विकारहोय नही अथ शुद्धलोहीको स्वरूपलि० लोहीको मीठोरसछै लालव र्णछै. सीतल अर गरमये दोन्यूंनहीछै, अर भाखोछै, चीकणोछै, अर दुर्गंधनैं लीयांछै अर योलोही दुष्ट हुवोथको गर्मीका सर्व विकारांनैं करैछै १ अर लोही शरीरमैं दुष्टहोय जदि पीडहोयश रीर पकिजाय दाहहोय शरीरमैं चाठा पडिजाय षाजहोय फुण स्यांहोय सोजानैं आदिलेर औरविकार होह अर लोही शरीरमैं वधिजायतौ नेत्रलालरहे अर भारी नसांरहे अर शरीर भाखोरहे नींद घणी आवै मेदवधै शरीरमैं दाहहोय अर शरीरमैं लोहीक्षीण पडिजायतौ षटाईकी मिठाईकी वांछारहे मूर्छाआवै शरीर लूषोर हे शरीरकीनसांशिथल होयजाय २ अर वायकरि दुष्टजो लोही तींको लक्षण लिष्यते अरुण रंगहोय झागआवै कठोर होय अर जींकी सीरकी उतावली चालती सूक्ष्म धारहोय अर सुईसि रीसा शरीरमैं चभका चालै अर लालहोय येसारा लोहीमैं लक्षण होय तदि जाणिजे लोहीवायसूं दुष्ट हुवोछै ३ अथ पित्तसूं दुष्टहु

* शिंगडीनाम शृंगछे जोंगृंनम् रक्तकढावणो फूंकणाजोरसूं अथवा बाफबासूं रक्त कढावे, अथवा जलोकासूं रक्त कढावेतो ठीकछे. अर फस्त छुडावे तथा पाछणासुं कढावे. परंतु शरीरको यथार्थध्यान देखकर रक्तश्राव करावणो. रक्तकढाता हुवां मारेतो मूंडाऊ पर जलका छपका दीजेतो होस्यारी आवे. परंतु नब्ज देखकर उपायकरनो योग्यछे.

वो जोलोहीतींको लक्षण लिप्यते लोही पीलो होय हस्योहोय नीलो होय कालो होय जींमें दुरगंधि वणीआवे चालेनहीं गरम होय माप्यां अरकीडी पायनहीं जींलोहीमें ये लक्षण होय तीनें पित्तसूं दुष्ट हुवो जाणिजे ४ अथ कफसूं दुष्ट हुवोजोलोही तींको लक्षण लि० लोही सीतल होय घणोहोय चीकणोहोय भास्योहोय गेरूको रंगसिरीसो होय मांसकी गुटल्यासिरीसो होय होलेचाले ये लक्षण लोहीमें होय तीनें कफसूं दुष्ट हुवो जाणिजे ५ अथस न्निपातसूं दुष्ट हुवोजोलोही तींको लक्षण लि० जींमें येसारालक्षण मिले अर कांजी सिरीसो जींको रंग होय तीनें सन्निपातसूंदुष्टहुवो जाणिजे ६ अथ विपकारके दुष्टहुवो जोलोही तींको लक्षण लि० जींको लोही कालोहोय अर नाकमें वणो चाले दुरगंधि वणी आवे कांजीको सो रंग होय ईसूं कोढहोय आवे सांवणकी डोकासो जींको रंगहोय अर शरीरमें सोजोहोय आवे अर शरीरमें दाह लागिजाय शरीरपकिजाय येलक्षण जींमेंहोय तीनें विपकारदुष्ट हुवो जाणिजे ७ अर अतनारोगानें योलोही कढावो जोग्यछे सो रोगलि० सोजाकोरोग होय शरीरमें दाहहोय अर अंगफोडा फु णस्यांसूं पकिजाय शरीरको वर्णलाल होजाय वातरक्तको रोगहो य व्याउडगेरे रोगहोय स्तनकोरोग होय शरीरमाथोरहे लाल आंपरहे तंद्राआवे नासिकाका मूंढाकारोग होय कियो गोलो वि सर्पको रोग होय विद्रधीहोय छालाडगेरेको रोगहोय मथवायको रोगहोय उपदंशनाम गरमीकोरोग होय रक्तपित्त होय यासारांरो गानें लोहीकढावो जोग्यछे सोयांरोगामें लोहीसींगडी अथवा जो

म. टी. [illegible]

कालगावे अथवा तुंबडीलगावे अथवा सीरछुडावेअतना कारण होय तदि मनुष्यनेंलोहीकढावो जोग्यछे. ८

अथ अतनारोगवाला मनुष्यनें सीरकरि कढावो जोग्य नहीं सोलि० क्षीणपुरुषनें स्त्रीसंगघणो कस्यो होय जीनें नपुंसकनें डरपस्यालनें गर्भिणीस्त्रीनें सूवावालीस्त्रीनें पांडूरोगनें जुलाबनें आदिलेर पंचकर्मज्योनहींकस्या त्यानें बवासीरवालानें सर्वांगसोथवालानें उदररोगीनें पाससासवालानें छर्दिकारोगीनें अतिसारनें पसेवयुक्त जींकोशरीरहोय जीनें सोवरष पहली मनुष्यनें अर सीतर ७० वरषउपरांति इतनारोगवाला पुरुषानें सीरछुडावोजोग्य नहीं ९ अर यांरोगांमें लोही कढायां रोगजायतौ जोकांकरिकै लोहीकढाजे अर विपकारि दुष्टहुवो जो लोही तीनें सीर छुडावो जोग्यछे अथवा पाछणादेर लोहीकढावो जोग्यछे अर वायपित्त कफकरि दुष्टहुवो जो लोहीतीनें सींगडी करि जोककरि तूंबडीकरि लोहीकढावो जोग्यछे जोकतो येक हातको लोहीसोसै सींगडी तूंबडी बारा आंगूलकोसोसै पाछणों येक अंगुठाप्रमाणसोसै सीर शरिरका सर्वांगकोसोसै अर सीतरितुमें इतनारोग्यांने लोहीकढाजे नहीं सो लि० भूपानें मूर्छावालानें नींद भ्रांति मद मलमूत्रको जांकौ वेगहोय त्यांपुरुपांनें लोही नही कढाजे १० अर जलोकादिकांकरि जांकोलोही नहीं निसस्यो होय त्यांका व्रणका मूंढानें कूठ सूंठि मिरचि पीपलि सींधोलूण त्यांकरिवांका व्रणको मूंढोमसले तौ लोही आछीतरे नीसरे अथ लोही आछो वषतमें कढाजे घणो सीत वणो तावडो नहीं होय भोजन हलको कराय लोही कढाजे अथ लोही नीसरे थंमेंनही तीको यांवस्तांकरि जतन करेतो

न. टी. येरीतसें रक्त शरीरमांहसों जाय अथवा घणो जावतो मनुष्यका शरीरकी हानी करेछे. तथा शरीरमें अनेकरोगकरेछे. जीसीं रक्तसांभ्रवणो. ओ बडी याक्षवेती होनी कारण प्राणिमात्रको जीवन जीवरक्तछे. आगो ये रक्तकीरक्षा जमाने करणी.

लोहीथंभे सोलिप्यते लोद राल रसोत जव गोहूंकोचून धोकोफूल गेरू सापकीकाचली रेपमीवस्त्रकीराप सांभरकोपाल यांनें व्रण के मूंढे लगावेंतो लोहीथंभे अर औरभी व्रणको सीतल जतन करे अर सीरछोडिवाकीनसनाडकेऊपरि डाहदेअथवावेंनसकेपारलगा वे अथवा नसनेकसायलीवस्तसूंलीपेअरवांवाआंडकेसोजो होयतो जीवणा हाथका अंगुठा तरली नसनेंदग्धकरे अर जीवणाआंडके सोजो होयतो वांवा हाथका अंगूठातरलीनसनें दग्धकरे अथवा वांवा आंडकेसोजो होयतोजीवणा हाथकी सीर छोडिजे अरजी वणा आंडके सोजो होयतो वांवाहाथकीसीर छोडिजे तो ओसोजो जाय१० अर विसूचिका होय जायतो पसवाडाके डाह दीजे तो वि सूचिका जाय अथ सीरछुडावाकरि लोही घणोनिसरेतोअतनारोग होय सो लि० आंधो होय जाय आधो अंगरह जाय तिसकोरोग होय अंधेरीआवे मथवाय होय पास सास होय हिचकी होय दाहहोय पांडुरोगहोय अर लोही घणोही छूटेतो मनुष्यमरिजाय अर ईशरीरमें लोहीकरके जीवोछे शरीरको लोही जातो रहेतो मरणछे जीसों शरीरका लोहीको घणो जावतो कीजे अर लोही छोड्यां सोजो होय तो क्युंगरम घृत करि वेने सेकेतो वेकीपीड अर सोजो दूरहोय अर लोही घणोनीसरे तो वेपुरुषनें हिरणका मांसको अथवा बकराकामांसको सोरवो जोग्यछे अथवा वेंने दूध पीवो जोग्यछे.

अथ साठी चावलको पीरपावो जोग्यछे. पीडासांतहोय श रीर हलको होजाय अर मन प्रसन्न होयजाय जठाताई अर लोही छुडावाका कुपथ्य लि० मैथुन क्रोध सीतलदजलसूंन्हान मादूरकोघणो

न. टी. मनोहर, रचावरी सोनें जावे औषधार, [illegible] है, [illegible] औ आदिक शारीरक [illegible] जो कुछ [illegible]. [illegible] [illegible].

पवन एकासणवेठिवो दिनमैं नींद लूणउगैरे षाटीवस्त कडवीवस्त सोचवात अजीर्णमैं भोजन येसारी वस्तलोही छुडावावालो करै नहीं अर जैठातांई शरीमैं बलबापरै जैठातांई कुपथ्यकरैनहीं इति श्रीसीरउगैरे लोही छुडावाकी विधिसंपूर्णम्. इति श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजराजराजेंद्र श्रीसवाईप्रतापसिंहजीविरचिते अमृतसागरनामग्रंथे सर्व आसवांकीविधि १ पाकांकीविधि २ सिलाजितसोधन ३ जवषारनै आदिलेर षारांकीविधि ४ चणषार सोधवाकीविधि ५ स्नेहविधि ६ स्वेदविधि ७ वमनविधि ८ जुलाबकीविधि ९ हरडैषावाकीविधि १० बस्तिकर्म ११ हुकानैं आदिलेर धूमपानविधि १२ लोही छुडावाकीविधि १३ निरूपणंनाम चतुर्विंशतितमस्तरंगः २४

२५ अथ ६ छऊंरितुकोवर्णन लि० हिमरितु १ शिशिररितु २ वसंतरितु ३ ग्रीष्मरितु ४ वर्षारितु ५ शरदरितु ६ येछऊरितु दोयदोय महिनाकी मार्गशीर पोषतो हिमरितु १ माघ फाल्गुन शिशिररितु २ चैत्रवैशाष वसंतरितु ३ ज्येष्ठ आषाढ ग्रीष्मरितु४ श्रावण भाद्रवोवर्षारितु ५ आसोज कार्तिक शरदरितु ६ अथवा अन्यमत लि० मेष अर वृषभकी संक्रांति येदोन्यूं ग्रीष्मरितु कहिजै १ अर मिथुनकर्ककी संक्रांति वर्षारितु कहिजै यारितु बादलांसूं छायो अंबर होय गरमीनैं लीयांक्यूं बरषैभी या रितु वर्षारितुको भेदछै ३ अर सिंहकी अर कन्याकी संक्रांति यां दोन्यांनैं वर्षारितू कहिजै ४ अर तुलाकी अर वृश्चिककी संक्रांति यांदोयांनैं सरदरितु कहिजै ५ अर धनकी अर मकरकी संक्रां

---

* आठी वस्तनाम कहीछे पो अनेक प्रकारकीछे. लोक मुद्दावती, परलोक मुद्दावती, प्रकृति मुद्दावती कुछ मुद्दावती, ईसी पणीछे.परंतु अठे आठी वस्तु या शब्दमैं कानु मुद्दावती लेणी. जैसे हिंवरीतुमैं षषपाणी कईकी वस्त्रगर्म इत्यादिकछे. परंतु यह ग्रंथ राजाकावास्ते घोगो उपचार राजा, साहूकार, श्रीमंत, यांके वास्तेछे.

ति यांदोन्यांनै हिमरितु कहिजे ५ अर कुंभकी अर मीनकी संक्रां
ति यांदोन्यांनै वसंतरितु कहिजे, ६ अथ यारितुकेविषे वायपित्तक
फ यांको संचय प्रकोप अर शांति लि० ग्रीष्मरितुमें वायको संचय
वर्षारितुमें वायकोकोप शरदरितुमें वायकी शांति १ वर्षारितुमें पि
त्तको संचय शरदरितुमें पित्तकोकोप हिमरितुमें पित्तकी शांति २
शिशिररितुमें कफको संचय वसंतरितुमें कफकोकोप ग्रीष्मरितुमें क
फकीशांति ३ यो संचय प्रकोप शांतिपणो वाय पित्त कफको अ
हार विहारसूं होयछे. अर येही विगरिसमें आपहीसूं शांति होय
जायछे. अथवा वायका कोपकरिवाका आहार लिष्यते हलकी
वस्त लूपीवस्त थोडीवस्त अतिसीतलवस्त अतिपैदतें संध्या
समेंका मैथुनसूं सोचकरि भयकरि चिंताकरि रातिका जागिवाकरि
चोटका लागिवासूं जलका तिरवासूं अन्नका अजीर्ण होवासूं धात
का पीणपणासूं अर यांनै आदिलेर औरभी कारण तीसूं वायकोप
होय तदि वायका कोपका दूरिकरिवाका जतनकरै तदि शांतिहोय.
१ अथ पित्तका कोपकरिवाको आहारविहार लिष्यते, कडवी पटा
ई लूण गरमतीपी येजोवस्त घणीपावलीकरि क्रोधकरिवासूं ताप
डानै आदिलेर गरमवस्तसूं मध्यान्हकेसमें भूकका अर तिसकारो
किवासूं अन्नका अजीर्ण हुवाथका यांकारणां करि आधिरातकासमें
पित्तहैसो कोपकूं प्राप्तिहोयछै अर पित्तका दूरिकरिवाका जतनांसूं
पित्तकी शांतिहोयछे. २ अथ कफका कोपकरिवाका अहार विहार
लिष्यते मीठाद्रव्यसूं चीकणाद्रव्यसूं सीतल भोजनसूं दिनकासोवा
सूं अग्निमंदहोवासूं प्रभातसमें भोजनकर्‍यां पाछे पैदतें इनै आ
दिलेर औरभीयांसूं कफ कोपकूं प्राप्तहोयछै. अर कफका कोपका

न. टी. प्रथम ऋतुचर्या नाम [illegible] [illegible]
[illegible]
[illegible]

दूरिकरिवाका जतनसूं कफकीशांति होयछे ३ अथ हिमरितुका से वाका आहारविहारलि० भेंसको गऊको नवीन घृत मीठोगुड मी ठोदहीं लूणतेलको मर्दन तिलगोंहूं उडद मिश्रीनें आदिलेर मीठो द्रव्य सुंठिसंयुक्त हरडे रुई निर्वातस्थान नवीनवस्त्र ईनें आदिलेर आछीवस्त ४ इति हिमरितुका आहारविहारादिक संपूर्ण.

अथ शसिररितुका आहार विहार लिष्यते पीपलि संयुक्तहरडे मिरची आदो नवीन घृत सींधोलूण वडागुड दहि अर हिमरितु में कह्यासोभी २ इति शिशिररितुकी विधि० अथ वसंत रितुकाआ हार विहार लि० वसंत रितुमेंकोपकूं प्राप्ति हुवो जोकफसो रोगां नें पैदा करै तदि जठरकी अग्निकोनाश करै तीं वास्तें सहत संयु क्त हरडेषाणी तो कफ दूरिहोय अर शरीरमें वलहोय अर वसंत रितुमें भ्रमणपथ्यछे. अर चित्रककोपावो पथ्यछे अर कफहारी द्रव्य आछ्याछे २ इति वसंतरितुकी विधि० अथ ग्रीष्मरितुका आहार विहार लि० ग्रीष्मरितुमें सूर्य प्राणिमात्रको वलहरिलेछे ईवास्तै वृक्षादिकांकी सघन छायासे वो जोग्यछे. गुडसंयुक्त हरडे सीतल जलनें आदिलेर द्रव्य मधुर भोजन दाप चीकणाद्रव्य सि परण सातू सरवत मिश्रीको सीतलजलमें तिरवो पसपानो फवारा चादरांको छुडावो कपूर चंदनादिकको लेप दिनकोसोवो पसको वीजणो पीरकोभोजन ईने आदिलेर औरभी आछीवस्त येरितुमें पथ्यछे अर ईरितूमें इतनी कुपथ्यछे कडवीवस्ततीषी वस्त लूणप टाई दाहकर्ता वस्त पेददारुतावडो येतोकुपथ्यछे ४ इति ग्रीष्मवि धिः अथ वर्षारितुका आहार विहार लि० सींधोलूणसंयुक्त हरडे चीकणो द्रव्य लूण पटाई सालि जव सूंठि मिरचि पीपलि पीपलामू

न. टी. एक अयनमें रितु ३ तीन होयछे. मासदोयकी १ एक ऋतु ऐसे छ रितु वर्ष १ में रितुकानामछिम. शिशिर वसंत ग्रीष्म वर्षा शरद नामें कह्याछे वां आहार अर व्यवहार शरीरांका सुखके वास्ते करणा. रितुमन्न कल्प सुप्र्यनेछे.

ल चित्रक सींचोलूण येसंयुक्त दहींकोमठो गरमपाणी कुवाको जल सुपेदवस्त्र भ्रमण हळको भोजन जुलाय ईरितुमें पथ्यछे अथ ईरितु में कुपथ्य दिनकोसोवो पेद तावडो तलावकोजल दहीं वनको ध्यान मैथुन ये कुपथ्यछे ५ इति वर्षारितुकीविधि० अथ शरद रितुका आहारविहार लि० वर्षारितुमें उपज्यो जो पित्तसो सरदरितुमें कोपकूं प्राप्तिहोय तींका दूरिकरिवाकेवास्ते मिश्रीसंयुक्तहरडे सवणी मिश्री नें आदिलेर मींठीवस्त सालीचावल मूंग सरोवरको जल ओटायो दूध सरदरितुमें इतना पथ्यछे अर येकुपथ्य तीपीवस्त लूण पटाई आसव तावडो दिनकोसोवो पूर्वको पवन सरदरितुमें इतनीवस्तु कुपथ्य उतरितांरूतुकासातदिनताई रितुकी विधि करणी अर आठवादिनसूं आगला रितुकी विधिकरणी इतिछउरितुमें आहार विहारकी विधि संपूर्णम् अथ दिनचर्या दिनमें जो आहार विहार तींकी विधि लि० मनुष्यहेसो घडी ४ केतडकेऊठि आपकाइष्ट देवत्यांको ध्यानकरे पाछे वे मनमें विचारे ईदिनमें यो कार्य करणों अर यो कार्य नहीं करणो पाछे सय्यासें ऊठि मलमूत्रको त्याग करें त्यांको वेगरोके नहीं अर दिनमें [illegible] लमूत्रादिकनेंकरे अर रात्रिनें दक्षिणदिशाकानांमुंडो [illegible] करे अर मलमूत्रकर्‍यां पाछे सूधाएसकोवोलसिरोनें आदिलेरआपका हाथकीकनिष्टिका आंगुली सिरीपोपतलो अर मूंवो १२ आंगुलको दांतणकरे पाछे वींको फाडकरे जीभनें सोधे पाछे सीतलजलसूं १२ वारकुरलाकरे पाछे सीतल जलसूं मुषधोवे तदिमुषका सर्व रोगजाय अर दांतांको सींचोलूण तीर्भ क्यूं सूंठिक्यों जीरो मिलाय मिहींवांटि ईकोरोजीना मर्दन करेंतो दांतांमें रोग

न. टी. आवे [illegible]

नहींहोय पाछै सरीरकै नारायणादि तेलको मर्दन करै पाछै स्नेह का दूर करिवावास्ते चणाको चूर्ण अर कटोल उगैरै तींको उवटणोकरै पाछै शरीरमैं वलराषि क्यूं शरीरका वलमाफिक कुस्तीकरै पाछै श्रम दूरिकारि स्नान करै कमारि नीचै तौ गरम पाणीसूं स्नान करै अर कमारि ऊपरि क्यूं येक निवायां सुहावता जलसूं स्नान करैतौ रोग होय नहीं.

अथ स्नानका गुण लिष्यते. स्नानशोचनें दूरि करैछे, अर शरीरका मलनैं दूरिकरैछे, गरमीकारोगनैं दूरिकरैछे, हियाकी तापनैं अर रुधिरकाकोपनैं दूरिकरैछे. शरिरकी दूरगंधिनैं दूरिकरैछे, कातिनैं अर तेजनेंदेछे पापनैं मनकीग्लानिनैं दूरिकरैछे, अर भूपकी रुचि करैछे, वुद्धिनें धर्मनें सुपनें द्रव्यनें यांसारांनें वधावैछे शरीरकावीर्यनें आनंददेछे, शरीरकी क्रमिने मार्गका पेदनैं दूरिकरैछे येस्नानमै गुणछे. अर अतना रोगवालो पुरुप स्नानकरै नहीं सो लिष्यते नींदसूं ऊठिकारि स्नानकरै नही अर नींद आवती होय सोभी स्नानकरै नहीं पेदवालो हिचकीकारोगवालो भोजनकरयां पाछै पीण पुरुप कफका अर वायका रोगवालो वमनकारोगवालो यांरोगांवालो स्नान करै नहीं अर स्नानकरयां पाछै संध्यावदन देवता गऊ ब्राह्मण आचार्य गुरु वडाअतिथिनें आदिलेर यांको पूजन करै पाछै शक्तिमाफिक दानदे पाछै मध्यान्हक समैं वलिवैश्वदेवादिक कारि कोइ अतिथिनें आपकी शक्तिमाफिक भोजन कराय आप कुटुंवसहित भोजनकरै प्रथम मधुर अर चींकणो आपने हितकारी चावल मूंग गोहुकी रोटी घृतसंयुक्त पाय

* रात्रीको अंतलिष्योछे सो स्वेच्छभाषामैं छेपी नहीं कारण घणा मनुष्य प्रभातनल पीवेछे सो वातचीनहीछे जीनैं वातरोगीनैं तो प्रभातनल पीवाणो फायदो नहीं करैछे. रात्रिको अंतछे सो प्रहरात्रिपाछै जो समयछे च्यार घडीका तडका पहिलो मैनलपीयोयको गुणकरैछे.

चोपी तरकारिके साथि अर सनैं सनैं भोजनकरै उतावलि करैनहीं अर भोजनके अंत मिश्रीका संजोगको दूध पीवै भोजनके अंत दहीं पायनहीं अर भोजन निपट थोडो अर निपट घणो पायनहीं आपकी रुचि माफिक पाय भोजनकरतां अतनानैं कनैंराषै मातापिता मित्र वैद्य पाकको कर्त्ता मोर चकोर कूकडोस्वान वान्नर यांकीदृष्टि आछीछे अर भोजन कियां पीछे अगस्त्य १ कुंभकर्ण २ शनैश्चर ३ वडवानल ४ भीमसेन ५ या पांचको स्मरण करै तो भोजन आछीतरे पचिजाय पाछे सुगंधित पुष्पमाला अंतर आछया वस्त्र यांको धारणकीजे पसकापंपानैं आदिलेर पवन लीजे सीतल छायामें रहजे भोजनकर्यांउपरांती दोयघडिपीछे सीतल अर मीठो जल थोडो थोडो पीजे घणोपीयां रोगहोय अर भोजनके आदिजल पीवैतो अग्निकी मंदताहोय भोजनके अंतिमें पीवै तो विषको सोगुणाकरै अजीर्णमें जलपीवैतो अजीर्ण पचिजाय अन्नपच्यापाछे जलपीवैतो शरीरमें वलहोय अर रात्रिके अंतजलपीवै तो सर्वरोगजाय अर भोजनकरिवैठि जायतो शरीरमें भारीपणो होयजाय अर भोजनकरिसूंवासोवै तो वलहोयभोजन करिवांवपसवाडेसोवैतो आयुर्वलवधै भोजनकरिवोदौडैतो वैकोलार मृत्युदौडै भोजन कर्यां पाछे घडीदोय यांवै पसवाडे सोवै नींदलेनहीं अथवा भोजन कर्यां पाछे पांवडासौं १०० चालै अर भोजनके अंत गऊकीछाछि पीवैतो गुणकारिछै रुचि माफिक पीवै अर भोजनके अंतसिषरण मठ्ठा उगेरै रुचिकारिभी वस्तपाय अथ सिषरणकी विधि लिष्यते चोपो रातिको जमायो भैसको तथा गऊको जमायो दहीलै तीनै मथिछाणिलै पाछे वेदहीमें मिश्रीको चूरो अर मिरचि

[illegible]

इलायची भीमसेनीकपूरनैं आदिलेर अनुमानमाफिक ईमैं मिला वे अर इसो सिपरण पायतौ शुक्रनैं अर बलनैं अर योरुचिकरै अर वाय पित्तका रोगानैं दूरिकरै इति सिपरण करिवाकी विधिसंपूर्णम्. भैसका दहीनैं छाणि तीमैं सूंठि मिरचि पीपली राई लूण यांनैं मिहिवांटि मिलाय अनुमान माफिक पायतौ कफ वायनै दूरिकरै अर याबलनैं करैछै. अर सीतकालकैविषै दहीपाणों इति मठाकरिवाकीविधि संपूर्णम्. संध्यासमै इतनी वस्तकरिजे नहीं भोजन १ मैथुन २ निद्रा ३ पढिवो ४ संध्यामैं भोजन कर्यां रोग होय १ संध्यामैं मैथुनकर्यां भयंकर संतान होय २ संध्यामैं निद्रा लियां दरिद्रीहोय ३ संध्यामैं पढ्यां आयुर्बलको क्षय होय. ४

अथ रात्रिचर्या रात्रिका आहार विहार लिख्यते रात्रिमैं चांदकी चांदणीमैं सूतांकामकी वृद्धिहोय अर वा चांदणी सरीरका दाहनैं दूरि करैछै. अर अंध्यारी राति आनंदादिकनैं दूरिकरैछै रात्रिका प्रथम प्रहरमैं भोजनादिककरै पाछै सयनकरै सुंदर स्थानमैं पाछै सुंदर स्त्रीसूं शक्तिमाफिक संभोगकरै जोवनवतिसूं अर शक्तिउपरांतिकरैनहीं सुंदर स्त्रीयांसूंभी संभोगकरैनहीं अर संभोगके आदिभैंसीको तथा गउको दूध औटायो मिश्रीका संजोगको पीवै अर संभोगका अंतमैंभी योहीदूध रुचिमाफिक पीवैतौ ईपुरसकै जरापणांको रोगकदेभी आवैनहीं वृद्धस्त्रीसूं संभोगकरैनहीं ये छहवस्तु प्राणांनैं तत्कालहरैछै सोलि० सूको मांस १ वृद्धस्त्री २ सूर्यका तावडाको सेवो ३ तत्कालको जमायो दही ४ प्रभातसमैं मैथुन ५ प्रभातसमैं निद्रा ६ येछह तत्कल प्राणांनै हरैछै. अर छहवस्त तत्काल प्राणांनैं सुपकरैछै सो० तत्कालको मांस १ न

न. टी. जोपुरुषकरीतर्यांचालैछै त्यांकी आयुर्वृद्धिहोयछै. जैसे शुद्ध आहारविहारवाला पुरुष दीर्घायुभोगैछै. अर जोधनवान, राजा, [illegible], जो भावसी [illegible] संतोनानैपछोगांकी [illegible] वे मध्यकी [illegible] होयछै.

चोषी तरकारिके साथि अर सनें सनें भोजनकरै उतावलि करैनहीं अर भोजनके अंत मिश्रीका संजोगको दूध पीवै भोजनके अंत दहीं षायनहीं अर भोजन निपट थोडो अर निपट घणों षा यनहीं आपकी रुचि माफिक षाय भोजनकरतां अतनानें कनेरापे मातापिता मित्र वैद्य पाकको कर्त्ता मोर चकोर कूकडोस्वान वान्नर यांकीदृष्टि आछीछे अर भोजन क्रियां पीछे अगस्त्य १ कुंभकर्ण २ शनैश्चर ३ वडवानल ४ भीमसेन ५ या पांचको स्मरण करै तौ भोजन आछीतरै पचिजाय पाछे सुगंधित पुष्पमाला अंत्तर आछया वस्त्र यांको धारणकीजे षसकापंषानैं आदिलेर पवन लीजे सीतल छायामैं रहजे भोजनकखांउपरांती दोयघडिपीछे सीतल अर मीठो जल थोडो थोडो पीजे घणोपीयां रोगहोय अर भोज नके आदिजल पीवैतौ अग्निकी मंदताहोय भोजनके अंतिमैं पीवै तौ विपको सोगुणकरै अजीर्णमैं जलपीवैतौ अजीर्ण पचिजाय अ न्नपच्यापाछे जलपीवैतौ शरीरमैं वलहोय अर रात्रिके अंतजलपीवै तौ सर्वरोगजाय अर भोजनकरिवैठि जायतो शरीरमैं भाखांपणों होयजाय अर भोजनकरिसूंधोसोवै तौ वलहोयभोजन करिवांवेंपस वाडैसोवैतौ आयुर्वलवधै भोजनकरिवोदोडैतौ वेंकीलार मृत्युदोडै भोजन कखां पाछै घडीदोय वांवें पसवाडै सोवै नींदलेनहीं अथ वा भोजन कखां पाछें पांवडासौं १०० चाले अर भोजनके अंत गऊकीछालि पीवैतौ गुणकारिछे रुचि माफिक पीवै अर भोजनके अंतसिषरण मठा उगैरै रुचिकारिभी वस्तषाय अथ सिषरणकी विधि लिष्यते चोषो रातिको जमायो भेंसको तथा गउको जमायो दहीले तीने मथिछाणिले पाछे वेदहींमें मिश्रीको चूरो अर मिरचि

न. टी. मनुष्यमात्रके पुण्यसहायछे ज्याके पुण्यधर्मकी सहायताछे ज्यांकेही सुखप्राप्ति होयछे. अर ज्यांके पाप अधर्म पछे बंध्यो रहेछे ज्योने अनेकतरेका रोगादिक दुखभोगे छे. ज्यांका सुमार्गविना आवागवन वृथा होय जायछे. मीठों स्वधर्म मार्गचाल.

इलायची भीमसेनीकपूरनैं आदिलेर अनुमानमाफिक ईमैं मिला वे अर इसो सिषरण पायतौ शुक्रनैं अर बलनैं अर योरुचिकरै अर वाय पित्तका रोगांनैं दूरिकरै इति सिषरण करिवाकी विधिसं पूर्णम्. भैसका दहीनैं छाणि तीमैं सूंठि मिरचि पीपली राई लूण यांनैं मिहिवांटि मिलाय अनुमान माफिक पायतौ कफ वायनैं दू रिकरै अर यावलनैं करैछै. अर सीतकालकैविषै दहीपाणों इति मठाकरिवाकीविधि संपूर्णम्. संध्यासमै इतनी वस्तकारिजे नहीं भो जन १ मैथुन २ निद्रा ३ पढिवो ४ संध्यामैं भोजन कर्‌यां रोग होय १ संध्यामैं मैथुनकर्‌यां भयंकर संतान होय २ संध्यामैं निद्रा लियां दरिद्रीहोय ३ संध्यामैं पढ्यां आयुर्बलको क्षय होय. ४

अथ रात्रिचर्या रात्रिका आहार विहार लिष्यते रात्रिमैं चांदकी चांदणीमैं सूतांकामकी वृद्धिहोय अर या चांदणी सरीरका दा हनैं दूरि करैछै. अर अंध्यारी राति आनंदादिकनैं दूरिकरैछै रा त्रिका प्रथम प्रहरमैं भोजनादिककरै पाछै सयनकरै सुंदर स्थान मैं पाछै सुंदर स्त्रीसूं शक्तिमाफिक संभोगकरै जोवनवतिसूं अर श क्तिउपरांतिकरैनहीं सुंदर स्त्रीयांसूंभी संभोगकरैनहीं अर संभोगकै आदिभैसीको तथा गउको दूध औटायो मिश्रीका संजोगको पीवै अर संभोगका अंतमैंभी योहीदूध रुचिमाफिक पीवैतौ ईपुरसकै जरापणांको रोगकदेभी आवैनहीं वृद्धस्त्रीसूं संभोगकरैनहीं ये छ हुवस्तु प्राणांनैं तत्कालहरैछै सोलि० सूको मांस १ वृद्धस्त्री २ सू र्यका तावडाको सेवो ३ तत्कालको जमायो दहीं ४ प्रभातसमै मै थुन ५ प्रभातसमैं निद्रा ६ येछह तत्कल प्राणांनै हरैछै. अर छ हुवस्त तत्काल प्राणांनैं सुपकरैछै सो० तत्कालको मांस १ न

न. टी. जोरयोकरीनयोंपालैछै ज्यांकी आयुवृद्धिहोयछै. जैसे गुदआहारविहारवाला पणा दीर्घायुभोगैछै. अर गोपनवान, राजा. चंद्रावान, श्री भारती भक्तिविनावरा इतना तांविरावैयढोगांकी सदागताणांरा ये समझकी मूर्खनागोपालैजो कष्टादुहोयछै.

वींन अन्न २ बालास्त्री ३ क्षीरभोजन ४ नवीन घृत ५ उष्णजल सूं स्नान ६ येछहवस्त तत्काल प्राणांनें सुखकरैछे. अथ छहरितुमें स्त्रीसूं संभोगकरै सो लि० हिमरितुमें १ अर शिशिररितुमें २ तो आपका सरीरकीशक्ति माफिक वारंवार स्त्रीसंगकरैतोभी रोग हो यनहीं शरीरमें आनंदरहै वसंतरितु ३ अर शरदरितुमें ४ शक्ति माफिक तीसरै तीसरैदिन स्त्रीसेवनकरैतो रोगहोय नहीं अर वर्षा रितुमैं ५ ग्रीष्मरितुमै ६ पक्ष नाम १५ पंद्रवैदिन शक्तिमाफिक स्त्रीसेवनकरैतो रोगहोय नहीं सीतरितुमै रात्रिमै संभोगकीजे ग्रीष्मरितुमै दिनमें संभोगकीजे वर्षारितुमें दिनमें अर रातिमें ज दि मेघगाजे अर वरषैतीसमैं स्त्रीसेवनकीजैतो रोगहोयनहीं शर दरितुमै कामदेव जागे तदिकीजैतो रोग होयनहीं. अर इतनीस्त्री यांसूं संभोगकीजेनहीं सोलिष्यते रजस्वलास्त्रीसूं १ रोगवालीस्त्री सूं २ वृद्धस्त्रीसूं ३ स्त्रीके कामदेवजागे नहींतीस्त्रीसूं ४ स्त्रीमलीन रहैतीसूं ५ गर्भिणीस्त्री सातमहिना उपरांतलीसूं ६ अर जीस्त्रीकी योनिमै गर्मीको रोगहोय जीसूं ७ इतनीस्त्रियांसूं संभोगकीजे नहीं १ अथ औरतरैभी मैथुन वर्जोसो लि० भययुक्त पुरुष १ धीर्यवि ना पुरुष २ भूषो ३ रोगी ४ तिसायो ५ बालक ६ बूढो ७ मल मूत्रका वेगवालो ८ इतनापुरुष मैथुनकरैनहीं अथ अतिमैथुनसूं इतनारोग होयसोलि० सूलहोय १ पास २ विषम जूर ३ क्षीण ता ४ क्षयरोग ५ अर वायका पक्षवातादिक रोग ये होय अथ मैथुनकै उपरांतिकीजे सो लि० स्नानकीजे. मिश्रीका संजोगको गरम कर्यो दूध पीजे मांसादिक मीठारसपाजे आसवपीजे पस

न. टी. श्रीदरबारजो शारिरकफुरमायोछे सोपरम ज्ञानको मूळछे वडुदराती चीजाछै सूक्ष्म निजरसूं कोईदेखे जीनें अपारसमुद्रछे. ईवास्ते पं० श्रीधर विनतीकरैछे ईवैष विद्वानपुरुषो यो जो शारीरकछे जीनें ध्यानमें राषो. जीवांको कल्याणकरो यांको उपकार परमेश्वर मानसी.

का विजणीनै आदिलेर पवनकरजै शयनकीजै रात्रिनैं घणोजागि जै नहीं दिनमैं घणोसोजेनहीं रात्रिका अंतमैं पांच ५ घडिकै तडकै आठअंजुली प्रमाणमीठो सीतल जलपीजै पाछै घडीच्यार ४ कैतडकै ऊठिजै ईविधिसूं सदाकीजेतो ईपुरुषकै कदेभी रोगहो य नहीं सदां आरोग्यरहे. इति रात्रिचर्याकीविधि० येसर्वविधि भावप्रकासमैं अर सारंगधरमैंलिषीछै सोदेषिलीजो अर सरीरकना म मनुष्यांका शरीरमैं जो कछुहै वायपित्त कफ सर्वधात अर शरी रको उपजिवो अर ईको नाशतीनैं आदिलेर त्यांको सर्वस्वरूप जथार्थ अतिसंक्षेपसूं ह्माकीवुद्धिमाफिकलिष्यते ई मनुष्यका शरीर नै इतनीवस्तछै. कला ७ आसय ७ धात उपधात ७ सातधा तांका ७ मल सातत्वचा ७ सात तीन दोष ३ देहमैं मांस अर हाड अर मेद यां सारांका बांधिवाकी नसां ९०० नवसौंछै अर दोयसैं दस २१० ईमैं हाडछै अर केइक आचार्यांका मतसूं तीनसैं ३०० हाडछै अर एकसौंसात १०७मर्मस्थानछैसातसौं ७००नसां छै रसनैं वहवावाली धमणीनाडी २४ छैमांसकी पिंडी ५०० छै स्त्रियांकी मांसकी पिंडी ५२० छै. सर्व सौवडीनाड्यांसर्व शरीरमैं व्यापती १६ त्यांनैं कंडरकहैछै, अर मनुष्यांकाशरीरमें १० छिद्रछै स्त्रियांकी देहमैं १३ छिद्रछै ये मनुष्यका देहमैं छै सोनाममात्रसूं लिष्याछै अर ह्यिांको स्वरूप जथार्थमनुष्यकादेहमैं शास्त्रके अ नुसार ह्माकी वुद्धिमाफिक लिषांछां. अथ कलाको स्वरूप लि० धात अर आसययांकै विचैजोझिल्लि जीमैं वालक रहैछै तीनिक दांकहिजैसोवाकला ७ प्रकारकीछै मांस लोही मेद यां तीन्याकै

---

*वात, पित्त, कफ ये त्रिदोषछे. यांनें त्रिदोष कहेछे, ये मुख्यछे परंतु पित्त. कफ ये पांगळा छे. यामें वायुवाकी शक्तिको मुख्यवायु कारणछे. वायु नसधातुमें सब शरीरमें दोषांकी प्रवर्ति वायुकरैछे. वास्ते विद्वान वैद्य है यो वायुको प्रकोप बचावे तो रोगादिकानें जीतो या श्रीपरकी सूचनावाद राखनी.

विचै येकेक झिल्लीछे अर यकृत् अर फियाकैविषै येक झिल्लीछे४ आंतांकै विचै येक झिल्लीछे ५ येकझिल्लीउदक अग्निनैं धारीरहेछे. ६ येक झिल्ली वीर्यनैं धारी रहीछे ७ यांनैं साणकलाकहिजै अथ सात आसय लि० आसयनामस्थान हियामैंतो कफको वर१ हियाकैनीचै आमको स्थानछे २ नाभिकै ऊपरि वाईकानी अग्निको स्थान३ अग्निकै ऊपर तिलछे ४ नाभिकै नीचै पवनकोस्थान५ पवनकास्थानकै नीचै पेडूमैं मलकोस्थान ५ पेडूकै लगतोही क्यूंनीचै मूत्रको स्थान तींनैं वस्तिकहिजे ६ हियाकैक्यूं ऊपरि जीवको अर लोहीको स्थान १ येसारा स्त्रिपुरुषांकै आशयछे अर स्त्रीका आसयतीन वधताछे येकतो गर्भकोस्थान १ दोय दुधकास्थान २ स्तन अथ सात धात लि० रस १ लोही २ मांस ३ मेद ४ हाड ५ मींजी ६ शुक्र ७ ये सातूधात पित्त तेज करि पचीथकी आवसमैं महीना येकमैं वीर्य पैदा होयछे चौथै चौथै दिन येकेक धात होयछे जोअन्न पाणी पायजैछे सो पित्तकातेजसूंपकै प्रथम रस पैदाहोयपाछेवे पित्तकातेजसूं रसपकि रसहीको लोहीहोयजायछे इसीतरै सातूधात जाणी लीजो अथ सात उपधात लिप्यते जीभकोमल नेत्रकोमल गीडगालांकोमल ये तीन्यूं रसधातकी उपधात जाणिजे १ रंजननाम पित्तलोहीको उपधातजाणिजे २ कानको मल मांसको उपधात जाणिजे ३ जीभदांत काप इंद्रिनैं आदिलेर यांमैं जोमलसो मेदको उपधात जाणिजे वीसूंनप २० ये हाडांका उपधात जाणिजे ५ नेत्रमैं गीडयो मीजींको उपधात जाणिजे ६ मुप ऊपरि चीकणापणो अरकील्या येशुक्रको उपधात जाणिजे अर स्त्रीकै दोयधात

न.टी. शारीरकर्म जो आयुर्वेदका मनुष्यकारणछे. ज्यांमैं विशेषकर घणीजायगां पंचप्राण लिप्यांछे. अर यांकास्थानवी लिप्याछे. परंतु नागादिक पंचवायुदी लिप्या विशेषताकरिकै ये पांचवायु योगाभ्यासमैं विशेषछे. ज्यांका नाम नाग. १ कूर्म. २ कृकल ३ देवदत्त. ४ धनंजय. ५ इत्यादि.

छे येकतौ स्तनामैं दूध १ एक स्त्रीधर्मपणो२ ये दोन्यूं समयमैंहोय अर समयहीमैं येदोन्यूं जातारहै अर औरभी सातुधातसूं पैदाहोय छे सो लि० शुद्धमांससूं पैदाहुवो जो घृत तींनैं वसाकहिजे१ पसेव२ दांत३ केस४ ओज ५ ओजसाहारी शरीरमैं रहैछे योचीकणोछे शी तलछे अर शरीरमैं बल अर पुष्टको करवावालोछे येभी सातुधातासूं पैदा होयछे अथ सातत्वचालि० ऊपरली त्वचा तो चीकणीछे. अव भामिनी जीको नामछे नामकविभूतीको स्थानछे १ दूसरा लालजी णनी वेमैं लील अर ये पैदाहोयछे२ तीसरीत्वचासुपेदछे वेमैं चर्मद ल नाम रोग पैदाहोयछे ३ चौथी त्वचा तांबाका रंगसिरीसीछे वेमैं सुपेद कोढ पैदाहोयछे ४ पांचवी त्वचा छेदनीजीको नाम तींमैं सर्व कोढ पैदाहोयछे ५ छठी त्वचा रोहिणी जींकोनाम तींमैं गुमडीगंड मालादिक पैदाहोयछे ६ सातवींत्वचा स्थूलाजीको नाम सो वेमैं विद्रधी रहैछे ये सातु त्वचा जवके प्रमाण मोटीछे अथ तीन दोषां को स्वरूपलि० वाय १ पित्त २ कफ ३ यांनैं दोपभी कहिजेअर यांनैं मलभी कहिजे सो ये तीन्यूंयेकेक पांच प्रकारकीछे. येपांचूजु दाजुदा स्थानांमै रहवासूं यातीन्यांमै वायबलवानछे सोयोवायश रीरमै सर्ववस्तको विभागकारि सारादेहमै नसांद्वारा सर्वत्र पुंहचा य देवैछे. अर पित्त पांगुलोछे. सूक्ष्मछे सीतलछे सूकोछे हलकोछे चंचलछे यो वायमलका आसयमै. १ कोष्ठमै रहैछे २ अग्नि कास्थानमै रहैछे. ३ हियामैरहैछे ४ कंठमैरहैछे ५ येईका पांचतो मुख्यस्थानछे. अर रहैछे. साराही शरीरमैं गुदामैतो ईको अपान नामछे १ नाभिमै ईको समाननामछे. २ हृदामै ईको प्राणनामछे

न. टी. वायमें सर्वव्यापी धनंजय इसी लिखीछे. सो यामैं दृष्टांतछे. जिनानरिगोरी नाम पक्षीछे जींकी कोईवी कारणसूं पूछकटजाय तो दूसरोदाय. जींकेजटका पूंछस्यूं चापवरीनांई कू दवोको. अर वा जिनोरीनां उडगूं चालीजाय. योवायधनंजय वायुसूं हुवेछे. अनजगाजं भी लिखेछे.

३ कंठमैं ईंको उदाननामछै ४ सर्व शरीरमैं रहतो तींको व्याननामछै. ५ इति वायुस्वरूपसंपूर्णम्.

अथ पित्तको स्वरूपलि० पित्त गरमछै पतलोछै. पीलोछै. सतोगुणमयीछै. कडवोछै. तीषोछै अर दग्धहुवो षाटोहोयजायछै यो पांचस्थानमैं रहैछै. अग्न्यासयमैं तिलप्रमाणयो अग्निरूपहोय रहैछै १ त्वचामैं योकांतिको करवावालोछै नेत्रांमैंयोरहै सर्वकोदेषवावालोछै. २ प्रकृतिमैंयोरहै सर्व वस्तनै यो पचायदेछै. अरषायारसको लोहीकरिदेछै ४ अर हियामैं रहतो जोपित्त सोबुद्ध्यादिककूं करैछै. ५ पाचक १ भ्राजक २ रंजक ३ अलोचक ४ साधक ५ ये पित्तका नामछै अथ कफकोस्वरूप लिष्यते कफ चीकणोछै भाखोछै सुपेद पीछिलछै सीतलछै तमोगुणमयीछै. मीठोछै योदग्धहुवो षारो होयछै. कफ आमासयमैं १ माथामैं २ कंठामैं ३ हियामैं ४ संध्यामैं ५ याजागांमैं मुष्य रहैछै, अर देहमैं रहतो थको देहकी थिरतानैं सर्व अंगका कोमल पणानैं करैछै क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलंबन ४ श्लेष्मा ५ येईकानाम अनुक्रमसूं छै, ३ अथ स्नायुनसांको स्वरूपलि० मनुष्य देहके विषे मासहाड मेद यांका बांधवाके विषे स्नायुनाम नसांकहींछे १ अथ हाडांको स्वरूपलि० देहके विषै येआधारछै, देहयांविनाउभी रहैनहींअरदेह विषैमार यांहीकोछै. अथ मर्मस्थानको स्वरूपलि० जीवका धर्वावालो मर्मस्थानहीछै, १ अथ नसांको स्वरूप लिष्यतेसंधिसंधियांसूं बंधिछै, अर वाय पित्तकफ अर सातूंधातयांनैभीयेहीनसांवहैछै, १ अथ धमनीनाडीकोस्वरूप लिष्यते, धमनी नाडी रसनैं वहैछै, अर

न. टी. नाभीका स्थानसूं सर्वनसां सर्वशरीरमैं जो फेलिरहेछै तो संपूर्ण धातांका संयोगो नाभिस्थानको वायु सर्व शरीरनैं पुष्टकरैछै. अर प्राणवायूको आपणो अर बाहर सोईश्वरी इच्छासूंवारेक अमृत प्रमाणछै. स्थानैलेकर पेटमैं पाछे वहैछै, अर पेटमैंसूं पाछ पामाणूं पाछा काढैछै.

पवननें वहेछे. अथ मांसकी पिंडीको स्वरूपलि० सर्वसूं वडी नसांती नें कंडरा कहीजे सो सोलाछे. १६ सोवे सारांअंगांनें पसारिदेछे अर संकोचन करिलेछे. अर रसरंध्रांको स्वरूपलि० नाककेदोय छिद्र छे नेत्रके दोयछिद्रछे कानांके दोयछिद्रछे. लिंगगुदा मूंढो यांके ये केक छिद्रछे. येक मस्तगमें छिद्रछे अर स्त्रियांके तीनअधिकछे दो यस्तनमें येक गर्भासयमें अर ओर ईशरीरमें सूक्ष्म रोमरोममें छिद्र अनंतछे नाभिकेकनें वाईकानी फुफुसछे अर प्लीहनामफियो छे अर नाभिकेकनें जीवणीकानी यकृत् छे उदानवायको आधार तीनें फुफुस कहिजे अर लोहीनें वहवावाली जो नसां त्यांको मूल प्लीहनाम फियोछे अर रजकनाम जो पित्त तीको जोस्थान तींकेवि षे जोरक्तकोस्थान ताकों यकृत् कहिजे. नाभिका वामभागके विषे अग्न्यासयके ऊपर जोओ तिलछे सोजलनें वहवावाली जीनसां त्याको मूलछे अर ओतिल तिसनै ढकिदेछे अर कूपिमें जो दोय गोला त्यांनें वृककहिजे सोवे दोन्यूंजठरको जो मेद तीनें पुष्ट क रेछे अर वृषणजो पोता सो वीर्यनें वहवावालीजो नसां त्यांका आ धारछे अर येपुरुषार्थका वहवावालाछे अर लिंगगर्भको देवावालो छे अर वीर्यमूत्र यांकोघरछे अर हियोमन चित्तबुद्धि अहंकारयां को स्थानछे. अर ओजकोघरछे अर नाभिहेसो सिराजो धमनींनें आदिलेर नसांत्यांको स्थानछेनाभिसूं अर सर्व धातांका संजोग सूं नाभिको जो वायछे सो सर्व शरीरकुं पुष्टकरेछे. अर नाभिको जो पवनछेसो हियाका कमलमेंजाय वेंकोस्पर्शकरि कंठकेबारे जा यछे क्युं विष्णूपदको जो अमृत तीनें पीवानें नासिका द्वाराको प

* माया अरु ब्रह्मयांको सृष्टि व्यापार कारक दृष्टांतछे. आंधळो पांगळो दोऊमिलकर चलणो चोकीनो हे आंधळा धाराळापाऊरामनें पांगळानें चढावछेनो पारीभासगूं देखकर धारापगासूं चालतो आपणो चालणो, हालणो, व्यापार सिद्धहोय ईसीतरे मायातो अंध ब्रह्म चैतन्य पांगळो दोऊमिलकर सृष्टिरचीछे.

वनसो आकासका अमृतनैं पीकरि फेरूं मुषनासिकाद्वारा कंठउ गैरे उदरमैं आयप्राप्तिहोयछै. वेगकरिकै पाछै योपवन संपूर्ण देह नैं अर जीवनैं अर जठरानलनैं पुष्टकरैछै अर शरीरकी अर हृदा की प्राणपवनको जोसंजोग तीनैं आयुर्वल कहिजे अर कहींसमै में शरीर प्राण येदोन्यांको संजोग दूरिहोय तीनें मरण कहिजे ई पृथ्वीकेविषै कोई प्राणी अमरनहीं ईकारण मृत्युहैसो निवारिनही जाय वैद्यहैसो रोगांनैं दूरिकरि अर मनुष्यकै साध्यरोगछै अर वोमनुष्य पथ्यादिक नहींकरैतौ वेमनुष्यकै साध्यरोगही जाप्यहो जाय अर वेमनुष्यकै जाप्यरोगछै अर सो मनुष्य कुपथ्य करिवो करैतौ जाप्यरोगही आसाध्य होयछै. अर वोअसाध्यरोग हुवो थको कुपथ्यका करिवावालो मनुष्यनैं निश्चैमारि नापैछै सोई का रणथकी मनुष्यचतुरहैसो रोगांथकीशरीरकी रक्षाकरै कर्मविपाक को जाणिवावालो क्यूं धर्म अर्थ काम मोक्ष यां च्यास्यांहीको साध न येकयो मनुष्यको शरीरहीछै जो पुरुष ईमनुष्य शरीरनै मारै तींसर्वनै मास्यो अर जीनैं मनुष्यशरीरकी रक्षाकरि त्यांसर्वकी र क्षाकरी अर सातूधातांका मल अर वाय पित्त कफ येसाराही बरा बरि रह्याथका ईशरीरमें शरीरनैं सुषदेवैछै अर येसारा घट्याव ध्या अर कुपित हुवाथका ईशरीरको नासकरै इति सातकलादिकां का विचार संपूर्णम् अथ सृष्टिका उपजावाको कथनलि० ईसंपूर्ण ब्रह्मांडको कारण इच्छारहित सत् चित् आनंदस्वरूप ऐसो जोब्र ह्म परमात्मा तींकीप्रकृतिनाम मायाछै सोवा परमात्माकी माया नित्यछै जैसै सूर्यकी प्रतिच्छाया नामप्रकाश सो वा ब्रह्म परमात्मा

न. टी. जो पेटमैं फुफुसछै ज्यामैं प्राणवायुको आवाजावछै. पाँचे दोन्हूं. फोफसां सागइ हालबो करैछै. जो भोजनकरै सो वाकोफसांका हलवासूं धीरेधीरे पेटमैं अहार अ [illegible]. जठरापित्तको संजोग होवासूं अहारकोरूप भस्महोयछै. जैसे ज[illegible]कीपा [illegible] अर दिसामैं गयां अहष्टहोवै.

की मायाछे. सोजड अर चैतन्य जो परमात्मा तींको संजोगकरि ई अनित्य संसारनैं यामाया करती हुई नटका ष्यालकीसीनाई अर या संसारकी माता जो प्रकृति सो वुद्धिनें उपजावती हुई वुद्धिके सीक इच्छामई महातत्व जीकोरूप पाछे महातत्वसूं अहंकार उपजतो हुवो पाछे औ अहंकार तीन प्रकारको हुवो. रजोगुण सतोगुण तमोगुणमईतमोगुणमईपाछेसतोगुण रजोगुणसूंमिलिदश इंद्रियांनैं पैदाकरता हुवा अर मनभी यांदोन्यांहीसूं पैदाहुवो अथ दशइंद्रियांको स्वरूपलि० कान १ त्वचा २ नेत्र ३ जिव्हा ४ नासिका ५ येतौ पांच ज्ञानेंद्री वाक् ६ हाथ ७ पग ८ लिंग९ गुदा १० येपांच कर्मेंद्रियछे तमोगुणहै सो घणां सतोगुणसूं मिल्यो जो अहंकार तातें पंचतन्मात्रा उपजता हुवा अथ पांचतन्मात्राका नाम स्वरूपलिष्यते शब्द १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गंध ५ यांनैं तन्मात्रा कहिजै पाछै तन्मात्रासूं पंचमहाभूत पैदाहुवा शब्दसूंतो आकाशहुवो १ स्पर्शतन्मात्रासूं वायु पैदाहुवो २ रूपतन्मात्रासूं अग्निपैदाहुवो ३ रसतन्मात्रासूं जलपैदाहुवो ४ गंधतन्मात्रासूं पृथ्वी पैदाहुई ५ अथ ज्ञानेंद्रियांका विषय लिष्यते कानको विषय शब्द १ त्वचाको विषय स्पर्श २ नेत्रको विषय रूप ३ जिव्हाको विषय स्पर्शको स्वाद ४ नासिकाको विषय सुगंधिदुर्गंधिकोग्रहण करिवो ५ अथ कर्मेंद्रियांका विषय लिष्यते वाणीको विषय वोलिवो १ हाथको विषय ग्रहणकरिवो २ पगांको विषयचालिवो ३ लिंगको विषय मैथुन ४ गुदाको विषय मलका आछीतरह त्याग ५ अथ प्रकृतिनाम लिष्यते प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति

न.टी. भोजनसौं शरीरमैं रसादिक पैदाहोयकर जोनधिरादिक होयछे. ज्यानैं शोषक नवाछे. सो मारभागका सारनैं ग्रहणकरेछे. अर रसस्थानमैं पोषरोछे. अर जो कोईसी सार णसौं रस बिगडतो पोरछे. जीसौं आंव होयजाय. सो मलरूपहोयछे. अर गदारमैं दूरहोछे.

३ नित्या ४ विकृति ५ शक्तिहै सो शिवसूं मिलीथकीरहैछै अथ चो
वीसतत्व लि० महत्तत्वनाम १ अहंकार १ पांचतन्मात्रा २ प्रकृति १
दशइंद्री १० येकमन पांचमहाभूत ५ येचोवीस २४ विकारछै
येसर्व मिलि २४ तत्वहोय पाछै योचोवीस तत्वाको शरीररूपी यो
घरवणे तदि ईंघरमें जीवात्मा शुभ अशुभ कर्मांके आधीनहुवो
थको ईंशरीररूपी घरमें आयकरवसै. मनरूपी दूतकै वस हुवोथ
को पाछै जीवकरी संयुक्त ईं शरीरनैं बुद्धिवान देहोकहैछै सोयोदेह
पापपुण्य सुप दुषादिकांकरि व्याप्त हुवोथको अर योमनकरि जी
वात्मा वंध्योथको अर आपकर्या जो कर्मवंधन त्यांसूं वंधैछै. अर
काम १ क्रोध २ लोभ ३ मोह ४ अहंकार ५ दश इंद्री १० वुद्धि
१ येसर्व अज्ञानथकी जीवात्माके वंधनकै अर्थछै. अर जीवात्मा
नें आत्मज्ञान होयतो ईंकी मुक्तिहोय अर जींमें दुप उपजै तींनें
व्याधिकहैछै जींमें सुप उपजै तींनेंआरोग्यकहिजे इति सृष्टि जो
उपजीवाको कहवोसं० अथ अहारको अर परिपाकको अर गर्भकी
उत्पत्तिको अर वालकका पोषणादिकको लक्षणलि० जोभोजनादि
क कीजंछै सोही याकारणपवन करिकै प्रेर्योथको प्रथम आमासय
में जाय प्राप्तहोयछै. पाछै ओही आहारमधुरपणानैंप्राप्ति होयछै.
पाछै ओही आहार पाचकपित्तका प्रभावकरि क्यूं ये पक्योथकोअ
म्लपणानैं प्राप्तहोयछै. पाछै ओही आहार नाभिका समान पवन
करि प्रेर्योथको छटीग्रहणी कलामें प्राप्तिहोयछै. पाछै ग्रहणीकला
में आहारपचि कोठकी अग्निकरिके ओही आहार कडवोहोजाय
छै पाछै ओही आहार कोठकी अग्निकरि पचिवेकी आछ्योरस पै

न. टी. शरीरका व्यवहार शुद्ध रहवासों आयुवृद्धि होयछै. परंतु यावात कोईक्युकरका ध्यानमें कमआवछै. परंतु भूलकी बातछै. जीमें दृष्टांतछै जैसे दीपचिरागछै अर तेलवाती पूरीछै एकसाथ जोड़छै. ज्यांमें तो मैलहेउपर फानस डकोछै. अर एक ज्यादीछै पवनमें धरीछै. जीनैं फुणधीनांदहेणी...

दाहोय जायछै. अर ओ आछ्याप्रकार पकैनहीं अर काचोरहैतो वेही अहारको आंव होजायछै. अर कोष्ठकी अग्निवलवान् होयतो ओ आहारको रस मधुर होजायछै, अर ओही पाछै मधुर होय अर चीकणापणानैं प्राप्तिहोयछै. पाछै ओहीरस भलेप्रकार पक्यो थको ईशरीरकी संपूर्णधातानै पुष्टकरैछै. अर योरस अमृतकी उपमाकों प्राप्तहोयछै. अर यो आहारकोरस मंदाग्निकरि दग्धहोयतो उदरमैं कडवोरस होयजाय अथवा पाटोहोजाय अथवा योहीरस विपका सुभावनै प्राप्तिहोय जाय अथवा योहीरस रोगांका समूहनैं शरीरमैं करिदे अर योही आहारको रसछै सो ई शरीरमैं सार नाम बलछै. अर सारहीन होयतो यो मलद्रवनामपतलो होजायछै सो आछ्यो नहीं. अर शरीरमैं पीयोजो जल सो वेको सारसारतो नसांद्वारा वाय शरीरमैं पहुंचाय देछै. अर ईका निःसारनैं पेटमैं प्राप्तिकरिवेंको मूतकरिदेछै सो मूतहोय लिंगद्वारा वारे नीसरैछै. अर वे आहारको कीटजोमल सो पकासयमें रहैछै सो गुदाका पवनका बलकरिओमल गुदाद्वारावारे नीसरैछै. अर वे आहारको जो रस सो नाभिका समान पवनका बलको प्रेर्योथको मनुष्यका हियामें जाय प्राप्तिहोयछै. अर पाछै योरस पित्तकरि पचे तदि लालरंग्यो थक्यो लोही होय जायछै सो ओ लोही सर्वशरीरमें रहैछै सो ओ लोही जीवको उत्तम आधारछै अर ओलोही चीकणोछै, अर भारीछै, अर बलवानछै मीठोछै अर यो दग्धहुवोपित्तकीसी नाई होयछै येकेकवात सवाचारिचारि दिनमें पैदा होयछै अर भोजनकर्यो जो अहार सो महिनायेकर्तें तीको मनुष्यकै वीर्य पैदा होयछै अर बीजोयांही भोजनकर्यो जो आहार सो महिना येकमें स्त्रीयमें द्वाराज होजायछै, पाछै स्त्री अर पुरुष दोन्यूं मिलो मैथुनकरे तदि स्त्रीका भगमेंतो शुद्धलोही अर पुरुषको शुक्रनैं

दोन्यूवैसमै मिलै तदि स्त्रीकागर्भ स्थानमें गर्भरहजायछै पाछै ओ नवेमहिनें भगद्वारावारै नीसरै तदिवेनें बालक हुवो कहैछै, अर वें समैस्त्रीको रज अधिकहोयतो कन्याहोय अर पुरुषको वीर्य अधिक होयतो पुत्रहोय अर वेंसमैस्त्री अर पुरुषकोरज अर वीर्य बराबरि होयतो नपूंसक पैदाहोय पाछै परमेश्वरकी इच्छाहोय सो हीहोय यो लिष्यो नियमछै होय अर नहींबीहोय अथ बालकनें औषदि देवाकी मात्रालि० महिना येकको बालक होयतो रती १ औषदि दीजे दूध सहतमिश्री यांकी साथि पाछै ज्यूंज्यूं बालक वधै तदि महिनायेकेकमें रतीयेकेक औषधिवधाजे येक वरसतांई पाछै वरस १६ सोळा तांई मासोयेकेक औषदि दीजे पाछै औषदि देवाकी मात्रा अतनीराषिजे वर्ष ७० तांई पाछै बालककीसीनाई औषदीकीमात्रा घटायदीजै यो तोलकल्कचूर्णकोछै, अर काढाको तोलईसूं चौगुणो जाणिलीजे अर बालक होय तदि बालकके का जल उवटणो स्नान करावोकीजे अर महिनाकीमहिनें बालकनें व मनकराय दीजे अर हरडेकी घूंटीरोजीना दीजे अर अन्नकोग्रास पांचवे वरस दीजे अर जुलाबसोला वरस ऊपरांत दीजे अर मैथुनबीस वरस ऊपरांति कीजे ईविधिसूं मनुष्यचालेतो ईंके रोग कदेहोय नहीं अर ईंते जराकदे आवेनहीं अथ मनुष्यका शरीरकी गतिलि० वरपदशतांईतो बालपणो रहैछै, बीस २० वर्षपर्यंत ईंको वधवापणो रहैछै ३० वर्षपर्यंत शरीरको मोटापणो रहैछै, चालीस वर्षपर्यंत मनुष्यकै बुद्धिको आगमरहैछै पचास ५० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमें त्वचाको गाढपणो रहैछै. ६० वर्षपर्यंत नेत्रांकी जोति आछी रहैछै ७० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमें वीर्यरहैछै ८० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमें वीर्यको ऊनाधिक्यपणो रहैछै ९० र्यंत आछीतरै ग्यानरहैछै, सो १०० वर्षपर्यंत बोलिबो हाथपगां

मैं वल मलमूत्रको त्यागको ग्यानरहैछे एकसौदस ११० वर्षपर्यंत मनुष्यका शरीरमें स्मरणमात्रको ग्यानरहैछे १२० वर्षपर्यंत शरीरमें प्राणमात्ररहैछे. जो मनुष्यको शरीर निरोगी रहेतौ अर दश दस वर्ष पाछे ये लिष्यासो घटताजायछे ईमनुष्यकी आयुर्वलको प्रमाण १२० वर्षकोछे. इति आहारको परिपाक गर्भकीउत्पत्ति वालकका पोषणादिककी विधिसं० अथवाकीप्रकृतिको लक्षण लि० छोटाकेस होय अर कृशशरीर होय लूषो शरीर होय वाचालहोय चंचल मनहोय आकाशमें रहवावाला सुपनाआवै यो जीमें लक्षण होयतौ वायकीप्रकृति जाणिजे १ अथ पित्तकीप्रकृतिको लक्षण लि० जवान अवस्थामें सुपेद वालआवै वुद्धिवान होय अर पसेवघणां आवै क्रोधीहोय सुपनामें तेजदीपै येलक्षण होयतौ पित्तकी प्रकृति जाणिजे २ अथ कफकी प्रकृतिको लक्षणलि० जींकी गंभीर वुद्धिहोय स्थूलअंग होय चीकणाकेश होय वलवान होय स्वप्नमें जलकास्थान देषै येलक्षण जींमें होय तीनें कफकी प्रकृति कहिजे ३ अथ नींदको लक्षणलि० कफ अर तमोगुण अधिक होय तदि मूर्छाहोय १ अर वाय पित्त रजोगण ये अधिक होयतदि भ्रांलि अर भ्रांतिहोय २ कफ वाय अर तमोगुण अधिक होय तदि तंद्राहोय ३ अर वलजातो रहे तदि ग्यानिआवै अर दुपसूं अजीर्णसूं अर पेदसूं यांसूंभी ग्लानिहोय ४ अर वलथकी उत्साह नहींहोय तीनें आलस कहिजे ६ ईनें आदिलेर वुद्धिवान औरभी जाणिलीज्यो इह मनुष्यका शरीरको वर्णनकर्यो इति श्रीमन्म

॰ तरंग २५ वाअंगमेंछे. सोपामंथको नामनागरछे. अमृतसागर तथा रत्नसागर तरंगनामउदरहोयछे. तरंगांनागरमें होयछे. याले अमृतसागर तरंगनाम नहोयछे. संपूर्ण ग्रंथछे. यामें कोईभी भूलचूक होयतो फतेमावादका पंडित श्रीधरमेंजने लिखाकोक प्रमादरयी कोई दूषणदेसीतो भा सुजणईहोसी.

हाराजाधिराजमहाराजराजेंद्र श्रीसवाई प्रतापसिंहजी विरचिते अमृतसागरनामग्रंथे रितुवर्णनं षट्रितुचर्या १ दिनचर्या २ रात्रिचर्या ३ सारिरक ४ सर्व अंगांसंयुक्त नामवर्णनं नाम पंचविंशतितमस्तरंगः संपूर्णः २५.

समाप्तोऽयं अमृतसागरनाम ग्रंथः

अमृतसागरकी सूचानिका तथा अनुक्रमणिका.

श्रीकृष्णार्पणमस्तु.

इति अमृतसागरस्यानुक्रमणिका।

समाप्तम्.

पंडितश्रीधर शिवलाल ज्ञानसागर छापखाना (मुंबई.)